१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

श्री

दसम गुरू ग्रंथ साहिब जी

(हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण)

तीसरी सैंची

शारदा पुस्तकालय
(संजीवनी ... केंद्र)
क्रमांक
61

प्रकाशक

शारदा पुस्तकालय
(संजीवनी ... केंद्र)
61

भुवन वाणी ट्रस्ट
मौसम बाग (सीतापुर रोड), लखनऊ-२२६०२०

61

शारदा पुस्तकालय
(संजीवनी शारदा केन्द्र)
क्रमांक ...61...............

शारदा पुस्तकालय
(संजीवनी शारदा केन्द्र)
क्रमांक 61

16

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

स्री

दसम गुरुग्रंथ साहिब जी

(तीसरी सैंची)

[हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण]

अनुवाद—

डॉ० जोधसिंह

एम० ए०, पीएच्० डी०, साहित्य-रत्न

शारदा पुस्तकालय
(संजीवनी शारदा केन्द्र)
क्रमांक ....61.........

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

~~'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-२२६००३~~

मौसम बाग (सीतापुर रोड),
लखनऊ-२२६०२०

'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी॥'

प्रथम संस्करण—१९८४ ई०

आकार—१८×२२÷८

पृष्ठसंख्या—७३६

मूल्य— ५०·०० रुपया

16

मुद्रक

वाणी प्रेस

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चोपटियाँ रोड, लखनऊ—२२६००१

विश्वनागरी लिपि

॥ ग्रामे-ग्रामे सभा कार्या, ग्रामे-ग्रामे कथा शुभा ॥

सब भारतीय लिपियाँ सम-वैज्ञानिक हैं !

All the Indian Scripts are equally scientific !

भारतीय लिपियों की विशेषता।

'संसार की लिपियों में नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक है', यह कथन बिलकुल ठीक है। परन्तु यह कहते समय हमें याद रखना चाहिए कि वह सर्वाधिक वैज्ञानिकता, केवल हिन्दी, मराठी, नेपाली लिखी जानेवाली लिपि में नहीं, वरन् समस्त भारतीय लिपियों में मौजूद है। क, च, त, प आदि के रूपों में कोई वैज्ञानिकता नहीं है। वैज्ञानिकता है लिपि का ध्वन्यात्मक होना। नियमित स्वरों का पृथक् होना। अधिक से अधिक व्यंजनों का होना। सबको एक 'अ' के आधार पर उच्चरित करना। ['अ' अक्षर-स्वर, सकल अक्षरों का उस भाँति मूल आधार। सकल विश्व का जिस प्रकार 'भगवान्' आदि है जगदाधार।] एक अक्षर से केवल एक ध्वनि। एक ध्वनि के लिए केवल एक अक्षर। स्माल्, कैपिटल्, इटैलिक्स् के समान अनेकरूपी नहीं; बस एक ही रूप में लिखना, बोलना, छापना और प्रत्येक अक्षर का समान वज़न पर

पंजाबी (गुरमुखी)-देवनागरी वर्णमाला

ਅ अ	ਆ आ	ਇ इ	ਈ ई	ਉ उ
ਊ ऊ	ਰੀ ऋ	ਏ ए	ਐ ऐ	ਓ ओ
	ਔ औ	ਅੰ अं	ਅ: अः	
ਕ क	ਖ ख	ਗ ग	ਘ घ	ਙ ङ
ਚ च	ਛ छ	ਜ ज	ਝ झ	ਞ ञ
ਟ ट	ਠ ठ	ਡ ड	ਢ ढ	ਣ ण
ਤ त	ਥ थ	ਦ द	ਧ ध	ਨ न
ਪ प	ਫ फ	ਬ ब	ਭ भ	ਮ म
ਯ य	ਰ र	ਲ ल	ਵ व	ਸ਼ श
	ਸ਼ ष	ਸ स	ਹ ह	

एकाक्षरी नाम। उच्चारण-संस्थान के अनुसार अक्षरों का कवर्ग, चवर्ग आदि में वर्गीकरण। फिर प्रत्येक वर्ग के अक्षरों का क्रम से एक ही संस्थान में थोड़ा-थोड़ा ऊपर उठते हुए अनुनासिक तक पहुँचना, आदि-आदि ऐसे अनेक गुण हैं जो अभारतीय लिपियों में एकत्र, एकसाथ नहीं मिलते। किन्तु ये गुण समान रूप से सभी भारतीय लिपियों में मौजूद हैं, अतः वे सब नागरी के समान ही विश्व की अन्य लिपियों की अपेक्षा 'सर्वाधिक वैज्ञानिक' हैं। सब ब्राह्मी लिपि से उद्भूत हैं। ताड़पत्र और भोजपत्र की लिखाई तथा देश-काल-पात्र के अन्य प्रभावों के कारण विभिन्न भारतीय लिपियों के अक्षरों में यत्र-तत्र परिवर्तन, हिन्दी वाली 'नागरी लिपि' को कोई श्रेष्ठता प्रदान नहीं करता। भारत की मौलिक सब लिपियाँ 'नागरी लिपि' के समान ही श्रेष्ठ हैं।

नागरी लिपि को 'भी' अपनाना श्रेयस्कर क्यों ?

"नागरी लिपि" की केवल एक विशेषता है कि वह कमोबेश सारे देश में प्रविष्ट है, जबकि अन्य भारतीय लिपियाँ निजी क्षेत्रों तक सीमित हैं। वहीं यह भी सत्य है कि नागरी लिपि में प्रस्तुत और विशेष रूप से हिन्दी का साहित्य, अन्य लिपियों में प्रस्तुत ज्ञानराशि की अपेक्षा कम और नवीनतर है। अतः समस्त भाषाओं की ज्ञानराशि को, सर्वाधिक फैली लिपि "नागरी" में अधिक से अधिक लिप्यन्तरित करके, क्षेत्रीय स्तर से उठाकर सबको सारे राष्ट्र में, यहाँ तक कि विश्व में ले आना परम धर्म है। विश्व की सब भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान (सत्साहित्य) है आत्मा, और 'नागरी लिपि' होना चाहिए उसका पर्यटक शरीर।

अन्य लिपियों को बनाये रखना भी कर्तव्य है।

वस्तुतः यह परम धर्म है कि समस्त सदाचार साहित्य को नागरी में तत्परता से प्राचुर्य में लिप्यन्तरित करना। किन्तु साथ ही यह भी परम धर्म है कि देशी-विदेशी अन्य सभी लिपियों को उत्तरोत्तर उन्नति के साथ बरक़रार रखना। यह इसलिए कि सबका सब कभी लिप्यन्तरित नहीं हो सकता। अतः अन्य लिपियों के नष्ट होने और नागरी लिपि मात्र के ही रह जाने से अ-लिप्यन्तरित विश्व की समस्त ज्ञानराशि उसी प्रकार लुप्त-सुप्त होकर रह जायगी जैसे पाली, प्राकृत और अपभ्रंश, सुरयानी आदि का वाङ्मय रह गया। जगत् तो दूर, राष्ट्र का प्राचीन आप्तज्ञान विलुप्त हो जायगा।

नागरी लिपि वालों पर उत्तरदायित्व विशेष !

इन दोनों परम धर्मों की पूर्ति का सर्वाधिक भार नागरी लिपि वालों पर है, इसलिए कि उनको 'सम्पर्क लिपि' का श्रेष्ठ आसन प्रदत्त है। मैं कह सकता हूँ कि उन्होंने अपने कर्तव्य का, जैसा चाहिए था, वैसा निर्वाह नहीं किया। परन्तु उसकी प्रतिक्रिया में अन्य लिपि वालों को भी "अपराध के जवाब में अपराध" नहीं करना चाहिए। 'कोयला' बिहार का है

अथवा सिंहभूमि का है, इसलिए हम उसको नहीं लेंगे तो वह हमारे ही लिए घातक होगा। कोयले की क्षति नहीं होगी। अपनी लिपियों को समुन्नत रखिए, किन्तु नागरी लिपि को भी अवश्य अपनाइए।

उपर्युक्त परिवेश में नागरी लिपि का पठन और समग्र श्रेष्ठ साहित्य का नागरी में लिप्यन्तरण तो आवश्यक है ही, किन्तु अन्य लिपियाँ भी अपनी लिपि में दूसरी भाषाओं के सत्साहित्य को लिप्यन्तरित तथा अनूदित कर सकती हैं। 'अधिकस्य अधिकं फलम्।' ज्ञान की सीमा नहीं निर्धारित है। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने भी अवधी के रामचरितमानस को ओड़िआ भाषा में गद्य एवं पद्य अनुवाद-सहित, ओड़िआ लिपि में लिप्यन्तरित किया है। परन्तु सम्पर्क और एकीकरण की दृष्टि से 'नागरी लिपि' अनिवार्य है।

नागरी लिपि की वैज्ञानिकता मानव मात्र की सम्पत्ति है।

अब एक क़दम आगे बढ़िए। भारतीय लिपियों की सर्वाधिक वैज्ञानिकता, युगों की मानव-शृंखला के मस्तिष्क की उपज है। क्या मालूम इस अनादि से चल रहे जगत् में कब, क्या, किसने उत्पन्न किया? भारत संयोग से इस समय इस विज्ञान का कस्टोडियन् है, स्रष्टा नहीं। भारत भी न जाने कब, कहाँ तक और कितना था? अतः हम भारतीयों को नागरी लिपि के स्वामित्व का गर्व नहीं होना चाहिए। वह आज के मानव के पूर्वजों की देन है, सबकी सम्पत्ति है, सकल विश्व उसका समान गौरव से उपयोग कर सकता है। हमारा 'अहम्' उस लिपि की उपयोगिता को रुद्ध कर देगा, जिसके हम सँजोये रखनेवाले मात्र हैं। किन्तु विदेशों में बसनेवाले बन्धुओं को भी नागरी लिपि के गुणों को अपने ही पूर्वजों की उपज मानकर परखना चाहिए। ये गुण इस निबन्ध के प्रथम अनुबन्ध में अधिकांशतः वर्णित हैं। न परखने पर उनकी क्षति है, विश्व की क्षति है। अरब का पेट्रोल हम नहीं लेंगे, तो क्षति किसकी होगी? पेट्रोल की नहीं, अपनी ही।

फिर याद दिला देना ज़रूरी है कि क, प आदि रूपों में वैज्ञानिकता नहीं है। वे काफ़, पे और के, पी, जैसे ही रूप रख सकते हैं, किन्तु लिपि में 'अनुबन्ध प्रथम' में ऊपर दिये हुए गुणों और क्रम को अवश्य ग्रहण करें। और यदि एक बनी-बनाई चीज़ को ग्रहण करके सार्वभौम सम्पर्क में समानता और सरलता के समर्थक हों, तो 'नागरी लिपि' के क्रम को अपनी पैतृक सम्पत्ति मानकर, ग़ैर न समझकर, मौजूदा रूप में भी ग्रहण कर सकते हैं। वह भारत की बपौती नहीं है। आज के मानव के पूर्वजों की वह सृष्टि है। इससे विश्व के मानव को परस्पर समझने का मार्ग प्रशस्त होगा।

नागरी लिपि में अनुपलब्ध विशिष्ट स्वर-व्यञ्जनों का समावेश।

हर शुभ काम में कजी निकालनेवाले एक दूर की कौड़ी यह भी लाते हैं कि "नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक होते हुए भी अपूर्ण है और अनेक स्वर-व्यंजनों को अपने में नहीं रखती। उनको कहाँ तक और कैसे समाविष्ट

किया जाय ?" यह मात्र तिल का ताड़ है। मौजूदा कर्तव्य को टालना है।

अल्बत्ता अन्य भाषाओं में कुछ व्यंजन ऐसे हैं जो नागरी में नहीं हैं— किन्तु अधिक नहीं। भारतीय भाषा उर्दू की क़ ख़ ग़ ज़ फ़, ये पाँच ध्वनियाँ तो बहुत समय से नागरी लिपि में प्रयुक्त हो रही हैं। दुःख है कि आज़ादी के बाद से राष्ट्रभाषा के पक्षधर ही उनको ग़ायब करने पर लगे हैं। इसी प्रकार मराठी ळ है। इनके अतिरिक्त अ़रबी, इब्रानी आदि के कुछ व्यञ्जन हैं, किन्तु उनको नागरी की दैनिक लिपि में अनिवार्यतः रखना आवश्यक नहीं। विशिष्ट भाषाई कार्यों में, ज़रूरी मानकर, उन विशिष्ट भाषाई व्यंजनों को चिह्न देकर दरसाया जा सकता है।

तदर्थ अ़रबी लिपि का आदर्श सम्मुख।

और यह कोई नयी बात नहीं। नितान्त अपरिवर्तनशील कहे जाने वालों की लिपि 'अ़रबी' में केवल २७-२८ अक्षर होते हैं। भाषा के मामले में वे भी अति उदार रहे। "अ़िल्म चीन (अर्थात् दूर से दूर) से भी लाओ"— यह पैग़म्बर(स़०)का कथन है। जब ईरान में, फ़ारसी की नई ध्वनियों च, प, ग, आदि से सामना पड़ा तो उन्होंने उनको अ़रबी-पोशाक— चे, पे, गाफ़ पहना दी। जब हिन्दोस्तान आये तो ट, ड, ड़ आदि से सामना पड़ने पर अ़रबी ही जामे में टे, डाल, ड़े आदि तैयार कर लिये। यहाँ तक कि सिन्धी में नागरी के सब महाप्राण और अनुनासिक, तथा सिन्धी के विशिष्ट अ़न्तःस्फुट अक्षरों को भी अ़रबी का लिबास पहना दिया गया। फिर 'नागरी' वाले तो औदार्य का दावा करते हैं, उनको परेशानी क्या है ? और नागरी में भी तो परिवर्तन होते रहे हैं। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में प्रयुक्त ळ को छोड़ चुके हैं, और ड़, ढ़ आदि को अवर्गीय दशा में जोड़ चुके हैं। नागरी लिपि में कुछ ही व्यंजनों का अभाव है। उनमें से कुछ को स्थायी तौर पर और कुछ को अस्थायी प्रयोग के लिए गढ़ सकते हैं। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने यह सेवा बड़ी सरलता, सफलता और सुन्दरता से की है।

स्वर और प्रयत्न (लहजा) का अन्तर।

अब रहे स्वर। जान लीजिए कि प्रमुख स्वर तीन ही हैं— अ, इ, उ— उनसे दीर्घ, संयुक्त (डिफ्थांग)आदि बनते हैं। अतिदीर्घ, प्लुत, लघु, अतिलघु आदि फिर अनेक हैं जो विश्व में अनेक रूपों में बोले जाते हैं। भारतीय वैदिक एवं संस्कृत व्याकरण में अनेक हैं। वे स्वतंत्र स्वर नहीं हैं, प्रयत्न हैं, लहजा हैं। वे सब न लिखे जा सकते हैं, न सब सर्वत्र बोले जा सकते हैं। डायाक्रिटिकल मार्क्स कोशों में छाप-छापकर चमत्कार भले ही दिखा दिया जाय, प्रयोग में तो, "एक ही रूप में", अपने निजी शब्द निजी देशों में भी नहीं बोले जाते। स्वर क्या, व्यंजन तक। एक शब्द "पहले" को लीजिए। सब जगह घूम आइए, देखिए उसका उच्चारण किन-किन प्रकार से होता है। एक बिहार प्रदेश को छोड़कर कहीं भी "पहले" का शुद्ध

उच्चारण सुनने को नहीं मिलेगा। पंजाब, बंगाल, मद्रास के अंग्रेज़ी के उद्‌भट विद्वान् अंग्रेज़ी में भाषण देते हैं—उनके लहजे (प्रयत्न) बिलकुल भिन्न होते हैं। फिर भी न उनका उपहास होता है, न अंग्रेज़ी भाषा का ह्रास।

शास्त्र पर व्यवहार को वरीयता (तर्जीह)।

शास्त्र और विज्ञान से हमको विरोध नहीं। लिपि की रचना, शोध, परिमार्जन, देश-काल-पात्र के अनुसार करते रहिए, परन्तु व्यवहारिकता को अवरुद्ध मत कीजिए। खाद्यपदार्थ के तत्त्वों का गुण-दोष, परिमाण, संतुलन, न्यूनाधिक्य, और खानेवाले की शक्ति के साथ उनका समन्वय, यह सब स्तुत्य है, कीजिए। किन्तु ऐसा नहीं कि उस शोध-समीक्षा के पूर्ण होने तक कोई भूखा रहकर मर ही जाय। थाली रखी है, उसे भोजन करने दीज़िए। आज सबसे ज़रूरी है राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का एक-दूसरे की ज्ञानराशि को समझने के लिए एक सम्पर्क लिपि की व्यापकता।

'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने स्थायी और मुक़ामी तौर पर अनेक स्वर-व्यंजनों की सृष्टि की है। दक्षिणी भाषाओं में प्रयुक्त एकार तथा ओकार की ह्रस्व, दीर्घ—दोनों मात्राएँ हम प्रयोग में ला रहे हैं। पढ़ने दीजिए, बढ़ने दीजिए। समस्त भाषाओं के ज्ञान-भण्डार को निजी क्षेत्रों से उठाकर धरातल पर नागरी लिपि के माध्यम से पहुँचाइए। नागरी लिपि मानव के पूर्वज की सृष्टि है, मानव मात्र की है। यहाँ से योरोप तक उसकी पहुँच है। यूरोपियों की लिपि-शैली नागरी थी। अक्षरों के रूप कुछ भी रहे हों। किन्हीं कारणों से सामीकुलों में भटककर अलफ़ा-बीटा के क्रम को थोड़े अन्तर के साथ अपना लिया। फिर पुराने संस्कारों से याद आया, तो स्वर-व्यंजन पृथक् कर दिये। किन्तु उनके क्रम-स्थान जैसे के तसे मिले-जुले रहे। सामीकुल की भाषाओं ने भी प्रमुख स्वर तीन ही माने हैं, ज़बर-ज़ेर-पेश (अ इ उ)। ै और ौ का उच्चारण अरबी, संस्कृत, अवधी और अपभ्रंश का एक जैसा है (अई, अऊ)। किन्तु खड़ी बोली हिन्दी-उर्दू के अै, और अौ, ऐनक, औरत जैसे। यह स्वरों की भिन्नता नहीं है, वरन् लह्‌जा (प्रयत्न) की भिन्नता है।

पूर्ण वैज्ञानिक कोई वस्तु मनुष्य के पल्ले नहीं पड़ सकती। "पूर्ण विज्ञान" भगवान् का नाम है। सा-रे-ग-म-प-ध-नी, ये सात स्वर; उनमें मध्य, मन्द, तार; कुछ में तीव्र, कोमल—बस इतने में भारतीय संगीत बँधा है। उनमें भी कुछ अदा नहीं हो सकते, अनुभूति मात्र हैं। किन्तु क्या इतने ही स्वर हैं? संगीत के स्वरों का इनके ही बीच में अनंत विभाजन हो सकता है। जैसे अणु से परमाणु का, और उसमें भी आगे। किन्तु शास्त्र एक वस्तु है, व्यवहार दूसरी। व्यवहार में उपर्युक्त षडज से निषाद तक को पकड़ में लाकर संगीत क़ायम है, क्या उसको रोककर इनके मध्य के स्वरों को पहले तलाश कर लिया जाय? तब तक संगीतको रोका जाय, क्योंकि वह पूर्ण नहीं है? क्या कभी वह पूर्ण होगा? पूर्ण

तो 'ब्रह्म' ही है। "बेस्ट् इज़् द ग्रेटेस्ट् ऍनिमी ऑफ़् गुड् ।" (Best is the greatest enemy of Good.) इसलिए शग़्ल और शोब्दों की आड़ न ली जाय। नागरी लिपि पर्याप्त सक्षम है।

विश्व-व्यापकता के संदर्भ में नागरी लिपि के स्वरों का रूप।

लिखने के भेद— यदि नागरी को हिन्दी क्षेत्र की ही लिपि बनाये रखना है तो इ, उ, ए, ऐ, लिखने के अपने पुरानेपन के मोह में मुग्ध रहिए। और यदि उसे राष्ट्रलिपि अथवा विश्व तक में, यहाँ तक कि सामीकुल में भी आसानी से ग्राह्य बनाना चाहते हैं तो गुजराती लिपि की भाँति अि, अु, अे, अै लिखिए। किन्तु कोई मजबूर नहीं करता। विनोबा जी ने भी इसका आग्रह नहीं रखा। आकार और रूप का मोह व्यर्थ है। पुराने ब्राह्मी-शिलालेखों को देखिए। आपके मौजूदा रूप वहाँ जैसे के तैसे कहाँ हैं?

संस्कृत के तिरस्कार से भाषा-विघटन।

मेरा स्पष्ट मत है कि "संस्कृत" को राष्ट्रभाषा होना चाहिए था। वह होने पर, यह भाषा-विवाद ही न उठता। सबको ही (हिन्दी-भाषी को भी) समान श्रम से संस्कृत सीखने पर, स्पर्धा-कटुता का जन्म न होता, संस्कृत का अपार ज्ञान-भण्डार सबको प्रत्यक्ष होता, और हिन्दी की पैठ में भी प्रगति ही होती। उर्दू-हिन्दी की अपेक्षा, अन्य सभी भारतीय भाषाएँ, संस्कृत के अधिक समीप हैं। इसलिए कि प्रायः सभी भारतीय लिपियों में, संस्कृत भाषा उसी प्रकार अबाध गति से लिखी जाती है जिस प्रकार नागरी लिपि में। संस्कृत ही एक भाषा है जिसकी अनेक लिपियाँ अपनी हैं। किन्तु अब वह बात हाथ से बेहाथ है; अब "हिन्दी" ही राष्ट्रभाषा सबको मान्य होना चाहिए। यह इसलिए कि अन्य भारतीय भाषाओं में हिन्दी ही एक भारतीय भाषा है जो देश के हर स्थल में कमोबेश प्रविष्ट है।

आज क्या करना है?

सार यह कि हुज्जत कम, काम होना चाहिए। शास्त्र पर व्यवहार प्रबल है। समय बड़ा बलवान है, वह आवश्यकतानुसार ढलाई कर देता है। हिन्दी-क्षेत्र में ही घूम-घूमकर प्रतिमा-अनावरण, हिन्दी का महिमा-गान, अनुवादों की धूम, अमुक भाषा की हिन्दी को यह देन, अमुक भाषा में हिन्दी की यह छाप— यह सब दिशाविहीनता, क़िलेबन्दी और अभियान त्यागकर, नागरी लिपि में विश्व का साहित्य लाइए। टूटी-फूटी ही सही, हिन्दी बोलना भी— ("ही" नहीं बल्कि "भी") बोलने का अभ्यास कीजिए। लिपि और भाषा की सार्थकता होगी। मानवमात्र का कल्याण होगा। हमारी एकराष्ट्रीयता और विश्वबन्धुत्व चरितार्थ होगा।

—नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ।

अनुवादकीय

इस तीसरी जिल्द में शस्त्रनाममाला और चरित्रोपाख्यान के कुछ भागों का अनुवाद पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। शस्त्रनाममाला दृष्टकूट शैली में रचित गुरू गोविंदसिंहजी की अनुपम कृति है जिसमें शस्त्र और शास्त्रीयता का सुन्दर समन्वय दिखाई पड़ता है। यह सर्वविदित है कि गुरू गोविंदसिंह शस्त्रों को ही गुरु, पीर सब कुछ मानते थे। (असि कृपाण खंडो खड़ग तुपक तबर अरु तीर। सैफ सरोही सैहथी यहै हमारे पीर।) इस शस्त्रनाममाला नामक ग्रंथ में गुरुजी ने जहाँ तलवार, चक्र, तीर, पाश और बंदूक़ (तुपक) आदि पाँच अस्त्र-शस्त्रों का वर्णन किया है, वहीं साथ ही साथ इन अस्त्र-शस्त्रों के साथ पौराणिक भारतीय नायकों का संबंध दिखलाकर अपने भारतीय वाङ्मय के गंभीर ज्ञान का भी परिचय दिया है। शस्त्र-अस्त्र शक्ति के प्रतीक हैं और यह शक्ति उस परम शक्तिमान से भिन्न नहीं है। भारतीय धर्म-दर्शन में उस शक्ति को चंडी, दुर्गा आदि स्थूल रूपों में परिकल्पित किया गया है, परन्तु जैसा कि हम जानते हैं कि सिक्ख-धर्म देवी-देवताओं के ठोस-अस्तित्व में विश्वास नहीं करता और इस प्रकार की कल्पनाओं को विभिन्न मत-मतान्तरिक वाद-विवादों की जड़ मानता है, गुरू गोविंदसिंहजी ने उस शक्ति का प्रतीक इन अस्त्र-शस्त्रों को माना है। इस शस्त्रनाममाला को कुछ विद्वानों ने शस्त्रों के नामों का कोश भी माना है।

इस रचना की भाषा ब्रज है और अड़िल्ल, सोरठा, चौपाई, दोहा आदि छन्दों का प्रयोग किया गया। रीतिकालीन परम्पराओं के अनुरूप ही रचयिता ने शब्द-चमत्कार का पूरा-पूरा ध्यान रखा है और बड़े लंबे-चौड़े मोड़ देने के बाद वास्तविक अर्थ तक पहुँचा गया है; जैसे-"तिमिरहा भगणि सुत चरपति शत्रु"— बंदूक़। दूसरी ओर इस प्रकार से शस्त्रों के नाम लिखना गोपनीयता के दृष्टिकोण से एक सेनानायक के लिए नितांत आवश्यक भी है। गुरू गोविंदसिंह जैसे महान योद्धा की लेखनी से इस प्रकार के साहित्य का सृजन स्वाभाविक ही है। उन्होंने शस्त्र-शास्त्र सब ओर से अपने सिक्खों को निपुण बनाने के लिए कमर कसी थी और अपने ४२ वर्ष के स्वल्प जीवनकाल में ही वे अपने उद्देश्य में सफल भी हो गए थे।

चरित्रोपाख्यानों के संबंध में मैं यथासंभव पहली सैंची की भूमिका में काफ़ी कुछ कह चुका हूँ, अतः यहाँ उसे फिर से दुहराना न तो उचित है और न ही संभव है। तीसरी जिल्द के इतने शीघ्र प्रकाशन के लिए भुवन वाणी ट्रस्ट के प्रमुख न्यासी श्री नन्दकुमार अवस्थी जी का मैं हृदय से आभारी हूँ और मुझे आशा है कि चौथी और अंतिम जिल्द भी इसी वर्ष के अन्त तक छपकर पाठकों तक पहुँच जायगी।

जोधसिंह

रीडर, पंजाबी विश्वविद्यालय, शोध-विभाग
पटियाला, दिनांक १८-८-१९८४

एम०ए०, पीएच्० डी०, साहित्यरत्न

प्रकाशकीय प्रस्तावना

श्री दसम गुरूग्रन्थ साहिब

लोकप्रख्यात धर्मग्रन्थ 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' के हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण का प्रकाशन दो वर्ष पूर्व सम्पूर्ण हुआ। पावन ग्रन्थ ३७६४ पृष्ठों और चार सेंचियों में प्रकाशित होकर हिन्दी-जगत के सम्मुख अवतीर्ण हुआ और जनता ने बड़ी उत्कण्ठा और भावावेश में उसका स्वागत किया। इस सोल्लास प्रतिक्रिया से प्रोत्साहित होकर हमने तत्काल श्री दसम गुरूग्रन्थ साहिब के नागरी रूपान्तर की योजना बनायी और उसी के फलस्वरूप श्री दसम गुरूग्रन्थ साहिब की प्रथम, द्वितीय और तृतीय सैंचियाँ पाठकों के सम्मुख अब तक प्रस्तुत हो चुकीं। शेष चौथी सैंची मुद्रित हो रही है।

विषय-प्रवेश

भुवन वाणी ट्रस्ट के 'देवनागरी अक्षयवट' की देशी-विदेशी प्रकाण्ड-शाखाओं में, संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी, कश्मीरी, गुरमुखी, राजस्थानी, सिन्धी, गुजराती, मराठी, कोंकणी, मलयाळम, तमिळ, कन्नड, तेलुगु, ओड़िया, बँगला, असमिया, मैथिली, नेपाली, अंग्रेज़ी, हिब्रू, ग्रीक, अरामी आदि के वाङ्मय के अनेक अनुपम ग्रन्थ-प्रसून और किसलय खिल चुके हैं, अथवा खिल रहे हैं। इस नागरी अक्षयवट की गुरमुखी शाखा में प्रस्तुत यह 'दसम गुरूग्रन्थ साहिब' ग्रन्थ तीसरा पल्लव-रत्न है।

मूल उद्देश्य और उसकी पूर्ति

भूमण्डल पर देश-काल-पात्र के प्रभाव से मानव जाति, विभिन्न लिपियाँ और भाषाएँ अपनाती रही है। उन सभी भाषाओं में अनेक दिव्य वाणियाँ अवतरित हैं, जो विश्वबन्धुत्व और परमात्मपरायणता का पथ-प्रदर्शन करती हैं; किन्तु उन लिपियों और भाषाओं से अपरिचित होने के कारण हम इस तथ्य को नहीं देख पाते। अपनी निजी लिपि और अपनी भाषा में ही सारा ज्ञान और सारी यथार्थता समाविष्ट मानकर,

दूसरे भाषा-भाषियों को उस ज्ञान से रहित समझते हुए हम भेद-विभेद के भ्रमजाल में भ्रमित होते हैं।

भूमण्डल की बात तो दूर, हमारे अपने देश 'भारत' में ही अनेक भाषाएँ और लिपियाँ प्रचलित हैं। एक ब्राह्मी लिपि के मूल से उत्पन्न होने के बावजूद उन सबसे परिचित न होने के कारण हम अपने को परस्पर विघटित समझने लगते हैं। सारी लिपियाँ और भाषाएँ सीखना-समझना सम्भव भी नहीं है।

सुतरां, यथासाध्य विश्व, और अनिवार्यतः स्वराष्ट्र की सभी भाषाओं के दिव्य वाङ्मय को राष्ट्रभाषा हिन्दी और सम्पर्कलिपि नागरी में सानुवाद लिप्यन्तरित करके, क्षेत्रीय स्तर से बढ़ाकर उसको सारे राष्ट्र को सुलभ कराना, समस्त सदाचार-साहित्य-निधि को सारे देश की सम्पत्ति बनाना, यह संकल्प भगवान की प्रेरणा से सन् १९४७ में मैंने अपनाया, और इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु १९६९ ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना हुई। 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' और प्रस्तुत 'श्री दसम गुरूग्रन्थ साहिब' के हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण भी भाषाई सेतुबन्ध की इसी पुष्कल शृंखला की कड़ी हैं।

आदिग्रन्थ तथा दसम गुरूग्रन्थ साहिब की भाषा

आदि श्री गुरूग्रन्थ साहिब की लिपि गुरमुखी है। पृष्ठ ३ पर प्रस्तुत गुरमुखी-देवनागरी वर्णमाला चार्ट से स्पष्ट है कि गुरमुखी अक्षर प्रायः नागरी लिपि के अनुरूप हैं और सामान्य ध्यान रखने पर गुरमुखी और हिन्दी-भाषी परस्पर दोनों लिपियों का सरलता से पाठ कर सकते हैं। ग्रन्थ की गुरुवाणियाँ अधिकांश पंजाब प्रदेश में अवतरित हैं और इस कारण जन-साधारण उनकी भाषा को पञ्जाबी के सदृश अनुमान करता है; जबकि बात ऐसी नहीं है। श्री गुरूग्रन्थ साहिब की भाषा आधुनिक पञ्जाबी भाषा की अपेक्षा हिन्दी भाषा के अधिक समीप है और हिन्दी-भाषी को पञ्जाबी-भाषी की अपेक्षा गुरु-वाणियों का आशय अधिक बोधगम्य है।

दूसरी ओर, यद्यपि श्री दसम गुरूग्रन्थ की भी लिपि गुरमुखी है, परन्तु इसकी भाषा प्रायः अपभ्रंश हिन्दी में कविताबद्ध है। इसकी भाषा पञ्जाबी-भाषियों के लिए और अधिक दुरूह किन्तु हिन्दी-भाषियों के लिए भलीभाँति जानी-पहचानी है।

एक और भ्रम! —उसका निवारण

दूसरी भ्रान्ति है कि सामान्यजन समझते हैं कि ये 'गुरूग्रन्थ'

सिक्ख-पन्थ-मात्र के धर्मग्रन्थ हैं, उनमें सिक्ख अनुयायियों के लिए ही विधि-निषेध वर्णित होंगे; जबकि तथ्य यह नहीं है। अल्बत्ता यह सही है कि संकट और त्रास के युग में एक संत्रस्त मानव-समूह इन वाणियों के बल पर संगठित हुआ और अपूर्व उत्सर्ग एवं बलिदान द्वारा उसने समाज को परित्राण दिलाया। परन्तु दिव्य गुरुवाणियों में किसी वर्ग-विशेष, पक्ष-विपक्ष, मित्र-शत्रु की झलक मात्र नहीं मिलती। सामाजिक एवं धार्मिक आडम्बरों से बंधनमुक्त करते हुए, शाश्वत सदाचार और सद्विचार के द्वारा गुरु-चिन्तन, आत्म-परमात्म-चिन्तन और मिलन की ओर मानव मात्र को उन्मुख किया गया है। कहीं यह गन्ध भी नहीं मिलती कि कौन उत्पीड़ित है, कौन उत्पीड़क। मानवीय दुर्बलताओं और दुर्वासनाओं को ही शत्रु मानकर, साक्षात् ईश्वरस्वरूप गुरु की कृपा से, उनसे स्वतः त्राण, और अन्ततः आवागमन से मुक्ति पाने का नाद ग्रन्थ वाणियों में ओतप्रोत है।

गुरमुखी में प्राप्त ऐसे सार्वभौम दिव्य ग्रन्थों के अनुवाद पंजाबी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं में भले ही हुए हैं, किन्तु आम जनता को बोधगम्य हिन्दी टीका उपलब्ध नहीं है। ग्रन्थ साहिब के आंशिक हिन्दी भाष्य तो देखने को मिले; परमानन्द उदासी द्वारा श्री जपुजी की विशद व्याख्या एवं कई अन्य टीकाएँ भी। किन्तु एक तो वे टीकाएँ समग्र ग्रन्थ की नहीं हैं, आंशिक हैं, दूसरे वे व्याख्याएँ विस्तर में हैं और विद्वानों के लिए ही अधिक उपयुक्त हैं। जनसाधारण की सहज पैंठ उनमें संभव नहीं। इस विचार से प्रेरित होकर ही श्री गुरूग्रन्थ साहिब एवं श्री दसम गुरूग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण सामान्य जनता के कल्याणार्थ प्रस्तुत करना आवश्यक प्रतीत हुआ।

गुरमुखी लिपि की अलौकिकता

विश्व की प्रायः सभी लिपियाँ अपने निजी क्षेत्र के नाम पर प्रसिद्ध हैं। किन्तु संस्कृत, देवनागरी और गुरमुखी इसका अपवाद हैं। ये संस्कृति और धर्म का प्रतीक हैं। बल्कि गुरमुखी का तो नाम ध्यान में आते ही सन्तों और गुरुओं का स्मरण हो आता है। रोम-रोम में एक पवित्रता छा जाती है। वैसे तो गुरमुखी में सभी प्रकार का साहित्य मौजूद है, परन्तु गुरमुखी का नाम लेते ही 'श्री आदि गुरूग्रन्थ साहिब' का पवित्र स्मरण मूर्तमान हो जाता है।

श्री दसम गुरूग्रन्थ की तीसरी सैंची का नागरी में अवतरण

लोकप्रख्यात धर्मग्रन्थ 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' का पावन ग्रन्थ ३७६४ पृष्ठों और चार सैंचियों में पहले ही प्रकाशित होकर हिन्दी-जगत के

सम्मुख अवतीर्ण हो चुका और जनता ने उत्कण्ठा और भावावेश में उसका स्वागत किया। इस सोल्लास प्रतिक्रिया से प्रोत्साहित होकर हमने तत्काल श्री दसम गुरूग्रन्थ साहिब के नागरी रूपान्तर की योजना बनायी और श्री दसम गुरूग्रन्थ साहिब की प्रथम व द्वितीय सैंची गत वर्षों में प्रस्तुत करने के उपरान्त अब यह तीसरी सैंची पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। हमारे माननीय अनुवादक श्री डॉ० जोधसिंह एम्० ए०, पीएच्० डी०, साहित्यरत्न के अनवरत श्रम के फलस्वरूप इतनी शीघ्र तीसरी सैंची भी आज पाठकों को अर्पित है। शेष चौथी अर्थात् अन्तिम सैंची मुद्रित हो रही है।

प्रथम व द्वितीय सैंची में दी प्रकाशकीय प्रस्तावना

ट्रस्ट का भाषाई उद्देश्य, लिप्यन्तरण की महिमा, अब तक का कार्यकलाप, पवित्र गुरुवाणी की भाषा, श्री आदि गुरूग्रन्थ साहिब का अति विशुद्ध नागरी लिप्यन्तरण तथा सर्वप्रथम हिन्दी अनुवाद का अवतरण, हिन्दी-जगत में उनका स्वागत, राष्ट्रीय एकता और विश्वबन्धुत्व की भावना, गुरुवाणी की अमृतवर्षा, दशगुरु-अवतार, क्रमशः शान्त-रस से वीर, और वीर से रौद्र-रस का प्राकट्य, गुरमुख-मनमुख, ज्योति में ज्योति का समावेश आदि पर एक विशद प्राक्कथन, श्री दसम गुरूग्रन्थ साहिब की प्रथम सैंची में दिया जा चुका है। दूसरी सैंची में गुरमुखी नागरी वर्णमाला चार्ट तथा सकल भारतीय भाषाओं के संदर्भ में नागरी लिपि की उपयोगिता का उल्लेख है। दूसरी सैंची के प्रकाशकीय की पुनरावृत्ति ही प्रायः इस तीसरी सैंची में दी जा रही है। अब प्रकाशकीय प्रस्तावना का परिशिष्टांश और त्रिया-चरित्र तथा ज़फ़रनामा आदि पर प्रकाश चौथी सैंची में प्रस्तुत किया जायगा।

श्री दसम गुरूग्रन्थ साहिब का नागरी लिप्यन्तरण

दसम गुरूग्रन्थ की भाषा "आदिग्रन्थ" की भाषा से पृथक् है। इसमें प्राचीन ब्रजभाषा में कवित्तों की रचना है। मूल पाठ गुरमुखी लिपि से पृथक् न हो और काव्य के पढ़ने के धारा-प्रवाह में विघ्न न हो, इसके लिए नागरी लिप्यन्तरण में विशेष सतर्कता रखी गई है। ग्रन्थ का नागरी लिप्यन्तरण ट्रस्ट के कुशल विद्वानों ने बड़े श्रम और अनन्य निष्ठा से किया है।

गुरमुखी एवं नागरी ग्रन्थों के पाठ के मिलान की सुविधा

गुरमुखी और हिन्दी संस्करण में कौन पाठ एक-दूसरे में कहाँ है, यह जानने के लिए प्रथम और द्वितीय सैंची के अनुसार इस तीसरी सैंची में

भी हिन्दी मूल पाठ के बीच में छोटे आकार में पृष्ठ-संख्या दी गई है। उदाहरण— हिन्दी संस्करण का देखिए पृष्ठ २४६। उसमें मूलपाठ में एक स्थल पर छपा है (मू०ग्रं०८४०)। समझिए कि पृष्ठ २४६ का यह नागरी पाठ गुरमुखी मूल ग्रन्थ में ८४० पृष्ठ पर और गुरमुखी ग्रन्थ के पृष्ठ ८४० का यह पाठ नागरी ग्रन्थ के २४६ पृष्ठ पर प्राप्त है।

विश्वबन्धुत्व के सम्बन्ध में ट्रस्ट की अपेक्षाएँ

प्रश्न यह उठता है कि विश्ववाङ्मय के परस्पर लिप्यन्तरण और अनुवाद से मानव मात्र में सद्भावना की उपलब्धि क्या संभव है? मेरा नम्र निवेदन है कि यह कठिन है। सृष्टि के आरम्भ से विविध भूखण्डों में समय-समय पर अवतारी पुरुष और आप्त ग्रन्थ प्रकट होते रहे हैं। फिर भी संगठन और विघटन, दोनों ही वर्तमान रहे। हाँ, उनमें चढ़ाव-उतार होता रहता है। तब हमारे टिट्टिभि-प्रयास की क्या बिसात है। साथ ही दूसरा प्रश्न हम रखते हैं कि यह मानते हुए कि विश्व का समस्त वाङ्मय मानव मात्र की सम्पत्ति है, क्या वह समग्र मानव की पहुँच में न बनाया जाय? किसी एक वाङ्मय को यदि हम ग़ैर मानकर उससे विरक्त रहते हैं तो हम अपने को निर्धन बनाते हैं। उसी भाँति यदि कोई समूह किसी वाङ्मय विशेष को अपनी ही पूँजी मानकर शेष मानव समाज को उससे वञ्चित रखता है तो वह व्यक्ति अथवा समूह उस कृपण के सदृश है जो किसी निधि का न स्वयं उपभोग कर पाता है, न किसी अन्य को उपभोग करने देता है।

ट्रस्ट की यह मान्यता है कि धरातल का समस्त वाङ्मय मानवमात्र की सम्पत्ति है। लिपि और भाषा के पट को अनावृत कर उस सबको सर्वसुलभ बनाना चाहिए। भले ही मानव की पार्थक्य-भावना का मूलनाश न हो, परन्तु एकीकरण की ओर कर्तव्य करते रहना हमारे लिए श्रेयस्कर है। छोटे से भी छोटा सत्कार्य कभी व्यर्थ नहीं जाता, नष्ट नहीं होता—

"पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।
नहि कल्याणकृत्कश्चित् दुर्गतिं तात गच्छति॥"

—गीता ६ : ४०

शान्त से वीररस का आविर्भाव

शहीद होते समय गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने शिष्यों और समाज को पहली बार यह उपदेश किया कि पराकाष्ठा को पहुँची शान्ति के विफल होने पर अब शक्ति के उपयोग का अवसर आ गया।

यहीं से गुरुपरम्परा और उनके अनुगत समाज में वीररस का भी उदय हुआ। त्याग और तप के अतिरिक्त खड्ग भी उठा और तब से श्री गुरु हरगोविंद साहिब, श्री गुरु हरिराय, श्री गुरु हरिकृष्ण, अनेकों युद्ध एवं छापों में आततायी शासन से मोर्चा लेते, जूझते रहे। नवम गुरु श्री तेगबहादुर, शहीद हुए।

वीर से रौद्र-रस

गुरु महाराजों की तलवार का लोहा ज्यों-ज्यों प्रखर होता गया, शासन का जुल्म त्यों-त्यों बढ़ता गया। नवम गुरु श्री तेगबहादुर जी के बलिदान होते ही उनके सुपुत्र दशम गुरु श्री गुरु गोविन्दसिंह जी ने खुलकर शासन के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। रौद्र ने वीररस का स्थान ग्रहण किया। बिजली के सदृश उन्होंने देश के कोने-कोने में घूमकर अतीत की वीर-गाथाओं और महापुरुषों के पराक्रम एवं ओज के चरित्रों के वीरकाव्य द्वारा समस्त प्रजा में वीर और रौद्ररस को जाग्रत किया। पग-पग पर छापे और युद्ध—शासन की सेना विकल हो उठी। किन्तु समाज की आवश्यकता तो इस रुद्रावतार की शहीदी की थी। दिव्यतेजस्वरूप गुरु गोविन्दसिंह जी अपने चार पुत्रों-सहित दिव्यलोक को पधारे।

दसम गुरूग्रन्थ साहिब

दसमेश इन अन्तिम गुरु श्री गोविन्दसिंह जी महाराज के वीरकाव्य का संग्रह श्री दसम गुरूग्रन्थ साहिब का ही हिन्दीस्वरूप आज पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

सुपरिणाम

ये अमर बलिदान तो हुए, परन्तु नृशंस शासन ध्वस्त हो गया। दस गुरुओं का अमर ब्रह्मतेज 'श्री गुरूग्रन्थ साहिब' के रूप में आज भी हमको अलौकिक ज्ञान दे रहा है। वाहगुरू की फ़तह हुई।

गुरुर्ब्रह्मागुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

गुरु ही परमात्मस्वरूप है। गुरु ही सर्वस्व है।

आभार-प्रदर्शन

सर्वप्रथम हम सरदार डॉ० जोधसिंह जी के कृतज्ञ हैं, जिन्होंने निस्पृह

भाव से ट्रस्ट के आग्रह पर अनुवाद जैसे जटिल और गहन कार्य को राष्ट्रहित में अति श्रम एवं तत्परता से किया। सर्वाधिक श्रेय उनको है।

सदाशय श्रीमानों **और** उत्तरप्रदेश शासन (राष्ट्रीय एकीकरण विभाग) के प्रति भी हम आभारी हैं, जिनकी अनवरत सहायता से 'भाषाई सेतुकरण' के अन्तर्गत अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन चलता रहता है।

सौभाग्य की बात है कि भारत सरकार के राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) तथा शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय ने राष्ट्रभाषा हिन्दी-सहित सभी भाषाओं की समृद्धि और व्यापकता के लिए एक जोड़लिपि "नागरी" के प्रसार पर उपयुक्त बल दिया। उनकी उल्लेखनीय सहायता से हमको विशेष बल मिला है और उपर्युक्त सबके फलस्वरूप गुरमुखी— श्री दसम गुरूग्रन्थ साहिब की तीसरी सैंची का प्रकाशन प्रस्तुत वर्ष में सम्पूर्ण हो सका है।

विश्ववाङ्मय से निःसृत अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी पट, सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

अमर भारती सलिला की 'गुरमुखी' सुपावन धारा।
पहन नागरी पट, 'सुवेवि' ने भूतल-भ्रमण विचारा॥

नन्दकुमार अवस्थी
दिनांक ४-१०-१९८४ **मुख्यन्यासी सभापति,**
भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

विषय-सूची

विषय पृष्ठ

श्री शस्त्रनाममाला पुराण २५
चक्र नाम-कथन २८
श्रीबाण-वर्णन ३४
श्रीपाश के नाम ५३
तुपक के नाम ७४
पख्यान-चरित्र-लेखन १८२
चण्डी-चरित्र-कथन (प्रथम) १८२
द्वितीय चित्रमती-चरित्र-कथन १९१
तृतीय ग्रामीण की पुत्री का चरित्र-कथन १९६
चतुर्थ घुड़की-चरित्र-कथन १९७
पंचम सहजकला-चरित्र-कथन १९९
षष्ठम मालमती ,, ,, २०१
सप्तम जैनाबादी ,, ,, २०३
अष्टम अनुरागमती ,, ,, २०५
नवम जगज्योतिमती ,, ,, २०७
दशम चित्रकला ,, ,, २०९
ग्यारहवाँ बनिया की स्त्री का चरित्र-कथन २११
बारहवाँ राधिका-चरित्र-कथन २१४
तेरहवाँ गमनीय ,, ,, २२०
चौदहवाँ पुष्पमती ,, ,, २२१
पन्द्रहवाँ भानुमती ,, ,, २२९
सोलहवाँ लधिया ,, ,, २२४
सत्रहवाँ वितनमती ,, ,, २३१
अठारहवाँ छलछिद्रकुमारी-चरित्र-कथन २३५
उन्नीसवाँ नादिराबानो-चरित्र-कथन २३७
बीसवाँ लालमती ,, ,, २३९
इक्कीसवाँ अनूपकुँवरि ,, ,, २४१
बाईसवाँ ,, ,, ,, २५१
तेईसवाँ ,, ,, ,, २५२
चौबीसवाँ चन्द्रमती ,, ,, २५४

विषय	पृष्ठ
पचीसवाँ प्रेमकुमारी चरित्र-कथन	२६१
छब्बीसवाँ नृत्यमती ,, ,,	२६२
सत्ताईसवाँ व्योमकला ,, ,,	२६४
अट्ठाईसवाँ सूर्यछटा ,, ,,	२६६
उन्तीसवाँ मदनमती ,, ,,	२६८
तीसवाँ चाचरमती ,, ,,	२७१
इकतीसवाँ मानमंजरी ,, ,,	२७४
बत्तीसवाँ रसमंजरी ,, ,,	२७५
तेंतीसवाँ छत्रमंजरी ,, ,,	२७६
चौंतीसवाँ छविमानमती चरित्र-कथन	२८३
पैंतीसवाँ रुक्मकेतु ,, ,,	२८४
छत्तीसवाँ फतहमती ,, ,,	२८६
सैंतीसवाँ गेंडेखाँ ,, ,,	२८८
अड़तीसवाँ राजमती ,, ,,	२८९
उनतालीसवाँ ,, ,, ,,	२९३
चालीसवाँ दिलजानमती ,, ,,	२९५
इकतालीसवाँ प्रीतिमंजरी ,, ,,	२९८
बयालीसवाँ रुस्तमकला ,, ,,	२९९
तेंतालीसवाँ संख्या ,, ,,	३००
चवालीसवाँ तिलकमंजरी ,, ,,	३०२
पैंतालीसवाँ त्रियराजमती चरित्र-कथन	३०४
छियालीसवाँ नूरम ,, ,,	३०५
सैंतालीसवाँ बादलकुंवरि ,, ,,	३०७
अड़तालीसवाँ नूरजहाँ ,, ,,	३०८
उनचासवाँ नंदमती ,, ,,	३११
पचासवाँ पुष्पमंजरी ,, ,,	३१२
इक्यावनवाँ शीलमंजरी ,, ,,	३१४
बावनवाँ इन्द्रप्रभा ,, ,,	३१६
तिरपनवाँ विजयकुंवरि ,, ,,	३३२
चौवनवाँ बालमती ,, ,,	३३४
पचपनवाँ रूपमती ,, ,,	३३६
छप्पनवाँ चन्द्रकला ,, ,,	३४१
सत्तावनवाँ इन्द्रमती ,, ,,	३४३
अट्ठावनवाँ चित्रदेवी ,, ,,	४४४

विषय	पृष्ठ
उनसठवाँ लाडमकुँवरि-सुहागमदेवी-चरित्र-कथन	३४५
साठवाँ रंगराय-चरित्र-कथन	३४६
इकसठवाँ सेठानी-चरित्र-कथन	३४८
बासठवाँ महासिंह-चरित्र-कथन	३५०
तिरसठवाँ प्रबलसिंह की पत्नी का चरित्र-कथन	३५१
चौंसठवाँ दंतप्रभा-चरित्र-कथन	३५३
पैंसठवाँ मृत्युसिंह की पत्नी का चरित्र-कथन	३५४
छाछठवाँ वजीर की पुत्री का चरित्र-कथन	३५६
सड़सठवाँ रूपकला-चरित्र-कथन	३५९
अड़सठवाँ धनीपुत्र ,, ,,	३६२
उनहत्तरवाँ राजकला ,, ,,	३६६
सत्तरवाँ चित्रप्रभा ,, ,,	३६८
इकहत्तरवाँ सिरमौर राज्य के राजा का चरित्र-कथन	३७०
बहत्तरवाँ इन्द्रमुखी-चरित्र-कथन	३७२
तिहत्तरवाँ पुष्पावती ,, ,,	३७४
चौहत्तरवाँ बैरम खाँ ,, ,,	३७६
पचहत्तरवाँ बख्तयार ,, ,,	३७७
छिअत्तरवाँ ,, ,, ,,	३७८
सतहत्तरवाँ भागवती ,, ,,	३८०
अठहत्तरवाँ गीगो ,, ,,	३८२
उन्नासीवाँ विश्वमती ,, ,,	३८३
अस्सीवाँ राधा ,, ,,	३८४
इक्यासीवाँ दृगधन्याँ ,, ,,	३८५
वयासीवाँ शाहजहाँ की बेगम का चरित्र-कथन	४००
तिरासीवाँ राजो चरित्र-कथन	४०५
चौरासीवाँ इन्द्रमती ,, ,,	४०७
पचासीवाँ रूपकला ,, ,,	४१०
छियासीवाँ चन्द्रकला ,, ,,	४१२
सत्तासीवाँ चन्द्रप्रभा ,, ,,	४१३
अट्ठासीवाँ कंजप्रभा ,, ,,	४१४
नवासीवाँ राधा ,, ,,	४१६
नब्बेवाँ दीपकला ,, ,,	४१८
इक्यानबेवाँ कामकंदला ,, ,,	४१९
बानबेवाँ स्वरूपकला ,, ,,	४२८

विषय पृष्ठ

तिरानबेवाँ जुलाही का चरित्र-कथन ४२९
चौरानबेवाँ दीनदयाल की प्रेमिका का चरित्र-कथन ४३३
पंचानबेवाँ बिन्दु-चरित्र-कथन ४३४
छियानबेवाँ गौहरराय ,, ,, ४३५
सत्तानबेवाँ त्रिपुरारिमती ,, ,, ४४१
अट्ठानबेवाँ चित्रदेवी ,, ,, ४५१
निन्यानबेवाँ चन्द्रकला ,, ,, ४५५
सौवाँ चित्रकुँवरि ,, ,, ४५८
एक सौ एकवाँ सोहनी ,, ,, ४६०
,, सौ दूसरा कैकेयी ,, ,, ४६१
,, सौ तीसरा बूबना ,, ,, ४६६
,, सौ चौथा जाट की स्त्री का चरित्र-कथन ४७१
,, सौ पाँचवाँ तासबेग के दूत का ,, ,, ४७३
,, सौ छठवाँ चार धूर्तों का चरित्र-कथन ४७५
,, सौ सातवाँ मैनकुँवरि ,, ,, ४७६
,, सौ आठवाँ रम्भा ,, ,, ४७७
,, सौ नौवाँ उर्वशी ,, ,, ४८६
,, सौ दसवाँ रूपेश्वर की प्रेमिका का चरित्र-कथन ४९७
,, सौ ग्यारहवाँ राजप्रभा-चरित्र-कथन ५०१
,, सौ बारहवाँ चित्रकला ,, ,, ५०९
,, सौ तेरहवाँ कृष्णकुमारी ,, ,, ५१२
,, सौ चौदहवाँ वेश्या ,, ,, ५१५
,, सौ पन्द्रहवाँ अहल्या ,, ,, ५२२
,, सौ सोलहवाँ तिलोत्तमा ,, ,, ५२६
,, सौ सत्रहवाँ शची ,, ,, ५२९
,, सौ अट्ठारहवाँ मंत्रकला ,, ,, ५३१
,, सौ उन्नीसवाँ रुद्रकला ,, ,, ५३३
,, सौ बीसवाँ विष्णु ,, ,, ५३६
,, सौ इक्कीसवाँ सेवक का ,, ,, ५४१
,, सौ बाईसवाँ कुंकुम और घनसार का चरित्र-कथन ५४२
,, सौ तेईसवाँ भगवान विष्णु का चरित्र-कथन ५४५
,, सौ चौबीसवाँ फूलमती ,, ,, ५४९
,, सौ पचीसवाँ इन्द्रमती ,, ,, ५५१
,, सौ छब्बीसवाँ तपसा देश की स्त्री का चरित्र-कथन ५५७

विषय पृष्ठ

एक सो सत्ताईसवाँ रत्नसिंह चरित्र-कथन ५५९
,, सौ अट्ठाईसवाँ मानमती-चरित्र-कथन ५६०
,, सो उन्तीसवाँ साहिबाँ ,, ,, ५६७
,, सौ तीसवाँ सुमतिकुमारी ,, ,, ५७३
,, सो इकतीसवाँ भागमती ,, ,, ५७५
,, सो बत्तीसवाँ सुघरकुमारी ,, ,, ५७७
,, सौ तैंतीसवाँ सुजनिकुँवरि ,, ,, ५८२
,, सो चौंतीसवाँ बाजमती ,, ,, ५८६
,, सो पैंतीसवाँ कलाकुँवरि ,, ,, ५८९
,, सो छत्तीसवाँ भ्रमरमती ,, ,, ५९२
,, सो सैंतीसवाँ द्रौपदी-चरित्र-कथन ५९५
,, सो अड़तीसवाँ आभावती ,, ,, ६०२
,, सो उनतालीसवाँ मानिनेश्वरी ,, ,, ६०३
,, सो चालीसवाँ मेघमती ,, ,, ६०६
,, सो इकतालीसवाँ पार्वती ,, ,, ६०६
,, सो बयालीसवाँ उषा ,, ,, ६०८
,, सो तेंतालीसवाँ राजमती ,, ,, ६१९
,, सो चवालीसवाँ शृंगारवती ,, ,, ६२४
,, सो पैंतालीसवाँ भागवती ,, ,, ६२७
,, सो छियालीसवाँ प्रमोदकुँवरि ,, ,, ६२९
,, सो सैंतालीसवाँ खैरी ,, ,, ६३०
,, सो अड़तालीसवाँ वेश्या ,, ,, ६३३
,, सो उनचासवाँ पर्वतसिंह की स्त्रियों का चरित्र-कथन ६३६
,, सो पचासवाँ गर्ववती-चरित्र-कथन ६३८
,, सो इक्यावनवाँ गुमानमती ,, ,, ६४०
,, सो बावनवाँ लक्ष्मी ,, ,, ६४३
,, सो तिरपनवाँ नाजमती ,, ,, ६४५
,, सो चौवनवाँ दर्पकला ,, ,, ६४९
,, सो पचपनवाँ प्राणमती ,, ,, ६५३
,, सो छप्पनवाँ कन्दर्पकला ,, ,, ६५४
,, सो सत्तावनवाँ दमयंती ,, ,, ६५६
,, सो अट्ठावनवाँ ताम्रकला ,, ,, ६६१
,, सो उनसठवाँ बीरकला ,, ,, ६६४
,, सो साठवाँ रुक्मकला ,, ,, ६६६

विषय	पृष्ठ
एक सौ इकसठवाँ स्वर्णमती चरित्र-कथन	६६८
एक सौ बासठवाँ चित्रमती ,, ,,	६७४
एक सौ तिरसठवाँ विजयकुँवरि-चरित्र-कथन	६७६
एक सौ चौंसठवाँ उदयपुरी-चरित्र-कथन	६७८
एक सौ पैंसठवाँ भानुकला ,, ,,	६८१
एक सौ छाछठवाँ यौवनकला ,, ,,	६८४
एक सौ सड़सठवाँ शाहपरी ,, ,,	६८७
एक सौ अड़सठवाँ ज्योतिमती ,, ,,	६८९
एक सौ उनहत्तरवाँ शाहपरी ,, ,,	६९३
एक सौ सत्तरवाँ वीरकला ,, ,,	६९४
एक सौ इकहत्तरवाँ साहिबदेवी ,, ,,	६९६
एक सौ बहत्तरवाँ गीतकला ,, ,,	६९८
एक सौ तिहत्तरवाँ वनिजकला ,, ,,	७००
एक सौ चौहत्तरवाँ सुरतादेवी ,, ,,	७०३
एक सौ पचहत्तरवाँ चपलकला-चरित्र-कथन	७०४
एक सौ छिअत्तरवाँ वीरमती-चरित्र-कथन	७०९
एक सौ सतहत्तरवाँ मैनकला-चरित्र-कथन	७१२
एक सौ अठहत्तरवाँ कोरीकुँवरि-चरित्र-कथन	७१४
एक सौ उन्नासीवाँ कामवती-चरित्र-कथन	७१५
एक सौ अस्सीवाँ नयनोत्तमा-चरित्र-कथन	७१६
एक सौ इक्यासीवाँ निशिप्रभा-चरित्र-कथन	७१८
एक सौ बयासीवाँ भानुकला-चरित्र-कथन	७२१
एक सौ तिरासीवाँ ऋतुराजप्रभा-चरित्र-कथन	७२३
एक सौ चौरासीवाँ द्रोपदी-चरित्र-कथन	७२६
एक सौ पचासीवाँ बानिन-चरित्र-कथन	७२८
एक सौ छियासीवाँ अचलकला-चरित्र-कथन	७३०
एक सौ सत्तासीवाँ कामकला-चरित्र-कथन	७३१
एक सौ अट्ठासीवाँ कंचनप्रभा-चरित्र-कथन	७३२

१ ओं स्री वाहिगुरू जी की फ़तह ।।

अथ

श्री दसम गुरूग्रंथ साहिब

(नागरी लिपि में)

हिन्दी व्याख्या सहित

स्री शसत्र नाममाला पुराण लिख्यते ।।

स्री भगउती जी सहाइ ।। पातिशाही १० ।।

।। दोहरा ।। साँग सरोही सैफ अस तीर तुपक तलवार ।
सत्रांतक कवचांति कर करिऐ रच्छ हमार ।। १ ।। अस क्रिपान
धाराधरी सैल सूफ जम्दाढ । कवचांतक सत्रांत कर तेग तीर
रनबाढ ।। २ ।। अस क्रिपान खंडो खड़ग तुपक तबर अरु

श्री शस्त्रनाममाला पुराण लिख्यते

।। दोहा ।। तुम ही तोप, तलवार, तीर, कृपाण, भाला, शिरच्छेदन करनेवाले अन्य शस्त्र रूपी परमात्मा और सर्वप्रकार के कवच हो तथा सर्वप्रकार के शत्रुओं का नाश करनेवाले हो। तुम हमारी रक्षा करो ।। १ ।। तुम कृपाण, भाला, जमदाढ़ (शस्त्र) हो तथा तुम ही कवचों को तोड़कर तलवार और तीर के रूप में शत्रुओं का अन्त करनेवाले हो ।। २ ।। कृपाण, दो धार वाला खड्ग, बन्दूक़, तीर तुम ही हो; तुम ही बरछी और भाला हो तथा यह शस्त्र-अस्त्र हमारे गुरु एवं रक्षक परमात्मा

तीर । सैफ सरोही सैहथी यहै हमारै पीर ।। ३ ।। तीर तुही
सैहथी तुही तुही तबर तलवार । नाम तिहारो जो जपै भए
सिंध भव पार ।। ४ ।। काल तुही काली तुही तुही तेग अरु
तीर । तुही निशानी जीत की आजु तुही जगबीर ।। ५ ।।
तुही सूल सैहथी तबर तूँ निखंग अरु बान । तुही कटारी सेल
सभ तुमही करद क्रिपान ।। ६ ।। शस्त्र अस्त्र तुमही सिपर
तुमही कवच निखंग । कवचांतक तुमही बने तुम ब्यापक
सरबंग ।। ७ ।। स्री तूँ सभ कारन तुही तूँ बिद्या को सार ।
तुम सभ को उपराजही तुमही लेहु उबार ।। ८ ।। तुमही दिन
रजनी तुही तुमही जिअन उपाइ । कउतक हेरन के नमित तिन
मो बाद बढाइ ।। ९ ।। अस क्रिपान खंडो खड़ग सैफ तेग
तरवार । रच्छ करो हमरी सदा कवचांतक करवार ।। १० ।।
तुही कटारी दाढ़ जम तूँ बिछुओ अरु बान । तो पति पद जे
लीजिऐ रच्छ दास मुहि जानु ।। ११ ।। बाँक बज्र बिछुओ
तुही तुही तबर तरवार । तुही कटारी सैहथी करिऐ रच्छ
हमार ।। १२ ।। तुमी गुरज तुमही गदा तुमही तीर तुफंग ।

हैं ।। ३ ।। हे परमात्मा ! कृपाण-रूप में तथा अन्य शस्त्रों के रूप में तुम्हीं जीती-जागती
शक्ति हो और जो तुम्हारे नाम का जाप करता है वह संसार-समुद्र
को पार कर जाता है ।। ४ ।। हे परमात्मा ! काल, काली, कृपाण और तीर
तुम ही हो और तुम ही जगत-विजेता विजय का प्रतीक हो ।। ५ ।। तुम ही
धनुष, बाण, तरकस, भाला और बरछी हो; तुम ही कटारी, बल्लम एवं
छोटी कृपाण भी हो ।। ६ ।। सर्व अस्त्र-शस्त्र तुम ही हो और तुम ही कवच
को तोड़नेवाले तथा तरकस हो एवं तुम ही सर्वव्यापक हो ।। ७ ।। सुख-समृद्धि
का कारण और विद्या का सारतत्त्व तुम ही हो; तुम ही सबको उत्पन्न
करते हो और तुम ही सबका उद्धार करते हो ।। ८ ।। दिन-रात भी तुम ही
हो और तुम्हीं सभी जीवों को उत्पन्न कर उनमें विवाद बढ़ाते हो और यह
सब अपनी ही लीला देखने के लिए करते हो ।। ९ ।। कृपाण, खड़ग, भाला,
तलवार आदि के स्वरूप तथा कवचों को तोड़नेवाले एवं हाथ में शक्ति
रूपी तलवार धारण करनेवाले परमात्मा तुम हमारी रक्षा करो ।। १० ।।
कटारी, जमदाढ़ एवं बाण रूपी हे शक्ति ! मैं तुम्हारे स्वामी के चरणों का
दास हूँ, तुम मेरी रक्षा करो ।। ११ ।। टेढ़ी तलवार, वज्र, बिछुआ आदि तुम
ही हो; तुम ही कटारी और बरछी भी हो, तुम मेरी रक्षा करो ।। १२ ।।
गदा, तीर एवं तलवार तुम ही हो तथा हे सर्वशक्ति ! मुझे अपना दास जान

दास जान मोरी सदा रच्छा करो स्रबंग ॥ १३ ॥ (मू०ग्रं०७१७) छुरी कलम रिप करद भनि खंजर बुगदा नाइ । अरधरिजक सभ जगत को मुहि तुम लेहु बचाइ ॥ १४ ॥ प्रिथम उपावहु जगत तुम तुमहो पंथ बनाइ । आप तुही झगरा करो तुमही करो सहाइ ॥ १५ ॥ मचछ कचछ बाराह तुम तुम बावन अवतार । नारसिंघ बउधा तुहीं तुहीं जगत को सार ॥ १६ ॥ तुहीं राम स्री क्रिशन तुम तुहीं बिशन को रूप । तुहीं प्रजा सभ जगत की तुहीं आप ही भूप ॥ १७ ॥ तुहीं बिप्र छत्री तुहीं तुहीं रंक अरु राउ । शाम दाम अरु डंड तूँ तुमही भेद उपाउ ॥ १८ ॥ सीस तुहीं काया तुहीं तैं प्रानी के प्रान । तैं बिद्या जग बक्त्र हुइ करे बेद बख्यान ॥ १९ ॥ बिसिख बान धनुखाग्र भन सर कैबर जिह नाम । तीर खतंग ततारचे सदा करो मम काम ॥ २० ॥ तैणीरालै शत्र अरि म्रिग अंतक सस बान । तुम बैरण प्रथमै हनो बहुरो बजै क्रिपान ॥ २१ ॥ तुम पाटस पासी परस परम सिंध की खान । ते जग के राजा

कर तुम मेरी रक्षा करो ॥ १३ ॥ चाक़ू, शत्रुओं को मारनेवाले कृपाण और ख़ंज़र तुम्हारे नाम हैं, तुम्हीं सारे जगत की आराध्य शक्ति हो अतः तुम मेरी रक्षा करो ॥ १४ ॥ शक्तिमान की सर्वत्र व्याप्त शक्तिरूपा पहले तुम संसार को पैदा करते हो, उसमें तरह-तरह के सम्प्रदाय चलाते हो, उनमें विवाद उत्पन्न करते हो तथा तुम ही फिर सबकी सहायता भी करते हो ॥ १५ ॥ तुम ही मत्स्य, कच्छप, वाराह, वामन, नरसिंह एवं बौद्ध-अवतारों का रूप हो और तुम ही जगत का सार हो ॥ १६ ॥ राम, कृष्ण तथा विष्णु का रूप भी तुम ही हो और तुम ही सारे जगत की प्रजा तथा उस प्रजा के राजा भी हो ॥ १७ ॥ तुम ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, राजा, रंक, साम-दाम-दण्ड एवं भेद तथा अन्य उपाय भी हो ॥ १८ ॥ सिर, धड़, प्राणियों के प्राण भी तुम ही हो, सारा संसार तुम्हारे विद्या का वरण करनेवाला तथा वेद का बखान करनेवाला है ॥ १९ ॥ धनुष के आगे रहनेवाला विशिष्ट बाण तुम ही हो और कैवर रूपी वीर तुम्हें ही कहा जाता है । हे विभिन्न प्रकार के बाणों के नाम से पुकारे जानेवाले तुम मेरा कार्य भी करो ॥ २० ॥ तुम्हारा घर तरकस है और बाण रूपी शक्ति बनकर तुम शत्रुओं को मृगों के मारे जाने के समान मार देते हो । वास्तविकता तो यह है कि तुम शत्रुओं को पहले ही मार देते हो और कृपाण उन पर बाद में चलती है ॥ २१ ॥ तुम शत्रुओं को फाड़ डालनेवाली कुल्हाड़ी और बाँध लेनेवाली

भए दिअ तव जिह बरदान ।। २२ ।। स्रीस शत्र अरिआर असि खंडो खड़ग क्रिपान । शक्र सुरेसर तुम कियो भगति आपुनो जान ।। २३ ।। जमधर जमदाड़ा जबर जोधांतक जिह नाइ । लूट कूट लीजत तिनै जे बिन बाँधे जाइ ।। २४ ।। बाँक बज्र बिछुओ बिसिखि बिरहबान सभ रूप । जिनको तुम किरपा करी भए जगत के भूप ।। २५ ।। शस्त्र शेर समरांत करि सिप्परारि शमशेर । मुकत जाल जम के भए जिमै कह्यो इक बेर ।। २६ ।। सैफ सरोही शत्र अरि सारंगारि जिह नाम । सदा हमारे चित बसो सदा करो मम काम ।। २७ ।।

।। इति स्री नाममाला पुराणे स्री भगवती उसतत प्रिथम धिआइ समापतम सतु सुभम सतु ।।

अथ चक्र नाम कथनं ।।

।। दोहरा ।। कवच शबद प्रिथमै कहो अंत शबद अरि देहु । सभ ही नाम क्रिपान के जान चतुर जिअ लेहु ।। २८ ।। शत्र

फाँस तथा परम धैर्यवान हो । तुमने जिसको भी वरदान दिया अर्थात् जिसके भी साथ हुई उसे जगत का राजा बना दिया ।। २२ ।। शत्रुओं को काट डालनेवाले कृपाण एवं खड्ग रूपी शक्ति तुम ही हो और इन्द्र को अपना भक्त जानकर तुम ही ने उसे देवराज की पदवी दी ।। २३ ।। यमधार, यमदाढ़ एवं योद्धाओं का नाश करनेवाले शस्त्रों के जितने भी नाम हैं उन सबकी शक्ति को तुमने अपने में समेटकर बाँध लिया ।। २४ ।। भाला, वज्र, बिछुआ, कामदेव के बाण आदि जिस पर भी तुमने कृपा की वे सब जगत के सम्राट् बन गये ।। २५ ।। युद्ध में सिंह तुम्हारा शस्त्र है जो क्षिप्र गति से शत्रुओं को नष्ट कर देता है जिस पर तुम्हारी कृपा हो गई वह यम के जाल से मुक्त हो गया ।। २६ ।। तुम ही बरछी, भाला हो और तुम्हारा ही नाम शत्रुओं को मारनेवाला है । तुम सदा हमारे हृदय में निवास कर और हमारे कार्यों को पूर्ण करो ।। २७ ।।

।। श्री नाममाला पुराण में श्री भगवती-स्तुति प्रथम अध्याय समाप्त ।।

चक्र-नाम-कथन

।। दोहा ।। कवच शब्द को पहले कहकर और अन्त में अरि देह लगा कर चतुर लोग कृपाण के सभी नामों को जान लेते हैं ।। २८ ।। शत्रु शब्द

शबद प्रिथमै कहो अंत दुशट पद भाखु । सभै नाम जगंनाथ को सदा ह्रिदै मो राख ॥ २९ ॥ प्रिथी शबद प्रिथमै भनो पालक बहुर उचार । सकल नाम त्रिशटेश के सदा ह्रिदै मो धार ॥ ३० ॥ त्रिशट नाम पहिले कहो बहुर उचारो नाथ । सकल नामु मम ईस (मू०ग्रं०७१८) के सदा बसो जिअ साथ ॥ ३१ ॥ सिंघ शबद भाखो प्रथम बाहन बहुर उचारि । सभै नाम जगमात के लीजहु सु कबि सुधारि ॥ ३२ ॥ रिपु खंडन मंडन जगत खलखंडन जग माहि । ताको नाम उचारिऐ जिह सुन दुख टरि जाहि ॥ ३३ ॥ सभ शस्त्रन के नाम कहि प्रिथम अंत पति भाखु । सभही नाम क्रिपान के जाण ह्रिदै महि राखु ॥ ३४ ॥ खत्रियांक खेलत खड़ग खग खंडो खत्रिआर । खेलांतक खल केमरी असि के नाम बिचार ॥३५॥ भूतांतक स्री भगवती भवहा नाम बखान । स्री भवानी भै हरन सभ को करौ कल्यान ॥ ३६ ॥ ॥ अड़िल ॥ भूत शबद कौ भाखि बहुर अरि भाखिऐ । सभ असि जू के नाम जान जिअ

को पहले कहकर अन्त में दुष्ट पद कहा जाता है और इस प्रकार जगन्नाथ के सभी नाम हृदय में धारण किए जाते हैं ॥ २९ ॥ पृथ्वी शब्द पहले कह कर पुनः बालक का उच्चारण करते हुए परमात्मा के सभी नाम मन में बसाए जाते हैं ॥ ३० ॥ सृष्टि नाम पहले कहकर फिर नाथ का उच्चारण किया जाता है और इस प्रकार परमात्मा के सभी नामों को हृदय में धारण किए जाते हैं ॥ ३१ ॥ पहले सिंह शब्द कहते हुए पुनः वाहन का उच्चारण करें और इस प्रकार सुधार कर कविजन जगत्माता दुर्गा के नाम कह लें ॥ ३२ ॥ वह परमात्मा शत्रुओं का नाश करनेवाला जगत का रचयिता और खल जनों का इस संसार में नाश करनेवाला है। उसी के नाम का स्मरण करना चाहिए, जिसको सुनकर सभी दुःख दूर हो जाते हैं ॥ ३३ ॥ सब शस्त्रों के नाम कहकर पहले और अन्त में पति शब्द कहते हुए कृपाण के सभी नाम को हृदय में धारण किया जाता है ॥ ३४ ॥ यह क्षत्रियों के अंक में खेलनेवाली है। इसे खड्ग, खाण्डा, और क्षत्रियों का शत्रु कहते हैं। युद्ध का अन्त करनेवाली, खलों का नाश करनेवाली आदि विचारपूर्वक कृपाण के कहे हुए नाम हैं ॥ ३५ ॥ सर्वभूतों का अन्त करनेवाली भगवती तथा दुःखों का नाश करनेवाली नाम से इसका वर्णन है। हे कृपाण रूपी भवानी ! तुम भय का नाश करनेवाली हो। तुम सबका कल्याण करो ॥ ३६ ॥ ॥ अड़िल ॥ भूत शब्द का उच्चारण कर फिर अरि शब्द

राखिऐ । नाम म्रिगन सभ कहि धनु शबद उचारिऐ । होसभ खंडे के नाम सत्ति जिअ धारिऐ ।। ३७ ।। ।। दोहरा ।। प्रिथम नाम जम को उचरि बहुरो रदन उचारि । सकल नाम जमदाड़ के लीजहु सु कबि सुधारि ।। ३८ ।। उदर शबद प्रथमै कहो पुनि अरि शबद उचार । नाम सभै जमदाढ़ के लीजहु सु कबि बिचार ।। ३९ ।। म्रिग ग्रीवा सिर अरि उचर पुन असि शबद उचार । सभै नाम स्री खड़ग के लीजो ह्रिदै बिचार ।। ४० ।। करी करांतक कशट रिपु कालायुध करवार । करा चोल किरपान के लीजहु नाम सुधार ।। ४१ ।। हसत करी कर प्रिथम कहि पुनि अरि शबद सुनाइ । शस्त्र राज के नाम सभ मोरी करहु सहाइ ।। ४२ ।। स्री सिरोही शेर सम जा सम अउर न कोइ । तेग जापु तुमहूँ जपो भलो तुहारो होइ ।। ४३ ।। खग म्रिग जच्छ भुजंग गन ए पर प्रिथम उचार । फुनि अरि शबद उचारिऐ जान तिसै तरवार ।। ४४ ।। हलब्बि जुनब्बी मगरबी मिसरी ऊना नाम । सैफ सरोही शस्त्रपति जित्यो रुम अर

कहा जाय तो कृपाण के सभी नामों का उच्चारण होता है। मृग के सभी नामों का उच्चारण कर पुनः धनु शब्द का उच्चारण किया जाय तो ये सब खाँड़े के नाम हैं, जो सत्य हैं।। ३७ ।। ।। दोहा ।। पहले यम के नाम कह कर पुनः रदन (दाँत) का उच्चारण किया जाय तो हे कविजनो ! जमडाढ़ (एक प्रकार की कृपाण) के नाम सुधारकर समझे जा सकते हैं।। ३८ ।। पहले उदर शब्द कहकर पुनः अरि शब्द का उच्चारण करने से सुधारकर जमडाढ़ के सभी नामों का विचार प्रकट किया जा सकता है।। ३९ ।। मृग-ग्रीवा, सिर अरि उच्चारण कर पुनः असि शब्द का उच्चारण करने से खड़ग के सभी नाम लिये जा सकते हैं।। ४० ।। करि, करान्तक, कष्टरिपु, कालायुध, करवार, कराचोल आदि सुधारकर कृपाण के नाम लिए जा सकते हैं।। ४१ ।। हस्त, करि (हाथी), कर, पहले कहकर पुनः अरि शब्द सुनाया जाता है, तो शस्त्रराज कृपाण के नाम बनते हैं। हे कृपाण ! मेरी सहायता करो।। ४२ ।। विजय की प्रतीक सिरोही (कृपाण) ! तुम शेर के समान हो। तुम्हारे समान अन्य कोई नहीं है। हे प्राणियो ! तुम सभी तेग़ (कृपाण) का जाप करो तो तुम सबका कल्याण होगा।। ४३ ।। खग, मृग, यक्ष, भुजंग, गण आदि का पहले उच्चारण कर पुनः अरि शब्द कहने से तलवार का अर्थ बनता है।। ४४ ।। (अन्य देशों में) इसके नाम हल्लबी, जुन्नबी, मगरबी, मिसरी, ऊना, सैफ़, सिरोही आदि इस शस्त्र-पति कृपाण के नाम हैं, जिसनें

शाम ।। ४५ ।। कतीयामानी हिंदवी सभ शस्त्रन के नाथ । लए भगउती निकस है आप कलंकी हाथ ।। ४६ ।। प्रिथम शकति पद उचरिकै पुन कहु शकत बिसेख । नाम सैहथी के सकल निकसत जाहि असेख ।। ४७ ।। प्रिथम सुभट पद उचरिकै बहुर शबदि अरि देहु । नाम सैहथी के सभै समझि चतुर चित लेहु ।। ४८ ।। प्रिथम (मू०ग्रं०७१९) भाख संनाह पदु पुन रिप शबद उचारि । नाम सैहथी के सकल चतुर चित्त निज धारि ।। ४९ ।। उचर कुंभ प्रिथमै शबद पुनि अरि शबद कहो । नाम सैहथी के सभै चित महि चतुर लहो ।। ५० ।। तनं त्रान पद प्रिथम कहि पुन अरि शबद बखान । नाम सैहथी के सभै रुचिर चतुर चित जान ।। ५१ ।। यसटीशर को प्रिथम कहि पुन बच कहु अरधंग । नाम सैहथी के सभै उचरत जाहु निशंग ।। ५२ ।। साँग समर कर सैहथी शस्त्र सजन के भेस । सबल सुभटहा हाथ लै जीते समर सुरेश ।। ५३ ।। छत्रधरा म्रिग बिजै कह भटहा जाको नाम । सकल सिद्ध दाती सभन अमित सिद्ध को धाम ।। ५४ ।। लछमन अउर घटोतकच ए

रूम और शाम आदि देशों को जीता है ।। ४५ ।। यमन देश में काँती के नाम से जानी जानेवाली और हिन्दुस्तान में सब शस्त्रों के सिरमौर जानी जानेवाली भगवती (कृपाण) को स्वयं कल्कि अवतार ने धारण किया था ।। ४६ ।। पहले शक्ति पद का उच्चारण कर पुनः शक्त पद का उच्चारण करने से सैहथी के सभी नामों का उच्चारण होता है ।। ४७ ।। पहले सुभट पद का उच्चारण कर पुनः अरिदेह कहने से चतुर लोग अपने मन में सैहथी के नाम समझ लेते हैं ।। ४८ ।। पहले सन्नाह पद कह पुनः रिपु शब्द कहने से चतुराईपूर्वक सैहथी के सभी नाम कहे जाते हैं ।। ४९ ।। पहले कुम्भ शब्द का उच्चारण कर पुनः अरि शब्द कहने से, हे चतुर गण ! तुम सैहथी के सभी नामों को मन में समझ लो ।। ५० ।। तनत्राण पहले कहकर पुनः अरि शब्द का वर्णन करने से, हे चतुर जनो ! सैहथी के सभी नाम रुचिपूर्वक कहे जाते हैं ।। ५१ ।। यष्टीश्वर पहले कहकर पुनः अर्द्धांग का उच्चारण करने से सैहथी के सभी नामों का वर्णन किया जा सकता है ।। ५२ ।। भाला और युद्ध को प्रचण्ड रूप देनेवाली सैहथी, जो कि शस्त्रों में सबसे भली है, को महाबली शूरवीर इन्द्र ने अपने हाथ में लेकर युद्ध जीता था ।। ५३ ।। छत्रधरा, मृगविजय, करारि आदि इसके नाम हैं, ये समस्त सिद्धियों की दात्री और अपरिमिति सिद्धियों की भण्डार हैं ।। ५४ ।। लक्ष्मण और घटोत्कच

पद प्रिथम उचारि । पुनि अरि भाखो शकत के निकसहि नाम अपार ।। ५५ ।। गड़िआ भसुड़ी भैरवी भाला नेजा भाखु । बरछी सैहथी शकत सभ जान ह्रिदे मै राखु ।। ५६ ।। बिशन नाम प्रिथमै उचरि पुन पद शस्त्र उचारि । नाम सुदरशन के सभै निकसत जाहि अपार ।। ५७ ।। मुर पद प्रिथम उचारिकै मरदन बहुर कहो । नाम सुदरशन चक्र के चित मै चतुर लहो ।। ५८ ।। मध को नाम उचारिकै हा पद बहुर उचारि । नामु सुदरशन चक्र के लीजै सु कबि सुधारि ।। ५९ ।। नरकासुर प्रिथमै उचरि पुन रिपु शबद बखान । नाम सुदरशन चक्र को चतुर चित्त मै जान ।। ६० ।। दैत बक्त्र को नाम कहि सूदन बहुर उचार । नाम सुदरशन चक्र को जान चित्त निरधार ।। ६१ ।। प्रिथम चंदेरीनाथ को लीजै नाम बनाइ । पुन रिपु शबद उचारिऐ चक्र नाम हुइ जाइ ।। ६२ ।। नरकासुर को नाम कहि मरदन बहुर उचार । नाम सुदरशन चक्र को लीजहु सु कबि सुधार ।। ६३ ।। किशन बिशन कहि जिस अनुज आयुध बहुर उचार । नाम सुदरशन चक्र के

को प्रथम पद के रूप में उच्चारण कर पुनः अरि कहने से शक्त (कृपाण) के अनेकों नाम निकलते हैं ।। ५५ ।। यह गड़नेवाली, भय देनेवाली भैरवी है तथा इसे भाला और नेजा आदि भी कहा जाता है । बरछी, सैहथी, शक्त आदि सभी युद्ध के लिए हृदय में ध्यान रखने योग्य नाम हैं ।। ५६ ।। पहले विष्णु पद का उच्चारण कर पुनः शस्त्र पद कहने से सुदर्शन के अनेकों नाम बनते चले जाते हैं ।। ५७ ।। मुर शब्द पहले कहकर मर्दन शब्द का उच्चारण करने से सुदर्शन चक्र के नाम को चतुर गण समझ जाते हैं ।। ५८ ।। मधु का नाम कहकर पुनः हा पद का उच्चारण करने से कविगण सुधार कर सुदर्शन चक्र के नाम लिया करते हैं ।। ५९ ।। पहले नरकासुर पद कहकर पुनः रिपु शब्द का वर्णन किया जाय तो, हे चतुर जनो ! सुदर्शन चक्र के नामों को समझा जाता है ।। ६० ।। बक्त्रदैत्य का नाम कहकर पुनः शूदन शब्द कहने से सुदर्शन चक्र के नाम लिये जाते हैं ।। ६१ ।। पहले चन्देरीनाथ शिशुपाल का नाम लेकर पुनः रिपु पद कहने से सुदर्शन चक्र के नाम हो जाते हैं ।। ६२ ।। पहले नरकासुर का नाम कहकर पुनः मर्दन कहने से सुदर्शन चक्र के नाम सुधार कर कहे जा सकते हैं ।। ६३ ।। कृष्ण, विष्णु कहकर अनुज एवं आयुध शब्द का उच्चारण करने से सुदर्शन चक्र के अनेकों

निकसत चलहि अपार ।। ६४ ।। बज्र अनुज प्रिथमै उचर फिरि पद शस्त्र बखान । नाम सुदरशन चक्र के चतुर चित्त मै जान ।। ६५ ।। प्रिथम बिरह पद उचरकै पुन कहु शस्त्र बिसेख । नाम सुदरशन चक्र के निकसत चलै असेख ।। ६६ ।। प्रिथमै वहै उचारिऐ रिद्ध सिद्ध (मू०ग्रं०७२०) को धाम । पुन पद शस्त्र बखानिऐ जानु चक्र के नाम ।। ६७ ।। गिरधर प्रिथम उचारि पद आयुध बहुर उचारि । नाम सुदरशन चक्र के निकसत चलै अपार ।। ६८ ।। काली नथिआ प्रिथम कहि शस्त्र शबद कहु अंत । नाम सुदरशन चक्र के निकसत जाहि अनंत ।। ६९ ।। कंस केसिहा प्रिथम कहि फिरि कहि शस्त्र बिचार । नाम सुदरशन चक्र के लीजहु सु कबि सुधार ।।७०।। बकी बकासुर शबद कहि फुनि बच शत्रु उचार । नाम सुदरशन चक्र के निकसत चलैं अपार ।। ७१ ।। अघनासन अघहा उचर पुन बच शस्त्र बखान । नाम सुदरशन चक्र के सभै चतुर चित जान ।। ७२ ।। स्री उपेंद्र के नाम कहि फुन पद शस्त्र बखान । नाम सुदरशन चक्र के सभै समझ सुर

नाम निकलते चले जाते हैं ।। ६४ ।। वज्र, अनुज पहले कहकर फिर शस्त्र पद लगाने से सुदर्शन चक्र के नाम जाने जाते हैं ।। ६५ ।। पहले विरह पद का उच्चारण कर फिर अनेकों शस्त्रों के नाम कहे जाने पर सुदर्शन चक्र के नाम बनते चले जाते हैं ।। ६६ ।। पहले रिद्धि-सिद्धि के भण्डार ईश्वर का उच्चारण कर पुनः शस्त्र पद लगाने पर चक्र के नाम बनते चले जाते हैं ।। ६७ ।। गिरधर पद का पहले उच्चारण कर फिर आयुध का उच्चारण करने से सुदर्शन चक्र के अनेकों नाम निकलते चले जाते हैं ।। ६८ ।। कालीनाथ (कृष्ण) पहले कहकर शस्त्र शब्द अन्त में कहने से सुदर्शन चक्र के अनन्त नाम बनते चले जाते हैं ।। ६९ ।। कंस-केशी का वध करनेवाले (कृष्ण) का नाम पहले कहकर फिर शस्त्रों के नाम का विचार करने पर सुदर्शन चक्र के नाम कविजनों द्वारा लिये जाते हैं ।। ७० ।। बकासुर, बकी आदि शब्द कहकर फिर शत्रु शब्द का उच्चारण करने से सुदर्शन चक्र के नाम बनते चले जाते हैं ।। ७१ ।। पापनाशक (परमात्मा) का नाम उच्चारण करके पुनः शस्त्रों का वर्णन करने से सुदर्शन चक्र के नाम चतुर लोग जान जाते हैं ।। ७२ ।। उपेन्द्र के विभिन्न नाम कहकर पुनः शस्त्र पद का वर्णन करने से सुदर्शन चक्र के सभी नाम ज्ञानी जन समझ जाते हैं ।। ७३ ।। ।। कवि उवाच ।। ।। दोहा ।। सभी शूरवीर और कविगण इस

ग्यान ।। ७३ ।। ।। कबियो बाच ।। ।। दोहरा ।। सभै सुभट अउ सभ सु कबि यों समझो मन माहि । बिशन चक्र के नाम मै भेद कउनहूँ नाहि ।। ७४ ।।

।। इति स्री नाममाला पुराणे चक्र नाम दुतिय धिआइ समापतम सतु सुभम सतु ।। २ ।।

अथ स्रीबान बरननं ।।

।। दोहरा ।। बिसख बाण सरधनज भन कवचांतक के नाम । सदा हमारी जै करो सकल करो मम काम ।। ७५ ।। धनुख शबद प्रिथमै उचरि अग्रज बहुर उचार । नाम सिलीमुख के सभै लीजहु चतुर सुधार ।। ७६ ।। पनच शबद प्रिथमै उचरि अग्रज बहुर उचार । नाम सिलीमुख को सभै निकसत चलै अपार ।। ७७ ।। नाम उचारि निखंग के बंसी बहुर बखान । नाम सिलीमुख के सभै लीजहु ह्रिदै पछान ।। ७८ ।। सभ म्रिगयन के नाम कहि हा पद बहुर उचार । नाम सभै स्री बान के जाणु ह्रिदै निरधार ।। ७९ ।। सकल कवच के नाम कहि भेदक बहुर बखान । नाम सकल स्रीबान के निकसत चलै परान ।। ८० ।। नाम चरम के प्रिथम कहि छेदक

तथ्य को मन में भली भाँति समझ लें कि विष्णु और उसके चक्र के नाम में तनिक भी अन्तर नहीं है ।। ७४ ।।

।। श्री नाममाला पुराण में चक्र नाम द्वितीय अध्याय की शुभ सत समाप्ति ।। २ ।।

श्रीबाण-वर्णन

।। दोहा ।। हे विशिख, वाण, धनुष-पुत्र, कवच का अन्त करनेवाले ! तुम हमें सदैव विजय दिलाते हुए हमारे कार्यों को पूरा करो ।। ७५ ।। धनुष शब्द पहले कहकर फिर अग्रज शब्द का उच्चारण करने से बाण के सभी नामों को सुधार कर समझा जा सकता है ।। ७६ ।। पनच शब्द का पहले उच्चारण कर पुनः अग्रज कहने से तीर के सभी नाम निकलते चले जाते हैं ।। ७७ ।। निषंग के नामों का उच्चारण कर पुनः वंशी का वर्णन करने से तीर के सभी नामों को जाना जाता है ।। ७८ ।। सभी मृगों के नाम कह कर उनके साथ हा पद उच्चारण करने से बाण के सभी नामों को हृदय में जाना जाता है ।। ७९ ।। कवच के सभी नामों को कहकर उनके साथ भेदक शब्द लगाने से बाण के सभी नाम बनते चले जाते हैं ।। ८० ।। चर्म

बहुर बखान। नाम सभै स्त्रीबान के चतुर चित्त मै जानु ॥८१॥ सुभटं नाम उचारिकै हा पद बहुर सुनाइ। नाम सिलीमुख के सभै लीजहु चतुर बनाइ ॥ ८२ ॥ सभ पंछन के नाम कहि पर पद बहुर बखान। नाम सिलीमुख के सभै चित मै चतुर पछान ॥ ८३ ॥ पंछी परीस पंख धर पछिअंतक पुन भाखु। नाम सिलीमुख के सभै जान (मू०ग्रं०७२१) ह्रिदै मै राखु ॥८४॥ सभ अकाश के नाम कहि चर पद बहुर बखान। नाम सिलीमुख के सभै लीजै चतुर पछान ॥ ८५ ॥ खे अकाश नभि गगन कहि चर पद बहुर उचार। नाम सकल स्त्रीबान के लीजहु चतुर सुधार ॥ ८६ ॥ आसमान सिपिहिर सु दिव गरदूँ बहुर बखानु। पुनि चर शबद बखानिऐ नाम बान के जान ॥ ८७ ॥ प्रिथम नाम कहि चंद्र के धर पद बहुरो देहु। पुनि चर शबद उचारिऐ नाम बान लखि लेहु ॥ ८८ ॥ गो मरीचि किरनं छटा धर धरकहि मन माहि। चर पद बहुर बखानिऐ नाम बान हुइ जाहि ॥ ८९ ॥ रजनीशर दिनहा उचरि धरधर पद कहि अंत। नाम सकल स्त्रीबान के निकरत जाहि अनंत ॥ ९० ॥ रात्र निसा दिन घातनी चरधर शबद बखान। नाम सकल

के नाम कहकर उनके साथ छेदक शब्द लगाने से चतुर गण वाण के नामों को चित्त में जान जाते हैं ॥ ८१ ॥ सुभट नाम कहकर उसमें हा पद लगाने पर चतुर गण तीर के सभी नाम बना लेते हैं ॥ ८२ ॥ सब पक्षियों के नाम कहकर उनमें पर पद लगाकर वर्णन करने पर चतुर गण तीर के नामों की पहचान कर लेते हैं ॥ ८३ ॥ पक्षी, परेश, पंखधर आदि के पीछे अंतक पद लगाने से तीर के सभी नामों की हृदय में पहचान कर ली जाती है ॥ ८४ ॥ आकाश के सभी नाम कहकर पुनः चर पद वर्णन करने से बाण के सभी नाम चतुर गण पहचान लेते हैं ॥ ८५ ॥ खे, आकाश, नभ, गगन कहकर चर पद उच्चारण करने से बाण के सभी नामों को चतुर गण सुधार कर जान लें ॥ ८६ ॥ आसमान, सिपिहिर, दिव, गरदूँ आदि कहकर पुनः चर शब्द वर्णन करने से बाण के नामों को जाना जाता है ॥ ८७ ॥ चन्द्र का नाम पहले कहकर पुनः देह, फिर चर शब्द का उच्चारण करने से बाण के नाम बनते हैं ॥ ८८ ॥ गो, मरीच, किरण, छटाधर आदि के अन्त में चर पद लगाने से बाण के नाम हो जाते हैं ॥ ८९ ॥ रजनीश्वर, दिनहा का उच्चारण कर अन्त में धुरन्धर शब्द लगाने से श्रीबाण के नाम निकालते जाते हैं ॥ ९० ॥ रात्रि, निशा, दिनघातिनी के साथ चरधर शब्द का

स्रीबान के करिअहु चतुर बखान ।। ९१ ।। ससि उपराजन रवि हरन चर को लै कै नाम । धर कहि नाम ए बान के जपे आठहूँ जाम ।। ९२ ।। रैनि अंधपति महाँ निसि निसि ईशर निसिराज । चंद्रबान चंद्रहि धर्यो चित्वन के बध काज ।। ९३ ।। सभ किरनन के नाम कहि धर पद बहुर उचार । पुनि धर कहु सभ बान के जानु नाम निरधार ।।९४।। सभ समुंद्र के नाम लै अंत शबद सत देहु । पुन धर शबद उचारिऐ नाम बान लखि लेहु ।। ९५ ।। जलपति जल लै नदीपति कहि सत पद को देहु । पुनि धर शबद बखानिऐ नाम बान लखि लेहु ।। ९६ ।। नीरालै सरताधिपति कहि सत पद को देहु । पुनि धर शबद बखानिऐ नाम बान लखि लेहु ।।९७।। सभै झखन के नाम लै बिरिआ कहि लै एक । सतधर कहु सभ नाम सर निकसत जाहि अनेक ।। ९८ ।। सभ जलजीवनि नाम लै आस्रै बहुरि बखान । सत धर बहुर बखानिऐ नाम बान सभ जान ।। ९९ ।। धरी नगन के नाम कहि धरसत पुनि पद देहु । पुनि धर शबद बखानिऐ नाम बान लखि

वर्णन करने से बाण के सभी नाम बनते चले जाते हैं ।। ९१ ।। चन्द्र को पैदा करनेवाली और सूर्य का हरण करनेवाली रात्रि तथा चर का नाम लेकर उसमें धर शब्द कहकर बाण के नामों का स्मरण किया जा सकता है ।। ९२ ।। रात्रि, अन्धकारपति, निशिपति, आदि शब्द, चन्द्रबाण के नाम से जाने जाते हैं, जो कि चन्द्रमा के रूप में अन्धकारयुक्त आकृतियों का वध करते हैं ।। ९३ ।। सभी किरणों के नाम कहकर धर पद का उच्चारण कर पुन: धर कहने से बाण के सभी नामों को जाना जाता है ।। ९४ ।। समुद्र के सभी नाम कहकर अन्त में शतदेह कहकर पुन: धर शब्द का उच्चारण करने से बाण के नाम सामने आते हैं ।। ९५ ।। जलपति एवं नदीपति समुद्र कहकर सतदेह कहने से तथा पुन: धर शब्द का वर्णन करने से बाण के नामों को समझा जाता है ।। ९६ ।। नीरालय, सरिताधिपति कहकर शतपद कहकर पुन: धर शब्द का वर्णन करने से बाण के नामों को कहा जाता है ।। ९७ ।। सभी विवादों का एक-एक बार नाम लेकर शतधर कहने से बाण के अनेकों नाम निकलते चले जाते हैं ।। ९८ ।। जल में जीवित रहनेवाली मछलियों के नाम लेकर उनके बाद आश्रय शब्द लगाने पर पुन: शतधर कहने पर बाण के नामों का वर्णन होता चला जाता है ।। ९९ ।। धरती पर पाये जानेवाले नागों के नाम कहकर धरशत पद लगाकर पुन:

लेहु ।। १०० ।। बासव कहि अरि उचरिऐ धर सतधर पुनि भाखु । नाम सकल स्त्रीबान के जान जीअ मै राखु ।। १०१ ।। पुहप धनख के नाम कहि आयुध बहुर उचार । नाम सकल स्त्री बान के निकसत चलै अपार ।। १०२ ।। (मू०ग्रं०७२२) सकल मीन के नाम कहि केतुवायुध कहि अंत । नाम सकल स्त्रीबान के निकसत जाहि अनंत ।। १०३ ।। पुहप आदि कहि धनुख कहि धर आयुधहि बखान । नाम सकल स्त्रीबान के निकसत जात अप्रमान ।। १०४ ।। आदि भ्रमर कहि पनच कहि धरधर शबद बखान । नाम सकल स्त्रीबान के जानहु गुनन निधान ।। १०५ ।। सब भलकन के नाम कहि आदि अंत धर देहु । नाम सकल स्त्रीबान के चीन चतुर चित लेहु ।। १०६ ।। ।। सोरठा ।। जिह धर प्रिथम बखान तिह सुत बहुर बखानिऐ । सर के नाम प्रमान चतुर चित्त मै जानिहो ।। १०७ ।। ।। दोहरा ।। बिस के नाम उचारिकै बिख पद बहुर बखान । नाम सकल स्त्रीबान के लीजो चतुर पछान ।। १०८ ।। बा पद प्रिथम बखान कै पुनि नकार पद देहु । नाम सकल स्त्रीबान के जान चतुर चित लेहु ।। १०९ ।। कानी नाम बखान कै धर

धर शब्द लगाने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। १०० ।। इन्द्र कहकर अरि उच्चारण करते हुए पुनः शतधर कहने से बाण के सभी नाम मन में समझ लिये जाते हैं ।। १०१ ।। पुष्पधन्वा, कामदेव के नाम कहकर पुनः आयुध शब्द का उच्चारण करने से बाण के नाम निकलते चले जाते हैं ।। १०२ ।। मछली के सभी नाम कहकर केतुवायुध अन्त में कहने से बाण के अनन्त में निकलते चले जाते हैं ।। १०३ ।। पुष्प पहले कहकर धनुष फिर कहकर आयुधों का वर्णन यदि किया जाय तो बाण के नाम निकलते चले जाते हैं ।। १०४ ।। पहले भ्रमर कहकर फिर पनच कहकर पुनः धर धर शब्द कहने से बाण के सभी नामों को गुणी जन जान लेते हैं ।। १०५ ।। सभी भलकों (छोटे भाले) के नाम कहकर अन्त में धर पद दिया जाए तो चतुर गण चित्त में बाणों के नामों को पहचान लेते हैं ।। १०६ ।। ।। सोरठा ।। जिसने सर्वप्रथम धरती का वर्णन किया उसके पुत्रों का वर्णन करने से बाण के अनेकों नाम बनते चले जाते हैं ।। १०७ ।। ।। दोहा ।। विष के नामों का उच्चारण कर पुनः विष पद का वर्णन करने से बाण के समस्त नामों की पहचान कर ली जाती है ।। १०८ ।। व पद पहले वर्णन कर पुनः नकार (न) पद लगाने से बाण के नाम को चतुर गण समझ लेते हैं ।। १०९ ।। कानी

पद बहुर बखान। हिरदे समझहु चतुर तुम सकल नाम ए बान ॥ ११० ॥ फोक शबद प्रिथमै उचरि धर पद बहुरो देहु। नाम सकल स्रीबान के चतुर ह्रिदै लखि लेहु ॥ १११ ॥ पसुपति प्रथम बखानिकै असुर शबद पुनि देहु। नाम सकल स्रीबान के चित्त चतुर लखि लेहु ॥ ११२ ॥ सहस नाम शिव के उचरि असुर शबद पुनि देहु। नाम सकल स्रीबान के चतुर चीन चित लेहु ॥ ११३ ॥ प्रथम करन के नाम कहि पुनि अरि शबद बखान। नाम सकल स्रीबान के लीजो चतुर पछान ॥ ११४ ॥ भानु जात करनांत कर ऐसी भाँति बखान। नाम सकल स्रीबान के चतुर लीजिअहु जान ॥ ११५ ॥ सभ अरजुन के नाम कहि आयुध शबद बखान। नाम सकल स्रीबान के लीजहु चतुर पछान ॥ ११६ ॥ जिसन धनंजै क्रिशन भनि सेवत असि लै नाहि। आयुध बहुर बखानिअहु सभै बान हुइ जाहि ॥ ११७ ॥ अरजुन पारथ केसगुड़ साची सभै बखान। आयुध बहुर बखानिऐ नाम बान के जान ॥ ११८ ॥ बिजै कपीधुज जैद्रथरि सूरज जरि फुन भाखु। आयुध बहुर बखानिऐ नाम बान लखि राखु ॥ ११९ ॥ तिमररि बल ब्रित निसचहा

नाम का वर्णन कर पुनः धर पद का वर्णन करने से चतुर लोग हृदय में बाण के समस्त नामों को समझ जाते हैं ॥ ११० ॥ फोक शब्द पहले उच्चारण कर पुनः धर पद लगाने से बाण के समस्त नामों को हृदय में जान लिया जाता है ॥ १११ ॥ पशुपति शब्द पहले कहकर पुनः असुर शब्द लगाने से बाण के समस्त नामों को चतुर गण चित्त में समझ लेते हैं ॥ ११२ ॥ शिव के सहस्र नामों का उच्चारण कर पुनः असुर शब्द कहने से श्रीबाण के सभी नाम जाने जाते हैं ॥ ११३ ॥ पहले कर्ण के सभी नाम कहकर पुनः अरि शब्द का वर्णन करने से बाण के सभी नामों की पहचान हो जाती है ॥ ११४ ॥ सूर्यपुत्र कर्ण का अन्त करनेवाला कहकर श्रीबाण के सभी नामों को जाना जाता है ॥ ११५ ॥ अर्जुन के सभी नामों को कहकर आयुध शब्द लगाने से श्रीबाण के सभी नाम पहचाने जाते हैं ॥ ११६ ॥ अर्जुन, कृष्ण आदि कहकर, शस्त्रों का वर्णन किया जाय तो सभी बाण का अर्थ देते हैं ॥ ११७ ॥ अर्जुन, पार्थ, गुडाकेश, साँची आदि कहकर पुनः आयुध कहने से बाण के नाम जाने जाते हैं ॥ ११८ ॥ कपिध्वज, जयद्रथारि, सूर्य, जरि कहकर पुनः आयुध कहने से बाण के नाम जाने जाते हैं ॥ ११९ ॥ तिमिरारि, बल वृत्त,

कहि सत बहुर उचार । आयुध उचर (मू०ग्रं०७२३) स्त्रीबान के
निकसहि नाम अपार ॥ १२० ॥ सहस्त्र बिशन के नाम लै
अनुज शबद कौ देहु । तनज उचरि पुनि शस्त्र कहि नामु बान
लखि लेहु ॥ १२१ ॥ नरकि निवारन अघहरन क्रिपासिंध
कौ भाखु । अनुज तनुज कहि शस्त्र कहु नाम बान लखि
राखु ॥ १२२ ॥ बिघन-हरन ब्याधनि-दरन प्रिथमै शबद
बखान । अनुज तनुज कहि शस्त्र कहु नाम बान जिअ
जान ॥ १२३ ॥ मकरकेत कहि मकरधुज पुनि आयुध पदु
देहु । सभै नाम स्त्रीबान के चीन्ह चतुर चित लेहु ॥ १२४ ॥
पुहपधनुख अलिपनक के प्रिथमै नाम बखान । आयुध बहुर
बखानिऐ जानु नाम सभ बान ॥ १२५ ॥ संबरारि त्रिपुरारि
अरि प्रिथमै शबद बखान । आयुध बहुर बखानिऐ नाम बान
के मान ॥ १२६ ॥ स्री सारंग ग्राबीरहा बलहा बान बखान ।
बिसिख बिसी बासी धरन बान नाम जिअ जान ॥ १२७ ॥
बिख के प्रिथमे नाम कहि धर पद बहुरो देहु । नाम सकल
स्त्रीबान के चतुर चित्त लखि लेहु ॥ १२८ ॥ सकल सिंध के
नाम लै तनै शबद कौ देहु । धर पद बहुर बखानिऐ नाम बान
लखि लेहु ॥ १२९ ॥ उदधि सिंध सरतेसजा कहि धर बहुर

निशिचर-नाशक कहकर फिर शत तथा पुनः आयुध कहने से श्रीबाण के
अनेकों नाम निकलते जाते हैं ॥ १२० ॥ विष्णु के सहस्त्र नाम लेकर अनुज
शब्द लगाकर पुनः तनुज कहते हुए शस्त्र पद लगाने से बाण के नाम दृष्टि-
गोचर होते हैं ॥ १२१ ॥ नरक-निवारण, अघहरण, कृपासिन्धु कहकर
अनुज-तनुज तथा शस्त्र पद लगाने से बाण नाम प्राप्त होता है ॥ १२२ ॥
विघ्नहरण, व्याधि-दलन पहले कहकर अनुज-तनुज तथा शस्त्र लगाने से
बाण के नाम जाने जाते हैं ॥ १२३ ॥ मकरकेतु, मकरध्वज कहकर पुनः आयुध
पद लगाने से बाण के सभी नाम चतुर गण जान लेते हैं ॥ १२४ ॥ पुष्पधन्वा,
भ्रमर, पिनाक के नाम पहले कहकर पुनः 'आयुध लगाने से बाण के
सभी नाम जाने जाते हैं ॥ १२५ ॥ शम्बरारि, त्रिपुरारि, शब्द पहले
कहकर पुनः आयुध लगाने से बाण के नाम माने जाते हैं ॥ १२६ ॥ श्री
सारंग, बीरहा, बलहा, बिसिक्ख, बिसि आदि श्रीबाण के नाम जाने जाते
हैं ॥ १२७ ॥ विष के नाम पहले कहकर पुनः धर पद लगाने से बाण के
सभी नाम जाने जाते हैं ॥ १२८ ॥ समस्त समुद्रों के नाम लेकर तनय शब्द
जोड़कर पुनः धर पद लगाने से बाण के नाम समझे जाते हैं ॥ १२९ ॥ उदधि,

बखान । बंसीधर के नाम सभ लीजहु चतुर पछान ।। १३० ।। बद्ध नासनी बीरहा बिख बिसखाग्रज बखान । धर पद बहुर बखानिऐ नाम बान के भान ।। १३१ ।। सभ मनुखन के नाम कहि हा पद बहुरो देहु । सकल नाम स्रीबान के चतुर चित्त लखि लेहु ।। १३२ ।। कालकूट कहि कशट करि शिव कंठिअहि उचार । धर पद बहुर बखानिऐ जानु बान निरधार ।। १३३ ।। शिव को नाम उचारि कै कंठी पद पुनि देहु । पुन धर शबद बखानिऐ नाम बान लखि लेहु ।। १३४ ।। बिआधि बिधी मुख प्रिथम कहि धर पद बहुर बखान । नाम सभै ए बान के लीजो चतुर पछान ।। १३५ ।। खपरा नालक धनुख सति लै सु कमान जनाँउ । सकर कानन राँच भनि धर सभ सर के गाँउ ।। १३६ ।। बारद जिउँ बरसत रहै जसु अंकुर जिह होइ । बारद सो बारद नही ताहि बतावहु कोइ ।। १३७ ।। बिखधर बिसी बिसोक कर बारणारि जिह नाम । नाम सभै स्रीबान के (मू०ग्रं०७२४) लीने होवहि काम ।। १३८ ।। अरि बेधन छेदन लह्यो बेदन कर जिह

सिन्धु, सरितेश्वर कहकर धर पद लगाने से चतुर गण वंशीधर (बाण) के नाम जानते हैं ।। १३० ।। बद्ध, नाशिनी, वीरहा, विष, बिसखाग्रज कहकर धर पद लगाने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। १३१ ।। सभी मनुष्यों के नाम कहकर हा पद लगाने से श्रीबाण के समस्त नाम चतुर लोगों द्वारा जाने जाते हैं ।। १३२ ।। कालकूट कहकर कष्टकरि तथा शिवकण्ठी अहि का उच्चारण कर धर पद को जोड़ने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। १३३ ।। शिव कहकर पुनः कण्ठी पद लगाकर पुनः धर शब्द लगाने से बाण के नामों का वर्णन किया जाता है ।। १३४ ।। व्याधि, विधिमुख पहले कहकर पुनः धर पद कहते हुए चतुर गण बाण के सभी नामों को पहचान लेते हैं ।। १३५ ।। खपरा (खपरैल), नालक, धनुष, सत्य आदि को कमान बनाते हुए हाथों द्वारा कान तक खींचकर जिसे चलाया जाता है बाण की ही बिरादरी के शस्त्र हैं ।। १३६ ।। जो बादल के समान बरसता है, और जिसकी उपज यश है, वह बादल तो नहीं है: परन्तु बादल के समान है; कोई उसका नाम बताए अर्थात् वह बादल है ।। १३७ ।। विषधर, विषयी, शोक-कारक, वरुणारि आदि जिसके नाम हैं, उसे श्रीबाण कहते हैं और उसका नाम लेने से सभी काम हो जाते हैं ।। १३८ ।। अरिवेधन, अरिछेदन के नाम से जाना जाने वाला और वेदनाकर जिसका नाम है, वह बाण अपने लोगों की रक्षा करता

नाउँ। रच्छ करन अपनान की परे दुशट के गाउँ ॥ १३९ ॥ जदुपतारि बिशनाधपति अरि क्रिशानतक नाम। सदा हमारी जै करो सकल करो सभ काम ॥ १४० ॥ हलधर शबद बखानि कै अनुज उचरि अरि भागु। सकल नाम स्रीबान के चीन चतुर चित राखु ॥ १४१ ॥ रोहणाय मुसली हली रेवतीस बलराम। अनुज उचरि पुनि अरि उचरि जानु बान के नाम ॥ १४२ ॥ तालकेत लांगलि उचरि क्रिशनाग्रज पद देहु। अनुज उचर अरि उचरिऐ नाम बान लखि लेहु ॥ १४३ ॥ नीलांबर रुकमांतकर पउराणिक अरि भाखु। अनुज उचरि अरि उचरिऐ नाम बान लखि राखु ॥ १४४ ॥ सभ अरजन के नाम लै सत्त शबद पुनि देहु। पुनि अरि शबद बखानिऐ नाम बान लखि लेहु ॥ १४५ ॥ प्रिथम पवन के नाम लै सुत पद बहुर बखान। अनुज उचरि सूतरि उचरु नाम बान पहिचानु ॥ १४६ ॥ मारत पवन घनांत कर कहि सुत शबद उचार। अनुज उचरि सूतरि उचरु सर के नाम बिचार ॥ १४७ ॥ सरब बिआपक सरबदा सल्याजन सु बखान। तनुज अनुज सूतारि उचरु नाम बान के

है; और दुष्टों के ग्रामों पर बरसता है ॥ १३९ ॥ यदुपति कृष्ण का शत्रु, विष्णाधिपतिअरि, कृष्णान्तक आदि जिसके नाम हैं, हे बाण ! तुम हमारी सदा जय करो और हमारे सभी कामों को पूरा करो ॥ १४० ॥ हलधर शब्द कहकर अनुज लगाकर तथा अरि शब्द कहकर चतुर गण श्रीबाण के समस्त नाम जान लेते हैं ॥ १४१ ॥ रोहिणेय, मुसली, हली, रेवतीश, बलराम अनुज का उच्चारण कर पुनः अरि पद लगाने से बाण के नामों को जाना जाता है ॥ १४२ ॥ तालकेतु लांगलि उच्चारण कर कृष्णाग्रज पद लगाने से तथा अनुज का उच्चारण कर अरि शब्द लगाने से बाण के नाम जाने जाते हैं ॥ १४३ ॥ नीलाम्बर, रुक्मान्तकर, पौराणिक अरि कहकर अनुज का उच्चारण कर अरि शब्द लगाने से बाण के नाम समझे जाते हैं ॥ १४४ ॥ अर्जुन के सभी नाम लेकर सत्य शब्द जोड़कर पुनः अरि शब्द का वर्णन करने से बाण के नाम कहे जाते हैं ॥ १४५ ॥ पहले पवन के नाम लेकर पुनः सुत पद लगाने से फिर अनुज का उच्चारण करने से, सूतारि कहने से बाण के नामों की पहचान की जाती है ॥ १४६ ॥ मारुत, पवन, घनान्तकर कहकर सुत शब्द का उच्चारण करते हुए सूतारि कहने से बाण के सभी नामों को जाना जाता है ॥ १४७ ॥ सर्वव्यापक, शल्यार्जुन का वर्णन कर तनुज, अनुज

जान ।। १४८ ।। प्रिथम बार के नाम लै पुनि अरि शबद
बखान । तनुज अनुज सूतरि उचरि नाम बान
पहिचान ।। १४९ ।। प्रिथम :अगन के नाम लै अंत शबदि अरि
देहु । तनुज अनुज सूतरि उचरि नाम बान लखि
लेहु ।। १५० ।। प्रिथम अगन के नाम लै अंत शबद अरि
भाखु । तनुज अनुज कहि अरि उचरि नाम बान लखि
राखु ।। १५१ ।। प्रिथम अगन के नाम लै अरि अरि पदि
पुनि देहु । तनुज अनुज कहि अरि उचरि नाम बान लखि
लेहु ।। १५२ ।। पावकार अगनांत कर कहि अरि शबद
बखान । अरि कहि अनुज तनुज उचरि सूतरि बान
पछान ।। १५३ ।। हिमंबार बकहा गदी भीम शबद पुनि
देहु । तनुज अनुज सूतरु उचरि नाम बान लखि
लेहु ।। १५४ ।। दुरजोधन के नाम लै अंतु शबद अरि देहु ।
अनुज उचरि सूतरु उचरि नाम बान लखि लेहु ।। १५५ ।।
अंध सुतन (मू०ग्रं०७२५) के नाम लै अंत शबद अरि भाखु । अनुज
उचरि सूतरि उचरि नाम बान लखि राखु ।। १५६ ।।
दुस्सासन दुरमुख द्रजै कहि अरि शबद बखान । अनुज उचरि

तथा अन्त में सूतारि उच्चारण करने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। १४८ ।।
पहले जल के नाम लेकर पुनः अरि शब्द का वर्णन करते हुए पुनः तनुज, अनुज
और सूतारि कहने से बाण के नामों की पहचान की जाती है ।। १४९ ।। पहले
अग्नि उसके बाद अरि पुनः तनुज, अनुज, सूतारि कहने से बाण के नाम जाने
जाते हैं ।। १५० ।। पहले अग्नि का नाम लेकर बाद में अरि कहकर तनुज,
अनुज तथा अरि उच्चारण करने से बाण के नाम कहे जाते हैं ।। १५१ ।।
पहले अग्नि के नामों को कहकर अरि-अरि पद लगाने से तथा तनुज अनुज
अरि शब्द का उच्चारण करने से बाण के नामों का उच्चारण किया जाता
है ।। १५२ ।। पावकारि, अग्नान्त कहकर अरि अनुज, तनुज. सूतारि कहने
से बाण के नामों की पहचान -की जाती है ।। १५३ ।। हिमवारि, बकहा,
गदी, भीम शब्द के साथ तनुज, अनुज, सूतारि लगाने से बाण के नाम जाने
जाते हैं ।। १५४ ।। दुर्योधन के नामों के साथ अन्त में अरि शब्द लगाने
तथा अनुज, सूतारि का उच्चारण करने से बाण के नाम जाने जाते
हैं ।। १५५ ।। धृतराष्ट्र के पुत्रों के नाम लेकर अन्त में अरि शब्द का
उच्चारण कर फिर अनुज सूतारि कहने से बाण के नाम जाने जाते
हैं ।। १५६ ।। दुःशासन, दुर्मुख, दुर्विजय कहकर अरि शब्द लगाकर अनुज

सूतरि उचरि नाम बान पहिचान ।। १५७ ।। दसलाकर भिख आदि कहि अंत शबद अरि भाखु । अनुज तनुज सूतरि उचरि नाम बान लखि राखु ।। १५८ ।। प्रिथम भीखम के नाम लै अंत शबद अरि देहु । शत्रु आदि अंतर उचरि नाम बान लखि लेहु ।। १५९ ।। तटत जानवी अग्रजा प्रिथमै शबद बखान । तनुज शत्रु सूतरि उचरि नाम बान पहिचान ।। १६० ।। गंगा गिरजा प्रिथम कहि पुत्र शबद पुनि देहु । शत्रु उचरि सूतरि उचरि नाम बान लखि लेहु ।। १६१ ।। नाकालेसरि तेसरी प्रिथमै शबद उचार । सत अरि कहि सूतरि उचरि सभ सर नाम उचारि ।। १६२ ।। भीखम शांतनु सुत उचरि पुन अरि शबद बखान । सूत उचरि अंतरि उचरि नाम बान पहिचान ।। १६३ ।। गांगेय नदी अजि उचरे सरितज शत्रु बखान । सूत उचरि अंतरि उचरि नाम बान पहिचान ।। १६४ ।। तालकेतु सविता सभनि आदि अंत अरि देहु । सूत उचरि रिपु पुन उचरि नाम बान लखि लेहु ।। १६५ ।। प्रिथम द्रोण कहि सिख्य कहि सूतरि बहुर बखान । नाम बान के सकल ही लीजहु चतुर पछान ।। १६६ ।।

सूतारि (सारथी का शत्रु) कहने से बाण के नामों की पहचान होती है ।। १५७ ।। दुर्योधन शब्द पहले कहकर उसके बाद अरि, अनुज, तनुज सूतारि उच्चारण करने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। १५८ ।। पहले भीष्म के नाम रखकर अन्त में अरि शब्द तथा शत्रु आदि लगाने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। १५९ ।। जाह्नवी, अग्रजा पहले कहकर पुनः तनुज-शत्रु सूतारि नाम कहने से बाण के नामों को पहचाना जाता है ।। १६० ।। गंगा, गिरिजा पहले कहकर फिर पुत्र पद लगाकर शत्रु सूतारि कहने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। १६१ ।। नाकालेश्वरी शब्द पहले उच्चारण कर शतारि तथा सूतारि कहने से बाण के सभी नामों का उच्चारण होता है ।। १६२ ।। भीष्म; शान्तनु का उच्चारण कर अरि शब्द कहकर सूतारि का उच्चारण करने से बाण के नाम पहचाने जाते हैं ।। १६३ ।। गांगे, नदीयज, उच्चारण कर सरितज शत्रु कहकर सूत का उच्चारण कर अन्तरि कहने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। १६४ ।। तालकेतु, सविता आदि के अन्त में अरि शब्द लगाकर सूत शब्द का उच्चारण कर पुनः रिपु शब्द कहने से बाण के सभी नाम जाने जाते हैं ।। १६५ ।। पहले द्रोण कहकर फिर शिष्य कहकर पुनः सूतारि कहने से चतुर गण बाण के सभी नामों को पहचान

भारद्वाज द्रोणज पिता उचरि सिख्य पद देहु। सूतरि बहुर बखानिऐ नाम बान लखि लेहु ।। १६७ ।। ।। सोरठा ।। प्रिथम जुधिशटर भाखि बंधुशबद पुनि भाखिऐ। जान ह्रिदै मै राख सकल नाम ए बान के ।। १६८ ।। ।। दोहरा ।। द्वै भइआ पंचालि पति कहि पुनि भ्रात उचारि। सुत अरि कहि सभ बान के लीजो नाम सुधारि ।। १६९ ।। धरमराज धरमज उचरि बंधु शबद पुन देहु। सूतरि बहुर बखानिऐ नाम बान लख लेहु ।। १७० ।। कालज धरमज सल्ल रिपु कहि पद बंधु बखान। सूतरि बहुरि बखानिऐ सभ सर नाम पछान ।। १७१ ।। बई वसत पद प्रिथम कहि पुनि सतु शबद बखानि। बंधु उचरि सूतरि उचरि सभ सर नाम पछान ।। १७२ ।। प्रिथम सूरज के नाम लै बहुर पुत्र पद भाख। अनुज उचर सूतरि उचरि नाम बान लख राख ।। १७३ ।। (मू०ग्रं०७२६) कालिंद्री को प्रिथम कहि पुन पद अनुज बखान। तनज उचर अनुजाग्र कहि सर के नाम पछान ।। १७४ ।। जमना कालिंद्री अनुज कहि सुत बहुर बखान। अनुज उचरि सूतरि उचरि सर के नाम पछान ।। १७५ ।। पंडपुत्र कुरराज भनि बहुर अनुज

लेते हैं ।। १६६ ।। भारद्वाज, द्रोणज (अश्वत्थामा) के पिता– द्रोणाचार्य का उच्चारण कर शिष्य पद तथा उसके आगे सूतारि पद लगाने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। १६७ ।। ।। सोरठा ।। पहले युधिष्ठिर कहने से फिर बन्धु कहने से बाण के सभी नामों को जाना जाता है ।। १६८ ।। ।। दोहा ।। द्वै बन्धु, पांचाली-पति कहकर पुनः भ्राता का उच्चारण, पुनः सुत-अरि कहकर बाण के सभी नामों को सुधारकर जाना जाता है ।। १६९ ।। धर्मज, धर्मराज का उच्चारण कर बन्धु शब्द लगाकर सूतारि कहने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। १७० ।। कालज, धर्मज, शल्य-रिपु कहकर बन्धु पद तथा पुनः सूतारि कहने से बाण के सभी नाम जाने जाते हैं ।। १७१ ।। वैवस्वत पहले कहकर पुनः सत, पुनः बन्धु तथा पुनः सूतारि कहने से बाण के सभी नामों को जाना जाता है ।। १७२ ।। पहले सूर्य के नाम लेकर पुनः पुत्र, अनुज, सूतारि कहने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। १७३ ।। पहले कालिन्दी कहकर पुनः अनुज, तनुज, अनुजाग्र कहने से बाण के नामों की पहचान की जाती है ।। १७४ ।। यमुना कालिन्दी अनुज कहकर सुत अनुज सूतारि कहने से शर (बाण) के नाम जाने जाते हैं ।। १७५ ।। पंडुपुत्र, कुरुराज कहकर पुनः अनुज पद लगाने से तथा अन्त में सूतारि उच्चारण करने से बाण के नाम कहे जाते

पद देहु। सूत आदि अंतिर उचरि नाम बान लख लेहु ॥१७६॥ जउधिशटर भीमाग्र भनि अरजनाग्र पुनि भाख। सूति आदि अंतरि उचरि नाम बानु लखि राखु ॥ १७७ ॥ नुकल बंधु सहिदेव अनज कहि पद बंध उचार। सूत आदि अंतरि उचरु सर के नाम बिचार ॥ १७८ ॥ जाग मेनि को प्रिथम कहि पति पद बहुर उचार। अनुज आदि सूतांत अरि सभ सरु नाम अपार ॥ १७९ ॥ प्रिथम द्रोपती द्रुपतजा उचरि सुपति पद देहु। अनुज उचरि सूतरि उचरि नाम बान लख लेहु ॥ १८० ॥ ध्रिशटद्रुमन जा प्रिथम कहि पुनि पति शबद बखान। अनुज उचरि सत्तरि उचरि नाम बान के जान ॥ १८१ ॥ द्रुपद द्रोण रिपु प्रिथम कहि जाकहि पति पुनि भाख। अनुज उचरि सूतरि उचरि नाम बान लख राख ॥ १८२ ॥ प्रिथम नाम लै द्रुपत को जा माता पुनि भाख। अनुज उचरि सूतरि उचरि नाम बान लख राख ॥ १८३ ॥ प्रिथम द्रोण कौ नाम लै अरि पद बहुर उचार। भगनी कहि पति भ्रात कहि सूतरि बान बिचार ॥ १८४ ॥ अमर राज शत्रांत कर बिसख बारहा बान। दाराइपद द्रिशटांत कर नाम तीर के जान ॥ १८५ ॥ माद्री शबद प्रिथमे कहो सुत पद बहुर बखान। अग्र अनुज

हैं ॥ १७६ ॥ युधिष्ठिर भीमाग्र कहकर अर्जुनाग्र कहने से तथा अन्त में सूतारि कहने से बाण के नाम जाने जाते हैं ॥ १७७ ॥ नकुल, सहदेव, अनुज, कहकर बंधु सूतारि कहने से बाण के नाम जाने जाते हैं ॥ १७८ ॥ पहले याज्ञसेनि (द्रौपदी) कहकर पुनः पति अनुज सूतांतरि कहने से बाण के अनेकों नाम जाने जाते हैं ॥ १७९ ॥ प्रथम द्रौपदी, द्रुपदजा कहकर सुपति अनुज सूतारि कहने से बाण के नाम जाने जाते हैं ॥ १८० ॥ धृष्टद्युम्नजा पहले कहकर पुनः पति अनुज कहकर पुनः सूतारि कहने से बाण के नाम जाने जाते हैं ॥ १८१ ॥ द्रुपद द्रोणरिपु कहकर पुनः 'जा' पद लगाकर पुनः पति अनुज सूतारि कहने से बाण के अनेकों नाम जाने जाते हैं ॥ १८२ ॥ पहले द्रुपद का नाम लेकर पुनः जामाता अनुज सूतारि कहने से बाण के अनेकों नाम जाने जाते हैं ॥ १८३ ॥ पहले द्रोण का नाम लेकर अरि शब्द लगाकर भगिनी पति भ्रात सूतारि कहने से बाण के नाम जाने जाते हैं ॥१८४॥ इन्द्र के शत्रु रावण का अन्त करनेवाला, बादलों को चीरनेवाला और सब प्रकार की आपदाओं को नष्ट करनेवाला तीर नाम से जाना जाता है ॥ १८५ ॥ पहले मादृ शब्द

सूतरि उचरि सर के नाम पछान ॥ १८६ ॥ सुग्रीव को प्रिथम कहि अरि पद बहुर बखान । सकल नाम स्त्रीबान के लीजहु चतुर पछान ॥ १८७ ॥ दसग्रीव दसकंठ भनि अरि पद बहुरि उचार । सकल नाम एह बान के लीजहु चतुर सुधार ॥ १८८ ॥ प्रिथम जटायु बखान कै अरि पद बहुर बखान । रिपु पद बहुरि उचारिऐ सर के नाम पछान ॥ १८९ ॥ रावन रिजसर प्रिथम भनि अंत शबद अरि देहु । सकल नाम स्त्रीबान के चीन चतुर चित लेहु ॥ १९० ॥ प्रिथम मेघ के नाम लै अंत शबद पुनि देहु । (मू०ग्रं०७२७) पिता उचर अरि शबद कहु नाम बान लख लेहु ॥ १९१ ॥ मेघनाद भन जलध धुनि पुन घन निसन उचार । पित कहि अर कहि बान के लीजहु नाम सुधार ॥ १९२ ॥ अंबुध धुनि भनि नाद घन पुनि पित शबद उचार । अरि पदि बहुर बखानिऐ सर के नाम विचार ॥ १९३ ॥ धारा धर पद प्रिथम कहि धुनि पद बहुर बखान । पित कहि अरि शबदो उचरि नाम बान के जान ॥ १९४ ॥ प्रिथम शबद के नाम लै परधनि पुनि पद देहु । धुन उचार अरि उचरियै नाम बान लख लेहु ॥ १९५ ॥

कहकर पुनः सुत पद का वर्णन करने से और उसके आगे अनुज सूतारि लगाने से बाण के नाम पहचाने जाते हैं ॥ १८६ ॥ सुग्रीव पद पहले कहकर पुनः अरि पद लगाने से बाण के सभी नामों को चतुर गण पहचान लेते हैं ॥ १८७ ॥ दसग्रीव, दसकण्ठ कहकर पुनः अरि शब्द का उच्चारण करने से चतुर गण सुधारकर बाण के सभी नामों को जान लेते हैं ॥ १८८ ॥ पहले जटायु पद का वर्णन कर फिर अरि पद लगाकर तथा फिर रिपु पद लगाने से बाण के नामों की पहचान होती है ॥ १८९ ॥ राजेश्वर रावण पहले कहकर अन्त में अरि शब्द लगाकर बाण के सभी नामों को जाना जाता है ॥ १९० ॥ पहले मेघनाद का नाम लेकर पुनः पिता तथा पुनः अरि शब्द का उच्चारण करने से बाण के नाम कहे जाते हैं ॥ १९१ ॥ मेघनाद कहकर, जलधि ध्वनि कहकर पुनः घन निशान उच्चारण कर फिर पिता कहकर पुनः अरि पद कहने से :बाण के नाम लिये जाते हैं ॥ १९२ ॥ अम्बुद, ध्वनि कहकर नादघन कहकर पुनः पिता एवं अरि पद लगाने से बाण के नाम विचारपूर्वक जाने जाते हैं ॥ १९३ ॥ धाराधर पद पहले कहकर फिर ध्वनि पद तथा पिता अरि लगाने से बाण के नाम जाने जाते हैं ॥ १९४ ॥ पहले शब्द के नाम लेकर पुनः परधनि कहने से तथा ध्वनि पद लगाकर अरि पद उच्चारण

जलध शबद प्रिथमै उचरि नाद शबद पुनि देहु । पिता उचर अरि उचरियै नाम बान लखि लेहु ।। १९६ ।। प्रिथम नीर के नाम लै धर पद बहुर बखान । तात आदि अंति अरि नाम बान के जान ।। १९७ ।। धारा प्रिथम उचारिकै धर पद बहुरो देहु । पित कहि अरि पद उचरौ नाम बान लख लेहु ।। १९८ ।। नीर बार जलधर उचरि धुनि पद बहुर बखान । तात उचरि अरि उचरियै नाम बान पहिचान ।। १९९ ।। पानी प्रिथम उचारकै धर पद बहुर बखान । धुनि पित अरि कहि बान के लीजहु नाम पछान ।। २०० ।। घन सुत प्रिथम बखान कै धर पुन बहुर बखान । तात उचर अरि उचरियै सर के नाम पछान ।। २०१ ।। अंबद धुनि कहि पित उचरि मुख ते गुननि निधान । सकल नाम ए बान के लीजहु ह्रिदे पछान ।। २०२ ।। धार बार कहि उचरिकै पर धन बहुर बखान । तात उचर अरि उचरियै नाम बान के जान ।। २०३ ।। नीरद प्रिथम उचारकै धन पद बहुर बखान । पित कहि अरि कहि बान के लीजहु नाम पछान ।। २०४ ।। घनज शबद को उचरिकै धन पद

करने से वाण के नाम कहे जाते हैं ।। १९५ ।। जलद शब्द पहले कहकर पुनः नाद पद लगाने से तथा पिता एवं अरि का उच्चारण करने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। १९६ ।। पहले पानी के नाम लेकर पुनः धर पद कहने से और आदि में तात तथा अन्त में अरि पद लगाने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। १९७ ।। पहले धारा शब्द का उच्चारण कर पुनः धर पद लगाकर फिर पिता अरि पद लगाने से बाण के नाम का उच्चारण होता है ।। १९८ ।। नीर, वारि, जलधर का उच्चारण कर पुनः ध्वनि, तात, अरि कहने से बाण के नामों की पहचान होती है ।। १९९ ।। पहले पानी का उच्चारण कर फिर धर पद कहकर ध्वनि पिता आदि कहकर बाण के नामों को पहचान लो ।। २०० ।। घनसूत पहले कहकर पुनः धर पद का वर्णन कर फिर तात का उच्चारण कर तथा पुनः अरि शब्द कहने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। २०१ ।। अम्बुद ध्वनि कहकर पिता का उच्चारण करने से हे गुणज्ञ जन ! बाण के समस्त नामों को हृदय में पहचान लो ।। २०२ ।। धार, वारि उच्चारण कर पर धन कहकर तात का उच्चारण कर अरि शब्द कहने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। २०३ ।। नीरद शब्द पहले कहकर पुनः ध्वनि पद पुनः पिता एवं अरि लगाने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। २०४ ।। धनज

बहुर बखान। सकल नाम स्रीबान के लीजो चतुर पछान ॥ २०५ ॥ मत्त शबद प्रिथमै उचरि अच्छ शबद पुन देहु। अर पद बहुर बखानिऐ नाम बान लख लेहु ॥ २०६ ॥ प्रिथम मीन को नाम लै चखु पद बहुर बखान। सकल नाम स्रीबान के लीजहु चतुर पछान ॥ २०७ ॥ मकर शबद प्रिथमै उचरि चखु पद बहुर बखान। सभै नाम स्रीबान के लीजो चतुर पछान (मू०ग्रं०७२८) ॥ २०८ ॥ झख पद प्रिथम बखान कै चखु पद बहुर बखान। सभै नाम स्रीबान के लीजै चतुर पछान ॥ २०९ ॥ सफरी नेत्र बखान कै अरि पद बहुर उचार। सकल नाम स्रीबान के लीजो सु कवि सुधार ॥ २१० ॥ मछरी चच्छु बखान कै अरि पद बहुर उचार। नाम सकल स्रीबान के लीजो चतुर सुधार ॥ २११ ॥ जलचर प्रिथम बखान कै चखु पद बहुर बखान। अरि कहि सभ ही बान के लीजो नाम पछान ॥ २१२ ॥ बक्त्रागज पद उचर कै मीन शबद पुन देहु। नाम सिलीमुख के सभै चीन चतुर चित लेहु ॥ २१३ ॥ प्रिथम नाम लै मीन के केत शबद पुन देहु। चपु कहि अरि कहि बान के नाम चीन्ह चित लेहु ॥ २१४ ॥

शब्द कहकर धन पद पुनः लगाने से बाण के सभी नामों को चतुर जन पहचान लें ॥ २०५ ॥ मकर शब्द पहले कर पुनः अक्ष शब्द एवं अरि पद लगाने से बाण के सभी नाम जाने जाते हैं ॥ २०६ ॥ पहले मीन (मछली) के नाम लेकर पुनः चक्षु पद का वर्णन करने से बाण के समस्त नामों को जाना जाता है ॥ २०७ ॥ मकर शब्द पहले कहकर पुनः चक्षु पद का वर्णन करने से चतुर गण बाण के सभी नामों को पहचान लो ॥ २०८ ॥ झख पद पहले कहकर पुनः चक्षु पद का वर्णन करके बाण के सभी नामों को पहचान लो ॥ २०९ ॥ सफरी (मछली), नेत्र, कहकर पुनः अरि पद का उच्चारण करने से, हे कविगण ! बाण के सभी नामों को सुधार कर जान लो ॥ २१० ॥ मत्स्यचक्षु कहकर अरि पद का उच्चारण कर बाण के समस्त नामों को सुधार कर जान लो ॥ २११ ॥ जलचर पहले कहकर पुनः चक्षु पद लगाकर तथा पुनः अरि कहकर बाण के समस्त नामों को पहचान लो ॥ २१२ ॥ वक्त्रागज पद का उच्चारण कर पुनः मीन शब्द लगाने से, हे चतुर गण ! बाण के सभी नामों को पहचान लो ॥ २१३ ॥ पहले मीन के नाम लेकर पुनः केतु शब्द लगाकर पुनः चक्षु कहकर फिर अरि शब्द कहने से बाण के नामों को चित्त में पहचाना जाता है ॥ २१४ ॥ सम्बरारि पद पहले कहकर पुनः

संबरारि पद प्रिथम कहि चखु धुज पद पुन देहु । अरि कहि सभ ही बान के चीन्ह चतुर चित लेहु ।। २१५ ।। प्रिथम पिनाकी पद उचरि अरि धुज नेत्र उचार । अरि कहि सभ ही बान के लीजहु नाम सुधार ।। २१६ ।। महाँरुद्र अरि धुज उचरि पुनि पद नेत्र बखान । अरि कहि सभ स्त्रीबान के नाम ह्रिदै पहिचान ।। २१७ ।। त्रिपुरांतक अरि केत कहि चख अरि बहुर उचार । नाम सकल ए बान के लीजहु सु कबि सुधार ।। २१८ ।। कारतकेअ पितु प्रिथम कहि अरिधज नेत्र बखान । अरि पद बहुर बखानिऐ नाम बान पहिचान ।। २१९ ।। बिरल बैरि कर बारहा बहुलांतक बलवान । बरणातक बलहा बिसख बीर पतन बरबान ।। २२० ।। प्रिथम सलल कौ नाम लै धर अरि बहुर बखान । केत चच्छ अरि उचरिऐ नाम बान के जान ।। २२१ ।। कार्तकेअ पद प्रिथम कहि पितु अरिकेत उचार । चख अरि कहि सभ बान के लीजहु नाम सुधार ।। २२२ ।। प्रिथम पिनाकी पान कहि रिप धुज चखि पुनि देहु । सकल नाम स्त्रीबान के चीन चतुर चित लेहु ।। २२३ ।। पसुपति सुरधर

चक्षुध्वज कर फिर अरि शब्द लगाकर, हे चतुर गण ! वाण के नामों को पहचान लो ।। २१५ ।। पहले पिनाकी पद का उच्चारण कर फिर अरि, ध्वज, नेत्र कहकर फिर अरि शब्द कहकर वाण के समस्त नामों को सुधारकर कहा जाता है ।। २१६ ।। महारुद्र, अरिध्वज कहकर पुनः नेत्र पद कहने से हृदय में बाण के सभी नामों को पहचानो ।। २१७ ।। त्रिपुरान्तक अरिकेतु कहकर चक्षुअरि का पुनः उच्चारण किया जाय तो कविगण सुधारकर बाण के सभी नाम जान लेते हैं ।। २१८ ।। कार्तिकेय, पितृ पहले कहकर अरिध्वज नेत्र कहकर पुनः अरि पद लगाने से बाण के सभी नाम पहचाने जाते हैं ।। २१९ ।। वैरी, विलरकर, बारहा, बहुलान्तक; वर्णनान्तक, बलहा, विशिख, वीरपतन आदि बाण के नाम कहे जाते हैं ।। २२० ।। पहले सलिल (पानी) का नाम लेकर धर अरि पुनः वर्णन कर केतु चक्षु अरि कहने से बाण के नाम जाने जाते हैं ।। २२१ ।। कार्तिकेय पद पहले कहकर पित्र अरिकेतु उच्चारण करके चक्षु अरि कहकर बाण के सभी नामों को सुधारकर पुकारा जाता है ।। २२२ ।। पहले पिनाकीपाणि कहकर रिपध्वज चक्षु लगाने से चतुर गण श्रीबाण के सभी नामों को चित्त में जान लें ।। २२३ ।। पशुपति

अरि उचरि धुज चखि शत्र बखान। सकल नाम स्त्रीबान के
चतुर चित्त मै जान ॥ २२४ ॥ पारबतीस अरि केत चखि
कहि रिप पुन पद देहु। सकल नाम स्त्रीबान के चीन चतुर
चित लेहु ॥ २२५ ॥ शस्त्र साँग सामुह चलत शत्र मान को
खाप। सकल स्रिष्ट (मू०ग्रं०७२६) **जीती तिसै जपिअतु ताँको**
जाप ॥ २२६ ॥ सकल शंभु के नाम लै अरिधुज नेत्र बखान।
सकल नाम स्त्रीबान के निकसत चलत अप्रमान ॥ २२७ ॥
प्रिथम नाम लै शत्र को अरदन बहुर उचार। सकल नाम
स्त्रीबान के निकसत चलै अपार ॥ २२८ ॥ सकल म्रिगा
शबदादि कहि अरदन पद कहि अंत। सकल नाम स्त्रीबान
के निकसत चलैं अनंत ॥ २२९ ॥ कुंभकरन पद आदि कहि
अरदन बहुर बखान। सकल नाम स्त्रीबान के चतुर चित्त मै
जान ॥ २३० ॥ रिप समुद्र पद प्रिथम कहि कानरि भाखो
अंत। सकल नाम स्त्रीबान के निकसत चलहि अनंत ॥ २३१ ॥
प्रिथम नाम दसग्रीव के लै बध अरि पद देहु। सकल नाम
स्त्रीबान के चीन चतुर चित लेहु ॥ २३२ ॥ खोल खड़ग
खत्रिअंति करि केहरि पदु कहु अंत। सकल नाम स्त्रीबान के

सुरधर, अरि उच्चारण कर ध्वजचक्षु, शत्रु बखान करने से बाण के समस्त
नाम चतुर गण जान लेते हैं ॥ २२४ ॥ पार्वतीश, अरिकेतु चक्षु कहकर रिपु
पद पुनः लगाने से चतुर गण बाण के समस्त नाम जान लेते हैं ॥२२५॥
शस्त्र, भाले इत्यादि सामने चलते रहने पर भी जो शत्रु के अभिमान नाश
करता है, उसने समस्त सृष्टि को जीत लिया है, मैं उसी का जप करता
हूँ ॥ २२६ ॥ शंभु (शिव) के समस्त नामों को कहकर अरि, ध्वज, नेत्र कहने
से बाण के समस्त नाम बनते चले जाते हैं ॥ २२७ ॥ पहले शत्रु पद कहकर
पुनः अर्दन का उच्चारण करने से श्रीबाण के समस्त नाम निकलते चले जाते
हैं ॥ २२८ ॥ मृग से सम्बन्धित समस्त शब्दों को पहले कहकर अन्त में अर्दन
पद कहने से बाण के समस्त नाम निकलते चले जाते हैं ॥ २२९ ॥ कुम्भकर्ण
पद पहले कह अर्दन पद फिर कहकर चतुर गण बाण के समस्त नामों को
चित्त में जान लेते हैं ॥ २३० ॥ रिपुसमुद्र पद पहले कहकर कानरि अन्त
में कहने से बाण के अनन्त नाम निकलते हैं ॥ २३१ ॥ दसग्रीव रावण के
नामों को पहले कर वध अरि पद लगाने से बाण के सब नामों को चतुर गण
चित्त में पहचान लेते हैं ॥ २३२ ॥ खोल, खड्ग, क्षत्रियन्तकारक, केहरि पद

निकसत चलैं अनंत ।। २३३ ।। कवच क्रिपान कटारिअहि भाखि अंति अरि भाखु । सकल नाम स्त्रीबान के चीन चित्त महि राखु ।। २३४ ।। प्रिथम शस्त्र सभ उचरिकै अंत शबद अरि देहु । सरब नाम स्त्रीबान के चीन चतुर चित लेहु ।। २३५ ।। सूल सैहथी सत्रुहा सिप्रादर कहि अंत । सकल नाम स्त्रीबाण के निकसत चलहि अनंत ।। २३६ ।। समर संदेशो सत्रहा सत्रांतक जिह नाम । सभै बरन रच्छा करन संतन के सुखधाम ।। २३७ ।। बर पद प्रिथम बखानि कै अरि पद बहुर बखान । नाम सत्रहा के सभै चतुर चित्त महि जान ।। २३८ ।। दक्खण आदि उचारिकै भक्खण अंत उचार । दक्खण कौ भक्खण दिओ सर सौ रामकुमार ।। २३९ ।। रिसरा प्रिथम बखानि कै मुंडरि बहुर बखान । रिस ताको बिसरा कियो स्त्री रघुपति के बान ।। २४० ।। बली ईस दस सीस के जाहि कहावत बंध । एक बान रघुनाथ के कियो कबंध कबंध ।। २४१ ।। प्रिथम भाखि सुग्रीव पद बंधुरि बहुर बखान । सकल नाम स्त्रीबान के जनिअहु बुद्धि

से अन्त करने पर बाण के समस्त नाम निकलते चले जाते हैं ।। २३३ ।। कवच, कृपाण, कटारी कहकर अन्त में अरि शब्द का उच्चारण करने से बाण के नाम चित्त में माने जाते हैं ।। २३४ ।। पहले सभी शस्त्रों के नाम का उच्चारण कर अन्त में अरि लगाने से बाण के सब नामों को मन में पहचान लिया जाता है ।। २३५ ।। शूल, सैहथी, शत्रुहा, सिप्रादर अन्त में कहने से बाण के सभी नाम निकलते चले जाते हैं ।। २३६ ।। समर सन्देश, शत्रुहा, शत्रान्तक जिसके नाम हैं, हे बाण ! तुम सभी वर्णों की रक्षा करनेवाले हो और सन्तों को सुख देनेवाले हो ।। २३७ ।। वर पद पहले कहकर पुनः अरि पद कहने से शत्रुनाशक बाण के सभी नाम बनते चले जाते हैं ।। २३८ ।। पहले दक्षिण पद का उच्चारण कर पुनः भक्षण का अन्त में उच्चारण कर बाण का अर्थ समझा जाता है, क्योंकि राम ने दक्षिण दिशा में रहनेवाले रावण को बाण रूपी भोजन दिया था और मार डाला था ।। २३९ ।। रिसरा पहले कहकर मुण्डरि पुनः कहा जाता है और श्रीरघुपति के बाणों को जाना जाता है ।। २४० ।। दसग्रीव रावण जैसे वलवानों के बन्धु कहलानेवाले कबन्धों को श्री रघुनाथ ने एक ही बाण से खण्ड-खण्ड पुनः कर कवन्ध वना डाला ।। २४१ ।। पहले सुग्रीव पद कहकर बन्ध अरि कहने से बाण के

निधान ।। २४२ ।। अंगद पितु कहि प्रिथम पद अंत शबद अरि देहु । सकल नाम स्त्रीबान के चीन चतुर चित लेहु ।। २४३ ।। हनूमान के नाम लै ईस अनुज अरि भाखु । सकल नाम स्त्रीबान के चीन चित्त (मू०ग्रं०७३०) महि राखु ।। २४४ ।। शस्त्र शबद प्रिथमैं उचरि अंत शबद अरि देहु । सकल नाम स्त्रीबान के जान अनेकनि लेहु ।। २४५ ।। अस्त्र शबद प्रिथमैं उचरि अंत अरि शबद बखान । सकल नाम स्त्रीबान के लीजहु चतुर पछान ।। २४६ ।। प्रिथम चरम के नाम लै सभ अरि पद कहि अंत । सकल नाम सत्रांत के निकसत चलहि बिअंत ।। २४७ ।। तनं त्रान के नाम उचरि अंत अरि पद देहु । सकल नाम स्त्रीबान के तासिउ कीजै नेहु ।। २४८ ।। सकल धनुख के नाम कहि अरदन बहुरि उचार । सकल नाम स्त्रीबान के चीन चतुर निरधार ।। २४९ ।। प्रिथम नाम लै पनच के अंतक बहुर बखान । सकल नाम स्त्रीबान के करिअहु चतुर बखिआन ।। २५० ।। सर पद प्रिथम बखानि कै अरि पद बहुर बखान । सकल नाम स्त्रीबान के चतुर चित्त मै जान ।। २५१ ।। म्रिग पद प्रिथम बखान कै

समस्त नामों को बुद्धिमान जान लेते हैं ।। २४२ ।। अंगदपितृ (बालि) पहले कहकर पुनः अरि शब्द लगाने से बाण के समस्त नामों को चतुरता-पूर्वक जाना जाता है ।। २४३ ।। हनुमान के नाम लेकर और ईश, अनुज अरि पद लगाने से बाण के समस्त नामों को चित्त में समझा जाता है ।।२४४।। शस्त्र शब्द का पहले उच्चारण कर अन्त में अरि पद लगाने से बाण के समस्त नामों को जाना जाता है ।। २४५ ।। अस्त्र शब्द पहले कहकर अन्त में अरि शब्द कहा जाता है और बाण के समस्त नामों को जान लिया जाता है ।। २४६ ।। चर्म के सभी नाम कहकर अन्त में अरि पद कहने से शत्रान्त बाण के अनन्त नाम निकलते चले जाते हैं ।। २४७ ।। तनत्राण (कवच) के नाम के अन्त में अरि पद जोड़ने से बाण के समस्त नाम बनते हैं, जिनसे हमें स्नेह करना चाहिए ।। २४८ ।। धनुष के समस्त नामों को कहकर अर्दन पद का उच्चारण करने से श्रीबाण के सभी नामों को जाना जाता है ।। २४९ ।। पनच (प्रत्यंचा) के नाम लेकर अन्तक पद लगाने से बाण के समस्त नामों का वर्णन होता है ।। २५० ।। शर पद पहले कहकर अरि पद पुनः लगाने से बाण के समस्त नामों को चित्त में जाना जाता है ।। २५१ ।। मृगपद पहले

हा पद बहुर बखान। म्रिगहा पद यह होत है लीजहु चतुर पछान ॥ २५२ ॥

॥ इति श्री शस्त्र नाममाला पुराणे स्रीबान त्रितीय धिआइ समापतम सतु सुभम सतु ॥ ३ ॥

अथ स्रीपाँस के नाम

॥ दोहरा ॥ बीर ग्रिसत ही ग्रीवधर बरणायुध कहि अंत। सकल नाम स्रीपाँस के निकसत चलैं अनंत ॥ २५३ ॥ ग्रीव ग्रिसतन भव धरा जलधराज हथिआर। परो दुशट के कंठ मै मोकहु लेहु उबार ॥ २५४ ॥ प्रिथम नदन के नाम लै एस एस पद भाखि। शस्त्र उचरि सभ पाँस के नाम चीन चित राखु ॥ २५५ ॥ गंगा एस बखानि कै ईस शस्त्र कहि अंत। सकल नाम स्रीपाँस के निकसत चलै अनंत ॥ २५६ ॥ जटज जानुवी करि तहाँ गंगाईस बखानु। आयुध अंत बखानिऐ नाम पाँस कै जान ॥ २५७ ॥ सकल अघन के नाम लै हा आयुध सु बखान। सकल नाम स्रीपाँस के चतुर चित्त महि

कहकर हा पद पुनः लगाने से मृगहा अर्थात् मृगों को नाश करनेवाला बाण पद बनता है, जिसे चतुर गण चित्त में पहचान लेते हैं ॥ २५२ ॥

॥ इति श्री शस्त्र नाममाला पुराण के श्रीवाण तृतीय अध्याय की शुभ सत समाप्ति ॥ ३ ॥

श्रीपाश के नाम

॥ दोहा ॥ वीरग्रस्त ग्रीवधर एवं वरुणायुध कहने से पाश के समस्त नाम बनते चले जाते हैं ॥ २५३ ॥ हे ग्रीवा को भयाक्रान्त करनेवाले, धरती को भयभीत करनेवाले जलधिराज के शस्त्र पाश! आप दुष्टों के कण्ठों पर प्रहार करें और मेरा उद्धार करें ॥ २५४ ॥ पहले सभी नदियों के नाम लेकर पुनः ईश पद तथा पुनः शस्त्र पद का उच्चारण करने से पाश के सभी नामों को चित्त में जाना जाता है ॥ २५५ ॥ गंगेश शब्द के साथ शस्त्र पद लगाने से पाश के समस्त नाम निकलते चले जाते हैं ॥ २५६ ॥ जटज, जाह्नवी, गंगा कहकर पुनः ईश पद लगाकर तथा अन्त में आयुध कहने से पाश के नामों का वर्णन होता है ॥ २५७ ॥ सभी पापों के नाम लेकर हा

जान ॥ २५८ ॥ किलबिख पाप बखानि कै रिपुपति शस्त्र बखान । सकल नाम स्त्रीपाँस के लीजहु चतुर पछान ॥ २५९ ॥ अधरम पाप बखानि कै नास नोस्य शत्रु भाखि । सकल नाम स्त्रीपाँस के चीन चतुर चित राखि ॥ २६० ॥ सकल जटन को नाम लै जा प्रति (मू०ग्रं०७३१) अस्त्र बखान । अमित नाम स्त्रीपाँस के चतुर चित्त महि जानु ॥ २६१ ॥ तउ सर शत्र बखानि कै भेदक ग्रंथ बखान । शस्त्र शबद पुनि भाखिऐ नाम पाँस पहिचान ॥ २६२ ॥ गिर पद प्रिथम बखानि कै नासनि नाथ बखान । शस्त्र शबद पुनि भाखिऐ नाम पाँस पहिचान ॥ २६३ ॥ कोकीनो की पक्ख धर पती परी बखान । पच्छी पच्छि अंतक कहो सकल पाँस के नाम ॥ २६४ ॥ कंट शबद प्रिथमै उचरि अघन शबद कहु अंत । पति ससि भाखहु पाँस के निकसहि नाम अनंत ॥ २६५ ॥ पब्या प्रिथम बखानि कै भादनि ईस बखान । शस्त्र शबद पुनि भाखिऐ नाम पाँस पहिचान ॥ २६६ ॥ जलनाइक बारस्त्र भनि शस्त्र शबद पुनि देह । सकल नाम स्त्रीपाँस के चीन्ह चतुर चित लेहु ॥ २६७ ॥ सभ गंगा के नाम लै पति कहि शस्त्र बखान । सभै नाम

शस्त्र कहने से चतुर गण मन में श्रीपाश के सभी नाम जान जाते हैं ॥ २५८ ॥ सभी पापों का वर्णन कर रिपु पति शस्त्र कहने से, हे चतुर गण ! श्रीपाश के सभी नामों को पहचान लो ॥ २५९ ॥ अधर्म, पाप का वर्णन कर नाश शत्रु पद लगाने से पाश के समस्त नाम चित्त में जाने जाते हैं ॥ २६० ॥ सभी जटाओं के नाम लेकर पुनः जा, पति, अस्त्र कहने से पाश के अनन्त नाम जाने जाते हैं ॥ २६१ ॥ सरोवर के शत्रु का भेदन करनेवाले वरुण के साथ शस्त्र पद लगाने से ग्रन्थ-सम्मत पाश के नाम पहचाने जाते हैं ॥ २६२ ॥ गिरिनाशिनी, नाथ पद कहकर पुनः शस्त्र शब्द का उच्चारण करने से पाश के नामों की पहचान की जाती है ॥२६३॥ अनेक प्रकार के पक्षियों का अन्त करनेवाले शस्त्र को पाश नाम से पहचाना जाता है ॥ २६४ ॥ कष्ट शब्द पहले कहकर अन्त में अघन पति शस्त्र लगाने से श्रीपाश के नामों को चतुर गण जान लेते हैं ॥ २६५ ॥ पर्वत शब्द पहले कहकर मेदिनी पद लगाकर ईस-शस्त्र कहने से पाश के नाम जाने जाते हैं ॥ २६६ ॥ जलनायक, वारि-अस्त्र शब्द कहकर पुनः शस्त्र पद लगाने से श्रीपाश के समस्त नामों को चतुर गण पहचान लेते हैं ॥ २६७ ॥ गंगा के समस्त नाम कहकर पति-शस्त्र कहने से पाश के

स्त्रीपाँस के लीजहु चतुर पछान ॥ २६८ ॥ जमुना प्रिथम
बखानि कै एसअस्त्र कहि अंत । सकल नाम स्त्रीपाँस के
निकसत चलत अनंत ॥ २६९ ॥ कालिंद्री पद प्रिथम भनि
इंद्र शबद कहि अंत । अस्त्र बहुरि कहु पाँस के निकसहि
नाम अनंत ॥ २७० ॥ कालिनुजा पद प्रिथम कहि इसरास्त्र
पुनि भाखु । सकल नाम स्त्रीपाँस के चीन चतुर चित
राखु ॥ २७१ ॥ क्रिशन बललभा प्रिथम कहि इसरास्त्र कहि
अंत । सकल नाम स्त्रीपाँस के निकसत चलत अनंत ॥ २७२ ॥
सूरज पुत्र को प्रिथम कहि पति कहि शस्त्र बखान । सकल
नाम स्त्रीपाँस के लीजहु चतुर पछान ॥ २७३ ॥ भान आतमज
आदि कहि अंत आयुध पति देहु । सकल नाम ए पाँस के
चीन्ह चतुर चित लेहु ॥ २७४ ॥ सूत आतमज आदि कहि
अंत शस्त्र पद दीन । सकल नाम स्त्रीपाँस के चीनहु चित्त
परबीन ॥ २७५ ॥ कालपिता प्रथमै उचरि अंत तनुज पदि
देहु । पति कहि अस्त्र बखानिऐ नाम पाँस लखि लेहु ॥२७६॥
दिवकर तनजा प्रिथम कहि पति कहि शस्त्र बखान । सकल
नाम स्त्रीपाँस के लीजहु चतुर पछान ॥ २७७ ॥ पाँस
ग्रीवहा कंठ रिप बरुणायुध जिह नाम । परो दुशट के कंठ मै

समस्त नामों को पहचान लिया जाता है ॥ २६८ ॥ यमुना पहले कहकर फिर ईश-अस्त्र कहने से पाश के समस्त नाम बनते चले जाते हैं ॥ २६९ ॥ कालिन्दी पद पहले कहकर बाद में इन्द्र अस्त्र कहने से पाश के अनेकों नाम निकलते चले जाते हैं ॥ २७० ॥ काली अनुजा पद पहले कहकर ईशरास्त्र कहने से पाश के नाम चतुर गण मन में समझ लेते हैं ॥ २७१ ॥ कृष्णवल्लभा पहले कहकर अन्त में ईशरास्त्र कहने से पाश के समस्त नाम निकलते चले जाते हैं ॥ २७२ ॥ सूर्यपुत्री (यमुना) पहले कहकर पति शस्त्र कहने से चतुर गण पाश के समस्त नाम जान लेते हैं ॥ २७३ ॥ भानु आतमज पहले कहकर अन्त में आयुध पद लगाने से पाश के समस्त नामों को चतुर गण जान जाते हैं ॥ २७४ ॥ सूर्य आतमज पहले कहकर अन्त में शस्त्र पद देने से प्रवीण लोग पाश के समस्त नामों को जान लेते हैं ॥ २७५ ॥ पहले काल, पुनः तनुज, पुनः पति, पुनः अस्त्र पद लगाने से पाश के समस्त नामों को जान लिया जाता है ॥ २७६ ॥ दिवाकर तनुजा पहले कहकर पुनः पति शब्द कहने से चतुर गण श्रीपाश के समस्त नामों को पहचान लेते हैं ॥ २७७ ॥ ग्रीवहा, कंठरिपु, पाश, वरुणायुध आदि जिसके नाम हैं, तुम दुष्ट के गले में पड़ो और

करो हमारे काम ॥ २७८ ॥ आदि कंठ के नाम लै ग्राहक पद कहि (मू०ग्रं०७३२) अंत । बरुणायुध के नाम सभ निकसत चलत बिअंत ॥ २७९ ॥ नारि कंठ गर ग्रीव भनि ग्रहिता बहुर बखान । सकल नाम ए पाँस के निकसत चलत अप्रमान ॥ २८० ॥ जमुना प्रिथम बखानि कै एसरायुधहि बखान । सकल नाम स्रीपाँस के चीनहु चतुर सुजान ॥ २८१॥ का बरणादि बखानिकै मंद बरुण पद देहु । होत हैं नाम कमंद के चीन चतुर चित लेहु ॥ २८२ ॥ किशन आदि पद उचरि कै बल्लभांत पद देहु । पति असंतांति उचारिऐ नाम पाँस लखि लेहु ॥ २८३ ॥ बीर ग्रिसतनी सुभटहा कालायुध जिह नाम । परो दुशट के कंठ मैं करो हमारो काम ॥ २८४ ॥ काल अकाल कराल भनि आयुध बहुर बखानु । सकल नाम ए पाँस के चतुर चित्त महि जानु ॥ २८५ ॥ आदि उचरिऐ सूरज पद पूत उचरिऐ अंत । शस्त्र भाखिऐ पाँस के निकसहि नाम बिअंत ॥ २८६ ॥ सकल सूरज के नाम लै सुत पद अस्त्र बखान । सकल नाम स्रीपाँस के चतुर चित्त मै जानु ॥ २८७ ॥ भान दिवाकर दिनध भनि सुत कहि अस्त्र बखान । सकल नाम स्रीपाँस के चतुर चित्त मै जानु ॥ २८८ ॥

हमारे कार्यों को करो ॥ २७८ ॥ पहले कंठ का नाम लेकर अन्त में ग्राह पद लगाकर वरुणायुध के सभी नाम निकलते चले जाते हैं ॥ २७९ ॥ नारि कंठ, गला, ग्रीवा पहले कहकर पुनः ग्रहीता शब्द लगाने से पाश के समस नाम निकलते चले जाते हैं ॥ २८० ॥ पहले यमुना कहकर पुनः ईशरायु कहने से श्रीपाश के समस्त नाम चतुरगण पहचान लेते हैं ॥ २८१ ॥ क व का वर्णन कर पुनः मन्द वर्ण लगाने से कमन्द का नाम पहचाना जात है ॥ २८२ ॥ कृष्ण पद पहले कहकर वल्लभा पद देकर पति अस्त्र उच्चार करने से पाश के सभी नामों को जाता जाता है ॥ २८३ ॥ वीर ग्रस्तनी सुभटहा, कालायुध आदि जिसके नाम हैं, हे पाश ! तुम दुष्ट के गले में पड़ और हमारा काम करो ॥ २८४ ॥ काल, अकाल, कराल कहकर पुन आयुध पद लगाने से पाश के समस्त नामों को चतुर गण चित्त में जान जा हैं ॥ २८५ ॥ पहले सूर्य फिर पुत्र तथा अन्त में शस्त्र पद कहने से पाश अनेकों नाम बनते चले जाते हैं ॥ २८६ ॥ सूर्य के समस्त नाम कहकर सु एवं अस्त्र पद लगाने से श्रीपाश के समस्त नामों को चतुर गण चित्त में जा जाते हैं ॥ २८७ ॥ भानु, दिवाकर, दिनधि कहकर सुत पद तथा अस्त्र कह

दिन माणि दिव करि रैणहा सुत कहि शस्त्र बखान। सकल नाम स्त्रीपाँस के चतुर चित्त मै जानु ॥ २८९ ॥ दिन को नाम बखानिकै मणि पद बहुर बखान। सुत कहि अस्त्र बखानिऐ नाम पाँस पहिचान ॥ २९० ॥ दिवकरि दिनपति निसरि भनि दिननाइक पुन भाखु। सुत कहि अस्त्र बखानिऐ नाम पाँस लखि राखु ॥ २९१ ॥ सकल सूरज के नाम लै सुत कहि अस्त्र बखान। सकल नाम स्त्रीपाँस के चतुर चित्त महि जानु ॥ २९२ ॥ जम पद प्रिथम बखानि कै शस्त्र शबद पुनि देहु। सकल नाम स्त्रीपाँस के चीन चतुर चित लेहु ॥२९३॥ बई वसत पद आदि कहि आयुध अंत बखानु। सकल नाम स्त्रीपाँस के चतुर चित्त महि जानु ॥ २९४ ॥ काल शबद कौ आदि कहि अस्त्र शबद कहि अंत। सकल नाम स्त्रीपाँस के निकसत चलै अनंत ॥ २९५ ॥ पितर राज पद प्रिथम कहि अस्त्र शबद पुनि देहु। सकल नाम स्त्रीपाँस के चीन चतुर चित्त लेहु ॥ २९६ ॥ दंडी प्रिथम बखानि कै (मू०ग्रं०७३३) अस्त्र शबद कहि अंत। सकल नाम स्त्रीपाँस के चीनहु चतुर बिअंत ॥ २९७ ॥ जमुना भ्रात बखानिकै आयुध बहुर बखानु।

से पाश के समस्त नाम चतुर गणों द्वारा चित्त में जाने जाते हैं ॥ २८८ ॥ दिनमणि, दिवाकर, रैणहा तथा सुत शस्त्र लगाने से चतुर गण चित्त में पाश के नाम जान लेते हैं ॥ २८९ ॥ दिन का नाम कहकर पुनः मणि पद तथा सुत अस्त्र कहने से पाश के समस्त नामों को जाना जाता है ॥ २९० ॥ दिवाकर, दिनपति, निशारि, दिननायक कहकर सुत अस्त्र लगाने से पाश के नाम जाने जाते हैं ॥ २९१ ॥ सूर्य के समस्त नाम लेकर सुत अस्त्र कहने से श्रीपाश के समस्त नाम जाने जाते हैं ॥ २९२ ॥ यम पद पहले कहकर पुनः शस्त्र शब्द लगाने से पाश के नाम चित्त में पहचाने जाते हैं ॥ २९३ ॥ वैवस्वत पद पहले कहकर अन्त में आयुध शब्द कहने से श्रीपाश के समस्त नाम चित्त में जाने जाते हैं ॥ २९४ ॥ काल शब्द पहले कहकर अस्त्र शब्द को अन्त में लगाने से श्रीपाश के अनन्त नाम निकलते चले जाते हैं ॥ २९५ ॥ पितृराज पद पहले कहकर पुनः अस्त्र शब्द लगाने से पाश के समस्त नाम पहचाने जाते हैं ॥ २९६ ॥ दण्डी पद पहले कहकर अस्त्र शब्द अन्त में लगाने से पाश के अनन्त नामों को चतुर गण पहचान लेते हैं ॥ २९७ ॥ यमुना-भ्रात कहकर आयुध पद लगाने से पाश के समस्त नामों को चतुर गण हृदय में जान लेते

सकल नाम स्त्रीपाँस के चतुर चित्त महि जानु ।। २९८ ।। सभ जमना के नाम लै भ्रात अस्त्र पुनि देहु । सकल नाम स्त्रीपाँस के चतुर चित्त लखि लेहु ।।२९९।। पितर शबद प्रिथमै उचरि एसर बहुर बखान । सकल नाम स्त्रीपाँस के चतुर चित्त महि जान ।। ३०० ।। सभ पितरन को नाम लै नाइक बहुर बखान। सकल नाम स्त्रीपाँस के चतुर चित्त महि जानु ।। ३०१ ।। सकल जगत के नाम लै घाइक अस्त्र बखानु । सकल नाम स्त्रीपाँस के चतुर चित्त महि जानु ।। ३०२ ।। रिपखंडन दल दाहनी शत्र तापनी सोइ । सकल पाँस के नाम सभ जा ते बच्यो न कोइ ।। ३०३ ।। रिप पद प्रिथम बखानि कै ग्रिसतनि बहुर बखान । सकल नाम जम पाँस के चतुर चित्त महि जानु ।। ३०४ ।। खल पद आदि उचारि कै खंडन अंत बखान । सकल नाम जम पाँस के चीनहु चतुर सुजान ।। ३०५ ।। दल दाहन रिप ग्रिसतनी शत्र तापनी सोइ । काल पाँस के नाम सभ जाते रहित न कोइ ।। ३०६ ।। जा पद प्रिथम उचारि कै मी पद अंत बखानु । जामी पद ए होत है नाम पाँस के जानु ।। ३०७ ।। दिसा बारणी प्रिथम कहि एसरास्त्र कहि अंत । सकल नाम स्त्रीपाँस के निकसत चलत बिअंत ।। ३०८ ।।

हैं ।। २९८ ।। यमुना के सभी नामों को कहकर भ्रात अस्त्र लगाने से चतुर गण श्रीपाश के समस्त नामों को जान लेते हैं ।। २९९ ।। पितृ (यम) शब्द पहले कहकर एशर पद पुनः लगाने से चतुर गण श्रीपाश के समस्त नामों को चित्त में जान लेते हैं ।। ३०० ।। सभी पितरों के नाम लेकर नायक पद लगाने से श्रीपाश के नाम मन में जाने जाते हैं ।। ३०१ ।। जगत के समस्त नाम लेकर संहारक अस्त्र पद लगाने से चतुर गण श्रीपाश के अनन्त नामों को जानते हैं ।। ३०२ ।। रिपुखण्डन, दलदाहक, शत्रुतापक आदि सभी पाश के नाम हैं, जिससे कोई भी नहीं बच सका है ।। ३०३ ।। रिपु पद पहले कहकर ग्रस्तन पुनः कहने से यमपाश के सभी नामों को जाना जाता है ।।३०४।। खल पद प्रारम्भ कहकर अन्त में खण्डन कहने से यमपाश के नामों को पहचाना जाता है ।। ३०५ ।। दलदाहन, रिपुग्रस्तनी, शत्रुतापनी आदिकाल पाश के ही नाम हैं, जिनसे कोई भी नहीं बच सका है ।। ३०६ ।। जा पद पहले कहकर अन्त में मी पद लगाने से जामी पद बनता है, जिसका अर्थ पाश होता है ।। ३०७ ।। दिशा वारुणि पहले कहकर ऐशरा शत्रु अन्त में कहने से श्रीपाश के अनन्त नाम निकलते चले जाते हैं ।। ३०८ ।। पश्चिम शब्द पहले

पच्छम आदि बखानि कै एसर पुनि पद देहु । आयुध बहुर बखानिऐ नाम पाँस लखि लेहु ।। ३०९ ।। प्रिथम ठगन के नाम लै आयुध बहुर बखान । सकल नाम ए पाँस के चतुर चित्त पहिचान ।। ३१० ।। बाति आदि पद उचरि कै हा पद अस्त्र बखान । नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु जान ।। ३११ ।। मग पद आदि बखानि कै छिद पद अंत बखान । नाम पाँस के होत हैं लीजो चतुर पछान ।। ३१२ ।। मारग आदि बखानि कै मार बखानहु अंत । नाम पाँस के होत हैं निकसत चलै बिअंत ।। ३१३ ।। पंथ आदि पद उचरि कै करखण पुनि पद देहु । आयुध बहुर बखानिऐ नाम पाँस लखि लेहु ।। ३१४ ।। बात आदि पद उचरि कै हा अस्त्रांत बखान । (मू०ग्रं०७३४) नाम पाँस के होत हैं चीनहु गुनन निधान ।। ३१५ ।। राह आदि पद उचरिऐ रिप कहि अस्त्र बखान । नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु जान ।।३१६ ।। प्रिथमै धन शबदो उचरि हरता आयुध चीन । नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु चीन्ह ।। ३१७ ।। माल आदि शबदोच्र कै काल जाल कहि अंत । सकल नाम इह पाँस के चीनहु प्रग्यावंत ।। ३१८ ।। माया हरन उचारि कै आयुध बहुर

कहकर एशर पद पुनः लगाने से तथा आयुध पद रखने से पाश के नाम समझे जाते हैं।। ३०९ ।। पहले ठगों के नाम रखकर पुनः आयुध कहने से पाश के समस्त नाम चित्त में पहचाने जाते हैं।। ३१० ।। वात् पद पहले कहकर हा पद तथा अस्त्र लगाने से पाश के नाम बनते हैं, जिन्हें चतुर गण पहचान लेते हैं।। ३११ ।। मग पद पहले कह छिद पद अन्त में लगाने से पाश के नाम चतुर गण पहचान लेते हैं।। ३१२ ।। मार्ग शब्द पहले कहकर मार शब्द अन्त में रखने पर पाश के अनन्त नाम निकलते चले जाते हैं।।३१३।। पन्थ शब्द पहले कहकर पुनः कर्षण पद लगाने से तथा पुनः आयुध कहने से पाश के नाम जाने जाते हैं।। ३१४ ।। वात पद पहले कहकर हा अस्त्रान्त कहने से गुणज्ञ जन पाश के नाम पहचान लेते हैं।। ३१५ ।। राह पद कहकर रिपु अस्त्र कहने से पाश के नाम बनते हैं, जिन्हें चतुर गण जान लेते हैं।। ३१६ ।। पहले धन शब्द का उच्चारण कर पुनः हर्ता आयुध कहने से पाश के समस्त नामों को जाना जाता है।। ३१७ ।। माल शब्द का पहले उच्चारण कर काल-जाल अन्त में लगाने पर प्रज्ञावान पुरुष पाश के समस्त

बखान। सकल नाम ए पाँस के चतुर चित्त महि जान ।। ३१९ ।। मगहा पथहा पैंडहा धनहा द्रिबहा सोइ। जा के डर ते सो सुनो पथक न उबर्‌यो कोइ ।। ३२० ।। बिखिआ आदि बखानि कै आयुध अंत उचार। नाम पाँस के होत हैं लीजहु चतुर सुधार ।। ३२१ ।। बिख शबदाद उचारि कै दाइक अस्त्र बखान। नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु जान ।। ३२२ ।। चंद्रभगा के नाम लै पति कहि अस्त्र बखान। नाम पाँस के होत हैं चीनहु प्रग्यावान ।। ३२३ ।। सतुद्रव नाथ बखानि कै पुनि कहि अस्त्र बिसेख। सकल नाम ए पाँस के निकसत चलत असेख ।। ३२४ ।। सत शबदादि बखान कै एसरास्त्र कहि अंत। नाम सकल ए पाँस के चीन लेहु बुधवंत ।। ३२५ ।। प्रिथम बिपासा नाम लै एसरास्त्र पुनि भाखु। नाम सकल स्त्रीपाँस के चीन चित्त मै राखु ।। ३२६ ।। रावीसावी आदि कहि आयुध एस बखान। नाम पाँस के होत हैं चीनहु प्रग्यावान ।। ३२७ ।। साईवी स्त्रावी सभनि आयुध बहुर उचार। नाम पाँस के होत हैं लीजहु सु कवि सुधार ।। ३२८ ।। जल सिंध एस बखानि कै आयुध अंत

नामों को पहचान लेते हैं ।। ३१८ ।। मायाहरण पहले कहकर पुनः आयुध शब्द कहने से पाश के समस्त नामों को चतुर-चित्त जान जाते हैं ।। ३१९ ।। मगहा, पथहा, धनहा, द्रव्यहा आदि सभी पाश के नाम हैं, जिसके डर से कोई भी पथिक उबर नहीं सका है ।। ३२० ।। विष पहले कहकर आयुध साथ में लगाने पर पाश के नामों को सुधारकर चित्त में जाना जाता है ।। ३२१ ।। विष शब्द पहले कहकर दायक अस्त्र पुनः कहने से पाश के नाम बनते हैं, जिन्हें चतुर गण जान लेते हैं ।। ३२२ ।। चन्द्रभगा नदी के नाम लेकर पति अस्त्र पद लगाने से प्रज्ञावान पाश के नामों को पहचान लेते हैं ।। ३२३ ।। शतद्रव नाथ कहकर पुनः अस्त्र विशेष कहने से पाश के अनेकों नाम निकलते चले जाते हैं ।। ३२४ ।। शत शब्द पहले कहकर ऐशरास्त्र अन्त में लगाने पर बुद्धिमान पाश के समस्त नामों को पहचान लेते हैं ।। ३२५ ।। पहले बिपाशा नदी का नाम लेकर पुनः ईशरास्त्र कहने से श्रीपाश के नाम चित्त में जाने जाते हैं ।। ३२६ ।। रावी नदी पहले कहकर पुनः आयुध कहने से पाश के नाम प्रज्ञावान लोग पहचान जाते हैं ।। ३२७ ।। सभी नदियों के स्वामी का नाम लेकर पुनः आयुध का उच्चारण करने से पाश के समस्त नामों को कविगण सुधारकर जान लें ।। ३२८ ।। जल सिन्धु ईश कहकर अन्त

बखान । नाम पाँस के होत हैं चतुर चित्त महि जान ।। ३२९ ।। बिहथि आदि शबदोच्त्रिकै एसरास्त्र कहु अंत । सकल नाम ए पाँस के चीन लेहु मतिवंत ।। ३३० ।। सिंध आदि शबदुचरि कै आयुध अंत बखान । नाम पाँस के होत सभ चीनहु प्रग्यावान ।। ३३१ ।। नील आदि शबदुचरि कै एसर अस्त्र बखान । नाम पाँस के होत हैं चीन लेहु सुर ग्यान ।। ३३२ ।। असित बार शबदादि कहि पति अस्त्रांत बखान । नाम पाँस के होत हैं चीन लेहु मतिवान ।। ३३३ ।। किशना आदि (मू०ग्रं०७३५) उचारि कै आयुध एस बखान । नाम पाँस के होत हैं लीजहु चतुर पछान ।। ३३४ ।। शबद आदि कहि भीमराइ सरासत्र कहि अंत । नाम पाँस के होत है चीन लेहु मतवंत ।। ३३५ ।। तपती आदि उचारि कै आयुध एस बखान । नाम पाँस के होत है सुजनि सत्ति करि जान ।।३३६।। बारराज समु देस भनि सरत सरध पति भाखु । आयुध पुनि कहि पाँस के चीन नाम चित राखु ।। ३३७ ।। बरण बीरहा आदि कहि आयुध पुनि पद देहु । नाम पाँस के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ।। ३३८ ।। नदी राज सरंती सभनि समुदराट पुनि भाखु । आयुध अंत बखानिऐ नाम पाँस लखि

में आयुध कहने से चतुर गण पाश के नाम जानते हैं ।। ३२९ ।। विहथ शब्द पहले कहकर ईशरास्त्र अन्त में कहने से मतिवान लोग पाश के नामों को जान लेते हैं ।। ३३० ।। सिन्धु शब्द पहले कहकर अन्त में आयुध कहने से प्रज्ञावान लोग पाश के नाम जानते हैं ।। ३३१ ।। नील शब्द पहले कहकर ईशरास्त्र कहने से पाश के नाम पहचान लिये जाते हैं ।। ३३२ ।। असितवारि शब्द पहले कर पति अस्त्र अन्त में लगाने पर मतिवानो ! पाश के नाम पहचान लो ।। ३३३ ।। कृष्णा पहले कहकर आयुध ईश कहते हुए, हे चतुर गण ! पाश के नामों को पहचान लो ।। ३३४ ।। भीमराज शब्द पहले कहकर शरास्त्र अन्त में कहने से हे मतिवन्त ! पाश के नामों को पहचान लो ।।३३५।। ताप्ती पहले कहकर आयुध ईश लगाने से हे सुजानो ! पाश के नाम जाने जाते हैं ।। ३३६ ।। वारिराज समुद्रेश कहकर सरित्पति कहकर पुनः आयुध कहने से पाश के नाम चित्त में पहचाने जाते हैं ।। ३३७ ।। वरुण, वीरहा पहले कहकर पुनः आयुध पद लगाने से पाश के नाम होते हैं ।। ३३८ ।। नदीराज सभी सरिताओं का स्वामी विराट् समुद्रराज कहकर पुनः आयुध अन्त में कहने से पाश के नाम जाने जाते हैं ।। ३३९ ।। ब्रह्मपुत्र पद पहले

राखु ।। ३३९ ।। ब्रहमपुत्र पद आदि कहि एसरास्त्र कहि अंत ।
नाम पाँस के सकल ही चीन लेहु मतवंत ।। ३४० ।। ब्रहमा
आदि बखान कै अंत पुत्र पद देहु । आयुध एस बखानिऐ
नाम पाँस लखि लेहु ।। ३४१ ।। ब्रहमा आदि उचारिकै सुत
पद बहुर बखान । एसरास्त्र पुनि भाखिऐ नाम पाँस
पहिचान ।। ३४२ ।। जगतपिता पद प्रिथम कहि सुत पद अंत
बखान । नाम पाँस के होत है चीनहु प्रगिआवान ।। ३४३ ।।
घग्घर आदि उचार कै ईसरास्त्र कहि अंत । नाम पाँस के
होत हैं चीनहु प्रग्गिआवंत ।। ३४४ ।। आदि सुरसती उचरिकै
ईसरास्त्र कहि अंत । नाम पाँस के सकल ही चीन लेहु
मतिवंत ।। ३४५ ।। आमू आदि बखानकै ईसरास्त्र कहि अंत ।
नाम सकल स्रीपाँस के निकसत चलत बिअंत ।। ३४६ ।।
समुंद गामनी जे नदी तिनके नाम बखान । ईसरास्त्र पुनि उचरिऐ
नाम पाँस पहिचान ।। ३४७ ।। सकल काल के नाम लै
आयुध बहुर बखान । नाम पाँस के होत हैं चीन लेहु
मतवान ।। ३४८ ।। दुघद शबद प्रिथमै उचरि निध कहि ईस
बखान । आयुध बहुरि बखानिऐ नाम पाँस पहिचान ।।३४९।।

कहकर ईश्वरास्त्र कहने से पाश के समस्त नाम पहचाने जाते हैं ।। ३४० ।। ब्रह्मा पहले कहकर उसके बाद पुत्र पद लगाने से और फिर आयुध ईश कहने से पाश के नामों को जानो ।। ३४१ ।। ब्रह्मा पहले कहकर पुनः सुत पद तथा ईशरास्त्र कहने से पाश के नाम पहचाने जाते हैं ।। ३४२ ।। जगतपिता पद पहले कहकर अन्त में सुतपद लगाने से हे प्रज्ञावानो ! पाश के नामों को पहचानो ।। ३४३ ।। घग्गर नदी का नाम पहले कहकर ईशरास्त्र अन्त में कहने से पाश के नाम बनते हैं, जिन्हें हे प्रज्ञावानो ! तुम पहचानो ।। ३४४ ।। सरस्वती पहले कहकर ईशरास्त्र अन्त में कहने से हे मतिवानो ! पाश के नाम बनते हैं ।। ३४५ ।। आमू नदी पहले कहकर ईशरास्त्रं अन्त में कहने से श्रीपाश के अनन्त नाम निकलते चले जाते हैं ।। ३४६ ।। समुद्रगामिनी सभी नदियों के नामों का वर्णन कर पुनः ईशरास्त्र कहने से पाश के नामों को जाना जाता है ।। ३४७ ।। काल के समस्त नाम कहकर पुनः आयुध पद लगाने से मतिवान पाश के समस्त नामों को पहचान लेते हैं ।। ३४८ ।। दुग्ध शब्द पहले कहकर फिर निधि-ईश एवं आयुध लगाने से पाश के नामों को पहचाना जाता है ।। ३४९ ।। वारिधि शब्द पहले कहकर ईशरास्त्र अन्त

पानध प्रिथम बखानिकै ईसरास्त्र कहि अंत। नाम सकल स्त्रीपाँस के चीनत चलै अनंत ।। ३५० ।। स्त्रोनज आदि उचारि कै निध कहि ईस बखान। आयुध भाखो पाँस के निकसत नाम प्रमान ।। ३५१ ।। छितजज आदि बखानकै ईसरास्त्र कहि अंत। सकल (मू०ग्रं०७३६) नाम स्त्रीपाँस के चीनहु प्रग्यावंत ।। ३५२ ।। इसत्रनि आदि बखान कै रज पद अंत उचारि। ईसरास्त्र कहि पाँस के लीजिऐ नाम सुधार ।। ३५३ ।। नारिज आदि उचारिकै ईसरास्त्र पद देहु। नाम सकल स्त्रीपाँस के चीन चतुर चित लेहु ।। ३५४ ।। चंचलान के नाम लै जाकहि निधहि बखान। ईसरास्त्र पुनि उचरिऐ नाम पाँस पहिचान ।। ३५५ ।। आदि नाम नारीन के लैजा अंत बखान। निध कहि ईसर अस्त्र कहि नाम पाँस पहिचान ।। ३५६ ।। बनिता आदि बखान कै जाकहि निधहि बखान। ईसरास्त्र पुनि भाखिऐ नाम पाँस पहिचान ।।३५७।। इसत्रिज आदि उचार कै निध कहि ईस बखान। ईसरास्त्र कहि पाँस के जनिअहु नाम सुजान ।। ३५८ ।। बनिता आदि बखान कै निधकहि ईस बखान। आयुध बहुर बखानिऐ नाम पाँस पहिचान ।। ३५९ ।। अंजनान के नाम लै जाकहि

में कहने से पाश के अनन्त नामों को पहचाना जाता है ।। ३५० ।। श्रोणज पहले कहकर निधि ईश एवं आयुध कहने से पाश के नाम निकलते चले जाते हैं ।। ३५१ ।। क्षितिज पहले कहकर ईशरास्त्र अन्त में कहने से पाश के सभी नामों को पहचानो ।। ३५२ ।। स्त्री-रज पद कहकर ईशरास्त्र कहने से पाश के नामों को सुधारकर जाना जाता है ।। ३५३ ।। नारिज पद पहले कहकर ईशरास्त्र पद लगाने से श्रीपाश के समस्त नामों को चतुर गणो ! चित्त में पहचान लो ।। ३५४ ।। चंचला (स्त्रियों) के नामों को लेकर निधि ईशरास्त्र कहने से पाश के नामों को पहचाना जाता है ।। ३५५ ।। नारी के नामों को पहले रखकर अन्त में जा निधि ईशरास्त्र कहने से पाश के नामों को पहचाना जाता है ।। ३५६ ।। वनिता शब्द पहले कहकर निधि ईशरास्त्र पुनः कहने से पाश के नामों को पहचाना जाता है ।। ३५७ ।। स्त्री-रज पहले कहकर निधि-ईश कहते हुए ईशरास्त्र कहने से सुजान व्यक्ति पाश के नाम जानते हैं ।। ३५८ ।। वनिता शब्द पहले कहकर निधि-ईश तथा पुनः आयुध कहने से पाश के नामों को पहचाना जाता है ।। ३५९ ।। नैनों में

निद्धहि उचार । ईसरास्त्र कहि पाँस के लीजहु नाम सुधारु ।। ३६० ।। बाला आदि बखान कै निध कहि ईस बखान । नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु जान ।। ३६१ ।। अंजनान के नाम लै जाकहि निधहि बखान । ईसरास्त्र पुनि उचरिऐ नाम पाँस पहिचान ।। ३६२ ।। अबला आदि उचार कै निध कहि ईस बखान । आयुध बहुरि बखानिऐ नाम पाँस पहिचान ।। ३६३ ।। नरजा आदि उचारि कै जा निध ईस बखान । आयुध बहुर बखानिऐ नाम पाँस पहिचान ।। ३६४ ।। नरी आसरी किंन्रनी सुरी भाखिजा भाखि । निधपति अस्त्र कहि पाँस के नाम चीन चित राखि ।। ३६५ ।। फनिजा आदि उचारिकै जाकहि निधहि बखान । ईसरास्त्र कहि पाँस के चीनहु नाम सुजान ।। ३६६ ।। अबला बाला मानजा त्रियजा निधहि बखान । ईसरास्त्र कहि पाँस कै चीनहु नाम सुजान ।। ३६७ ।। समुंद गामनी जे नदी तिनके नाम बखान । ईस एस कहि अस्त्र कहि नाम पाँस पहिचान ।। ३६८ ।। पै पद प्रिथम बखान कै ईसरास्त्र कहि अंत । सकल नाम स्रीपाँस के निकसत चलै बिअंत ।। ३६९ ।। प्रिथमै भाख तड़ाग पद

अंजन लगानेवाली (स्त्रियों) के नाम लेकर जा पद तथा निधि ईशरास्त्र पदों को लगाने से पाश के नामों को सुधारकर जाना जाता है ।। ३६० ।। बाला पद पहले कर निधि-ईश कहने से हे चतुर गण ! पाश के नामों को जान लो ।। ३६१ ।। नैनों में अंजन लगानेवाली स्त्रियों के नाम लेकर जा पद निधि ईशरास्त्र कह पाश के नामों को पहचाना जाता है ।। ३६२ ।। अबला शब्द पहले कहकर निधि ईश तथा आयुध लगाने से पाश के नामों को पहचाना जाता है ।। ३६३ ।। नर जा पहले कहकर निधि ईश तथा पुनः आयुध कहने से पाश के नामों को पहचाना जाता है ।। ३६४ ।। नरी, आसुरी, किन्नरी, सुरी कहकर निधि पति अस्त्र कहने से पाश के नामों को चित्त में पहचान लिया जाता है ।। ३६५ ।। फणि जा पहले कहकर जा निधि ईशरास्त्र कहने से पाश के नाम जाने जाते हैं ।। ३६६ ।। अबला बाला, मानजा, त्रियजा निधि कहकर तथा ईशरास्त्र लगाकर हे बुद्धिमानो ! पाश के नामों को पहचानो ।। ३६७ ।। समुद्रगामिनी जितनी भी नदियाँ हैं, उनके नामों का वर्णन कर ईशेश पद लगाकर तथा अस्त्र कहकर पाश के नाम पहचान लो ।। ३६८ ।। पय पद पहले कहकर ईशरास्त्र अन्त में लगाने से श्रीपाश के समस्त नाम निकलते चले जाते हैं ।। ३६९ ।। पहले तड़ाग पद कहकर

ईसरास्त्र पुनि भाखु । नाम पाँस के होत (मू०ग्रं०७३७) हैं चीन
चतुर चित राखु ।। ३७० ।। प्रिथम सरोवर शबद कहि
ईसरास्त्र कह अंत । सकल नाम स्त्रीपाँस के चीन लेहु
मतिवंत ।। ३७१ ।। जलधर आदि बखान कै ईसरास्त्र पद
भाखु । नाम पाँस के होत हैं चीन्ह चतुर चित राखु ।।३७२।।
मघजा आदि उचारि कै धर पद बहुर बखान । ईसरास्त्र कहि
पाँस के लीजहु नाम पछान ।। ३७३ ।। आदि बार धर
उचरिकै ईसरास्त्र कहि अंत । नाम पाँस के होत हैं चीन लेहु
मतवंत ।। ३७४ ।। घनजधरन पद प्रिथम कहि ईसरास्त्र कहि
अंत । सकल नाम स्त्रीपाँस के चीन लेहु मतवंत ।। ३७५ ।।
मघजाधर पद प्रिथम कहि ईसरास्त्र कहि अंत । नाम पाँस
के होत हैं चीन लेहु मतवंत ।। ३७६ ।। अंबदजा धर आदि
कहि ईसरास्त्र कहि अंत । नाम पाँस के होत हैं चीन लेहु
मतवंत ।। ३७७ ।। अंबदजाधर प्रिथम कहि ईसरास्त्र पद
चीन । नाम पाँस के होत हैं लीजहु जान प्रबीन ।। ३७८ ।।
बारद आदि उचारिकै जा निध ईस बखान । अस्त्र उचरि सभ
पाँस के लीजहु नाम पछान ।। ३७९ ।। प्रिथम उचरि पद

पुनः ईशरास्त्र कहने से पाश के नाम चतुर गण चित्त में जान लेते हैं ।। ३७० ।।
पहले सरोवर शब्द, अन्त में ईशरास्त्र कहकर हे मतिमन्त ! पाश के समस्त नाम
जान लो ।। ३७१ जलधर पहले कहकर बाद में ईशरास्त्र:पद कहने से हे चतुर
गण ! पाश के नाम बनते हैं ।। ३७२ ।। मघजा पहले कहकर धर पद लगाकर
ईशरास्त्र कहने से, हे मतिवान ! पाश के नाम बनते हैं ।। ३७३ ।। पहले
बारधर कहकर अन्त में ईशरास्त्र कहने से पाश का नाम होता है —ऐसा हे
बुद्धिमान ! जान लीजिए ।। ३७४ ।। घनज धरन पद पहले कहकर ईशरास्त्र
अन्त में लगाने से हे मतिवान ! पाश के समस्त नाम पहचाने जाते हैं ।। ३७५ ।।
मघजाधर पद पहले कहकर ईशरास्त्र अन्त में कहने से पाश के नाम बनते
हैं, जिन्हें हे मतिवानो ! तुम पहचान लो ।। ३७६ ।। अम्बुदजाधर पहले
कहकर अन्त में ईशरास्त्र कहने से हे मतिवान ! पाश के नाम पहचान
लो ।। ३७७ ।। अम्बुदजाधर पहले कहकर पुनः ईशरास्त्र पद कहने से
हे प्रवीण जनो ! पाश के नाम बनते हैं ।। ३७८ ।। वारिद पहले कहकर जा
निधि ईश कहते हुए अस्त्र पद का उच्चारण करने से पाश के नामों को
पहचान लो ।। ३७९ ।। पहले नीरधर तथा अन्त में ईशरास्त्र कहने से पाश

नीरधर ईसरास्त्र कहि अंत । सकल नाम स्त्रीपाँस के निकसत चलै बिअंत ।। ३८० ।। रिद पद आदि बखानिकै ईसरास्त्र कहि दीन । नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु चीन ।।३८१।। हरधर आदि बखानकै ईसरास्त्र कहि अंत । सकल नाम स्त्रीपाँस के निकसत चलत बिअंत ।। ३८२ ।। जलजत्राण शबदोचरिकै ईसरास्त्र कहि दीन । नाम पाँस के होत हैं लीजहु चीन प्रबीन ।। ३८३ ।। हरध्रद जलध्रद बारध्रद निधिपति अस्त्र बखान । नाम पाँस के होत हैं लीजहु चतुर पछान ।। ३८४ ।। नीरदि आदि उचारिकै ईसरास्त्र कहि अंत । सकल नाम स्त्रीपाँस के निकसत चलै बिअंत ।। ३८५ ।। अंबदजाधर निध उचरि ईसरास्त्र कहि अंत । नाम पाँस के सकल ही चीनहु चतुर बिअंत ।। ३८६ ।। धाराधरज उचारिकै निधपति एस बखान । शस्त्र उचरि सभ पाँस के लीजहु नाम पछान ।। ३८७ ।। धाराधरध्रद ईस कहि अस्त्र बहुर पद चीन । नाम पाँस के होत हैं (मू०ग्रं०७३८) चतुर लीजिअहु चीन ।।३८८।। पै पद प्रिथम उचारिकै निध कहि ईस बखान । अस्त्र उचरि करि पाँस के लीजहु नाम पछान ।। ३८९ ।। सकल दुधद के

के अनन्त नाम निकलते चले जाते हैं ।। ३८० ।। रिप पद पहले कहकर ईशरास्त्र कह देने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें हे चतुर गण ! पहचान लीजिए ।। ३८१ ।। हरधर पहले कहकर अन्त में ईशरास्त्र कहने से श्रीपाश के अनन्त नाम निकलते चले जाते हैं ।। ३८२ ।। जलजत्राण शब्द का उच्चारण कर ईशरास्त्र कहने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें हे प्रवीण जनो ! आप पहचान लें ।। ३८३ ।। हरध्रद, जलध्रद, वारिध्रद, निधिपति और अस्त्र कहने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें चतुर गण पहचान लो ।। ३८४ ।। नीरद पहले और ईशरास्त्र अन्त में कहने से श्रीपाश के अनेकों नाम निकलते चले जाते हैं ।। ३८५ ।। अम्बुदजाधर निधि कहकर ईशरास्त्र कहने से हे चतुर गण पाश के समस्त नामों को पहचान लो ।। ३८६ ।। धाराधरज कहकर निधिपति ईश एवं शस्त्र कहने से पाश के नामों को पहचाना जाता है ।। ३८७ ।। धाराधरध्रद ईश कहकर पुनः अस्त्र पद कहने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें चतुर गण पहचान लें ।। ३८८ ।। पय पद पहले कहकर निधिईश कहने से तथा अस्त्र पद का उच्चारण करने से पाश के नाम पहचान लो ।। ३८९ ।। दुग्ध का नाम लेकर निधि-ईश लगाकर अस्त्र पद का

नाम लै निध कहि ईस बखान। अस्त्र उचरि कहि पाँस के चीनहु नाम सुजान ॥ ३९० ॥ नाम सु बीरन के सभै मुख ते प्रिथम उचारि। ग्रिसतनि कहि सभ पाँस के लीजहु नाम सुधारि ॥ ३९१ ॥ सकल बारि के नाम लै निधपति ईस बखान। अस्त्र उचरि करि पाँस के लीजहु नाम सुजान ॥ ३९२ ॥ सकल नाम लै धूरिके धरनिध ईस बखान। अस्त्र उचरि करि पाँस के चीनहु नाम सुजान ॥३९३॥ बारद अरि पद प्रिथम कहि ईसरास्त्र कहि अंत। निध कहि नाम स्त्रीपाँस के चीनहु चतुर अनंत ॥ ३९४ ॥ त्रेतांतक पद प्रिथम कहि निधि एसास्त्र बखान। नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु जान ॥ ३९५ ॥ झखीत्राण पद प्रिथम कहि ईसरास्त्र कहि अंत। नाम सकल स्त्रीपाँस के निकसत चलत बिअंत ॥ ३९६ ॥ मतसत्राण प्रिथमै उचरि ईसरास्त्र के दीन। नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु चीन ॥ ३९७ ॥ मैनकेत कहि त्रान कहि ईसरास्त्र के दीन। नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु चीन ॥ ३९८ ॥ सकल नाम लै नीर के जाकहि त्राण बखान। ईसरास्त्र कहि पाँस के चीन नाम अप्रमान ॥ ३९९ ॥

उच्चारण करने से हे विज्ञ जनो! पाश के नामों को पहचान लो ॥ ३९० ॥ वीरों के समस्त नामों को पहले कहकर पुनः ग्रस्तन पद कहने से पाश के सभी नाम सुधारकर जाने जाते हैं ॥ ३९१ ॥ जल के समस्त नामों को लेकर निधिपति ईश कहने से तथा अस्त्र पद का उच्चारण करने से हे सुजान! पाश के सभी नामों को जान लो ॥ ३९२ ॥ धूल के समस्त नामों को लेकर धर निधि ईश तथा अस्त्र पद का उच्चारण करने से हे बुद्धिमानो! पाश के नामों को पहचानो ॥ ३९३ ॥ वारिद अरि पद पहले कहकर ईशरास्त्र अन्त में लगाकर निधि कहने से श्रीपाश के नामों को चतुर गण पहचान लो ॥३९४॥ त्रेतांतक (युगों का अन्त करनेवाला) पद पहले कहकर निधि ईशास्त्र कहने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें चतुर गण आप जान लीजिए ॥ ३९५ ॥ झखीत्राण पद पहले कहकर ईशरास्त्र अन्त में कहने से श्रीपाश के समस्त नाम निकलते चले जाते हैं ॥ ३९६ ॥ मत्स्यत्राण पहले कहकर ईशरास्त्र लगाने से पाश के नाम बनते हैं, जिन्हें हे चतुर गण! तुम पहचान लो ॥३९७॥ मैनकेतु कहकर त्राण कहकर ईशरास्त्र लगाने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें हे चतुर गण! तुम पहचान लो ॥ ३९८ ॥ जल के सभी नाम लेकर जा पद तथा त्राण एवं पुनः ईशरास्त्र कहने से पाश के नाम पहचाने जाते हैं ॥ ३९९ ॥

बारजत्राण बखानिकै ईसरास्त्र के दीन । नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु चीन ॥ ४०० ॥ जलजत्राण पद प्रिथम कहि ईसरास्त्र पुनि भाखु । नाम पाँस के होत हैं चतुर चीन चित राख ॥ ४०१ ॥ नीरजत्राण बखानकै ईसरास्त्र कहि अंत । सकल नाम स्त्रीपाँस के निकसत चलत अनंत ॥ ४०२ ॥ कमलत्राण पद प्रिथम कहि ईसरास्त्र के दीन । नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु चीन ॥ ४०३ ॥ रिप पद प्रिथम उचारकै अंतक बहुर बखान । नाम पाँस के होत हैं लीजहु समझ सुजान ॥ ४०४ ॥ शत्र आदि शबदुचरिकै अंतक पुन पद देहु । नाम सकल स्त्रीपाँस के चीन चतुर चित लेहु ॥ ४०५ ॥ आदि खलं पदु उचरिकै अंत्यांतक के दीन । नाम पाँस के होत हैं चतुर (मू०ग्रं०७३९) लीजिअहु चीन ॥ ४०६ ॥ दुशट आदि शबदुचरिकै अंत्यांतक कहि भाखु । नाम सकल स्त्रीपाँस के चीन्ह चतुर चित राख ॥ ४०७ ॥ तन रिप प्रिथम बखानिकै अंत्यांतक के बीन । नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु चीन ॥ ४०८ ॥ असु अरि आदि बखानिकै अंत्यांतक कहु भाखु । नाम पाँस के होत हैं चीन्ह चतुर चित राख ॥४०९॥ दलहा प्रिथम बखानकै अंत्यांनक कौ देहु । नाम पाँस के होत

वारिजत्राण कहकर ईशरास्त्र लगाने से हे चतुर गणो ! पाश के नाम बनते हैं ॥ ४०० ॥ जलजत्राण पद पहले कहकर पुनः ईशरास्त्र कहने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें चतुर व्यक्ति चित्त में समझ लेते हैं ॥ ४०१ ॥ नीरजत्राण कहकर अन्त में ईशरास्त्र कहने से श्रीपाश के समस्त नाम निकलते चले जाते हैं ॥ ४०२ ॥ कमलत्राण पद पहले कहकर ईशरास्त्र लगाने से हे चतुर गण ! पाश के नाम होते हैं ॥ ४०३ ॥ रिपु पद पहले कहकर पुनः अन्तक लगाने से हे सुजान ! पाश के नाम होते हैं ॥ ४०४ ॥ शत्रु पद पहले कहकर फिर अन्तक पद लगाने से हे चतुर गण ! श्रीपाश के समस्त नाम होते हैं ॥ ४०५ ॥ खल पद का उच्चारण कर अन्त में यान्तक लगाने से हे चतुर गण ! पाश के नाम होते हैं जिन्हें तुम पहचान लो ॥ ४०६ ॥ दुष्ट पद पहले कहकर अन्त्यान्तक कहने से पाश के समस्त नाम होते हैं ॥ ४०७ ॥ तनरिपु पहले कहकर अन्त्यान्तक लगाने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें चतुर गण पहचान लेते हैं ॥ ४०८ ॥ असु अरि पहले कहकर अन्त्यान्तक कहने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें चतुर गण चित्त में पहचान लेते हैं ॥ ४०९ ॥ दलहा पहले कहकर अन्त्यान्तक लगाने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें हे

हैं चीन्ह चतुर चित लेहु ।।४१०।। प्रितनांतक पद प्रिथम कहि अंत्यांतक के दीन । नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु चीन ।। ४११ ।। धुजनी अरि पद प्रिथम कहि अंत्यांतकहि उचारि । नाम पाँस के होत हैं लीजहु सुकबि सुधारि ।।४१२।। आदि बाहनी शबद कहि रिप अरि शबद बखान । नाम पाँस के होत हैं चीन लेहु मतवान ।। ४१३ ।। बाहन आदि बखानि कै रिप अरि बहुर बखान । नाम पाँस के होत हैं चीन्ह लेहु बुधिवान ।। ४१४ ।। सैना आदि उचारिकै रिपु अरि बहुर बखानि । नाम पाँस के होत हैं लीजहु चतुर पछान ।। ४१५ ।। हयनी आदि बखानकै अंत्यंतक के दीन । नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु चीन ।। ४१६ ।। गैनी आदि बखानकै अंत्यंतक अरि देहु । नाम पाँस के होत हैं चीन्ह चतुर चित लेहु ।।४१७।। पतिनी आदि बखानकै अरि पद बहुर उचारि । नाम पाँस के होत हैं जान लेहु निरधार ।।४१८।। रथनी आदि बखानकै रिपु अरि अंत उचार । नाम पाँस के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ।। ४१९ ।। त्रिपणी आदि बखानकै रिप खिप बहुर उचार । नाम पाँस के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ।। ४२०।।

चतुर गण ! चित्त में पहचान लो ।। ४१० ।। प्रीतनान्तक पद पहले कहकर अन्त्यान्तक लगाने से पाश के नाम बनते हैं, जिन्हें हे चतुर गण ! तुम पहचान लो ।। ४११ ।। धुजनीअरि पद पहले कहकर अन्त्यान्तक कहने से पाश के नाम बनते हैं, जिन्हें हे कविगणो ! सुधारकर जान लो ।। ४१२ ।। वाहिनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि शब्द कहने से हे मतिवान ! पाश के नाम होते हैं ।। ४१३ ।। वाहन पहले कहकर रिपु अरि का वर्णन करने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें तुम हे बुद्धिमान ! तुम पहचान लो ।। ४१४ ।। सेनापद पहले कर रिपु अरि लगाने से हे चतुर गण ! पाश के नाम होते हैं, जिन्हें तुम पहचान लो ।। ४१५ ।। हयनी पहले कहकर अन्त्यान्तक पद लगाने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें हे चतुर गण ! तुम पहचान लो ।। ४१६ ।। गयनी पद पहले कहकर अन्त्यान्तक अरि पद लगाने से पाश के नाम बनते हैं ।।४१७।। पतिनी पहले कहकर अरि पद का उच्चारण करने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें तुम स्पष्ट रूप से जान लो ।। ४१८ ।। रथनी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से हे कविगण ! सुधारकर पाश के नाम जान लो ।।४१९।। नृपनी पहले कहकर रिपु पद लगाने से पाश के नाम सुधारकर जाने ज़ाते हैं ।। ४२० ।। भटनी शब्द पहले कहकर फिर रिपु अरि शब्द लगाने से हे

भटनी आदि बखानकै रिप अरि बहुर बखान। नाम पाँस के होत हैं चीनहु प्रग्यावान ॥ ४२१ ॥ आदि बीरणी शबद कहि रिप अरि बहुर बखान। नाम पाँस के होत हैं चीन लेहु मतिवान ॥ ४२२ ॥ शत्रणि आदि बखानकै रिप अरि पुनि पद देहु। नाम पाँस के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ॥४२३॥ धुज्जनि आदि बखानकै पुनि रिप अरि के ईन। नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु चीन ॥ ४२४ ॥ रिपणी आदि उचार कै रिप खिप (मू०ग्रं०७४०) अंत बखान। नाम पाँस के होत हैं चतुर चित्त पहिचान ॥ ४२५ ॥ अरिणी आदि उचारिकै रिप अरि बहुर बखान। नाम तुपक के होत हैं चीन लेहु मतवान ॥ ४२६ ॥ राजनि आदि उचारिकै रिप अरि अंत बखान। नाम पाँस के होत हैं चीन लेहु बुधवान ॥ ४२७ ॥ आदि ईशरणी शबद कहि रिप अरि बहुर बखान। नाम पाँस के होत हैं चीन्ह लेहु मतवान ॥४२८॥ भूपणि आदि बखानकै रिप अरि अंत उचार। नाम पाँस के होत हैं चीनहु चतुर अपार ॥ ४२९ ॥ त्रिपजन एस्त्रण आदि कहु रिप अरि अंत उचार। नाम पाँस के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ॥४३०॥

प्रज्ञावानों पाश के शब्द बनते हैं ॥ ४२१ ॥ वीरनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि लगाने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें हे मतिवानो! तुम पहचान लो ॥ ४२२ ॥ शत्रुणी शब्द पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से पाश के नाम बनते हैं, जिन्हें हे चतुर गण! तुम पहचान लो ॥ ४२३ ॥ धुजनी शब्द पहले कहकर पुनः रिपु अरि कहने से हे चतुर गण! पाश के नाम बनते हैं ॥ ४२४ ॥ रिपुनी शब्द पहले रखकर अन्त में रिपुक्षय कहने से हे चतुर गण! चित्त में पहचाननेवाले पाश के नाम होते हैं ॥ ४२५ ॥ अरिनी पद पहले कहकर रिपु अरि लगाने से तुपक (पाश) के नाम बनते हैं ॥ ४२६ ॥ राजनी पहले कहकर अन्त में रिपु अरि कहने से हे बुद्धिमानो! श्रीपाश के नाम होते हैं ॥ ४२७ ॥ ईशरणी शब्द पहले कहकर रिपु अरि शब्द लगाने से हे मतिवानो! पाश के नाम बनते हैं ॥ ४२८ ॥ भूपनी शब्द पहले कर अन्त में रिपु अरि का उच्चारण करने से हे चतुर गण! पाश के नाम होते हैं ॥ ४२९ ॥ नृपजन ऐश्वर्यणी पहले कहकर अन्त में रिपु अरि का उच्चारण करने से पाश के नाम बनते हैं, जिन्हें हे कविगणो! सुधारकर जान लो ॥ ४३० ॥ रजनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से पाश

राजनि आदि बखानकै रिप अरि अंत उचार। नाम पाँस के होत हैं चीनहु चतुर अपार ।। ४३१ ।। एसनि आदि बखानकै अंतक बहुर उचार। नाम पाँस के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ।। ४३२ ।। प्रिथम नरेश्रण शबद कहि रिप अरि अंत उचार। नाम पाँस के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ।।४३३।। आदि रावनी शबद कहि रिप अरि अंत उचार। नाम पाँस के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ।। ४३४ ।। राइन आदि उचारिकै रिप अरि बहुर बखान। नाम पाँस के होत हैं समझहु सुघर सुजान ।। ४३५ ।। ईस्त्रणी आदि बखानकै रिप अरि उचरहु अंत। नाम पाँस के होत हैं चीनहु चतुर अनंत ।। ४३६ ।। धुजनी आदि बखानकै रिप अरि अंत उचार। नाम पाँस के होत हैं चीनहु चतुर अपार ।। ४३७ ।। दैतनि आदि बखानकै रिप अरि अंत उचार। नाम पाँस के होत हैं चीनहु सुकबि सुधार ।। ४३८ ।। रदनी आदि बखानकै रिप अरि उचरहु अंत। नाम पाँस के होत हैं चीनहु चतुर बिअंत ।। ४३९ ।। प्रिथम पदुचरो बारणी रिप अरि अंत उचार। नाम पाँस के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ।। ४४० ।। दयधन प्रिथम उचारकै रिप अरि अंत

के नाम होते हैं ।। ४३१ ।। ईशनी पहले कहकर पुनः अन्तक पद कहने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें हे कविगणो ! सुधार लो ।। ४३२ ।। पहले नरेशणी शब्द कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से पाश के नाम सुधारकर होते हैं ।। ४३३ ।। रावणी शब्द पहले कहकर रिपु अरि शब्द अन्त में लगाने पर पाश के नाम बनते हैं ।। ४३४ ।। रायन पहले कहकर रिपु अरि लगाने से हे सुजानो ! पाश के नाम होते हैं ।। ४३५ ।। ईशरणी पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाओ और पाश के अनन्त नामों को पहचान लो ।। ४३६ ।। धुजनी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से पाश के नाम बनते हैं ।। ४३७ ।। दैत्यनी पद पहले लगाकर रिपु अरि अन्त में लगाने से पाश के नाम सुधारकर पहचाने जाते हैं ।। ४३८ ।। रदनी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में कहने से पाश के अनन्त नाम होते हैं ।। ४३९ ।। वारिणी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में कहने से पाश के नाम बनते हैं ।। ४४० ।। दुर्योधन पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से पाश के हजारों नाम निकलते चले जाते हैं ।। ४४१ ।। दुर्दनी पद पहले कहकर रिपु अरि पद पुनः

उचार । नाम पाँस के ए सभै निकसत चलत हजार ।।४४१।।
द्रुदनी प्रिथम बखानकै रिप अरि पुन पद देहु । नाम पाँस
के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ।। ४४२ ।। सावजनी पद
प्रिथम कहि रिप अरि अंत उचार । नाम पाँस के होत हैं
लीजहु (मू०ग्रं०७४१) सुकबि सुधार ।। ४४३ ।। मातंगनि पद
प्रिथम कहि रिप अरि पद कहि अंत । नाम पाँस के होत हैं
चीनहु चतुर अनंत ।। ४४४ ।। प्रिथम तुरंगनी शबद कहि रिप
अरि अंत बखान । नाम पाँस के होत हैं चतुर लेहु
पहिचान ।। ४४५ ।। हसतनि आदि उचारिकै रिप अरि पद
को दीन । नाम पाँस के होत हैं चतुर लीजिअहु चीन ।।४४६।।
प्रिथम उचरि पद दंतनी रिप अरि अंत बखान । नाम पाँस
के होत हैं चीन लेहु बुधिवान ।। ४४७ ।। दुरदनि आदि
उचारिकै मुरदनि अंत बखान । नाम पाँस के होत हैं लीजहु
समझ सुजान ।। ४४८ ।। पदमनि आदि उचारिऐ रिप अरि
अंत बखान । नाम पाँस के होत हैं लीजहु समझ
सुजान ।। ४४९ ।। बाला आदि बखानिऐ रिप अर पद के
दीन । नाम पाँस के होत हैं सुकबि लीजिअहि चीन ।।४५०।।
आदि शबद कहि कुंजरी अंतक पंतक दीन । नाम पाँस के
होत हैं सुघर लीजिअहु चीन ।। ४५१ ।। इंभी आदि उचारिऐ

लगाने से पाश के नाम बनते चले जाते हैं ।। ४४२ ।। सावजनी पद पहले कहकर अन्त में रिपु अरि पद का उच्चारण करने से पाश के नाम बनते हैं जिन्हें हे कविगण ! सुधारकर जान लो ।। ४४३ ।। मातगनी पद पहले कहकर रिपु अरि पद अन्त में कहने से पाश के अनन्त नाम बनते चले जाते हैं ।। ४४४ ।। तुरंगनी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से पाश के नाम बनते हैं ।। ४४५ ।। हस्तनी पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से हे चतुर गण ! पाश के नाम बनते हैं ।। ४४६ ।। दन्तनी पद का पहले उच्चारण कर रिपु अरि अन्त में लगाने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें हे बुद्धिमानो ! पहचान लो ।। ४४७ ।। दुरदनी पद पहले कहकर मुरदनी अन में लगाने से पाश के नाम बनते हैं ।। ४४८ ।। पदमनी पद पहले कहक रिपु अरि पद लगाने से पाश के नाम होते हैं ।। ४४९ ।। बाला पद पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से हे सुकवियो ! पाश के नामों को पहचा लो ।। ४५० ।। कुंजरि पद कहकर अन्त में पत्तक पद लगाने से पाश के ना

रिप अरि कौ पुनि दीन । नाम पाँस के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ॥ ४५२ ॥ प्रिथम कुंभनी शबद कहि रिप अर अंत बखान । नाम पाँस के होत हैं लीजहु समझ सुजान ॥ ४५३ ॥ करनी प्रिथम उचारकै रिप अरि अंत बखान । नाम पाँस के होत हैं लीजहु समझ सुजान ॥ ४५४ ॥ प्रिथम सिंधुरी शबद कहि रिप अरि अंत उचार । नाम पाँस के सकल ही निकसत चलत अपार ॥ ४५५ ॥ आदि अनकपी शबद कहि रिप अरि अंत उचार । नाम पाँस के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ॥ ४५६ ॥ प्रिथम नागनी शबद कहि रिप अरि अंत बखान । नाम पाँस के होत हैं चीन लेहु मतवान ॥ ४५७ ॥ हरनी आदि उचारिऐ रिप अरि अंत बखान । नाम पाँस के होत हैं समझ लेहु बुधवान ॥ ४५८ ॥ मातंगनि पद प्रिथम कहि रिप अरि अंत उचार । नाम पाँस के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ॥ ४५९ ॥ आदि उचरि पद बाजनी रिप अरि अंत बखान । नाम पाँस के होत हैं सुघर सति करि मान ॥ ४६० ॥ (मू०ग्रं०७४२)

॥ इति स्री शसत्र नाममाला पुराणे स्रीपाँस नाम चतुरथमो धिआइ
समापतम सतु सुभम सतु ॥ ४ ॥

बनते हैं ॥ ४५१ ॥ हस्तिनी शब्द पहले कहकर उसमें रिपु अरि पद लगाने से हे प्रवीण गणो ! पाश के नाम बनते हैं ॥ ४५२ ॥ पहले कुम्भनी शब्द कहकर अन्त में रिपु अरि कहने से पाश के नाम बनते हैं ॥ ४५३ ॥ करिनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि लगाने से हे सुजानो ! पाश के नाम होते हैं ॥ ४५४ ॥ सिन्धुरी शब्द पहले कहकर अन्त में रिपु अरि का उच्चारण करने से पाश के नाम निकलते चले जाते हैं ॥ ४५५ ॥ अनकपि शब्द कहकर अन्त में रिपु अरि का उच्चारण करने से सुधारकर पाश के नाम जाने जाते हैं ॥ ४५६ ॥ पहले नागिनी पद कहकर रिपु अरि पद लगाने से हे मतिवानो ! पाश के नाम बनते चले जाते हैं ॥ ४५७ ॥ हरनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से हे बुद्धिमानो ! पाश के नाम समझो ॥ ४५८ ॥ मातंगनी पद पहले कहकर अन्त में रिपु अरि लगाने से हे सुकविगण ! पाश के सुधार कर जान लो ॥ ४५९ ॥ बाजनी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में कहने से पाश के नाम होते हैं, जिन्हें हे विज्ञ जनो ! सत्य मानो ॥ ४६० ॥

॥ श्री शस्त्र नाममाला पुराण का श्रीपाश नाम चतुर्थ अध्याय की
शुभ सत समाप्ति ॥ ४ ॥

अथ तुपक के नाम ॥

॥ दोहरा ॥ बाहनि आदि उचारिऐ रिप पद अंति उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ॥४६१॥ सिंधवनी पद प्रिथम कहि रिपणी अंति उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ॥ ४६२ ॥ तुंगनि प्रिथम उचारिकै रिप अरि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ॥ ४६३ ॥ हयनी आदि उचारकै हा पद अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं चीन लेहु बुधिवान ॥ ४६४ ॥ अरबनि आदि बखानिऐ रिप अरि अंति उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधारि ॥४६५॥ किंकाणी प्रिथमै उचरि रिप पद अंति उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ॥ ४६६ ॥ असुनी आदि उचारिऐ अंत शबद अरि दीन । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ॥ ४६७ ॥ सुआसनि आदि बखानिऐ रिप अरि पद के दीन । नाम तुपक के होत हैं सुघर लीजिअहु चीन ॥ ४६८ ॥ आधनि आदि उचारिकै रिप पद अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं चीन लेहु मतिवान ॥ ४६९ ॥ प्रभणी

तुपक (छोटी तोप अथवा बन्दूक़) के नाम

॥ दोहा ॥ वाहिनी शब्द उच्चारण कर अन्त में रिपु अरि लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे कविगण ! सुधारकर जान लो ॥ ४६१ ॥ सैन्धवनी पद पहले कहकर रिपुणी शब्द अन्त में लगाने पर तुपक के नाम बनते हैं ॥ ४६२ ॥ तुरंगनि पहले कहकर अन्त में रिपु अरि कहने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ४६३ ॥ हयनी पद के साथ हा पद लगाने से हे बुद्धिमानो ! तुपक के नाम बनते हैं ॥ ४६४ ॥ अरबनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने पर तुपक के नाम बनते हैं ॥ ४६५ ॥ किंकणी पहले कहकर अन्त में रिपु पद का उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं ॥४६६॥ अश्विनी पद पहले कहकर अरि शब्द अन्त में लगाने से हे प्रवीण गण ! तुपक के नाम समझ लो ॥ ४६७ ॥ श्वासनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम पहचाने जाते हैं ॥ ४६८ ॥ आधनी शब्द पहले कर रिपु अरि शब्द लगाने से हे मतिवानो ! तुपक के नाम बनते हैं ॥ ४६९ ॥ प्रभुणी शब्द पहले कहकर रिपु पद अन्त में लगाने से हे

आदि उचारकै रिप पद अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं चीन लेहु मतिवान ॥ ४७० ॥ आदि भूपणी शबद कहि रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ॥ ४७१ ॥ आदि ईसणी शबद कहि रिप अरि पद के दीन। नाम तुपक के होत हैं सुघर लीजिअहु चीन ॥ ४७२ ॥ आदि सौडनी शबद कहि रिप अरि बहुर उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर बिचार ॥ ४७३ ॥ प्रिथम शत्रणी उचरिऐ रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर बिचार ॥ ४७४ ॥ सकल छत्र के नाम लै नीकहि रिपहि बखान। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ॥४७५॥ प्रिथम छत्रनी शबद उचरि रिप अरि अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं चीन लेहु मतिवान ॥ ४७६ ॥ आद पत्रणी आदि कहि रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर निरधार ॥ ४७७ ॥ आदि पताकनि शबद कहि रिप अरि पद कै दीन। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ॥ ४७८ ॥ (मू०ग्रं०७४३) छितपताढि प्रिथमुचरि कै रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि बिचार ॥ ४७९ ॥ रउदन आदि उचारिऐ रिप अरि अंत

मतिवानो! तुपक के नाम होते हैं ॥ ४७० ॥ भूपनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से सुधारकर तुपक के नाम जाने जाते हैं ॥ ४७१ ॥ ईशणी पद पहले कहकर रिपु अरि लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ४७२ ॥ सौडनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि पुनः लगाने से हे चतुर गण! तुपक के नाम विचार में आते हैं ॥ ४७३ ॥ पहले शत्रुणी पद कहकर अन्त में रिपु अरि पद का उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ४७४ ॥ सभी छत्रों के नाम लेकर नी पद कहकर रिपुहि शब्द लगाने से तुपक के नाम होते चले जाते हैं ॥ ४७५ ॥ पहले छत्रणी शब्द कहकर अन्त में रिपु अरि लगाने से मतिवान तुपक के नाम पहचान लेते हैं ॥ ४७६ ॥ पत्रणी शब्द पहले कहकर रिपुणी का उच्चारण करने से हे चतुर गण! तुपक के नामों को पहचान लो ॥ ४७७ ॥ पताकनी शब्द पहले कर रिपु अरि शब्द लगाने से हे प्रवीण गण! तुपक के नाम समझो ॥ ४७८ ॥ क्षितिपति पद कहकर अन्त में रिपु अरि लगाने से तुपक के नाम बनते हैं, जिन्हें हे सुकविगण! विचार लो ॥ ४७९ ॥ रवदन शब्द पहले कर अन्त में रिपु अरि शब्द कहने से

बखान । नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर पछान ॥ ४८० ॥
शस्त्रनि आदि बखानकै रिप अरि पद के दीन । नाम तुपक
के होत हैं सुघर लीजिअहु चीन ॥ ४८१ ॥ शबद सत्तरणी
उचरि कै रिप अरि पद के दीन । नाम तुपक के होत हैं लीजहु
समझ प्रबीन ॥ ४८२ ॥ आदि सुभटनी शबद कहि रिप अरि
अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ
सुजान ॥ ४८३ ॥ रथनी आदि उचारकै मथनी मथन बखान ।
नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ॥ ४८४ ॥ शबद
सिंधनी आदि कहि रिप अरि बहुर बखान । नाम तुपक के होत
हैं लीजहु समझ सुजान ॥ ४८५ ॥ आदि सकटनी शबद कहि
रिप अरि अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं समझ लेहु
मतिवान ॥ ४८६ ॥ प्रिथम शत्रणी शबद कहि रिप अरि अंत
उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ॥४८७॥
आदि दुष्टनी शबद कहि रिप अरि अंत बखान । नाम तुपक
के होत हैं लीजहु चतुर पछान ॥ ४८८ ॥ अशट कवचनी
आदि कहि रिप अरि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं
लीजहु सुकबि बिचार ॥ ४८९ ॥ प्रिथम बरमणी शबद कहि
रिप अरि अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं चीन लेहु

तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे चतुर गण ! पहचान लो ॥ ४८० ॥ शस्त्रणी शब्द पहले कहकर रिपु अरि पद देने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ४८१ ॥ शत्रुणी शब्द पहले कहकर रिपु अरि कहने से हे प्रवीण गण ! तुपक के नाम होते हैं ॥ ४८२ ॥ सुभटनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम सुजान व्यक्ति समझ लें ॥ ४८३ ॥ रथनी शब्द पहले कहकर मथनी-मथन कहने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ४८४ ॥ सिन्धुनी शब्द पहले कहकर पुनः रिपु अरि शब्द लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ४८५ ॥ शकटनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से हे मतिवानो ! तुपक के नाम समझ लो ॥ ४८६ ॥ शत्रुणी शब्द पहले कहकर रिपु अरि लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें सुकविगण सुधार लें ॥ ४८७ ॥ दुष्टनी शब्द पहले कहकर अन्त में रिपु अरि कहने से हे चतुर गण ! तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें तुम पहचान लो ॥ ४८८ ॥ अष्टकवचनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि अन्त में उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ४८९ ॥ पहले वर्मणी शब्द कहकर अन्त में रिपु अरि कहने से बुद्धिमानो ! तुपक के नामों को पहचान लो ॥ ४९० ॥ तनत्राणनी शब्द पहले कर अन्त में रिपु अरि

बुधवान ।। ४९० ।। तनं त्राणनी आदि कहि रिप अरि अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ।।४९१।। प्रिथम चरमणी शबद कहि रिप अरि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ।। ४९२ ।। प्रिथम सिपरणी शबद कहि रिप अरि उचरहु अंत । नाम तुपक जू के सकल निकसत चलत अनंत ।। ४९३ ।। शबद शत्रणी आदि कहि रिप अरि पद के दीन । नाम तुपक के होत हैं सुघर लीजिअहु चीन ।। ४९४ ।। प्रिथम चक्रणी शबदि कहि रिप अरि पद को दीन । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ।। ४९५ ।। आदि खड़गनी शबद कहि रिप अरि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ।। ४९६ ।। (मू०ग्रं०७४४) असत्री आदि उचारकै रिप अरि अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ।। ४९७ ।। निससत्रैनी उचारिकै रिप अरि अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं निकसत चलत प्रमान ।। ४९८ ।। खगनी आदि बखान कै रिप अरि पद के दीन । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ।। ४९९ ।। शसत्रएसणी आदि कहि रिप अरि पद के दीन । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ।। ५०० ।। शसत्रराजनी आदि

पद लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें जान लो ।। ४९१ ।। पहले चर्मणी शब्द कहकर अन्त में रिपु अरि उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं। जिन्हें सुधारकर जान लो ।। ४९२ ।। क्षिप्रणी शब्द पहले कहकर रिपु अरि का अन्त में उच्चारण करो, इससे तुपक के समस्त नाम अनन्त रूप से निकलते चले जाते हैं ।। ४९३ ।। शल्यणी शब्द पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से तुपक के नाम बनते हैं, जिन्हें हे विज्ञ जनो ! पहचान लो ।। ४९४ ।। चक्रणी शब्द पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे प्रवीण गण ! आप समझ लो ।। ४९५ ।। खड़गनी शब्द पहले कहकर रिप अरि अन्त में कहने से तुपक के नाम होते हैं ।। ४९६ ।। अशित्रनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि का अन्त में उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं ।। ४९७ ।। निरस्त्रैणी पद पहले कहकर अन्त में रिपु अरि का उच्चारण करने से तुपक के नाम प्रमाणित रूप से निकलते चले जाते हैं ।। ४९८ ।। खगनी पद पहले कहकर रिपु अरि पद देने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ४९९ ।। शस्त्रएषणी पद पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से हे प्रवीण गण ! तुपक के नाम समझ लो ।। ५०० ।। शस्त्रराजिनी पद पहले कहकर अन्त में रिपु अरि

कहि रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि बिचार ॥ ५०१ ॥ शस्त्ररावनी आदि कहि रिप अरि अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर प्रमान ॥ ५०२ ॥ आदि सैफनी शबद कहि रिप अरि अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ॥५०३॥ आदि तेगनी शबद कहि रिप अरि पद के दीन। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ॥ ५०४ ॥ आदि क्रिशाननि शबद कहि रिप अरि अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर प्रमान ॥ ५०५ ॥ शमशेरणी उचारकै रिप अरि अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं चतुर चित्त महि जान ॥ ५०६ ॥ आदि खंडनी शबद कहि रिप अरि बहुर उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ॥५०७॥ खलखंडन पद आदि कहि रिप अरि पद के दीन। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ॥ ५०८ ॥ कवचांतकनी आदि कहि रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ॥ ५०९ ॥ धारा धरनी आदि कहि रिप अरि पद के दीन। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ॥ ५१० ॥ कवचतापनी आदि कहि रिप अरि पद के दीन। नाम तुपक के होत हैं चतुर लीजिअहु चीन ॥ ५११ ॥

का उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं ॥५०१॥ शस्त्र रावनी पद पहले कहकर रिपु अरि का वर्णन करने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ५०२ ॥ सैफनी पद पहले कहकर अन्त में रिपु अरि लगाने से हे सुजानो ! तुपक के नामों को समझ लो ॥ ५०३ ॥ तेगनी पद पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ५०४ ॥ कृशाननि शब्द पहले कहकर रिपु अरि शब्द लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ॥५०५॥ शमशेरणी शब्द पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे चतुर गण ! तुम चित्त में पहचान लो ॥ ५०६ ॥ खण्डिनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे कविगण ! तुम सुधार लो ॥ ५०७ ॥ खल-खण्डन पद पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से हे प्रवीणो ! तुपक के नाम बनते हैं ॥ ५०८ ॥ कवचान्तकनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि शब्द लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे चतुर गण ! तुम पहचान लो ॥५०९॥ धारा धरणी पद पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ५१० ॥ कवचतापिनी पद पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से तुपक

तनंत्राण अरि आदि कहि रिप अरि अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं चतुर लीजिअहु जान ।। ५१२ ।। कवच घातनी आदि कहि रिप अरि अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर प्रमान ।। ५१३ ।। दुशट दाहनी आदि कहि रिप अरि शबद बखान । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ।। ५१४ ।। (मू०ग्रं०७४५) दुरजन दरनी आदि कहि रिप अरि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं जानु चतुर निरधार ।। ५१५ ।। द्रुजन दबकनी आदि कहि रिप अरि पद के दीन । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ।।५१६।। दुशट चरबनी आदि कहि रिप अरि अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर पछान ।। ५१७ ।। बीर बरजनी आदि कहि रिप अरि पद के दीन । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ।। ५१८ ।। बान बरजनी आदि कहि रिपणी अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर पछान ।। ५१९ ।। बिसिख बरखनी आदि कहि रिप अरि पद के दीन । नाम तुपक के होत हैं चतुर लीजिअहु चीन ।। ५२० ।। बार दाइनी आदि कहि रिप अरि पद के दीन । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ।। ५२१ ।।

के नाम बनते हैं ।। ५११ ।। तनत्राण अरि पहले कहकर अन्त में रिपु अरि लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे चतुर गण ! तुम जान लो ।। ५१२ ।। कवचघातिनी पहले कहकर अन्त में रिपु अरि कहने से तुपक के प्रमाणित नाम बनते हैं ।। ५१३ ।। दुष्ट दाहनी पहले कहकर रिपु अरि शब्द कहने से हे सुजानो ! तुपक के नामों को जान लो ।। ५१४ ।। दुर्जनदलनी पहले कहकर रिपु अरि का अन्त में उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं ।।५१५।। दुर्जन दबकनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि लगाने से हे प्रवीणो ! तुपक के नाम बनते हैं ।। ५१६ ।। दुष्टचर्वणी शब्द पहले कहकर अन्त में रिपु अरि लगाने से तुपक के नाम बनते हैं, जिन्हें चतुर गण ! पहचान लें ।। ५१७ ।। वीरवर्जनी पहले और बाद में रिपु अरि पद लगाने से तुपक के नाम निकलते हैं ।। ५१८ ।। बाणवर्जनी पद पहले और अन्त में रिपुणी पद कहने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ५१९ ।। विषिखवर्षणी पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से हे चतुर गण ! तुपक के नाम बनते हैं ।। ५२० ।। बार-दायनी पहले कहकर और रिपु अरि पद लगाकर तुपक के नाम होते हैं ।। ५२१ ।।

बिसिख बिसटनी आदि कहि रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधारि ।। ५२२ ।। पनज प्रहारन आदि कहि रिप अरि अंत उचारि। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि बिचार ।। ५२३ ।। धननी आदि उचारिऐ रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि बिचार ।। ५२४ ।। प्रिथम धनखनी शबद कहि रिप अरि पद के दीन। नाम तुपक के होत हैं सुघर लीजिअहु चीन ।। ५२५ ।। कुअंडनि आदि उचारिऐ रिप अरि पद के दीन। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ।। ५२६ ।। बाणा ग्रजनी आदि कहि रिप अरि पद कौ देहु। नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ।। ५२७ ।। बाण प्रहरणी आदि कहि रिप अरि पद के दीन। नाम तुपक के होत हैं सुघर लीजिअहु चीन ।। ५२८ ।। आदि उचर पद बाणनी रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि बिचार ।। ५२९ ।। बिसिख परननी आदि कहि रिप पद अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं चीनहु चतुर प्रमान ।। ५३० ।। बिसिखन आदि बखानिकै रिप पद अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं चीनहु चतुर अपार ।। ५३१ ।। सुभट घाइनी आदि

विषिखवृष्टणी पद पहले कहकर रिपु अरि का अन्त में उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं ।। ५२२ ।। पनजप्रहारन पद कहकर रिपु अरि का अन्त में उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ५२३ ।। धननी पद का पहले और रिपु अरि का अन्त में उच्चारण करने पर तुपक के नाम होते हैं ।। ५२४ ।। पहले धनुषणी शब्द कहकर रिपु अरि पद लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे बुद्धिमानो ! तुम पहचान लो ।। ५२५ ।। कुवण्डनी पद का पहले उच्चारण कर रिपु अरि पद लगाने से तुपक के नाम बनते हैं, जिन्हें हे प्रवीण गण ! तुम समझ लो ।। ५२६ ।। बाणाग्रजनी पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से हे चतुर गण ! तुपक के नाम होते हैं ।। ५२७ ।। बाणप्रहरणी पद पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से तुपक के नाम होते हैं ।। ५२८ ।। बाणनी पद पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ५२९ ।। विसिखप्रननी पहले कहकर रिपु पद अन्त में लगाने से तुपक के नाम होते हैं ।। ५३० ।। बिसिखन पद पहले कहकर रिपु पद अन्त में लगाने से तुपक के नाम होते हैं ।। ५३१ ।। सुभटघायनी पद पहले

कहि रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर सुधार ।। ५३२ ।। (मू०ग्रं०७४६) शत्र संघरणी आदि कहि रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ।। ५३३ ।। पनच प्रहरणी आदि कहि रिप अरि अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ।।५३४।। कुअंडज दाइनि उचरि कै रिप अरि बहुर बखान। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ।।५३५।। आदि निखंगनी शबद कहि रिप अरि अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघर पछान ।। ५३६ ।। प्रिथम पत्रणी पद उचरि रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधारि ।।५३७।। प्रिथम पचछणी शबद कहि रिप अरि पद कौ देहु। नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ।। ५३८ ।। प्रथम पत्रणी शबद कहि रिप अरि अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघर पछान ।। ५३९ ।। परिणी आदि उचारिकै रिप अरि बहुर बखान। नाम तुपक के होत हैं चीनहु चतुर प्रमान ।। ५४० ।। पंखिण आदि उचारिकै रिप अरि बहुर उचारि। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ।।५४१।। पत्रणि आदि बखान कै रिप अरि अंत उचारि। नाम तुपक

कहकर रिपु अरि पद लगाने से हे चतुर गण! सुधारकर तुपक के नाम होते हैं।। ५३२ ।। शत्रुसंहारणी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में कहने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे कविगण! सुधारकर जान लो ।। ५३३ ।। पनचप्रहरणी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में कहने से तुपक के नाम बनते हैं।। ५३४ ।। कोवण्डजदायनी पद पहले कहकर रिपु अरि कहने से हे सुजान! तुपक के नाम बनते हैं।। ५३५ ।। निषंगनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम बनते हैं।। ५३६ ।। पत्रणी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में कहने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे कविगण! तुम सुधारकर जान लो ।। ५३७ ।। पंखिनी शब्द पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से हे चतुर गण! तुपक के नाम होते हैं।। ५३८ ।। पत्रणी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम होते हैं।। ५३९ ।। परिणी पद पहले कहकर रिपु अरि शब्द कहने से तुपक के नाम हे चतुर गण! पहचान लो ।। ५४० ।। पंखिनी पद पहले कहकर रिपु अरि पुनः उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं ।।५४१।। पत्रणी पद पहले कहकर रिपु अरि का

के होत हैं लीजहु चतुर बिचारि ॥ ५४२ ॥ नभचरि आदि बखानिकै रिप अरि अंत उचारि। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधारि ॥ ५४३ ॥ रथनी आदि उचारिकै रिप अरि अंत उचारि। नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर बिचारि ॥ ५४४ ॥ सकटन आदि उचारिऐ रिप अरि पद के दीन। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ॥ ५४५ ॥ रथणी आदि बखानिकै रिप अरि अंत उचारि। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ॥ ५४६ ॥ आदि शबद कहि स्यंदनी रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ॥ ५४७ ॥ पटनी आदि बखानकै रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर बिचार ॥५४८॥ आदि बस्तणी शबद कहि रिप अरि अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं चीन लेहु मतिवान ॥ ५४९ ॥ बियूहनि आदि बखानिऐ रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर बिचार ॥ ५५० ॥ बज्त्रणि आदि (मू०ग्रं०७४७) बखानकै रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ॥ ५५१ ॥ बज्त्रणी आदि बखानिऐ रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि

अन्त में उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ५४२ ॥ नभचरी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में कहने से हे कविगण ! तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें तुम सुधार लो ॥ ५४३ ॥ रथनी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में कहने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ५४४ ॥ शकटनी पद पहले कहकर रिपु अरि पद देने से हे प्रवीणो ! तुपक के नाम होते हैं ॥ ५४५ ॥ रथनी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में कहने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ५४६ ॥ पहले सयन्दनी पद और अन्त में रिपु अरि पद कहने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ५४७ ॥ पटनी पद पहले कहकर और रिपु अरि अन्त में लगाने से हे चतुर गण ! !तुपक के नाम होते हैं ॥ ५४८ ॥ वस्त्रणी शब्द पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ५४९ ॥ व्यूहणी पद पहले कहकर रिपु अरि का अन्त में उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं ॥५५०॥ वज्त्रणी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में कहने से हे सुकवियो ! तुपक के नाम होते हैं ॥ ५५१ ॥ वज्त्रणी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ५५२ ॥ दलनी पद पहले कहकर मलनी

बिचार ।। ५५२ ।। दलणी आदि उचारकै मलणी पद पुनि देहु । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ।। ५५३ ।। बादित्रणी बखानकै अंत शबद अरि देहु । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ।। ५५४ ।। आदि नादनी शबद कहि रिप अरि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं चीनहु चतुर अपार ।। ५५५ ।। दुंदभिधननी आदि कहि रिप अरि अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ।।५५६।। दुंदभनी पद प्रिथम कहि रिप अरि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ।। ५५७ ।। नाद नादनी आदि कहि रिप अरि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि बिचार ।। ५५८ ।। दुंदभ धननी आदि कहि रिप अरि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं समझहु सुघर अपार ।।५५९।। आदि भेरणी शबद कहि रिप पद बहुर बखान । नाम तुपक के होत हैं चीन्ह लेहु बुधवान ।।५६०।। दुंदभ घोखन आदि कहि रिप अरि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर निरधार ।। ५६१ ।। नादानिसनी आदि कहि रिप अरि बहुर बखान । नाम तुपक के होत हैं करिअहु चतुर प्रमान ।।५६२।। अनिकनी पद आदि कहि रिय पद बहुर बखान । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ।। ५६३ ।। प्रिथम ढालनी

पद लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे चतुर गण ! तुम चित्त में जान लो ।। ५५३ ।। वाद्यत्रणी कहकर अन्त में अरि शब्द लगाने से तुपक के नाम होते हैं ।। ५५४ ।। नादिनी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में कहने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ५५५ ।। दुदुंभिधननी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ५५६ ।। दुदुंभिनी पद पहले कह रिपु अरि अन्त में उच्चारण करने से हे कविगण ! तुपक के नाम होते हैं ।। ५५७ ।। नादनादिनी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ५५८ ।। दुदुंभिधननी पद पहले कहकर रिपु अरि पद अन्त में कहने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ५५९ ।। भेरिणी शब्द पहले कहकर रिपु पद लगाने से हे बुद्धिमानो ! तुपक के नाम बनते हैं ।। ५६० ।। दुंदुभिघोषणी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम होते हैं ।। ५६१ ।। नादानिक्सनी पद पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ५६२ ।। अनिकनी पद पहले कहकर रिपु पद पुनः लगाने से हे सुजान ! तुपक के नाम होते हैं ।। ५६३ ।। ढालनी पद पहले

शबद कहि रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ बिचार ॥ ५६४ ॥ ढढनी आदि उचारिकै रिप पद बहुरो देहु। नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ॥ ५६५ ॥ संखनिसोनी आदि कहि रिप अरि बहुर उचार। नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर निरधार ॥ ५६६ ॥ संख शबदनी आदि कहि रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर सुधार ॥ ५६७ ॥ संखनादनी आदि कहि रिप अरि अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ॥ ५६८ ॥ सिघनादनी आदि कहि (मू०ग्रं०७४८) रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ॥ ५६९ ॥ पल भछनादनि आदि कहि रिप अरि अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं चतुर चित्त पहिचान ॥५७०॥ ब्याघ्रनादनी आदि कहि रिप अरि बहुर बखान। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ॥ ५७१ ॥ हरजच्छनादनि उचरिकै रिप अरि अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर पछान ॥ ५७२ ॥ पुंडरीकनादनि उचरिकै रिप पद अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं चीन लेहु बुधिवान ॥ ५७३ ॥ हरनादिन पद प्रिथम कहि रिप अरि अंत उचार। नाम

कहकर रिपु अरि का अन्त में उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं, जिन्हें विचार कर समझ लो ॥ ५६४ ॥ ढढनी पद पहले कहकर पुनः रिपु पद लगाओ और इस प्रकार तुपक के नामों को पहचान लो ॥ ५६५ ॥ शंखमिशोनी पद पहले कहकर रिपु अरि पद का उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ५६६ ॥ शंखशब्दनी पहले कहकर रिपु अरि पद का अन्त में उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ५६७ ॥ शंखनादनी पद पहले कहकर अन्त में रिपु अरि लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे सुजान! तुम समझ लो ॥ ५६८ ॥ सिंहनादनी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से हे सुकवि! सुधारकर तुपक के नाम होते हैं ॥ ५६९ ॥ पलभक्षनादनी पद पहले कर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ५७० ॥ व्याघ्रनादनी पहले और पुनः रिपु अरि कहने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ५७१ ॥ हरयक्षनादिनी कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ५७२ ॥ पुण्डरीकनादिनी शब्द पहले कहकर रिपु पद अन्त में लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे बुद्धिमानो! तुम पहचान लो ॥ ५७३ ॥ हरनादिनी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से

तुपक के होत हैं लीजहु चतुर बिचार ।। ५७४ ।। पंचाननि घोखन उचरि रिप अरि अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं चतुर चित्त पहिचान ।। ५७५ ।। शेर शबदनी आदि कहि रिप अरि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि बिचार ।। ५७६ ।। म्रिग अरिनादनि आदि कहि रिप अरि बहुर बखान । नाम तुपक के होत हैं चीनहु प्रगिआवान ।। ५७७ ।। पसुपतारि धननी उचरि रिप पद अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर निरधार ।। ५७८ ।। म्रिगपतिनादनि आदि कहि रिप अरि बहुर बखान । नाम तुपक के होत हैं चीनहु प्रगिआवान ।। ५७९ ।। पसु एस्रणनादनि उचरि रिप अरि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर सुधार ।। ५८० ।। गजरिनादनी आदि कहि रिप पद अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं सुघर लीजिअहु जान ।।५८१।। सउडियर धननी आदि कहि रिप अरि अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ।। ५८२ ।। दंतियरि नादनि आदि कहि रिप अरि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि बिचार ।। ५८३ ।। अनिक पियर नादनि उचरि रिप अरि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु

तुपक के नाम होते हैं ।। ५७४ ।। पंचाननघोषणी पद पहले कह रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ५७५ ।। शेरशब्दनी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम होते हैं ।। ५७६ ।। मृगारिनादिनी पद पहले कहकर रिपु अरि पद लगाने से हे प्रज्ञावानो ! तुपक के नाम बनते हैं ।। ५७७ ।। पशुपतारिधननी पद का उच्चारण कर रिपु पद लगाने से हे चतुर गण ! तुपक के नाम बनते हैं ।। ५७८ ।। मृगपतिनादिनी पद पहले कहकर रिपु अरि पुनः लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ५७९ ।। पशुइश्रणनादिनी पद कहकर रिपु अरि पद का अन्त में उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं ।। ५८० ।। गजनादिनी पद पहले कहकर रिपु पद अन्त में लगाने से तुपक के नाम होते हैं ।। ५८१ ।। सौडियरधननी पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम होते हैं ।। ५८२ ।। दन्त्यरिनादिनी पद पहले कहकर रिपु अरि का अन्त में उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं ।। ५८३ ।। अनिकपियरनादिनी पद का उच्चारण कर और

सुकबि सुधार ।। ५८४ ।। सिंधरारि धननी उचरि रिप अरि
अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुमति
बिचार ।। ५८५ ।। मातंगरि नादनि उचरि रिप अरि अंत
उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघरि
सँभार ।। ५८६ ।। (मू०ग्रं०७४६) साविजारि धननी उचरि रिप
पद अंत सु भाखु । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित
राखु ।। ५८७ ।। गजनिअरि नादनि आदि कहि रिप अरि
अंत बखान । नाम तुपक के होत हैं चीन लेहु
मतिवान ।। ५८८ ।। नागरिधननी आदि कहि रिप अरि बहुर
बखान । नाम तुपक के होत हैं उचरत चलो सुजान ।।५८९।।
हसतियरि धननी आदि कहि रिप अरि पुनि पद देहु । नाम
तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ।। ५९० ।। हरनिअरि
आदि उचारकै रिप पद बहुरो देहु । नाम तुपक के होत हैं
चीन चतुर चित लेहु ।। ५९१ ।। करनियर धननी आदि कहि
रिप पद अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर
निरधार ।। ५९२ ।। बरियर धननी आदि कहि रिप अरि
बहुर उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि
बिचार ।। ५९३ ।। दंतीयर धननी आदि कहि रिप अरि पद

अन्त में रिपु अरि कहने से तुपक के नाम होते हैं ।। ५८४ ।। सिन्धुरारि धननी कहकर और अन्त में रिपु अरि का उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं; जिन्हें तुम विचार लो ।। ५८५ ।। मातगंरिनादिनी पद कहकर रिपु अरि का उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं ।।५८६।। साविजारि धननी पद का उच्चारण कर अन्त में रिपु पद लगाने से तुपक के नाम होते हैं ।। ५८७ ।। गजनिअरिनादिनी पहले कहकर रिपु अरि अन्त में लगाने से हे मतिवानो ! तुपक के नाम होते हैं ।। ५८८ ।। नागरिधननी पहले कहकर रिपु अरि लगाने से हे सुजान ! तुपक के नाम बनते चले जाते हैं ।। ५८९ ।। हस्तिअरिधननी पद पहले कहकर रिपु अरि पद पुनः लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे चतुर गण ! तुम पहचान लो ।। ५९० ।। हिरणिअरि का पहले उच्चारण कर पुनः रिपु पद लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे चतुर गण ! तुम चित्त में पहचान लो ।। ५९१ ।। करिमिअरि धननी पहले कहकर रिपु पद अन्त में लगाने से तुपक के नाम होते हैं ।। ५९२ ।। बरियरधननी पद पहले कहकर रिपु अरि का उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं ।। ५९३ ।। दन्तिअरिधननी पद पहले कहकर रिपु अरि पद

कौ देहु । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ॥५९४॥
दधिरिप धननी आदि कहि रिप अरि बहुर उचार । नाम
तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सँभार ॥ ५९५ ॥ पदमियर
आदि बखानकै रिप अरि बहुर बखान । नाम तुपक के होत
हैं लीजहु समझ सुजान ॥ ५९६ ॥ बलियर आदि बखानकै
रिप पद पुनि कै दीन । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ
प्रबीन ॥ ५९७ ॥ इंभअरि धननी आदि कहि रिप अरि पद
को दीन । नाम तुपक के होत हैं सुमति लीजिअहु
बीन ॥ ५९८ ॥ कुंभियर नादनि आदि कहि रिप खिप पद के
दीन । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ॥ ५९९ ॥
कुंजरियरि आदि उचारकै रिप पुन अंत उचार । नाम तुपक
के होत हैं लीजहु सुमत सँभार ॥ ६०० ॥ पतरिय अरि धननी
उचरि रिपु पुनि पद के दीन । नाम तुपक के होत हैं लीजहु
समझ प्रबीन ॥ ६०१ ॥ तरि रिप अरि धननी उचरि
रिपपद बहुर बखान । नाम तुपक के होत हैं चीनहु चतुर
निधान ॥ ६०२ ॥ सऊडियांतक धननी उचरि रिप अरि बहुर
बखान । नाम तुपक के होत हैं चीन लेहु मतिवान ॥ ६०३ ॥
हयनियर आदि उचारिकै रिप अरि अंत उचार । नाम
तुपक (मू०ग्रं०७५०) के होत हैं लीजहु सुकबि बिचार ॥ ६०४ ॥

लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ५९४ ॥ दधिरिपुधननी पद पहले कह रिपु अरि का पुनः उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ५९५ ॥ पद्मअरि पद पहले कहकर रिपु अरि कहने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ५९६ ॥ बलियर पद पहले कहकर रिपु पद लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ५९७ ॥ इम्भअरिधननी कहकर रिपु अरि पद देने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ५९८ ॥ कुम्भिअरिनादिनी पद पहले कहकर रिपुक्षय पद लगाने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ५९९ ॥ कुंजरिअरि पद पहले कहकर पुनः रिपु पद का उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ६०० ॥ पत्रअरिधननी उच्चारण करने से और पुनः रिपु पद लगाने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ६०१ ॥ तरु रिपु अरि धननी पद कहकर रिपु पद लगाने से तुपक के नाम हे चतुर गण ! पहचान लो ॥ ६०२ ॥ सौडियान्तकधननी पद उच्चारण कर रिपु अरि कहने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ६०३ ॥ हयनीअरि का पहले उच्चारण कर रिपु अरि अन्त में लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे सुकवि ! तुम विचार

हयनियर धननी आदि कहि रिप पद बहुर बखान । नाम
तुपक के होत हैं चीन लेहु बुधवान ।। ६०५ ।। हयनियांतक
धननी उचरि रिप पद बहुर बखान । नाम तुपक के होत हैं
लीजहु समझ सुजान ।। ६०६ ।। असुअरि धननी आदि कहि
रिप अरि पद के दीन । नाम तुपक के होत हैं सुघर लीजिअहु
चीन ।। ६०७ ।। तुरयर नादनि आदि कहि रिप अरि अंत
उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुमति सुधार ।।६०८।।
तुरंगरि धननी आदि कहि रिप पुनि पद के दीन । नाम तुपक
के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ।। ६०९ ।। घोरांतकनी आदि
कहि रिप पद अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुमति
सुधार ।। ६१० ।। बाजांतकनी आदि कहि रिप अरि अंत
उचार । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर निरधार ।। ६११।।
बाहनांतकी आदि कहि पुन रिप नादनि भाखु । नाम तुपक
के होत हैं चीन चतुर चित राखु ।। ६१२ ।। सरजज अरि
धननी उचरि रिप पद बहुर बखान । नाम तुपक के होत हैं चीन
लेहु मतिवान ।।६१३।। बाजयर धननी आदि कहि अंत्यांतक पद
दीन । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ।। ६१४ ।।

लो ।। ६०४ ।। हयनीअरिधननी पद पहले कहकर पुनः रिपु पद लगाने से
तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे बुद्धिमानो ! तुम पहचान लो ।। ६०५ ।।
हयनीयान्तक धननी पद का उच्चारण कर पुनः रिपु पद जोड़ने ने तुपक के
नाम होते हैं ।। ६०६ ।। अश्वरिधरनी पहले और बाद में रिपु अरि पद
लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ६०७ ।। तुर अरि नादिनी पहले कहकर
रिपु अरि का अन्त में उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं ।। ६०८ ।।
तुरंगरिधननी पहले कहकर पुनः रिपु पद लगाने से तुपक के नाम होते हैं,
जिन्हें हे प्रवीण गण ! तुम समझ लो ।। ६०९ ।। घोरान्तकनी पद पहले
कहकर अन्त में रिपु पद जोड़ने से तुपक के नाम सुधारकर होते हैं ।। ६१० ।।
बाजान्तकनी पहले कहकर अन्त में रिपु अरि पद लगाने से तुपक के नाम
होते हैं, जिन्हें हे चतुर गण ! तुम पहचान लो ।। ६११ ।। वाहनान्तकी पहले
कहकर पुनः रिपुनादिनी कहने से तुपक के नाम होते हैं ।। ६१२ ।। सरजज-
अरिधननी कहकर पुनः रिपु पद लगाने से हे मतिवानो ! तुपक के नाम
बनते हैं ।। ६१३ ।। बाजिअरिधननी पहले कहकर अन्त्यान्तक पद लगाने
से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे प्रवीण गण ! तुम समझ लो ।। ६१४ ।।

सिंधअर प्रिथम उचारकै रिप पद अंत उचार। नाम तुपक
के होत हैं चीन चतुर निरधार ॥ ६१५ ॥ वाहिनिनादिन
आदि कहि रिप पद अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं
लीजहु सुघर सुधारि ॥ ६१६ ॥ तुरंगरि आदि बखानकै
धननी अरि उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि
सुधारि ॥ ६१७ ॥ अरबयरि आदि उचारकै रिप अरि बहुर
उचारि। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सवारि ॥६१८॥
तुरंगरि धननी आदि कहि रिप अरि पुनि पद देहु। नाम
तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ॥ ६१९ ॥ किंकनि
अरि धननी उचरि रिप पद अंत उचार। नाम तुपक के होत
हैं लीजहु सुकबि बिचार ॥ ६२० ॥ घरयरि नादनि आदि
कहि रिप अरि अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं
लीजहु सुमति सुधार ॥ ६२१ ॥ म्रिगअरि नादनि आदि
कहि (मू०ग्रं०७५१) रिप अर अंत उचार। नाम तुपक के होत
हैं लीजहु सुकबि सुधारि ॥ ६२२ ॥ स्रिंगीअरि धननी आदि
कहि रिप अरि अंत उचारि। नाम तुपक के होत हैं चीन
चतुर निरधारि ॥ ६२३ ॥ म्रिगीअरि नादनि आदि कहि रिप
अरि अंत उचारि। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि

सिन्धुअरि पद पहले कहकर रिपु पद का अन्त में उच्चारण करने से तुपक
के नाम बनते हैं ॥ ६१५ ॥ वाहिनीनादि पद पहले कर रिपु पद अन्त में
लगाने से तुपक के नाम सुधारकर समझे जाते हैं ॥ ६१६ ॥ तुरंगरि पहले
कहकर धननीअरि लगाने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ६१७ ॥ अरबअरि
पहले कहकर पुनः रिपु अरि उच्चारण करने से तुपक के नाम समझे जाते
हैं ॥ ६१८ ॥ तुरंगरिधननी पहले कहकर रिपु अरि पद पुनः लगाने से
तुपक के नाम पहचाने जाते हैं ॥ ६१९ ॥ किंकणिअरिधननी कहकर रिपु
पद का अन्त में उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ६२० ॥ धरिअरिनादिनी
पहले कहकर अन्त में रिपु अरि का उच्चारण करने से तुपक
के नाम बनते हैं ॥ ६२१ ॥ मृगारिनादिनी पहले कहकर रिपु अरि अन्त में
उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे कविगण ! सुधारकर जान
लो ॥ ६२२ ॥ शृंगीअरिधननी पहले कहकर रिपु अरि का अन्त में उच्चारण
करने से तुपक के नाम बनते हैं ॥ ६२३ ॥ 'मृगीअरिनादिनी पहले कहकर
रिपु अरि का अन्त में उच्चारण करने से तुपक के नाम सुधारकर जान

सवारि ।। ६२४ ।। त्रिणअरि नादनि उचरिकै रिप पद बहुर बखान । नाम तुपक के होत हैं चतुर चित्त पहिचान ।।६२५।। भूचरि आदि बखानकै रिप अरि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुमति सवार ।। ६२६ ।। सुभट आदि शबदुचरि कै अंत शत्र पद दीन । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघर सु चीन ।। ६२७ ।। आदि शत्र शबदुचरिकै अंत्यांतक पद भाखु । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित राखु ।।६२८।। शत्र आदि शबदुचरिऐ सूलनि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर निरधार ।। ६२९ ।। आदि जुद्धनी भाखिऐ अंतकनी पद भाखु । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित राखु ।। ६३० ।। बरम आदि शबदुचरिकै बेधन अंत उचार । बरम बेधनी तुपक को लीजहु नाम सुधार ।। ६३१ ।। चरम आदि पद भाखिकै घाइन पद के दीन । चरम घाइनी तुपक के नाम लीजिअहु चीन ।। ६३२ ।। द्रुजन आदि शबदुचरिकै घाइन अंत उचार । द्रुजन भच्छनी तुपक को लीजहु नाम सुधार ।। ६३३ ।। खल पद आदि बखानकै हा पद पुन के दीन । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ।। ६३४ ।। दुशटन आदि उचारिकै रिपणी अंत बखान । नाम तुपक के

लो ।। ६२४ ।। तृणअरिनादिनी कहकर रिपु पद लगाने से तुपक के नाम चतुर चित्त के द्वारा पहचाने जाते हैं ।। ६२५ ।। भूचरि पद पहले कहकर रिपु अरि अन्त में कहने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ६२६ ।। सुभट शब्द पहले कहकर अन्त में शत्रु पद लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ६२७ ।। पहले शत्रु शब्द का उच्चारण कर उसमें अन्त्यान्तक पद लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ६२८ ।। शत्रु शब्द पहले कहकर शूलनी अन्त में लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ६२९ ।। युद्धनी पद पहले कहकर अन्तकनी पद लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ।।६३०।। वर्म शब्द पहले कर वेधनी शब्द अन्त में लगाकर वर्मवेधनी तुपक का नाम कहा जाता है ।। ६३१ ।। चर्म पद पहले कहकर घायनी पद लगाने से चर्मघायनी तुपक का नाम पहचाना जाता है ।। ६३२ ।। दुर्जन शब्द पहले कहकर अन्त में घायनी पद का उच्चारण करने से दुर्जनभक्षणी तुपक का नाम सुधारकर जाना जाता है ।। ६३३ ।। खल पद पहले कहकर हा पद पुनः लगाने से तुपक का नाम समझ लीजिए ।। ६३४ ।। दुष्टन पद पहले कहकर अन्त में रिपुणी पद लगाने से

होत हैं लेहु प्रबीन पछान ।। ६३५ ।। रिपणी आदि उचारकै खिपणी बहुर बखान । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सयान ।। ६३६ ।। नाल सैफनी तुपक भनि जबर जंग हथ नाल । सुतर नाल घुड़नाल भनि चूरण पुनि पर ज्वाल ।। ६३७ ।। जुआल आदि शबदुचरिकै धरणी अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुमति सुधार ।।६३८।। अनिल आदि शबदुचरकै छोडणि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर निरधार ।। ६३६ ।। जुआलाबमनी आदि कहि मन मै सुघर (मू०ग्रं०७५२) बिचार । नाम तुपक के होत हैं जान चतुर निरधार ।।६४०।। घन पद आदि बखानकै धुननी अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं चीनहु चतुर अपार ।। ६४१ ।। घनपद आदि उचारकै नादनि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर निरधार ।। ६४२ ।। बारद आदि बखानकै शबदनि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर निरधार ।। ६४३ ।। मेघन धननी आदि कहि रिप अरि बहुर उचार । नाम तुपक के होत हैं चीनहु चतुर अपार ।। ६४४ ।। मेघ शबदनी बकत्र ते प्रथमै शबद उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुमति सवार ।। ६४५ ।। गोला

हे प्रबीणो ! तुपक के नाम बनते हैं ।। ६३५ ।। रिपुणी पद पहले कहकर खिपणी पद लगाने से तुपक के नाम होते हैं ।। ६३६ ।। नाल, सैफनी, तुपक, जबरजंग, हथनाल, सुतरनाल, घुड़नाल, चूर्णपरज्वाल आदि तुपक के ही नाम हैं ।। ६३७ ।। ज्वाल शब्द पहले कहकर अन्त में धरणी पद का उच्चारण करके तुपक के नाम बनते हैं ।। ६३८ ।। अनिल शब्द पहले कहकर छोड़नी शब्द अन्त में कहने से तुपक के नाम होते हैं ।। ६३६ ।। ज्वालावमनी पद पहले कहकर मन में विचारने से तुपक के नाम जाने जाते हैं ।। ६४० ।। घन पद पहले कहकर धुननी पद अन्त में कहने से हे चतुर गण ! तुपक के नाम होते हैं ।। ६४१ ।। घन पद पहले और अन्त में नादिनी पद का उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ६४२ ।। वारिद पद पहले शब्दनी पद अन्त में कहने से तुपक के नाम बनते चले जाते हैं ।। ६४३ ।। मेघनधननी पद पहले कहकर पुनः रिपु अरि का उच्चारण करने से हे चतुर गण ! तुपक के नाम बनते हैं ।। ६४४ ।। मेघशब्दनी पद से भी तुपक के नाम जाने जाते हैं ।। ६४५ ।। पहले गोला पद और अन्त में आलय पद का उच्चारण

आदि उचारकै आलय अंत उचार । नाम तुपक के होत है चीन चतुर निरधार ।। ६४६ ।। गोला आदि उचारकै धरनी अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुमति सवार ।। ६४७ ।। गोला आदि उचारकै असत्रणि पुन पद देहु । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ।। ६४८ ।। गोलालयणी आदि कहि मुख ते शबद उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुमति सवार ।। ६४९ ।। गोला आदि उचारकै आलयणी पुन भाखु । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित राखु ।। ६५० ।। गोला आदि बखानकै सदननि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि बिचार ।। ६५१ ।। गोला पद प्रिथमुचरकै केतनि पद कहु अंत । नाम सकल स्त्रीतुपक के निकसत चलत अनंत ।। ६५२ ।। गोला आदि उचारकै केतनि पद के दीन । नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ।। ६५३ ।। गोला आदि उचारकै सदनी अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर निरधार ।। ६५४ ।। गोला आदि उचारिऐ धामिन अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुमति सवार ।। ६५५ ।। गोला आदि उचारकै नई वासन कहि अंत । नाम तुपक के होत हैं निकसत चलत

करने से तुपक के नाम होते हैं ।। ६४६ ।। गोला पद पहले कहकर अन्त में धरणी पद कहने से तुपक के नाम होते हैं ।। ६४७ ।। गोला पद पहले कहकर अस्यणी पद लगाने से हे चतुर गण ! तुपक के नाम पहचानो ।। ६४८ ।। गोलागत्रणी पद पहले और पुनः शव्द पद का उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ६४९ ।। गोला पद का पहले उच्चारण कर पुनः आलयणी पद कहने से तुपक के नाम होते हैं ।। ६५० ।। गोला पद पहले कहकर सदननी अन्त में कहने से हे सुकविगण ! तुपक के नाम विचार लो ।। ६५१ ।। गोला पद का पहले उच्चारण कर केतनी पद अन्त में लगाने से तुपक के समस्त नाम अनन्त रूप से निकलते चले जाते हैं ।। ६५२ ।। गोला पद पहले कहकर अन्त में केतनी पद लगाने से हे प्रवीण पुरुषो ! तुपक के नाम बनते हैं ।। ६५३ ।। गोला पद पहले कहकर अन्त में सदनी पद का उच्चारण करने से हे चतुर गण ! तुपक के नाम होते हैं ।। ६५४ ।। गोला पद और धामिनी अन्त में उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ६५५ ।। गोला पद पहले और निवासनी पद अन्त में लगाने से तुपक के अनन्त नाम निकलते चले जाते हैं ।। ६५६ ।। गोला पद पहले और ग्राहिका पद अन्त में लगाने

बिअंत ।।६५६।। गोला आदि उचारकै लिआली अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघर सवार ।। ६५७ ।। गोला आदि उचारकै मुकतनि अंत उचार । नाम तुपक के कह कबो लीजहु सकल बिचार ।। (मू०ग्रं०७५३) ।। ६५८ ।। गोला आदि उचारकै दाती अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर निरधार ।। ६५९ ।। गोला आदि उचारकै तजनी पुनि पद देहु । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ।। ६६० ।। ज्वाला आदि उचारिकै दच्छनि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुमति सवारि ।। ६६१ ।। ज्वाल सकतनी बक्त्र ते प्रिथमै करो बखान । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघर पछान ।। ६६२ ।। ज्वाला तजणी बक्त्र ते प्रिथमै करो उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु चतुर बिचार ।।६६३।। ज्वाला छाडनि प्रिथम ही मुख ते करो उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघर सुधार ।। ६६४ ।। ज्वाला दाइनि प्रिथम ही मुख ते करो उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघर सुधार ।। ६६५ ।। ज्वाला बक्त्रणि प्रिथम ही मुख ते करो उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघर सवार ।। ६६६ ।। ज्वाला आदि उचारकै प्रगटाइन पद देहु । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ।। ६६७ ।। ज्वाला

से तुपक के नाम वनते चले जाते हैं ।। ६५७ ।। गोला पद पहले कहकर मुक्तनी पद अन्त में लगाने से तुपक के सभी नामों को विचारपूर्वक कह लो ।। ६५८ ।। गोला पद पहले और दात्री पद अन्त में कहने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ६५९ ।। गोला पद पहले और पुनः तजनी पद लगाने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ६६० ।। ज्वाला पद पहले और अन्त में दक्षिणी पद कहने से तुपक के नाम बनते चले जाते हैं ।। ६६१ ।। ज्वालशक्तिनी पहले और वक्त्र पद बाद में लगाने से तुपक के नाम पहचाने जाते हैं ।। ६६२ ।। ज्वालातजनी पद वक्त्र पद पहले लगाने पर तुपक के नाम होते हैं ६६३ ।। ज्वालानिसर्गनी पद का उच्चारण करने से तुपक के नाम सुधारकर समझे जाते हैं ।। ६६४ ।। ज्वालादायनी पद का उच्चारण करने से सुधारकर तुपक के नाम होते हैं ।। ६६५ ।। ज्वालावक्त्रणी (ज्वाला के मुख वाली) पद का उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ६६६ ।। ज्वाला पद पहले कहकर प्रकटायनी पद लगाने से हे चतुर गण ! तुपक के नाम बनते हैं ।।६६७।।

आदि उचारकै धरणी अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघर सवारि ।। ६६८ ।। दुरजन आदि उचारकै दाहनि पुनि पद देहु । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ।। ६६९ ।। द्रुजनादि शबदुचरिकै दररनि अंत उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघर सुधार ।। ६७० ।। गोली धरणी बक्त्र ते प्रिथमै करो उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघर सुधार ।। ६७१ ।। दुशट आदि शबद उचारकै दाहनि बहुर उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघर सुधार ।।६७२।। ।। चौपई ।। कासट प्रिसठण आदि उचारहु । नाम तुपक के सकल बिचारहु । भूमिज प्रिसठण पुनि पद दीजै । नाम चीन तुपक को लीजै ।। ६७३ ।। काष्ठ प्रिसठणी आदि उचार । नाम तुपक के सकल बिचार । द्रुमज बासनी पुनि पद दीजै । चीन नाम नाली को लीजै ।। ६७४ ।। ।। दोहरा ।। काष्ठ प्रिसठणी बक्त्र ते प्रिथमै करो उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुजन सवारि ।। ६७५ ।। जलज प्रिसठणी प्रिथम 'ही मुख ते करो उचार । नाम तुपक (मू०ग्रं०७५४) के होत हैं लीजहु सुघर सुधार ।। ६७६ ।। बारज प्रिसठण

पहले ज्वाला पद और अन्त में धरणी पद का उच्चारण करने से तुपक के नाम जान लो ।। ६६८ ।। दुर्जन पद पहले और पुनः दाहनी पद लगाने से तुपक के नाम जाने जाते हैं ।। ६६९ ।। दुर्जन शब्द पहले, दलनी पद अन्त में कहने से तुपक के नाम सुधारकर जान लो ।। ६७० ।। वक्त्र पद से पहले गोलीधरणी पद का उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ६७१ ।। दुष्ट शब्द पहले और दाहनी पद बाद में उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं; जिन्हें हे चतुर गण ! तुम सुधार लो ।। ६७२ ।। ।। चौपाई ।। काष्ठपृष्ठणी पद का उच्चारण करने से तुपक के नामों का विचार किया जाता है, पुनः उसमें भूमिजपृष्ठणी पद लगाने से तुपक के नाम पहचाने जाते हैं ।। ६७३ ।। काष्ठपृष्ठणी पहले कहकर तुपक के समस्त नामों को विचार कर द्रुमजवासिनी पद पुनः लगाकर नालीदार तुपक का नाम पहचान लो ।। ६७४ ।। काष्ठपृष्ठणी पद पहले और वक्त्र पद का बाद में उच्चारण करने से हे सुजान गण ! तुपक के नाम बनते हैं ।। ६७५ ।। जलजपृष्ठणी पद का उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें तुम सुधारकर जान लो ।। ६७६ ।। वारिजपृष्ठणी पद का मुख से उच्चारण करने पर

आदि ही मुख ते करो उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ।। ६७७ ।। नीरजलयणी बक्त्र ते प्रिथमै करो उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुमति सवार ।।६७८।। अंबुजप्रिसठणी प्रिथम ही मुख ते करो उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुमति सवार ।।६७९।। घनजज प्रिसठण प्रिथम ही मुख ते करो उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघर सवार ।। ६८० ।। जलतर आदि उचारिकै प्रिसठण धर पद देहु। नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ।। ६८१ ।। बार आदि शबदुचरिकै तर प्रिसठण पुनि भाखु। नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित राखु ।। ६८२ ।। नीर आदि शबदुचरिकै तर पद प्रिसठण देहु। नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ।। ६८३ ।। हरज प्रिसठणी आदि ही मुख ते करो उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघर सवार ।।६८४।। ।। चौपई ।। बारज प्रिसठणी आदि उचार। नाम नाल के सकल बिचार। भूरुह प्रिसठण पुनि पद दीजै। नाम जान तुपक को लीजै ।। ६८५ ।। भूमि शबद को आदि उचारो। रुह प्रिसठनि तुम बहुर सवारो। नाम तुपक के सभ ही होहीं। जो कोऊ चतुर चीन कर जोहीं ।। ६८६ ।।

तुपक के नाम बनते हैं ।। ६७७ ।। वक्त्र पद से पहले नीरजलन्नणी पद का उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं।। ६७८ ।। अम्बुजपृष्ठणी पद मुख से उच्चारण करने पर तुपक के नाम होते हैं।। ६७९ ।। घनजजपृष्ठणी पद का उच्चारण करने से तुपक के नाम बनते हैं।। ६८० ।। जलतरु पद पहले और पृष्ठणी धर पद बाद में लगाने से तुपक के नाम बनते हैं।। ६८१ ।। वारि पद पहले कहकर पुनः तरुपृष्ठणी पद कहने से तुपक के नाम बनते हैं, जिन्हें हे चतुर गण! तुम चित्त में पहचान लो।। ६८२ ।। नीर पद पहले और उसमें तरु पद पृष्ठणी लगाने से तुपक के नाम बनते हैं।। ६८३ ।। अरजपृष्ठणी पद का उच्चारण करने से तुपक के नाम जाने जाते हैं ।।६८४।। ।। चौपाई ।। वारिजपृष्ठणी पहले कहकर, तुपक के नामों का विचार कर भूरुहपृष्ठणी पद पुनः लगाने से तुपक के नाम जान लीजिए।। ६८५ ।। पहले भूमि शब्द का उच्चारण करो और फिर रुहपृष्ठणी पद को लगाओ और इस प्रकार तुपक के सब नाम बनेंगे जिन्हें कोई चतुर गण पहचान सकता है।। ६८६ ।। तरुरुहपृष्ठणी पहले कहकर तुपक के नामों का विचार कर

तररुह प्रिसठणि आदि उचरिअहु । नाम तुपक के सकल बिचरिअहु । काष्ठ कुंदनी आदि बखानो । नाम तुपक के सभ जिअ जानो ।। ६८७ ।। भूमि शबद को आदि उचारहु । रुह सु शबद को बहुर बिचारहु । नाम तुपक जू के सभ मानहु । या मै कछू भेद नही जानहु ।। ६८८ ।। प्रिथी शबद को प्रिथमै दीजै । रुह पद बहुर उचारन कीजै । नाम तुपक के सभ जिअ जानो । या मै कछू भेद नही मानो ।। ६८९ ।। बिरछ शबद को आदि उचारो । प्रिसठण पद कहि जीअ बिचारो । नाम तुपक के होहि अपारा । या मै कछू न भेद निहारा ।। ६९० ।। द्रुमज शबद को आदि उचारो । प्रिसठण पद कहि हिए बिचारो । सभ ही नाम तुपक के होवैं । जउ कोऊ चतुर चित्त मै जोवैं ।। ६९१ ।। तर पद मुख ते आदि उचारो । प्रिसठण पद (सू०ग्रं०७५५) कौ बहुर बिचारो । नाम तुपक के सभ जिअ जानो । या मै कछू भेद नही मानो ।। ६९२ ।। रूख शबद कों आदि उचारो । प्रिसठण पद कहि बहुर बिचारो । सभही नाम तुपक के होई । या मै कछू भेद नही कोई ।। ६९३ ।। उतभुज पद को आदि उचारो । प्रिसठण पद कहि हिए बिचारो । सभही नाम तुपक के जानो । या मै कछू भेद नही मानो ।। ६९४ ।।

काष्ठकुन्दनी पद लगाकर तुपक के सभी नामों को मन में जान लो ।।६८७ ।। पहले भूमि शब्द और रुह शब्द को लगाओ और इस प्रकार निःसंकोच तुपक के सभी नामों को जानो ।। ६८८ ।। पृथ्वी शब्द को पहले लगाकर पुनः रुह पद का उच्चारण करो और इस प्रकार बिना किसी भेद के तुपक के नामों को जान लो ।। ६८९ ।। वृक्ष शब्द को पहले और पृष्ठणी पद को बाद में लगाने से तुपक के अनेकों नाम बनते हैं, इसमें कोई भेद नहीं है ।। ६९० ।। द्रुमज शब्द को पहले और पृष्ठणी पद को अन्त में रखने से तुपक के सभी नाम बनते हैं, यदि कोई चतुर गण जानना चाहे ।। ६९१ ।। तरु पद पहले कहकर पृष्ठणी पद का बाद में विचार करने से बिना किसी भेद-भाव के तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ६९२ ।। रूख (वृक्ष) शब्द को पहले और पृष्ठणी पद को बाद में लगाने से विना किसी भेद के तुपक के सभी नाम बनते हैं ।।६९३।। उतभुज (उद्‌भिद) पद पहले कहकर पृष्ठणी पद का मन में विचार करने से बिना किसी भेद के तुपक के सभी नामों को जानो ।। ६९४ ।। तरु सुशब्द को

तरसु शबदु को आदि उचारो। बहुर प्रिसठणी शबद बिचारो। सभ ही नाम तुपक के जानो। या मै कछू भेद न पछानो ॥ ६९५ ॥ पत्री पद को आदि बखानो। प्रिसठण शबद सु बहुर प्रमानो। सभही नाम तुपक के जानहु। या मै कछू भेद नही मानहु ॥ ६९६ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ धराधार पद प्रिथम उचारन कीजिऐ। प्रिसठण पद को बहुर ठउर तह दीजिऐ। सकल तुपक के नाम चतुर जिअ जानिऐ। हो याके भीतर भेद नैक नही मानिऐ ॥ ६९७ ॥ ॥ दोहरा ॥ धराराज प्रिथमै उचरि पुनि प्रिसठण पद देहु। नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ॥ ६९८ ॥ धरा आदि शबदुचरिकै नाइक अंत उचार। प्रिसठ भाखि बंदूक के लीजहु नाम सुधार ॥६९९॥ ॥ चौपई ॥ धरा शबद को आदि बखानहु। नाइक शबद तहाँ फुनि ठानहु। प्रिसठण पद को बहुर उचरिऐ। नाम तुपक के सभै बिचरिऐ ॥ ७०० ॥ धरनी पद प्रिथमै लिखि डारो। राव शबद तिह अंत उचारो। प्रिसठण बहुर शबद को दीजै। नाम पछान तुपक को लीजै ॥ ७०१ ॥ धरनीपति पद आदि उचारो। प्रिसठणि शबदहि बहुर सवारो। नाम तुपक के सभ जिअ जानो। या मै कछू भेद नही मानो ॥ ७०२ ॥ धराराट पद आदि

पहले कहकर पुनः पृष्ठणी शब्द लगाने से बिना किसी भेद के तुपक के नाम जानो ॥ ६९५ ॥ पत्री पद पहले और पृष्ठणी शब्द बाद में लगाने से तुपक के सभी नामों को जानो और इसमें किसी रहस्य को मत मानो ॥ ६९६ ॥ ॥ अड़िल ॥ धराधार पद का पहले उच्चारण करो, फिर पृष्ठणी पद को लगाओ और हे चतुर गण ! बिना किसी भेद के तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ६९७ ॥ ॥ दोहा ॥ धराराज पद पहले और पुनः पृष्ठणी पद लगाने से तुपक के नाम होते हैं, जिन्हें हे चतुर गण ! तुम चित्त में जान लो ॥ ६९८ ॥ धरा पद पहले और अन्त में नायक पद तथा पृष्ठ पद कहने से बन्दूक़ के नामों को सुधारकर जाना जाता है ॥ ६९९ ॥ ॥ चौपाई ॥ पहले धरा पद कहो, पुनः नायक पद लगाओ और पृष्ठणी पद का उच्चारण कर तुपक के सभी नामों को विचार लो ॥ ७०० ॥ धरणी पद पहले फिर राव शब्द का उच्चारण तथा पुनः पृष्ठणी शब्द लगाने से तुपक के सभी नामों को पहचान लो ॥ ७०१ ॥ धरनीपति पद पहले, पृष्ठणी शब्द बाद में लगाने से बिना

उचारो प्रिसठण पद को बहुर सुधारो। नाम तुपक जानो
मन माही। या मै भेद नैकहूँ नाही ॥७०३॥ धराराज पुनि
आदि उचरिऐ। ताहि प्रिसठणी बहुर सुधरिऐ। सभ स्री नाम
तुपक के होवहि। जाके सभ गुन जन गुन जोवहि ॥ ७०४ ॥
धरा शबद को आदि उचारो। प्रिसठण शबद सु अंत सुधारो।
सकल नाम तुपक के जानो। या मै कछू भेद नहो
मानो ॥ ७०५ ॥ धरा शबद को आदि भनीजै। इंद्र शबद
ता पाछे दीजै। प्रिसठण पद को बहुर उचारो। सकल
तुपक के नाम बीचारो ॥ ७०६ ॥ धरा शबद को आदि
उचरिऐ। पालक शबद सु अंत बिचरिऐ। (मू०ग्रं०७५६)
प्रिसठण पद को बहुर बखानो। सभ ही नाम तुपक के
जानो ॥ ७०७ ॥ तरुज शबद को आदि बखानो। नाथ
शबद तिह अंत प्रमानो। प्रिसठण शबद सु बहुर भनीजै।
नाम जान तुपक को लीजै ॥ ७०८ ॥ द्रुमज शबद को आदि
सु दीजै। नाइक पद को बहुर भनीजै। प्रिसठण शबद सु
अंत बखानहु। सभही नाम तुपक के मानहु ॥ ७०९ ॥
फल पद आदि उचारन कीजै। ता पाछै नाइक पद दीजै।
पुनि प्रिसठण तुम शबद उचारो। नाम तुपक के सकल

किसी भेद के तुपक के सभी नामों को जानो ॥ ७०२ ॥ धराराट पद पहले
कहकर पृष्ठणी पद को पुनः लगाने से तुपक के नाम जानो इसमें तनिक भी
असत्य नहीं है ॥ ७०३ ॥ धराराज पद पहले कहकर तब उसमें पृष्ठणी पद
लगाकर श्रीतुपक के नामों को जाना जाता है, जिसके सभी गुण गाते
हैं ॥ ७०४ ॥ धरा शब्द का उच्चारण कर पृष्ठणी शब्द को अन्त में लगाओ
बिना किसी भेद के तुपक के नामों को जानो ॥ ७०५ ॥ धरा शब्द को पहले
कहकर उसके बाद इन्द्र तथा उसके बाद पृष्ठणी पद का उच्चारण करने से
तुपक के समस्त नामों का विचार किया जाता है ॥ ७०६ ॥ पहले धरा शब्द
का उच्चारण कर वाद में पालक शब्द लगाने से तथा पुनः पृष्ठणी पद कहने
से तुपक के सभी नाम जाने जाते हैं ॥ ७०७ ॥ तरुज शब्द को पहले कहकर
पुनः नाथ शब्द लगाओ और फिर पृष्ठणी शब्द कहो और तुपक के नामों को
जान लो ॥ ७०८ ॥ द्रुमज शब्द को पहले पुनः नायक पद तथा अन्त में
पृष्ठणी पद लगाने से तुपक के सभी नामों को जाना जाता है ॥ ७०९ ॥
पहले फल पद फिर नायक पद तथा पुनः पृष्ठणी शब्द का उच्चारण करने से

बिचारो ।। ७१० ।। तरज शबद को आदि उचरिऐ । राज शबद को बहुर सुधरिऐ । ता पाछे प्रिसठण पद दीजै । नाम तुफंग जान जिअ लीजै ।। ७११ ।। धरनीजा पद आदि भनिज्जै । राट शबद ता पाछै दिज्जै । प्रिसठण पद को अंत बखानो । नाम तुपक सभ भेद न मानो ।। ७१२ ।। ब्रिछज शबद को आदि भनीजै । ता पाछे राजा पद दीजै । प्रिसठण शबद सु अंत उचारो । नाम तुपक के सकल बिचारो ।। ७१३ ।। तरुरुह अनज आदि पद दीजै । नाइक पद को बहुर भनीजै । प्रिसठण शबद अंत के दीने । नाम तुपक के होहि नवीने ।। ७१४ ।। ।। दोहरा ।। तरुरुज प्रिसठण प्रिथम ही मुख ते करौ उचार । नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर निरधार ।। ७१५ ।। सु कबि बक्त्र ते कुंदणी प्रिथमै करो उचार । नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुमति सवार ।। ७१६ ।। ।। अड़िल ।। काष्ट कुंदनी आदि उचारन कीजिऐ । नाम तुपक के चीन चतुर चित लीजिऐ । ब्रिछज बासनी शबद बक्त्र ते भाखिऐ । हो नाम तुपक के जानि ह्रिदै मै राखिऐ ।। ७१७ ।। धरएसरजा शबद सु अंत बखानिऐ । ता पाछे कुंदनी बहुर पद ठानिऐ । सुकबि सभै चित माझ सु साच बिचारियो । हो नाम तुपक के सकल निशंक

तुपक के समस्त नाम विचारे जाते हैं ।। ७१० ।। तरुज शब्द को पहले कहकर पुनः राज तथा पुनः पृष्ठणी पद लगाने से तुफंग के नामों को मन में जाना जाता है ।। ७११ ।। धरणी जा पद पहले कहकर पश्चात् राट शब्द लगाकर तथा पुनः पृष्ठणी पद को लगाने से तुपक के सभी नाम जान लो ।। ७१२ ।। वृक्षज शब्द को पहले कहकर पुनः राजा तथा पृष्ठणी शब्द का उच्चारण करने से तुपक के समस्त नामों को विचार लो ।। ७१३ ।। तरुरुहअनुज पद पहले लगाकर पुनः नायक और पृष्ठणी शब्द देने से तुपक के नये नाम निकलते हैं ।। ७१४ ।। तरुरुहपृष्ठणी का उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं ।। ७१५ ।। हे सुकवि ! अपने मुख से कुन्दनी पद का उच्चारण करो जिससे सुधारकर तुपक के नाम होते हैं ।। ७१६ ।। ।। अड़िल ।। काष्ठकुन्दनी शब्द कहने से तुपक के नाम पहचाने जाते हैं । वृक्षजवासिनी शब्द मुँह से कहने पर हृदय में तुपक के नाम जाने जाते हैं ।। ७१७ ।। धरईश्वरजा शब्द कहकर उसके पीछे कुन्दनी पद लगाने से हे सुकविगण ! इसे सत्य जानो और तुपक

उचारियो ।। ७१८ ।। तरज बासनी आदि सु शबद बखानिऐ ।
नाम तुपक के सकल सुकबि मन मानिऐ । या मै शंक न कछू
ह्रिदै मै कीजिऐ । हो जहाँ जहाँ इह नाम चहो तह
दीजिऐ ।। ७१९ ।। ।। चौपई ।। भूम शबद को आदि उचारो ।
जा पद तिह पाछै दै डारो । नाम तुपक के सभ जिअ जानो ।
या मै कछू भेद नही मानो ।। ७२० ।। प्रिथी शबद को आदि
उचारो । ता पाछे जा पद दै डारो । नाम तुफंग जान जिय
लीजै । चहिऐ जहाँ तहीं पद दीजै ।। (मू०ग्रं०७५७) ।। ७२१ ।।
बसुधा शबद सु अंत बखानहु । ता पाछे जा पद कहु ठानहु ।
नाम तुपक के सभ जिअ जानो । या मै कछू भेद नही
मानो ।। ७२२ ।। प्रिथम बसुंध्रा शबद उचरिऐ । ता पाछे
जा पद दै डरिऐ । नाम तुपक के सभि जिअ लहिऐ । चहिऐ
जहाँ तही पद कहिऐ ।।७२३।। तरनी पद को आदि बखानो ।
ता पाछे जा पद को ठानो । नाम तुपक के सभ ही लहिऐ ।
चहिऐ जहाँ तही पद कहिऐ ।। ७२४ ।। ।। छंद ।। बल्लीस
आदि बखान । बासनी पुनि पद ठान । नामै तुपक सभ
होइ । नही भेद या महि कोइ ।। ७२५ ।। ।। चउपई ।। सिंघ
शबद को आदि बखान । ता पाछे अरि शबद सु ठान ।

के नामों का निःसंकोच उच्चारण करो ।। ७१८ ।। तरुजवासिनी शब्द का उच्चारण करने से तुपक के समस्त नामों को मन में जाना जाता है, इसके बारे में हृदय में कुछ भी शंका मत कीजिए और जहाँ-जहाँ इस नाम को चाहो वहीं प्रयोग करो ।। ७१९ ।। ।। चौपाई ।। भूमि शब्द को कहकर उसके बाद जा पद लगाओ । इस प्रकार तुपक के नामों को जानो और इसमें कोई भेद मत मानो ।। ७२० ।। पृथ्वी शब्द को पहले कहकर और उसके बाद जा पद लगाओ और तुफंग के सभी नामों को जानते हुए जहाँ चाहे इसका प्रयोग करो ।। ७२१ ।। वसुधा शब्द के पीछे जा पद लगाओ और बिना किसी भेद के तुपक के सभी नामों को जानो ।। ७२२ ।। वसुन्धरा शब्द का उच्चारण उसमें जा पद लगाओ और तुपक के सभी नामों को जानते हुए उसके मन चाहे प्रयोग कीजिए ।। ७२३ ।। तरिणी पद पहले कहकर बाद में जा पद लगाओ और तुपक के सब नामों का मनचाहा प्रयोग कीजिए ।। ७२४ ।। ।। छन्द ।। बलीश पद पहले तथा बाद में वासिनी पद लगाने से तुपक के सभी नाम होते हैं, इसमें को ई भेद नहीं है ।। ७२५ ।। ।। चौपाई ।। सिंह शब्द

नाम तुपक के सकल पछानहु। या मै कछू भेद नही मानहु ॥ ७२६ ॥ पुंडरीक पद आदि उचारो। ता पाछे अरि पद दै डारो। नाम तुपक के सभ लहि लीजै। या मै कछू भेद नही कीजै ॥७२७॥ आदि शबद हर जच्छ उचारो। ता पाछे अरि पद दै डारो। नाम तुपक के सभ जिअ लहियो। चहिऐ नाम जहाँ तह कहियो ॥ ७२८ ॥ ॥ छंद ॥ म्रिगराज आदि उचार। अरि शबद बहुर सुधार। तऊफंग नाम पछान। नही भेद या महि मान ॥ ७२९ ॥ ॥ चउपई ॥ आदि शबद म्रिगराज उचारो। ता पाछे रिप पद दै डारो। नाम तुपक के सकल पछानो। या मै कछू भेद नही जानो ॥ ७३० ॥ पसुपतेस पद प्रिथम भनिज्जै। ता पाछे अरि पद को दिज्जै। नाम तुपक के सभ जिअ जानो। या मै कछू भेद नही मानो ॥ ७३१ ॥ ॥ दोहरा ॥ सकल पसुन के नाम लै शत्र शबद कहि अंत। सभही नाम तुफंग के निकसत चलत अनंत ॥ ७३२ ॥ म्रिग पद आदि बखानकै पति पद बहुर उचार। अरि कहि नाम तुफंग के लीजै सुकबि सुधार ॥ ७३३ ॥ ॥ छंद ॥ म्रिग शबद आदि बखान। पाछै सु पति पद ठान। रिप शबद

पहले कहकर उसके बाद अरि शब्द लगाने से तुपक के सभी नाम जान लो, इसमें कोई भेद वाली बात नहीं है ॥ ७२६ ॥ पुण्डरीक पद पहले कहो, उसके पीछे अरि पद लगाओ तो तुपक के सभी नाम जान लो, इसमें कोई रहस्य नहीं है ॥ ७२७ ॥ पहले हरिअक्ष बाद में ता पद लगाओ और मनचाहे रूप से तुपक के नाम जान लो ॥ ७२८ ॥ ॥ छन्द ॥ मृगराज पहले कहकर तथा अरि शब्द लगाकर बिना किसी भेद के तुफंग के नाम पहचानो ॥ ७२९ ॥ ॥ चौपाई ॥ सर्वप्रथम मृगराज बाद में रिपु शब्द लगाकर तुपक के समस्त नाम पहचानो और इसमें कोई भेद मत मानो ॥ ७३० ॥ पशुपतेश पद पहले कहकर उसके बाद में अरि शब्द लगाने से तुपक के सभी नामों को जानो और इसमें कुछ भेद मत मानो ॥ ७३१ ॥ ॥ दोहा ॥ समस्त पशुओं के नाम लेकर शत्रु शब्द अन्त में लगाने से तुपक के सब नाम निकलते चले जाते हैं ॥ ७३२ ॥ मृग पद पहले कहकर पुनः पति पद का उच्चारण करने तथा अरि शब्द लगाने से तुफंग के नाम सुधारकर जान लो ॥ ७३३ ॥ ॥ छन्द ॥ पहले मृग शब्द बाद में पति पद तथा पुनः रिपु शब्द का उच्चारण

बहुर उचार । सभ नाम तुपक बिचार ।। ७३४ ।। सिंगी प्रिथम पद भाखु । अरि शबद कहि लखि राखु । अरि शबद बहुर बखान । सभ नाम तुपक पछान ।। ७३५ ।। ।। छंद वड्डा ।। पति शबद आदि उचारिकै म्रिग शबद बहुर बखानिएँ । अरि शबद बहुर उचारकै नामा तुपक पहिचानिएँ । नही भेद या मै नैक है सभ (मू०ग्रं०७५८) सु कबि मानहु चित्त मै । जह जानिऐ तह दीजिऐ पद अउर छंद कबित्त मै ।।७३६।। ।। चौपई ।। हरण शबद को आदि भणिज्जै । ता पाछे पति पद को दिज्जै । ता पाछे अरि शबद उचारो । नाम तुपक के सकल बिचारो ।।७३७।। सिंगी आदि उचारन कीजै । ता पाछे पति पद कहु दीजै । शत्रु शबद कहु बहुर बखानो । नाम तुपक के सकल पछानो ।। ७३८ ।। क्रिशना जिन पद आदि उचारो । ता पाछे पति पद दै डारो । नाम तुपक के सभ पहिचानो । या मै भेद न कोऊ जानो ।। ७३९ ।। ।। दोहरा ।। नैंनोतम पद बकत्र ते प्रिथमै करो उचार । पति अरि कहि कर तुपक के लीजो नाम सुधार ।। ७४० ।। ।। चौपई ।। सवत सवततनि आदि उचारो । ता पाछे पति शबद सवारो । रिप पद बहुर उचारन कीजै । नाम तुपक को सभ लखि लीजै ।। ७४१ ।। ।। अड़िल्ल ।। म्रिगी शबद

करने से तुपक के सभी नाम जाने जाते हैं ।। ७३४ ।। शृंगी (हिरण) पद पहले कहकर अरि शब्द तथा अरि पद पुनः जोड़ने से तुपक के नाम पहचाने जाते हैं ।।७३५।। ।। छन्द बड़ा ।। पति शब्द पहले कहकर पुनः मृग शब्द कहो, पुनः अरि शब्द का उच्चारण कर तुपक के नाम पहचान लो । हे सुकविगण ! इसमें कोई भेद नहीं है और इस पद को छन्द-कवित्त में कहीं प्रयुक्त कीजिए ।। ७३६ ।। ।। चौपाई ।। हिरण शब्द को पहले कहकर उसके बाद पति शब्द तथा अरि पद का उच्चारण कर तुपक के समस्त नामों का विचार करो ।। ७३७ ।। शृंगी पद का उच्चारण कर उसके पीछे पति तथा शत्रु पद को लगाने से तुपक के समस्त नाम पहचानो ।। ७३८ ।। कृष्णाजिन पद का उच्चारण कर उसके पीछे पति पद लगाओ तथा बिना किसी भेद के तुपक के नाम पहचानो ।। ७३९ ।। ।। दोहा ।। पहले मुँह से नयनोतम पद का उच्चारण करो तथा फिर पति अरि कहकर तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ७४० ।। ।। चौपाई ।। सौतनी पद कहकर बाद में पति रिपु पद का उच्चारण करने से तुपक के सभी नाम जान लो ।।७४१।। ।। अड़िल ।। मृगी शब्द का उच्चारण

को आदि उचारन कीजिऐ। ता पाछै नाइक सु शबद कहु दीजिऐ। शत्रु शबद कहि नाम तुपक के जानिऐ। हो जउन ठउर पद रुचै सु तही बखानिऐ ॥ ७४२ ॥ सेत असित अजिना के आदि उचारिऐ। ता पाछे पति शबद सु बहुर सुधारिऐ। शत्र शबद को ताके अंत बखनिऐ। हो सकल तुपक के नाम सु हिय मै जानिऐ ॥ ७४३ ॥ उदर सेत चरमादि उचारन कीजिऐ। ता के पाछे बहुर नाथ पद दीजिऐ। ताके पाछे रिप पद बहुर उचारिऐ। हो नाम तुपक के सभ ही चतुर बिचारिऐ ॥ ७४४ ॥ ॥ चौपई ॥ किशना पिसठ चरमादि उचारो। ता पाछे नाइक पद डारो। शत्रु शबद को बहुर बखानो। नाम तुपक के सकल पछानो ॥ ७४५ ॥ चारु नेत्र शबदादि उचारो। ता पाछे पति शबद बिचारो। नाथ शबद कहु बहुरो दीजै। नाम तुफंग चीन चित लीजै ॥७४६॥ नैनोतम पद आदि उचारो। नाइक पद पाछे दै डारो। शत्रु शबद कहु बहुर बखानो। नाम तुपक के सभ जिअ जानो ॥ ७४७ ॥ म्रिगी शबद को आदि बखानो। ता पाछे नाइक पद ठानो। शत्रु शबद कहु बहुरो दीजै। नाम तुफंग चीन चित लीजै ॥ ७४८ ॥ चखी शबद को आदि उचारो। ता पाछे रिप पद दै (मू०ग्रं०७५६) डारो। शत्रु शबद को बहुर

कर उसके बाद नायक शब्द तथा शत्रु पद लगाने से तुपक के नाम जाने जाते हैं। इसका रुचि-अनुसार वर्णन कीजिए ॥ ७४२ ॥ सित-असित अंजन पद का उच्चारण कर पति शब्द और शत्रु शब्द लगाने से तुपक के समस्त नाम हृदय में जान लो ॥ ७४३ ॥ उदरश्वेतचर्म पहले कहकर नाथ रिपु पद लगाओ और तुपक के समस्त नामों का विचार कर लो ॥ ७४४ ॥ ॥ चौपाई ॥ कृष्णापृष्ठचर्म पद पहले कहो, बाद में नायक पद लगाओ और पुनः शत्रु शब्द का वर्णन करो तथा तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ ७४५ ॥ चारुनेत्र शब्द के बाद पति शब्द तथा पुनः नाथ शब्द लगाओ और इस प्रकार तुपक के नाम चित्त में पहचान लो ॥ ७४६ ॥ नयनोतम पद कहकर नायक पद तथा पुनः शत्रु पद लगाओ और तुपक के नामों को मन में जान लो ॥ ७४७ ॥ मृगी शब्द को पहले कहकर बाद में नायक एवं शत्रु शब्द दो तथा तुपक के नाम चित्त में पहचान लो ॥ ७४८ ॥ चखी (चक्षु) शब्द पहले, बाद में रिपु पद और पुनः शत्रु शब्द कहने से श्रीतुपक के नाम

बखानो । सभ स्त्री नाम तुपक के जानो ।। ७४६ ।। म्रिगी अधिप को आदि उचारो । ता पाछे पति पद कै डारो । शत्रु शबद को बहुर बखानो । नाम तुपक के सभ पहिचानो ।। ७५० ।। म्रिगीराट शबदादि भनिज्जै । ताँ पाछे पति पद कहु दिज्जै । शत्रु शबद को अंति उचारो । नाम तुपक के सत जिअ धारो ।। ७५१ ।। म्रिगी इंद्र शबदादि बखानो । ता पाछे नाइक पद ठानो । ता पाछे रिप शबद भनीजै । नाम तुफंग चीन चित लीजै ।। ७५२ ।। म्रिगीएसर को आदि उचरिऐ । ता पाछे पति पद दै डरिऐ । शत्रु शबद को अंत बखानो । नाम तुफंग सकल पहिचानो ।।७५३।। ।। अड़िल ।। म्रिगीराज को आदि उचारन कीजिऐ । ताके पाछे नाइक पद कहि दीजिऐ । शत्रु शबद को ताके अंत बखानियो । हो नाम तुपक के सकल चतुर पहिचानियो ।।७५४।। म्रिगज शबद को मुख ते आदि बखानिऐ । ताके पाछे नाइक पद को ठानिऐ । शत्रु शबद को ताके अंत उचारिऐ । हो नाम तुपक के सभ ही चतुर बिचारिऐ ।।७५५।। मुख ते प्रिथम म्रिगी सु शबद को भाखिऐ । ताके पाछे नाइक पद को राखिऐ । शत्रु शबद को ताके अंत उचारिऐ । हो नाम तुपक के सकल चतुर चित धारिऐ ।। ७५६ ।। ।। चौपई ।। म्रिगी

जान लो ।। ७४६ ।। मृगीअधिप पद पहले, बाद में पति और शत्रु शब्द का वर्णन करो तथा इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ।। ७५० ।। मृगीराट शब्द पहले कहकर बाद में पति शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के नामों को जान लो ।। ७५१ ।। मृगीइन्द्र शब्द पहले कहकर नायक पद लगाओ और उसके बाद रिपु शब्द का उच्चारण करते हुए तुफंग के सभी नामों को पहचान लो ।। ७५२ ।। मृगेश्वर पद पहले कहकर क्रमशः पति शत्रु शब्द को कहो और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ।। ७५३ ।। ।। अड़िल ।। मृगीराज को पहले कहकर उसके पीछे नायक पद कहने से तथा सबसे अन्त में शत्रु शब्द लगाने से हे चतुर गण ! तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ।। ७५४ ।। मृगज शब्द को पहले कहकर बाद में नायक पद तथा शत्रु पद का उच्चारण करने से हे चतुर गण ! तुपक के नामों को जान लो ।। ७५५ ।। पहले मृगी शब्द, उसके बाद नायक पद तथा अन्त में शत्रु शब्द लगाने से तुपक के समस्त नाम चित्त में जाने जाते हैं ।। ७५६ ।।

अनुज को आदि उचारो। ता पाछे नाइक पद डारो। शत्रु शबद को बहुर प्रमानहु। नाम तुफंग सकल जिअ जानहु ॥ ७५७ ॥ म्रिगी अनुज को आदि उचारो। ता पाछे नाइक पद डारो। शत्र शबद बहुरो सु बखानो। सभ स्त्री नाम तुपक के जानो ॥७५८॥ म्रिगीअनुज शबदादि उचारो। नाइक पद पाछै दै डारो। शत्रु शबद को बहुर बखानो। नाम तफंग सभै जिअ जानो ॥ ७५९ ॥ म्रिगी रवण शबदादि भणिज्जै। ता पाछे नाइक पद दिज्जै। शत्रु शबद को बहुर बखानहु। सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ॥ ७६० ॥ म्रिगजाइक पद आदि बखानै। ता पाछे नाइक पद ठानै। शत्रु शबद को बहुर भणिज्जै। नाम बंदूक जान जिअ लिज्जै ॥ ७६१ ॥ ॥ दोहरा ॥ आदि म्रिगीजा उचरिकै पति रिप अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं (मू०ग्रं०७६०) लीजहु सु कबि सुधार ॥ ७६२ ॥ त्रिणचर आदि उचारकै पति अरि बहुर उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुघर सवार ॥ ७६३ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ त्रिणचर पद कौ आदि उचारन कीजिऐ। नाथ शबद को ताके पाछे दीजिऐ। शत्रु शबद को ता के अंत बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम सु चतुर पछानिऐ ॥ ७६४ ॥ त्रिण भख पद को आदि उचारन

॥ चौपाई ॥ मृगीअनुज को पहले तथा बाद में नायक एवं शत्रु पद को रखने से तुपक के समस्त नाम जाने जाते हैं ॥ ७५७ ॥ मृगीअनुज को पहले तथा उसके बाद नायक पद लगाकर शत्रु शब्द कहने से तुपक के समस्त नाम जाने जाते हैं ॥ ७५८ ॥ मृगीअनुज शब्द पहले कहकर बाद में नायक पद लगाओ, पुन: शत्रु शब्द लगाते हुए तुपक के समस्त नामों को जानो ॥ ७५९ ॥ मृगीरमण शब्द पहले कहकर बाद में नायक पद लगाकर तथा शत्रु शब्द जोड़कर श्रीतुपक के नाम जानो ॥ ७६० ॥ मृगजायक पद पहले कहकर क्रमश: नायक शत्रु शब्दों को कहते हुए बन्दूक़ के नामों को मन में जान लो ॥ ७६१ ॥ ॥ दोहा ॥ पहले मृगीजा पद कहकर क्रमश: पति, रिपु का उच्चारण करने से हे कविगण! तुपक के नाम होते हैं ॥ ७६२ ॥ तृणचर पद पहले तथा पतिअरि शब्द का बाद में उच्चारण करने से तुपक के नाम होते हैं ॥ ७६३ ॥ ॥ अड़िल ॥ तृणचर पद को कहो तथा क्रमश: नाथ एवं शत्रु पद को अन्त में लगाओ और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ ७६४ ॥

कीजिऐ। नाइक पद को ताके पाछे दीजिऐ। शत्र शबद को ताके अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारिऐ ॥ ७६५ ॥ ॥ चौपई ॥ त्रिणहा पद को आदि बखानो। ता पाछे नाइक पद ठानो। शत्रु शबद को बहुर उचारो। नाम तुपक के सकल बिचारो ॥ ७६६ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ त्रिणहात्री को आदि उचारन कीजिऐ। ताके पाछे नाथ शबद को दीजिऐ। ताके पाछे शत्रु शबद को ठानिऐ। हो सकल तुपक के नाम चतुर चित जानिऐ ॥७६७॥ त्रिण भच्छी को आदि बखानन कीजिऐ। नाइक पद को ताके पाछे दीजिऐ। शत्रु शबद को कहिओ बहुर सुधार कै। हो नाम तुपक के लीजहु सकल बिचार कै ॥ ७६८ ॥ त्रिणहा रिप को आदि बखानन कीजिऐ। नाथ शबद को ताँके पाछे दीजिऐ। शत्र शबद को ताके अंत बखानिऐ। हो नाम तुपक के सकल चतुर पहिचानिऐ ॥७६९॥ ॥ दोहरा ॥ त्रिण रिप आदि उचारिकै पति रिप अंत उचार। सभही नाम तुफंग के लीजहु सुघर सुधार ॥ ७७० ॥ ॥ चौपई ॥ त्रिण रिप आदि उचारन कीजै। ता पाछे नाइक पद दीजै। शत्र शबद को बहुर उचारो। नाम तुपक के सकल बिचारो ॥ ७७१ ॥ भूजांतक शबदादि उचारो। नाइक ता

तृणभक्ष पद को पहले कहकर नायक एवं शत्रु पद को लगाकर तुपक के समस्त नामों का विचार कीजिए ॥ ७६५ ॥ ॥ चौपाई ॥ तृणहा पद को पहले तथा बाद में नायक शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के समस्त नामों को विचार लो ॥ ७६६ ॥ ॥ अड़िल ॥ तृणहात्री शब्द पहले कहकर पश्चात् नाथ शत्रु पद को लगाओ और तुपक के समस्त नाम चित्त में जान लो ॥ ७६७ ॥ तृणभक्षी पद पहले कहकर नायक तथा शत्रु पद को लगाकर तुपक के समस्त नामों को विचार लो ॥ ७६८ ॥ तृणहारिपु का पहले वर्णन कर बाद में नाथ शत्रु शब्द को लगाओ और तुपक के नामों को पहचान लो ॥ ७६९ ॥ ॥ दोहा ॥ तृणरिपु कहकर पतिरिपु अन्त में लगाने से तुपक के सभी नामों को सुधारकर जान लो ॥ ७७० ॥ ॥ चौपाई ॥ तृणरिपु पहले कह, उसके पीछे नायक एवं शत्रु पद को लगाओ और इस प्रकार तुपक के समस्त नाम विचार लो ॥ ७७१ ॥ भुजान्तक शब्द पहले कहकर उसके बाद नायक एवं शत्रु पद को लगाने से तुपक के नाम चित्त में पहचान

पाछे पद डारो । शत्र शबद को बहुर भणिज्जै । नाम तुफंग चीन चित लिज्जै ॥७७२॥ प्रिथीजा अरि शबदादि उचारो । ता पाछे नाइक पद डारो । शत्रु शबद को बहुर बखानो । नाम तुपक के सभ पहिचानो ॥७७३॥ ॥ अड़िल्ल ॥ भू सुत रिप शबदादि बखानन कीजिऐ । ताके पाछे बहुर नाथ पद दीजिऐ । शत्र शबद को ताके अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारिऐ ॥ ७७४ ॥ (मू०ग्रं०७६१) ॥ चौपई ॥ उरविज शबद सु आदि उचारो । रिपनाइक पाछे पद डारो । शत्रु शबद को बहुर भणिज्जै । नाम तुफंग चीन चित लिज्जै ॥७७५॥ बैसंधर जा शत्रु उचारो । नाइक शबद अंत दै डारो । शत्रु शबद को बहुर उचरिऐ । नाम बंदूक चित्त मै धरिऐ ॥ ७७६ ॥ पूरनि आदि उचारन कीजै । जा रिप पद को पाछै दीजै । शत्रु शबद को बहुर बखानो । नाम तुपक के सकल पछानो ॥ ७७७ ॥ द्वीपनि आदि शबद को दिज्जै । ता पाछे चर शबद भनिज्जै । शत्रु शबद को बहुर उचारो । नाम तुपक के सकल सवारो ॥ ७७८ ॥ स्त्रिशटन पद को आदि उचारो । जा कहि पद पाछे दै डारो । शत्रु शबद को बहुर भणिज्जै । नाम तुफंग चीन चित लिज्जै ॥ ७७९ ॥ धरनि शबद को आदि उचारो । जाचर

लो ॥ ७७२ ॥ पृथ्वीजाअरि पद पहले कहकर उसके बाद नायक एवं शत्रु शब्द को कहो और तुपक के सभी नामों को पहचान लो ॥ ७७३ ॥ ॥ अड़िल ॥ भूसुतरिपु शब्द कहकर उसमें नाथ शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ७७४ ॥ ॥ चौपाई ॥ उद्भिद शब्द का उच्चारण कर उसके बाद रिपुनायक पद लगाओ, पुनः शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के नामों को पहचान लो ॥ ७७५ ॥ वसुन्धरा जा शत्रु पद का उच्चारण करो, उसके बाद नायक तथा पुनः शत्रु पद का उच्चारण करो, इस प्रकार बन्दूक़ के नामों को चित्त में जान लो ॥ ७७६ ॥ पुरनी शब्द कहकर जा रिपु तथा शत्रु शब्द को लगाओ और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ ७७७ ॥ द्विपनी पद पहले कहकर पश्चात् चर एवं शत्रु पद का उच्चारण करो और तुपक से समस्त नामों को जान लो ॥ ७७८ ॥ सृष्टनी पद को पहले कहकर जा एवं शत्रु शब्द को लगाइए और इस प्रकार तुपक के नामों को मन में पहचान लीजिए ॥ ७७९ ॥ धरणी शब्द को पहले

पद पाछे तिहि डारो । शत्रु शबद को बहुर बखानहु । सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ।। ७८० ।। धरा शबद को आदि बखानो । जाचर पद पाछे तिह ठानो । शत्रु शबद को बहुर उचारो । नाम तुफंग सकल चित धारो ।। ७८१ ।। ।। दोहरा ।। भूमिज आदि उचारकै चर पद बहुर उचार । रिपु कहि नाइक तुफंग के लीजहु सुकबि सुधार ।। ७८२ ।। ।। चौपई ।। द्रुमनी आदि उचारन कीजै । जाचर कहि नाइक पद दीजै । शत्रु शबद को बहुर बखानो । नाम तुपक के सभ पहिचानो ।। ७८३ ।। ब्रिछ निज आदि उचारन कीजै । चरनादिक पाछे पद दीजै । शत्रु शबद को बहुर भणिज्जै । नाम तुफंग चीन चित लिज्जै ।। ७८४ ।। धरएसरणी आदि बखानो । ता पाछे जाचर पद ठानो । शत्रु शबद को बहुर बखानहु । सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ।। ७८५ ।। धराराटनी आदि उचारो । जानाइक चर शबद बिचारो । सभ स्त्री नाम तुपक के जानो । या मै कछू भेद नही मानो ।। ७८६ ।। ।। अड़िल्ल ।। बारधनी शबदादि उचारन कीजिऐ । जाचर नाइक शबद अंत लिह दीजिऐ । शत्रु शबद को ताके अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम चतुर

तथा क्रमशः जाचर तथा शत्रु शब्द का उच्चारण करो और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ७८० ।। धरा शब्द को पहले कहो फिर जाचर शब्द बाद में कहो, उसके बाद शत्रु शब्द कहकर तुपक का नाम चित्त में धारण करो ।। ७८१ ।। ।। दोहा ।। भूमिज पद का उच्चारण कर पुनः चर रिपु पद कहने से सेनानायक तुपक के नामों को सुधारकर जान लो ।। ७८२ ।। ।। चौपाई ।। द्रुमनी पद पहले कहकर जाचर नायक एवं शत्रु शब्द को लगाकर तुपक के सभी नामों को पहचान लो ।। ७८३ ।। वृक्षणीज पद पहले कहकर चरणादिक पद बाद में लगाकर पुनः शत्रु शब्द को कहने से तुपक के नामों को जान लो ।। ७८४ ।। धरऐश्वर्यणी पद पहले कहकर बाद में जाचर शत्रु शब्द को लगाने से श्रीतुपक के सभी नाम जान लो ।। ७८५ ।। धराराटनी पहले कहकर जाचर नायक शब्द कहो और श्रीतुपक के सभी नामों को जानते हुए इसमें कुछ भी भेद मत जानो ।। ७८६ ।। ।। अड़िल ।। वारिधनी शब्द पहले कहो, पश्चात् जाचर नायक शब्द लगाओ तथा पुनः शत्रु शब्द को लगाकर उच्चारण करो । इस प्रकार तुपक के समस्त

चित धारिऐ ॥ ७८७ ॥ सामुद्रन शबदादि उचारो जानकै । जाचर पद ताके पुन (मू०ग्रं०७६२) पाछे ठानकै । शत्रु शबद को ताके अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारिऐ ॥ ७८८ ॥ नीररास को आदि उचारन कीजिऐ । जाचर नाइक शबद अंत तिह दीजिऐ । शत्र शबद को ताके अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम साच पहिचानिऐ ॥७८९॥ ॥ चौपई ॥ नीरालयनी आदि उचारो । जाचर नाइक बहुर बिचारो । ताके अंत शत्र पद दीजै । नाम तुफंग चीन चित लीजै ॥७९०॥ ॥ अड़िल्ल ॥ नीरधनी शबदादि उचारो जानकै । जाचर नाइक पद को पाछे ठानकै । शत्र शबद को ताके अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारिऐ ॥ ७९१ ॥ ॥ दोहरा ॥ बारालयणी आदि कहि जाचर पत पद देहु । शत्रु शबद पुन भाखिऐ नाम तुपक लखि लेहु ॥ ७९२ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ जलरासननी आदि उचारन कीजिऐ । जाचर नाइक पद तिह पाछे दीजिऐ । शत्रु शबद को ताके अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम सुकबि बिचारिऐ ॥ ७९३ ॥ ॥ चौपई ॥ कंनिधनी शबदादि भणिज्जै । जाचर कहि नाइक पद दिज्जै । शत्रु शबद को

नाम चित्त में धारण कर लो ॥ ७८७ ॥ सामुद्रणी शब्द पहले कहो, पश्चात् जाचर पद तथा पुनः शत्रु शब्द का उच्चारण करने से तुपक के समस्त नामों का हे प्रवीण गण ! विचार कर लो ॥ ७८८ ॥ नीरराशि पद पहले कहकर जाचर नायक तथा अन्त में शत्रु शब्द को लगाओ और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ ७८९ ॥ ॥ चौपाई ॥ नीरालयनी पद पहले कहो, पुनः जाचर नायक तथा अन्त में शत्रु पद लगाओ और तुपक के नामों को चित्त में पहचान लो ॥ ७९० ॥ ॥ अड़िल ॥ नीरधनी शब्द पहले कर पश्चात् जाचर नायक पद लगाकर अन्त में शत्रु शब्द का उच्चारण करो और इस प्रकार हे प्रवीण गणो ! तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥७९१॥ ॥ दोहा ॥ वारालयणी पद पहले कहकर पश्चात् जाचरपति शत्रु शब्द कहो और तुपक के नामों को जान लो ॥ ७९२ ॥ ॥ अड़िल ॥ जलराशिननी पद पहले कहो तथा क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण करो और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को विचार लो ॥७९३॥ ॥ चौपाई ॥ कलिधनी शब्द पहले तथा बाद में जाचर नायक शत्रु पदों का उच्चारण करो तथा

अंत उचारो। नाम तुपक के सकल बिचारो।। ७६४ ।।
अंबजनी शबदादि बखानो। जाचर कहि नाइक पद ठानो।
शत्र शबद को बहुर भणिज्जै। नाम तुफंग चीन चित
लिज्जै ।। ७६५ ।। जलनी आदि बखानन कीजै। जाचर
पति पाछे पद दीजै। शत्रु शबद को अंत बखानो। नाम
तुपक के सकल पछानो ।।७६६।। पानिन आदि उचारन कीजै।
जाचर पति शबदांति भणीजै। शत्रु शबद को बहुर उचारो।
नाम तुपक के सकल बिचारो ।। ७६७ ।। अंबुजनी शबदादि
भणिज्जै। जाचर पति शबदांति कहिज्जै। शत्र शबद बहुरो
तुम ठानो। नाम तुपक के सभ पहिचानो।। ७६८ ।।
।। दोहरा ।। बारिन आदि उचारकै जाचर धर पद देहु। शत्र
उचारु तुफंग के नाम चतुर लखि लेहु ।। ७६९ ।।
।। अड़िल्ल ।। बारजनी शबदादि उचारो जान कै। जाचर
पति पद को तिह पाछे ठान कै। शत्रु शबद को ता के अंत
उचारकै। हो सकल तुपक के नाम सु लेहु
बिचारकै ।। ८०० ।। (मू०ग्रं०७६३) जलनिधनी शबदादि उचारन
कीजिऐ। जाचर कहि नाइक पद बहुरो दीजिऐ। शत्र
शबद को ताके अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम प्रबीन
बिचारिऐ ।। ८०१ ।। ।। चौपई ।। मेघजनी शबदादि उचारो।

तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ७६४ ।। अम्बुजननी शब्द पहले कहकर
जाचर नायक और शत्रु शब्द को लगाओ और इस प्रकार तुपक के नामों
को जान लो ।। ७६५ ।। जलनी पद पहले कहकर जाचर पति पद बाद में
लगाओ, अन्त में शत्रु शब्द को जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को पहचान
लो ।। ७६६ ।। पानीनी पद का उच्चारण करिये और क्रमशः जाचर पति
शत्रु शब्द का उच्चारण कीजिए और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को
जान लीजिए ।। ७६७ ।। अम्बुजनी शब्द पहले तथा क्रमशः जाचर पति शत्रु
शब्द को कहो और तुपक के नाम को पहचान लो ।।७६८।। ।। दोहा ।। वारिनी
पद पहले कहकर जाचर धर एवं शत्रु पद का उच्चारण कर तुपक के नामों
को चित्त में जान लो ।। ७६९ ।। ।। अड़िल ।। वारिजनी शब्द पहले तथा
क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द को कहकर तुपक के समस्त नामों को विचार
कर स्मरण कर लो ।। ८०० ।। जलनिधनी शब्द पहले कहकर जाचर
नायक तथा पुनः शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के समस्त नामों को

जाचर कहि नाइक पद डारो। शत्र शबद को बहुर भणिज्जै। नाम तुफंग जान जिअ लिज्जै ॥ ८०२ ॥ अंबुजनी शबदादि बखानो। जाचर कहि नाइक पद ठानो। शत्र शबद को बहुर उचारो। नाम तुपक के सकल बिचारो ॥ ८०३ ॥ हरनी आदि उचारन कीजै। जाचर कहि नाइक पद दीजै। शत्रु शबद को बहुर बखानो। नाम तुपक के सकल पछानो ॥ ८०४ ॥ बारदनी शबदादि बखानो। जाचरि कहि नाइक पद ठानो। शत्र शबद को बहुर उचारहु। नाम तुपक सभ हिए बिचारहु ॥८०५॥ नदनी आदि उचारन कीजै। जाचर कहि नाइक पद दीजै। शत्र शबद को बहुर बखानो। नाम तुपक के सभ जिअ जानो ॥ ८०६ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ नयनी शबद सु मुख ते आदि उचारिऐ। जाचर कहि नाइक पद पुन दै डारिऐ। शत्र शबद कहु ता के अंत बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम चतुर चित जानिऐ ॥८०७॥ सरतनि शबद सु मुख ते आदि बखानिऐ। जाचर कहि नाइक पद पाछे ठानिऐ। शत्र शबद को ताके अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारिऐ ॥ ८०८ ॥ नादनि मुख ते शबद उचारन कीजिऐ। जाचर कहि नाइक पद बहुरों दीजिऐ। शत्रु शबद को ता के

जान लो ॥ ८०१ ॥ ॥ चौपाई ॥ मेघजनी शब्द पहले तथा बाद में क्रमशः जाचर, नायक, शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के नामों को जान लो ॥ ८०२ ॥ अम्बुजनी शब्द पहले तथा क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण कर तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ८०३ ॥ हिरनी शब्द पहले तथा बाद में जाचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के नामों को पहचान लो ॥ ८०४ ॥ वारिदनी शब्द पहले और बाद में जाचर नायक शत्रु कहो तथा तुपक के सभी नामों को विचार लो ॥ ८०५ ॥ नदिनी पद पहले तथा बाद में जाचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ८०६ ॥ ॥ अड़िल ॥ नयनी शब्द को पहले कहकर पुनः जाचर, नायक पद लगाओ अन्त में शत्रु शब्द कहो और तुपक के समस्त नामों को चित्त में जान लो ॥ ८०७ ॥ सरितनी शब्द पहले तथा बाद में जाचर नायक शत्रु शब्द को लगाइए और तुपक के समस्त नामों को विचार लीजिए ॥ ८०८ ॥ नादिनी पद कहकर पुनः जाचर नायक शत्रु पद लगाइए

अंत बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम चतुर चित
जानिऐ ॥ ८०९ ॥ जलनी मुख ते आदि उचारन कीजिऐ।
जाचर कहि नाइक पद पाछे दीजिऐ। शत्र शबद को ता के
अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम सु मंत्र
बिचारिऐ ॥ ८१० ॥ आदि तरंगनि शबद उचारो जानकै।
जाचर कहि नाइक पद बहुरों ठानकै। शत्रु शबद को ताके
अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम सु मंत्र
बिचारिऐ ॥ ८११ ॥ आदिकरारिन शबद उचारो बक्त्र ते।
जाचर कहि नाइक पद उचरो चित्त ते। शत्र शबद को ताके
अंत बखानिऐ। (मू०ग्रं०७६४) हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध
बखानिऐ ॥ ८१२ ॥ फेरननी शबदादि उचारन कीजिऐ।
जाचर कहि नाइक पद बहुरो दीजिऐ। शत्र शबद को ताके
अंत बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम प्रबीन
पछानिऐ ॥ ८१३ ॥ ब्रिछकंदनिन आदि बखानो जान कै।
जाचर कहि नाइक पद बहुर प्रमान कै। शत्र शबद को ता के
अंत बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम चतुर
पहिचानिऐ ॥ ८१४ ॥ ॥ दोहरा ॥ जलरससननी आदि कहि
जाचर पद कहि अंत। शत्र शबद कहि तुपक के निकसहि
नाम अनंत ॥ ८१५ ॥ क्रितअरनी पद आदि कहि जाचर नाथ
उचार। शत्र उचरि करि तुपक के लीजो नाम

और हे चतुर गण ! तुपक के समस्त नामों को जानिए ॥ ८०९ ॥ जलनी पद पहले कहकर जाचर नायक शत्रु पदों को बाद में लगाइए और तुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ॥ ८१० ॥ तरंगणि शब्द पहले और पश्चात् जाचर नायक शत्रु पद का उच्चारण कीजिए और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ॥ ८११ ॥ सबसे पहले मुख से करारिन शब्द कहकर पुनः जाचर नायक शत्रु शब्दों का वर्णन करो और तुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ॥ ८१२ ॥ फेननी शब्द पहले कहकर पुनः जाचर नायक शत्रु पद लगाओ और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ ८१३ ॥ वृक्षकन्दनिनी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु पद का वर्णन करो और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ ८१४ ॥ ॥ दोहा ॥ जलराशिनिनी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर शत्रु पद कहने से तुपक के अनन्त नाम निकलते चले जाते हैं ॥ ८१५ ॥ कृतअरिणी पद पहले कहकर पुनः

सुधार ।। ८१६ ।। ।। चौपई ।। क्रारकुंदनी आदि बखानो । जाचर कहि नाइक पद ठानो । शत्रु शबद कहु बहुर भणिज्जै । नाम तुफंग चीन चित लिज्जै ।। ८१७ ।। क्रारआरनी आदि बखानो । जाचर कहि नाइक पद ठानो । शत्रु शबद कहु बहुर उचारो । नाम तुपक के सकल बिचारो ।। ८१८ ।। कलूनासनी आदि भणिज्जै । जाचर कहि नाइक पद दिज्जै । शत्रु शबद तिह अंत उचरिऐ । नाम तुपक के सकल बिचरिऐ ।। ८१९ ।। ।। अड़िल्ल ।। गंगनि पद को प्रिथम उचारन कीजिऐ । जाचर कहि नाइक पद बहुरों दीजिऐ । शत्र शबद को ता के अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम प्रबीन पछानिऐ ।।८२०।। ।। चौपई ।। जनुवनि पद को आदि उचारो । जाचर कहि नाइक पद डारो । शत्रु शबद कहु बहुर भणिज्जै । नाम तुफंग चीन चित लिज्जै ।। ८२१ ।। ।। अड़िल्ल ।। भागीरथनी पद को आदि बखानिऐ । जाचर कहि नाइक पद बहुरों ठानिऐ । शत्र सबद को ता के अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारिऐ ।।८२२।। ।। चौपई ।। जटनिन पद को आदि उचरिऐ । जाचर कहि नाइक पद धरिऐ । शत्र शबद को बहुर बखानो । नाम

जाचर, नाथ, शत्रु पद कहते हुए सुधारकर तुपक के नामों को जान लो ।। ८१६ ।। ।। चौपाई ।। करारकुन्दनी पद पहले कहो तथा जाचर नायक पद उसमें लगाओ, पुनः शत्रु शब्द कहकर तुपक के नामों को चित्त में जान लो ।। ८१७ ।। करारआरिणी पहले कहकर पुनः जाचर नायक तथा शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के समस्त नामों का विचार कर लो ।। ८१८ ।। कलिनाशिनी शब्द पहले पुनः जाचर नायक पद लगाओ तथा अन्त में शत्रु शब्द का उच्चारण कर तुपक के नामों को विचार लो ।। ८१९ ।। ।। अड़िल ।। गंगनी पद को पहले कहकर बाद में जाचर नायक एवं शत्रु शब्द को लगाओ तथा तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ।। ८२० ।। ।। चौपाई ।। जाह्नवी पद का पहले उच्चारण कर पुनः जाचर नायक तथा शत्रु पद कहो तथा इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को चित्त में पहचान लो ।। ८२१ ।। ।। अड़िल ।। भागीरथनी पद पहले कहकर जाचर नायक एवं शत्रु शब्द को अन्त में कहो तथा तुपक के समस्त नामों को विचारपूर्वक जान लो ।। ८२२ ।। ।। चौपाई ।। जटनिन पद को पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के समस्त नामों को जान

तुपक के सकल प्रमानो ॥८२३॥ नदीराटनिनि आदि बखानो। जाचर कहि पति शबद प्रमानो। शत्रु शबद कहु बहुर भनीजै। नाम तुफंग जान जिअ लीजै ॥ ८२४ ॥ भीखम जनिनन (मू०ग्रं०७६५) आदि बखानो। जाचर कहि पति शबद प्रमानो। नाम तुपक के सभही लहिऐ। या मै कछू भेद नही कहिऐ ॥ ८२५ ॥ नदी ईश्रनिन आदि उचरिऐ। जाचर कहि नाइक पद डरिऐ। शत्रु शबद को बहुर बखानो। नाम तुपक के सकल पछानो ॥ ८२६ ॥ नदीराजनिन आदि बखानो। जाचर कहि पति शबद प्रमानो। शत्रु शबद बहुरो मुख भाखु। नाम तुफंग चीन चित राखु ॥ ८२७ ॥ नद नाइकनिन आदि बखानो। जाचर कहि पति शबद प्रमानो। शत्रु शबद बहुरो तिह दीजै। नाम तुफंग चीन चित लीजै ॥ ८२८ ॥ सरतेस्रनिन आदि भणिज्जै। जाचर कहि नाइक पद दिज्जै। शत्रु शबद को बहुर बखानो। नाम तुपक के सकल पछानो ॥८२९॥ सरताबरनिन आदि उचरिऐ। जाचर कहि नाइक पद डरिऐ। शत्रु शबद को बहुर बखानो। नाम तुपक के सभ पहिचानो ॥ ८३० ॥ सरतेंद्रनिन आदि उचारो। जाचर कहि पति पद दै डारो। शत्रु शबद को बहुर बखानो। नाम तुपक के सभ जिअ जानो ॥ ८३१ ॥

लो ॥८२३॥ नदीराटनिन पद पहले कहकर क्रमशः जाचर पति एवं शत्रु शब्द को कहो तथा तुपक के नामों को जान लो ॥ ८२४ ॥ भीष्मजननी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर पति शब्दों को लगाओ और बिना किसी भेद-भाव के तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ८२५ ॥ नदीईश्वरणी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु पद को लगाओ और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ ८२६ ॥ नदीराजननी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर शत्रु शब्द कहो और तुफंग (तुपक) के नाम मन में पहचान लो ॥ ८२७ ॥ नदनायकनी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के नामों को मन में जान लो ॥ ८२८ ॥ सरितेश्वरणी शब्द पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द को कहो और तुपक के नामों को पहचान लो ॥ ८२९ ॥ सरितावरणी पद पहले कहकर जाचर नायक शत्रु पद को लगाओ और तुपक के सभी नामों को पहचान लो ॥ ८३० ॥ सरितेन्द्रणी पद पहले कहो तथा पुनः क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द को लगाओ

॥ दोहरा ॥ सरता त्रिपनिन बक्त्र ते प्रिथमै करो उचार ।
जाचर पति कहि शत्रु कहि नाम तुपक जिअ धार ॥ ८३२ ॥
॥ अड़िल्ल ॥ आदि तरंगनि राजनि शबद उचारिऐ । जाचर
कहि नाइक पद पुन दै डारिऐ । शत्रु शबद को ता के अंत
बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम प्रबीन पछानिऐ ॥८३३॥
नदी त्रिपननी मुख ते आदि बखानिऐ । जाचर कहि नाइक
पद बहुर प्रमानिऐ । शत्रु शबद को ता के अंत उचारिऐ ।
हो सकल तुपक के नाम चतुर चित धारिऐ ॥ ८३४ ॥
॥ चौपई ॥ आदि जमुननी शबद उचारो । जाचर कहि
नाइक पद डारो । शत्रु शबद को बहुर भणिज्जै । नाम
तुफंग चीन चित लिज्जै ॥८३५॥ कालिंद्रननी आदि उचरिऐ ।
जाचर कहि नाइक पद डरिऐ । शत्रु शबद को बहुर बखानो ।
सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥ ८३६ ॥ किशन बल्लभिन
आदि भणिज्जै । जाचर कहि नाइक पद दिज्जै । शत्रु
शबद को बहुर बखानिऐ । सभ स्री नाम तुपक के
जानिऐ ॥८३७॥ बसु (मू०ग्रं०७६६) देवज बल्लभननि भाखो ।
जाचर कहि नाइक पद राखो । सभ स्री नाम तुपक के जानो ।
या मै भेद एक नही मानो ॥ ८३८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ सकल

और तुपक के नामों को मन में जान लो ॥ ८३१ ॥ ॥ दोहा ॥ सरितानृपनी पद पहले मुँह से कहो तथा बाद में जाचर पति शत्रु कहकर तुपक के नाम चित्त में जान लो ॥ ८३२ ॥ ॥ अड़िल ॥ तरंगराजनी शब्द पहले कहकर जाचर नायक एवं शत्रु शब्द को अन्त में लगाने पर तुपक के समस्त नामों को हे प्रवीणगण ! पहचान लो ॥ ८३३ ॥ नदीनृपणी पद मुख से पहले कहकर पुनः जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण करो और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को चित्त में धारण करो ॥८३४॥ ॥ चौपाई ॥ यमुननी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के नामों को चित्त में पहचान लो ॥ ८३५ ॥ कालिन्दनी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥८३६॥ कृष्णबल्लभननी पद पहले कहकर जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ८३७ ॥ वसुदेवजवल्लभनी पद कहकर क्रमशः जाचर नायक पद रखो और निर्विवाद रूप से तुपक के सभी नामों को जानो ॥ ८३८ ॥ ॥ अड़िल ॥ वासुदेव के समस्त नामों

नाम बसुदिव के आदि उचारिऐ । जाबल्लभनी ता पाछै पद
डारिऐ । जाचर कहि रिप शबद बहुर तिह भाखिऐ ।
हो चीन तुपक के नाम चतुर चित राखिऐ ।। ८३९ ।।
।। चौपई ।। सिआम बल्लभा आदि बखानो । जाचर कहि
नाइक पद ठानो । शत्रु शबद को बहुर बखानहु । सभ स्त्री
नाम तुपक के जानहु ।। ८४० ।। मुसलीधर बल्लभा बखानहु ।
जाचर कहि पति शबद प्रमानहु । शत्र शबद को बहुर भणीजै ।
जाचर नाम तुपक के लीजै ।। ८४१ ।। बापुरधर बल्लभा
प्रमानो । जाचर कहि पति शबदहि ठानो । शत्रु शबद को
बहुर उचरिऐ । सभ जिअ नाम तुपक के धरिऐ ।। ८४२ ।।
बंसीधर धरनिन पद दिज्जै । जाचर कहि पति शबद
भणिज्जै । शत्रु शबद को बहुर बखानो । सभ स्त्री नाम
तुपक पहिचानो ।। ८४३ ।। बिसु इस बल्लभादि पद दीजै ।
जाचर कहि पति शबद भणीजै । शत्र शबद को बहुर बखानो ।
सभ स्त्री नाम तुपक के जानो ।। ८४४ ।। बिसु इसेस्रणी आदि
भणिज्जै । जाचर कहि पति पद पुनि दिज्जै । शत्र शबद
को बहुर बखानहु । सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ।। ८४५ ।।
जदुनाइक नाइका बखानो । जाचर कहि पति शबद प्रमानो ।
ता के अंत शत्र पद दीजै । नाम तुफंग चीन चित लीजे ।।८४६।।

को पहले कहकर जा वल्लभनी पद पीछे लगाओ पुनः जाचर और रिपु पद लगाओ और तुपक के नामों को चतुरता से पहचान लो ।। ८३९ ।। ।। चौपाई ।। श्यामवल्लभा पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द कहो और श्रीतुपक के सभी नामों को जान लो ।। ८४० ।। मुसलीधर-वल्लभा पद कहकर क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ८४१ ।। बापुरधरवल्लभा कहकर जाचर पति शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के सभी नामों को पहचान लो ।। ८४२ ।। पहले वंशीधर कहकर धरनी पद कहिए, फिर जाचर कहकर पति शब्द कहिए । उसके बाद शत्रु शब्द को कहकर तुपक के नाम को पहचानिए ।। ८४३ ।। विश्वईशवल्लभा पद पहले कहकर पुनः जाचर पति शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ८४४ ।। विश्वईशरणी शब्द पहले कहकर जाचर पति एवं शत्रु शब्द पुनः कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ८४५ ।। यदुनायकनायका कहकर जाचर पति और इसके अन्त में शत्र

॥ अड़िल्ल ॥ दुआरबती सबल्लभा आदि उचारिऐ । जाचर नाइक पद को पुनि दै डारिऐ । शत्रु शबद को ता के अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम प्रबीन पछानिऐ ॥८४७॥ जादोराइ बल्लभा आदि बखानिऐ । जाचर कहि नाइक पद बहुर प्रमानिऐ । शत्रु शबद को ता के अंत भणीजिऐ । हो सकल तुपक के नाम चतुर लखि लीजिऐ ॥८४८॥ दुआरकेंद्र बल्लभिन उचारन कीजिऐ । जाचर कहि नाइक पद पाछे दीजिऐ । शत्रु शबद को ता के अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम प्रबीन पछानिऐ ॥ ८४९ ॥ दुआरकेस बल्लभनि सु आदि बखानिऐ । जाचर कहि (मू०ग्रं०७६७) नाइक पद बहुर प्रमानिऐ । शत्रु शबद को ता के अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम चतुर चित धारिऐ ॥८५०॥ ॥ चौपई ॥ दुआरके-अनिनि आदि बखानो । जाचर कहि पत शबद प्रमानो । शत्रु शबद को बहुर उचरिऐ । सभ स्त्री नाम तुपक के धरिऐ ॥ ८५१ ॥ जदुनाथननी आदि भनीजै । जाचर कहि नाइक पद दीजै । शत्रु शबद को बहुर बखानो । सभ स्त्री नाम तुपक के जानो ॥८५२॥ दुआरवती सरनिन पद भाखो । जाचर कहि नाइक पद राखो । शत्रु शबद को बहुर बखानो । सभ स्त्री नाम तुपक के जानो ॥८५३॥ ॥ अड़िल्ल ॥ दुआरवती

पद लगाओ और तुपक के नामों को पहचानो ॥८४६॥ ॥ अड़िल ॥ द्वारवतीशवल्लभा पद पहले कहो पुनः जाचर नायक शत्रु शब्द लगाओ और हे प्रवीण गण ! तुपक के नामों को पहचान लो ॥ ८४७ ॥ यदुराजवल्लभा पद पहले कहकर जाचर नायक और अन्त में शत्रु शब्द कहो और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ८४८ ॥ द्वारकेन्द्रवल्लभनी पद पहले कहकर जाचर नायक शत्रु पद अन्त में लगाओ तथा तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ ८४९ ॥ द्वारकेशवल्लभनी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द लगाकर तुपक के समस्त नामों को चित्त में धारण कर लो ॥८५०॥ ॥ चौपाई ॥ द्वार के अनिनि पद पहले कह जाचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ८५१ ॥ यदुनाथिनी पद पहले कहकर जाचर नायक एवं शत्रु पद लगाने से तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ८५२ ॥ द्वारवतीश्वरनी पद कहकर जाचर नायक शत्रु शब्द कहो और श्रीतुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ८५३ ॥ ॥ अड़िल ॥ द्वारवती-

नाइकनिन आदि उचारिऐ। जाचर कहि कै पुनि नाइक
पद डारिऐ। शत्र शबद को ता के अंत बखानिऐ। हो
सकल तुपक के नाम प्रबीन पछानिऐ ॥ ८५४ ॥
॥ चौपई ॥ दुआरका धननि आदि बखानो। जाचर कहि पति
शबद प्रमानो। शत्र शबद को बहुर भणीजै। नाम तुफंग
चीन चित लीजै ॥ ८५५ ॥ दुआरकेंद्रनिन आदि उचरिऐ।
जाचर कहि पति शबद सु धरिऐ। शत्र शबद को अंत बखानो।
सभ स्त्री नाम तुपक के मानो ॥ ८५६ ॥ दुआरवतेस्त्रनि आदि
बखानहु। जाचर कहि पति शबद सु ठानहु। शत्र शबद को
बहुर उचरिऐ। सभ स्त्री नाम तुपक के धरिऐ ॥ ८५७ ॥
जदेसनि आदि उचारन कीजै। जाचर कहि नाइक पद दीजै।
शत्र शबद को बहुर बखानहु। सभ स्त्री नाम तुपक
पहिचानहु ॥ ८५८ ॥ दुआरवती नाइकनिन भाखहु। जाचर
कहि पति पद कह राखहु। शत्र शबद को बहुर बखानहु।
सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ॥ ८५९ ॥ जगतेशरनिन आदि
भणिज्जै। जाचर कहि नाइक पद दिज्जै। शत्र शबद को
बहुर बखानो। सभ स्त्री नाम तुपक के जानो ॥ ८६० ॥
॥ अड़िल्ल ॥ अनिकदुंदभजाबलभनि आदि बखानिऐ।
जाचर कहि नाइक पद बहुर प्रमानिऐ। शत्रु शबद को ता के

नायकनी पद पहले कहकर जाचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के समस्त नामों को प्रवीण बनकर पहचान लो ॥ ८५४ ॥ ॥ चौपाई ॥ द्वारिकाधननी पद पहले कहो। पुनः जाचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के नामों को जान लो ॥ ८५५ ॥ द्वारकेन्द्रनी पद पहले कहकर जाचर पति एवं शत्रु शब्द को लगाओ और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ८५६ ॥ द्वारवतेश्वरणी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द का उच्चारण करो और श्रातुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ८५७ ॥ यादवेशनी पद पहले कहो तथा पुनः जाचर नायक शत्रु शब्द लगाओ और श्रीतुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ ८५८ ॥ द्वारवतीनायकनी पद कहो और क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द लगाओ और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ८५९ ॥ जगतेश्वरणी पद पहले कहकर जाचर नायक शत्र पद को लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जानो ॥८६०॥ ॥ अड़िल ॥ आनकदुन्दुभीजावल्लभनी पद पहले कहकर जाचर नायक शत्र शब्द का उच्चारण

अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम सु मंत्र बिचारिऐ ॥ ८६१ ॥ हलीभ्रातनिन आदि बखाननि कीजिऐ। जाचर कहिकै पुनि नाइक पद दीजिऐ। (मू०ग्रं०७६८) शत्रु शबद को ता के अंत बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध प्रमानिऐ ॥८६२॥ ॥ चौपई ॥ बलिआनुजनिन आदि बखानो। जाचर कहि पति शबद प्रमानो। शत्र शबद कहु बहुर भणिज्जै। नाम तुफंग चीन चित लिज्जै ॥ ८६३ ॥ बलिभई अननी आदि बखानो। जाचर कहि पति शबद प्रमानो। शत्रु शबद को बहुरों कहियो। सभ स्त्री नाम तुपक के लहियो ॥ ८६४ ॥ रउहणे अभ्रातननी भाखो। जाचर कहि नाइक पद राखो। शत्रु शबद को बहुर भणिज्जै। सभ स्त्री नाम तुपक लहि लिज्जै ॥ ८६५ ॥ बलभद्रभ्रातनिन आदि उचारो। जाचर कहि नाइक पद डारो। शत्रु शबद को बहुर बखानो। सभ स्त्री नाम तुपक के जानो ॥ ८६६ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ प्रलंबघनु अनुजननी आदि बखानिऐ। जाचर कहि नाइक पद बहुर प्रमानिऐ। शत्र शबद कहु ता के अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध बिचारिऐ ॥८६७॥ कामपाल अनजननी आदि भनीजिऐ। जाचर कहिकै पुनि नाइक पद दीजिऐ। शत्र शबद कहु ता के अंत उचारिऐ।

करके तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ८६१ ॥ हलीभ्रातिननी पद पहले कहकर जाचर कहते हुए पुनः नायक शत्रु पद लगाओ और बुद्धिपूर्वक तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ८६२ ॥ ॥ चौपाई ॥ बलअनुजननी पद पहले कह क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के नामों को पहचान लो ॥ ८६३ ॥ बलभाईननी पद पहले कहकर जाचर पति शत्रु शब्द को लगाओ और तुपक के नामों को जान लो ॥ ८६४ ॥ रोहिणेयभ्रातिननी पद पहले कहकर जाचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के नामों को जान लो ॥ ८६५ ॥ बलभद्रभ्रातिननी पद पहले कहो, फिर जाचर नायक और शत्रु शब्द उसमें जोड़ो तथा इस प्रकार तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ८६६ ॥ ॥ अड़िल ॥ प्रलम्बघनअनुजननी पद पहले कहकर जाचर नायक शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ८६७ ॥ कामपालअनुजननी पद पहले कहिए और जाचर कहकर पुनः नायक पद लगाइए। शत्रु शब्द का अन्त में उच्चारण कीजिए और

हो सकल तुपक के नाम सु मंत्र बिचारिऐ ॥ ८६८ ॥ हल आयुध अनुजननी आदि बखानिऐ। जाचर कहि नाइक पद बहुर प्रमानिऐ। अरि पद ता के अंत सुकबि कहि दीजिऐ। हो सकल तुपक के नाम जान जिअ लीजिऐ ॥ ८६९ ॥ रिवतिरवन अनुजननी आदि बखानिऐं। जाचर कहि नाइक पद बहुर प्रमानिऐं। शत्र शबद को ता के अंत सु दीजिऐ। हो सकल तुपक के नाम जान जिअ लीजिऐ ॥ ८७० ॥ ॥ चौपई ॥ राम अनुजननी आदि उचारो। जाचर कहि पति पद दै डारो। शत्रु शबद को बहुर बखानो। सभ स्त्री नाम तुपक के जानो ॥८७१॥ बलदेव अनुजननी आदि उचारो। जाचर कहि नाइक पद डारो। शत्रु शबद को बहुर भणिज्जै। नाम तुपक के सभ लहि लिज्जै ॥ ८७२ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ प्रलंबारि अनुजननि आदि उचारिऐ। जाचर कहि नाइक पद पुन दै डारिऐ। शत्रु शबद को ता के अंत बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम चतुर पहिचानिऐ ॥ ८७३ ॥ (मू०ग्रं०७६९) त्रिणावरत अरनिन शबदादि बखानिऐ। जाचर कहि कै पुनि नाइक पद ठानिऐ। शत्र शबद को ता के अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम सु मंत्र बिचारिऐ ॥८७४॥ केस्यांतकनिन आदि उचारन कीजिऐ। जाचर कहि कै पुनि नाइक पद

इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ॥ ८६८ ॥ हलआयुधअनुजननी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक अरि शब्द लगाइए और तुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ॥ ८६९ ॥ रेवतीरमणअनुजननी पद पहले कहकर जाचर नायक शत्रु पद अन्त में लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ८७० ॥ ॥ चौपाई ॥ रामअनुजननी पद पहले कहो; पुनः जाचर पति शत्रु पद लगाओ और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ८७१ ॥ बलदेवअनुजननी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द को कहो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ८७२ ॥ ॥ अड़िल ॥ प्रलम्बारिअनुजननी पद पहले कहकर पुनः जाचर नायक शत्रु शब्द कहिए और तुपक के समस्त नामों को मन में जान लीजिए ॥ ८७३ ॥ तृणावर्तअरननी शब्द पहले कहो पुनः जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ८७४ ॥ केशीयान्तकनिन पद पहले कहो पुनः जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण करो और इस

दीजिऐ । शत्र शबद को ता के अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम सु मंत्र बिचारिऐ ।। ८७५ ।। बकीआंतकनिन आदि उचारन कीजिऐ । जाचर कहि कै पुनि नाइक पद दीजिऐ । शत्र शबद को ता के अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम सुबुद्ध बिचारिऐ ।। ८७६ ।। पतिनागनिन आदि उचारो जान कै । जाचर कहि कै पुनि नाइक पद ठान कै । शत्रु शबद को ता के अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम प्रबीन प्रमानिऐ ।। ८७७ ।। सकटासुर हननन शबदादि भणीजिऐ । जाचर कहि पाछे नाइक पद दीजिऐ । शत्र शबद को ता के अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम सुगिआन पछानिऐ ।।८७८।। ।। चौपई ।। मुरअरनिन शबदादि भणिज्जै । जाचर कहि नाइक पद दिज्जै । शत्र शबद को बहुर बखानहु । सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ।। ८७९ ।। नरकांतकनिन आदि बखानहु । जाचर कहि पति शबद प्रमानहु । शत्र शबद को बहुर भणिज्जै । सकल तुपक के नाम कहिज्जै ।। ८८० ।। आदि नरकहानिन पद भाखो । जाचर कहि नाइक पद राखो । शत्र सबद को बहुर बखानहु । सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ।।८८१।। शत्र घाइननि आदि भणिज्जै । जाचर कहि नाइक पद दिज्जै । शत्र शबद को बहुर बखानहु । सभ स्त्री

प्रकार तुपक के समस्त नामों को विचार लो ।। ८७५ ।। बकीयान्तकनिन पद पहले कहकर पुनः जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण कीजिए और तुपक के समस्त नामों को बुद्धिपूर्वक विचार लीजिए ।। ८७६ ।। पतिनागानिन (शेषनाग) कहकर जाचर नायक शत्रु पद को अन्त में लगाइए और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ।।८७७।। शकटासुरहननन शब्द पहले कहकर बाद में जाचर नायक शत्रु शब्द को जोड़िए और तुपक के समस्त नामों को पहचान लीजिए ।। ८७८ ।। ।। चौपाई ।। मुरअरिनिन पद पहले कहकर पुनः जाचर नायक शत्रु शब्द का वर्णन करो और तुपक के समस्त नामों को जानो ।। ८७९ ।। नरकान्तकनिन पद पहले कहो पुनः जाचर पति शत्रु शब्द कहो, इस प्रकार तुपक के समस्त कहे जाते हैं ।। ८८० ।। नरकहानिन पद पहले कहो पुनः जाचर नायक शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के नामों को जान लो ।। ८८१ ।। शत्रुघायनिन पद पहले कहो पुनः जाचर नायक पद लगाओ तथा पुनः शत्रु शब्द कहो और इस प्रकार तुपक के नामों

नाम तुपक पहिचानहु ॥ ८८२ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ मुर मरदनिन पद आदि उचारन कीजिऐ। जाचर कहिकै पुनि नाइक पद दीजिऐ। शत्रु शबद को ता के अंत भणीजिऐ। हो सकल तुपक के नाम चतुर लहि लीजिऐ ॥ ८८३ ॥ ॥ चौपई ॥ मधसूदनिन आदि भणिज्जै। जाचर कहि नाइक पद दिज्जै। शत्रु शबद को बहुर बखानो। सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥ ८८४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ मधुदुंदनी मुख ते आदि भणिज्जिऐ। जाचर कहिकै पुन शबदेंद्र कहि (मू०ग्रं०७७०) जीऐ। शत्र शबद को ता के अंत बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम प्रबीन प्रमानिऐ ॥ ८८५ ॥ मधुनासननी मुख ते आदि बखानिऐ। जाचर कहि कै पुन सबदेसुर प्रमानिऐ। शत्र शबद को ता के अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम चतुर चित धारिऐ ॥ ८८६ ॥ कालजमन अरनिन शबदादि बखानिऐ। जाचर कहिकै पुनि नाइक पद ठानिऐ। शत्रु शबद को ता के अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम सुमंत्र बिचारिऐ ॥ ८८७ ॥ नरक अरननि मुख ते आदि भणिज्जिऐ। जाचर कहि कै पुनि नाइक पद दिज्जिऐ। शत्र शबद को ता के अंति बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम सुबुद्ध पछानिऐ ॥८८८॥ कंस केसकरखनणी आदि बखानहीं।

को जान लो ॥ ८८२ ॥ ॥ अड़िल ॥ मुरमर्दनन पद पहले कहकर पुनः जाचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ८८३ ॥ ॥ चौपाई ॥ मधुसूदननिन पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द लगाओ और श्रीतुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ८८४ ॥ ॥ अड़िल ॥ मधुदुन्दनी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर शब्देन्द्र एवं शत्रु पद को लगाइए और तुपक के समस्त नामों को प्रमाणिक रूप से जान लीजिए ॥ ८८५ ॥ मधुनाशिननि कहकर क्रमशः जाचर, शब्देश्वर एवं शत्रु पद को लगाओ और इस प्रकार तुपक के नामों को चित्त में जान लो ॥ ८८६ ॥ कालियमुनअरिनिन शब्द पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण कीजिए और तुपक के समस्त नामों का विचार कर लीजिए ॥ ८८७ ॥ नरकअरिनिन पद कहकर पुनः जाचर नायक शत्रु शब्द को लगाओ और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ ८८८ ॥ कंसकेशकर्षणी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु पद जोड़ो और

जाचर कहि कै पुनि नाइक पद ठानहीं । शत्र शबद को ता
के अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम सुबुद्ध
बिचारिऐ ।। ८८९ ।। बासदिवैसननी आदि भणिज्जिऐ ।
जाचर कहि कै पुनि नाइक पद दिज्जिऐ । शत्र शबद को
ता के अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध
प्रमानिऐ ।। ८९० ।। अनक दुंदभेसनन आदि उचारिऐ ।
जाचर कहि कै पुनि नाइक पद डारिऐ । शत्रु शबद को
ता के अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम सु मंत्र
पछानिऐ ।।८९१।। रसन रकसनिन आदि शबद को भाखिऐ ।
जाचर कहि कै पुनि नाइक पद राखिऐ । शत्र शबद को ता
के अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम चतुर चित
धारिऐ ।। ८९२ ।। नाराइननी आदि उचारन कीजिऐ ।
जाचर कहि कै राज शबद पुनि दीजिऐ । शत्र शबद को ता
के अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध
प्रमानिऐ ।। ८९३ ।। बारालयननि मुखि ते आदि भणिज्जिऐ ।
जाचर कहि कै नाथ बहुर पद दिज्जिऐ । शत्रु शबद को
ता के अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध
प्रमानिऐ ।। ८९४ ।। नारालयनी आदि उचारन कीजिऐ ।
जाचर कहि पति शबद बहुर तिह दीजिऐ । शत्र शबद को
ता के अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम प्रबीन
प्रमानिऐ ।।८९५।। नारकेतनिन आदि (मू०ग्रं०७७१) उचारन

तुपक के नामों को बुद्धिपूर्वक विचार लो ।। ८८९ ।। वासुदेवेशननि पद पहले कहो पुनः जाचर नायक शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ८९० ।। अनिकदुन्दुभिषनन पद कहकर जाचर नायक शत्रु शब्द को अन्त में लगाओ और तुपक के समस्त नामों को मंत्र रूप में पहचान लो ।। ८९१ ।। रसनरसिकनिन पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द को कहो और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को चित्त में धारण करो ।। ८९२ ।। नारायणननि पद पहले कह क्रमशः जाचर राज शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।।८९३।। वारालयननि पद कहकर पुनः जाचर नाथ शत्रु शब्द कहिए और तुपक के समस्त नामों को प्रमाणिक रूप से जान लीजिए ।। ८९४ ।। नारालयनी पद पहले कहिए पुनः क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द लगाइए और तुपक के समस्त नामों को

कीजिऐ । जाचर कहि कै पुनि नाइक पद दीजिऐ । शत्रु शबद को ता के अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारिऐ ।। ८९६ ।। जलबासननी आदि उचारन कीजिऐ । जाचर कहि कै नाथ शबद पुनि दीजिऐ । शत्रु शबद कहु ता के अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम सु मंत्र बिचारिऐ ।।८९७।। ।। चौपई ।। जलकेतननी आदि बखानो । जाचर कहि पति शबद प्रमानो । शत्र शबद कहु बहुर भणिज्जै । सभ स्त्री नाम तुपक लखि लिज्जै ।।८९८।। ।। अड़िल्ल ।। जलबासननी आदि बखानन कीजिऐ । जाचर कहि कै नाथ शबद पुनि दीजिऐ । शत्र शबद कहु ता के अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम प्रबीन प्रमानिऐ ।। ८९९ ।। ।। चौपई ।। जलधामननी आदि बखानो । जाचर कहि पति शबद प्रमानो । शत्रु शबद कहु बहुर भणिज्जै । सभ स्त्री नाम तुपक लखि लिज्जै ।। ९०० ।। जलगिरहननी आदि बखानो । जाचर कहि पति शबद प्रमानो । शत्रु शबद कहु बहुर भणिज्जै । सभ स्त्री नाम तुपक लखि लिज्जै ।। ९०१ ।। जल बासननी आदि उचरिऐ । जाचर कहि नाइक पद धरिऐ । शत्र शबद कहु अंत बखानहु । सभ स्त्री नाम तुपक के मानहु ।। ९०२ ।। जल संकेतन आदि बखानहु । जाचर कहि

हे प्रवीण गण ! जान लीजिए ।। ८९५ ।। नारिकेतनिन पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द कहिए और तुपक के समस्त नामों को विचार लीजिए ।। ८९६ ।। जलवासननि पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नाथ शत्रु शब्द का उच्चारण कीजिए और तुपक के समस्त नामों को विचार कर जान लीजिए ।। ८९७ ।। ।। चौपाई ।। जलकेतननी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द कहिए और श्रीतुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ।। ८९८ ।। ।। अड़िल ।। जलवासननी पद पहले कहिए और क्रमशः जाचर नाथ शत्रु पद लगाइए तथा इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ।। ८९९ ।। ।। चौपाई ।। जलधामननी पद पहले कहो पुनः जाचर पति शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के नामों को जान लो ।। ९०० ।। जलग्रहणननी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ९०१ ।। जलवासननी पद कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्र शब्द कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ।।९०२।।

पति शबद प्रमानहु । शत्रु शबद कहु बहुर भणिज्जै । नाम तुपक के सभ लहि लिज्जै ॥ ९०३ ॥ बारधामनी आदि भणिज्जै । जाचर कहि शबदेश कहिज्जै । शत्रु शबद कहु बहुर बखानहु । सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ॥ ९०४ ॥ बारग्रहननी आदि भणिज्जै । जाचर कहि नाइक पद दिज्जै । शत्र शबद कहु बहुर बखानहु । सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ॥ ९०५ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ मेघजनिन शबदादि उचारन कीजिऐ । जाचर कहि करि नाथ शबद को दीजिऐ । शत्रु शबद कहु ता को अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम प्रबीन बिचारिऐ ॥ ९०६ ॥ ॥ चौपई ॥ सारसुती शबदादि उचारो । जाचर कहि नाइक पद डारो । शत्रु शबद कहु बहुर भणिज्जै । नाम तुपक के सभ लहि लिज्जै ॥ ९०७ ॥ गंग (मू०ग्रं०७७२) भेटनी आदि उचारो । जाचर कहि नाइक पद डारो । शत्रु शबद कहु बहुर भणिज्जै । नाम तुपक के सकल कहिज्जै ॥ ९०८ ॥ अरनबारनिन आदि बखानहु । जाचर कहि नाइक पद ठानहु । शत्रु शबद को बहुर उचारहु । नाम तुपक के सकल बिचारहु ॥ ९०९ ॥ अरुण बारनी आदि बखानो । जाचर कहि नाइक पद ठानो । शत्रु शबद कहु बहुर उचारो । सकल तुपक के नाम बिचारो ॥ ९१० ॥

जलसंकेतनी पद पहले कहकर जाचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ९०३ ॥ वारिधामनी पद पहले कहकर पुनः जाचर शब्देश शत्रु शब्द कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥९०४॥ वारिग्रहणनी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ९०५ ॥ ॥ अड़िल ॥ मेघजनिन शब्द पहले कहकर पुनः जाचर नाथ एवं शत्रु शब्द को जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को विचार लो ॥ ९०६ ॥ ॥ चौपाई ॥ सरस्वती शब्द पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ९०७ ॥ गंगभेटनी (यमुना) शब्द कहकर जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण करो और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को कह डालो ॥ ९०८ ॥ अरुणवारिनिन पद पहले कहकर जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ९०९ ॥ अरुणवारिणी पद पहले कहकर जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के नामों को जान लो ॥ ९१० ॥ ॥ अड़िल ॥ अरुणअम्बुनीन

।। अड़िल्ल ।। अरुण अंबनीन आदि उचारन कीजिऐ । जाचर कहि कै नाथ शबद को दीजिऐ । शत्रु शबद कहु ता के अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध प्रमानिऐ ।।६११।। ।। चौपई ।। अरुण तुरंगनि आदि उचारो । जाचर कहि नाइक पद डारो । शत्रु शबद कहु बहुर भणिज्जै । सकल तुपक के नाम कहिज्जै ।। ६१२ ।। आरकता जलनिन पद भाखो । जाचर कहि नाइक पद राखो । शत्रु शबद कहु बहुर भणिज्जै । सभ स्त्री नाम तुपक लखि लिज्जै ।। ६१३ ।। अरुन अंबननि आदि बखानहु । जाचर कहि पति शबद प्रमानहु । शत्रु शबद कहु बहुर उचारो । नाम तुपक के सकल बिचारो ।। ६१४ ।। अरुन पाननी आदि भणिज्जै । जाचर कहि नाइक पद दिज्जै । अरि पद ता के अंत बखानो । नाम तुपक के सभ जिअ जानो ।। ६१५ ।। अरुन जलननी आदि बखानहु । जाचर कहि पति शबद प्रमानहु । शत्रु शबद को बहुर भणिज्जै । नाम तुपक के सभ लखि लिज्जै ।। ६१६ ।। अरुन नीरनिन आदि उचारो । जाचर कहि नाइक पद डारो । शत्र शबद कहु बहुर बखानहु । सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ।। ६१७ ।। सत्तद्रवननि प्रिथम प्रकाशो । जाचर कहि नाइक पद राखो । अरि पद ता के

पद पहले कहकर जाचर नाथ शत्रु शब्द को अन्त में लगाओ और तुपक के नामों को जान लो ।। ६११ ।। ।। चौपाई ।। अरुणतुरंगनी पद को पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु पद कहिए और तुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ।। ६१२ ।। आरक्तजलनी (ब्रह्मपुत्र) पद कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के नामों को जान लो ।। ६१३ ।। अरुणअम्बुननी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के नामों को जान लो ।। ६१४ ।। अरुणपानिनी पद पहले कहकर जाचर नायक अरि पद लगाओ और तुपक के समस्त नाम मन में जान लो ।। ६१५ ।। अरुणजलननि पद पहले कहकर जाचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।।६१६।। अरुणनीरनिन पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ६१७ ।। शतद्रवननी (सतलज) पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक अरि पद का उच्चारण करो और

अंत उचरिऐ। सकल तुपक के नाम बिचरिऐ ॥ ६१८ ॥
सतप्रवाहनिन आदि बखानहु। जाचर कहि नाइक पद ठानहु।
शत्रु शबद को बहुर उचारो। नाम तुपक के सकल
बिचारो ॥ ६१९ ॥ सहसानारनिन आदि बखानो। जाचर
कहि पित शबद प्रमानो। शत्र शबद को बहुर भणिज्जै।
नाम तुपक के सभ लहि (मू०ग्रं०७७३) लिज्जै ॥ ६२० ॥
॥ अड़िल्ल ॥ सचचद्रवननिनी आदि उचारन कीजिऐ। जाचर
कहि कै नाथ शबद कहु दीजिऐ। रिप पद को ता कै पुन अंत
बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध पछानिऐ ॥ ६२१ ॥
॥ चौपई ॥ सतप्रवाहिन प्रिथम बखानहु। जाचर कहि पति
शबद प्रमानहु। शत्रु शबद कहु बहुर भणिज्जै। नाम तुपक
के सभ लहि लिज्जै ॥ ६२२ ॥ सतगामनी प्रिथम भणिज्जै।
जाचर कहि नाइक पद दिज्जै। शत्र शबद कहु बहुर बखानहु।
सकल तुपक के नाम प्रमानहु ॥ ६२३ ॥ सततरंगननि आदि
उचारो। जाचर कहि नाइक पद डारो। अंत शबद ता के
अरि कहिऐ। नाम तुपक के सभ जिअ लहिऐ ॥ ६२४ ॥
भूम शबद को आदि बखानो। जाचर कहि पति शबद प्रमानो।
शत्र शबद को बहुर उचारहु। नाम तुपक के सकल
बिचारहु ॥ ६२५ ॥ आदि बिआसननी पद भाखो। जाचर

तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ६१८ ॥ सतप्रवाहिनिन पद पहले कहो पुनः क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द जोड़ो और तुपक के नामों को जान लो ॥ ६१९ ॥ सहस्रनारिनिन पद कहकर क्रमशः जाचर पित शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ६२० ॥ ॥ अड़िल ॥ सत्यद्रवननिनी पद पहले कहो, पुनः जाचरनाथ रिपु पद जोड़ो और बुद्धिपूर्वक तुपक के समस्त नाम पहचान लो ॥ ६२१ ॥ ॥ चौपाई ॥ शतप्रवाहिनी पद पहले कहकर जाचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ६२२ ॥ शतगामिनी पद पहले कहकर जाचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ६२३ ॥ शततरंगननी पद पहले कहकर जाचर नायक तथा अन्त में अरि शब्द जोड़कर तुपक के सभी नामों को मन में जान लो ॥ ६२४ ॥ भूमि पद पहले कहकर जाचर पति शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ६२५ ॥ व्यासननी पद पहले कहकर जाचर नायक शत्रु पद रखो

कहि नाइक पद राखो। शत्र सबद को बहुर बखानहु। सकल तुपक के नाम पछानहु ।। ९२६ ।। बिआहननी शबदादि भणिज्जै। जाचर कहि नाइक पद दिज्जै। सत्र शबद कहु बहुर उचारहु। सकल तुपक के नाम बिचारहु ।। ९२७ ।। पास सकतननि आदि उचरिऐ। जाचर कहि नाइक पद धरिऐ। रिप पद ता को अंत भणिज्जै। सकल तुपक के नाम कहिज्जै ।। ९२८ ।। पासनासनिन आदि बखनिऐ। जाचर कहि नाइक पद ठनिऐ। शत्र शबद को बहुर उचरिऐ। सकल तुपक के नाम बिचरिऐ ।। ९२९ ।। बरुणाइध नासनन बखानहु। जाचर कहि नाइक पद ठानहु। शत्रु शबद को बहुर भणिज्जै। सकल तुपक के नाम कहिज्जै ।। ९३० ।। जलसिन आयुध नाम कहीजै। जाचर कहि नाइक पद दीजै। शत्र शबद को बहुर बखानहु। सकल तुपक के नाम प्रमानहु ।। ९३१ ।। ।। अड़िल्ल ।। सकल पाँस लै नाम नासनिन भाखिऐ। जाचर कहिकै नाथ बहुर पद राखिऐ। शत्रु शबद कहु ता के अंत बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध पछानिऐ ।।९३२।। रावननी शबदादि बखानन कीजिऐ। जाचर कहि कै नाथ शबद पुनि (मू०ग्रं०७७४) दीजिऐ। शत्रु शबद को ता के अंत बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम सु बीर पछानिऐ ।। ९३३ ।। ।। चौपई ।। रावनीन शबदादि

और तुपक के नामों को जान लो ।। ९२६ ।। व्याहननी (व्यास) पद पहले कहकर जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ९२७ ।। पाशसक्तननि (विपाशा) पद का उच्चारण कर क्रमशः जाचर नायक रिपुपद का उच्चारण करो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ९२८ ।। पाशनाशननी पद पहले कहकर जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण कीजिए और तुपक के समस्त नामों का विचार कीजिए ।। ९२९ ।। वरुणायुधनाशनन पद कह क्रमशः जाचर नायक शत्रु कहो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ९३० ।। जलसिन आयुध पद कहकर जाचर नायक शत्रु पद जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ९३१ ।। ।। अड़िल ।। समस्त पाशों के नाम कहकर नाशनिन पद कहो पुनः जाचर नाथ शब्द जोड़ो ओर तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ।। ९३२ ।। वरुणनी शब्द पहले कहकर जाचर नाथ और अन्त में शत्रु शब्द लगाओ तथा इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ९३३ ।।

भणिज्जै । जाचर कहि पति शबद कहिज्जै । शत्र शबद कहु बहुर बखानहु । सकल तुपक के नाम पछानहु ।। ६३४ ।। चंद्रभागनन आदि बखानहु । जाचर कहि पति शबद प्रमानहु । शत्रु शबद कहु बहुर उचारहु । नाम तुपक के सकल बिचारहु ।। ६३५ ।। ससि भगननि शबदादि बखानो । जाचर कहि पति शबद प्रमानो । शत्रु शबद कहु बहुर भणिज्जै । नाम तुपक के सभ लहि लिज्जै ।। ६३६ ।। चंद्रनुजननि आदि बखानहु । जाचर कहि पति शबद सु ठानहु । शत्रु शबद कहु बहुरो धरिऐ । नाम तुपक के सकल बिचरिऐ ।। ६३७ ।। ।। अड़िल्ल ।। ससिअनि जननी आदि उचारन कीजिऐ । जाचर कहि कै नाथ शबद कों दीजिऐ । शत्र शबद कहु ता के अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध प्रमानिऐ ।। ६३८ ।। ।। चौपई ।। मयंकअनजननि आदि बखानहु । जाचर कहि पति शबद प्रमानहु । अरि पद अंत तवन के दिज्जै । नाम तुपक के सभ लहि लिज्जै ।।६३९।। ।। अड़िल्ल ।। मयंक सहोदरननि शबदादि बखानिऐं । जाचर कहि करि नाथ शबद कहु ठानिऐं । शत्र शबद कहु ता के अंत भणीजिऐ । हो सकल तुपक के नाम सु कबि लहि लीजिऐ ।। ६४० ।। ।। चौपई ।। अर अनजननि आदि कहिज्जै । जाचर कहि पति शबद भणिज्जै । शत्रु शबद

।। चौपाई ।। रावनीन शब्द पहले कहकर क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ।। ६३४ ।। चन्द्रभागननी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के समस्त नाम जान लो ।। ६३५ ।। शशिअगननि शब्द पहले कहो तथा क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द लगाओ तथा इस प्रकार तुपक के सभी नाम जान लो ।। ६३६ ।। चन्द्रअनुजनिन पद पहले कहकर क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द जोड़ो तथा तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ६३७ ।। ।। अड़िल ।। शशिअनिजननी पद पहले कहकर जाचर नाथ एवं अन्त में शत्रु शब्द लगाइए और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ।। ६३८ ।। ।। चौपाई ।। मयंकअनुजननी पद पहले कहकर जाचर पति अरि पद लगाओ और तुपक के नामों को जान लो ।। ६३९ ।। ।। अड़िल ।। मयंकसहोदरननि शब्द पहले कहकर जाचर नाथ शत्रु शब्द अन्त में लगाओ और इस प्रकार हे सुकवि ! तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ६४० ।। ।। चौपाई ।। अरअनुजननी पद पहले कह जाचर

कहु अंत उचारहु । सकल तुपक के नाम बिचारहु ।। ६४१ ।। निसिस अनजननि आदि बखानहु । जाचर कहि पति शबदि प्रमानहु । शत्र शबद को बहुर उचरिऐ । सकल तुपक के नाम बिचरिऐ ।। ६४२ ।। निसइसरननिन आदि कहिज्जै । जाचर कहि पति शबद भणिज्जै । शत्र शबद कहु बहुर बखानहु । सकल तुपक के नाम पछानहु ।। ६४३ ।। रैनाधपनी आदि बखानो । जाचर कहि नाइक पद ठानो । शत्रु शबद कहु बहुर भणिज्जै । नाम तुपक के सभ लखि लिज्जै ।। ६४४ ।। रैनराटनिन आदि उचरिऐ । जाचर कहि (मू०ग्रं०७७५) नाइक पद धरिऐ । शत्रु शबद कहु बहुर बखानहु । नाम तुपक के सभ जिअ जानहु ।। ६४५ ।। रैनराजनी आदि कहिज्जै । जाचर कहि पति शबद भणिज्जै । ता के अंत शत्र पद कहिऐ । नाम तुपक के सभ जिअ लहिऐ ।। ६४६ ।। निसनाइकननि आदि उचरिऐ । सूंन उचर चरपति पद डरिऐ । अरि पद ता के अंत बखानहु । सकल तुपक के नाम प्रमानहु ।। ६४७ ।। निसइसनी शबदादि बखानो । जाचर कहि नाइक पद ठानो । शत्रु शबद कहु बहुर उचारहु । सु कबि तुपक के नाम बिचारहु ।।६४८।। निसपतननि शबदादि उचरिऐ । सतचर

पति शत्रु शब्द का अन्त में उच्चारण कीजिए.और तुपक के समस्त नामों को विचार लीजिए ।। ६४१ ।। निशिशअनुजननी पद पहले कहकर जाचर पति शत्रु शब्द का उच्चारण कीजिए और तुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ।। ६४२ ।। निशिईश्वरननिन पद पहले कहकर क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द का वर्णन कीजिए और तुपक के समस्त नामों को पहचान लीजिए ।। ६४३ ।। रैनाधिपनी पद पहले कहकर जाचर नायक शत्रु शब्द पुनः लगाइए और तुपक के सभी नामों को जान लीजिए ।। ६४४ ।। रैनराटननि पद का उच्चारण कीजिए । पुनः जाचर नायक शत्रु शब्द लगाइए और तुपक के सभी नामों को जान लीजिए ।। ६४५ ।। रैनराजनी पद कहकर क्रमशः जाचर पति एवं शत्रु पद कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ६४६ ।। निशिनायकनी पद कहकर क्रमशः शून्य चर पति एवं अरि पद अन्त में कहो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ६४७ ।। निशिईशणी शब्द पहले कहकर उसमें जाचर नायक शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के नामों को विचार लो ।। ६४८ ।। निशिपतननि शब्द पहले कहकर सतचर

अर अंतहि पद धरिऐ । शत्रु शबद कहु अंत बखानहु । सु कबि तुपक के नाम पछानहु ।। ९४९ ।। इस धननी शबदादि कहिज्जै । जाचर कहि अर पदहि भणिज्जै । शत्र शबद कहु बहुर बखानहु । नाम तुपक के सभ जिअ जानहु ।। ९५० ।। रैननाइकनि आदि सु कहिऐ । जाचर कहि पति पद दै रहिऐ । ता के अंत शत्रु पद भाखहु । नाम तुपक के सभ लखि राखहु ।। ९५१ ।। निस चरनन प्रिथमै पद भाखहु । सतचर कहि नाइक पुनि राखहु । शत्र शबद कहु बहुर बखानहु । सकल तुपक के नाम पछानहु ।। ९५२ ।। आदि निशाचरनन कहु भाखो । सतचर कहि नाइक पद राखो । शत्र शबद कहु बहुर भणिज्जै । सकल तुपक के नाम कहिज्जै ।।९५३।। रैनरमन शबदादि भणिज्जै । सतचर कहि पति शबद कहिज्जै । शत्र शबद को अंत बखानहु । सकल तुपक के नाम प्रमानहु ।।९५४।। रैनराजनन प्रिथम उचारो । सतचर कहि पति पदहि सवारो । ता के अंत शत्रु पद कहिऐ । नाम तुपक के सभ ही लहिऐ ।।९५५।। निसारवननि आदि भणिज्जै । सतचर कहि पति शबद धरिज्जै । शत्र शबद ता पाछे कहिऐ । सभ स्त्री नाम तुपक के लहिऐ ।। ९५६ ।। दिनअर रवननि आदि उचारो । सतचर

अरि एवं शत्रु शब्द अन्त में लगाओ और तुपक के नामों को जान लो ।।९४९।। निशिधननी शब्द पहले कह जाचर अरि एवं शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के नामों को मन में जान लो ।। ९५० ।। रैननायकनी पद पहले कहकर क्रमशः जाचर पति शत्रु पद कहो और तुपक के नामों को जान लो ।। ९५१ ।। निशिचरनन पद पहले कहकर सतचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के नामों को पहचान लो ।। ९५२ ।। निशाचरनन पद कहकर सतचर नायक शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ९५३ ।। रैन रमण शब्द पहले कहकर क्रमशः सतचर पति शत्रु शब्द को लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ९५४ ।। रैनराजनन पद पहले कहकर सतचर पति और अन्त में शत्रु पद कहो और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ९५५ ।। निशारमणनिन पद पहले कहकर क्रमशः सतचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ९५६ ।। दिनअरिरमणन पद पहले कर सतचर पति एवं शत्र शब्द कहो तथा तुपक

कहि पति शबद बिचारो। ता के अंत शत्रु पद भाखो। नाम तुपक जू के लखि राखो ।। ९५७ ।। हरिज अरि रवननि आदि बखानो। सतचर कहि पति शबद प्रमानो। (मू०ग्रं०७७६) ता के अंत शत्रु पद कहो। सभ स्त्री नाम तुपक के लहो ।। ९५८ ।। तिम्यर सो रवननि पद कहिऐ। सतचर कहि नाइक पद गहिऐ। शत्रु शबद तिह अंत कहिज्जै। नाम तुपक के सभ लहि लिज्जै ।। ९५९ ।। हरजरि रवनन आदि बखानो। जाचर कहि नाइक पद ठानो। शत्र शबद कहु बहुर उचरिऐ। नाम तुपक के सु कबि बिचरिऐ ।।९६०।। रविजरि रवनन आदि बखानहु। जाचर कहि पति शबद प्रमानहु। शत्र शबद कहु बहुरो भाखहु। सभ स्त्री नाम तुपक लखि राखहु ।।९६१।। भानज अरि कहि रवन भनीजै। जाचर कहि नाइक पद दीजै। शत्रु शबद कहु बहुर बखानहु। सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ।। ९६२ ।। सूरजर रवन आदि पद कहिऐ। जाचर कहि नाइक पद गहिऐ। शत्रु शबद को बहुर उचारो। नाम तुपक के सभ जिअ धारो ।। ९६३ ।। भानजारि रवनन पद भाखो। सतचर कहि पति पद पुन राखो। शत्रु शबद कहु बहुर बखानहु। नाम तुपक के सकल प्रमानहु ।। ९६४ ।। ।। अड़िल्ल ।। दिन धुज अर रवनिन को

के नाम जान लो ।। ९५७ ।। हरिजअरिरमणनी पद पहले कह सतचर पति शब्द लगाओ। अन्त में शत्रु पद कहो और श्रीतुपक के सभी नामों को जान लो ।। ९५८ ।। तिमिररमणनी पद पहले कहकर सतचर नायक शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ९५९ ।। हरजरिरमणन पद पहले कहकर जाचर नायक एवं शत्रु पद का उच्चारण करो और तुपक के नामों को विचारपूर्वक जान लो ।। ९६० ।। रविजरिरमणन पद पहले कहकर जाचर पति शत्रु शब्द को क्रमशः रखकर श्रीतुपक के सभी नामों को जान लो ।। ९६१ ।। भानुजअरि पद कहकर रमण पद लगाओ पुनः जाचर नायक शत्रु शब्द जोड़ो और इस प्रकार श्रीतुपक के सभी नामों को जान लो ।। ९६२ ।। सूर्यअरिरमण पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के नामों को मन में जान लो ।। ९६३ ।। भानुजारिरमणन पद कहकर सतचर पति शत्रु शब्द को कहो और तुपक के समस्त नाम जान लो ।। ९६४ ।। ।। अड़िल ।। दिनध्वजअरिरमणन पद का

आदि उचारिऐ। जाचर कहि कै नाथ शबद दै डारिऐ। शत्रु शबद को ता कै अंत बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम प्रबीन प्रमानिऐ ॥ ९६५ ॥ दिन राजि अरि रवननी सु आदि बखानिऐं। जाचर कहि कै नाथ शबद पुनि ठानिऐं। शत्र शबद कहु ता के अंत उचारिऐं। हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध बिचारिऐं ॥ ९६६ ॥ ॥ चौपई ॥ दिनसि अर रवनन आदि उचारो। जाचर कहि नाइक पद डारो। शत्रु शबद कहु पुनि कहि लीजै। नाम तुपक को सकल पतीजै ॥९६७॥ तम अरि जरि रवननि पद भाखो। जाचर कहि नाइक पद राखो। शत्र शबद तिह अंत भणिज्जै। नाम तुपक के सकल पतिज्जै ॥ ९६८ ॥ चंद्र जोननी आदि बखानो। जाचर कहि नाइक पद ठानो। शत्र शबद कहु बहुर भणिज्जै। नाम तुपक के सकल पतिज्जै ॥ ९६९ ॥ सस उप सखनी आदि बखानहु। जाचर कहि पति शबद प्रमानहु। शत्रु शबद को बहुर बखानो। सभ स्री नाम तुपक के जानो ॥९७०॥ निस (मू०ग्रं०७७७) इस भगनी आदि बखानहु। जाचर कहि पति शबद प्रमानहु। शत्रु शबद को बहुर भणिज्जै। नाम तुपक के सकल पतिज्जै ॥ ९७१ ॥ ससि भगनी शबदादि बखानो। जाचर कहि पति शबद प्रमानो। शत्र शबद को

उच्चारण कर जाचर नाथ एवं शत्रु शब्द कह दो तथा तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ९६५ ॥ दिनराजअरिरमणननि पद को पहले कहकर जाचर नाथ शत्रु शब्द का उच्चारण कीजिए और तुपक के समस्त नामों का विचार कर लीजिए ॥ ९६६ ॥ ॥ चौपाई ॥ दिनसअरिरमणन पद पहले कहकर क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द कहकर तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ९६७ ॥ तमअरिजरिरमणन पद पहले कहकर जाचर नायक पद रखो पुनः शत्रु शब्द अन्त में जोड़ो और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ९६८ ॥ चन्द्रयोनिनी पद पहले कहकर जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण कीजिए तथा तुपक के नाम जान लीजिए ॥ ९६९ ॥ शशिउपबखनी पद पहले कर जाचर पति शत्रु शब्द कहो और श्रीतुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ९७० ॥ निशिईश भगिनी पद पहले कहकर जाचर पति शत्रु शब्द को लगाओ और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ ९७१ ॥ शशिभगिनी शब्द कहकर क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ९७२ ॥

बहुर उचारहु। नाम तुपक के सकल बिचारहु ।। ९७२ ।। निसिसभगा शबदादि भणिज्जै। जाचर कहि पति शबद कहिज्जै। शत्रु शबद कहु बहुर बखानहु। सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ।। ९७३ ।। रैनहाट कहि भगा बखानो। जाचर कहि पति शबद प्रमानो। शत्रु शबद को अंत भणिज्जै। नाम तुपक के सकल पतिज्जै ।। ९७४ ।। ।। अड़िल्ल ।। रैनरावनी कहि भग शबद बखानिऐं। जाचर कहि करि नाथ शबद को ठानिऐं। शत्र शबद को ता के अंत भनीजिऐ। हो सकल तुपक के नाम चहो तह दीजिऐ ।।९७५।। रैनराज कहि भगा बखानन कीजिऐ। जाचर कहि करि नाथ शबद को दीजिऐ। शत्र शबद को ता के अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध मन धारिऐ ।। ९७६ ।। ।। चौपई ।। रैन राव कहि भगा बखानो। जाचर कहि पति शबद प्रमानो। शत्र शबद तिह अंत भणिज्जै। नाम तुपक जह चहो कहिज्जै ।। ९७७ ।। दिनुअर कहि भग शबद बखानो। जाचर कहि नाइक पद ठानो। शत्र शबद तिह अंत सु कहिऐ। नाम तुपक उचरहु जह चहिऐ ।। ९७८ ।। तमचर कहि भग शबद बखानो। जाचर कहि नाइक पद ठानो। शत्रु शबद को बहुर भणिज्जै। नाम तुपक के सभ लहि लिज्जै ।। ९७९ ।। रैण राव कहि भगणि कहीजै।

निशिशभगा शब्द कहकर जाचर पति शत्रु शब्द कहो और श्रीतुपक के सभी नामों को जान लो ।। ९७३ ।। रैनराट कहकर भगा पद लगाओ। पुन: जाचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।।९७४।। ।। अड़िल ।। रैनरावनी कहकर भग शब्द का उच्चारण कीजिए, पुन: जाचर नाथ शत्रु शब्द को कहिए और तुपक शब्द के नामों का मनचाहा प्रयोग कीजिए ।। ९७५ ।। रैनराज पद पहले कहकर भगा शब्द कहिए पुन: जाचर नाथ शत्रु शब्द को लगाइए और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जानिए ।। ९७६ ।। ।। चौपाई ।। रैनराव कहकर क्रमश: भगा जाचर पति शत्रु शब्द कहिए और तुपक के नाम कह दीजिए ।। ९७७ ।। दिनुअरिभग शब्द कहकर क्रमश: जाचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के नामों का उच्चारण करो ।। ९७८ ।। तमचर कहकर भग शब्द कहो। पुन: क्रमश: जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के सभी नामों को जान

जाचर कहि नाइक पद दीजै । शत्रु शबद को बहुर उचारहु । सकल तुपक के नाम बिचारहु ॥ ९८० ॥ जउन करण कहि भगणि बखानो । जाचर कहि नाइक पद ठानो । शत्र शबद को बहुर भणीजै । नाम तुपक के सभ लहि लीजै ॥ ९८१ ॥ किरण धरण कहि भगण कहीजै । सतचर कहि पति शबद धरीजै । शत्र शबद कहु बहुर बखानहु । नाम तुपक के सभ अनमानहु ॥ ९८२ ॥ मयंक शबद कहि भगणि भणिज्जै । सतचर कहि पद नाथ धरिज्जै । शत्र शबद को बहुर उचरिऐ । नाम तुपक (मू०ग्रं०७७८) कै सकल सु धरिऐ ॥ ९८३ ॥ म्रिगबाहन कहि भगणि बखानो । सतच्चर कहि पति शबद प्रमानो । शत्र शबद तिह अंत उचारहु । सभ स्त्री नाम तुपक चित धारहु ॥ ९८४ ॥ हिरणराट कहि भगण उचारहु । सतचर कहि नाइक पद डारहु । शत्र शबद को बहुर भणिज्जै । नाम तुपक के सकल लहिज्जै ॥९८५॥ स्त्रिगबाहणी भगा भणिज्जै । जाचर कहि पति शबद धरिज्जै । शत्रु शबद को बहुर बखानहु । सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ॥ ९८६ ॥ म्रिगपतिणी कहि

लो ॥९७९ ॥ रैनराव कहकर भगिनी पद कहिए और क्रमशः उसमें जा चरी नायक शत्रु शब्द जोड़िए और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों का विचार कीजिए ॥ ९८० ॥ जौनकरण (चाँदनी करनेवाला चन्द्र) कहकर भगन पद कहो पुनः क्रमशः जाचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के नामों को जान लो ॥ ९८१ ॥ किरणधरण पद कहकर भगिनी पद कहिए, पुनः सतचर पति शत्रु शब्द का उच्चारण कीजिए और तुपक के सभी नामों का अनुमान लगा लीजिए ॥ ९८२ ॥ मयंक शब्द कहकर भगिनी पद कहो, पुनः क्रमशः सतचर नाथ शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के समस्त नामों को सुधार कर जान लो ॥ ९८३ ॥ मृगवाहन पद कहकर भगिनी पद कहो, पुनः सतचर पति शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के समस्त नामों को चित्त में धारण कर लो ॥ ९८४ ॥ हिरणराट कहकर भगिनी पद का उच्चारण करो, पुनः सतचर नायक शत्रु शब्द कह डालो तथा इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ९८५ ॥ श्रृंगवाहनीभगा कहकर जाचर पति शत्रु शब्द को कहो और श्रीतुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ९८६ ॥ मृगपतिनी कहकर भगिनी पद कहिए, पुनः जाचर पति शत्रु शब्द का उच्चारण

भगण भणिज्जै । जाचर कहि पति शबद धरिज्जै । शत्रु
शबद को बहुर बखानहु । सकल तुपक के नाम
प्रमानहु ।।९८७।। प्रजापति कहि भगण भणिज्जै । सतचर
कहि पति शबद धरिज्जै । शत्रु शबद कों बहुर बखानहु ।
सकल तुपक के नाम प्रमानहु ।। ९८८ ।। ।। छंद ।। म्रिगनाथ
भगणिणि भाखु । रिपनाथ चरपति राखु । रिप शबद बहुर
बखान । सभ नाम तुपक प्रमान ।।९८९।। ।। चौपई ।। नदी
राट सुत भगण भणिज्जै । जाचर कहि पति शबद धरिज्जै ।
शत्रु शबद तिह अंत बखानहु । सभ स्री नाम तुपक
अनमानहु ।।९९०।। सामुंद्रज कहि भगणि भणिज्जै । जाचर
कहि पति शबद धरिज्जै । शत्रु शबद तिह अंत उचारो ।
नाम तुपक के सभ जिअ धारो ।।९९१।। नदी राट सुत भगणि
उचारो । जाचर कहि पति पद दै डारो । शत्रु शबद कहु
बहुर बखानहु । सकल तुपक के नाम अनमानहु ।। ९९२ ।।
समुद्रज भगणन आदि भणिज्जै । जाचर कहि पति शबद
धरिज्जै । शत्रु शबद तिह अंत बखानहु । सभ स्री नाम
तुपक के जानहु ।। ९९३ ।। म्रिगजा भगणिन आदि उचारो ।
जाचर कहि पत पद दै डारो । रिप पद ता के अंत बखानहु ।
सकल तुपक के नाम अनमानहु ।। ९९४ ।। नदिसज भगणि

कीजिए और तुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ।। ९८७ ।। प्रजापति कहकर भगिनी कहिए पुनः सतचर पति शत्रु शब्द का बखान कीजिए और तुपक के सभी नामों को जान लीजिए ।। ९८८ ।। ।। छन्द ।। भृगनाथ भगिनिनी कहकर रिपु नाथ चर पति एवं रिपु शब्द का उच्चारण करो और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ९८९ ।। ।। चौपाई ।। नदीराटसुतभगिनी कहकर क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द कहो और श्रीतुपक के नामों को जान लो ।। ९९० ।। सामुद्रज कहकर भगिनी शब्द कहो पुनः क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द का उच्चारण करो और इस प्रकार तुपक के सभी नामों को चित्त में जान लो ।। ९९१ ।। नदीराटसुतभगिनी पदों का उच्चारण करो । जाचर पति शत्रु शब्द पुनः कहो और तुपक के समस्त नामों का अनुमान लगा लो ।। ९९२ ।। समुद्रजभगनिन पद कहकर क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ९९३ ।। मृगजाभगिनिन पद पहले कहकर क्रमशः जाचर पति रिपु पद कहो और

आदि पद दीजै । जाचर कहि पति शबद धरीजै । शत्रु शबद को बहुर बखानहु । सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ।। ९९५ ।। नदि नाइक कहि भगणिनि भाखो । सतचर कहि नाइक पद राखो । शत्र शबद तिह अंत बखानो । सभ स्त्री नाम तुपक के जानो ।। ९९६ ।। सरतिस (मू०ग्रं०७७९) भगणिनि आदि भणिज्जै । सतचर कहि पति शबद धरिज्जै । शत्र शबद तिहि अंत बखानहु । सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ।। ९९७ ।। सरत इंद्र भगणनी भणिज्जै । सतचर कहि पति शबद धरिज्जै । शत्र शबद को बहुर बखानहु । सभ स्त्री नाम तुपक पहिचानहु ।। ९९८ ।। ।। अड़िल्ल ।। निससिणि कहि भगनिन पद आदि बखानिएं । जाचर कहि नाइक पद बहुर प्रमानिएं । शत्र शबद कहु ता के अंत भनीजिऐ । हो सकल तुपक के नाम सु कबि लखि लीजिऐ ।। ९९९ ।। तमचर भगणनि मुख ते आदि बखानिएं । जाचर कहिकै पति पद बहुर प्रमानिएं । शत्र शबद को ता के अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध बिचारिऐ ।। १००० ।। तमहर भगणनि आदि बखानन कीजिऐ । सतचर कहिकै पति पद अंत भणीजिऐ । शत्र शबद कहु ता के अंत सबुद्ध कहु । हो सकल तुपक के नाम अनेक प्रबीन लहु ।।१००१।। तम अरि भगणाणिन पद प्रिथम

तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ९९४ ।। नदीशजभगिनी पद पहले कहकर जाचर पति शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ९९५ ।। नदीनायक कहकर भगिनिन पद कहो । पुनः क्रम से सतचर नायक शत्रु शब्द का वर्णन करो और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ९९६ ।। सरितईशभगिनिन पद पहले कहकर सतचर पति शत्रु शब्द लगाओ और श्रीतुपक के सभी नामों को जान लो ।। ९९७ ।। सरित इन्द्र भगिनिन पद कहकर क्रमशः सतचर पति शत्रु शब्द जोड़ो और तुपक के सभी नामों को पहचान लो ।। ९९८ ।। ।। अड़िल ।। निशिशनी कहकर भगनिन पद कहो पुनः जाचर नायक शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ९९९ ।। तमचरभगिनिन कहकर क्रमशः जाचर पति शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के समस्त नामों को विचार लो ।। १००० ।। तमहरभगनिन पद कहकर सतचर पति शब्द का उच्चारण करो, पुनः शत्रु को कहकर तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १००१ ।। तमअरिभगणाणिन पद पहले कहो पुनः सतचर पति शत्रु

कहीजिऐ। सतचर कहि पति शबद अंत तिहु दीजिऐ। शत्र शबद को ता के अंत बखानिऐं। हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध प्रमानिऐं ॥ १००२ ॥ ॥ चौपई ॥ तिमररि भगणनि आदि भणिज्जै। सतचर कहि पति शबद धरिज्जै। शत्रु शबद तिह अंत बखानो। सकल तुपक के नाम पछानो ॥१००३॥ तिमर नास कर भगणनि भाखो। सतचर कहि नाइक पद राखो। शत्र शबद को बहुर बखानहु। सकल तुपक के नाम प्रमानहु ॥१००४॥ तिमर रदन भगणनी बखानो। सतचर कहि नाइक पद ठानो। शत्र शबद कहु बहुर भणीजै। नाम तुपक के सभ लहि लीजै ॥ १००५ ॥ तिमर उचरहा भगण बखानहु। सतचर कहि पति शबद प्रमानहु। शत्रु शबद तिह अंत भणीजै। नाम तुपक के सभ लहि लीजै ॥ १००६ ॥ तिमर निकंदन आदि उचरिऐ। भगणिन सतचर पुनि पद धरिऐ। शत्र शबद तिह अंत बखानहु। सकल तुपक के नाम प्रमानहु ॥ १००७ ॥ तिमर मंद भगणिनी भणिज्जै। सतचर कहि पति शबद धरिज्जै। शत्र शबद तिह अंत बखानहु। सकल तुपक के नाम (मू०ग्रं०७८०) अनमानहु ॥ १००८ ॥ तिमरयांत कहि भगणनि भाखो। सतचर कहि नाइक पद राखो। शत्रु शबद तिह अंत बखानहु। नाम तुपक के सकल प्रमानहु ॥ १००९ ॥

शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १००२ ॥ ॥ चौपाई ॥ तिमिररिभगणनि पद पहले कहकर सतचर पति शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १००३ ॥ तिमिरनाशकर भगणनि कहकर सतचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १००४ ॥ तिमिररदनभगणनि पद कहकर सतचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के नाम जान लो ॥ १००५ ॥ तिमिर कहकर हा भगणी पद कहो और सतचर पति शत्रु शब्द लगाओ और इस प्रकार तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ १००६ ॥ तिमिरनिकन्दन पद कहकर भगणिन सतचर पद जोड़कर शत्रु शब्द कहो और तुपक के नामों को जान लो ॥ १००७ ॥ तिमिरमन्दभगणिनि कह सतचर पति शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ १००८ ॥ तिमिरयान्त पद कहकर भगणिन कहो एवं सतचर नायक शत्रु शब्द अन्त में लगाओ और इस प्रकार

।। अड़िल्ल ।। तिमर नास कहि भगणिन आदि बखानिऐं। सतचर कहि कर नाथ शबद कहु ठानिऐं। रिप पद को ता के पुन अंत उचारिऐं। हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध बिचारिऐं ।।१०१०।। उडगराज कहि भगणिन आदि बखानिऐं। सतचर कहिकै नाथ शबद कहु ठानिऐं। शत्र शबद कहु ता के अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम सु मंत्र बिचारिऐ ।। १०११ ।। ।। चौपई ।। उडगिस कहि भगणिनी भणिज्जै। सतचर कहि नाइक पद दिज्जै। अरि पद ता के अंत बखानहु। नाम तुपक के सभ जिअ जानहु ।।१०१२।। उडग नाथ कहि भगणि उचारो। सतचर कहि पति पद कहु डारो। रिप पद ता के अंत बखानहु। सभ स्त्री नाम तुपक जिअ जानहु ।। १०१३ ।। उडग त्रिपति कहि भगणि भणीजै। सतचर कहि नाइक पद दीजै। अर पद ता के अंत बखानहु। सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ।। १०१४ ।। उडग त्रिपति कहि भगणि भणिज्जै। सतचर कहि नाइक पद दिज्जै। शत्रु शबद तिह अंत बखानो। सभ स्त्री नाम तुपक के जानो ।। १०१५ ।। ।। अड़िल्ल ।। उडग एस भगणिन शबदादि बखानिऐ। सतचर कहि कर नाथ शबद को ठानिऐ। शत्र शबद को ता के अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम

तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १००९ ।। ।। अड़िल ।। तिमिरनाश-भगणिन पद कहकर क्रमशः सतचर नाथ रिपु पद का उच्चारण करो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १०१० ।। उड़गराज पद कहकर भगणिन पद पहले कहो पुनः सतचर नाथ शत्रु शब्द का उच्चारण करो और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १०११ ।। ।। चौपाई ।। उड़गेश भगणिनी पद कहकर क्रमशः सतचर नायक अरि पद लगाओ और तुपक के सभी नामों को चित्त में जान लो ।। १०१२ ।। उड़गनाथ कहकर भगिनी पद का उच्चारण करो पुनः क्रमशः सतचर पति रिपु पद को लगाओ और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। १०१३ ।। उड़गनृपति पद कहकर भगिनी पद कहो पुनः क्रमशः सतचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। १०१४ ।। उड़गनृपति शब्द कहकर भगणी पद कहो। पुनः सतचर नायक शत्रु कहो और तुपक के नाम जानो ।। १०१५ ।। ।। अड़िल ।। उड़गईश भगणिन शब्द कहकर सतचर नाथ शत्रु पद का उच्चारण करो और तुपक

सबुद्ध जिअ धारिऐ ॥१०१६॥ उडपति भगणिन आदि उचारन कीजिऐ। सतचर कहि कर नाथ शबद को दीजिऐ। शत्र शबद कहु ता के अंत बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम प्रबीन प्रमानिऐ ॥ १०१७ ॥ ॥ चौपई ॥ उडग भूपणी भूप बखानो। सतचर कहि नाइक पद ठानो। शत्र शबद कहु बहुर भणिज्जै। नाम तुपक के सभ लहि लिज्जै ॥ १०१८ ॥ तारापति कहि भगणिन भाखो। सतचर कहि नाइक पद राखो। शत्रु शबद कहु बहुर उचारहु। सभ स्त्री नाम तुपक जिअ धारहु ॥ १०१९ ॥ तारेशर कहि भगणि उचारो। सतचर (मू०ग्रं०७८१) कहि नाइक पद डारो। शत्रु शबद तिह अंत बखानहु। सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ॥ १०२० ॥ तारालयइस भगणि बखानो। सतचर कहि पति शबद प्रमानो। ता के अंत शत्रु पद कहिऐ। सभ स्त्री नाम तुपक के लहिऐ ॥१०२१॥ ॥ अड़िल्ल ॥ताराग्रिहणिस भगणी आदि बखानिऐ। सतचर कहि कर नाथ शबद को ठानिऐ। शत्रु शबद कहु ता के अंतहि दीजिऐ। हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध लहि लीजिऐ ॥ १०२२ ॥ उडगनि केतिस भगनी आदि भणीजिऐ। सतचर कहि करि नाथ बहुर पद दीजिऐ। शत्र शबद को ता के अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध बिचारिऐ ॥ १०२३ ॥ उडग नाथ भगणनी प्रिथम पद

के समस्त नामों को जान लो ॥ १०१६ ॥ उड़पतिभगणिन पद पहले कहकर क्रमशः सतचर नाथ शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १०१७ ॥ ॥ चौपाई ॥ उड़गभूपनीभूप पद कहकर क्रमशः सतचर नायक शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के नामों को जान लो ॥ १०१८ ॥ तारापतिभगणिन पद कहकर सतचर नायक शत्रु शब्द कहो तथा तुपक के नामों को जान लो ॥ १०१९ ॥ तारेश्वर कहकर भगिणी पद का उच्चारण करो पुनः क्रमशः सतचर नायक शत्रु शब्द लगाओ और श्रीतुपक के नामों को जान लो ॥ १०२० ॥ तारालयईशभगिनी कह क्रमशः सतचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ १०२१ ॥ ॥ अड़िल ॥ ताराग्रहणीशभगिनी पद कहकर सतचर नाथ शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को बुद्धिपूर्वक जान लो ॥ १०२२ ॥ उड़गनकेतीशभगिनी पद पहले कहिए पुनः सतचर नाथ शत्रु शब्द का उच्चारण कीजिए और तुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ॥ १०२३ ॥ उड़गनाथभगिनिन पद पहले

भाखिऐ। सतचर कहि करि नाथ बहुर पद राखिऐ। शत्रु शबद को ता के अंत बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध पहिचानिऐ ॥ १०२४ ॥ उडगएसर भगणनि शबदादि उचारिऐ। सतचर कहि करि नाथ शबद दै डारिऐ। शत्रु शबद कहु ता के अंत भणीजिऐ। हो सकल तुपक के नाम सुकबि लहि लीजिऐ ॥१०२५॥ उडगएसर भगणिन शबदादि भणीजिऐ। सतचर कहि कर नाथ शबद को दीजिऐ। शत्रु शबद कहु ता के अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध जिअ धारिऐ ॥१०२६॥ ॥ चौपई ॥ उडगास्त्रै भगणिनी बखानो। सतचर कहि नाइक पद ठानो। शत्र शबद कहि अंत उचरिऐ। सभ स्री नाम तुपक जिअ धरिऐ ॥ १०२७ ॥ रिखजभगणनी आदि भणिज्जै। सतचर कहि पति शबद धरिज्जै। शत्रु शबद तिह अंत बखानहु। सभ स्री नाम तुपक के जानहु ॥ १०२८ ॥ मनिज भगणनी आदि भणिज्जै। सतचर कहि पति शबद धरिज्जै। शत्रु शबद तिह अंत उचारहु। नाम तुपक के ह्रिदै बिचारहु ॥ १०२९ ॥ ब्रित उत्तमज भगणनी भाखो। सतचर कहि नाइक पद राखो। शत्र शबद तिह अंत सु कहिऐ। सकल तुपक के नाम न लहिऐ ॥१०३०॥ तपिस उचरि भगणनी भणिज्जै। सतचर

कहकर सतचर नाथ शत्रु शब्द को लगाओ और तुपक के नामों को बुद्धि-
पूर्वक पहचान लो ॥ १०२४ ॥ उड़गेश्वर भगिणिन शब्द का उच्चारण कर
सतचर नाथ शत्रु शब्द अन्त में लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान
लो ॥ १०२५ ॥ उड़गेश्वर भगिणिन पद पहले कहकर सतचर नाथ शत्रु पद
का उच्चारण करो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १०२६ ॥
॥ चौपाई ॥ उड़गाश्रयभगिनिन पद कहकर सतचर नायक शत्रु शब्द का
उच्चारण करो और श्रीतुपक के सभी नामों को जान लो ॥ १०२७ ॥ ऋषज-
भगिनी पद पहले कहकर सतचर पति शत्रु शब्द का उच्चारण करो और
तुपक के नामों को हृदय में विचार लो ॥ १०२८ ॥ पहले मनिज़भगिनी
कहकर सतचर और पति शब्द का उच्चारण कीजिए। फिर शत्रु शब्द
कहकर तुपक का नाम हृदय में विचार लीजिए ॥ १०२९ ॥ वृत्तिउत्तमजभगिनी
कहकर सतचर नायक शत्रु शब्द कहो और तुपक के समस्त नामों को जान
लो ॥ १०३० ॥ तपीशभगिनी पद पहले कहकर सतचर शत्रु पद कहो और

कहि पुन शबद धरिज्जै। ता के अंत शत्र पद ठानहु (मू०ग्रं०७८२) सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ॥ १०३१ ॥ कस्सिपसुत कहि भगणनि भाखिय। सतचर कहि नाइक पद राखिय। शत्र शबद तिह अंत उचरिऐ। नाम तुपक के सभ जिअ धरिऐ ॥ १०३२ ॥ जवन करण भगणिनी बखानहु। सतचर कहि पति शबद प्रमानहु। ता के अंत शत्रु पद दीजै। नाम तुपक के सभ लहि लीजै ॥ १०३३ ॥ क्रिशनन आदि बखानन कीजै। सतचर कहि पति शबद धरीजै। रिप पद ता के अंत बखानहु। नाम तुपक के सभ अनमानहु ॥ १०३४ ॥ सिआम मूरतनिन आदि भणिज्जै। सतचर कहि पति शबद धरिज्जै। शत्रु सबद तिह अंत बखानहु। सभ स्त्री नाम तुपक अनमानहु ॥ १०३५ ॥ प्रिथम तपतनी शबद उचरिऐ। सतचर कहि नाइक पद धरिऐ। शत्रु शबद तिह अंत बखानहु। सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ॥ १०३६ ॥ सूरज पुत्रा आदि भणिज्जै। सतचर कहि नाइक पद दिज्जै। शत्रु शबद तिह अंत उचारहु। सभ स्त्री नाम तुपक जिअ धारहु ॥ १०३७ ॥ सूरज आतमजा आदि भणीजै। सतचर कहि पति शबद धरीजै। शत्र शबद तिह अंत उचारो। नाम तुपक के सकल बिचारो ॥ १०३८ ॥ आदि माननी शबद

श्रीतुपक के नामों को जान लो ॥ १०३१ ॥ कश्यपसुतभगिनी कहकर सतचर नायक शत्रु शब्द अन्त में कहो और तुपक के समस्त नामों को चित्त में जान लो ॥ १०३२ ॥ जौनकरण (चाँदनी करनेवाला = चन्द्रमा) भगिनी पद कह सतचर पति शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ १०३३ ॥ कृष्णन पद पहले कहकर क्रमशः सतचर पति रिपु कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ १०३४ ॥ श्याममूर्तनिन पद पहले कहकर सतचर पति शत्रु शब्द लगाओ और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ १०३५ ॥ तपतनी पद पहले कहकर सतचर नायक शत्रु शब्द लगाओ और श्रीतुपक के नामों को जान लो ॥ १०३६ ॥ सूर्यपुत्री पद पहले कहकर सतचर नायक शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ १०३७ ॥ सूर्यआत्मजा पद पहले कहकर सतचर पति शत्रु शब्द का उच्चारण करो और तुपक के समस्त नामों को विचार लो ॥ १०३८ ॥ माननी शब्द का उच्चारण कर सतचर पति एवं अरि शब्द को कहो और

उचारो। सतचर कहि पति पद दै डारो। अरि पद ता के
अंत उचरिऐ। नाम तुपक के सकल बिचरिऐ॥ १०३९॥
अभिमाननी पदादि भणिज्जै। सतचर कहि पति शबद
धरिज्जै। अर पद ता के अंत बखानहु। सभ स्त्री नाम तुपक
के मानहु॥१०४०॥ प्रिथम समयणी शबद उचारो। सतचर
कहि नाइक पद डारो। शत्र शबद को बहुर कहिज्जै।
नाम तुपक के सभ लहि लिज्जै॥ १०४१॥ गरबणि आदि
उचारन कीजै। सतचर कहि नाइक पद दीजै। अरि पद
ता के अंत उचारहु। नाम तुपक के सकल बिचारहु॥१०४२॥
॥ अड़िल्ल॥ द्रपनन मुख ते सबद सु आदि उचारिऐ। सतचर
कहि कर नाथ शबद दै डारिऐ। शत्र शबद कहु ता के अंत
बखानिऐ। हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध पहिचानिऐ॥१०४३॥
॥ चौपई॥ अहंकारनी आदि उचारो। (मू०ग्रं०७८३) सतचर
कहि पति पद कहु डारो। शत्रु शबद को बहुर भणिज्जै।
नाम तुपक के सभ लहि लिज्जै॥ १०४४॥ पीअणीण आदि
उचारण कीजै। सतचर कहि पति शबद भणीजै। रिप पद
ता के अंत बखाणहु। सभ स्त्री नाम तुपक के जाणहु॥१०४५॥
॥ दोहरा॥ धिखणी आदि बखानकै रिप पद अंत उचार।
सभ स्त्री नाम तुफंग के, लीजहु सु कबि सुधार॥ १०४६॥
मेधणि आदि उचारकै रिप पद कहिऐ अंत। सभ स्त्री नाम

तुपक के सभी नामों को जान लो॥ १०३९॥ अभिमानिनी पद पहले कहकर सतचर अरि पद कहो और श्रीतुपक के सभी नामों को जान लो॥ १०४०॥ समयणी (अहंकारयुक्त) पद पहले कहकर सतचर नायक शत्रु शब्द को कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो॥ १०४१॥ गर्विणी पद पहले कहकर सतचर नायक अरि पद लगाओ और तुपक के समस्त नामों को विचार लो॥ १०४२॥ ॥ अड़िल॥ दर्पननी पद कहकर सतचर नाथ एवं अन्त में शत्रु शब्द का वर्णन करो और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो॥१०४३॥ ॥ चौपाई॥ अहंकारिणी पद पहले कहकर सतचर पति शत्रु शब्द कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो॥ १०४४॥ पीअनिन पद पहले कहकर पति रिपु पद का उच्चारण करो और श्रीतुपक के नामों को जान लो॥१०४५॥ ॥ दोहा॥ धिखणी पद पहले कहकर रिपु पद अन्त में लगाओ और तुपक के सभी नामों को सुधार कर जान लो॥ १०४६॥ मेधनी पद पहले कहकर

तुफंग के निकसत चलै अनंत ॥ १०४७ ॥ सेमुखनी शबदादि कहि अरि पद अंत बखान। सकल तुपक के नाम ए लहि लीजो बुधिवान ॥ १०४८ ॥ आदि मनीखन शबद कहि रिप पद बहुर उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सु कबि सुधार ॥ १०४९ ॥ बुधनी आदि बखानकै अंत शबद अरु देहु। नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ॥ १०५० ॥ ॥ चौपई ॥ भानी आदि बखानन कीजै। रिप पद ता के अंत भणीजै। सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु। या मै भेद कछू नही मानहु ॥ १०५१ ॥ ॥ दोहरा ॥ आदि अभानी शबद कहि रिप पद अंत बखान। नाम सकल स्त्री तुपक के लीजहु सु कबि पछान ॥१०५२॥ ॥ अड़िल्ल ॥ आदि सोभनी शबद उचारन कीजिऐ। शत्रु शबद को ता के अंत भणीजिऐ। सकल तुपक के नाम चतुर जिअ जानिऐ। हो या के भीतर भेद नैक नही मानिऐ ॥ १०५३ ॥ प्रभाधरनि मुख ते शबदादि बखानिऐ। शत्रु शबद को ता के अंत प्रमानिऐ। ता ते उतर तुपक को नाम भनीजिऐ। हो या के भीतर भेद जान नही लीजिऐ ॥ १०५४ ॥ सुखमनि पद को मुख ते आदि उचारिऐ। शत्र शबद को ता के अंतहि डारिऐ। सकल तुपक के नाम जान जिअ लीजिऐ। हो या के भीतर भेद

अन्त में रिपु पद कहने से तुपक के समस्त नाम बनते चले जाते हैं ॥ १०४७ ॥ सेमुखनी शब्द कहकर अन्त में अरि पद लगाओ और हे बुद्धिमान ! तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १०४८ ॥ मनीखन पद पहले कहकर रिपु पद का उच्चारण करो और तुपक के नामों को सुधार कर जान लो ॥ १०४९ ॥ बुधनी पद पहले कहकर अन्त में अरि शब्द लगाओ और हे चतुर गण ! तुपक के नामों को पहचान लो ॥ १०५० ॥ ॥ चौपाई ॥ भानी पद पहले कर रिपु पद अन्त में लगाओ और बिना किसी भेद के तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १०५१ ॥ ॥ दोहा ॥ अभानी शब्द पहले कहकर अन्त में रिपु पद लगाओ और श्रीतुपक के नामों को पहचान लो ॥ १०५२ ॥ ॥ अड़िल ॥ शोभनी पद कहकर शत्रु शब्द को अन्त में लगाओ और बिना तनिक विभेद के तुपक के नामों को जान लो ॥ १०५३ ॥ प्रभाधरनी पद मुख से कहकर शत्रु शब्द को अन्त में लगाओ और बिना किसी भेदभाव के तुपक के नामों को कह जाइए ॥ १०५४ ॥ सुखमनी पद कहो, पश्चात् शत्रु

नैक नही कीजिऐ ॥ १०५५ ॥ ॥ चौपई ॥ धरमन पद को आदि बखानहु । ता के अंत शत्र पद ठानहु । सरब तुपक के नाम लहीजै । या मै भेद नैक नही कीजै ॥ १०५६ ॥ आदि क्रांतनी शबद उचारो । ता के अंत शत्र पद डारो । सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु । या के बिखै भेद नही मानहु (मू०ग्रं०७८४) ॥ १०५७ ॥ छबिनी आदि उचारन कीजै । रिप पद अंत तवन के दीजै । नाम तुपक के सकल पछानहु । या के बिखै भेद नही मानहु ॥ १०५८ ॥ प्रिथम बाजनी शबद बखानहु । अरि पद अंत तवन के ठानहु । सभ स्त्री नाम तुपक के लहिऐ । चित मै रुचै तिसी ठाँ कहिऐ ॥ १०५९ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ आदि बाह्नी शबद बखानन कीजिऐ । ता के पाछे शत्रु शबद कहु दीजिऐ । सकल तुपक के नाम चतुर जिअ जानिऐ । हो चहिऐ जवनै ठवन सु तहाँ बखानिऐ ॥१०६०॥ आदि तुरंगनी मुख ते शबद बखानिऐ । अरि पद ता के अंत सु बहुर प्रमानिऐ । सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजिऐ । हो या के भीतर भेद नैक नही कीजिऐ ॥ १०६१ ॥ हयनी शबदहि मुख ते आदि उचारिऐ । ता के अंत अंतकर पद को डारिऐ । सकल तुपक के नाम सुघर जिअ जानियो । हो दियो जहाँ तुम चहु सु तही

शब्द को जोड़ो और बिना किसी भेद के तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १०५५ ॥ ॥ चौपाई ॥ धर्मन पद पहले कहकर अन्त में शत्रु पद जोड़ो और तनिक भी भेद के बिना तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १०५६ ॥ क्रान्तिनी शब्द पहले कहो और उसके अन्त में शत्रु पद लगाओ और बिना किसी भेदभाव के तुपक के नामों को जान लो ॥ १०५७ ॥ छविनी पद पहले कहकर अन्त में रिपु पद लगाओ और बिना किसी भेद के तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ १०५८ ॥ बाझिनी पद पहले कहकर अन्त में अरि पद लगाओ और तुपक के नाम लेकर उसका मनचाहा प्रयोग कीजिए ॥ १०५९ ॥ ॥ अड़िल ॥ वाहिनी पद पहले कहकर अन्त में शत्रु पद लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जानते हुए उनका मनचाहा प्रयोग कीजिए ॥ १०६० ॥ तुरंगनी पद पहले कहकर अरि पद अन्त में लगाओ और बिना किसी भेद के तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १०६१ ॥ हयनी शब्द मुख से कहकर पश्चात् अन्तकर पद को लगाओ और तुपक का नाम

बखानियो ॥१०६२॥ ॥ चौपई ॥ सैई धवनी शबदादि उचारो । अरि पद अंत तवन के डारो । सकल तुपक के नाम पछानहु । या मै भेद नैक नही मानहु ॥ १०६३ ॥ आदि अरिबनी शबद बखानहु । अरि पद अंत तवन के ठानहु । सकल तुपक के नाम पछानहु । या मै भेद नैक नही जानहु ॥ १०६४ ॥ आदि तुरंगनी शबद बखानहु । अरि पद ता के अंत प्रमानहु । सभ स्त्री नाम तुपक के लइऐ । जह चित रुचै तहीं ते कहिऐ ॥ १०६५ ॥ आदि घोरनी शबद भनीजै । अरि पद अंत तवन के दीजै । सभै तुपक के नाम बिचारो । जह चाहो तिन तिहीं उचारो ॥ १०६६ ॥ आदि हसतिनी शबद उचारो । रिप पद अंत तवन के डारो । सभै तुपक को नाम लहिज्जै । जह चाहो ते तही भणिज्जै ॥ १०६७ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ आदि दंतनी शबद उचारन कीजिऐ । शत्रु शबदु को अंत तवन के दीजिऐ । सकल तुपक के नाम सबुद्ध पछानिऐ । हो या के भीतर भेद नैक नही मानिऐ ॥ १०६८ ॥ ॥ चौपई ॥ आदि दुरदनी शबद बखानहु । ता के अंत शत्रु पद ठानहु । नाम तुपक के सकल लहिज्जै । या के बिखै भेद नही किज्जै ॥१०६९॥ (मू०ग्रं०७८५) दयपनी आदि उचारन कीजै । अरि पद अंत तवन के दीजै । सभ स्त्री नाम तुपक

जानते हुए उसका मनचाहा प्रयोग कीजिए ॥ १०६२ ॥ ॥ चौपाई ॥ सैन्ध्वनी पद पहले कहकर अन्त में अरि पद जोड़ो और बिना किसी भेद के तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ १०६३ ॥ अरबनी पद कहकर अरि पद अन्त में लगाओ और तुपक के समस्त नामों को बिना किसी भेद के जान लो ॥ १०६४ ॥ तुरंगनी शब्द पहले कहकर अरि पद लगाओ और तुपक के नाम मनचाहा प्रयोग करो ॥ १०६५ ॥ घोरनी शब्द कहकर अरि पद जोड़ो और तुपक नाम का मनचाहा प्रयोग करो ॥ १०६६ ॥ हस्तिनी शब्द का उच्चारण कर रिपु पद अन्त में लगाओ और तुपक के सभी नामों को मनचाहे ढंग से कहने के लिए जान लो ॥ १०६७ ॥ ॥ अड़िल ॥ दन्तिनी शब्द का उच्चारण कर शत्रु शब्द को अन्त में लगाओ और बिना किसी भेद के तुपक के सभी नामों को पहचान लो ॥ १०६८ ॥ ॥ चौपाई ॥ दुर्दनी शब्द पहले कह अन्त में शत्रु पद लगाओ और बिना किसी भेद के तुपक के नामों को कह डालो ॥ १०६९ ॥ दयपनी पद उच्चारण कर अन्त में अरि

के लहिऐ । जह चाहो तह ही ते कहिऐ ।। १०७० ।। आदि पदमनी शबद बखानहु । अरि पद अंत तवन के ठानहु । नाम तुपक के सकल लहीजै । या मै भेद न कबहू कीजै ।।१०७१।। ।। अड़िल्ल ।। प्रिथम बारणी मुख ते शबद बखानिऐ । शत्र शबद को अंत तवन के ठानिऐ । सकल तुपक के नाम सु कब लहि लीजिऐ । हो या के भीतर भेद नैक नही कीजिऐ ।।१०७२।। ।। चौपई ।। आदि बियालणी शबद बखानहु । अरि पद अंत तवन के ठानहु । सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु । या मै भेद नैक नही मानहु ।। १०७३ ।। इंभणी आदि उचारन कीजै । अरि पद अंत तवन के दीजै । सभ स्त्री नाम तुपक के होवै । जाको सकल सु कबि कुल जोवै ।। १०७४ ।। प्रिथम कुंभणी शबद बखानहु । अरि पद अंत तवन के जानहु । सकल तुपक के नाम लहीजै । नितप्रति मुख ते पाठ करीजै ।। १०७५ ।। ।। अड़िल्ल ।। कुंजरणी शबदादि उचारन कीजिऐ । अरि पद ता के अंत बहुर कहि दीजिऐ । सकल तुपक के नाम सबुद्ध जिअ जानिऐ । हो या के भीतर भेद नैक नही मानिऐ ।। १०७६ ।। करिनी शबदि सु मुख ते आदि बखानिऐ । शत्र शबद को अंत तवन के ठानिऐ । सकल तुपक के नाम सु कबि लहि लीजिऐ । हो दीयो चहो जिह

पद जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को मनचाहे ढंग से प्रयुक्त करने के लिए जान लो ।। १०७० ।। पद्मिनी शब्द पहले कहकर अन्त में अरि पद जोड़ो और बिना किसी भेद के तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १०७१ ।। ।। अड़िल ।। वारणी पद पहले कहकर शत्रु शब्द को अन्त में लगाओ और बिना किसी भेद के तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १०७२ ।। ।। चौपाई ।। व्यालणी शब्द कहकर अन्त में अरि पद लगाओ और बिना किसी भेद के तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १०७३ ।। इंभणी पद का उच्चारण करो, अन्त में अरि पद लगाओ तो; समस्त कवियों के जानने योग्य तुपक के नाम होते है ।। १०७४ ।। कुंभणी शब्द कहकर अरि पद अन्त में लगाओ, इस प्रकार नित्यप्रति पाठ करने के लिए तुपक के नाम जान लो ।। १०७५ ।। ।। अड़िल ।। कुंजरणी शब्द का उच्चारण कर अरि पद अन्त में लगाओ और बिना किसी भेद के तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १०७६ ।। करिनी शब्द कहकर अन्त में शत्रु शब्द को जोड़ो और

ठवर तहाँ ही दीजिऐ ।। १०७७ ।। मद्यधरननी मुख ते आदि भनीजिऐ । हंता ता के अंत शबद को दीजिऐ । सकल तुपक के नाम चतुर चित मै लहो । हो कह्यो चहो इन जहाँ तहाँ इन को कहो ।। १०७८ ।। सिंधरनी मुख ते शबदादि बखानिऐ । शत्रु शबद को अंत तवन कै ठानिऐ । सकल तुपक के नाम सु कबि जिअ जानिऐ । हो या के भीतर भेद नैक नही मानिऐ ।। १०७९ ।। अनकपनी पद मुख ते प्रिथम भणीजिऐ । शत्र शबद को अंत तवन के दीजिऐ । सकल तुपक के नाम चतुर जिअ जानिऐ । हो दयो चहो जिह ठवरै तही प्रमानिऐ ।। १०८० ।। प्रिथम नागनी मुख ते शबद उचारिऐ । शत्र शबद कहु अंत तवन के डारिऐ । (मू०ग्रं०७८६) सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजिऐ । हो या के भीतर भेद नैक नही कीजिऐ ।। १०८१ ।। हरनी शबद सु मुख ते आदि बखानिऐ । शत्रु शबद को ता के अंत प्रमानिऐ । सभ स्त्री नाम तुपक के चतुर पछानिअउ । हो जवनै ठवर सु चहिऐ तही बखानिअउ ।। १०८२ ।। गजनी शबद बकत्र ते आदि भणीजिऐ । शत्र शबद को अंत तवन के दीजिऐ । चतुर तुपक के नाम सकल लहि लीजिऐ । हो जिह चाहो तिह ठवर उचारन कीजिऐ ।। १०८३ ।। ।। चौपई ।। सावजनी शबदादि बखानहु । अर पद अंत तवन के ठानहु । सभ

मनचाहा प्रयोग करने के लिए तुपक के नामों को जान लीजिए ।। १०७७ ।। मद्यधरननी पद मुख से कहकर अन्त में हन्ता पद जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १०७८ ।। सिन्धुरनी पद पहले कहकर शत्रु शब्द को अन्त में लगाओ और तुपक के सभी नामों को बिना किसी भेद के जान लो ।। १०७९ ।। अनकपनी पद मुख से कहकर अन्त में शत्रु शब्द को लगाओ और तुपक के समस्त नामों को मनचाहे रूप से कहने के लिए जान लो ।। १०८० ।। पहले नागिनी पद कहकर अन्त में शत्रु शब्द को लगाओ और तुपक के समस्त नामों को बिना किसी भेद के जान लो ।। १०८१ ।। हरनी शब्द को कह कर शत्रु शब्द को उसमें जोड़कर मनचाहा प्रयोग करने के लिए तुपक का नाम जान लो ।। १०८२ ।। गजनी शब्द पहले कह अन्त में शत्रु शब्द जोड़ो और इस प्रकार मनचाहा प्रयोग करने के लिए तुपक के नाम जान लो ।। १०८३ ।। ।। चौपाई ।। सावजनी शब्द पहले कहकर अरि पद अन्त

स्त्री नाम तुपक के लहिऐ। जिह ठाँ चहे तहीं ते कहिऐ ।। १०८४ ।। मातंगनी पदारि भणिज्जै। अर पद अंत तवन के दिज्जै। सभ स्त्री नाम तुपक के होवै। जाचो सकल सु कबि मिल जोवै ।। १०८५ ।। आदि गइंदन शबद बखानहु। अरि पद अंत तवन के ठानहु। सभ स्त्री नाम तुपक के लहिऐ। जवनै ठउर रुचै तह कहिऐ ।। १०८६ ।। द्रुम अरि आदि उचारन कीजै। अरि पद अंत तवन के दीजै। नाम तुपक के सकल पछानो। या मैं भेद न कछु जिअ जानो ।। १०८७ ।। ।। चौपई ।। बिरछांतकणी आदि उचारो। अरि पद अंत तवन के डारो। सभि स्त्री नाम तुपक के लहिऐ। दयो चहे जह ठाँ तह कहिऐ ।। १०८८ ।। फलधर अरणी आदि कहीजै। अरि पद अंत तवन के दीजै। सभ स्त्री नाम तुपक के जानो। जहाँ चहो तिह ठवर बखानो ।। १०८९ ।। फलदाइक अरणी अहि उचरिऐ। अर पद अंत तवन के डरिऐ। सभ स्त्री नाम तुपक के जानो। या मै भेद न रंचक मानो ।।१०९०।। ।। अड़िल्ल ।। धराधरन अरनी शबदादि बखानिऐ। शत्र शबद को अंत तवन के ठानिऐ। सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजिऐ। हो जवन ठवर तिन चहो तही ते दीजिऐ ।। १०९१ ।। ।। चौपई ।। धूरराट अरनी पद भाखो। ता के अंत शत्र पद

में जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १०८४ ।। मातंगनी पद पहले कहकर अन्त में अरि पद लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १०८५ ।। गयन्दनी शब्द पहले कहकर अन्त में अरि पद जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १०८६ ।। द्रुमअरि पद पहले कहकर अरि पद अन्त में जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १०८७ ।। ।। चौपाई ।। वृक्षान्तकनी पद कहकर अरि पद को जोड़ो और श्रीतुपक के सभी नामों को जान लो ।। १०८८ ।। फलधरअरिणी-पद कहकर अन्त में अरि पद जोड़ो और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। १०८९ ।। फलदायक अरिणी पद पहले कहकर अरि पद अन्त में जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को बिना किसी भेद के जान लो ।। १०९० ।। ।। अड़िल ।। धराधरणअरिणी शब्द पहले कहकर अन्त में शत्रु शब्द को जोड़ो और तुपक के समस्त नामों का मनचाहा प्रयोग करने के लिए जान लो ।। १०९१ ।। ।। चौपाई ।। धूरराट-

राखो। सभ स्त्री नाम तुपक के जानो। जह चाहो तिह ठवर प्रमानो ।। १०९२ ।। फलध शबद को आदि उचारहु। अरि पद अंत तवन के डारहु। सभ स्त्री नाम तुपक (मू०ग्रं०७८७) के जानहु। जह चाहो तिह ठवर बखानहु ।। १०९३ ।। फलि शबद को आदि भणिज्जै। अरि पद कहि रिप पद पुनि दिज्जै। सभ स्त्री नाम तुपक के लहिऐ। चहिऐ जहाँ तही ते कहिऐ ।। १०९४ ।। तर अरणी शबदादि बखानो। अरि पद अंत तवन के ठानो। सकल तुपक के नाम पछानो। या मै भेद नैक नही मानहु ।। १०९५ ।। धरिसअरणी शबदादि भणिज्जै। अरि पद अंत तवन के दिज्जै। सकल तुपक के नाम पछानो। या के बिखै भेद नही जानो ।। १०९६ ।। बिरछरणी शबदादि भणिज्जै। अर पद अंत तवन के दीजै। नाम तुपक के सभ जिअ लहिऐ। जिह चाहो तिह ठवर सु कहिऐ ।। १०९७ ।। रदनी आदि उचारन कीजै। अरि पद अंत तवन के दीजै। सभ स्त्री नाम तुपक लहि लीजै। जिह चाहो तिह ठवर भनीजै ।। १०९८ ।। रदन छंदनी अरणी भाखो। अरि पद अंत तवन के राखो। सकल तुपक के नाम पछानो। या मै भेद नैक नही जानो ।। १०९९ ।। ।। अड़िल्ल ।। नाम सकल दंतन के आदि बखानिऐ। अरणी

अरिनी पद कहकर उसके अन्त में शत्रु पद जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १०९२ ।। फलध शब्द का उच्चारण कर अन्त में अरि पद जोड़ो और मनचाहा वर्णन करने के लिए तुपक के समस्त नामों को जान जो ।। १०९३ ।। फलि पद पहले कहकर अरि पद जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १०९४ ।। तरुअरिनी पद पहले कहकर अरि पद अन्त में जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को बिना किसी भेद के जान लो ।।१०९५।। धरिईश्वरणी शब्द पहले कहकर अरि पद अन्त में जोड़ो और बिना किसी कठिनाई के तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १०९६ ।। वृक्षरनी शब्द पहले कहकर अरि पद अन्त में जोड़ो और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जानते हुए उनका मनचाहा प्रयोग कीजिए ।। १०९७ ।। रदनी पद कहकर अन्त में अरि पद जोड़ो और तुपक के नामों को जान लो ।। १०९८ ।। रदन-छन्दनी अरिनी कहकर अन्त में अरि पद जोड़ो और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को बिना किसी भेदभाव के जान लो ।। १०९९ ।। ।। अड़िल ।। समस्त

अरि पद अंत तवन के ठानिऐ । सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजिऐ । हो दियो चहो जिह ठवर तहाँ ही दीजिऐ ।। ११०० ।। ।। चौपई ।। त्रिपणी आदि बखानन कीजै । अरि पद अंत तवन के दीजै । सकल तुपक के नाम पछानो । या मै भेद कछू नही जानो ।। ११०१ ।। आदि भूपनी शबद बखानहु । अरि पद अंत तवन के ठानहु । नाम तुपक के सभ लहि लीजै । जिह चाहो तिह ठवर भणीजै ।। ११०२ ।। ।। अड़िल्ल ।। प्रिथम सुआमनी शबद उचारण कीजिऐ । शत्र शबद को अंत तवन के दीजिऐ । सकल तुपक के नाम चतुर जिअ जानिऐ । हो या के भीतर भेद नैक नही मानिऐ ।। ११०३ ।। आदअधपनी शबद उचारन कीजिऐ । शत्र शबद को अंत तवन के दीजिऐ । सकल तुपक के नाम चतुर जिअ जानिऐ । हो या के भीतर भेद नैक नही मानिऐ ।।११०४।। धरदिड़नी मुख ते शबदादि बखानिऐ । अरणी ता के अंत शबद को ठानिऐ । सकल तुपक के नाम जान जिअ लीजिऐ । हो सुघर चहो (मू०ग्रं०७८८) जिह ठवर उचारन कीजिऐ ।। ११०५ ।। आदि अधपनी शबद सु मुख ते भाखिऐ । शत्रु शबद को अंत तवन के राखिऐ । सकल तुपक के नाम चतुर जिअ जानिऐ । हो जवन ठवर मै चहिऐ तही प्रमानिऐ ।।११०६।। पतणी आदि बखान शत्रुणी भाखिऐ ।

हाथियों के नाम कहकर अरिनी अरि पद जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ११०० ।। ।। चौपाई ।। नृपनी पद पहले कहकर अन्त में अरि पद लगाओ और विना किसी भेद के तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ११०१ ।। भूपनी शब्द पहले कहकर अन्त में अरि शब्द जोड़ो और तुपक के सभी नामों को कह लो ।। ११०२ ।। ।। अड़िल ।। स्वामिनी शब्द पहले कहकर अन्त में शत्रु शब्द लगाओ और बिना किसी भेद के तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ११०३ ।। अधिपतिनी पद कहकर अन्त में शत्रु शब्द को लगाओ और तुपक के समस्त नामों को विना किसी भेद के जान लो ।। ११०४ ।। धरदिड़नी शब्द कहकर अन्त में अरिनी शब्द जोड़ो और तुपक के समस्त नामों का मनचाहा प्रयोग करने के लिए जान लो ।। ११०५ ।। अधिपनी शब्द कहकर शत्रु शब्द को अन्त में रखो और तुपक के समस्त नामों को चित्त में जान लो ।। ११०६ ।। पतनी पद कहकर शत्रुणी पद कहिए और

होत तुपक के नाम ह्रिदै मै राखिऐ । इन के भीतर भेद न नैक पछानिऐ । हो जवन ठवर मै चहिऐ तही प्रमानिऐ ।।११०७।। ।। चौपई ।। भूपतणी शबदादि बखानो । अरणी शबद अंत इह ठानो । सभ स्री नाम तुपक के लहिऐ । जवनै ठवर रुचै तह कहिऐ ।। ११०८ ।। आदि भूपणी शबद बखानहु । अरि पद अंत तवन के ठानहु । नाम तुपक के सकल पछानो । जिह ठाँ रुचै सु तही प्रमानो ।। ११०९ ।। ।। अड़िल्ल ।। बधकरणी मुख ते शबदादि उचारिऐ । अरणी ता के अंत शबद को डारिऐ । सकल तुपक के नाम जान जिअ लीजिऐ । हो जवन ठवर रुच होइ तही ते दीजिऐ ।।१११०।। किंकरणी शबदादि उचारन कीजिऐ । अरणी ता के अंत शबद को दीजिऐ । सकल तुपक के नाम पछान प्रबीन चित । हो जिह चाहो इह नाम देहु भीतर कबित ।। ११११ ।। ।। चौपई ।। अनचरनी शबदादि उचरिऐ । अरि पद अंत तवन के डरिऐ । सभ स्री नाम तुपक के लहिऐ । उचरो तहाँ ठवर जिह चहिऐ ।। १११२ ।। ।। अड़िल्ल ।। आदि अतुगनी शबद उचारन कीजिऐ । हननी ता के अंत शबद को दीजिऐ । सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजिऐ । हो जह जह शबद चहीजै तह तह दीजिऐ ।। १११३ ।। किंकरणी मुख ते शबदादि उचारिऐ । मथणी ता के अंत शबद को डारिऐ ।

तुपक के नामों को चित में जान लो, इसमें कोई भेद नहीं हैं, इसे जहाँ चाहो प्रयुक्त करो ।। ११०७ ।। ।। चौपाई ।। भूपतनी शब्द कहकर अन्त में अरिनी शब्द जोड़ो और मनचाहा प्रयोग करने के लिए तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ११०८ ।। भूपनी शब्द कहकर अन्त में अरि पद जोड़ो और तुपक के नामों को पहचान लो ।। ११०९ ।। ।। अड़िल ।। वधकरणी शब्द मुख से कहकर अन्त में अरिनी शब्द जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १११० ।। किंकरणी शब्द पहले कहकर अन्त में अरिनी शब्द लगाइए और तुपक के समस्त नामों को पहचानते हुए जहाँ चाहो कविता में उसका प्रयोग करो ।। ११११ ।। ।। चौपाई ।। अनचरनी शब्द पहले कहकर अन्त में अरि पद जोड़ो और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। १११२ ।। ।। अड़िल ।। अनुगनी शब्द पहले कहकर अन्त में हननी शब्द लगाइए और तुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ।। १११३ ।। किंकरणी शब्द मुख से

सकल तुपक के नाम सुघर जिअ जानि लै। हो जवन ठवर मो चहो तही ए शबद दै ।। १११४ ।। ।। दोहरा ।। प्रतना आदि उचार कै अरि पद अंत उचार। सभ स्त्री नाम तुफंग के लीजै सुकबि सुधार ।। १११५ ।। धुजनी आदि बखान कै अरि पद भाखो अंत। सभ स्त्री नाम तुफंग के निकसत चलै अनंत ।।१११६।। आदि बाहनी शबद कहि अंत शत्र पद दीन। नाम तुपक (मू०ग्रं०७८६) के होत हैं लीजो समझ प्रबीन ।।१११७।। कामि आदि शबदोचरकै अरि पद अंत सु देहु। नाम तुपक के होत हैं चीन चतुर चित लेहु ।। १११८ ।। कामि आदि शबदोचरकै अरि पद अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ।। १११९ ।। आदि बिरिक्खन शबद कहि अंत शत्र पद दीन। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ प्रबीन ।। ११२० ।। सैना आदि बखानकै अरि पद अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ।। ११२१ ।। धननी आदि बखानकै अरनी अंत बखान। नाम तुपक के होत हैं लीजहु समझ सुजान ।। ११२२ ।। ।। अड़िल्ल ।। आदि धनखनी शबद उचारन कीजिऐ। शत्रु शबद को अंत तवन के दीजिऐ। सकल तुपक के नाम चतुर जिय जानिऐ। हो या के भीतर भेद न नैक प्रमानिऐ ।। ११२३ ।। कोवंडनी

कहो, अन्त में मथनी पद जोड़ो और मनचाहे प्रयोग के लिए तुपक के नामों को जान लो ।। १११४ ।। ।। दोहा ।। प्रतना पद पहले कहकर अन्त में अरि पद जोड़ो और तुपक के सभी नामों को सुधार कर जान लो ।। १११५ ।। धुजनी पद पहले कहकर अन्त में अरि पद कहने से श्रीतुपक के नाम निकलते चले जाते हैं ।। १११६ ।। वाहिनी शब्द कहकर अन्त में शत्रु पद लगाने से हे प्रवीण गण ! तुपक के नाम वनते हैं ।। १११७ ।। कामि पद पहले कहकर अरि पद जोड़ने से हे चतुर गण ! तुपक के नाम होते है ।। १११८ ।। कामि पद पहले कहकर अन्त में अरि पद कहने से हे सुजान ! तुपक के नाम होते हैं ।। १११९ ।। वृक्षनी शब्द पहले कहकर अन्त में शत्रु पद कहने से तुपक के नाम होते हैं ।। ११२० ।। सेना पद पहले कहकर अन्त में अरि पद कहने से तुपक के नाम बनते हैं ।। ११२१ ।। धननी पद पहले कहकर अन्त में अरिनी लगाने से हे सुजान ! तुपक के नाम होते हैं ।। ११२२ ।। ।। अड़िल ।। धनुषनी पद कहकर शत्रु शब्द लगाओ और बिना किसी भेद के तुपक के समस्त नामों

शबद को आदि उचारिऐ । अरणी ता के अंत शबद को डारिऐ । सकल तुपक के नाम जाण जिअ लीजिऐ । हो जहाँ शबद इह चहो तहीं ते दीजिऐ ।। ११२४ ।। ।। चौपई ।। दिखआकनी पदादि भनीजै । अरणी अंत शबद तिह दीजै । सकल तुपक के नाम लहिज्जहि । जह चाहो तिह ठवर भणिज्जहि ।।११२५।। कारमुकनी शबदादि उचरिऐ । अरणी शबद अंत तिह धरिऐ । सकल तुपक के नाम पछानो । जह चाहो तिह ठवर बखानो ।। ११२६ ।। रिप संतापन आदि बखानो । अरणी शबद अंत तिह ठानो । सकल तुपक के नाम लहीजै । या मै भेद नैक नही कीजै ।। ११२७ ।। रिपखंडणनी आदि भणिज्जै । अरणी शबद अंत तिह दिज्जै । सकल तुपक के नाम पछानो । जह तह मिल सुघरूच बखानो ।। ११२८ ।। दुशट दाहनी आदि भनीजै । अरणी शबद अंत तिह दीजै । नाम तुपक के तुम लखि पावहु । जह चाहो तिह ठवर बतावहु ।। ११२९ ।। रिप घाइणी पदादि बखानो । अरणी शबद अंत तिह ठानो । नाम तुपक के सकल लहीजै । जउन ठवर चहिऐ तह दीजै ।। ११३० ।। ।। अड़िल्ल ।। आदि चापणी शबद उचारन कीजिऐ । अरणी ता के (मू०ग्रं०७९०) अंत शबद को दीजिऐ । सकल तुपक के

को जान लो ।। ११२३ ।। कोवण्डनी शब्द कहकर अन्त में अरिनी शब्द लगाइए और तुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ।। ११२४ ।। ।। चौपाई ।। इक्षु (तीर) आसनी पद कहकर अन्त में अरिनी शब्द कहने से तुपक के समस्त नामों को जान लो और आवश्यकतानुसार प्रयुक्त कर लो ।। ११२५ ।। कारमुकनी शब्द पहले कहकर अन्त में अरिनी शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ।। ११२६ ।। रिपुसन्तापिनी पद पहले कहकर अरिनी शब्द अन्त में लगाओ और बिना किसी भेद के तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ११२७ ।। रिपुखण्डननी पद कहकर अन्त में अरिनी शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ।। ११२८ ।। दुष्टदाहनी पद पहले कहकर अरिनी शब्द अन्त में लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ११२९ ।। रिपुघायनी पद पहले कहकर अरिनी शब्द अन्त में लगाओ और तुपक के समस्त नामों को मनचाहा प्रयोग करने के लिए जान लो ।। ११३० ।। ।। अड़िल ।। चापनी शब्द पहले कहकर अन्त

नाम सुघर लहि लीजिऐ। हो जहाँ चाहिऐ शबद सु तह तह दीजिऐ ॥ ११३१ ॥ प्रतंचनी शबद को आदि बखानिऐ। अरणी ता के अंत शबद को ठानिऐ। सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ। हो कहो निशंक सभ ठउर न गनती कीजिऐ ॥ ११३२ ॥ ॥ छंद रुआमल ॥ शत्रुभंजणि आदि बखान। रिप शबदु बहुरि प्रमान। सभ नाम तुपक पछान। नहि भेद या महि जान ॥ ११३३ ॥ ॥ चौपई ॥ हरिसकतण पद आदि भणिज्जै। अरणी शबद अंत तिह दिज्जै। नाम तुपक के सकल लहीजै। जही ठवर चहिऐ तह दीजै ॥११३४॥ ॥ अड़िल्ल ॥ बिसिखबरसणी आदि उचारण कीजिऐ। अरणी ला के अंत शबद को दीजिऐ। सकल तुपक के नाम चतुर जिय जानिऐ। हो कबि कबित के भीतर सदा प्रमानिऐ ॥११३५॥ ॥ चौपई ॥ बानबरखणी आदि उचरिऐ। अरणी शबद अंत तिह धरिऐ। सकल तुपक के नाम लहीजै। जिह चाहो तिह ठवर भणीजै ॥११३६॥ ॥ अड़िल्ल ॥ आदि बाननी शबदुहि भूल बखानिऐ। अरणी ता के अंत शबद को ठानिऐ। नाम तुपक के सकल जान जिय लीजिऐ। हो जह चाहो तह शबद तही ते दीजिऐ ॥ ११३७ ॥ ॥ चौपई ॥ आदि पनचनी शबद बखानो। मथणी शब्रद अंत तिह ठानो। सभ स्री नाम तुपक के लहिऐ। रुचि जे जहीं

में अरिनी शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान ला ॥ ११३१ ॥ प्रत्यञ्चनी पद पहले लगाकर अन्त में अरिनी शब्द लगाइए और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ११३२ ॥ ॥ छन्द रूआमल ॥ शत्रुभंजनी पद पहले कहकर पुन: रिपु पद लगाओ और बिना किसी भेद के तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ११३३ ॥ ॥ चौपाई ॥ हरिशक्तिनी पद पहले कहकर अन्त में अरिनी शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को मनचाहा प्रयोग करने के लिए जान लो ॥ ११३४ ॥ ॥ अड़िल ॥ विशिखवर्षणी पद पहले कहकर अन्त में अरिनी शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को मन में जान लो ॥ ११३५ ॥ ॥ चौपाई ॥ वाणवर्षणी शब्द पहले कहकर अन्त में अरिनी शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ११३६ ॥ ॥ अड़िल ॥ बाणनी शब्द पहले कहकर अन्त में अरिनी शब्द जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को मन में जान लो ॥ ११३७ ॥ ॥ चौपाई ॥ पनचनी

तहीं ते कहिऐ ।। ११३८ ।। कोवंडजनी आदि उचरिऐ । मथणी अंत शबद तिह धरिऐ । सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु । जहा रुचै ते तही बखानहु ।।११३९।। इख आसजनी आदि भणीजै । मथणी अंत शबद तिह दीजै । सकल तुपक के नाम लहिज्जै । जवन ठवर चहिऐ तह दिज्जै ।। ११४० ।। ।। अड़िल्ल ।। कारमुकजनी पद को प्रिथम उचारिऐ । अरणी ता के अंत शबद को डारिऐ । सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजिऐ । हो कबित काबि मै कहो तहाँ ते दीजिऐ ।। ११४१ ।। रिपूतापणी शबदहि आदि उचारिऐ । अरणी ता के अंत सु पद को डारिऐ । (मू०ग्रं०७९१) सकल तुपक के नाम सबुद्ध पछानिऐ । हो जहा चहो तह देहु न शंका मानिऐ ।। ११४२ ।। आदिचापणी मुख ते शबद बखानिऐ । मथणी ता के अंत शबद को ठानिऐ । सकल तुपक के नाम सबुद्ध लहि लीजिऐ । हो जह चाहो तिह ठवर उचारन कीजिऐ ।। ११४३ ।। पनचधरननी आदि उचारन कीजिऐ । मथनी ता के अंत शबद को दीजिऐ । सकल तुपक के नाम सबुद्ध पछानिऐ । हो या के भीतर भेद नैक नही मानिऐ ।।११४४।। ।। चौपई ।। आदि सुह्रिदणी शबद बखानो । मथणी शबद अंत तिह ठानो । सभ स्त्री नाम तुपक के लहिऐ ।

शब्द कहकर अन्त में मथनी शब्द जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को रुचि-अनुसार कहने के लिए जान लो ।। ११३८ ।। कोवण्डजनी पद कहकर अन्त में मथनी शब्द कहो और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ११३९ ।। इक्षु-आसजनी पद पहले कहकर अन्त में मथनी शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को मनचाहा प्रयोग करने के लिए जान लो ।। ११४० ।। ।। अड़िल ।। कारमुकजनी पद पहले कहकर अन्त में अरिनी शब्द को जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ११४१ ।। रिपुतापिनी पद पहले कहकर अन्त में अरिनी पद को जोड़ो और हे बुद्धिमान गण ! नि:शंक प्रयोग करने के लिए तुपक के नामों को पहचान लो ।। ११४२ ।। चापनी पद मुख से कहो, अन्त में मथनी शब्द लगाओ और तुपक के नामों को जान लो ।।११४३।। पनचधरननी पद पहले कहकर अन्त में मथनी पद जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ।। ११४४ ।। ।। चौपाई ।। सुहृदयणी पद कहकर अन्त में मथनी पद जोड़ो और श्रीतुपक के समस्त नामों को रुचिपूर्वक प्रयुक्त करने

जिह ठाँ रुचै तहीं ते कहिऐ ॥११४५॥ ॥ अड़िल्ल ॥ बल्लभणी शबदादि बखानन कीजिऐ। अरणी ता के अंत शबद को दीजिऐ। सकल तुपक के नाम चतर चित जानिऐ। हो या के भीतर भेद न नैक प्रमानिऐ ॥११४६॥ ॥ चौपई ॥ साखाइनणी आदि उचरिऐ। धरणी शबद अंत तिह धरिऐ। नाम तुपक के सकल लहिज्जै। जिह चहिऐ तिह ठवर भणिज्जै ॥ ११४७ ॥ प्रीतमणी पद आदि बखानिऐ। मथनी अंत तवन के ठानिऐ। सकल तुपक के नाम पछानो। या मै नैक न मिथिआ जानो ॥ ११४८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ आदि सु जननी शबद उचारन कीजिऐ। मथणी ता के अंत शबद को दीजिऐ। सकल तुपक के नाम सबुद्ध जिय जानिऐ। हो या के भीतर भेद तनक नही मानिऐ ॥ ११४९ ॥ प्रिथम सुहिरदनी मुख ते शबद उचारिऐ। अरणी ता के अंत बहुर पद डारिऐ। सकल तुपक के नाम चतुर चित माझ लहु। हो कबित काब मै रुचै तहीं ते नाम कहु ॥ ११५० ॥ ॥ चौपई ॥ मानुखनी शबदादि भणीजै। अरणी अंत शबद तिह दीजै। सकल तुपक के नाम पछानहु। चहो जहाँ सभ ठवर बखानहु ॥ ११५१ ॥ आदि मरतणी शबद बखानो। अंतक शबद अंत तिह ठानो। नाम तुपक के सभ लहि लीजै।

के लिए जान लो ॥ ११४५ ॥ ॥ अड़िल ॥ वल्लभनी पद कहकर अरिनी शब्द अन्त में लगाओ और तुपक के समस्त नामों को चित्त में जान लो ॥ ११४६ ॥ ॥ चौपाई ॥ शाखाइनणी पद पहले कहकर धरणी शब्द अन्त में लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ११४७ ॥ प्रियतमनी पद पहले कहकर अन्त में मथनी पद जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो। इसमें तनिक भी मिथ्या नहीं है ॥ ११४८ ॥ ॥अड़िल॥ पहले जननी शब्द का उच्चारण कर अन्त में मथनी शब्द को लगाओ और तुपक के समस्त नामों को बिना किसी भेद के, मन में जान लो ॥ ११४९ ॥ सुहृदयनी पद पहले कहकर अन्त में अरिनी पद लगाओ और तुपक के समस्त नाम चतुरतापूर्वक जान लो तथा काव्य में रुचि-अनुसार उनका प्रयोग करो ॥ ११५० ॥ ॥ चौपाई ॥ मनुष्यनी पद पहले कहकर अन्त में अरिनी शब्द जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ११५१ ॥ मृत्यनी शब्द कहकर अन्तक शब्द जोड़ो और तुपक के नामों को जान लो ॥ ११५२ ॥

जिह चाहो तिह ठवर भणीजै ॥ ११५२ ॥ आदि मानुनी
शबद बखानो । ता के मथणी अंत सु ठानो । नाम तुपक को
सभ लहि (मू०ग्रं०७६२) लिज्जै । जिह चाहो तिह ठवर
भणिज्जै ॥ ११५३ ॥ मानिखयनी पदादि भणीजै । अंत
शबद मथणी तिह दीजै । नाम तुपक के सकल लहिज्जै । रुचै
जहाँ तिह ठवर भणिज्जै ॥ ११५४ ॥ नरणी आदि उचारण
कीजै । अरणी अंत शबद तिह दीजै । सभ स्री नाम तुपक
के जानहु । या मै भेद न नैक प्रमानहु ॥११५५॥ मानवनी
शबदादि भणिज्जै । ता के अंत शत्र पद दिज्जै । नाम
तुपक के सकल लहीजै । सभा मद्धि बिन शंक कहीजै ॥११५६॥
॥ अड़िल्ल ॥ प्रिथीराटनी आदि उचारन कीजिऐ । अरणी
ता के अंत शबद को दीजिऐ । सकल तुपक के नाम जान जिय
लीजिऐ । हो इनके कहत न शंका मन मै कीजिऐ ॥११५७॥
॥ चौपई ॥ छितणीसणी पदादि भणिज्जै । अरणी पद को
बहुर कहिज्जै । नाम तुपक के सकल बखानहु । सकल सभा
मै प्रगट प्रमानहु ॥ ११५८ ॥ छत्रिसणी शबदादि भणिज्जै ।
अंत शबद मथणी तिह दिज्जै । सकल तुपक के नाम पछानहु ।
या मै भेद नैक नही जानहु ॥ ११५९ ॥ छमिइसणी शबदादि
उचारो । मथणी शबद अंत तिह डारो । नाम तुपक के सभ
लहि लीजै । सदा सुनत बुधि जनन भणीजै ॥ ११६० ॥

मानिनी शब्द कहकर मथनी शब्द लगाओ और मनचाहा प्रयोग करने के लिए
तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ११५३ ॥ मनुष्यनी पद पहले कहकर
अन्त में मथनी शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥११५४॥
नरनी शब्द पहले कहकर अरिनी शब्द जोड़ो और बिना किसी भेद के तुपक
के सभी नामों को जान लो ॥ ११५५ ॥ मानवनी शब्द पहले कहकर अन्त
में शत्रु पद लगाओ और बिना किसी शंका के तुपक के सभी नामों को जान
लो ॥ ११५६ ॥ ॥ अड़िल ॥ पृथीराटनी पद पहले कहकर अन्त में अरिणी
पद लगाओ और बिना किसी शंका के तुपक के नामों को जान लो ॥ ११५७ ॥
॥ चौपाई ॥ क्षितिनीशणी पद पहले कहकर अरिनी पद को कहो और तुपक
के समस्त नामो को कह दो ॥ ११५८ ॥ क्षत्रियेशणी पद पहले कहकर अन्त
में मथनी शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को बिना किसी भेद के
पहचान लो ॥ ११५९ ॥ क्षमेशणी शब्द कहकर मथनी शब्द लगाओ और

।। रूआमल छंद ।। धरतीसणि आदि बखान। अरि शबद अंत प्रमान। सभ चीन नाम तुफंग। सभ ठवर भनहु निशंग ।। ११६१ ।। ।। अड़िल्ल ।। धवलधरिसणी पद को प्रिथम उचारिऐ। अरणी ता के अंत शबद को डारिऐ। अमित तुपक के नाम चतुर लहि लीजिऐ। हो सकल बुद्धि जन सुनत उचारन कीजिऐ ।। ११६२ ।। ।। चौपई ।। ब्रिखभ धरिसणी आदि बखानो। अरि पद अंत तवन के ठानो। नाम तुपक के सभ लहि लिज्जै। सकल सभा के सुणत भणिज्जै ।। ११६३ ।। धावलेसणी आदि बखानो। मथणी शबद अंत तिह ठानो। नाम तुपक के सकल पछानिऐ। सकल बुद्ध जन सुनत बखानिऐ ।।११६४।। ।। अड़िल्ल ।। आदि धवलइसणी शबदादि बखानिऐ। ता के अरणी अंत शबद को ठानिऐ। सकल तुपक के (मू०ग्रं०७९३) नाम चतुर लहि लीजिऐ। हो गुनीजनन की सभा उचारन कीजिऐ ।।११६५।। प्रिथम ब्रिखभणी इसणी शबद उचारिए। मथणी ता के अंत शबद को डारिए। सकल तुपक के नाम चीन लै चतुर चित। हो काबि कथा मै दीजै अउ भीतर कबित ।। ११६६ ।। गाविसइसणी शबदहि आदि उचारिए। अरणी ता के अंत शबद को डारिए। सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजिअहि। हो कबित काब के बीच निडर हुइ

तुपक के नामों को बुद्धिमानों को सुनाने के लिए जान लो ।।११६०।। ।। रूआमल छंद ।। धरतीशणी शब्द कहकर अन्त में अरि शब्द लगाओ और तुपक के नामों को पहचान लो ।। ११६१ ।। ।। अड़िल ।। धवल (बैल) धरीशषणी पद पहले कहकर अन्त में अरिनी पद लगाओ और तुपक के अनन्त नामों को चतुरतापूर्वक जान लो ।। ११६२ ।। ।। चौपाई ।। वृषभधरीशणी पद कहकर अन्त में अरि पद लगाओ और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ११६३ ।। धावलेशषणी पद पहले कहकर मथनी पद अन्त में लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ११६४ ।। ।। अड़िल ।। धवलईषणी पद पहले कहकर अन्त में अरिनी पद लगाओ और तुपक के समस्त नामों को गुणी जनों के सम्मुख उच्चारण के लिए जान लो ।। ११६५ ।। वृषभनीईशनी शब्द का उच्चारण कर अन्त में मथनी पद को लगाओ और तुपक के समस्त नामों को मन में जान लो ।। ११६६ ।। गाविस (बैल) ईषणी शब्द का पहले उच्चारण

दीजिअहि ॥११६७॥ भूविसणी पद प्रिथम उचारन कीजिऐ । मथणी ता के अंत शबद कहु दीजिऐ । सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ । हो जवन ठवर मै चहिऐ तह ते दीजिऐ ॥११६८॥ ॥ चौपई ॥ उरविसणी शबदादि भणिज्जै । मथणी अंत शबद तिह दिज्जै । सकल तुपक के नाम लहिज्जहि । सरब ठवर बिन शंक भणिज्जहि ॥ ११६९ ॥ जगतीसणी पदाद बखानो । अंत शबद मथणी तिह ठानो । सकल तुपक के नाम पछानहु । या मै भेद रती न प्रमानहु ॥ ११७० ॥ बसुमतेसणी आदि उचरिऐ । अरणी शबद अंत तिह धरिऐ । नाम तुपक के सभ लहि लिज्जहि । सभन सुनत बिन शंक भणिज्जहि ॥११७१॥ ॥ अड़िल्ल ॥ बसुधेसणी शबद को आदि उचारिऐ । ता के मथणी अंत शबद को डारिऐ । सकल तुपक के नाम चतुर चित चीन लै । हो जवन ठवर मै चहो तही ते शबद दै ॥११७२॥ बैसुंधुराएसनी आदि बखानिऐ । अरणी ता के अंत शबद को ठानिऐ । नाम तुपक के जान चतुर जिय लीजिअहि । हो जवन ठवर मै चहो तही ते दीजिअहि ॥ ११७३ ॥ बसूनतेसणी प्रिथम शबद को भाखिऐ । अरणी ता के अंत बहुर पद राखिऐ । नाम तुपक के चतुर सकल जिअ जानिऐ । हो जहाँ जहाँ

कर अन्त में अरिनी पद जोड़ो और काव्य में प्रयुक्त करने के लिए तुपक के नामों को जान लो ॥ ११६७ ॥ भूमिशणी पद पहले कहकर अन्त में मथनी पद जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को मनचाहा प्रयोग करने के लिए जान लो ॥ ११६८ ॥ ॥ चौपाई ॥ उरविशणी पद पहले कहकर अन्त में मथनी शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ११६९ ॥ जगतीशणी पद पहले कहकर अन्त में मथनी शब्द जोड़ो और बिना किसी भेद के तुपक के नामों को पहचान लो ॥ ११७० ॥ वसुमंतेशणी पद पहले कहकर अन्त में अरनी शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥११७१॥ ॥ अड़िल ॥ वसुधेशनी पद का उच्चारण कर अन्त में मथनी शब्द को लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ११७२ ॥ वसुन्धरेशनी पद पहले कहकर अन्त में अरिनी पद जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को चतुरतापूर्वक चित्त में जान लो ॥ ११७३ ॥ वसुनतेशनी पद पहले कहकर अन्त में अरिनी पद रखो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ११७४ ॥

चहिऐ पद तहीं बखानिऐ ।। ११७४ ।। ।। चौपई ।। सामुंद्रणी एसणी कहिऐ । अरणी अंत शबद कहु गहिऐ । नाम तुपक के लेहु सुजन जन । अपने अपने बीच सकल मन ।। ११७५ ।। सामुंद्रणीएसणी भाखो । अरणी शबद अंत तिह राखो । नाम तुपक के सकल लहिज्जै । सकल सुकबि जन सुनत भणिज्जै ।।११७६।। (मू०ग्रं०७६४) अचलाइसणी आदि भणिज्जै । मथणी शबद अंत तिह दिज्जै । सकल तुपक के नाम लहीजै । जवन ठवर चहिऐ तिह दीजै ।।११७७।। विपलीसिणी पदादि उचारो । अरणी शबद अंत तिह धारो । सकल तुपक के नाम पछानो । या मै भेद न रंचक जानो ।। ११७८ ।। ।। अड़िल्ल ।। आदि सागरा शबद बखानन कीजिऐ । एसदररनी अंत तवन को दीजिऐ । सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजिअहि । हो कबित काबि के बीच चहो तह दीजिअहि ।। ११७९ ।। महाअरणवी शबदहि आदि उचारिऐ । पत मरदननी अंत शबद कहु डारिऐ । नाम तुपक के सकल जान जिय राखिअहि । हो सकल सुजन जन सुनत निडर हुइ भाखिअहि ।।११८०।। ।। चौपई ।। आदिसिंधणी शबद भणीजै । पत अरदनी पदांत कहीजै । सभ स्री नाम तुपक के लहो । सकल सुजन जन सुनते कहो ।। ११८१ ।। नीरालयनी आदि

।। चौपाई ।। समुद्रनीशनी पद पहले कर अन्त में अरिनी शब्द लगाओ और तुपक के नामों को मन ही मन हे सुजन ! जान लो ।। ११७५ ।। समुद्रनीशनी पद कहकर अरिनी पद कहो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।।११७६।। अचलेशनी पद पहले कहकर अन्त में मथनी शब्द लगाओ और मनचाहा प्रयोग करने के लिए तुपक के नामों को जान लो ।। ११७७ ।। विपलीशनी पद पहले कहकर अन्त में अरिनी शब्द लगाओ और बिना किसी भेद के तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ।। ११७८ ।। ।। अड़िल ।। सागरा शब्द पहले कहकर उसमें ईशदलननी पद लगाओ और काव्य में प्रयुक्त करने के लिए तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ११७९ ।। महारणवी शब्द पहले कहकर पत-मर्दननी शब्द अन्त में जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को निर्भय होकर जान लो ।। ११८० ।। ।। चौपाई ।। सिन्धुनी शब्द पहले कहकर पत अरदनी शब्द बाद में कहो और श्रीतुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ११८१ ।। नीरालयनी पद कहकर नासिकअरनी पद जोड़ो और बिना किसी भेद के तुपक

उचरो। नासिक अरणी पुन पद धरो। सकल तुपक के नाम पछानो। या मै भेद रतीक न जानो ॥ ११८२ ॥ आदि जालयणी पदि दिज्जै। पति अरणी पद बहुर भणिज्जै। सकल तुपक के नाम पछानहु। सकल सुजन जन सुनत बखानहु ॥ ११८३ ॥ बारधणी शबदादि उचरिऐ। पति अरि अंत शबद को धरिऐ। सकल तुपक के नाम कहीजै। सकल गुनि जनन सुनत भनीजै ॥ ११८४ ॥ धराएसणी आदि शबद कहि। मथणी अंत तवन के पद गहि। सकल तुपक के नाम लहिज्जै। शंक छोरि बिन शंक भणिज्जै ॥ ११८५ ॥ लोरभरेसणी आदि उचरिऐ। अंत शबद मथणी कहु धरिऐ। सकल तुपक के नाम पछानहु। शंक छोरि बिन शंक बखानहु ॥ ११८६ ॥ गोरा आदि उचारन कीजै। एस अंत कणी अंत भणीजै। नाम तुपक के सकल पछानो। जहाँ रुचै तिह ठवर प्रमानो ॥ ११८७ ॥ अवनेसणी पदादि कहीजै। मथणी शबद अंत तिह दीजै। सभ स्त्री नाम तुपक के लहिऐ। भै निवारि निरभै हुइ कहिऐ ॥ ११८८ ॥ दिग्गजनी शबदादि भणिज्जै। एसारदनी अंत कहिज्जै। सकल सु (मू०ग्रं०७६५) नाम तुपक के चीनहु। चह चाहै तह कहो प्रबीनहु ॥११८९॥ कुंभ नासनी आदि उचरिऐ। अरणी अंत शबद कहु भरिऐ। सभै तुपक के नाम पछानो। या

के समस्त नामों को जान लो ॥ ११८२ ॥ जालयणी पद पहले कहकर पति अरिनी पद पुनः कहो और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ ११८३ ॥ वारिधिनी पद पहले कहकर पति अरि पद अन्त में जोड़ो और समस्त गुणी जनों के लिए तुपक के नामों को कह डालो ॥ ११८४ ॥ धरेशनी शब्द कहकर अन्त में मथनी पद लगाओ और निःशंक होकर तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ ११८५ ॥ लोरभरेशणी पद कहकर अन्त में मथनी शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ ११८६ ॥ गोरा पद का उच्चारण कर ईश अंतकनी पद अन्त में लगाओ और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ ११८७ ॥ अवनीशणी पद कहकर मथनी शब्द लगाओ और निर्भय होकर तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ ११८८ ॥ दिग्गजनी पद पहले कहकर ईशारदनी पद अन्त में कहो और रुचिपूर्वक प्रयुक्त करने के लिए तुपक के नामों को पहचान लो ॥ ११८९ ॥ कुम्भनाशिनी पद पहले कहकर

महि झूठ नैक नही जानो ।। ।। ११६० ।। महिएसणी पदादि भणीजै । अरणी शबद अंत महि दीजै । सकल तुपक के नाम कहीजै । जह हीं चहो तही लै दीजै ।। ११६१ ।। मैदणेसणी आदि उचरिऐ । घाही अंत शबद कहु धरिऐ । नाम सुजान तुपक के सभ ही । चाहो जहा उचारहु तब ही ।। ११६२ ।। ।। अड़िल्ल ।। बसुधरेसणी आदि उचारन कीजिऐ । शबद दाहनी अंत तवन के दीजिऐ । सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिअहि । हो प्रगट सभा के माँझ उचारन कीजिअहि ।।११६३।। ।। चौपई ।। बसुधरेसणी आदि उचरिऐ । मथणी अंत शबद को धरिऐ । सकल तुपक के नाम लहीजै । अधिक गुनजनन सुनत भनीजै ।। ११६४ ।। नरा अधिपणी आदि भणीजै । मथणी पद को अंत धरीजै । सभ स्त्री नाम तुपक के लहिऐ । प्रगट सुकबि जन सुनते कहिऐ ।। ११६५ ।। ।। अड़िल्ल ।। मानुखेसणी आदि उचारन कीजिऐ । अंतकनी शबदादि तवन के दीजिऐ । सकल तुपक के नाम चतुर पहिचानिऐ । हो शंका तिआग उचरिऐ शंक न मानिऐ ।। ११६६ ।। देसएसणी पद को प्रिथम बखानिऐ । अंत अरदनी शबद तवन को ठानिऐ । सकल तुपक के नाम चतुर लहि लीजिऐ । हो कबितु काब के बीच उचारन

अन्त में अरिनी पद अन्त में जोड़ो और तुपक के सभी नामों को पहचान लो ।। ११६० ।। महीशनी पद पहले कहकर अरिनी शब्द अन्त में लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ११६१ ।। मेदनीशनी पद पहले लगाकर घायक पद अन्त में जोड़ो और तुपक के समस्त नामों का उच्चारण कर लो ।। ११६२ ।। ।। अड़िल ।। वसुन्धरेशणी पद पहले कहकर दाहनी पद जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को मन में जान लो ।। ११६३ ।। ।। चौपाई ।। वसुन्धरेशणी पद कहकर मथनी पद को अन्त में लगाओ और तुपक के समस्त नामों को गुणज्ञों के लिए जान लो ।। ११६४ ।। नराधिपनी पद पंहले कहकर मथनी पद को अन्त में लगाओ और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। ११६५ ।। ।। अड़िल ।। मनुष्येशणी पद पहले कहकर पुन: अन्तकनी पद कहिए और तुपक के समस्त नामों को बिना किसी शंका के पहचान लीजिए ।। ११६६ ।। देशईशणी पद पहले कहकर अन्त में अरदनी पद लगाओ और काव्य में प्रयुक्त करने के लिए तुपक के समस्त नामों को जान

कीजिऐ ।। ११९७ ।। जनपदेसणी आदि उचारन कीजिऐ । अंत्यंतकनी शबद तवन के दीजिऐ । सकल तुपक के नाम जान जिअ लीजिअहि । हो चहिअहि ठवर जहाँ सु तहाँ ते दीजिअहि ।। ११९८ ।। मानवेंद्रणी पद को प्रिथम बखानिऐ । अंत्यंतकनी पद को बहुर प्रमानिऐ । सकल तुपक के नाम जान तिह चित्त महि । हो भूत भविक्ख भवान इसी कर मित महि ।।११९९।। लोकएंद्रणी आदि उचारन कीजिऐ । ता के हरणी अंत शबद को दीजिऐ । सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिअहि । हो रैन दिवस सभ मुख ते भाख्यो कीजिअहि (मू०ग्रं०७९६) ।। १२०० ।। ।। चौपई ।। लोकराजनी आदि भणिज्जै । अरणी शबद अंत तिह दिज्जै । सकल तुपक के नाम लहीजै । शास्त्र सिम्रितन माँझ कहीजै ।। १२०१ ।। देसेसनी रवणनी भाखो । अंत अंतकनी शबदहि राखो । सकल तुपक के नाम लहीजै । सुकबि जन के सुनत भनीजै ।। १२०२ ।। थिराभाखि इसणी पुनि भाखो । अंत अंतकनी पद कहु भाखो । सकल तुपक के नाम लहिज्जै । शास्त्र सिम्रितन माँझ भणिज्जै ।।१२०३।। ।। अड़िल्ल ।। प्रिथम कासपी इसणी शबद बखानिऐ । अंत्यंतकनी शबद तवन के ठानिऐ । सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ । हो शंका त्यागि निशंक उचारन कीजिऐ ।। १२०४ ।। आदि नाम

लो ।। ११९७ ।। जनपदेशनी पद पहले कहकर अन्तयन्तकनी पद उसमें जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। ११९८ ।। मानवेन्द्रणी पद पहले कहकर अन्तयन्तकनी पद को कहो और वर्तमान, भूत, भविष्यकाल के लिए तुपक के नामों को जान लो ।। ११९९ ।। लोकेन्द्रनी पद पहले कहकर हरनी पद अन्त में लगाओ और दिन-रात उच्चारण करने के लिए तुपक के समस्त नामों को मन में जान लो ।। १२०० ।। ।। चौपाई ।। लोकराजनी पद पहले कहकर अरिनी शब्द अन्त में लगाओ और शास्त्र-स्मृति-सम्मत तुपक के नामों को जान लो ।। १२०१ ।। देशेशनी रमणनी पद कहकर अन्तकनी शब्द अन्त में रखो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १२०२ ।। स्थिरा पद कहकर ईशणी पद कहो और पुनः अन्तकनी पद जोड़ो और इस प्रकार तुपक के नामों को जान लो ।। १२०३ ।। ।। अड़िल ।। कश्यपी ईशणी पद कहकर अन्तयन्तकनी शब्द जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को निःशंक उच्चारण

नागन के प्रिथम बखानिऐ । पितणी इसणीवंत तवन के ठानिऐ । बहुर घातनी शबद तवन के दीजिऐ । हो सकल तुपक के नाम चतुर लहि लीजिऐ ।। १२०५ ।। सरप तातणी इसणी आदि उचारिऐ । ता के मथणी अंत शबद को डारिऐ । सकल तुपक के नाम चतुर लहि लीजिऐ । हो सभ कबितन के बिखै निडरु हुइ दीजिऐ ।। १२०६ ।। इंद्रएंद्रणी आदि उचारन कीजिऐ । नथणी ता के अंत शबद को दीजिऐ । सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिअहि । हो कबित काबि कै माँझ निडर हुइ दीजिअहि ।।१२०७।। ।। चौपई ।। देवदेवणी आदि उचरिऐ । एसरांतकन पुन पद धरिऐ । सभ स्त्री नाम तुपक के लहिऐ । शंक तिआग निरशंक हुइ कहिऐ ।।१२०८।। ।। अड़िल्ल ।। शक्रतात अरणी शबदादि बखानिऐ । मथणी तां के अंत शबद को ठानिऐ । सकल तुपक के नाम हिये पहिचानिऐ । हो कथा बारता भीतर निडर बखानिऐ ।। १२०९ ।। सतक्रितेसणी सिसणी आदि उचारिऐ । ता के अरणी अंत शबद कों डारिऐ । सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ । हो सकल गुनिजनन सुनत उचारन कीजिऐ ।।१२१०।। ।। चौपई ।। सचीपतिसणी इसणी भाखो । मथणी शबद अंत को राखो । सकल तुपक के नाम लहीजै । देस देस करि प्रगट भनीजै ।। १२११ ।। (मू०ग्रं०७६७)

करो ।। १२०४ ।। नागिन पद कहकर पितनी ईशणीवन्त पद लगाओ । पुनः घातनी शब्द जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १२०५ ।। सर्पतातनी ईशणी पद कहकर अन्त में मथनी शब्द जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को चित्त में निर्भय होकर जान लो ।। १२०६ ।। इन्द्रेन्द्रणी पद कहकर मथनी पद अन्त में लगाओ और तुपक के समस्त नामों का काव्य में प्रयोग करने के लिए ज्ञान प्राप्त कर लो ।। १२०७ ।। ।। चौपाई ।। देवदेवनी पद कहकर ईशरान्तकन पद जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १२०८ ।। ।। अड़िल ।। सक्रतात अरिनी पद पहले अन्त में मथनी पद जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को मन में पहचान लो और कथा-वार्ता में उनका प्रयोग करो ।। १२०९ ।। सतक्रतेशणी शिशनी पद कहकर अन्त में अरिनी शब्द को लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १२१० ।। ।। चौपाई ।। शचीपतीशणी ईशणी पद पहले कहकर अन्त में मथनी शब्द

।। अड़िल्ल ।। सक्क्रंदन तातणी एसणी भाखिऐ। मथणी ता के अंत शबद को राखिऐ। नाम तुपक के चित मै चतुर पछानिऐ। हो बिना कपट तिन लखो न कपट प्रमानिऐ ।। १२१२ ।। कऊसकेसणी इसणी प्रिथम बखानकै। मथणी ता के अंत शबद को ठानकै। सकल तुपक के नाम चतुर पहिचानिऐ। हो कहे हमारे बचन सत्ति करि मानिऐ ।। १२१३ ।। ।। चौपई ।। बासवेसणी आदि भणिज्जै। अंत शबद अरणी तिह दिज्जै। नाम तुपक के सभ जिय जानो। शंक त्याग निरशंक बखानो ।। १२१४ ।। ।। अड़िल्ल ।। बरहाइसणी अरणी आदि बखानिऐ। सकल तुपक के नाम सु चित मै जानिऐ। शंक त्यागि निरशंक उचारन कीजिऐ। हो सति सु बचन हमारे माने लीजिऐ ।। १२१५ ।। ।। दोहरा ।। मघवेसणणी इसरणी प्रिथमै पदहि उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजै सु कबि सुधार ।। १२१६ ।। मातलेसणी एसणी मथणी अंत उचार। नाम तुपक के होत हैं लीजहु सुकबि सुधार ।। १२१७ ।। ।। चौपई ।। जिसनएसणी आदि भणिज्जै। इसणी मथणी अंत कहिज्जै। सभ स्री नाम तुपक के लहिऐ। दीजै तवन ठवर जह चहिऐ ।। १२१८ ।। ।। अड़िल्ल ।। प्रिथम पुरंदर

जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १२११ ।। अड़िल ।। सक्रन्दन-तातनी इशणी पद कहकर अन्त में मथनी शब्द रखो और निष्कपट भाव से चतुरतापूर्वक तुपक के नामों को पहचान लो ।। १२१२ ।। कउसकेशणी ईशणी पद कहकर अन्त में मथनी शब्द जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को सत्य मानते हुए जान लो ।। १२१३ ।। ।। चौपाई ।। वासव (इन्द्र) इशणी शब्द कहकर अन्त में अग्नि शब्द लगाओ और निःसंकोच तुपक के नामों को जान लो ।। १२१४ ।। ।। अड़िल ।। वरहारशणीअग्नि पद कहकर तुपक के समस्त नामों को मन में कहो और मैं सत्य कहता हूँ कि इन नामों को निःसंकोच प्रयोग करो ।। १२१५ ।। ।। दोहा ।। मथवेशणी ईश्वरणी पद कहने से तुपक के नाम होते हैं ।। १२१६ ।। मातुलेशणी इशणी मथनी पद कहने से तुपक के नाम होते हैं ।। १२१७ ।। ।। चौपाई ।। जिसनेशणी पद पहले कहकर इशनी मथनी पद अन्त में कहो और मनचाहे स्थान पर प्रयुक्त करने के लिए तुपक के नामों को जान लो ।। १२१८ ।। ।। अड़िल ।। पुरन्दरईशणी शब्द

इसणी शबद बखानिऐ। इसणी मथणी पद को बहुर प्रमानिऐ। नाम तुपक के सकल जान जिय लीजिअहि। हो शंक त्याग निरशंक उचारन कीजिअहि ॥ १२१९ ॥ बज्रभरिसणी अरणी आदि उचारिऐ। नाम तुपक के चित मै चतुर बिचारिऐ। शंक त्याग निरशंक हुइ शबद बखानिऐ। हो किसी सु कबि की कान न मन मै आनिऐ ॥ १२२० ॥ तुराखाड़ पितणी इसणी पद भाखिऐ। अरणी ता के अंत शबद को राखिऐ। सकल तुपक के नाम हिऐ पहिचानिअहि। हो चतुर सभा के बीच निशंक बखानिअहि ॥ १२२१ ॥ इद्रेणी इंद्राणी आदि बखानकै। अरणी ता के अंत शबद को ठामकै। सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ। हो कबित काबि के बीच निडर हुइ दीजिऐ ॥ १२२२ ॥ उचस्रिवाइस एस एसणी भाखिऐ। (मू०ग्रं०७९८) इसणी कहिकै अरणी पद को राखिऐ। सकल तुपक के नाम अमित जिय जानिऐ। हो शंक त्याग निरशंक हुइ सदा बखानिऐ ॥ १२२३ ॥ हयणी इसणी इसणी इसणी भाखिऐ। अरणी ता के अंत शबद को राखिऐ। सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ। हो निडर सभा के माँझ उचारन कीजिऐ ॥ १२२४ ॥ गाजराज राजननी प्रभणी भाखिऐ। मथणी ता के अंत शबद को राखिऐ। सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ। हो या

कहकर ईसनी मथनी पद लगाओ और निःसंकोच उच्चारण करते हुए तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १२१९ ॥ वज्रभरेशनी अरिनी पद पहले कहकर तुपक के नामों को चित्त में विचारपूर्वक जान लो, किसी भी कवि की परवाह न करते हुए उसका प्रयोग करो ॥ १२२० ॥ तुषार पितनी ईशणी पद कहकर अरिनी पद अन्त में रखो और तुपक के समस्त नामों को हृदय में पहचान लो ॥ १२२१ ॥ इन्द्रेणी इन्द्राणी पद पहले कहकर अन्त में अरिनी शब्द को जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को निडर होकर प्रयुक्त करने के लिए जान लो ॥ १२२२ ॥ उच्चश्रीवाईश ईशनी पद कहकर पुनः ईशनी एवं अरिनी पद को लगाकर निःसंकोच प्रयुक्त करने के लिए तुपक के अपरिमित नामों को जान लो ॥ १२२३ ॥ हयनी ईशनी ईशनी ईशनी शब्द कहकर अन्त में अरिनी पद रखो और तुपक के समस्त नामों को मन में जान लो ॥ १२२४ ॥ गजराज राजननी प्रभुनी पद कहकर अन्त में मथनी शब्द रखो और बिना

के भीतर भेद न नैकहुँ कीजिऐ ॥१२२५॥ अस्वएसणी इसणी इसण उचारिऐ। ता के मथणी अंत शबद को डारिऐ। सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ। हो शंक त्यागि निरशंक उचार्‌यो कीजिऐ ॥ १२२६ ॥ बाहराज राजनणी राजन भाखिऐ। अरणी ता के अंत शबद को राखिऐ। सकल तुपक के नाम हिये पहिचानिऐ। हो कबि काबि के भीतर प्रगट बखानिऐ ॥१२२७॥ तुरंग एसणी इसणी प्रभणी प्रिथम कहि। शत्र शबद को अंत तवन के बहुर गहि। सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ। हो सकल गुनि जनन सुनत निशंक भणीजिऐ ॥१२२८॥ ॥ चौपई ॥ अइइस पति पितणी पद कहिऐ। इसणी अरणी शबदहि लहिऐ। सभ स्त्री नाम तुपक के जनिऐ। कबित काबि के भीतर भनिऐ ॥ १२२९ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ बाजराज के सभ ही नाम बखानकै। प्रभणी पितनी इसणी बहुर पद ठानकै। अरणी भाखि तुपक के नाम पछानिऐ। हो जवन शबद मै चहिऐ तही बखानिऐ ॥ १२३० ॥ हसतीएस प्रभ पितणी ग्रिभनी भाखिऐ। अरणी ता के अंत शबद को राखिऐ। नाम तुपक के सकल जान जिय लीजिऐ। हो जवन कवित मो चहो सु पद तह दीजिऐ ॥ १२३१ ॥ दंतिराट प्रभ पितसुतणी पद

किसी भेदभाव के तुपक के नामों को जान लो ॥ १२२५ ॥ अश्वईशनी ईशनी ईशनी पद कहकर अन्त में मथनी पद को लगाइए और निःसंकोच तुपक के समस्त नामों को जान लीजिए ॥ १२२६ ॥ वाहिराज राजननी राजन शब्द कहकर उसके अन्त में अरिनी शब्द को रखो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १२२७ ॥ तुरंग ईशनी ईशनी प्रभुनी पद पहले कहकर अन्त में शत्रु शब्द जोड़कर तुपक के समस्त नामों को मन में जान लीजिए और निःसंकोच गुणी जनों के सम्मुख उसका प्रयोग कीजिए ॥ १२२८ ॥ ॥ चौपाई ॥ आयसुपति पितनी पद कहकर ईशनी अरिनी शब्द कहिए और काव्य-कवित्त में कहने के लिए श्रीतुपक के नामों को जान लीजिए ॥ १२२९ ॥ ॥ अड़िल ॥ बाजी राज के सभी नाम कहकर प्रभुनी पितनी ईशनी पद एवं अरिनी पद जोड़कर तुपक के समस्त नामों को पहचानो एवं उनका मनचाहा प्रयोग करो ॥ १२३० ॥ हस्ति ईश प्रभु पितनी गर्विनी पद कहकर अन्त में अरिनी पद जोड़ो और काव्य में प्रयुक्त करने के लिए तुपक के नामों को जान

भाखकै। अरणी ता के अंत शबद को राखकै। सकल तुपक के नाम चतुर जिय जानिऐ। हो चहिऐ दीजिऐ जहा न ब्रिथा बखानिऐ ॥ १२३२ ॥ दुरदराट राटिसणी इसणी भाखिऐ। अरणी ता के अंत शबद को राखिऐ। सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ। हो कबित (मू०ग्रं०७९९) काबि के भीतर उचर्यो कीजिऐ ॥ १२३३ ॥ दयुपिइस इसणी मथणी आदि भणीजिऐ। अरणी ता के अंत शबद को दीजिऐ। सकल तुपक के नाम हिरदे महि जानिऐ। हो चहो शबद तुम जहाँ निडर तह ठानिऐ ॥ १२३४ ॥ पदमाइस इसराटिन आदि बखानिऐ। अरणी ताके अंत शबद को ठानिऐ। सकल तुपक के नाम चतुर पहिचानिअहि। हो कबित काबि के माँझ निशंक बखानिअहि ॥ १२३५ ॥ बारणेंद्र एंद्रणी इंद्रणी आदि कहि। अरणी ता के अंत शबद को बहुर गहि। सकल तुपक के नाम सत्ति करि जानिऐ। हो शंका त्याग उचर न शंका मानिऐ ॥१२३६॥ ब्यालह पति पतणि पद प्रिथम कहीजिऐ। अरदन ता के अंत शबद को दीजिऐ। अमित तुपक के नाम चतुर जिय जानिअहु। हो जवन ठवर मै चहिऐ तही बखानिअहु ॥ १२३७ ॥ रंभसेसणी इसणी इसणी भाखिऐ। हंत्री ता के अंत शबद को राखिऐ। सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ। हो कबित काब के माँझ निडर हुइ

लो ॥ १२३१ ॥ दन्तिराट प्रभुपित सुतनी पद कहकर उसके अन्त में अरिनी पद जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को चित्त में जान लो ॥ १२३२ ॥ दुरदराटेशनी ईशनी पद कहकर अन्त में अरिनी शब्द लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जानकर कवित्त-काव्य में प्रयुक्त करो ॥ १२३३ ॥ दयुपिईश ईशनी मथनी पद कहकर अरिनी पद अन्त में जोड़ो और तुपक के समस्त नाम हृदय में जान लो ॥ १२३४ ॥ पद्माईश ईशराटिन पद पहले कहकर अन्त में अरिनी शब्द जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को पहचान लो ॥ १२३५ ॥ वारणेन्द्र इन्द्रणी इन्द्रणी पद पहले कहकर अरिनी शब्द को जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को सत्य कर जान लो ॥ १२३६ ॥ व्यालह पति पतनी पद पहले कहकर अन्त में अरदन शब्द को लगाओ और तुपक के अपरिमित नामों को मनचाहे रूप से प्रयुक्त करने के लिए जान लो ॥ १२३७ ॥ इम्भशेषनी ईशनी ईशनी शब्द कहकर अन्त में हन्त्री शब्द रखो और तुपक के

दीजिऐ ।। १२३८ ।। कुंभोएसइस इसणी आदि बखानिऐ । इसणी अरणी अंत तवन के ठानिऐ । सकल तुपक के नाम लीजिअहु जान कर । हो जो पूछै तिह दीजो तुरत बताइ कर ।। १२३९ ।। कुंजरेसइस पितणी प्रभणी भाखिऐ । हंत्री ता के अंत शबद को राखिऐ । सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ । हो कबित काबि के बीच निशंक भणीजिऐ ।। १२४० ।। करी एंद्र इंद्रणी इंद्रणी भाखिऐ । पितणी ता के अंत शबद को राखिऐ । अरि कहि नाम तुपक के लेहु पछानकै । हो कबित काबि के बीच दीजिअहु जानकै ।।१२४१।। तरअर प्रभ प्रभ प्रभणी आदि बखानिऐ । अरणी ता के अंत शबद को ठानिऐ । सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ । हो जह जह चहिऐ शबद तहीं ते दीजिऐ ।। १२४२ ।। सउडिस इस इस इसणी आदि बखानकै । अरनी ता के अंत शबद को ठानकै । सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ । हो या के भीतर भेद नैक नही कीजिऐ ।। १२४३ ।। सिंधरेस इसपती कहि प्रभणी (मू०ग्रं०८००) भाखिऐ । अरणी ता के अंत शबद को राखिऐ । सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ । कबित दोहरन माँझ निडर हुइ दीजिऐ ।। १२४४ ।। अनिक पेंद्र इंद्रणी इंद्रणी भाखिऐ । अरणी इसणी अंत शबद को राखिऐ । सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ । हो सुकबि सभा के बीच उचारन

समस्त नामों को जान लो ।। १२३८ ।। कुम्भेश ईश ईशनी पद कहकर ईशनी अरनी पद को जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १२३९ ।। ंजरेश ईश पितनी प्रभुणी पद कहकर अन्त में हन्त्री पद अन्य में लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १२४० ।। करिइन्द्र इन्द्रणी इन्द्रणी पद कहकर अन्त में पितनी पद को रखो और कवित्त-काव्य में प्रयुक्त करने के लिए तुपक के नामों को जान लो ।। १२४१ ।। तरुवर प्रभु प्रभुनी पद कहकर अरिनी पद अन्त में लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।।१२४२।। सउडिस ईश ईश ईशनी पद कहकर अन्त में अरिनी पद लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १२४३ ।। सिन्धुरेश ईशपति कहकर प्रभुनी तथा अन्त में अरिनी पद रखो और तुपक के समस्त नामों को कवित्त-दोहों में प्रयुक्त करने के लिए जान लो ।।१२४४।। अनिकपेन्द्र इन्द्रणी इन्द्रणी पद कहकर अरिनी

कीजिऐ ।। १२४५ ।। नागिनाहिना इसण एसणी भाखिऐ ।
मथणी ता के अंत शबद को राखिऐ । सकल तुपक के नाम
चतुर जिय जानिऐ । हो पुसतक पोथनि माँझ निशंक
बखानिऐ ।।१२४६।। हरपति पति पति पतणी आदि भणीजिऐ ।
अरणी ता के अंत शबद को दीजिऐ । सकल तुपक के नाम
चतुर जिय जानिऐ । हो कबित काबि के माँझ निशंक
बखानिऐ ।। १२४७ ।। ।। चौपई ।। गजपति त्रिपणी त्रिपणि
भणिज्जै । त्रिपणी अरणी पुन पद दिज्जै । सभ स्त्री नाम
तुपक के लहिऐ । दोहा माँझ चउपई कहिऐ ।। १२४८ ।।
।। अड़िल्ल ।। सावज त्रिप त्रिप त्रिपत त्रिपणनी भाखिऐ ।
अरणी ता के अंत शबद को राखिऐ । अमित तुपक के नाम
जान जिय लीजिऐ । हो कबित काबि के माँझ उचार्यो
कीजिऐ ।। १२४९ ।। ।। चौपई ।। आदि शबद मातंग भणीजै ।
चार बार त्रिप पद को दीजै । अरणी ता के अंत बखानहु ।
सभ स्त्री नाम तुपक के जानहु ।।१२५०।। आदि गयंदन शबद
उचरिऐ । चार बार त्रिप शबदहि धरिऐ । अरणी शबद
बहुरि तिह दिज्जै । नाम तुपक के सभ लहि लिज्जै ।।१२५१।।
बाज शबद को प्रिथम भणीजै । चार बार त्रिप शबद धरीजै ।

ईशणी पद अन्त में कहो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १२४५ ।। नागिनाहिना ईशणी पद कर मथनी शब्द को रखो और तुपक के समस्त नामों को पुस्तकों-पोथियों में वर्णन करने के लिए जान लो ।। १२४६ ।। अरपति (ऐरावत) पति पति पतनी पद पहले कहकर अन्त में अरिनी शब्द को जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को चतुरतापूर्वक कवित्त-काव्य में प्रयुक्त करने के लिए जान लो ।। १२४७ ।। ।। चौपाई ।। गजपति नृपनी नृपनी शब्द कहकर पुन: नृपनी अरिनी पद जोड़ो और दोहे-चौपाइयों में प्रयुक्त करने के लिए तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १२४८ ।। ।। अड़िल ।। सावज नृप नृप नृपति नृपणनी पद कर अरिनी पद अन्त में रखो और तुपक के अपरिमित नामों को जानकर उनका कवित्त-काव्य में प्रयोग करो ।। १२४९ ।। ।। चौपाई ।। मातंग पद पहले कह चार बार नृप पद जोड़कर अन्त में अरिनी पद कहो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १२५० ।। पहले गयन्दन पद कहकर चार बार नृप शब्द जोड़कर पुन: अरिनी पद जोड़ो और तुपक के सभी नामों को जान लो ।। १२५१ ।। बाजि शब्द कहकर उसमें चार बार नृप शब्द जोड़कर बिना

सकल तुपक के नाम पछानो। या मै भेद रतीक न मानो ॥ १२५२ ॥ बाह शबद को आदि उचरिऐ। चार बार त्रिप शबदहि धरिऐ। सभ स्री नाम तुपक के लहिऐ। चहिऐ जिह ठाँ तिह ठाँ कहिऐ ॥ १२५३ ॥ तुरंग शबद को आदि उचारो। चार बार त्रिप पद (मू०ग्रं०८०१) कहु डारो। सकल तुपक के नाम लहीजै। रुचै जहाँ तिह ठवर भणीजै ॥ १२५४ ॥ है पद मुख ते आदि बखानो। चार बार त्रिप शबदहि ठानो। नाम तुपक के सकल लहिज्जै। कबित काबि के माँझ भणिज्जै ॥ १२५५ ॥ बरी शबद को आदि भणिज्जै। चार बार त्रिप शबद कहिज्जै। अरि पद ता के अंत बखानो। नाम तुपक के सकल पछानो ॥ १२५६ ॥ देव शबद कहु आदि बखानहु। त्रिप पद तीन बार पुन ठानहु। शत्रु शबद को बहुर भणिज्जै। नाम तुपक के सकल लहिज्जै ॥ १२५७ ॥ अमर शबद कहु आदि उचारहु। त्रिप पद तीन बार पुन डारहु। अरि कहि नाम तुपक के लीजै। कबित काबि के भीतर दीजै ॥ १२५८ ॥ त्रिजर शबद को आदि उचरिऐ। त्रिप पद तीन बार पुन धरिऐ। अरि कहि नाम तुपक के जानहु। शंक छाडि निरशंक बखानहु ॥१२५९॥ बिबिध शबद को आदि भणीजै। तीन बार त्रिप शबद

किसी भेद के तुपक के नामों को पहचान लो ॥ १२५२ ॥ बाहु शब्द को कहकर चार बार नृप शब्द जोड़ो और मनचाहा प्रयोग करने के लिए तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ १२५३ ॥ तुरंग शब्द को पहले कहकर चार नृप शब्द जोड़ो और मनचाहा प्रयोग करने के लिए तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १२५४ ॥ हय पद कहकर चार बार नृप शब्द उसमें जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १२५५ ॥ बरी शब्द पहले कहकर चार बार नृप शब्द कहो और अन्त में अरि शब्द कहते हुए तुपक के नामों को जान लो ॥ १२५६ ॥ देव पद कहकर नृप पद तीन बार लगाकर शत्रु शब्द को कहो और तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १२५७ ॥ अमर शब्द को पहले कहकर तीन बार नृप पद जोड़ो और अरि पद लगाते हुए तुपक के नाम जान लो ॥ १२५८ ॥ निर्जर शब्द कहकर तीन बार नृप पद जोड़ो और अरि पद कहकर निःसंकोच भाव से तुपक के नामों को जान लो ॥ १२५९ ॥ विबुध शब्द को पहले कहकर तीन बार नृप शब्द जोड़ो और उसमें रिपु पद लगाकर

धरीजै । रिप कहि नाम तुपक के लहिअहि । शंका त्यागि सभा मै कहिअहि ।। १२६० ।। सुर पद आदि शबद को धरिऐ । तीन बार न्रिप पद कहु डरिऐ । अरि पद ता के अंत बखानो । सभ स्री नाम तुपक के जानो ।। १२६१ ।। सुमन शबद को आदि बखानहु । तीन बार नाइक पद ठानहु । अरि पद ताँ के अंत भणिज्जै । नाम तुपक के सकल लहिज्जै ।। १२६२ ।। आदि शबद त्रिदवेस बखानो । तीन बार न्रिप पदहि प्रमानो । अरि पद ता के अंत भनीजै । सभ स्री नाम तुपक लहि लीजै ।।१२६३।। ब्रिद्रारक शबदादि उचारहु । तीन बार नाइक पद डारहु । अरि पद अंत तवन के दीजो । नाम तुपक के सभ लहि लीजो ।। १२६४ ।। गति बिवान शबदादि बखाणहु । तीन बार पद पदिहि प्रमाणहु । अरि पद अंत तवन के कहिऐ । सभ स्री नाम तुपक के लहिऐ ।।१२६५।। ।। अड़िल्ल ।। अंम्रितेस शबदादि उचारन कीजिऐ । तीन बार पति शबद तवन के दीजिऐ । शत्रु शबद पुन ता के अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम चतुर जिय जानिऐ ।। १२६६ ।। (मू०ग्रं०८०२) मधु पद मुख ते प्रिथमै नीके भाखिऐ । तीन बार पति शबद तवन के राखिऐ । अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछानिऐ । हो जह

निःशंक भाव से तुपक के नामों का जान लो ।। १२६० ।। सुर पद को पहले कहकर तीन बार नृप पद को लगाओ और अन्त में अरि पद को जोड़ते हुए तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १२६१ ।। सुमन शब्द को कहकर तीन बार नायक पद जोड़ो और उसके अन्त में अरि पद लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १२६२ ।। त्रिदेवेश शब्द पहले कहकर तीन बार नृप पद को लगाओ और अन्त में अरि पद कहकर तुपक के सभी नामों को जान लो ।। १२६३ ।। वृन्द्रारक शब्द कहकर तीन बार नायक पद लगाओ और अन्त में अरि पद जोड़कर तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १२६४ ।। गतिबिवान पद पहले कहकर तीन बार पदिहि पद जोड़ो और अन्त में अरि पद कहकर तुपक के सभी नामों को जान लो ।। १२६५ ।। ।। अड़िल ।। अमृतेश शब्द पहले कह तीन बार पति शब्द उसमें जोड़ो और उसके अन्त में शत्रु शब्द को कहो और इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को चित्त में जान लो ।। १२६६ ।। मधु पद पहले कहकर तीन बार पति शब्द जोड़कर अरि शब्द को उसमें लगाओ और तुपक

जह चहिऐ शबद निशंक बखानिऐ ॥ १२६७ ॥ सुधा शबद को आदि उचारन कीजिऐ । त्रिप पद ता के अंत बार त्रै दीजिऐ । रिप पद भाखि तुरंग नाम जिय जानिऐ । हो सु कबि चउपई माँझ निशंक बखानिऐ ॥१२६८॥ शबद पयूख सु मुख ते प्रिथम उचारिऐ । तीन बार त्रिप शबद अंत तिह डारिऐ । रिप पद भाखि तुपक के नाम लहीजिऐ । हो सु कबि दोहरा माँहि निडर हुइ दीजिऐ ॥ १२६९ ॥ असुदा शबद सु मुख ते आदि उचारकै । तीन बार त्रिप शबद तवन के डारकै । रिप कहि नाम तुपक के चतुर बिचारिऐ । हो छंद सोरठा माहि निशंक उचारिऐ ॥ १२७० ॥ प्रिथम प्राण दा पद को सु कबि बखानिऐ । चार बार त्रिप शबद तवन के ठानिऐ । अरि कहि नाम तुपक के ह्रिदे पछानिऐ । हो सुधनि सवैया भीतर निडर बखानिऐ ॥ १२७१ ॥ जीवदत पद प्रिथम उचारन कीजिऐ । चार बार त्रिप शबदहि अंत भणीजिऐ । अरि कहि नाम तुपक के ह्रिदे पछान लै । हो कही हमारी आज ह्रिदे पहिचान लै ॥ १२७२ ॥ ॥ चौपई ॥ बपुदा पद को प्रिथम उचारहु । चार बार नाइक पद डारहु । शत्र शबद को बहुर भणिज्जै । नाम तुपक के सभ लहि लिज्जै ॥ १२७३ ॥ बहुर देह दा शबद बखानो । चार बार पति शबद प्रमानो । अरि कहि नाम तुपक के

के नामों को जान लो ॥ १२६७ ॥ सुधा शब्द को पहले कहकर उसके अन्त में तीन बार नृप पद जोड़ो और रिपु पद कहकर तुपक के नामों को निःसंकोच प्रयुक्त करने के लिए जान लो ॥ १२६८ ॥ पयूख पद पहले कहकर तीन बार नृप शब्द लगाओ और रिपु पद उसमें जोड़कर तुपक के नामों को जान लो ॥ १२६९ ॥ असुदा शब्द को कहकर तीन बार नृप शब्द जोड़कर उसमें रिपु शब्द लगाकर तुपक के नामों को छन्द-सोरठा में प्रयुक्त करने के लिए जान लो ॥ १२७० ॥ पहले प्राण पद कहकर चार बार नृप शब्द जोड़ो और अन्त में अरि शब्द कहकर तुपक के नामों को जान लो ॥ १२७१ ॥ जीवदत्त पहले कहकर चार बार नृप शब्द कहिए और मेरी बात को आज सत्य मानते हुए अन्त में अरि पद जोड़कर तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १२७२ ॥ ॥ चौपाई ॥ बपुदा पद को पहले कहकर चार बार नायक पद तथा अन्त में शत्रु शब्द कहकर तुपक के सभी नामों को जान लो ॥ १२७३ ॥ देह शब्द

लहिऐ । झूला छंद बीचि हसि कहिऐ ।। १२७४ ।। प्राणदत्त पद प्रिथम भणीजै । चार बार न्रिप शबद धरीजै । अरि पद ता के अंत बखानहु । सभ स्री नाम तुपक के जानहु ।। १२७५ ।। ।। अड़िल्ल ।। जरा शबद कहु मुख सो आदि बखानिऐ । रिप कहि न्रिप पद बार चार फुनि ठानिऐ । शत्र शबद (मू०ग्रं०८०३) को ता के अंत बखानकै । हो सकल तुपक के नाम लीजिऐ जानकै ।। १२७६ ।। प्रिथम बिरधता शबद उचारन कीजिऐ । शत्रु शबद को ता के अंत भनीजिऐ । बहुर शत्र पद तिह तुपरांत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम चतुर चित जानिऐ ।। १२७७ ।। ।। चौपई ।। जरा शबद कहु आदि उचरिऐ । हरि पद अंत तवन के धरिऐ । अरि पद मुख ते बहुर बखानै । नाम तुपक के होइ प्रमानै ।।१२७८।। ।। अड़िल्ल ।। आलस शबद सु मुख ते आदि बखानिऐ । चार बार त्रिप शबद सु अरि कहि ठानिऐ । सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ । हो छंद पाधड़ी माँझ निडर होइ दीजिऐ ।। १२७९ ।। तरन दंत पद मुख ते आदि बखानिऐ । अरि कहि न्रिप पद बार चार पुन ठानिऐ । अरि कहि नाम तुपक के ह्रिदै बखानिअहि । हो छंद रुआला बिखै निडर

कहकर चार बार पति शब्द और अन्त में अरि पद लगाओ तथा झूला छन्द में मुस्कारते हुए उसका प्रयोग करो ।। १२७४ ।। प्राण दत्त पहले कहकर चार बार नृप शब्द लगाओ और अन्त में अरि पद जोड़कर तुपक के सभी नामों को जान लो ।। १२७५ ।। ।। अड़िल ।। जरा शब्द मुख से कहकर रिपु पद जोड़कर चार बार नृप पद लगाओ, पुनः शत्रु शब्द को अन्त में लगाकर तुपक के नामों को जान लो ।। १२७६ ।। वृद्धता पद पहले कहकर .शत्रु शब्द को उसके बाद जोड़कर पुनः शत्रु पद लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १२७७ ।। ।। चौपाई ।। जरा शब्द का उच्चारण कर उसके साथ हरि पद लगाओ और पुनः अरि पद मुख से कहकर तुपक के समम्त नामों को प्रमाणिक रूप से जान लो ।। १२७८ ।। ।। अड़िल ।। आलस्य शब्द कहकर चार बार नृप शब्द लगाओ तथा पुनः अरि शब्द जोड़ो । इस प्रकार तुपक के समस्त नामों को जान लो और पाधड़ी छन्द में निर्भय होकर उनका प्रयोग करो ।। १२७९ ।। तरुण दन्त पद मुख से कहकर अरि पद कहो । पुनः नृप पद चार बार कहकर अरि पद का उच्चारण करो और रुआला छन्द में तुपक के

होइ ठानिअहि ॥१२८०॥ जोबनांत अंतक पद प्रिथम उचारिए। चार बार त्रिप शबद तवन पर डारिऐ। अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछानिऐ। हो छंद चौपई माहि निशंक बखानिऐ ॥१२८१॥ तरन दंत कर शबद सु मुख ते भाखिऐ। चतुर बार त्रिप शबद तवन के राखिऐ। सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिऐ। हो सुधनि दोहरा माहि निडर हुइ दीजिऐ ॥१२८२॥ जोबनारि अरि पद को आदि बखानिऐ। चार बार त्रिप शबद तवन के ठानिऐ। शत्र शबद को अंत तवन के भाखिऐ। हो सकल तुपक के नाम चतुर चित राखिऐ ॥ १२८३ ॥ चतुरथवसथा अरि पद आदि बखानिऐ। चतुर बार त्रिप शबद तवन के ठानिऐ। शत्र शबद को अंत सु बहुर बखानकै। हो सकल तुपक के नाम लीजिऐ जानकै ॥ १२८४ ॥ जमपासी के नामन आदि उचारिऐ। हर कहि त्रिप पद बार चार फुनि डारिऐ। सु कबि तुपक के नाम भाख अरि लीजिऐ। हो सुधनि सवैया माँझ निडर हुइ दीजिऐ ॥ १२८५ ॥ अरि बलारि (मू०ग्रं०८०४) अरि आदि उचारन कीजिऐ। चार बार पति शबद तवन के दीजिऐ। सकल तुपक के नाम जान जिय लीजिअहि। हो छंद कुंडरीआ माहि शंक तजि दीजिअहि ॥ १२८६ ॥ आरजार अरि आदि

नामों का वर्णन करो ॥ १२८० ॥ यौवनान्तक पद कहकर चार बार नृप शब्द जोड़ो और अरि पद लगाते हुए तुपक के नामों को पहचान कर उन्हें चौपाई छन्द में प्रयुक्त करो ॥ १२८१ ॥ तरुण दन्त शब्द कहकर चार बार नृप शब्द लगाओ और इस प्रकार तुपक के नामों को सुधिपूर्वक दोहा-छन्द में प्रयुक्त करो ॥ १२८२ ॥ यौवनारि अरि पद को कहकर चार बार नृप शब्द को लगाओ और इन सबके अन्त में शत्रु शब्द को कहते हुए तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १२८३ ॥ चतुर्थअवस्था अरि पद कहकर चार बार नृप शब्द लगाकर अन्त में शत्रु शब्द को कहते हुए तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १२८४ ॥ यमपाश के नामों का पहले उच्चारण कर हर पद लगाकर चार बार नृप पद को जोड़ो और इस प्रकार हे सुकवि ! तुपक के नामों को जान लो तथा सवैयों में उनका सुधिपूर्वक प्रयोग करो ॥ १२८५ ॥ अरिबलारि अरि पद पहले कहकर चार बार पति शब्द को जोड़ो और तुपक के समस्त नामों को कुण्डलिया छन्द में प्रयुक्त करने के लिए जान लो ॥ १२८६ ॥

उचारन कीजिए। चार बार त्रिप पद को बहुर भणीजिए। अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछानिए। हो छंद झूलना माहि निशंक बखानिए॥ १२८७॥ देहबासी अर हर पद आदि भनीजिए। चार बार त्रिप शबद सु बहुर कहीजिए। अरि कहि नाम तुपक के चतुर बिचारिऐ। हो छंद अड़िल के माँहि निडर कहि डारिऐ॥ १२८८॥ बपुबासी अरिअर शबदादि बखानिए। चार बार त्रिप शबद तवन के ठानिए। अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछानिऐ। हो छंद चंचरीआ माहि निशंक प्रमानिऐ॥ १२८९॥ तनबासीअर हर को आदि बखानकै। चार बार त्रिप शबद तवन के ठानकै। अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछानिऐ। हो करहु उचारन तहाँ जहाँ जिय जानिऐ॥१२९०॥ असुर शबद को आदि उचारन कीजिए। पित कहि त्रिप पद अंत तवन के दीजिए। अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछानिऐ। हो निडर बखानो तहाँ जहाँ जिय जानिऐ॥ १२९१॥ राछसारि पद मुख ते आदि बखानिअहु। चार बार पति शबद तवन के ठानिअहु। अरि कहि नाम तुपक के चित मै जान लै। हो जो पूछै तुहि आइ निशंक बताइदै॥१२९२॥ दानवारि पद मुख ते सुघरि प्रिथम

आरजार अरि पद पहले कहकर चार बार नृप पद को लगाओ और अरि पद कहते हुए झूलना छन्द में प्रयुक्त करने के लिए तुपक के नामों को पहचान लो॥ १२८७॥ देहवासी (प्राण) अरि अर पद पहले कहकर चार बार नृप शब्द को कहते हुए अरि पद जोड़ो और तुपक के नामों को विचार कर अड़िल छन्द में निर्भय होकर प्रयुक्त करो॥ १२८८॥ वपुवासी अरि शब्द पहले कहकर चार बार नृप शब्द को जोड़ो और अरि पद का उच्चारग करते हुए चंचरिया छन्द में प्रयुक्त करने के लिए तुपक के नामों को जान लो॥ १२८९॥ तनवासी अरि हर पद को पहले कहकर चार बार नृप शब्द को जोड़ो और अरि पद कहते हुए मनचाहा प्रयोग करने के लिए चतुरतापूर्वक तुपक के नामों को पहचान लो॥ १२९०॥ असुर शब्द को पहले कहकर पितृ पद और नृप पद अन्त में लगाओ और पुनः अरि पद कहकर मनचाहा प्रयोग करने के लिए तुपक के नामों को पहचान लो॥ १२९१॥ राक्षसारि पद कहकर चार बार पति शब्द जोड़ो और अन्त में अरि पद कह-कहकर सबको निःसंकोच बताने के लिए तुपक के नामों को जान लो॥ १२९२॥ दानवारि

उचर । चार बार त्रिप शबद तवन के अंत धर । अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछान लै । हो सु कबि सभा के माँझ निडर हुइ भाखदै ॥ १२९३ ॥ अमरारदन अर आदि सु कबि उचारकै । तीन बार त्रिप शबद अंत तिह डारकै । अर कहि नाम तुपक के सकल सुधार लै । हो पड़्यो चहत तिह नर को तुरत सिखाइदै ॥ १२९४ ॥ शक्र शबद कहु आदि उचारन कीजिऐ । अरि अरि कहि पति चार बार पद दीजिऐ । शत्र शबद कहु ता के अंत बखानिऐ । हो सकल तुपक के नाम चतुर जिय जानिऐ ॥ १२९५ ॥ (मू०ग्रं०८०५) सतक्रित अर अर आदि उचारन कीजिऐ । चार बार त्रिप शबद तवन के दीजिऐ । शत्र शबद को ता को अंत बखानकै । हो सकल तुपक के नाम नाम लीजिअहु जानकै ॥ १२९६ ॥ सचीपतिर अर आदि शबद कहु भाखिऐ । चार बार त्रिप शबद तवन के राखिऐ । अरि कहि नाम तुपक के चतुर पछानिऐ । हो छंद झूलना माँझ निशंक बखानिऐ ॥ १२९७ ॥ सक्ररदन अर रिप पद आदि बखानकै । तीन बार त्रिप पद कहु बहुर प्रमानकै । शत्र शबद कहि नाम तुपक के जानिऐ । हो झूला छंदन माँझ निशंक बखानिऐ ॥ १२९८ ॥ आदि शबद पूरहूतर

पद पहले कहकर चार बार नृप शब्द को लगाओ और अरि पद जोड़ते हुए तुपक के नामों को निर्भयतापूर्वक कहने के लिए जान लो ॥ १२९३ ॥ अमरारदन अरि पद पहले कहकर तीन बार नृप शब्द अन्त में जोड़कर पुनः अरि शब्द कहकर तुपक के समस्त नामों को सबको शिक्षित करने के लिए जान लो ॥ १२९४ ॥ सक्र शब्द को पहले कहकर अरि पद लगाकर चार बार पति पद उच्चारण कर एवं पुनः अन्त में शत्रु शब्द जोड़कर चतुरतापूर्वक तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १२९५ ॥ सतक्रत अरि अरि पद का उच्चारण कर चार बार नृप शब्द को जोड़ो और उसके अन्त में शत्रु शब्द लगाकर तुपक के नामों को जान लो ॥ १२९६ ॥ शचीपतिर अरि शब्द पहले कहकर चार बार नृप शब्द रखो पुनः अरि पद रखकर तुपक के नामों को जान लो और झूलना छन्द में उनका निःसंकोच प्रयोग करो ॥ १२९७ ॥ सक्ररदन अरि रिपु पद कहकर तीन बार नृप पद को लगाओ और शत्रु पद को जोड़कर झूला छन्द में प्रयुक्त करने के लिए तुपक के नाम जान लो ॥१२९८॥ पुरहूतरि पद कहकर पुनः अरि पितनीश अरि पद कहो और सोरठा में

उचारन कीजिऐ । अरि कहि पितणीस अरि पद बहुर भनीजिऐ । सकल तुपक के नाम चतुर लहि लीजिऐ । हो सुघर सोरठा माझि निडर हुइ दीजिऐ ॥ १२९९ ॥ बासवारि अरि आदि उचारन कीजिऐ । पितणी इसणी अरणी अंत भणीजिऐ । सकल तुपक के नाम चतुर जिय जानिऐ । हो छंद दोहरा माहि निशंक बखानिऐ ॥ १३०० ॥ आदि ब्रितहा अरि अरि पदहि प्रमानकै । तीन बार इस शबद तवन के ठानकै । रिप पुन ठान तुपक के नाम पछान लै । हो पड़ियो चाहत जो नर तिह भेद बताइदै ॥ १३०१ ॥ मघवांतक अर आदि शबद को भाखिऐ । तीन बार त्रिप पदहि तवन के राखिऐ । रिप कहि नाम तुपक के सुघर लहीजिऐ । हो कथा कीरतन माँझि निशंक भणीजिऐ ॥ १३०२ ॥ मातलेस्र अर शबदहि आदि बखानकै । तीन बार त्रिप शबद तवन के ठानकै । शत्र शबद फुन ता के अंत उचारिऐ । हो सकल तुपक के नाम सुमत्त सँभारिऐ ॥ १३०३ ॥ जिसनातक अंतक शबदादि उचारिऐ । तीन बार पद राज तवन के डारिऐ । अरि पुनि तवनै अंत शबद के दीजिऐ । हो सकल तुपक के नाम सुघर लहि लीजिऐ ॥१३०४॥ पुरंद्रार अर आदि शबद कहु भाखकै । तीन बार त्रिप पदहि अंत तिह राखकै । बहुर शत्र पद अंत तवन के दीजिऐ । हो सुघर तुपक के नाम सदा लखि

नि:संकोच प्रयुक्त करने के लिए तुपक के नामों को चतुरतापूर्वक जान लीजिए ॥ १२९९ ॥ वासवारि अरि पद कहकर पितनी ईशनी ईशनी अरिनी पद लगाओ और दोहा छन्द में प्रयुक्त करने के लिए तुपक के नामों को जान लो ॥ १३०० ॥ वृत्तहा अरि अरि पद कहकर तीन बार ईश पद को जोड़कर पुनः रिपु पद लगाकर तुपक के नामों को जान लो और जो जानना चाहे उसे बता दो ॥ १३०१ ॥ मघवान्तक अरि शब्द पहले कहकर तीन बार नृप पद रखो और रिपु पद जोड़कर कथा-कीर्तन में प्रयुक्त करने के लिए तुपक के नामों को जान लो ॥ १३०२ ॥ मातलेश्वर अरि शब्द पहले कहकर तीन बार नृप शब्द लगाओ । शत्रु शब्द पुनः अन्त में कहकर तुपक के नामों को मतिपूर्वक जान लो ॥ १३०३ ॥ जिसनातक अन्तक शब्द पहले कहकर तीन बार राज पद को जोड़ो और पुनः अरि पद को अन्त में लगाते हुए तुपक के समस्त नामों को जान लो ॥ १३०४ ॥ पुरन्दरारि अरि पद पहले कहकर तीन बार

लीजिऐ ।। १३०५ ।। (मू०ग्रं०८०६) ।। चौपई ।। बज्रधरर अर आदि बखानहु । तीन बार ईशर पद ठानहु । अरि पुनि अंत बहुर तिह दीजै । सभ स्री नाम तुपक लहि लीजै ।। १३०६ ।। ।। अड़िल्ल ।। तुराखाड़ अर अर पद आदि उचारिऐ । तीन बार त्रिप पदहि अंत तहि धारिऐ । शत्र बहुर पुन अंत तवन के ठानकै । हो सकल तुपक के नाम लीजिअहु जानकै ।।१३०७।। रिप पाकर रिप शबद अंत तिह भाखिऐ । नाइक पद त्रै बार तवन के राखिऐ । रिप पुन ता के अंत सुघर कहि दीजिऐ । हो नाम तुपक बहु चीन उचार्यो कीजिऐ ।।१३०८।। इंद्रांतक अर आदि शबद को भाखिऐ । नाइक पद त्रै बार तवन के राखिऐ । शत्र शबद पुन ता के अंत धरीजिऐ । हो सकल तुपक के नाम जान मन लीजिऐ ।। १३०९ ।। देव शबद को मुख ते आदि बखानिऐ । अरदन कहि अरदन पद अंत प्रमानिऐ । तीन बार पति शबद तवन के भाखिऐ । हो अरि कहि नाम तुपक के मन महि राखिऐ ।। १३१० ।। अमरा अरदन शबद सु मुख ते भाखिऐ । नाइक पद त्रै बार तवन के राखिऐ । रिप कहि नाम तुपक के सुघर पछानिऐ । हो भेदा भेद कबित के माँहि बखानिऐ ।। १३११ ।। निरजरारि अरदन

नृप पद अन्त में रखो, पुनः शत्रु पद उसमें जोड़कर विद्वत्तापूर्वक तुपक के नामों को जान लो ।। १३०५ ।। ।। चौपाई ।। वज्रधरर अरि पद कहकर तीन बार ईश्वर पद जोड़ो, अन्त में पुनः अरि पद लगाओ और तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १३०६ ।। ।। अड़िल ।। तुषार अरि अरि पद पहले कहकर तीन बार नृप पद अन्त में रखो, पुनः शत्रु शब्द अन्त में लगाकर तुपक के समस्त नामों को जान लो ।। १३०७ ।। रिपुपाकर रिपु शब्द कहकर तीन बार नायक पद लगाओ, अन्त में पुनः रिपु पद कहकर तुपक के नामों का उच्चारण करो ।। १३०८ ।। इन्द्रान्तक अरि शब्द पहले कहकर तीन बार नायक पद रखो और पुनः शत्रु शब्द अन्त में रखकर तुपक के समस्त नामों को मन में जान लो ।। १३०९ ।। देव शब्द मुख से कहकर अरदन पद अन्त में लगाओ, पश्चात् तीन बार पति शब्द को कहो, पुनः अरि पद कहकर तुपक के नामों को मन में जान लो ।। १३१० ।। अमरा अरदन शब्द कहकर नायक पद तीन बार रखो, पुनः रिपु पद कहकर बिना किसी भेद के तुपक के नामों का काव्य में प्रयोग कीजिए ।। १३११ ।। निर्जरारि अरदन पद पहले कहकर तीन बार नृप शब्द

पद प्रिथम उचारकै। तीन बार न्रिप शबद तवन के डारकै। अरि कहि नाम तुपक के सुघर लहीजिऐ। हो अड़िल्ल छंद के माँहि निडर हुइ दीजिऐ॥ १३१२॥ बिबुधांतक अंतक शबदादि उचार कर। तीन बार न्रिप शबद तवन के डार कर। रिप कहि नाम तुपक के सुघर बिचारिऐ। हो छंद रुआला माँझ निशंक उचारिऐ॥ १३१३॥ सपरबाण परि अरि पद प्रिथम भणीजिऐ। तीन बार पति शबद तवन पर दीजिऐ। अरि पद भाख तुपक के नाम पछानिअहु। हो छंद चंचरीआ माँझ निडर हुइ ठानिअहु॥ १३१४॥ प्रिथम शबद त्रिदवेस उचारन कीजिऐ। अरि अरि कहि न्रिप पद त्रै वार भणीजिऐ (मू०ग्रं०८०७) शत्र शबद ता के पुन अंत उचारिऐ। हो सकल तुपक के नाम सबुद्ध बिचारिऐ॥१३१५॥ ब्रिंदारक अर अर शबदादि उचारिजै। तीन बार अरि शबद तवन के डारिजै। शत्र शबद ता के पुन अंत भनीजिऐ। हो सकल तुपक के नाम सुमति लहि लीजिऐ॥ १३१६॥ सभ बिवान के नाम भाखि गति भाखिऐ। अरि अरि कहि न्रिप चार बार पद राखिऐ। बहुर शत्र पुन अंत तवन के दीजिऐ। हो सकल तुपक के नाम सुमति लहि लीजिऐ॥ १३१७॥ आदि अगनजिम पद को सु पुनि बखानिऐ। अरि अरि कहि

को उसमें जोड़ो और अरि पद कहकर अड़िल छन्द में प्रयुक्त करने के लिए तुपक के नामों को जान लो॥ १३१२॥ विबुधान्तक अन्तक शब्द पहले कहकर तीन बार नृप शब्द उसमें लगाकर रिपु पद कहकर रुआला छन्द में निःसंकोच प्रयुक्त करने के लिए तुपक के नामों को जान लो॥ १३१३॥ सपरबाण परि अरि पद पहले कहकर तीन बार पति शब्द उसमें जोड़ो, पुनः अरि पद कहकर तुपक के नामों को जान लो और चंचरिया छन्द में निडर होकर उनका प्रयोग करो॥ १३१४॥ त्रिदेवेश पद का उच्चारण कर अरि अरि लगाकर तीन बार नृप पद जोड़ो। पुनः शत्रु शब्द को अन्त में जोड़ो और तुपक के नामों को जान लो॥ १३१५॥ बृन्दारक अरि अरि शब्द पहले कहकर तीन बार अरि शब्द को जोड़ो और पुनः शत्रु शब्द को अन्त में कहकर तुपक के समस्त नामों को जान लो॥ १३१६॥ सब विमानों के नाम कहकर गति पद कहो। फिर अरि अरि कहकर चार बार नृप पद को रखो, पुनः शत्रु पद अन्त में लगाओ और सुमतिपूर्वक तुपक के नामों को जान लो॥ १३१७॥

त्रिप चार बार पुन ठानिऐ । रिप पद भाखि तुपक के नाम पछानिऐ । हो कबित काबि के माँझि निशंक प्रमानिऐ ।। १३१८ ।। (मू०ग्रं०८०८)

।। इति स्री शसत्र नाममाला पुराणे पाँचवों अधिआइ समापतम सतु सुभम सतु ।।

अगनजिम पद को पहले कहकर अरि अरि कहकर पुनः चार बार नृप पद को लगाओ । पुनः रिपु पद को कहकर तुपक के नामों को पहचानो और कवित्त काव्य में उनका निःसंकोच प्रयोग करो ।। १३१८ ।।

।। इति श्री शस्त्रनाममाला पुराण के पाँचवे अध्याय की शुभ सत समाप्ति ।।

१ ओं स्री वाहिगुरू जी की फतह ।।

स्री भगउती जी सहाइ ।।

अथ पख्यान चरित्र लिख्यते ।।

पातिशाही १० ।।

अथ चण्डी चरित्र कथनं ।।

।। भुजंग छंद ।। ।। त्वप्रसादि ।। तुही खड़गधारा तुही बाढवारी । तुही तीर तलवार काती कटारी । हलब्बी जुनब्बी मगरबी तुही हैं । निहारौ जहाँ आपु ठाढी वही हैं ।। १ ।। तुही जोगमाया तुही बाकबानी । तुही आपु रूपा तुही स्री भवानी । तुही बिशन तूँ ब्रहम तूँ रुद्र राजै ।

पख्यान-चरित्र-लेखन (चण्डी-चरित्र-कथन)

।। भुजंग छंद ।। ।। तेरी कृपा से ।। तुम ही सीधे खड्ग की धार और काटनेवाली तलवार हो । तुम ही तीर, तलवार, काती, कटारी, हलब्बी, जुनब्बी, मगरबी आदि अस्त्र-शस्त्र.हो । मैं जिस ओर देखता हूँ, सर्वत्र (तुम्हें) खड़ी पाता हूँ ।। १ ।। तुम ही योगमाया, सरस्वती-रूपा, भवानी आदि हो । तुम ही विष्णु, ब्रह्मा, रुद्र एवं विश्वमाता के रूप में सदैव विराजमान हो ।। २ ।।

तुही बिस्वमाता सदा जै बिराजै ॥ २ ॥ तुही देव तूँ दैत तै चछु उपाए । तुही तुरक हिंदू जगत मै बनाए । तुही पंथ ह्वै अवतरी स्रिशटि माँही । तुही बक्रत ते ब्रहम बादो बकाही ॥ ३ ॥ तुही बिक्रत रूपा तुही चारु नैनाँ । तुही रूप बाला तुही बक्र बैनाँ । तुंही बक्र ते बेद चारो उचारे । तुही सुंभ नैसुंभ दानौ सँघारे ॥ ४ ॥ जगै जंग तोसौ भजै भूप भारी । बधे छाडि बाना कढी बार बारी । तूँ नरसिंघ ह्वैकै हिरानाछ मार्यो । तुही दाढ़ पै भूमि को भार धार्यो ॥ ५ ॥ तुही राम ह्वैकै हठी दैत घायो । तुही क्रिशन ह्वै कंश केसी खपायो । तुही जालपा कालका कै बखानी । तुही चौदहूँ लोक की राजधानी ॥ ६ ॥ तुही काल की रात्रि ह्वैकै बिहारै । तुही आदि उपावै तुही अंत मारै । तुही राज राजेस्वरी कै बखानी । तुही चौदहूँ लोक की आपु रानी ॥ ७ ॥ तुमै लोग उग्रा अति उग्रा बखानै । तुमै अद्रजा ब्यास बानी पछानै । तुही शेश की आपु सेज्या बनाई । तुही केसरी बाहनी कै कहाई ॥ ८ ॥

तुम्हीं ने देव, दैत्य, यक्ष, तुर्क, हिन्दू आदि इस संसार में बनाये । तुम ही इस संसार में विभिन्न मार्गों के रूप में अवतरित हुई हो और तुम ही ने वाद-विवाद करनेवाले लोगों को उत्पन्न किया ॥ ३ ॥ तुम ही विकृत स्वरूप वाली, सुन्दर नयनों वाली, रूप वाली एवं कुटिल वाणी वाली हो । तुम्हीं ने अपने मुखों से चारों वेदों का उच्चारण किया और तुम्हीं ने शुम्भ और निशुम्भ दैत्यों का संहार किया ॥ ४ ॥ तुम ही से युद्ध की भीषणता बढ़ती है और बड़े-बड़े राजा तुम्हारा स्मरण करते हैं, तथा वाणों और तलवारों से सेनाओं का वध करते हैं । तुम ही ने नरसिंह रूप धारण कर हिरण्यकशिपु को मारा और तुम ही ने वाराह रूप में दन्त पर पृथ्वी के भार को धारण किया ॥ ५ ॥ तुम ही राम बनकर हठी दैत्यों का नाश किया और तुम ही ने कृष्ण बनकर कंस, केशी को नष्ट किया । तुम्हें ही जालपा, कालका आदि नामों से जाना जाता है । और तुम्हें चौदह लोकों की राजधानी मानी जाती है ॥ ६ ॥ तुम ही कालरात्रि होकर विचरण करती हो औप तुम ही सृष्टि का प्रारम्भ: और अन्त में सृष्टि का संहार भी करती हो । राज-राजेश्वरी के रूप में तुम्हारा ही वर्णन हुआ है और तुम ही चौदह लोकों की रानी हो ॥ ७ ॥ उग्र लोग तुम्हें अति उग्र रूप में वर्णित करते हैं और तुम्हें ही महान व्यास वाणी के रूप में पहचाना जाता है । तुम ही शेष-शय्या बनानेवाली हो और तुम्हें ही सिंहवाहनी के

तुतो सार कूटान करिकै सुहायो। तुही चंड औ मुंड दानो खपायो। तुही रकतबीजार सौं जुद्ध कीनो। तुही हाथ दै राखि देवे सु लीनो ॥९॥ तुही महिखदानो बडे कोपि घायो। तूँ धूम्राछ ज्वालाछ की सौ जरायो। तुही कौच बक्रतापने ते उचार्यो। बिडालाछ (मू०ग्रं०८०९) औ चिच्छुराछस बिडार्यो ॥ १० ॥ तुमी डह डहकै डवर को बजायो। तुही कह कहकै हसो जुद्धु पायो। तुही अशट अशटहाथ मै अस्त्र धारे। अजै जै किते केस हूँ ते पछारे ॥ ११ ॥ जयंती तुही मंगला रूप काली। कपालनि तुही है तुही भद्रकाली। द्रुगा तूँ छिमा तूँ शिवा रूप तोरो। तुधात्री स्वाहा नमशकार मोरो ॥ १२ ॥ तुही प्रात संध्या अरुन बस्त्र धारे। तुमं ध्यान मै सुकल अंबर सुधारो। तुही पीत बाना सयंकाल धार्यो। सभै साधुअन को महा मोह टार्यो ॥ १३ ॥ तुही आप को रकत दंता कहै है। तुही बिप्र चितान हूँ को चबै है। तुही नंद के धाम में औतरैगी। तुसाकंभरी साक सो तन भरैगी ॥१४॥ तु बौधा तुही मच्छ को रूप कैहै। तुही कच्छ

रूप में जाना जाता है ॥ ८ ॥ तुम्हारे हाथ में काटनेवाला लोहा शोभायमान होता है और तुम ही ने चण्ड और मुण्ड दैत्यों को नष्ट कर दिया था। तुम ही ने रक्तबीज नामक शत्रु से युद्ध किया और तुम ही ने अपने वरदहस्त से देवताओं की रक्षा की ॥ ९ ॥ तुम ही ने कुपित होकर महिषासुर दानव को मारा और धूम्राक्ष, ज्वालाक्ष आदि को जलाकर नष्ट कर दिया। तुम ही ने विभिन्न कवचों का उच्छेद कर डाला और विड़ालाक्ष और चक्षुरासुर का नाश किया ॥ १० ॥ तुम ही ने धम-धमाकर डमरू को बजाया और तुम ही ने हड़-हड़ाकर युद्ध में अट्टहास किया। तुम ही ने अष्ट भुजाओं में आठ अस्त्र धारण किए और अजेय वीरों को जीतकर उन्हें केशों से पकड़कर पछाड़कर फेंक दिया ॥ ११ ॥ तुम ही जयन्ती मंगला काली, कापाली, भद्रकाली, दुर्गा, क्षमादात्री एवं शिवा-स्वरूप हो। तुम ही सबकी धात्री हो और तुम्हें मेरा नमस्कार है ॥ १२ ॥ अरुण वस्त्रों को धारण करनेवाली ऊषा और सन्ध्या तुम ही हो। शुक्ल (सफ़ेद) वस्त्रों को धारण किए हुए ध्यान में आनेवाली भी तुम ही हो। तुम ही पीले वस्त्र धारण करनेवाली हो और तुम ही साधु-संन्यासियों के मोह को हटानेवाली हो ॥ १३ ॥ तुम ही रक्तदन्ता हो और तुम ही विप्रों की चिन्ताओं को नष्ट करनेवाली हो। तुम ही नन्द के घर में अवतार लेनेवाली हो और तुम ही शक्ति से परिपूर्णा हो ॥ १४ ॥ तुम

ह्वैकै समुंद्रहि मथैहै। तुही आपु दिज राम को रूप धरि है। निछत्ता प्रिथी बार इक्कीस करि है॥ १५॥ तुही आप कौ निहकलंकी बनैहै। सभै ही मलेछान को नास कैहै। मया जान चेरो मया मोहि कीजै। चहौं चित्त मै जो वहै मोहि दीजै॥ १६॥ ॥ स्वैया॥ मुंड की माल दिसान के अंबर बाम कर्‌यो गल मैं असि भारो। लोचन लाल कराल दिपै दोऊ भाल बिराजत है अनियारो। छूटे है बाल महा बिकराल बिसाल लसै रद पंति उज्यारो। छाडत ज्वाल लए कर ब्याल सु काल सदा प्रतिपाल तिहारो॥ १७॥ भान से तेज भयानक भूतज भूधर से जिनके तन भारे। भारी गुमान भरे मन भीतर भार परे नहि सी पग धारे। भालक ज्यों भभकै बिनु भैरन भैरव भैरि बजाइ नगारे। ते भट झूमि गिरे रनभूमि भवानी जूके भलकान के मारे॥ १८॥ ओट करी नहि कोटि भुजान की चोट परे रन कोटि सँघारे। कोटन से जिनके तन राजित बासव सौ कबहूँ नहि हारे। रोस भरे न फिरे रन ते तन बोटिन लै नभ गीध पधारे। ते

ही बुद्ध, मत्स्य एवं कच्छप बनकर समुद्र-मन्थन करनेवाली हो और तुम ही ब्राह्मण परशुराम का रूप धारण कर इक्कीस बार पृथ्वी से क्षत्रियों को नाश करनेवाली हो॥ १५॥ तुम ही निःकलंकी अवतार बनकर सभी म्लेच्छों को नाश करोगी। हे माँ! मुझे अपना सेवक समझकर मुझ पर कृपा करो और जो मैं चाहता हूँ, मुझे वही प्रदान करो॥ १६॥ ॥ सवैया॥ तुमने मुंड की माला, दिशाओं के कपड़े और शरीर पर भारी तलवार धारण कर रखी है। तुम्हारे विकराल लाल नेत्र और मस्तक देदीप्यमान होकर शोभायमान हो रहा है। तुम्हारे विशाल केश खुले हुए हैं और दन्तपंक्ति से प्रकाश निकल रहा है। तुम्हारे हाथों के सर्प ज्वालाएँ छोड़ रहे हैं और (महा) काल तुम्हारा सदैव रक्षक है॥ १७॥ सूर्य के समान तेजवान और पर्वतों के समान भारी तन वाले, वे राजागण जो भारी गर्व से इतना भरे हुए हैं कि उनका पैर धरती पर नहीं टिकता; उन भालुओं के समान और भैरवों के समान भभकने वाले महाबलियों को श्रीभवानी ने और उसके महाबलियों ने काटकर तत्काल भूमि पर गिरा दिया॥ १८॥ जिनको करोड़ों भुजाओं की परवाह नहीं है और युद्ध में जिन्होंने कोटि-कोटि वीरों का संहार किया है। जिनके तन क़िलों के समान विशाल हैं और वे कभी इन्द्र से भी नहीं हारे; युद्ध में उनके तन की बोटियाँ बेशक गिद्धगण ले गए हों परन्तु वे कभी युद्ध से पीछे नहीं हटे। इस

त्रिप घूमि गिरे रनभूमि सु काली के कोप क्रिपान के मारे ॥१९॥ अंजन से तन उग्र उदा युधु धूमरीधूरि भरे गरबीले। चौपि चड़े चहूँ ओरन तें चित भीतरि चौपि जिरे चटकीले। धावत ते धुरवा से दसो दिसि ते झट दै पटके बिकटीले। रौर परे रन राजिवलोचन रोस भरे रन सिंघ रजीले ॥२०॥ (मू०ग्रं०८१०) कोटिन कोट सौ चोट परी नहि ओट करी भए अंग न ढीले। जे निपटे अकटे भटते चटदै छित पै पटके गरबीले। जे न हटे बिकटे भट काहू सौ ते चटदै चटके चटकीले। रौर परे रन राजिवलोचन रोस भरे रन सिंघ रजीले ॥ २१ ॥ धूमरी धूरि भरे धुमरे तन धाए निसाचर लोह कटीले। मेचक पबन से जिनके तन कौच सजे मदमत्त जटीले। राम भनै अतिही रिसि जो जग नाइक सौ रन ठाट ठटीले। ते झट दै पटके छित पै रन रौर परे रन सिंघ रजीले ॥ २२ ॥ बाजत डंक अतंक समै लखि दानव बंक बडे गरबीले। छूटत बान कमानन के तनकै न भए तिनके तन ढीले। ते जग मान चितै

प्रकार के राजा काली की कुपित कृपाण से मारे हुए बिल-बिलाकर युद्धभूमि में गिर पड़े ॥ १९ ॥ जिनके तन अंजन के समान भयानक और धुएँ के समान सदैव ऊपर जानेवाले गर्वीले हैं, वे उत्साहित होकर चारों ओर से युद्ध के लिए आ भिड़े हैं। वे विकट वीर उड़ती हुई धूल के समान दशों दिशाओं से उमड़ पड़े हैं। कमल के समान नयनों वाले वे सुन्दर वीर क्रोधित होकर युद्ध के लिए चल पड़े ॥ २० ॥ अनेकों वीरों की चोटें, अनेकों वीरों पर पड़ी, परन्तु किसी का भी अंग तनिक भी ढीला नहीं हुआ। जो नहीं काटे जा सके उन्हें वीरों ने तत्काल धरती पर पटक दिया और फिर भी जो विकट वीर पीछे नहीं हटे, उन्हें चटककर चटका दिया गया। कमल के समान नेत्रों वाले वीर कुपित होकर युद्ध के लिए चल पड़े ॥ २१ ॥ धूम्र के समान रंग वाले और धूल मिट्टी से भरे हुए तथा लोहे को काट डालनेवाले निशाचर उमड़ पड़े। उनके तन पर्वतों के समान थे और वे मदमत्त असुर जटिल कवचों को धारण किये हुए थे। कवि राम का कथन है कि वे जगतनायक से युद्ध ठानने के लिए अत्यन्त क्रोधित होकर चल पड़े। उसने तत्काल उन शोभायुक्त एवं रण में उमड़कर आनेवाले वीरों को झटककर पृथ्वी पर पटक दिया ॥ २२ ॥ दानवों के बड़े बाँके गर्वीले वीरों को देखकर ढोल बजने लगे। कमानों से बाण छूटने लगे, परन्तु फिर भी उनके तन शिथिल नहीं हुए। जगतमाता ने चित्त में उन सभी वीरों के अभिप्राय को समझकर उन्हें धरती पर छिटका

चपिके चटिदै छितपै चटके चटकीले। रौर परे रन राजिवलोचन रोस भरे रन सिंघ रजीले ॥ २३ ॥ जंग जगे रन रंग समै अरिधंग करे भट कोटि दुसीले। रुंडन मुंड बिथार घने हर कौ पहिरावत हार छबीले। धावत हैं जितही तितही अरि भाजि चले कितही करि हीले। रौर परे रन राजिवलोचन रोस भरे रन सिंघ रजीले ॥ २४ ॥ सुंभ निसुंभ तें आदिक सूर सभे उमडे करि कोप अखंडा। कौच क्रिपान कमानन बान कसे कर धोप फरी अरु खंडा। खंड भए जु अखंडल ते नहि जीति फिरे बसुधा नवखंडा। ते जुध कोप गिरे बनि ओप क्रिपान के कीने किए कटि खंडा ॥ २५ ॥ ॥ तोटक छंद ॥ जब ही कर काल क्रिपान गही। नहि मोते प्रभा तिह जात कही। तिह तेजु लखे भट यौ भटके। मनो सुर चड़्यो उडसे सटके ॥ २६ ॥ कुपि कालि क्रिपान करं गहिकै। दल दैतन बीच परी कहिकै। घटिका इक बीच सभो हनिहौ। तुम ते नहि एक बली गनिहौ ॥ २७ ॥ ॥ सवैया ॥ मंदल तूर म्रिदंग मुचंगन की धुनि कै ललकारि परे। अरु मान भरे मिलि आनि अरे न गुमान कौ छाडिकै

डाला। कमल के समान नयनों वाले वीर क्रोध से भरकर युद्ध करने के लिए उमड़ पड़े ॥ २३ ॥ उस भीषण युद्ध के समय करोड़ों वीरों को दो खण्डों में काट डाला गया। मुण्डों को छितराकर सुन्दर मुण्डमालाएँ शिव को पहनायी जा रही हैं। दुर्गा जिस तरफ़ भी जाती हैं, शत्रु वलपूर्वक भाग खड़ा होता है। कमल के समान नेत्रों वाले योद्धागण सुसज्जित एवं कुपित होकर उमड़ पड़े ॥ २४ ॥ शुम्भ-निशुम्भ के समान शूरवीर अखण्ड रूप से कुपित होकर उमड़ पड़े हैं। उन्होंने कवच, कृपाण, कमान, बाण, खड्ग आदि धारण कर रखे हैं। जिन्होंने नौ खण्ड पृथ्वी को जीत लिया है और अखण्ड योद्धाओं से भी नहीं मारे गए वे काली की कुपित कृपाण से कटकर खण्ड-खण्ड होकर गिर पड़े ॥ २५ ॥ ॥ तोटक छन्द ॥ जव काली ने हाथ में कृपाण पकड़ी तो मैं उस शोभा का वर्णन नहीं कर सकता। उसको देखकर वीर इस प्रकार भाग खड़े हुए जैसे सूर्य निकलने से तारागण भाग खड़े होते हैं ॥ २६ ॥ काली हाथ में कृपाण पकड़कर और कुपित होकर दैत्यों के दल के बीच कूद पड़ी और कहने लगी, एक घड़ी के समय में सभी वीरों को नष्ट कर दूँगी और किसी को भी महाबली नहीं बना रहने दूँगी ॥ २७ ॥ ॥ सवैया ॥ नगाड़े, मृदंग, मुचंग की ध्वनि पर ललकार कर वीर टूट पड़े। वे गर्व से भरे हुए थे

पैंगु टरे। तिनके जस जद्दिप प्रान हरे न मुरे तब लौ इह भाँति अरे। जसको करिकै न चले डरिकै लरिकै मरिकै भवसिंध तरे ॥ २८ ॥ जे न मिटे बिकटे भट काहू सो बासव सो कबहूँ न पछेले। ते गरजे जब ही रन मैं गन भाजि चले बिनु आपु अकेले। (मू०ग्रं०८११) ते कुपि कालि कटे झट दै कदली बन ज्यों धरनी पर मेले। स्रोन रँगीन भए पट मानहु फागु समै सभ चाचरि खेले ॥ २९ ॥ ॥ दोहरा ॥ चढ़ी चंडिका चंड ह्वै तपत तांब्र से नैन। मत्त भई मदरा भए बकत अटपटे बैन ॥ ३० ॥ ॥ सवैया ॥ सभ शत्रून को हनिहौ छिन मै सु कह्यो बच कोप कियो मन मै। तरवारि सँभारि महाँ बल धारि धवाइकै सिंघ धसी रन मै। जगमात के आयुधु हाथन मै चमकै ऐसे दैतन के गन मै। लपकै झपकै बड़वानल की दमकै मनो बारिध के बन मै ॥ ३१ ॥ कोप अखंड कै चंडि प्रचंड मिआन ते काढि क्रिपान गही। दल देव औ दैतन की प्रतिना लखि तेग छटा छब रीझ रही। सिर चिच्छुर

और इस प्रकार वीरतापूर्वक अड़े हुए थे कि उन्होंने एक भी क़दम पीछे नहीं हटाया। यद्यपि यम ने उनके प्राणों का हरण कर लिया था तब भी वे युद्ध में अड़े हुए थे। वे भय-विहीन होकर यश का अर्जन करते हुए लड़कर मर गए और भवसागर को पार कर गए ॥ २८ ॥ जो शूरवीर किसी से भी नहीं मारे गये और जिनको इन्द्र भी पीछे नहीं धकेल पाया था, जब वे युद्ध में आकर गर्जना करने लगे तो हे जगतमाता ! तुम्हारे अतिरिक्त सब ही वीरगण भाग निकले। उन्हें काली ने कुपित होकर उसी प्रकार काट डाला जैसे कदली वन को काटकर धरती पर फेंक दिया जाता है। उनके वस्त्र इस प्रकार रक्त-रंजित हो गए थे मानो सभी फाग खेले हों ॥ २९ ॥ ॥ दोहा ॥ चण्डिका ताँबे के समान नेत्रों को तमतमाकर क्रोधित होकर चढ़ उठी और मदमस्त होकर अटपटे शब्दों में बोलने लगी ॥ ३० ॥ ॥ सवैया ॥ "मैं सब शत्रुओं को क्षण भर में मार दूँगी", ऐसा कहते हुए उसने मन में अत्यन्त क्रोध किया और तलवार को सँभालते हुए सिंह पर सवार होकर बलपूर्वक युद्धस्थल में टूट पड़ी। जगतमाता के शस्त्र दैत्यों के झुण्ड में ऐसे चमक रहे थे कि मानो समुद्र में बड़वानल (समुद्र की आग) की लपटें उठ रही हों ॥ ३१ ॥ भीषण रूप से क्रोधित होकर चण्डिका ने प्रचण्ड कृपाण को म्यान से निकाल लिया। देव-दैत्यों की सेना उस कृपाण की छवि को देखकर मुग्ध हो उठी। वह कृपाण

के इह भाँति परी नहि मों ते प्रभा तिह जात कही । रिपु मारकै फारि पहार से बैरी पतार लगे तरवारि बही ॥ ३२ ॥ ॥ दोहरा ॥ तुपक तबर बरछो बिसिख असि अनेक झमकाहि । धुजा पताका फरहरै भान न हेरे जाहि ॥ ३३ ॥ रन मारू बाजै घने गगन गीध मँडराहि । चटपट दै जोधा बिकट झटपट कटि कटि जाहि ॥ ३४ ॥ अनिक तूर भेरी प्रणव गोमुख अनिक म्रिदंग । संख बेनु बीना बजी मुरली मुरज मुचंग ॥३५॥ नाद नफीरी कानरे दुंदभ बजे अनेक । सुनि मारू कातर भिरे रन तजि फिर्‍यो न एक ॥ ३६ ॥ किचपचाइ जोधा मँडहि लरहि सनंमुख आन । धुकि धुकि परै कबंध भुअ सुर पुर करैं पयान ॥ ३७ ॥ रन फिरकत जंबुक फिरहि आमिख अचवत प्रेत । गीध मास लै लै उडहि सुभट न छाडहि खेत ॥ ३८ ॥ ॥ सवैया ॥ निस्स ननाद डहाडह डामर दै दै दमासन कौ निज काने । भूर दई तन को दल दारुन दीह हुते करि एक न जाने । जीति फिरै नवखंडन कौ नहि बासव सो कबहूँ डरपाने । ते तुम सौ लरिकै मरिकै भट अंत को अंत

चक्षुरासुर के सिर पर इस प्रकार गिरी कि उसकी छटा का वर्णन मैं कर नहीं सकता । वह कृपाण शत्रु को मारती हुई पहाड़ के समान शत्रुओं को चीरती हुई पाताललोक में जा लगी ॥ ३२ ॥ ॥ दोहा ॥ तुपक, तबर, बरछी, वाण, कृपाण इस प्रकार चमक रहे हैं और ध्वजा, पताकाएँ इतनी फहर रही हैं कि सूर्य ढूँढ़ने पर भी दिखायी नहीं देता ॥ ३३ ॥ घनघोर रणवाद्य बजने लगे और आसमान में गिद्ध मँड़राने लगे । विकट योद्धा क्षण भर में कट-कटकर गिरने लगे ॥ ३४ ॥ भेरी, प्रणव, गोमुख, मृदंग, शंख, वेणु, वीणा, मुरली, मुरज, मुचंग आदि अनेकों प्रकार के वाजे बजने लगे ॥ ३५ ॥ नफीरी, दुन्दुभी आदि अनेकों रणवाद्यों की ध्वनि सुनकर योद्धा परस्पर भिड़ पड़े और कोई भी युद्ध से पीछे नहीं हटा ॥ ३६ ॥ किचपिचाकर योद्धा एक-दूसरे के सम्मुख होकर लड़ने लगे और धकधकाकर कबन्ध भूमि पर गिरने लगे और देवपुरी को प्रयाण करने लगे ॥ ३७ ॥ युद्ध में गीदड़ घूमने लगे और प्रेतगण रक्त-मांस खाने लगे । गिद्ध मांस लेकर उड़ने लगे परन्तु फिर भी वीरगण युद्धस्थल नहीं छोड़ रहे थे ॥ ३८ ॥ ॥ सवैया ॥ डमरुओं की डमडम और नगाड़ों की आवाज़ को सुननेवाले, शत्रुदलों को कुछ भी न समझनेवाले और नवखण्ड पृथ्वी को जीतकर इन्द्र से न डरनेवाले महाबली तुमसे लड़कर और

के धाम सिधाने ।। ३९ ।। ।। दोहरा ।। रन डाकिनि डहकत फिरत कहकत फिरत मसान । बिनु सीसन डोलत सुभट गहि गहि करन क्रिपान ।। ४० ।। असि अनेक काढे करन लरहि सुभट समुहाइ । लरि गिरि (मू०ग्रं०८१२) मरि भू पर परै बरैं बरंगनि जाइ ।। ४१ ।। अनतरिया ज्यों सिंधु को चहत तरन करि जाउँ । बिनु नौका कैसे तरै लए तिहारो नाउँ ।। ४२ ।। मूक उचरै शासत्र खट पिंग गिरन चढ़ि जाइ । अंध लखै बधरो सुनै जौ तुम करो सहाइ ।।४३।। अरघगरभ त्रिप त्रियन को भेद न पायो जाइ । तऊ तिहारी क्रिपा ते कछु कछु कहो बनाइ ।। ४४ ।। प्रथम मानि तुम को कहो जथा बुद्धि बलु होइ । घटि कबिता लखिकै कबहि हास न करियहु कोइ ।। ४५ ।। प्रथम ध्याइ स्री भगवती बरनौ त्रिया प्रसंग । मो घट मै तुम ह्वै नदी उपजहु बाक तरंग ।। ४६ ।। ।। सवैया ।। मेर कियो त्रिण ते मुहि जाहि गरीबनिवाज न

मरकर अन्त में मृत्युलोक को चले गए ।। ३९ ।। ।। दोहा ।। युद्धस्थल में डाकिनियाँ डकारती हुई और प्रेत अट्टहास करते हुए घूमने लगे और इधर बिना सिरों वाले वीर हाथों में कृपाणें पकड़कर युद्धस्थल में विचरण करने लगे ।। ४० ।। अनेकों वीर तलवारों को निकालकर हाथ में पकड़े हुए परस्पर लड़ रहे थे और लड़ते-लड़ते मरकर अप्सराओं को वरण करते हुए धरती पर गिर पड़े ।। ४१ ।। तैराकी न जाननेवाला जिस प्रकार समुद्र को पार करना चाहे (तो वह पार नहीं कर सकता), वह बिना नौका के और बिना तुम्हारा नाम लिये समुद्र को कैसे पार कर सकता है ।। ४२ ।। गूँगा छः शास्त्रों का उच्चारण कर सकता है और लँगड़ा पर्वत पर चढ़ सकता है । यदि तुम सहायता करो तो अन्धा देख सकता है और बहरा सुन सकता है ।। ४३ ।। गर्भस्थ शिशु का, राजा का और स्त्री का गहन रहस्य समझा नहीं जा सकता उसे मैंने तुम्हारी कृपा से थोड़ा बहुत बनाकर कहा है ।। ४४ ।। सर्वप्रथम तुमको साक्षात् मानकर मैं कहता हूँ कि यथाबुद्धि-बल के आधार पर मैंने यह रचना की है । कोई भी इस काव्य की कमी को देखकर मेरी हँसी न उड़ाये ।। ४५ ।। सर्वप्रथम श्री भगवती (आदिशक्ति) की आराधना कर मैं स्त्री-प्रसंगों का वर्णन कर रहा हूँ, और हे नदो-स्वरूपा विश्वशक्ति ! तुम कृपापूर्वक मेरी वाणी रूपी तंरगों में मेरे अन्दर प्रकट हो जाओ ।। ४६ ।। ।। सवैया ।। तुम तिनके को भी सुमेरु पर्वत जैसा बड़ा बना सकते हो और तुम्हारे समान ग़रीबनिवाज अन्य दूसरा कोई नहीं है । हे प्रभ ! मेरे जसा

दूसर तोसौ। भूल छिमो हमरी प्रभु आपुन भूलनहार कहूँ कोऊ मोसौ। सेव करै तुमरी तिन के छिन मै धन लागत धाम भरोसौ। या कलि मै सभ कालि क्रिपान की भारी भुजान को भारी भरोसौ ॥ ४७ ॥ खंडि अखंडन खंड कै चंडि सु मुंड रहै छित मंडल माँही। दंडि अदंडन कौ भुजदंडन भारी घमंड कियो बल बाही। थापि अखंडल कौ सुरमंडल नाद सुन्यो ब्रहमंड महा ही। क्रूर कुवंडल को रन मंडल तो सम सूर कोऊ कहूँ नाही ॥ ४८ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने चंडी चरित्रे प्रथम ध्याइ समापतम
सतु सुभम सतु ॥ १ ॥ ४८ ॥ अफजूं ॥

अथ दुतिय चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ चित्रवती नगरी बिखै चित्रसिघ त्रिप एक। ता के ग्रहि संपति घनी रथ गज बाज अनेक ॥ १ ॥ ता को रूप अनूप अति जो बिधि धर्‍यो सुधारि। सुरी आसुरी किंन्रनी रीझि रहत पुर नारि ॥ २ ॥ एक अपसरा इंद्र के जात शिंगार बनाइ। निरख राइ अटकति भई कंज भवर के

भूलनेवाला अन्य कोई नहीं है। तुम मेरी भूल को क्षमा करो। इस कलियुग में काल रूपी कृपाण और बलिष्ठ भुजाओं पर (सांसारिक समस्याओं को सुलझाने के लिए) भारी भरोसा किया जा सकता है ॥ ४७ ॥ खण्डित न हो सकनेवाले वीरों को मारकर उनके मुण्ड चण्डिका ने भूमण्डल पर छितरा दिये। अदण्डनीयों को दण्डित कर दिया और अपने भारी भुजदण्डों से सबका घमण्ड चूर कर दिया। देवताओं को पुनः सुरमण्डल में स्थापित कर ब्रह्माण्ड में व्याप्त होनेवाला महानाद किया। तुम रणमण्डल में क्रूर कुवण्ड (धनुष) को धारण करनेवाली हो और तुम्हारे समान अन्य कोई वीर नहीं ॥ ४८ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के चण्डी-चरित्र के प्रथम अध्याय का
शुभ सत समाप्ति ॥ १ ॥ ४८ ॥ अफजू ॥

द्वितीय चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ चित्रवती नगर में चित्रसिंह एक राजा था, जिसके पास बहुत सम्पत्ति और रथ, हाथी, घोड़े इत्यादि थे ॥ १ ॥ परमात्मा ने उसको अनुपम रूप दिया था और देवपत्नियाँ, दैत्यपत्नियाँ तथा किन्नरनियाँ मुग्ध हो रही थीं ॥ २ ॥ एक अप्सरा श्रृंगार करके इन्द्र के पास जा रही थी। वह राजा

भाइ ।। ३ ।। ।। अड़िल्ल ।। रही अपसरा रीझि रूप लखि राइ को। पठी दूतिका छल करि मिलन उपाइ को। बिनु प्रीतम के मिले हलाहल पीव हों। हो मारि कटारी मरिहों घरी न जीव हों ।। ४ ।। ।। दोहरा ।। ताहि दूतिका राइ सों भेद कह्यो समुझाइ। बरी राइ सुख पाइ मन दुंदभि ढोल बजाइ ।। ५ ।। एक पुत्र ता ते भयो अमित रूप की खानि। महा रुद्र हूँ रिसि करे कामदेव पहिचानि ।। ६ ।। बहुत बरसि संग अपसरा भूपति माने भोग। बहुरि (मू०ग्रं०८१३) अपसरा इंद्र कै जात भई उडि लोग ।। ७ ।। तिह बिनु भूपति दुखित ह्वै मंत्री लए बुलाइ। चित्र चित्रि ता को तुरित देसन दयो पठाइ ।। ८ ।। खोजत ओडछ नाथ के लही कंनिका एक। रूप सकल सम अपसरा ताँ ते गुनन बिसेख ।। ९ ।। ।। चौपई ।। सुनत बचन न्रिप सैन बुलायो। भाँति भाँति सो दरबु लुटायो। साजे शस्त्र कौच तन धारे। शहिर ओडछा ओर सिधारे ।। १० ।। भेव सुनत उनहूँ भल जोर्यो। भाँति भाँति भए सैन निहोर्यो। रन छत्रिन को आइसु दीनो।

को देखकर उस प्रकार रुक गई जसे फूल को देखकर भौंरा अटक जाता है ।। ३ ।। ।। अड़िल ।। अप्सरा राजा का रूप-सौन्दर्य देखकर रीझ उठी और उसने मिलने का उपाय करने के लिए अपनी दूती को भेजा। उसने दूती से कहा कि प्रियतम के न मिलने की स्थिति में मैं विषपान कर लूँगी और कटारी मारकर मर जाऊँगी तथा एक भी पल जीवित नहीं रहूँगी ।।४।। ।। दोहा ।। उस दूती ने राजा से यह सब भेद कहा और राजा ने भी दुन्दुभियाँ बजाते हुए उसका वरण कर लिया ।। ५ ।। उस अप्सरा से एक अपरिमित रूपवान पुत्र पैदा हुआ जो कि महारुद्र के समान बली और कामदेव के समान सुन्दर था ।। ६ ।। अनेक वर्षों तक राजा ने अप्सरा के साथ भोग भोगे और एक दिन अप्सरा उड़कर पुनः इन्द्रलोक को चली गयी ।। ७ ।। उसके बिना अत्यन्त दुःखित होकर राजा ने मन्त्रियों को बुलाया और देश-विदेश में उसके चित्र पहचान के लिए भेज दिये ।। ८ ।। खोजते-खोजते ओरछा के राजा के यहाँ उसी अप्सरा के समान रूप-गुणों वाली एक कन्या खोज ली गयी ।। ९ ।। ।। चौपाई ।। राजा ने उसके बारे में सुनते ही सेना को बुलाया और खूब धन बाँटा। शस्त्रों और कवचों से सुसज्जित होकर सभी ओरछा नगर की ओर चल पड़े ।। १० ।। उस राजा ने भी रहस्य को समझते हुए और विभिन्न प्रकार की सेना को देखते हुए क्षत्रियों को युद्ध का आदेश दिया और स्वयं भी युद्ध के

आपुन जुद्ध हेतु मनु कीनो ।। ११ ।। ।। दोहरा ।। भाँति भाँति
मारू बजे मँडे सुभट रन आइ । अमित बान बरछा भए रहत
पवन उरझाइ ।।१२।। ।। भुजंग छंद ।। बधे बाढवारी महाँबीर
बाँके । कछै काछनी ते सभै ही निसाँके । धए सामुहे वै
हठी जुद्ध जारे । हटै ना हठीले कहूँ ऐंठियारे ।। १३ ।।
।। दोहरा ।। हनिवंति सिंघ आगे कियौ अमित सैन दै साथ ।
चित्र सिंघ पाछे रह्यो गहै बरछिया हाथ ।। १४ ।।
।। सवैया ।। हाँकि हज़ार हिमालय सो हलकाहनि कै हठवारन
हूँ के । हिंमति बाँधि हिरौ लहि लौ कर लै हथिआर हहा
कहि हूके । हालि उठ्यो गिर हेम हला चल हेरत लोग हरी
हर जूके । हारि गिरे बिन हारे रहे अरु हाथ लगे अरि हासी
हनूँ के ।। १५ ।। ठाढे जहा सरदार बडे कुपि कौच क्रिपान
कसे पठनेटे । आनि परे हठ ठानि तही सिरदारन ते टिब
रंगनि भेटे । भारी भिरे रन मै तब लौ जब लौ नहि सार की
धार लपेटे । शत्र की सैन तरंगनि तुलि ह्वै ताँ मै तरंग तरे
खतिरेटे ।। १६ ।। ।। दोहरा ।। मारि ओडछा राइ को लई
सुता तिह जीति । बरी राइ सुख पाइ मन मानि शास्त्र की

लिए तैयार हो गया ।। ११ ।। ।। दोहा ।। विभिन्न प्रकार के रणवाद्य बजने लगे और पवन-गति से आपस में उलझनेवाले शस्त्र-अस्त्रों से सुसज्जित वीर युद्धस्थल में आ पहुँचे ।। १२ ।। ।। भुजंग छन्द ।। टेढ़ी तलवारों से और अन्य शस्त्रों से महाबली निःसंकोच रूप से काटे जाने लगे । गर्वीले और हठीले वीर तनिक पीछे नहीं हटे और वे सम्मुख होकर हठपूर्वक युद्ध करने लगे ।। १३ ।। ।। दोहा ।। हनुवन्तसिंह को अपार सेना देकर आगे भेजा गया और चित्रसिंह बरछा हाथ में पकड़कर पीछे रहा ।। १४ ।। ।। सवैया ।। हज़ारों हिमालय पर्वतों को भी ललकारते हुए हठी वीर आगे बढ़े और हिम्मत बाँधकर और शस्त्र हाथ में लेकर वे अट्टहास करते हुए आगे बढ़े । धरती पर सुमेरु पर्वत उन प्रेतों के समान योद्धाओं को देखकर हिल उठा और जिस प्रकार हनुमान के अट्टहास से पर्वत चूर-चूर होकर उनके समक्ष आ गिरे थे, उसी प्रकार वीरगण गिरने लगे ।। १५ ।। जहाँ बड़े-बड़े सेनानायक कवच-कृपाण कसे हुए क्रोधित होकर खड़े थे उसी झुण्ड को लक्ष्य कर वीरगण उस पर टूट पड़े । वे तब तक परस्पर भिड़ते रहे जब तक तलवार की धार की लपेट में नहीं आ गए । शत्रु-सेना नदी के समान थी और उस नदी में क्षत्रिय-पुत्र आनन्दपूर्वक तैर रहे थे ।। १६ ।। ।। दोहा ।। ओरछा नरेश को मारकर उसकी कन्या को

रीति ।। १७ ।। ओडछेस जाकी हितू चित्रमती तिह नाम । हनिवति सिंघहि सो रहै चितवत आठो जाम ।। १८ ।। पढ़न हेतु ता कौ न्रिपति सौंप्यो दिज ग्रहि माहि । एक मास तासौ कह्यो दिजबर बोल्यहु नाहि ।।१९।। ।। चौपई ।। राजे निजु सुत निकट बुलायो । दिजबर ताहि संग लै आयो । पड़ो पड़्यो गुन छितपति कहियो । सुन सुअ बचन मोनि ह्वै रहियो ।।२०।। ।। दोहरा ।। लै ता को राजै किया (मू०ग्रं०८१४) अपने धाम पयान । सथी सहस ठाढी जहाँ सुंदरि परी समान ।। २१ ।। बोलत सुत मुख ते नही यौ न्रिप कह्यो सुनाइ । चित्रमती तिह लै गई अपुने सदन लवाइ ।। २२ ।। ।। अड़िल्ल ।। चोर चतुरि चित लयो कहो कस कीजिऐ । काढि करिजवा अपन लला कौ दीजिऐ । जंत्र मंत्र जौ कीने पिअहि रिझाइऐ । हो तदिन घरी के सखी सहित बलि जाइऐ ।। २३ ।। ।। दोहरा ।। अति अनूप सुंदर सरस मनो मैन के ऐन । मो मन को मोहत सदा मित्र तिहारे नैन ।।२४।। ।। सवैया ।। बान बधी बिरहा के बलाइ यो रीझि रही लखि रूप

जीत लिया और राजा ने शास्त्र-सम्मत विधि से उसके साथ विवाह किया ।।१७।। ओरछा नरेश की पुत्री का नाम चित्रमती था । वह आठों प्रहर हनुवन्तसिंह को देखती रहती थी ।। १८ ।। उसको शिक्षा के लिए एक ब्राह्मण को सौंपा और वह ब्राह्मण (रानी के आदेशानुसार) एक महीने तक उससे कुछ नहीं बोला ।। १९ ।। ।। चौपाई ।। राजा ने पुत्र को अपने पास बुलाया और ब्राह्मण उसे अपने साथ ले आया । राजा ने हनुवन्तसिंह अर्थात् अपने पुत्र से पढ़ने-लिखने के लिए कहा । परन्तु हनुवन्तसिंह यह सुनकर चुप ही बना रहा।।२०।। ।। दोहा ।। राजा उसे लेकर अपने घर चला आया और उसके महल में सहस्रों स्त्रियाँ परियों के समान सुन्दर खड़ी थीं ।। २१ ।। राजा ने सबको सुनाकर कहा कि यह लड़का मुख से बोलता नहीं है । इस पर चित्रमती उसे अपने महल में ले गयी ।। २२ ।। ।। अड़िल ।। रानी ने कहा कि चतुर चोर के समान जब कोई दिल को चुरा ले तो क्या किया जाय । तब तो अपना कलेजा निकालकर अपने प्यारे को दे देना चाहिए । जिस दिन यन्त्र-मन्त्र के बल पर भी प्रियतम को रिझा लिया जाय उस दिन पर अपने प्राण न्योछावर कर देनें चाहिए ।। २३ ।। ।। दोहा ।। तुम अत्यन्त सरस और कामदेव के समान अनुपम रूप से सुन्दर हो । हे मित्र ! तुम्हारे नयन मन को मोहनेवाले हैं ।।२४।। ।। सवैया ।। मैं तुम्हारे विरह-बाण से बिंधी हुई तुम्हारे रूप-सौन्दर्य पर मुग्ध

तिहारो। भोग करो मुहि साथ भली बिधि भूपति को नहि त्रास बिचारो। सो न करै कछु चारु चितैबे को खाइ गिरी मन मैन तवारो। कोटि उपाइ रही कै दया को सो कैसे हूँ भीजत भ्यो न ऐठ्यारो ॥ २५ ॥ ॥ दोहरा ॥ चित चेटक सो चुभि गयो चमकि चक्रित भयो अंग। चोरि चतुर चित लै गयो चपल चखन के संग ॥ २६ ॥ हेरि रूप तुहि बसि भई गहों कवन की ओट। मछरी ज्यों तरफै परी चुभी चखन की चोट ॥ २७ ॥ ॥ चौपई ॥ वाँकी कही न न्रिप सुत मानी। चित्रमती तब भई खिसानी। चित्रसिंघ पै जाइ पुकारो। बडो दुशट इह पुत्र तुहारो ॥ २८ ॥ ॥ दोहरा ॥ फारि चीरकर आपने मुख नख घाइ लगाइ। राजा को रोखित कियो तन को चिहन दिखाइ ॥ २९ ॥ ॥ चौपई ॥ बचन सुनत क्रुद्धित न्रिप भयो। मारन हेत सुतहि लै गयो। मंत्रिन आनि राव समुझायो। त्रिया चरित्र न किनहूँ पायो ॥ ३० ॥ १ ॥

॥ इति स्त्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे दुतिय चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ २ ॥ ७८ ॥ अफजूँ ॥

हूँ। राजा का भय त्यागकर तुम मेरे साथ सम्भोग करो। मैं राजा से अतृप्त हूँ और वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेगा। मैंने अनेकों उपाय किए हैं, परन्तु मेरा सूखा मन किसी के प्रेम से भीग नहीं सका है ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥ उस रानी का चित्त काम-क्रीड़ा-लीन हो गया और उसका अंग-अंग विभोर हो उठा, क्योंकि उसका चित्त राजकुमार की चंचल आँखों ने चुरा लिया था ॥ २६ ॥ मैं तुम्हारा रूप देखकर तुम्हारे वशीभूत हो गई हूँ और अब मैं किसका आश्रय लूँ। तुम्हारे सुन्दर नेत्रों की चोट से मैं मछली के समान तड़प उठी हूँ ॥ २७ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजकुमार ने चित्रमती का कहा नहीं माना, वह इस पर खिसिया उठी। उसने राजा चित्रसिंह के सम्मुख जाकर कहा कि तुम्हारा पुत्र अत्यन्त दुष्ट है ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ अपने वस्त्रों को फाड़कर और नाखूनों से अपने मुख पर घाव लगाकर अपने तन के चिह्नों को राजा को दिखाते हुए उसने राजा को क्रोधित कर दिया ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ यह बातें सुनकर राजा क्रोधित हो उठा और पुत्र को मारने के लिए ले गया। मन्त्रियों ने राजा को समझाया कि त्रिया-चरित्र के रहस्य को कोई नहीं समझ सका है ॥ ३० ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र में मन्त्री-भूप-संवाद में द्वितीय चरित्र की शुभ सत समाप्ति ॥ २ ॥ ७८ ॥ अफजू ॥

अथ त्रितय चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ बंदिसाल को भूप तब निजु सुत दियो पठाइ । भोर होत अपने निकटि बहुरो लियो बुलाइ ॥ १ ॥ एक पुत्रिका ग्वार की ता को कहों बिचार । एक मोटिया यार तिह और पतरिया यार ॥ २ ॥ स्री म्रिग चच्छुमती रहै ता को रूप अपार । ऊच नीच ताँ सौ सदा नितप्रति करै जुहार ॥३॥ ॥ चौपई ॥ शहिर कालपी माहि बसत (मू०ग्रं०८१५) तै । भाँति भाँति के भोग करैवै । स्री म्रिगनैन सती तह राजै । निरखि छपाकरि की छबि लाजै ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ बिरधि मोटियो यार तिह तरुन पतिरयो यार । रात दिवस ताँ सौ करै द्वैवै मैन बिहार ॥ ५ ॥ होत तरुन के तरुनि बसि बिरध तरुनि बसि होइ । इहै रीति सभ जगत की जानत है सभ कोइ ॥ ६ ॥ तरुनि पतरिया सौ रमैं मोटे निकट न जाइ । जौ कबहूँ तासौ रमै मन भीतर पछुताइ ॥ ७ ॥ रमत पतरिया संग हुती आनि मोटिएँ यार । पायन कौ खरको कियो तवनि तरुनि के द्वार ॥ ८ ॥ कह्यो

तृतीय चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ राजा ने तब अपने पुत्र को बन्दीख़ाने में डाल दिया और भोर होते उसे पुन: अपने निकट बुला लिया ॥ १ ॥ (तब मन्त्री राजा को स्त्रियों की विभिन्न कथाएँ सुनाने लगा।) एक ग्रामीण की एक लड़की थी, जिसका एक मोटा, एक पतला प्रेमी था ॥ २ ॥ वह हिरण के समान नेत्रों वाली तथा अत्यन्त सुन्दर और ऊँच-नीच का भली प्रकार ज्ञान रखनेवाली थी ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह कालपी शहर में रहती थी और विभिन्न प्रकार से भोग-विलास करती थी। वह मृगनयनी इतनी सुन्दर थी कि उसको देखकर चन्द्रमा भी लज्जित होता था ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ उसका मोटा प्रेमी वृद्ध था और पतला प्रेमी तरुण था। वह रात-दिन दोनों के साथ काम-क्रीड़ा किया करती थी ॥ ५ ॥ तरुणी तरुण व्यक्ति के वश में और वृद्ध व्यक्ति तरुणी के वश में हो जाता है, संसार की इस रीति को सभी जानते हैं ॥ ६ ॥ वह तरुणी पतले के साथ रमण करती थी और मोटे के समीप नहीं जाती थी। यदि कभी उससे रमण भी करती थी तो मन ही मन पछताकर रह जाती थी ॥७॥ एक बार वह पतले प्रेमी के साथ काम-क्रीड़ा-संलग्न थी तो उसका मोटा प्रेमी आ गया और उसने तरुणी के द्वार पर पदचाप दी ॥ ८ ॥ तब तरुणी ने

पतरिए यार कह जाहु दिवरयहि फाँधि। जिन कोऊ पापी
आइ है मुहि तुहि लैहै बाँधि ॥ ९ ॥ अति रति तासौ मानिकै
यार पतरियहि टारि। भरभराइ उठि ठाढ भी जानि मोटियो
यार ॥ १० ॥ उठत बीरज भू पर गिर्‌यो लख्यो मोटियो
यार। या को तुरतु बताइयै भेद रमै सु कुमारि ॥ ११ ॥
अधिक तिहारो रूप लखि मोहि न रही सँभार। ताँते गिर्‌यो
अनंग भूअ सक्यो न बीरज उबार ॥ १२ ॥ फूलि गयो पसु
बात सुनि निजु सुभ मानै अंग। मोहि निरखि छबि बाल को
छित पर गिर्‌यो अनंग ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे त्रितय चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ ३ ॥ ९१ ॥ अफजूँ ॥

अथ चतुरथो चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ बंदिसाल न्रिप पूत पठायो। भई भोर
फिरि पकरि मगायो। मंत्री प्रभु सों बचन उचरे। भूपति
सुधा स्रवनु जनु भरे ॥ १ ॥ ॥ दोहरा ॥ महांनंद मुरदार की

पतले प्रेमी को दीवार फाँदकर भाग जाने के लिए कहते हुए कहा कि शायद कोई पापी आ गया है जो तुम्हें और मुझे बाँध लेगा ॥ ९ ॥ इस प्रकार अत्यन्त प्रेम जताते हुए उसने पतले प्रेमी को टाल दिया। और भड़भड़ाकर उस मोटे प्रेमी के सम्मुख उठ खड़ी हुई ॥ १० ॥ उठते ही वीर्य धरती पर ग़िर पड़ा जिसे उस मोटे प्रेमी ने देख लिया। उस प्रेमी ने तुरन्त उसका रहस्य बताने के लिए उस स्त्री से कहा ॥ ११ ॥ वह कहने लगी कि तुम्हारे अत्यन्त सुन्दर रूप को देखकर मैं अपने-आप को सँभाल नहीं सकी जिससे यह कामरज धरती पर आ गिरा ॥ १२ ॥ वह मूर्ख यह बात सुनकर प्रसन्नता से फूल उठा कि मेरी छवि को देखकर इस बालिका पर काम सवार हो गया है, जिससे यह रज-निकास धरती पर हुआ है ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपख्यान में त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में तीसरे
चरित्र की शुभ सत समाप्ति ॥ ३ ॥ ९१ ॥ अफजू ॥

चतुर्थ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ राजा ने पुत्र को बन्दीशाला में भेज दिया और प्रातः पुनः बुलवा लिया। तब मन्त्री ने पुनः सुधारस से पूर्ण शब्दों का उच्चारण किया, जिसको राजा ने सुना ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ महानन्द नामक एक पुरुषत्व-विहीन व्यक्ति की एक पत्नी थी, जिसके साथ अनेकों हिन्दू, मुसलमान प्रेम-क्रीड़ा में

हुती बहुरिया एक । ताँ सों रति मानत हुते हिंदू तुरक अनेक ।। २ ।। महाँनंद मुरदार की घुरकी त्रिय को नाम । कोप समै निजु नाह को घुरकत आठो जाम ।। ३ ।। एक चच्छ ता को रहै बिरधि आपु त्रिय ज्वान । सो या पर रीझत नही या के वा महि प्रान ।। ४ ।। काज कवनहूँ के निमिति गयो धाम को धाइ । तरुन पुरख सो तरुनि तह रही हुती लपटाइ ।। ५ ।। महाँनंद आवत सुन्यो लयो गरे सौ लाइ । अति बचित्र बातै करी ह्रिदै हरख उपजाइ ।। ६ ।। कान दोऊ गहिरे गहे चूँमि एक द्रिग लीन। इह छल सौ छलि (मू०ग्रं०८१६) कै जड़हि यार बिदा करि दीन ।। ७ ।। स्त्रवनन कछु खरको सुनै इक चखु सकै न हेरि । परो सदा मोरे रहै लहै न भेद अधेर ।। ८ ।। हेरि रूप तव बसि भई मो तन बढ्यो अनंग । चूँमि नेत्र ताते लयो अति हित चित के संग ।। ९ ।। महाँनंद इह बात सुनि फूल गयो मन माहि । अधिक प्रीति तासों करी भेद पछान्यो नाहि ।। १० ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे चतुरथो
चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ४ ।। १०१ ।। अफजूं ।।

लगे रहते थे ।। २ ।। महानन्द की स्त्री का नाम घुड़की था जो कि क्रोधित होकर अपने पति को हमेशा फटकारती रहती थी ।। ३ ।। उस व्यक्ति की एक आँख थी, वे स्वयं वृद्ध था और उसकी पत्नी जवान थी । वह पत्नी इसको बिलकुल नहीं चाहती थी, परन्तु इस वृद्ध के प्राण उस पत्नी में ही बसते थे ।। ४ ।। वह किसी कार्यवश घर से बाहर गया तो यह तरुणी तरुण पुरुषों के साथ काम-लिप्त होने लगी ।। ५ ।। जब उसने महानन्द को आते हुए देखा तो स्त्री ने उसको हृदय में प्रसन्न होते हुए तथा विचित्र बातें करते हुए गले से लगा लिया ।। ६ ।। उसके दोनों कानों को और एक आँख को चूमा तथा इस प्रकार छल-कपट करके मौका पाकर अपने प्रेमियों को बिदा कर दिया ।। ७ ।। महानन्द ने कुछ आवाज़ सुनी, परन्तु एक आँख से न देख सकने के कारण वह मूर्ख भेद को समझ न सका ।। ८ ।। पत्नी ने उससे कहा, मैं तुम्हें देखकर काम-विभोर हो गई हूँ, इसलिए मैंनें इतने प्रेम से तुम्हारे नेत्र और कानों को चूमा है ।। ९ ।। महानन्द यह बात सुनकर फूल उठा और बिना भेद को समझे उससे और प्रेम करने लगा ।। १० ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र में मन्त्री-भूप-संवाद के चौथे
चरित्र की शुभ सत समाप्ति ।। ४ ।। १०१ ।। अफजू ।।

अथ पंचमो चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ बंदिसाल को भूप तब निजु सुत दयो पठाइ । भोर होत अपने निकटि बहुरो लियो बुलाइ ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ बंदिसाल न्रिप पूत पठायो । भई भोर फिरि पकर मगायो । मंत्री प्रभु सों बचन उचारे । जानुक शोक दूरि करि डारे ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ इक जोगी बन मै हुतो द्रुम मै कुटी बनाइ । एक शाह की सुता को लै गयो मंत्र चलाइ ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ कासिकार को शाहिक जनियत । सहज कला तिह सुता बखनियत । ता को हरि जोगी लै गयो । राखत एक बिरछ मै भयो ॥४॥ ॥ दोहरा ॥ करी किवारी बिरछ की खोदि कियो तिह ग्रेह । राति दिवस ता कौ भजै अधिक बढाइ सनेह ॥५॥ मारि किवरिया बिरछ की आपि नगर मै आइ । माँगि भिछा निसि के समैं रहत तिसी द्रुम जाइ ॥ ६ ॥ जाइ तहाँ आपन करै हाथन को ततकार । सुनत शबद ताकी तरुनि छोरत करन किवार ॥ ७ ॥ ॥ चौपई ॥ ऐसी भाँति नित्य जड़ करै । मधुर मधुर धुनि

पञ्चम चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ तब राजा ने अपने पुत्र को बन्दीख़ाने में भेज दिया और प्रातः अपने पास बुला लिया ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजा ने अपने पुत्र को बन्दीख़ाने में भेज दिया और प्रातःकाल पुनः पकड़कर मँगा लिया । मन्त्री ने राजा से बातें कीं और मानों उसके शोक को दूर कर दिया ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ वन में एक योगी वृक्ष में कुटिया बनाकर रहता था । वह अपने मन्त्र-बल से एक व्यापारी की पुत्री को ले गया ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह व्यापारी काशिका नगरी का था और उसकी पुत्री का नाम सहजकला था । योगी उसको ले गया और उसने उसे एक वृक्ष में रखा था ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ वृक्ष को खोदकर और उसी में एक खिड़की बनाकर उसने घर बनाया था और वह योगी रात-दिन उसके साथ स्नेह करता था ॥ ५ ॥ वृक्ष का द्वार बन्द कर वह नगर में आता था और भिक्षा माँगकर रात को पुनः उसी वृक्ष में चला जाता था ॥ ६ ॥ वहाँ जाकर वह हाथ से ताली बजाता था और आवाज़ सुनते ही तरुणी अपने हाथों से दरवाज़ा खोल देती ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह जड़ रोज़ इसी प्रकार किया करता था और मधुर वीणा

बेनु उचरै। राज कला बिनसी सभ गावै। सहजकला
बिनसी न सुनावै ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ तिही नगर मैं अति
चतुर हुतो पुत्र इक भूप। बल गुन बिक्रम इंद्र सम सुन्दर काम
सरूप ॥ ९ ॥ सुरी आसुरी किंन्रनी गंधरबी किन माहि।
हिंदुनी तुरकानी सभै हेरि रूप बलि जाहि ॥ १० ॥
॥ चौपई ॥ त्रिप सुत ता के पाछे धायो। तिन जुगियहि
कछु भेद न पायो। जब वह जाइ बिरछ मै बर्यो। तब
छितपति सुत द्रुम पर चर्यो ॥ ११ ॥ भयो प्रात जोगी पुर
आयो। उतरि भूप सुत ताल बजायो। छोरि किवार (मू०ग्रं०८१७)
कुअरि तिन दीनो। ताँ सौ कुअर भोग द्रिड़ कीनो ॥ १२ ॥
॥ दोहरा ॥ लेहज पेहज भच्छ सुभ भोजन भलो खवाइ।
तासौ रति मानत भयो ह्रिदै हरख उपजाइ ॥१३॥ ता त्रिय
को जो चित हुतो त्रिप सुत लियो चुराइ। ता दिन ते तिह
जोगियहि चित दे दियो भुलाइ ॥ १४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ भलो
हेरि करि बुरो न कबहु निहारियै। चतुर पुरखु को पाइ न
मूरख चितारियै। धनी चतुर अरु तरुनि तरुनि जो पाइ है।
हो बिरध कुरूप निधन जड़ पै कियो जाइ है ॥ १५ ॥

बजाया करता था। वह अपने राजयोग की सभी कलाओं-सहित गायन करता परन्तु सहजकला उसे कुछ भी न सुनाती ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ उसी नगर में राजा का एक चतुर पुत्र था जो बल और गुणों में इन्द्र के समान और सुन्दरता में कामदेव के समान था ॥ ९ ॥ देव-स्त्रियाँ, दैत्य-स्त्रियाँ, गन्धर्व-स्त्रियाँ, हिन्दू-स्त्रियाँ एवं मुस्लिम-स्त्रियाँ सभी उसके सौन्दर्य पर न्यौछावर थीं ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ राजा का लड़का उस योगी के पीछे चला, परन्तु वह योगी कुछ नहीं जान सका। जब योगी वृक्ष में घुस गया तब राजा का यह लड़का वृक्ष के ऊपर चढ़ गया ॥ ११ ॥ प्रात: योगी जब नगर में गया तो इस राजपुत्र ने वृक्ष से उतरकर ताली बजायी। तब उस कन्या ने द्वार खोल दिया। और उस राजकुमार ने दृढ़तापूर्वक उसके साथ सम्भोग किया ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ उसे विभिन्न प्रकार के सुन्दर भोजन खिलाए और अत्यन्त हर्षित होकर काम-क्रीड़ा की ॥ १३ ॥ उस राजपुत्र ने उस स्त्री का हृदय चुरा लिया और उस स्त्री ने उस दिन से उस योगी को मन से भुला दिया ॥ १४ ॥ ॥ अड़िल ॥ अच्छी वस्तु मिलने पर निकृष्ट की ओर देखना भी नहीं चाहिए और चतुर पुरुष को प्राप्त कर मूर्ख का स्मरण भी नहीं करना चाहिए। जब कोई तरुणी धनी, चतुर एवं तरुण पुरुष को पा लेगी तो वह भला वृद्ध, कुरूप,

।। दोहरा ।। शाह सुता ता सौ कहियो संग चलहु लै मोहि। भोग करोंगी जोग तजि अधिक रिझैहौ तोहि ।। १६ ।। ।। चौपई ।। तब मैं चलो संग लै तोकौ। जुगियहि बोलि मानु हित मोकौ। आँखि मूँदि दोऊ बीन बजैयै। मोरे कर ते ताल दिवैयै ।। १७ ।। आँखि मूँदि दोऊ बीन बजाई। तिह त्रिय घात भली लखि पाई। त्रिप सुत के संग भोग कमायो। चोट चटाकन ताल दिवायो ।।१८।। ।। दोहरा ।। अति रति करि ता को लियौ अपनै है करि स्वार। नगरसाल पुर कौ गयो बिरछ किवरियहि मारि ।। १९ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे पंचमो
चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ५ ।। १२० ।। अफजूं ।।

अथ खशटमो चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। बंदिसाल को भूप तब निजु सुत दियो पठाइ। भोर होत मंत्री सहित बहुरो लियौ बुलाइ ।। १ ।। पुनि मंत्री ऐसे कही एक त्रिया की बात। सो सुनि त्रिप

निर्धन और जड़ पुरुष के पास क्यों जायेगी ।। १५ ।। ।। दोहा ।। वणिक्-पुत्री ने उससे कहा कि तुम मुझे अपने साथ ले चलो। मैं अधिक प्रसन्नतापूर्वक योग छोड़कर तुम्हारे साथ सम्भोग करूँगी ।। १६ ।। ।। चौपाई ।। मैं तुमको अपने साथ ले चलूँगा; और वह योगिनी बोली कि हे योगी ! तुम मुझसे प्रेम करो। दोनों आँख बन्द कर प्रेम-वीणा बजाएँगे और हाथों से ताली देंगे ।। १७ ।। उस स्त्री ने इस प्रकार भला अवसर देखकर उस योगी के साथ खूब प्रेम-वीणा बजायो और उस राजा के पुत्र के साथ भोग किया ।। १८ ।। ।। दोहा ।। अन्त में उसने घोड़े पर सवार होकर वृक्ष का दरवाज़ा बन्द कर उस स्त्री को लेकर नगर की ओर चला गया ।। १९ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में पाँचवें चरित्र
की शुभ सत समाप्ति ।। ५ ।। १२० ।। अफजू ।।

षष्ठम चरित्र-कथन

।। दोहा ।। तब राजा ने अपने पुत्र को बन्दीखाने में भेज दिया और मन्त्री समेत उसे प्रातः बुला लिया ।। १ ।। पुनः मन्त्री ने उसे एक स्त्री की कथा सुनाई, जिसे सुनकर राजा प्रसन्न हो उठा और पुनःपुनः सुनाने का आग्रह

रीझत भयो कहो कहो मुहि तात ।। २ ।। एक बधू थी जाट की दूजै बरी गवार । खेलि अखेटक न्रिपति इक आनि भयो तिह यार ।। ३ ।। ।। अड़िल्ल ।। लंगचलाला को इक राइ बखानियै । मधुकर शाह सु बीर जगत मै जानियै । मालमती जटिया सौ नेहु लगाइयो । हो खेलि अखेटक भवन तवन के आइयो ।। ४ ।। ।। दोहरा ।। खेलि अखेटक आनि न्रिप रति मानी तिह संग । इही बीच आवत भयो जाट रीछ के संग ।। ५ ।। जाटावत लखि न्रिप डर्‌यो कह्‌यो न डरि बलि जाउँ । तिह देखत तुहि काढिहौ ता के सिर धरि पाउँ ।। ६ ।। ।। अड़िल्ल ।। एक कुठरिया बीच राव को राखियो । (मू०ग्रं०८१८) रोइ बचन मूरख सो इह बिधि भाखियो । रैन समै इक बुरो सुपन मुहि आइयो । हो जानुक तोकह श्याम भुजंग चबाइयो ।। ७ ।। ।। दोहरा ।। ताँते मै अपने सदन दिजबर लियो बुलाइ । उन मो कौ ऐसे कह्‌यो भेद सकल समझाइ ।।८।। जो कोऊ नारि पतिब्रता जापु जपै हितु लाइ । अकसमात प्रगटै पुरख एक भूप के भाइ ।। ९ ।। जो तुमरे सिर जाइ धरि पुरख पाव बडभाग । जो तुमहूँ जीवत बचो हमरो बचै

करने लगा ।। २ ।। एक जाट की एक ग्रामीण स्त्री थी । एक दिन एक राजा शिकार खेलता हुआ उसका प्रेमी बन गया ।। ३ ।। ।। अड़िल ।। लंगचलाला नामक शहर का मधुकर शाह नामक एक वीर राजा जाना जाता था । उसका मालमती नामक जाटिनी से प्रेम हो गया और वह शिकार खेलकर उसके घर में आ गया ।। ४ ।। ।। दोहा ।। आखेट के बाद राजा ने उस स्त्री के साथ रति-क्रीड़ा की और इसी बीच एक रीछ के साथ जाट भी आ गया ।। ५ ।। जाट को आते देखकर राजा डर गया, परन्तु उस स्त्री ने कहा कि तुम डरो मत, मैं उस जाट के देखते-देखते उसी के सिर पर तुम्हारा पैर रखवाकर तुम्हें बाहर निकाल दूँगी ।। ६ ।। ।। अड़िल ।। उसने राजा को एक कोठरी में छुपा दिया और रोती हुई उस मूर्ख जाट से कहने लगी कि रात्रि में मैंने एक बुरा सपना देखा है कि तुम्हें काले सर्प ने काट लिया है ।। ७ ।। ।। दोहा ।। इसलिए मैंने अपने घर में एक ब्राह्मण को बुलाया और उस ब्राह्मण ने मुझे समझाकर इस प्रकार कहा है ।। ८ ।। यदि कोई पतिव्रता स्त्री श्रद्धापूर्वक जाप करे तो अकस्मात् राजा के समान एक पुरुष प्रकट होगा ।। ९ ।। यदि वह पुरुष तुम्हारे सर पर पाँव रखकर चला जाय और तुमको कुछ न हो तो सुहाग की रक्षा हो सकती ।। १० ।। इसलिए अब तुम्हारी आज्ञा से

सुहाग ।। १० ।। ताँ ते तव आग्या भए जापु जपत हौं जाइ । तुमरे मरे मैं जरि मरों जियैं जिवों सुखु पाइ ।। ११ ।। जौं हौ हो सु पतिब्रता जौ मो मै सत आइ । एक पुरख तब जाइ धरि या के सिर परि पाइ ।। १२ ।। सुनत बचन राजा उठ्यो ता के सिर पग ठानि । गयो प्रसन्य मूरख भयो त्रिया पतिब्रत जानि ।। १३ ।। १ ।।

।। इति श्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे खसटमों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ६ ।। १३३ ।। अफजूं ।।

अथ सपतमो चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। शाहजहानाबाद मै एक तुरक की नारि । इक चरित्र अति दिन कियो सो तुहि कहों सुधारि ।। १ ।। अनिक पुरख ता सो सदा निसु दिन केल कमाहि । स्वान हेरि लाजत तिनै इक आवहि इक जाहि ।। २ ।। ।। चौपई ।। सो इक रहै मुगल की बामा । जैनाँबादी ता को नामा । बहु पुरखन सों केल कमावै । अधिक ढीठ नहि ह्रिदै लजावै ।।३।।

जाप करती हूँ, क्योंकि तुम्हारे मरने पर मैं जल मरूँगो और जीवित रहने पर ही मुझे सुख प्राप्त होगा ।। ११ ।। तब उस स्त्री ने कहा कि यदि मैं सत्यवती और पतिव्रता हूँ तो एक पुरुष प्रकट हो और इसके सिर पर पैर रखकर चला जाय ।। १२ ।। यह सुनते ही राजा उठा और उसके सिर पर पैर रखते हुए चला गया । उसे जाते देखकर यह मूर्ख अपनी स्त्री को पतिव्रता मानते हुए प्रसन्न हो उठा ।। १३ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में छठवें चरित्र की शुभ सत समाप्ति ।। ६ ।। १३३ ।। अफजू ।।

सप्तम चरित्र-कथन

।। दोहा ।। शाहजहाँनाबाद नगर में एक मुसलमान की स्त्री रहती थी । उसने जो चरित्र किया, अब मैं उसे सुधारकर कहता हूँ ।। १ ।। रात-दिन अनेकों पुरुष उसके साथ काम-क्रीड़ा करते थे और उन अनेकों पुरुषों को आते-जाते देखकर कुत्ते भी लजाते थे ।। २ ।। ।। चौपाई ।। वह एक मुगल की स्त्री थी और उसका नाम जैनाबादी था । वह अनेक पुरुषों के साथ काम-क्रीड़ा करती हुई अत्यन्त निर्लज्ज थी ।। ३ ।। ।। दोहा ।। जाहिदख़ाँ नामक व्यक्ति जब

।। दोहरा ।। जाहिद खाँ आगे हुतो बेगयूसफ ग्यो आइ ।
भरभराइ उठ ठाढ भी ताहि बैद ठहराइ ।। ४ ।।
।। अड़िल्ल ।। टरि आगे तिह लियो बचन यों भाखियो ।
तुमरे अरथहि बैद बोलि मै राखियो । ता ते बेगि इलाज
बुलाइ कराइयै । हो ह्वै करि अबै अरोग तुरत घर
जाइयै ।। ५ ।। ।। दोहरा ।। दौरै आवत हौकनी सोए ऊरध
स्वास । बहु ठाढे जानू दुखैं यहै त्रिदोख प्रकाश ।। ६ ।।
।। अड़िल्ल ।। तुमरो करो इलाज न हासी जानियो । रोग
हेत अनुसरो बुरै मति मानियो । बैद भाइ गुर मित ते न भेद
दुराइयै । हो कहौ कवन के आगे ब्रिथा जनाइयै ।। ७ ।।
।। कबितु ।। दादुरी चबाई ता के मूरियौ धसाई घनी छेरिन
चुगाई वाहि जूतिन की मारि कै । राख सिर (मू०ग्रं०८१६)
पाई ता की मूँछै भी मुँडाई दोऊ ऐसी लीकै लाई कोऊ सकै
न उचारिकै । गोदरी डराई ताँ ते भीख भी मँगाई तिह ऐसो
कै चरित्र ताहि ग्रहि ते निकारिकै । त्रिय को ऐसो चरित्र
वाहि को दिखाइ जार आपु टरि गयो महा मूरख को

उसके पास था तो यूसुफ़ बेग नामक व्यक्ति आ गया तो वह भड़भड़ाकर उठ बैठी और जाहिद ख़ाँ से कहने लगी कि मैंने तुम्हारे लिए एक वैद्य को बुला रखा है ।। ४ ।। ।। अड़िल ।। आगे होकर उसने कहा, मैंने तुम्हारे लिए ही वैद्य को बुलाया है और इसी से तुम शीघ्र ही अपना इलाज कराओ और तुरन्त नीरोग होकर घर जाओ ।। ५ ।। ।। दोहा ।। दौड़कर आते हुए तुम्हारा साँस फूलता है, सोते हुए तुम्हारा श्वास ऊपर की तरफ़ जाता है, बहुत अधिक खड़े रहने पर जाँघें दुखती हैं । यही त्रिदोष तुमको है ।। ६ ।। ।। अड़िल ।। मैं तुम्हारा इलाज कराऊँगी, इसमें कोई मज़ाक़ नहीं है । रोग के अनुसार इलाज का अनुसरण करना चाहिए और इसमें बुरा नहीं मानना चाहिए । वैद्य, भाई, गुरु एवं मित्र के सामने भेद छुपाकर नहीं रखना चाहिए, क्योंकि अन्यथा हम किसके आगे अपनी तकलीफ़ को कहेंगे ।। ७ ।। ।। कवित्त ।। दवा में उसको मेढक के बच्चे खिलाए, मूली खेत में बोआई । सिर पर जूते भी मारे और अपनी बकरियाँ भी चरवाईं । उसके सिर पर मिट्टी भी डाली । उसकी मूँछे मुँड़वाकर उसका वह हाल कर दिया कि उच्चारण नहीं किया जा सकता । उसको गुदड़ी पहनाकर उससे भीख भी मँगवाई और घर से निकाल कर उसके साथ ऐसा व्यवहार किया । उस यार के साथ उस स्त्री ने ऐसा चरित्र दिखाया और वह प्रेमी (यूसुफ़ बेग) उस मूर्ख जाहिद ख़ाँ को मूर्ख

टारिकै ॥ ८ ॥ ॥ चौपई ॥ भीख माँग बहुरो घर आयो। तहाँ तवन को दरस न पायो। कह गयो जिन मुर रोग घटाइस। यह जड़ भेव नैक नहि पाइस ॥ ९ ॥ तब अबला यौ बचन उचारे। कहों बात सुनु मीत हमारे। सिधि औखध जा के कर आयो। दै तिन बहुरि न दरस दिखायो ॥१०॥ ॥ दोहरा ॥ मंत्री और रसाइनी जौ भागन मिलि जात। दै औखध तब ही भजै बहुरि न दरस दिखात ॥११॥ ॥ चौपई ॥ ता को कह्यो सति करि मान्यो। भेद अभेद जड़ कछू न जान्यो। तासों अधिकसु नेह सु धार्यो। मेरो बडो रोग त्रिय टार्यो ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे सपतमों
चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ७ ॥ १४५ ॥ अफजूं ॥

अथ अशटमो चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ शहिर अकबराबाद में त्रिया क्रिया की हीन। मंत्र जंत्र अरु तंत्र सभ तिन मै अधिक प्रबीन ॥१॥

बनाकर स्वयं चला गया ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब वह भीख माँगकर घर वापस आया तो वहाँ उसका दर्शन नहीं हुआ। वह कहने लगा जिसने मेरा रोग कम किया वह कहाँ गया। इस प्रकार वह जड़बुद्धि उस रहस्य को नहीं समझ सका ॥ ९ ॥ तब उस स्त्री ने कहा कि हे मित्र ! तुम हमारी बात सुनो। सिद्ध की हुई ओषधि जिसके हाथ में आ जाती है, वह देकर पुनः दर्शन नहीं देता ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ मन्त्री और रसायन यदि भाग्य से मिल जाय तो उनका दुबारा दर्शन नहीं होता ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने उसका कहना सत्य मानते हुए उस भेद को तनिक भी नहीं समझा और यह मानते हुए इस स्त्री ने मेरे बहुत बड़े रोग का नाश किया है, उससे और अधिक प्रेम करने लगा ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में सातवें
चरित्र की शुभ सत समाप्ति ॥ ७ ॥ १४५ ॥ अफजू ॥

अष्टम चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ अकबराबाद शहर में एक क्रियाहीन स्त्री थी जो मन्त्र-यन्त्र और तन्त्र में अधिक प्रवीण थी ॥ १ ॥ उसका नाम कुँवरि अनुरागमति

स्त्री अनुराग मती कुअरि लोग बखानहि ताहि। सुरी आसुरी किंन्रनी रीझि रहत लखि वाहि ॥ २ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ बहु पुरखन सों बाल सदा रति मानई। काहू की नहि लाज ह्रिदै मै आनई। सैयद शेख पठान मुगल बहु आवई। हो तासों भोग कमाइ बहुरि घर जावही ॥ ३ ॥ ॥ दोहरा ॥ ऐसे ही ता सौ सभै नितप्रति भोग कमाँहि। बरिया अपनी आपनी इक आवै इक जाँहि ॥ ४ ॥ प्रथम पहर सैयद रमैं शेख दूसरे आनि। त्रितिय पहर मुगलावई चौथे पहर पठान ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ भूलि पठान प्रिथम ही आयो। पुनि सैयद मुखि आनि दिखायो। लैसु पठान खाट तर दीनो। सैयदहि लाइ गरे सौ लीनो ॥ ६ ॥ शेख सैयद के पाछे आयो। घास बिखै सैयदहि छपायो। तब लौ मुगल आइ ही गयो। शेखहि डारि गोनि महि दयो ॥ ७ ॥ (मू०ग्रं०८२०) ॥ दोहरा ॥ तिह पाछे कुटवार के गए पियादे आइ। तुरतु कुठरिया नाज की मुगलहि दयो दुराइ ॥ ८ ॥ घेरि पियादन जब लई रह्यो न कछू उपाइ। निकसि आपु ठाढी भई ग्रहि कौ आगि

जाना जाता था और सुरी, आसुरी, किन्नरनी स्त्रियाँ भी उस पर रीझती थीं ॥ २ ॥ ॥ अड़िल ॥ अनेक पुरुषों के साथ बिना किसी की लज्जा मानते हुए वह रति-क्रीड़ा में संलग्न रहती थी। सैयद, शेख़, पठान, मुगल सभी आते थे और उसके साथ भोग-विलास कर अपने घर वापस चले जाते थे ॥३॥ ॥ दोहा ॥ ऐसे ही नित्यप्रति सभी उससे सम्भोगरत होते थे और अपनी-अपनी बारी से आते-जाते थे ॥ ४ ॥ पहले प्रहर में सैयद, दूसरे में शेख़, तीसरे में मुगल और चौथे प्रहर पठान उससे रमण करता था ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ एक दिन भूल से पठान पहले आ गया और उसके पीछे ही सैयद भी आ निकला। उसने पठान को पलंग के नीचे कर दिया और सैयद को गले से लगा लिया ॥ ६ ॥ सैयद के पीछे शेख़ आ गया तो उसने सैयद को घास में छुपा दिया तब तक मुगल आ गया तो इसने शेख़ को एक बोरे में डाल दिया ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ इसके पीछे कोतवाल के सिपाही आ गए तो इस स्त्री ने मुगल को अनाज की कोठरी में छुपा दिया ॥ ८ ॥ जब इसे सिपाहियों ने घेर लिया और इसके पास कोई उपाय न बचा तो यह घर को आग लगाकर बाहर निकलकर खड़ी हो गई ॥ ९ ॥ "घर जल गया, घर जल गया" कहते

लगाइ ।। ९ ।। दुहूँ हाथ पीटत भई जर्‍यो जर्‍यो ग्रहि भाखि ।
वै चारौ ता मै जरे किनहूँ न हेरी राखि ।। १० ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे अशटमो
चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ८ ।। १५५ ।। अफजूँ ।।

अथ नवमो चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। शहिर लहौर बिखै हुती एक बहुरिया शाह । कमल निरखि लोचन लजत हेरि जलत मुख माह ।।१।। ।। चौपई ।। स्री जग जोति मती तिह नामा । जा सम और न जग मों बामा । अधिक तरुनि की प्रभा बिराजै । लखि ता कौ तड़िता तन लाजै ।। २ ।। ।। दोहरा ।। इक राजा अटकत भयो निरखि तरनि के अंग । रति मानी रुचि मानिकै अति हित चित के संग ।। ३ ।। सो न्रिप पर अटकत भई निति ग्रहि लेत बुलाइ । चित्र कला इक सहचरी तिह ग्रहि ताहि पठाइ ।। ४ ।। चित्रकला जो सहचरी सो न्रिप रूप निहारि । गिरी मूरछना ह्वै धरनि हर अरि सर ग्यो मारि ।। ५ ।। ।। चौपई ।। उठत बचन न्रिप साथ उचारे । आजु भजो मुहि

हुए वह दोनों हाथों से अपने शरीर को पीटने लगी और वे चारों उसमें जल मरे। उनकी राख भी किसी ने नहीं देखी ।। १० ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित के मन्त्री-भूप-संवाद में आठवें
चरित्र की शुभ सत समाप्ति ।। ८ ।। १५५ ।। अफजू ।।

नवम चरित्र-कथन

।। दोहा ।। लाहौर में एक स्त्री रहा करती थी, जिसके नयनों को देखकर कमल के फूल भी लज्जित होते थे ।। १ ।। ।। चौपाई ।। जगज्योतिमति उसका नाम था और संसार में उसके समान अन्य कोई स्त्री नहीं थी। वह तरुणी इतनी अधिक प्रभायुक्त थी कि उसको देखकर बिजली भी लज्जित होती थी ।। २ ।। ।। दोहा ।। एक राजा उस तरुणी के सुन्दर अंगों को देखकर आसक्त हो गया और रुचिपूर्वक उसने मन से उसके समक्ष रति-प्रस्ताव रखा ।। ३ ।। वह भी राजा पर आसक्त होकर उसे चित्रकला नामक सहेली के माध्यम से अपने घर नित्यप्रति बुला लेती थी ।। ४ ।। चित्रकला उस राजा के रूप-सौन्दर्य को देखकर धरती पर कामासक्त होकर गिर पड़ी ।। ५ ।।

राज पिआरे। हेरि तुमै हर अरि बसि भई। मो कह बिसरि सकल सुधि गई ॥६॥ ॥ दोहरा ॥ सुनत बचन न्रिप ना कर्‌यो तासौ भोग बनाइ। संग ल्याइ इह खाइ रिसि कह्यो शाह सौ जाइ ॥ ७ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ सुनत बचन तिह शाह तुरतु घर आइयो। लख्यो तवन त्रिय भेद अधिक दुख पाइयो। मोरि निरखि पति न्रिप को जिय ते मारिहै। हो ता पाछे हमहूँ कौ तुरतु सँघारिहै ॥८॥ ॥ दोहरा ॥ ता ते आगै कीजियै न्रिप को तुरत उपाइ। जियते जियत निकारियै भोजन भलो खवाइ ॥ ९ ॥ इक सफ बीच लपेटि तिह धर्‌यो भीत सोलाइ। जाइ शाह आगे लियो भोजन भलो मँगाइ ॥ १० ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ भोजन भलो शाह कौ ताहि खवाइयो। बहुरि बचन ता को इह भाँति सुनाइयो। भरि मेवा की मूठि या सफ मों (मू०ग्रं०८२१) डारियै। हो परे जीतिबै दाव परे बिनु हारियै ॥ ११ ॥ ॥ दोहरा ॥ मेवा शाहुनि शाहु लै तिह सफ भीतरि डारि। खाहि न्रिपति तूँ भच्छ सुभ ऐसे कह्यो सुधारि ॥ १२ ॥ सुनत शाहु चमक्यो

॥ चौपाई ॥ पुन: उठकर उसने राजा को कहा, हे राजन्! आज तुम मुझे भोगो। तुम्हें देखकर मैं कामवश हो गई हूँ और मुझे अपनी समस्त सुधि भूल गई ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा ने यह सुनकर उसके साथ सम्भोग नहीं किया और इसने भी उसे अपने साथ लाकर ईर्ष्यावश जगज्योतिमति के पति को बता दिया ॥ ७ ॥ ॥ अड़िल ॥ बात सुनते ही वह व्यापारी पति तुरन्त घर आया और वह स्त्री के भेद को देखकर अत्यन्त ही दु:खी हुआ। उस स्त्री ने सोचा, मुझे इस प्रकार देखकर मेरा पति राजा को मार देगा बाद में मुझे भी मार डालेगा ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार राजा को बचाने का तुरन्त उपाय किया जाना चाहिए और अपने पति को अच्छा-सा भोजन खिलाकर वापस भेज देना चाहिए ॥ ९ ॥ राजा को एक टाट में लपेटकर उसने दीवार के साथ लगा दिया और सुन्दर भोजन मँगाकर वह अपने वणिक् पति को आगे होकर मिली ॥ १० ॥ ॥ अड़िल ॥ उसने अपने पति को सुन्दर भोजन खिलाया और अपने पति को यह कहा कि एक मुट्ठी भरकर मेवा इस टाट में फेंको, यदि इस टाट के अन्दर चला जायेगा तो तुम जीते हुए माने जाओगे अन्यथा तुम्हारी हार होगी ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ उस स्त्री से मेवा लेकर व्यापारी ने उस टाट में फेंका तो उस स्त्री ने कहा कि हे राजा तुम भली प्रकार से खाओ ॥ १२ ॥ व्यापारी यह बात सुनकर भड़क उठा और क्रोधित

बचन त्रिय कौ कह्यो रिसाइ। तै मुहि क्यो राजा कह्यो मोकहु बात बताइ ॥ १३ ॥ धाम रहत तोरे सुखी तोसौ नेहु बढाइ। ताँ ते मै राजा कह्यो मेरे तुम ही राइ ॥ १४ ॥ रीझ गयो जड़ बात सुनि भेद न सक्यो पछानि। तुरति गयो हाटै सु उठि अधिक प्रीति मन मानि ॥ १५ ॥ शाह गए त्रिय शाह की न्रिप को दयो निकारि। सुनत बात अति कोप कै अधिक लौंडियहि मारि ॥ १६ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे नौमों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ ९ ॥ १७१ ॥ अफजूं ॥

अथ दशमो चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ तवन लौंडियहि शाहु त्रिय मारी जौ रिसि खाइ। किय चरित्र तिन मंत्रियन न्रिप सो कह्यो सुनाइ ॥१॥ ॥ चौपई ॥ चोटन लगे रोह मन आनो। जाइ सैयद सो कर्‍यो यरानो। नित तिह अपने सदन बुलावै। शाहु त्रिया को दरबु लुटावै ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ शाहु त्रिया की खाट

होकर उसने स्त्री से कहा कि तुमने मुझे राजा क्यों कहा। इस बात का रहस्य मुझे बताओ ॥ १३ ॥ तब स्त्री ने कहा, मैं तुमसे प्रेम करते हुए तुम्हारे घर में रहती हूँ, इसलिए मैंने तुमको राजा कहा। तुम ही मेरे राजा हो ॥१४॥ वह मूर्ख बिना रहस्य को समझे हुए प्रसन्न हो उठा और मन में अत्यधिक प्रेम पूरित होते हुए तुरन्त उठकर अपनी दुकान पर चला गया ॥ १५ ॥ व्यापारी के जाते ही उस स्त्री ने राजा को निकाल दिया और राजा ने सब बात समझकर अत्यधिक क्रोधित होकर उस दासी को मारा ॥ १६ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में नवें चरित्र
की शुभ सत समाप्ति ॥ ९ ॥ १७१ ॥ अफजू ॥

दशम चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ उस व्यापारी की स्त्री की सखी (दासी), जिसको क्रोधित होकर मार डाला गया, उसने भी कई चरित्र दिखाये थे, ऐसा मन्त्रियों ने राजा से सुनाकर कहा ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ अधिक चोटें खाने से उसे क्रोध आया और उसने एक सैयद से दोस्ती कर ली। अब वह नित्यप्रति उसे अपने घर बुलाने लगी और उस वणिक्-स्त्री के द्रव्य को लुटाने लगी ॥२॥ ॥ दोहा ॥ एक

पर इक दिन ताहि सवाइ । शाहु तिया सों अगमनै कह्यो बचन यौ जाइ ।।३।। तवनै न्रिप तुअ हित पग्यो बेगि बुलावत तोहि । चलो अबै उठि तुम तहाँ बात स्रवन धरि मोहि ।।४।। न्रिप ठाढो हेरै तुमै तुमरे अति हित पागि । बेगि चलो उठि तहाँ तुम जहा बरतु है आगि ।। ५ ।। सुनत बचन तिय तह चली कह्यो न्रिपति सों धाइ । सोइ यार तुमरी रही गहो चरन दोऊ जाइ ।।६।। आपु अगमने दौरि कै सैयदहि कह्यो सुनाइ । गहि क्रिपान जागत रहो जिनि न गहै कोऊ आइ ।। ७ ।। चोर जरावत आगि जह तह तिय पहुची जाइ । लूटि कूटि ताकौ दियो गहिरे गड़े दबाइ ।।८।। ।। अड़िल्ल ।। चरन छुअन दोऊ काल प्रेरि न्रिप आनियो । चित्रकला को बचन सत्ति करि मानियो । उठत तेग को तब बिन घाव प्रहारियो । हो सुघर सिंघ राजा को हनिही डारियो ।।९।। ।। दोहरा ।। शाहु बधू (मू०ग्रं०८२२) चोरन हनी सैयद न्रिप कौ घाइ । तवन लौंडियहि ले गयो अपने सदन बनाइ ।। १० ।। तियहि न अंतर दीजियै ता को लीजै भेद । बहु पुरखन के करत है

दिन उस सैयद को वणिक् की स्त्री की पलंग पर सुलाकर उस दासी ने उस व्यापारी की स्त्री से जाकर कहा ।। ३ ।। तुम्हारा राजा तुम्हें प्रेमवश होकर बुला रहा है और मेरी बात मानते हुए तुरन्त वहाँ चलो ।।४।। तुम्हारे प्रेम में लीन राजा तुम्हारी राह देख रहा है, इसलिए जहाँ अग्नि जल रही है, वहाँ तुम जल्दी चलो ।। ५ ।। यह बात सुनकर और कहकर वह स्त्री राजा के पास पहुँची और सैयद की ओर इशारा करती हुई राजा से कहा, वह तुम्हारी प्रेमिका सोई हुई है, जाओ उसको पैरों से पकड़ लो ।। ६ ।। स्वयं आगे दौड़कर उसने जाकर सैयद से कहा कि तुम कृपाण पकड़ के जगते रहो ताकि कोई आकर तुम्हें पकड़ न ले ।। ७ ।। उधर जहाँ चोर आग जलाकर बैठे हुए थे, व्यापारी की स्त्री जब वहाँ पहुँची तो उन्होंने उस वणिक् की स्त्री को लूटकर और मारकर गहरे गड्ढे में दबा दिया ।। ८ ।। ।। अड़िल्ल ।। इधर राजा चित्रकला के वचन को सत्य मानता हुआ उसके चरण छूने के लिए पहुँचा । सयद ने उठते ही कृपाण से वार किया और उस राजा को मार ही डाला ।। ९ ।। ।। दोहा ।। इस प्रकार व्यापारी की पत्नी को चोरों ने मार डाला और सैयद राजा को मारकर उस दासी चित्रकला को अपने घर ले गया ।। १० ।। कभी भी स्त्री को अपना भेद नहीं बताना चाहिए अपितु उसका भेद जान लेना

हिदै चंचला छेद ।। ११ ।। चित त्रिय को हरि लीजियै ताहि न दीजै चित्त । नितप्रति ताहि रिझाइयैं दै दै अगनित बित्त ।। १२ ।। गंध्रब जच्छ भुजंग गन नर बपुरे किन माँहि । देव अदेव त्रियान के भेद पछानत नाहि ।। १३ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे दसमो चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ।। १० ।। १८४ ।। अफजूं ।।

अथ ग्यारवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। बहुरि मंत्रिबर राइ सौ भेद कह्यो समझाइ । सभा बिखै भाखत भयो दशमी कथा बनाइ ।। १ ।। बनिया एक पिशौर मै ताहि कुक्रिआ नारि । ताँहि मारि तासौ जरी सो मैं कहो सुधारि ।। २ ।। बनिक बनिज के हित गयो ता ते रह्यो न जाइ । एक पुरख राखत भई अपुने धाम बुलाइ ।। ३ ।। रैनि दिवस ताँ सौ रमै जब सुत भूखो होइ । प्रीत मात लखि दुगध हित देत उच्च सुर रोइ ।। ४ ।। ।। चौपई ।। जब सुत भूखो होइ पुकारै । तब

चाहिए । ये चंचल स्त्रियाँ अनेक पुरुषों के हृदय में घाव करती हैं ।। ११ ।। स्त्री के चित्त को चुरा लो, परन्तु उसे कभी अपना चित्त न दो और अनेक पदार्थ देते हुए उसे नित्यप्रति प्रसन्न करते रहो ।। १२ ।। गन्धर्व, यक्ष, भुजंग, देव, अदेव कोई भी स्त्री के रहस्य को नहीं समझ सके । फिर भला ये मनुष्य किस खेत की मूली हैं ।। १३ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान में त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में दसवें
चरित्र की शुभ सत समाप्ति ।। १० ।। १८४ ।। अफजू ।।

ग्यारहवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। पुनः मन्त्री ने राजा को भेद समझाया और सभा में वह दसवीं कथा सुनाने लगा ।।१।। पेशावर में एक बनिया था जिसकी एक कुलटा स्त्री थी । वह उस बनिए को मारकर उसके साथ ही जल मरी । अब यह कथा मैं सुधार कर कहता हूँ ।।२।। वणिक् व्यापार के लिए गया और पीछे यह स्त्री अपने मन को सँभाल न सकी तथा इसने एक पुरुष को अपने घर में रख लिया ।। ३ ।। रात-दिन वह उसके साथ उस समय रमण करती थी, जब उसका बच्चा भूखा होता था, और तब वह दूध के लिए ऊँचे स्वर में रोता था ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। जब भूखा पुत्र चिल्लाता था तो उस स्त्री का मित्र

मुख सौ यौ जार उचारै। त्रिय या कों तुम चुपन करावो। हमरे चित को शोक मिटावो ॥ ५ ॥ उठि असथन ता को तिन दयो। लै असथन चुप बाल न भयो। निज सुत को निजु करन सँघार्यो। आनि मित्र को शोक निवार्यो ॥ ६ ॥ बाल रहत चुप जार उचारो। अब क्यों न रोवत बाल तिहारो। तब तिन बचन तरुनि यौ भाख्यो। तव हित मारि पूत मै राख्यो ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ जार बचन सुनि कै डर्यो अधिक त्रास मन ठानि। ता त्रिय की निंद्या करी बाल चरित मुखि आनि ॥ ८ ॥ जार जबै ऐसे कह्यो निरख तरुनि की ओर। ताहि तुरत मारत भई ह्रिदै कटारी घोर ॥ ९ ॥ पुत्र और तिह जार को इक कोना मै जाइ। भरद एक लगि भूमि खनि दुहूँअन दयो दबाइ ॥ १० ॥ अतिथ एक तिह घर हुतो तिन सभ चरित निहारि। बनिक मित्र ता को हुतो तासो कह्यो सुधारि ॥११॥ ॥ चौपई ॥ बचन सुनत बनियो घर आयो। ता त्रिय सो यौ बचन सुनायो। जो ग्रहि (मू०ग्रं०८२३) कोना खोदि दिखैहै। तब तो को पति धाम बसैहै ॥ १२ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ जब ता त्रिय सों बनिक

कहता था कि तुम इसको चुप कराओ और मेरे मन का कष्ट दूर करो ॥ ५ ॥ स्त्री ने उठकर पुत्र को स्तनपान के लिए दिया परन्तु बच्चा तब भी चुप न हुआ। इस स्त्री ने अपने हाथों से पुत्र को मार दिया और इस प्रकार अपने मित्र का शोक दूर किया ॥ ६ ॥ बच्चे की चुप्पी सुनकर मित्र (पुरुष) ने कहा कि अब तुम्हारा बच्चा क्यों रो नहीं रहा है ? तब तरुणी ने उसे बताया कि तुम्हारे लिए मैंने अपने पुत्र को मार डाला है ॥७॥ ॥ दोहा ॥ यह सुनकर वह मन में अधिक भयभीत हो गया और बच्चे के संदर्भ में उसने स्त्री को भला-बुरा कहा ॥ ८ ॥ जब पुरुष ने स्त्री से इस प्रकार कहा तो उस स्त्री ने तेज़ कटार से वार कर उस पुरुष को भी मार डाला ॥९॥ अपने उस यार को और पुत्र को एक कोने में धरती खोदकर उसने दबा दिया ॥ १० ॥ उस घर में एक अतिथि भी आया हुआ था, उसने यह सब देख भाँप कर उस वणिक् को समझाकर बता दिया ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ बात सुनते ही बनिया घर पर आया और उसने स्त्री से कहा कि तुम मुझे यह कोना खोदकर दिखाओ अन्यथा मैं घर पर नहीं रहूँगा (और कहीं चला जाऊँगा) ॥ १२ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ जब वणिक् ने उस स्त्री से ऐसा कहा तो उसने तमतमा कर तलवार पकड़कर उसे भी मार ही डाला। उसका सिर काटकर वह

बचन यौ भाखियो । तमकि तेग की दई मारि ही राखियो । काटि मूँड ता को इह भाँति उचारियो । हो लूटि चोर लै गए धाम इह मारियो ।। १३ ।। ।। दोहरा ।। पति मार्यो सुत मारियो धन लै गए चुराइ । ता पाछे मैहूँ जरौ ढोल म्रिदंग बजाइ ।। १४ ।। भयो प्रात चड़ि चिखा पै चली जरन के काज । लोग तमाशे कौ चले लै लरकिन को साज ।। १५ ।। ।। दोहरा ।। सुनत शोर लोगान को बाजत ढोल म्रिदंग । लख्यो हुतो जौनै अतिथ वहै चल्यो है संग ।। १६ ।। ।। चौपई ।। सोऊ अतीत संग हूँ चलो । देखौ जौन तमाशो भलो । तिन तासो यौ बचन उचारो । सुनो नारि तुम कह्यो हमारो ।। १७ ।। ।। दोहरा ।। वह का किय वहु का कियो इह का कियस कुकाइ । कह्यो जो तुम आगे कहत तेरउ करत उपाइ ।। १८ ।। सुत घायो मित घाइयो अरु निजु करि पति घाइ । तिह पाछै आपन जरी ढोल म्रिदंग बजाइ ।।१९।। ।। अड़िल्ल ।। निजु मन की कछु बात न त्रिय को दीजियै । ता को चित्त चुराइ सदा ही लीजियै । निजु

चिल्लाने लगी कि चोर घर को लूट ले गए हैं और इसे (पति को) घर में ही मार गए हैं ।। १३ ।। ।। दोहा ।। मेरा पति मार डाला गया है, पुत्र मारा गया है और धन-धान्य भी चोर चुराकर ले गए हैं; अब मैं भी ढोल-मृदंग बजाकर पति के साथ ही जल मरूँगी ।। १४ ।। प्रातःकाल होते ही वह चिता पर जल मरने के लिए चल पड़ी और लोग भी लकड़ियाँ आदि लेकर तमाशा देखने के लिए चल पड़े ।।१५।। ।। दोहा ।। लोगों का शोर और ढोल-मृदंग की आवाज़ सुनकर वह अतिथि भी, जिसने सब कुछ देखा था, साथ-साथ चल पड़ा ।। १६ ।। ।। चौपाई ।। वह भी विरक्त भाव से साथ-साथ चल पड़ा और सोचने लगा कि तमाशा देखा जाय । उसने उस स्त्री से कहा कि तुम मेरी बात सुनो (परन्तु उसने एक न सुनी और वह जल मरी) ।। १७ ।। ।। दोहा ।। हे राजन् ! उसने क्या किया और कैसे चीख़ी-चिल्लाई, यह मैंने तुम्हें बताया है और मैं तुम्हारा भी कष्ट दूर करूँगा । यह कहते हुए मंत्री ने राजा से कहा ।। १८ ।। उसने अपने पुत्र, मित्र और पति को मार डाला और उन सबके बाद ढोल-मृदंग बजाती हुई शान से सती-रूपा होकर पति की चिता पर जल भी मरी ।। १९ ।। ।। अड़िल्ल ।। स्त्री को कभी अपने मन की बात नहीं बतानी चाहिए और उसके चित्त को अवश्य ही चुरा लेना चाहिए ।

मन की तासो जो बात सुनाइयै । हो बाहर प्रगटत जाइ आपु पछुताइयै ॥ २० ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे ग्यारवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ११ ॥ २०३ ॥ अफजूं ॥

अथ द्वादसमो चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ ब्रिंदाबन ब्रिखभान की सुता राधिका नाम । हरि सों किया चरित्र तिह दिन कह देखत बाम ॥१॥ क्रिशन रूप लखि बसि भई निसु दिन हेरत ताहि । ब्यास परासर असुर सुर भेद न पावत जाहि ॥ २ ॥ लोकलाज जिह हित तजी और तज्यो धन धाम । किह बिधि प्यारो पाइयै पूरन होवहि काम ॥ ३ ॥ मिलन हेत इक सहचरी पठी चतुरि जिय जानि । कवनै छल मोकौ सखी मीत मिलैयै कान ॥४॥ ॥ अड़िल्ल ॥ ब्रह्म ब्यास अरु बेद भेद नहि जानही । शिव सनकादिक शेस नेति करि मानही । जो सभ भाँतिन सदा जगत मै गाइयै । हो तवन पुरख सजनी मुहि आनि

यदि अपने मन की बात उसे बताओगे तो वह बात अवश्य बाहर प्रकट हो जायगी और बाद में पछताना पड़ेगा ॥ २० ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र में मन्त्री-भूप-संवाद के ग्यारहवें चरित्र की शुभ सत समाप्ति ॥ ११ ॥ २०३ ॥ अफजू ॥

बारहवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ वृन्दावन में वृषभानु की पुत्री का नाम राधिका था। उस स्त्री ने कृष्ण के साथ क्या चरित्र खेला, कहता हूँ ॥१॥ रात-दिन उसे खोजते हुए वह उस कृष्ण के प्रेम के वश में हो गई, जिसके रहस्य को व्यास, पराशर, सुर, असुर कोई भी नहीं जान सका ॥ २ ॥ (वह सदैव सोचने लगी कि) जिसके कारण मैंने लोकलाज का और धन-धाम का त्याग किया उस प्रियतम को कैसे प्राप्त किया जाय और मनोकामना पूर्ण की जाय ॥ ३ ॥ मन में चतुर राधा ने (कृष्ण से) मिलने के लिए एक चतुर सहेली को भेजा और उससे कहा कि कोई भी छल करके मुझे कृष्ण से मिला दे ॥ ४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ जिसका रहस्य ब्रह्मा, व्यास और वेद भी नहीं समझते, शिव, सनकादिक, शेष आदि भी जिसे नेति-नेति मानते हैं; जिसके गुणों का गायन

मिलाइयै ।। ५ ।। (मू०ग्रं०८२४) ।। कबित्त ।। स्वेतता बिभूत अते मेखुली निमेख संदी अंजन दी सेली दा सुभाव सुभ भाखणा । भगवा सु भेस साडे नैणा दी ललाई सईयो यारां दा धियानु एहो कंद मूल चाखणा । रौदन दा भजनु सुपुत्री पत्र गीत गीता देखण दी भिच्छा ध्यान धुँआँ बाल राखणा । आली एना गोपीयाँ दीआँ अक्खीआँ दा जोगु सारा नंद दे कुमार नूँ जरूर जाइ आखणा ।। ६ ।। बैठी हुती साजिकै शिंगार सभ सखियन मै याही बीच कान्ह जू दिखाई आनि दै गए । तब ही ते लीनो है चुराइ चित्तु मेरो माई चेटक चलाइ मानो चेरी मोहि कै गए । कहाँ करौ कितै जाँऊँ मरों किधो बिखु खाऊँ बीस बिस्वे मेरे जान बिच्छू सो डसै गए । चखन चितौन सौ चुराइ चीतु मेरो लियो लटपटी पाग सों लपेटि मनु लै गए ।। ७ ।। ।। दोहरा ।। लाल बिरह तुमरे पगी मो पै रह्यो न जाइ । ता ते मैं आपन लिखी पतिया अति अकुलाइ ।। ८ ।। ।। कबित्त ।। रूप भरे रागु भरे सुंदर सुहाग भरे म्रिग औ ममोलन की मानो इह खानि हैं । मीन हीन

सर्वत्र जगत में किया जाता है; हे सखी ! मुझे उस पुरुषश्रेष्ठ से मिला दो ।।५।। ।। कवित्त ।। उसकी याद में सफ़ेद पड़ गया शरीर मानों भभूत है; हमारी गुदड़ी और योगियों वाली टोपी के बारे में उसे बताना । हमारा वेश भगवा है, हमारे नेत्र लाल हो गये हैं और उसके ध्यान रूपी कन्द-मूल को ही खाकर तृप्त रहते हैं । हमारा रोना ही स्नान है और उसके दर्शन की भिक्षा के लिए ही हमने उसके ध्यान का धुआँ जला रखा है । हे सखी ! इन गोपियों के नेत्रों के योग का अर्थात् तपस्या का हाल नन्दकुमार को अवश्य जाकर कहना ।।६।। इस प्रकार जब वह श्रृंगार करके सखियों के बीच में बैठी थी तो कृष्ण जी वहाँ आकर दिखाई दे गये । तभी से हे माँ ! वह जादू करके मेरा मन चुराकर ले गये और मुझे अपनी दासी बना गये हैं । मैं कहाँ जाऊँ, कहाँ मरूँ अथवा विष खा लूँ, क्योंकि मुझे ऐसा लग रहा है मानों मुझे बीसों बिच्छू डँस गये हों । अपने नयनों की चितवन से वह मेरा चित्त चुराकर ले गये हैं और मेरा मन अपनी पगड़ी में लपेटकर ले गये हैं ।। ७ ।। ।। दोहा ।। हे मेरे प्यारे ! मैं तुम्हारे विरह में लीन हूँ और मुझसे अब रहा नहीं जाता, इसीलिए मैंने अत्यन्त व्याकुल होकर तुमको यह पत्र लिखा है ।। ८ ।। ।। कवित्त ।। रूप और सौंदर्य से भरे ये तेरे नेत्र मानों मृग और खंजन पक्षियों के लिए सौंदर्य

कीने छीन लीने हैं बिधूप रूप चित्त के चुराइबे कौ चोरन समान हैं। लोगों के उजागर हैं गुनन के नागर हैं सूरति के सागर हैं सोभा के निधान हैं। साहिबी की सीरी परे चेटक की चीरी पड़े आली तेरे नैन रामचंद्र के से बान हैं ॥९॥ ॥ दोहरा ॥ मैनप्रभा इक सहचरी ता कौ लयो बुलाइ। ताँहि पठायो क्रिशन प्रति भेद सकल समझाइ ॥ १० ॥ ता के कर पतिया दई कहो क्रिशन सो जाइ। तुमरे बिरह राधा बिधी बेगि मिलो तिह आइ ॥ ११ ॥ ब्रिज बाला ब्रिहनि भई बिरह तिहारे संग। तह तुम कथा चलाइयो कवनो पाइ प्रसंग ॥ १२ ॥ जब राधा ऐसे कह्यो मैनप्रभा के साथ। मैनप्रभा चलि तह गई जहाँ हुते ब्रिजनाथ ॥ १३ ॥ ॥ चौपई ॥ पतिया खोलि जबै हरि बाची। लखी प्रीति ताकी मन साची। ता के तिन जो कबित उचारे। जानुक बज्र लाल खचि डारे ॥ १४ ॥ ॥ सवैया ॥ रीझ भरे रस रीत भरे अति रूप भरे सुख पैयत हेरे। चारु चकोर सरोरुह सारस मीन करे म्रिग खंजन चेरे। भाग भरे अनुराग भरे सु सुहाग भरे मन मोहत मेरे। (मू०ग्रं०८२५) मान भरे सुख खानि जहान के लोचन स्री नंद नंदन तेरे ॥१५॥

की खान हैं। तुम्हारे नेत्र मछली में भी हीन भावना भर रहे हैं और चित्त को चुरानेवाले चोर के समान हैं। ये लोगों को प्रकाश देनेवाले गुणों के समूह और शोभा के समुद्र हैं। हे सखी! तुम्हारे नयन शहद के समान हैं, जादू करनेवाले हैं अथवा राम-वाण हैं ॥९॥ ॥ दोहा ॥ तब राधा ने मैंनप्रभा नामक अपनी एक सहेली को बुलाया और उसे सारी वात समझाकर कृष्ण की ओर भेजा ॥ १० ॥ उसे पत्र देकर कहा कि कृष्ण से जाकर कहो कि राधा तुम्हारे विरह में बिंध गई है; तुरन्त उससे मिलो ॥ ११ ॥ ब्रजबाला तुम्हारे लिए विरहिणी हो गई है यह कथा तुम किसी भी प्रसंग में चलाना ॥ १२ ॥ जब राधा ने मैंनप्रभा को यह समझाया तो वह वहाँ पहुँची, जहाँ ब्रजनाथ श्रीकृष्ण विराजमान थे ॥ १३ ॥ ॥ चौपाई ॥ पत्र खोलकर पढ़ने पर श्रीकृष्ण ने उसके हृदय की सच्ची प्रीति को अनुभव किया। पत्र में लिखा वर्णन मानों उनके हृदय पर वज्र के समान प्रभाव डालने लगा ॥१४॥ ॥ सवैया ॥ प्यार और सौंदर्य से परिपूर्ण सुख देनेवाले चकोर कमल, सारस, मीन और मृगों को अपना दास बनानेवाले, भाग्यशाली अनुराग एवं प्रेम से भरे मन को मोहनेवाले हे श्रीकृष्ण! ये तुम्हारे नयन हैं जो मान से भरे और

सोहत सुध सुधारे से सुंदर जोबन जोति सु ढार ढरे हैं। सारस सोम सुरा सित साइक कंज कुरंगन क्रांति हरे हैं। खंजन औ मकरध्वज मीन निहारि सभै छबि लाज मरे हैं। लोचन स्री नंद नंदन के बिधि मानहु बान बनाइ धरे हैं॥ १६ ॥ ॥ कबित्तु ॥ चिंता जैसो चंदन चिराग लागै चिता सम चेटक से चित्र चारु चौपखाँ कुसैल सी। चिता जैसे चीर चपला सी चितवन लागै चीरबेसी चौपखाँ सुहातु न रुचैल सी। चंगुल सी चौप सर चाप जैसौ चामी कर चोट सी चिनौत लागै सीरी लागै सैल सी। चटक चुपेट सी लगत बिना चिंतामनि चाबुक सौ चोर लागै चाँदनी चुरैल सी ॥१७॥ ॥ दोहरा ॥ पड़ि पतिया ता की तुरतु रीझि गए ब्रिजनाथ। सखी एक पठवत भए मैनप्रभा के साथ ॥ १८ ॥ राधा सौ मिलनो बद्यो जल जमुना मै जाइ। सखी पठी ता को तबै तिह मुहि आनि मिलाइ ॥ १९ ॥ सखी तुरत तह कौ चली स्री जदुपति के हेत। जैसे पवन प्रचंड कौ तन न दिखाई देत ॥ २० ॥ तड़िताक्रित जाकौ सखी चतुरि कहत त्रिय आइ। सो हरि राधा प्रति पठी भेद सकल समझाइ ॥ २१ ॥ ॥ सवैया ॥ फूल फुलेल लगाइकै चंदन

संसार के सारे सुखों की खान हैं ॥ १५ ॥ शोभायुक्त सुन्दर यौवनयुक्त तथा सारस, चन्द्र, मद्य, धनुष, फूल एवं हिरण की भी कांति को हरनेवाले हैं। खंजन, मकरध्वज, मीन आदि सभी इनको देखकर लज्जा से मरे जाते हैं। श्रीकृष्ण के लोचन ऐसे हैं मानों बाण ताने हुए हों ॥ १६ ॥ ॥ कवित्त ॥ मुझे चन्दन चिन्ता के समान, दीपक चिता के समान और सुन्दर चित्र जादूगरी के समान लग रहे हैं। वस्त्र चिता के समान, चितवन बिजली के समान लग रहे हैं और गले में पड़ा हुआ हार तनिक भी अच्छा नहीं लग रहा है। सौन्दर्य फाँसी के समान, चितवन चोट के समान व मीठे पदार्थ भी मुझे पत्थर के समान लगते हैं। आभा सौन्दर्यविहीन, चाँदनी चुड़ैल के समान और चँवर चाबुक के समान लग रहे हैं ॥१७॥ ॥ दोहा ॥ उसके पत्र को पढ़कर ब्रजनाथ कृष्ण तुरन्त रीझ गए और उन्होंने मैनप्रभा के साथ एक सखी को भेजने का उपक्रम किया ॥ १८ ॥ राधा से यमुना के जल में मिलना निश्चित करके एक सखी को भेजा कि मिलने का प्रबन्ध करो ॥ १९ ॥ श्रीयदुपति का कार्य करने के लिए सखी अदृश्य पवन के वेग से उस ओर चल पड़ी ॥ २० ॥ जो बिजली के समान चंचल और तेज सखी मानी जाती थी उसे सारी बात समझा कर श्रीकृष्ण ने राधा की ओर भेजा ॥ २१ ॥ ॥ सवैया ॥ इत्र-फुलेल लगा

बैठि रही करि भोजन भामनि। बेग बुलावत है बड ड्याछ
करो न बिलंब चलो गजगामिनि। आज मिलो घन से तन को
घहरै घन मै जैसे क्रोधत दामिनि। मानत बात न जानत तैं
सखी जात बिहात इतै बहु जामिनि ।। २२ ।। गोप को भेख
कबै धरि हैं हरि कुंज गरी कब आनि बसैहैं। मोर पखउअन
कौ धरिहै कब ग्वारनि कै ग्रहि गोरस खैहैं। बंसी बजैहैं
कबै जमुना तट तोहि बुलावत मोहि पठैहैं। मान कह्यो हमरो
हरि पै चलु री बहुरो हरि हूँ न बुलैहैं ।। २३ ।। तेरी सराह
सदैव करैं त्रिय तेरी कथा पिय गावत हैं। हित तेरे शिंगार
सजै सजनी हित तेरे ही बैन बजावत हैं। हित तेरे ही चंदन
गौ घनसार दोऊ घसि अंग लगावत हैं। हरि को मनु स्री
ब्रिखभानकुमारि हर्‌यो कहूँ जान न पावत हैं ।।२४।। मोरपखा
की छटा मधु मूरति सोभित है जमुना के (मू०ग्रं०८२६) किनारै।
बूझत बात बिहाल भे बल्लभ बाल चलौं जहाँ लाल बिहारै।
राधिका माधव की बतिया सुनिकै अकुलाइ उठी डर डारै।
यौं सुनि बैन चली तजि ऐन रह्यो नहि मान मनोज के

कर भोजन आदि करके वह (राधा) बैठी हुई थी कि उससे सखी ने कहा कि हे गजगामिनी ! तुम्हें बड़े-बड़े नेत्रों वाले (कृष्ण) बुला रहे हैं तुम शीघ्र चलो। आज तुम उससे वैसे ही मिलो जैसे बिजली बादल से मिलती है। तुम, हे सखी ! मेरी बात नहीं मान रही हो और रात्रि व्यतीत होती जा रही है ।।२२।। (वसे तो तुम कहा करती थी कि) श्रीकृष्ण गोप का वेश धारण कर कब इन कुंज-गलियों में विचरण करेंगे ? कब मोरपंखी लगाकर गोपियों के घर दूध पिया करेंगे ? हे सखी ! यमुना तट पर बंसी बज रही है और तुझे बुलाने के लिए ही मुझे उन्होंने भेजा है। हे सखी ! तुम मेरा कहना मान जाओ और चलो, क्योंकि तुमको श्रीकृष्ण ही बुला रहे हैं ।। २३ ।। हे सखी ! वे हमेशा तुम्हारी ही प्रशंसा करते हैं और तेरे ही लिए उन्होंने श्रृंगार कर बंसी वजाना शुरू किया है। तेरे ही लिए वे घिसकर चंदन अपने बदन पर लगाते हैं। श्रीकृष्ण का मन वृषभानुकुमारी राधा ने हर लिया है, पर इस बात का किसी को पता नहीं ।। २४ ।। मोरपंखियों से सज्जित छटा वाले श्रीकृष्ण यमुना के तट पर शोभायमान हैं। वल्लभ कृष्ण के आगमन का पता लगते ही ग्वाल-बाल व्याकुल होकर उस ओर चलने का उपक्रम करने लगे जहाँ श्रीकृष्ण विचरण कर रहे थे। माधव के बारे में बातें सुनकर राधिका भी भय त्यागकर घर छोड़कर चल पड़ी। वह श्रीकृष्ण का वर्णन सुनकर

मारै ।। २५ ।। मोती के अंग बिराजत भूखन मोती के बेसर की छब बाढी । मोती के चौसर हार फबै दुति मोतिन के गजरान की गाढी । राधिका माधव कौ जमुना तट कंज गहे कर जोवति ठाढी । छीर के सागर को मथि कै मनौ चंद को चीर सभै तन काढी ।। २६ ।। ।। चौपई ।। न्हावत जहाँ आपु हरि ठाढे । अधिक ह्रिदै मै आनंद बाढे । वार गुपाल पार ब्रिज नारी । गावत गीत बजावत तारी ।। २७ ।। ।। सवैया ।। क्रीड़त है जहाँ कान कुमार बडे रस साथ बडे जल माहीं । वार त्रिया उहि पार गुपाल बिराजत ग्वारनि के दल माही । लै डुबकी दोऊ आपस मै रति मानि उठै द्रिड़ जाइ तहाँ ही । यौ रुचि मानि रमैं रस सों मनो दूरि रहे कोऊ जानत नाही ।। २८ ।। खेलती लाल सों बाल भली बिधि काहूँ सों बात न भाखत जी की । नेह जग्यो नव जोबन को उर बीच रही गडि मूरति पी की । बारि बिहार मैं नंदकुमार सो क्रीड़त है करि लाज सखी की । जाइ उठै बल तौनहि ते रति मान दोऊ मन मानत जी की ।। २९ ।। ।। सोरठा ।। जो

चल पड़ी और कामासक्त होकर अपने गर्व का वहन न कर सकी ।। २५ ।। मोतियों के आभूषण और मोतियों की नथनी से उसके अंगों की छवि और बढ़ गई । मोतियों का हार और गजरा अद्वितीय लग रहा था और वह हाथ में कमल का फूल लेकर श्रीकृष्ण की प्रतीक्षा कर रही थी । वह ऐसी लग रही थी मानों क्षीरसागर को मथकर निकाले गए चन्द्रमा के तन से निकली (चाँदनी) हो ।। २६ ।। ।। चौपाई ।। जहाँ श्रीकृष्ण जलक्रीड़ा कर रहे हैं वहाँ सबके हृदय में आनन्द की वृद्धि हो रही है । इस ओर श्रीगोपाल हैं और उस ओर ब्रज की नारियाँ हैं जो गीत गा रही हैं और तालियाँ बजा रही हैं ।। २७ ।। ।। सवैया ।। श्रीकृष्ण गहरे जल में पूरे रसपूर्वक क्रीड़ा कर रहे हैं । इस ओर स्त्रियाँ हैं और उस ओर श्रीकृष्ण विराजमान हो रहे हैं, परन्तु ये दोनों (राधा-कृष्ण) निश्चित स्थान पर डुबकी लगाकर जल में ही रति क्रिया कर रहे हैं और ऐसा मान कर रमण कर रहे हैं मानों सभी दूर हैं और उन्हें कोई देख नहीं रहा है ।। २८ ।। श्रीकृष्ण के साथ रमण करती हुई राधिका किसी से भी मन की बात नहीं कह रही हैं । यौवन के जोश में उसमें स्नेह उमड़ पड़ रहा है और उसके हृदय में प्रियतम की मूर्ति गड़ी हुई है । वह सखियों से सकुचाती हुई जलकुंज में नंदकुमार के साथ क्रीड़ा कर रही है और प्रेम के बल पर ही सुदृढ़ होकर मनोयोग से रतिक्रीड़ा में संलग्न

निजु त्रिय को देत पुरख भेद कछू आपनो। ता के बिधना लेत प्रान हरन करि पलक मै ॥ ३० ॥

॥ इति स्त्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे द्वादसमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १२ ॥ २३३ ॥ अफजूँ ॥

अथ त्रिदसमो चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ बहुरि सु मंत्री राइ सौ कथा उचारी आनि। सुनत सीस राजै धुन्यो रह्यो मौन मुखि ठानि ॥ १ ॥ पदूआ उह टिबिया बसै गैनी हमरे गाउँ। दास खसम ता को रहत रामदास तिह नाउँ ॥ २ ॥ रामदास अनतै रहत पदूआ के संग सोइ। न्हान हेत उठि जात तह जबै दुपहिरी होइ ॥३॥ इक दिन पदूआ के सदन बहु जन बैठे आइ। भेद न पायो गैनि यहि तहाँ पहूँची जाइ ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ तबै तुरत त्रिय बचन उचारे। रामदास आए न तुहारे। (मू०ग्रं०८२७) मोरे पति परमेश्वर ओऊ। कह ग्यो ताहि बतावहु कोऊ ॥५॥ ॥ दोहरा ॥ गरा ओर कहि यौ गई जात भए उठि लोग।

है ॥ २९ ॥ ॥ सोरठा ॥ जो व्यक्ति अपनी स्त्री को भेद की बातें बताता है, विधाता पल भर में उसके प्राण हर लेता है ॥ ३० ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र में मन्त्री-भूप-संवाद में बारहवें चरित्र की शुभ सत समाप्ति ॥ १२ ॥ २३३ ॥ अफजू ॥

तेरहवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ पुनः मंत्री ने राजा को कथा सुनाई जिसे सुनकर राजा सिर धुनता हुआ मौन हो गया ॥ १ ॥ एक सेवक उधर टीले पर रहता था और स्त्री (गमनीय) हमारे गाँव में रहती थी। उसके पति का नाम रामदास था ॥ २ ॥ जब रामदास अन्यत्र रहता तो वह सेवक के साथ सोती और कामक्रीड़ा वह दुपहर में नहाने का बहाना करके जाकर करती ॥ ३ ॥ एक दिन उस सेवक (पदूआ) के घर बहुत से लोग बैठे थे कि अनभिज्ञ यह स्त्री वहाँ जा पहुँची ॥४॥ ॥ चौपाई ॥ तुरन्त उस स्त्री ने पूछा कि कहीं रामदास (उसका पति) तो वहाँ नहीं आया है। वह मेरा पति परमेश्वर है। वह कहाँ गया है, कोई मुझे बताए ॥५॥ ॥ दोहा ॥ यह कहकर वह बड़ी गली की तरफ़ चली गई। सब लोग तुरन्त उठकर चल दिए और वह शोक-रहित होकर तुरन्त

तुरतु आनि तासौ रमी मन मै भई निसोग ॥ ६ ॥ पदूआ सौ रति मानिकै तहाँ पहूँची आइ । राख्यो हुतो सवारि जह आपन सदन सुहाइ ॥ ७ ॥ कैसो ही बुधिजन कोऊ चतुर कैसऊ होइ । चरित चतुरिया त्रियन को पाइ सकत नहि कोइ ॥ ८ ॥ जो नर अपुने चित्त कौ त्रिय कर देत बनाइ । जहा ताँहि जोबन हरै प्रान हरत जम जाइ ॥ ९ ॥ ॥ सोरठा ॥ त्रियहि न दीजै भेद ताहि भेद लीजै सदा । कहत सिम्रिति अरु बेद कोकसारऊ यौ कहत ॥ १० ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे त्रिदसमों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ १३ ॥ २४३ ॥ अफजूं ॥

अथ चत्रदसमो चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ बहुरि सु मंत्री राइ सों कथा उचारी एक । अधिक मोद मन मै बढै सुनि गुन बढै अनेक ॥१॥ एक त्रिया गई बाग मै रमी और सों जाइ । तहाँ यार ताको तुरत दुतिय पहूँच्यो आइ ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ यार आवत जब तिन त्रिय लह्यो । दुतिय मीत सों इह बिधि कह्यो । माली नाम

अपने प्रेमी के साथ रम गयी ॥ ६ ॥ उस सेवक से रतिक्रीड़ा करके वह अपने सुन्दर घर में वापस आ गयी ॥ ७ ॥ कोई कैसा ही बुद्धियुक्त और चतुर हो, वह स्त्रियों के चरित्रों के रहस्य को नहीं समझ सकता ॥ ८ ॥ जो व्यक्ति अपने चित्त का भेद स्त्री से कहता है, बुढ़ापा उसकी जवानी को हर लेता है और यमराज उसके प्राणों को नहीं छोड़ता ॥ ९ ॥ ॥ सोरठा ॥ स्मृतियों, ज्ञानभंडारों और कोकशास्त्र का यह सार तत्व है कि स्त्री को कभी भेद नहीं देना चाहिए, अपितु सदैव उसके रहस्यों को जानते रहना चाहिए ॥१०॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान में त्रिया चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में तेरहवें
चरित्र की सुभ सत् समाप्ति ॥ १३ ॥ २४३ ॥ अफजू ॥

चौदहवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ पुनः मंत्री ने राजा से एक ऐसी कथा कही जिसे सुनकर गुणों और प्रसन्नता में अत्यधिक वृद्धि होती है ॥ १ ॥ एक स्त्री बाग में गई और वहाँ अन्य किसी से रमण करने लगी । वहीं पर उसका दूसरा प्रेमी भी आ पहुँचा ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ प्रेमी को आते हुए जब स्त्री ने देखा तो दूसरे

आपन तुम करो। फल फूलनि आगे लै धरो ॥ ३ ॥ ॥ दोहरा ॥ जो हम इह जुत बाग मै बैठे मोद बढाइ। फूल फलन लै तुम तुरतु आगे धरो बनाइ ॥ ४ ॥ तबै तवन त्यों ही कियो जो त्रिय तिह सिख दीन। फूल फुले अरु फल घने तोरि तुरत कर लीन ॥५॥ त्रिया सहित जद बाग मै यार बिराज्यो जाइ। तो तिन फुल फल लै तुरतु आगे धरे बनाइ ॥ ६ ॥ इह माली इह बाग को आयो तुमरे पास। बहु याकौं धन दीजिये जिनि इह जाइ निरास ॥ ७ ॥ सुनत बचन त्रिय को तरुनि बहु धन दिय तिय हाथ। माली करि काढ्यो हितू तिह चरित्र के साथ ॥ ८ ॥ पुहपमती इह छल भए मित्रहि दियौ टराइ। माली करि काढ्यो तिसै रूप नगर के राइ ॥ ९ ॥ १ ॥ (मू०ग्रं०८२८)

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे चत्रदसमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १४ ॥ २५२ ॥ अफजूं ॥

अथ पंद्रसमों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ कथा चतुरदस मंत्रबर त्रिप सौ कही

मित्र से कहा कि तुम अपने आप को माली बना लो और अपने सामने फल-फूल रख लो ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ जैसे ही हम आनन्दपूर्वक बाग़ में बैठें तो तुम फल-फूल तुरन्त हमारे सामने रख देना ॥ ४ ॥ उसने वैसा ही किया जैसी शिक्षा उसे उस स्त्री ने दी थी। उसने बहुत से फल और फूल तोड़कर हाथ में पकड़ लिये ॥ ५ ॥ स्त्री-सहित जब वह मित्र बाग़ में बैठ गया तो इसने फूल-फल तुरन्त उनके सामने प्रस्तुत कर दिए ॥ ६ ॥ (तब स्त्री ने कहा कि) इस बाग़ का यह माली तुम्हारे पास आया है; इसे बहुत धन दो ताकि यह निराश न जाय ॥ ७ ॥ स्त्री की बात सुनकर उस नवयुवक ने बहुत सा धन उसे दिया और इस प्रकार इस स्त्री ने अपने मित्र को माली बनाकर ढोंगपूर्ण तरीक़े से निकाल दिया ॥ ८ ॥ पुष्पमती ने इस प्रकार दूसरे मित्र को भेज दिया और हे राजन्! इस प्रकार पहले मित्र को माली बनाकर निकाल दिया ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में चौदहवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ७४ ॥ २५ ॥ अफजू ॥

पन्द्रहवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ इस प्रकार मंत्री ने चौदह कथाएँ राजा को सुना दी।

बखानि। सुनत रीझि कै न्रिप रहे दियो अधिक तिह दान ॥ १ ॥ एक बिमाता भान की रामदासपुर बीच। बहु पुरखन सौ रति करै ऊच न जानै नीच ॥ २ ॥ ता को पति मरि ग्यो जबै ताहि रह्यो अखिधान। अधिक ह्रिदै भीतर डरी लोक लाज जिय जान ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ भानमती तिह नाम बखनियत। बडी छिनारि जगत मैं जनियत। जब ता कौ रहि गयो अधाना। तब अबला को ह्रिदै डराना ॥४॥ ॥ अड़िल्ल ॥ तिन प्रसाद हू किय बहु पुरख बुलाइकै। तिन देखत रही सोइ सु खाट डसाइकै। चमकि ठाढ उठि भई चरित्र मन आनि कै। हो पति को नाम बिचार उचार्‌यो जान कै ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ जा दिन मोरे पति मरे मोसौ कह्यो बुलाइ। जे अब तूँ मोसों जरैं परैं नरक मो जाइ ॥६॥ ॥ अड़िल्ल ॥ भान लरिकवा रहै सेव तिह कीजियै। पालि पोसि करि ताहि बडो करि लीजियै। आपु जदिन वह खैहै खाटि कमाइकै। हो तदिन सुपनि तुहि देहौं हौं हूँ आइकै ॥७॥ ॥ दोहरा ॥ भान करो कर ते बडो सुपन दियो पति आइ। ता ते हौ हरिराइ के जरत कीरति पुर जाइ ॥ ८ ॥

राजा सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने मंत्री को काफ़ी धन-धान्य दिया ॥ १ ॥ रामदासपुर में भानु नामक व्यक्ति की विमाता रहती थी जो बिना ऊँच-नीच का विचार किए हुए अनेकों पुरुषों से रति-क्रिया किया करती थी ॥ २ ॥ पति के मरने के पश्चात् भी उसे गर्भ रह गया और लोक-लाज का ध्यान कर वह हृदय में अत्यधिक डर गई ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसका नाम भानुमती था और चारों ओर कुलटा के रूप में जानी जाती थी। जब गर्भ रह गया तो वह अबला मन में डरने लगी ॥ ४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ उस स्त्री ने बहुत से लोगों को अपने घर पर भोजन के लिए बुलाया और उन सबको आते देखकर पलंग पर सो गई। तब (कुछ समय पश्चात्) वह छल-पूर्ण हृदय से हड़बड़ाकर उठ खड़ी हुई और अपने पति का नाम पुकारने लगी ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ (वह कहने लगी कि) जिस दिन मेरा पति मरा था उसने मुझे बुलाकर कहा था कि यदि तुम मेरे साथ सती होओगी तो नरक में जाओगी ॥ ६ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ भानु अभी बच्चा है तुम उसकी सेवा करो और उसे पाल-पोसकर बड़ा करो, जिस दिन वह कमाने-खाने लगेगा तो मैं तुमको सपने में मिलूँगा ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ भानु अब बड़ा हो गया है और मेरे पति ने मुझे सपने में दर्शन दिए हैं। इसीलिए अब मैं श्रीहरिराय जी के

॥ अड़िल्ल ॥ लोग हटकि बहु रहे न तिन बच मानियो। धनु लुटाइ उठि चली घनो हठ ठानियो। रामदासपुर छाडि कीरतिपुर आइकैं। हो इक पग ठाढे जरी म्रिदंग बजाइकैं ॥ ९ ॥ ॥ दोहरा ॥ बहु लोगन देखत जरी इक पग ठाढी सोइ। हेरि रीझि रीझिक रहे भेद न जानत कोइ ॥१०॥ सकल जगत मै जो पुरखु त्रिय को करत बिस्वास। साति दिवस भीतर तुरतु होत तवन को नास ॥ ११ ॥ जो नर काहू त्रिया को देत आपनो चित्त। ता नर कौ इह जगत मै होत खुआरी नित्त ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे पंद्रसमों
चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १५ ॥ २६४ ॥ अफजूं ॥

अथ खोड़समो चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ तीर सतुद्रव के हुतो रहत राइ सुख पाइ। दरब होत तिह ठौर ही रामजनी इक आइ ॥ १ ॥ (मू०ग्रं०८२९) ॥ अड़िल्ल ॥ छजिया जाको नाम सकल जन जानई। लधीआ

कीरतपुर में जाकर जल मरूँगी ॥ ८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ लोगों के बहुत मना करने पर भी उसने किसी की नहीं मानी और हठपूर्वक धन लुटाकर चल पड़ी। रामदासपुर छोड़कर वह कीरतपुर आ गई और एक पैर पर खड़ी होकर ढोल-मृदंग बजाकर जल मरी ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ लोगों ने उसे जब जलते देखा तो सभी (उसकी पति-भक्ति पर) प्रसन्न हो उठे, परन्तु कोई भी उसके रहस्य को न जान सका ॥ १० ॥ सम्पूर्ण विश्व में यदि कोई स्त्री पर विश्वास करता है तो उस पुरुष का सात दिन के भीतर नाश हो जाता है ॥ ११ ॥ जो व्यक्ति अपना भेद स्त्री को बता देता है, वह इस संसार में सदैव परेशान रहता है ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान में त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में पंद्रहवें
चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १५ ॥ २६४ ॥ अफजू ॥

सोलहवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ सतलज नदी के किनारे एक राजा था। एक वेश्या रुपये-पैसे के लालच में वहाँ आयी ॥ १ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ लोग उसे छजिया और उसके घनिष्ठ मित्र उसे लधिया नाम से जानते थे। जो कोई व्यक्ति उस

वाकी नाम हितू पहिचानई। जो कोऊ पुरख बिलोकत तिनको आइकै। हो मन बच क्रम करि रहित ह्रिदै सुखु पाइकै ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ निरखि राइ सो बसि भई तिह बसि होत न सोइ। तिन चित मै चिंता करी किह बिधि मिलबो होइ ॥ ३ ॥ यह मो पर रीझत नहीं कहु कस करों उपाइ। मोरे सदन न आवई मुहि नहि लेत बुलाइ ॥ ४ ॥ तुरतु तवन को कीजियै किह बिधि मिलन उपाइ। जंत्र मंत्र चेटक चरित्र किए जू बसि ह्वै जाइ ॥ ५ ॥ जंत्र मंत्र रही हारि करि राइ मिल्यो नहि आइ। एक चरित्र तब तिन कियो बसि करबे के भाइ ॥ ६ ॥ बस्त्र सभै भगवे करे धरि जुगिया को भेस। सभा मध्य तिह राइ कौ कीनो आनि अदेस ॥ ७ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ तिह जुगियहि लखि राइ रीझि चित मै रह्यो। जाते कछु संग्रहौं मंत्र मन मों चह्यो। तिह ग्रिहि दियो पठाइक दूत बुलाइकै। हो कला सिखन के हेत मंत्र समझाइकै ॥ ८ ॥ ॥ चौपई ॥ चलि सेवक जुगिया पहि आवा। राइ कह्यो सो ताहि जतावा। कछू मंत्र मुर ईसहि दीजै। क्रिपा जानि कारज प्रभु कीजै ॥ ९ ॥ ॥ दोहरा ॥ पहर

स्त्री को देखता वह उसकी सुन्दरता देखकर अत्यन्त सुख प्राप्त करता ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ वह उस राजा को देखकर मोहित हो गयी परन्तु राजा उसके वश में न हुआ। वह मन में सोचने लगी कि इससे कैसे मिलन हो ॥ ३ ॥ यह तो मुझ पर मोहित नहीं हो रहा है। मैं क्या करूँ? न तो यह मेरे घर पर आता है और न ही मुझे अपने घर पर बुलाता है ॥ ४ ॥ इससे मिलने का तुरन्त कोई उपाय करना चाहिए, यह सोचकर उसने यंत्र-मंत्र, जादू-टोना किए ताकि वह उसके वश में हो जाय ॥ ५ ॥ वह यंत्र-मंत्र करके थक गई परन्तु राजा उसे नहीं मिला। तब उसने राजा को वश में करने के लिए एक तरीक़ा अपनाया ॥ ६ ॥ उसने भगवे वस्त्र धारण कर योगी का वेश पहना और राजा की सभा में पहुँचकर उसे नमस्कार किया ॥७॥ ॥ अड़िल्ल ॥ उस जोगी को देखकर राजा चित्त में रीझ उठा और उसने सोचा कि इससे कुछ मंत्र आदि सीखा जाय। राजा ने उसके घर एक दूत भेजा ताकि कुछ कला सीखी जा सके ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ सेवक चलकर जोगिन के पास आया और उसने राजा का मन्तव्य उससे कहा। हे देव! मुझे कुछ मंत्र आदि दीजिए और कृपापूर्वक मेरा कार्य कीजिए ॥९॥ ॥ दोहा ॥ एक प्रहर बाद जोगिन

एक लौ छोरि द्रिग कही जोगियहि बात। लै आवहु राजहि इहाँ जौ गुन सिख्यो चहात ॥ १० ॥ अरध रात्र बीतै जबै आवै हमरे पास। स्री गोरख की मया ते जैहै नही निरास ॥ ११ ॥ ॥ चौपई ॥ सेवक तासों जाइ सुनायो। अरध रात्र बीते सु जगायो। ता जुगिया के ग्रहि लै आयो। हेरि राइ त्रिय अति सुख पायो ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ राजा सो आइसु कही दीजै लोग उठाइ। धूप दीप अच्छत पुहप आछो सुरा मँगाइ ॥ १३ ॥ तब राजै तैसो किआ लोगन दिया उठाइ। धूप दीप अच्छत पुहप आछो सुरा मँगाइ ॥ १४ ॥ तब राजै अपने सभन लोगन दिया उठाइ। आपु इकेलै ही रह्यो मंत्र हेत सुख पाइ ॥ १५ ॥ ॥ चौपई ॥ रह्यो इकेलो राइ निहार्यो। तब जोगी इह भाँति उचार्यो। चमतकार इक तोहि दिखैहौ। तिह पाछे तुहि मंत्र सिखैहौ ॥ १६ ॥ ॥ दोहरा ॥ होत पुरख ते मै त्रिया त्रिय ते नर ह्वै जाउ। नर (मू०ग्रं०८३०) ह्वै सिखवौ मंत्र तुहि त्रिय ह्वै भोग कमाउ ॥ १७ ॥ ॥ राइ बाच ॥ पुरख मंत्र दाइक पिता मंत्र दाइ त्रिय मात। तिनकी सेवा कीजियै भोगन की ना

ने आँखें खोलकर कहा कि यदि गुण सीखना है तो राजा को यहाँ ले आओ ॥१०॥ आधी रात बीतने पर वह हमारे पास आए और श्रीगोरखनाथजी की कृपा से वह निराश नहीं जायगा ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ सेवक ने वृत्तांत राजा से कहा और आधी रात को उसे सोते से जगाकर योगी के घर ले आया। राजा को देखकर उस स्त्री ने अत्यन्त सुख प्राप्त किया ॥१२॥ ॥ दोहा ॥ राजा को उस स्त्री ने कहा कि सब लोगों को उठाकर भेज दो तथा धूप, दीप, अक्षत, पुष्प एवं अच्छी शराब मँगवाओ ॥ १३ ॥ तब राजा ने वैसा ही किया और लोगों को उठा दिया। फिर धूप, दीप, अक्षत, पुष्प एवं अच्छी शराब मँगाया ॥ १४ ॥ तब राजा ने अपने सभी लोगों को उठा दिया और मंत्र-प्राप्ति के लिए अकेला ही रह गया ॥१५॥ ॥ चौपाई ॥ राजा को अकेला देखकर जोगिन ने कहा कि पहले तुम्हें एक चमत्कार दिखाया जायगा और बाद में तुम्हें मंत्र सिखाया जायगा ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥ मैं पुरुष से स्त्री हो जाऊँगी और पुनः स्त्री से पुरुष हो जाऊँगी। पुरुष बनकर मैं तुम्हें मंत्र सिखाऊँगा और स्त्री बनकर मैं तुम्हारे साथ संभोग करूँगी ॥ १७ ॥ ॥ राजा उवाच ॥ मंत्र देनेवाला पुरुष पिता और स्त्री माता होती है।

जात ।। १८ ।। ।। अड़िल्ल ।। बहु बरिसन लगि जानि सेव गुर कीजियै । जतन कोटि करि बहुरि सु मंत्रहि लीजियै । जाहि अरथ के हेत सीस निहुराइयै । हो कहो चतुरि ता सौ क्यों केल मचाइयै ।। १९ ।। ।। चौपई ।। तब जोगी इह भाँति सुनायो । तव भेटन हित भेख बनायो । अब मेरे संग भोग कमैयै । आन पिया सुभ सेज सुहैयै ।।२०।। ।। दोहरा ।। तन तरफत तव मिलन कौ बिरह बिकल भ्यो अंग । सेज सुहैयै आन पिय आजु रमो मुहि संग ।। २१ ।। भजे बधैहो चोर कहि तजे दिवैहौ गारि । ना तर शंक बिसारि करि मोसौ करहु बिहार ।। २२ ।। कामातुर ह्वै जो तरुनि आवत पिय के पास । महाँ नरक सो डारियत दै जो जान निरास ।। २३ ।। तन अनंग जाके जगै ताहि न दै रति दान । तवन पुरख को डारियत जहाँ नरक की खानि ।।२४।। ।। अड़िल्ल ।। रामजनी ग्रहि जनम बिधातै मुहि दिया । तव मिलबे हित भेख जोग को मैं लिया । तुरत सेज हमरी अब आनि सुहाइयै । हो ह्वै दासी तव रहों न मुहि तरसाइयै ।। २५ ।। ।। दोहरा ।। कहा

उनकी तो सेवा की जानी चाहिए न कि उनके साथ भोग-विलास किया जाना चाहिए ।। १८ ।। ।। अड़िल्ल ।। बहुत वर्षों तक गुरु की सेवा की जाती है और अनेकों प्रयत्न करके मंत्र प्राप्त किया जाता है । जिसके लिए उनके सम्मुख सिर झुकाया जाता है; कैसे उसी मंत्र-प्राप्ति के लिए उनसे केलि-क्रीड़ा की जाय ।।१९।। ।। चौपाई ।। तव योगी ने यह कहा कि तुमसे मिलन के लिए ही मैंने यह वेश धारण किया है । अब तुम मेरे साथ संभोग करो और मेरी शय्या पर विराजो ।। २० ।। ।। दोहा ।। तुमसे मिलने के लिए मेरा मन तड़प रहा है और अंग-अंग व्याकुल हो रहा है । इस शोभायुक्त शय्या पर हे प्रिय ! मेरे साथ रमण करो ।। २१ ।। अगर तुम भागे तो तुम्हें चोर कहकर बँधवा दूँगी और अगर तुमने मेरा त्याग किया तो मैं तुम्हें गाली दूँगी, इसलिए हे प्रिय ! निःसंकोच होकर मुझसे रति-क्रीड़ा करो ।। २२ ।। तरुणी कामातुर होकर यदि पुरुष के पास आती है और पुरुष यदि उसे निराश करता है तो ऐसा पुरुष घोर नरक का अधिकारी होता है ।। २३ ।। कामोद्दीप्त स्त्री को जो पुरुष रतिदान नहीं देता है, उसे नरक की खान में फेंका जाना चाहिए ।। २४ ।। ।। अड़िल्ल ।। ईश्वर ने मुझे वेश्या के घर जन्म दिया और तुझसे मिलने के लिए मैंने योगी वेश धारण किया है । अब आप तुरन्त मेरी शय्या पर शोभा बढ़ाओ; मैं तुम्हारी दासी हूँ, मुझे मत तरसाओ ।।२५।।

भयो सुघरा भए करत जुबन को मान। बिरह बान मो को लगे ब्रिथा न दीजै जान ॥ २६ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ ब्रिथा न दीजै जान मैन बसि मैं भई। बिरहि समुंद के बीच बूडि सिर लौ गई। भोग करे बिनु मोहि जान नही दीजियै। हो घनवारी निस हेरि गुमान न कीजियै ॥ २७ ॥ दिसन दिसन के लोग तिहारे आवहीं। मन बांछत जो बात उहै बर पावहीं। कवन अवग्या मोरि न तुम कह पाइयै। हो दासन दासी ह्वै हौ सेज सुहाइयै ॥२८॥ मंत्र सिखन हित धाम तिहारे आइयो। तुम आगै ऐसो इह चरित बनाइयो। मै न तुहारै संग भोग क्योंहूँ करों। हो धरम छूटन के हेत अधिक मन मैं डरों ॥२९॥ ॥ चौपई ॥ रामजनी बहु चरित्र बनाए। हाइ भाइ बहु भाँति दिखाए। जंत्र मंत्र तंत्रो अति करे। कैसेहूँ राइ न करि मै परे ॥ ३० ॥ (मू०ग्रं०८३१) ॥ अड़िल्ल ॥ चोर चोर कहि उठी सु आँगन जाइकै। त्रास दिखायो ताहि मिलन हित राइकै। बहुरि कही त्रिय आइ बात सुन लीजियै। हो अबै बधैहो तोहि कि मोहि भजीजियै ॥ ३१ ॥ चोर बचन सुनि लोग पहूँचे आइकै। तिन प्रति कह्यो कि सोत उठी बरराइकै। गए

॥ दोहा ॥ तुम बलिष्ठ हो तो क्या हुआ, यौवन पर गर्व मत करो। मुझे विरह-बाण लगा है, अतः (यह समय) व्यर्थ मत जाने दो ॥ २६ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ (समय) व्यर्थ मत जाने दो, मैं इस समय कामासक्त हूँ और विरह-समुद्र में सिर तक डूबी हुई हूँ। मुझे भोग किए बिना मत छोड़ो और इस काली रात को देखकर मत इतराओ ॥ २७ ॥ दसों दिशाओं से चलकर लोग तुम्हारे पास आते हैं और मनोवांछित वरदान प्राप्त करते हैं। मेरी क्या भूल है, आप मुझे बता नहीं सकते (क्योंकि मैंने कोई ग़लती नहीं की है)। मैं आपकी दासी हूँ अतः आप मेरी शय्या की शोभा बढ़ाइए ॥ २८ ॥ मैं मंत्र सीखने तुम्हारे घर आया हूँ और तुमने यह नाटक खेला है। मैं तुम्हारे साथ भोग क्योंकर करूँ। स्वधर्म छूटने के भय से मैं मन में डरता हूँ ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ उस वेश्या ने बहुत प्रपंच किया और विभिन्न प्रकार के हाव-भाव उसे दिखाए। उसने बहुत से जादू-टोने भी किए, परन्तु किसी भी भाँति राजा उसके हाथ न लगा ॥ ३० ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ वह (स्त्री) आँगन में जाकर चोर-चोर चिल्ला उठी और राजा से संभोग के लिए उसे भयभीत करते हुए राजा से कहने लगी कि मैं अभी तुम्हारा वध करवा दूँगी अन्यथा तुम मेरा भोग करो ॥ ३१ ॥ 'चोर,चोर' सुनकर जब लोग आ पहुँचे तो

धाम ते कह्यो मित्र कौ कर पकरि। हो अबै बधैहौ तोहि कि मोसौ भोग करि ॥ ३२ ॥ ॥ दोहरा ॥ तबै राइ चित के बिखै ऐसे किया बिचार। चरित्र खेलि कछु निकसियै इहै मंत्र का सार ॥ ३३ ॥ भजौ तौ इज़्ज़त जात है भोग कियो ध्रम जाइ। कठिन बनी दुहूँ बात तिह करता करै सहाइ ॥ ३४ ॥ पूत होइ तौ भांडवह सुता तौ बेस्या होइ। भोग करे भाजत धरम भजे बँधावत सोइ ॥ ३५ ॥ ॥ चौपई ॥ कह्यो सुनहु तुम बात पिआरी। देखत थो मै प्रीति तिहारी। तुम सी तिया हाथ जो परै। बडो मूड़ जो ताहि प्रहरै ॥ ३६ ॥ ॥ दोहरा ॥ रूपवंत तो सी तिया परै जु कर मै आइ। ताहि त्याग मन मै करै ता को जनम लजाइ ॥ ३७ ॥ पोसत भाँग अफीम बहु लीजै तुरतु मँगाइ। निजु कर मोहि पिवाइयै ह्रिदै हरख उपजाइ ॥ ३८ ॥ तुम मदरा पीवहु घनो हमै पिवावहु भंग। चारि पहर कौ मानिहौ भोगि तिहारे संग ॥३९॥ ॥ चौपई ॥ फूलि गई सुन बात अयानी। भेद

वह उनसे कहने लगी कि मैं सोते-सोते हड़बड़ाकर चिल्लाने लगी थी। जब वे घरों को चले गए तो इसने राजा का हाथ पकड़कर पुनः कहा कि या तो मुझसे भोग करो अन्यथा मैं तुम्हारा वध करवा दूँगी ॥३२॥ ॥ दोहा ॥ तब राजा ने भी चित्त में विचार किया कि बुद्धिमत्ता इसी में है कि कोई नाटक कर के यहाँ से निकला जाय ॥ ३३ ॥ यदि भागता हूँ तो इज़्ज़त जाती है और भोग करता हूँ तो धर्म जाता है। दोनों ही बातें कठिन हैं; हे परमात्मा ! मेरी सहायता करो ॥ ३४ ॥ इससे यदि पुत्र होगा तो भाँड़ होगा और यदि लड़की हुई तो वह भी वेश्या होगी। यदि इससे भोग करता हूँ तो धर्म जाता है और वैसे भागता हूँ तो बाँध लिया जाऊँगा ॥३५॥ ॥ चौपाई ॥ (राजा ने कहा) हे प्यारी ! तुम मेरी बात सुनो, मैं तो तुम्हारा प्यार देख रहा था। तुम्हारे जैसी स्त्री हाथ लगने पर जो छोड़ देगा वह महामूर्ख समझा जायगा ॥ ३६ ॥ ॥ दोहा ॥ तुम्हारे जैसी रूपवती स्त्री हाथ में आने पर जो उसे छोड़ देगा उसका जन्म लेना ही लज्जायुक्त है ॥ ३७ ॥ तुम पोस्ता, भाँग, अफ़ीम आदि तुरन्त मँगा लो और प्रसन्नतापूर्वक अपने हाथों से मुझे पिलाओ ॥ ३८ ॥ तुम खूब मदिरा पिओ और हमको भाँग पिलाओ, तब मैं चार प्रहर तक तुम्हारे साथ रमण करूँगा ॥ ३९ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह नासमझ यह सुनकर फूल उठी और उसने इस रहस्य को न समझा। वह

अभेद की बात न जानी । अधिक ह्रिदे मे सुख उपजायो । अमल कह्यो सो तुरतु मँगायो ।। ४० ।। ।। दोहरा ।। पोसत भाँग अफीम बहु गहिरी भाँग घुटाइ । तुरत तरनि ल्यावत भई मद सत बार चुआइ ।। ४१ ।। ।। अड़िल्ल ।। राइ तबै चित भीतर किया बिचार है । याहि न भजिहौ आजु मंत्र का सार है । अधिक मत्त करि याहि खाट पर डारिकै । हो साठि मुहर दै भजिहों धरम सँभारिकै ।। ४२ ।। ।। दोहरा ।। रीति न जानत प्रति की पैसन की परतीत । बिच्छू बिसीअरु बेसिया कहो कवन के मीत ।। ४३ ।। ता को मद प्यायो घनो अति चित मोद बढाइ । मत्त सवाई खाट पर आपि भजन के भाइ ।।४४।। मदरा प्यायो तरुनि को निजु कर प्याले डारि । इह छल सौ तिह मत्त करि राखी खाट सुवारि ।।४५।। (मू०ग्रं०८३२) ।। अड़िल्ल ।। भरि भरि निजु कर प्याले मद तिह प्याइयो । रामजनी सौ अधिक सु नेह जताइयो । मत्त होइ स्वै गई राइ तब लौ कियो । हो साठि मुहर दै ताहि भजन को मगु लियो ।। ४६ ।। जो तुम सौ हित करे न तुम तिह सौ करो । जो तुमरे रस ढरे न तिह रस तुम ढरो । जाके चित्त की बात

हृदय में अत्यन्त प्रसन्न हुई और उसने आदेशानुसार नशीले पदार्थ मँगा लिये ।। ४० ।। ।। दोहा ।। पोस्ता, भाँग, अफ़ीम, घुटी हुई गहरी भाँग और सात बार आसवित की हुई शराब उस तरुणी ने लाकर प्रस्तुत कर दी ।।४१।। ।। अड़िल्ल ।। तब राजा ने मन में दृढ़ कर लिया कि सार तत्त्व यह है कि मैं इसके साथ भोग-विलास नहीं करूँगा । इसे मदमत्त करके पलंग पर लिटा कर अपने धर्म को बचाता हुआ इसे साठ मुहरें देकर भाग खड़ा होऊँगा ।।४२।। ।। दोहा ।। इसे प्रेम की रीति का पता नहीं और मात्र पैसों से ही इसका प्रेम है । बिच्छू, सर्प और वेश्या भला किसके मित्र होते हैं ।। ४३ ।। राजा ने प्रसन्न होकर अत्यधिक मद्यपान करा दिया और संभोग के लिए उस मदमस्त को पलंग पर लिटा दिया ।। ४४ ।। राजा ने अपने हाथ से उस तरुणी को मदिरापान कराया और छलपूर्वक उसे पलंग पर सुलाए रखा ।। ४५ ।। ।। अड़िल्ल ।। प्याले भर-भर उसे शराब पिलायी और उस वेश्या से प्यार जताया । जब वह मदमत्त होकर सो गई तो राजा ने साठ मुहरें वहाँ रखकर भागने का उपक्रम किया ।। ४६ ।। जो तुमसे (अनपेक्षित) प्यार करे, उससे प्यार मत करो । जो तुम्हारे रस में (अनचाहे) डूबे, उसको अपने साथ मत

आपु नहि पाइयै। हो ताकह चित को भेद न कबहु जताइयै ।। ४७ ।। ।। दोहरा ।। राइ भज्यो त्रिय मत्त करि साठि मुहर दै ताहि। आनि बिराज्यो धाम मै किनहूँ न हेर्यो वाहि ।। ४८ ।। ।। अड़िल्ल ।। तबै राइ ग्रहि आइ सु प्रण ऐसो कियो। भले जतन सौ राखि धरम अब मै लियो। देस देस निजु प्रभ की प्रभा बिखेरि हौ। हो आन त्रिया कह बहुरि न कबहूँ हेरिहौ ।।४९।। ।। दोहरा ।। वहै प्रतग्या तदिन तें ब्यापत मो हिय माहि। ताँ दिन ते पर नारि कौ हेरत कबहूँ नाहि ।। ५० ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे खोड़समो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १६ ।। ३१४ ।। अफजूं ।।

अथ सपतदसमो चरित्र कथनं ।।

।। अड़िल्ल ।। बंदिसाल त्रिप सुत को दियो पठाइकै। भोर होत पुन लियो सु निकटि बुलाइकै। मंत्री तबही कथा उचारी आनिकै। हो बढ्यो भूप के भरम अधिक जिय

लगाओ। जिसके चित्त की बात समझ में न आए, उसे भी कभी अपने चित्त की बात मत बताओ ।। ४७ ।। ।। दोहा ।। उस स्त्री को मदमत्त करके और उसे साठ मुहर देकर राजा भाग खड़ा हुआ और बिना किसी को दिखे हुए वह अपने घर में आ विराजमान हुआ ।। ४८ ।। ।। अड़िल्ल ।। तब राजा ने घर आकर प्रतिज्ञा की कि इस बार तो मैंने प्रयत्नपूर्वक अपने धर्म को बचा लिया, अब मैं देश-देशान्तरों में उस प्रभु का यश फैलाऊँगा और कभी भी किसी स्त्री की ओर नहीं देखूँगा ।। ४९ ।। ।। दोहा ।। वही प्रतिज्ञा उसी दिन से मेरे हृदय में बसी हुई है और मैं कभी भी परायी स्त्री को नहीं देखता हूँ ।। ५० ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में सोहलवें चरित्र की शुभ सत समाप्ति ।। १६ ।। ११४ ।। अफजू ।।

सत्रहवाँ चरित्र-कथन

।। अड़िल्ल ।। राजा ने पुत्र को बंदीख़ाने में भेज दिया और प्रातः होते ही पुनः अपने पास बुला लिया। तब मंत्री ने आकर कथा कही और राजा

जानिकै ॥१॥ ॥दोहरा॥ शहिर बदखशाँ मे हुती एक मुगल की बाल। ता सो किया चरित्र तिन सो तुम सुनहु न्रिपाल ॥ २ ॥ बितनमती इक चंचला हितू मुगल की एक। जंत्र मंत्र अरु बसीकर जानत हुती अनेक ॥ ३ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ एक दिवस तिन लीनी सखी बुलाइकै। परि गई तिन मै होड सु ऐसे आइकै। कालि सजन के बाग कह्यो चलि जाइ हों। हो इह मूरख के देखत भोग कमाइहों ॥४॥ ॥ दोहरा ॥ दुतिय सखी ऐसे कह्यो सुनु सखी बचन हमार। भोग कमैहों जार सों नार बधैहों जार ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ असताचल सूरज जब गयो। प्राची दिस ते ससि प्रगटयो। भागवतिन उपज्यो सुख भारों। बिरहिणि कौ साइक ससि मारों ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ असताचल सूरज गयो रह्यो चंद्र मँडराइ। लपटि रह्यो पिय त्रियन सों त्रिया पियन लपटाइ ॥७॥(मू०ग्रं०८३३) उडगन गीरी रवि अथन प्रभा प्रवाना पाइ। जानुक चंद्र अमीन के फिरे बिताली आइ ॥ ८ ॥ ॥ चौपई ॥ असता सो भोगन तिन माने। चारि जाम घटिका इक जाने। चौथे जाम सोइ कर रहे। चतुरन के ग्रीवाँ कुच गहे ॥ ९ ॥

का और अधिक विश्वास जम गया ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ बदखशाँ शहर में एक मुगल की स्त्री थी, उसने जो चरित्र दिखाया, हे राजन्! अब उसे सुनो ॥ २ ॥ वितनमती नामक स्त्री एक मुगल से प्रेम करती थी। वह अनेक प्रकार के यंत्र-मंत्र-वशीकरण आदि जानती थी ॥ ३ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ एक दिन उसने अपनी एक सखी को बुलाया और उनमें एक बाज़ी लग गयी। कल मैं इस मित्र के बाग में जाऊँगी और इस मूर्ख को देखते-देखते (अन्य से) संभोग करूँगी ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ दूसरी सखी ने कहा कि हे सखी! मेरी बात सुनो। मैं (एक) मित्र के साथ संभोग करूँगी और (दूसरे) मित्र के हाथों ही अपना नाड़ा बँधवाऊँगी ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ संध्या समय जब सूर्य डूब गया और पूर्व दिशा से चन्द्रमा प्रकट हुआ तो सौभाग्यवतियों को परम सुख प्राप्त हुआ और विरहणियों को चन्द्रमा बाणों से वेधने लगा ॥६॥ ॥ दोहा ॥ सूर्य अस्त हुआ, चन्द्रमा आकाश में विहार करने लगा तो प्रियतम तथा प्रियतमाएँ एक-दूसरे से लिपटने लगे ॥ ७ ॥ रविप्रभा के आगमन के पहले तारे उसी प्रकार विलुप्त हो गए जैसे बड़े थानेदार के आने पर छोटे-मोटे सिपाही तितर-बितर हो जाते हैं ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ सूर्यास्त के साथ ही भोग-विलास शुरू हो गया और चार प्रहर एक घड़ी के समान बीतने

।। दोहरा ।। नान खान अरु दान हित दिनि दिखि जगिहै राज । दुजन दलन दीनोधरन दुशटन दहिबे काज ।। १० ।। ।। सवैया ।। जानि पयान बिछोह त्रियान के छोभ बड्यो उर भीतर भारी । अंचर डारिकै मोतिन हार दुरावत जानि भयो उजियारी । पानहूँ पोछत प्रीतम को तन कैसे रहै इह चाहत प्यारी । चंद चड़्यो सु चहैं चिर लौ चित देत दिवाकर की दिसि गारी ।। ११ ।। ।। भुजंग छंद ।। चलों प्रान प्यारे फुले फूल आछे । दिपै चारु मानो ढरे मैन साछे । किधो गीर बाणेस हूँ के सु धारे । सुने कान ऐसे न वैसे निहारे ।। १२ ।। तिही बाग हूँ मै तरोरुह चबैयै । रिझैयै तुमै भोग भावत कमैयै । बिलंब न करो प्रात होतो पधारैं । सभै चित्त के दूरि कै शोक डारैं ।। १३ ।। ।। अड़िल्ल ।। लई सहचरी चतुरि सु एक बुलाइकै । कहो पिअरवा साथ भेद समझाइकै । लिखि पतिया कर दई कह्यो तिह दीजियो । हो कालि हमारे बाग क्रिपा चलि कीजियो ।। १४ ।। कह्यो पिअरवहि ऐस भेद समुझाइयो । कालि हमारे बाग क्रिपा करि आइयो । जबै

लगा । चौथे प्रहर तक सब गर्दन और कुचों को पकड़े हुए सोते रहे ।। ९ ।। ।। दोहा ।। स्नान, खाने और दान के लिए दिन दिखाई देता है । दिन में ही दुर्जनों का दलन, दीनों का उद्धार और दुष्टों का दहन किया जाता है ।। १० ।। ।। सवैया ।। रात्रि का जाना देखकर स्त्रियों के हृदय में क्षोभ बढ़ गया । ऐसा लग रहा है मानों प्रात:काल की प्रभा अपना आँचल फलाकर तारा रूपी मोतियों को छिपा ले रही है; अथवा वह अपने प्रियतम के तन पर तारा रूपी स्वेद-बूँदों को पोंछ रही है । कामिनी चाहती है कि चन्द्रमा चढ़ा रहे और इसलिए वह सूर्य की दिशा को देखकर गालियाँ दे रही है ।। ११ ।। ।। भुजंग छंद ।। हे प्राणप्यारे ! चलो, अच्छे फूल खिले हुए ऐसे लग रहे हैं मानों साक्षात् कामदेव विचरण कर रहे हैं । वे सुन्दर फूल कामदेव के बाणों के समान लग रहे हैं । वे ऐसे हैं जिन्हें कृष्ण ने भी देखा-सुना न होगा ।।१२।। ऐसे फूलों वाले बाग़ में मैं फल खाऊँगी और संभोग के माध्यम से तुम्हें रिझाऊँगी । अब जल्दी करें और प्रात: होने से पहले चलें और चित्त के सभी शोकों को दूर कर दें ।। १३ ।। ।। अड़िल्ल ।। उसने एक सखी को बुलाया और अपने (अन्य) प्रेमी (को बुलाने) का भेद समझाकर कह दिया । उसे पत्र लिखकर दिया और प्रेमी को कहलवाया कि वह कल बाग़ में पहुँच जाय ।। १४ ।। अपने प्रेमी को यह समझाया कि कल हमारे बाग़ में आना

मुगल छलि दैंहो रूख चड़ाइकै। हो तबै सजनवा मिलियहु हम को आइकै ॥ १५ ॥ ॥ दोहरा ॥ प्रात मुगल को लै चली अपने बाग लिवाइ। रस कस लै मदरा चली ह्रिदै हरख उपजाइ ॥ १६ ॥ बाग मुगल को लै चली उत त्रिप सुतहि बुलाइ। फलन चबावन के नमित चड़ी बिरछ पर जाइ ॥१७॥ चड़त रूख ऐसे कह्यो कहा कहत है काज। मुहि देखत त्रिय अनत सों रमत न आवत लाज ॥ १८ ॥ उतरि रूख ते यो कही कहाँ गई वह त्रीय। तैं जिह अब भोगत हुतो अधिक मानि सुख जीय ॥ १९ ॥ मै न रम्यो त्रिय अनत सो भयो भेद यह कौन। कछु चरित्र इह रूख मैं यों कहि बाँधी मौन ॥ २० ॥ यौ चिंता चित बीच करि चड़्यो बिरछ पर धाइ। रति मानी (मू०ग्रं०८३४) त्रिय त्रिपति के सुत को निकट बुलाइ ॥ २१ ॥ अति पुकार करि द्रखत ते उतर्यो त्रिप सुत जानि। उतरत दियो भजाइ त्रिय कछू न देख्यो आनि ॥२२॥ ॥ अड़िल्ल ॥ चलि काजी पै गयो ताहि ऐसे कह्यो। एक रूख अचरज को आँखिन मै लह्यो। ता को चलि काजी जू आपु निहारियै। हो मेरो चित को भरमु सु

और जब मुगल को मैं पेड़ पर चढ़ाऊँ तो तभी मुझे आकर मिलना ।। १५ ।। ।। दोहा ।। दूसरे दिन वह मुगल के साथ बाग़ में प्रसन्नतापूर्वक मदिरा एवं अन्य रसादि ले गयी ।। १६ ।। इधर वह मुगल को लेकर चली और उधर उसने अपने प्रेमी राजा के पुत्र को बुला लिया। वहाँ पहुँचकर वह फल खाने के लिए पेड़ पर जा चढ़ी ।। १७ ।। वृक्ष पर चढ़कर उसने मुगल से कहा कि यह तुम क्या कर रहे हो कि मेरे देखते-देखते ही तुम अन्य स्त्री के साथ रमण कर रहे हो। क्या तुम्हें लज्जा नहीं आती ।। १८ ।। वृक्ष से उतरकर उसने कहा कि वह स्त्री कहाँ गयी जिसके साथ तुम प्रसन्न होकर संभोगरत थे ।।१९।। मैं किसी के साथ नहीं था। यह क्या रहस्य है ? स्त्री ने कहा कि लगता है, इस वृक्ष में कोई करामात है। इतना कहकर वह मौन हो गई ।। २० ।। वह मुगल सोचता हुआ वृक्ष पर चढ़ा और इधर उस स्त्री ने राजा के पुत्र को निकट बुलाकर उससे रतिक्रीड़ा की ।। २१ ।। राजा के लड़के को देखकर मुगल चिल्लाता हुआ वृक्ष से उतरा। उसके उतरने के दौरान स्त्री ने अपने प्रेमी को भगा दिया। उतरकर वह वहाँ कुछ भी न पा सका ।। २२ ।। ।। अड़िल्ल ।। वह मुगल चलकर क़ाज़ी के पास गया और कहने लगा कि मैंने एक अद्भुत वृक्ष देखा है। उसे आप चलकर देखें और

आजु निवारियै ।।२३।। ।। दोहरा ।। सुनत बचन काजी उठ्यो संग लई निजु नारि । चलि आयो तिह रूख तर लोग संग को टारि ।। २४ ।। ।। चौपई ।। भेदि नारि सौ सभ तिन कह्यो । ता पाछे तिह द्रुम को लह्यो । तिनहूँ अपनो मित्र बुलायो । रूख चरे पिय भोग कमायो ।।२५।। ।। अड़िल्ल ।। मोहि मीर जो कह्यो सति मो जानियो । ता दिन ते तिन मुगल हितू करि मानियो । तवन दिवस ते काजी चेरो ह्वै रह्यो । हो सत्ति बचन सोऊ भयो जू मो को इन कह्यो ।। २६ ।। ।। दोहरा ।। कोट कशट स्यानो सहहि कैसौ दहै अनंग । नैक नेक नहि कीजियै तऊ तरनि के संग ।। २७ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे सपतदसमो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १७ ।। ३४१ ।। अफजूं ।।

अथ अशटदसमो चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। कथा सत्रवी राम कबि उचरी हित चित

मेरा भ्रम निवारण करें ।। २३ ।। ।। दोहा ।। यह सुनकर क़ाज़ी ने अपनी पत्नी को साथ लिया और चल पड़ा। वह सब लोगों को पीछे छोड़कर उस वृक्ष के पास आ पहुँचा ।। २४ ।। ।। चौपाई ।। (तब तक मुगल की स्त्री ने) क़ाज़ी की स्त्री को सभी बात बता दी और तब उन्हें वह पेड़ दिखाया। उस क़ाज़ी की स्त्री ने भी अपने मित्र को बुला भेजा और अपने पति के पेड़ पर चढ़ने पर उससे संभोग किया ।। २५ ।। ।। अड़िल्ल ।। क़ाज़ी कहने लगा कि मुझे जो इस मुगल ने बताया है वह सत्य है। उस दिन से उसने उस मुगल को अपना मित्र बना लिया। उस दिन से वह क़ाज़ी उसका चेला बन गया और कहने लगा कि वही हुआ जो इसने मुझे बताया था ।। २६ ।। ।। दोहा ।। बुद्धिमान को कितना ही कष्ट सहना पड़े और काम कितना ही सताए, जवान स्त्री के प्यार में कभी भी नहीं फँसना चाहिए ।। २७ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में सत्रहवीं कथा की शुभ सत् समाप्ति ।। १७ ।। ३४१ ।। अफजू ।।

अठारहवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। कवि राम ने प्रेमपूर्वक सत्रहवीं कथा का उच्चारण किया,

लाइ । बहुरि कथा बंधन निम्रित मन मै कह्यो उपाइ ।। १ ।। धाम निकट ता के हुती होड़बदी जिह नारि । तिनहूँ कर्यो चरित्र इक सो तुम सुनहु सुधारि ।। २ ।। ।। चौपई ।। स्री छल छिद्र कुअरि तिह नामा । दूजे रहत मुगल की बामा । तिन जू किया सु चरित्र सुनाऊँ । ता ते तुमरौ ह्रिदै रिझाऊँ ।।३।। ।। अड़िल्ल ।। एक दिवस तिन मिहंदी लई मँगाइकै । लीपि आपने हाथ पतिहि दिखराइकै । जारि दूसरे संग यों कह्यो सुधारिकै । हो ऐहो तुमरे तीर तिहारे प्यारकै ।। ४ ।। ।। चौपई ।। पिय प्यारो आयो जब जान्यो । जार दूसरे संग बखान्यो । मै अब ही लघ के हित जैहो । आनि नार तव पास बधैहो ।। ५ ।। ।। दोहरा ।। नार खुलायो जार ते गई जार के पासि । जाइ त्रिपति के संग रमी रंचक किया न त्रास ।। ६ ।। ।। अड़िल्ल ।। मुहर परापति (मू०ग्रं०८३५) होइ टका को लेवई । बिनु दीने धन सरै त को धन देवई । धनी त्यागि निरधन के को ग्रहि जावई । हो राव त्यागि करि रंक कवन चित ल्यावई ।। ७ ।। ।। दोहरा ।। नेह ठानि रति मानि

और फिर कथा कहने का मन में उपक्रम किया ।। १ ।। इसी स्त्री के घर के निकट वह स्त्री रहती थी जिसके साथ इसने बाज़ी लगायी थी । उसने भी एक चरित्र प्रस्तुत किया, अब उसे सुनो ।। २ ।। ।। चौपाई ।। उसका नाम छलछिद्रकुमारी था और वह उसी मुगल स्त्री के पास रहती थी। उसने जो प्रपंच किया अब मैं उसे कहता हूँ और आपका मन प्रसन्न करता हूँ ।। ३ ।। ।। अड़िल्ल ।। एक दिन उसने मेंहदी मँगाई और पति को दिखाकर अपने हाथ लीप लिये । उसने अपने मित्र को भी कह दिया कि हे मित्र ! मैं तुम्हारे पास आऊँगी ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। जब उसने अपने प्रियतम को आया हुआ जान लिया तो अपने पति (मित्र) से कहने लगी कि मैं लघुशंका निवृत्त होने जा रही हूँ और आकर नाड़ा तुमसे ही बँधवाऊँगी (क्योंकि मेरे हाथ मेंहदी वाले हैं) ।। ५ ।। ।। दोहा ।। अपने पति (मित्र) से नाड़ा खुलवाया और अपने प्रेमी के पास चली गई और उस राजा प्रेमी के साथ अभय होकर रमण करने लगी ।। ६ ।। ।। अड़िल्ल ।। यदि मुहरों की प्राप्ति हो रही हो तो भला टका कौन लेगा और बिना धन दिए ही यदि काम चल जाय तो कौन धन देगा । धनी को छोड़कर भला निर्धन के घर कौन जायगा और राजा को छोड़कर भला ग़रीब का कौन स्मरण करेगा ।।७।। ।। दोहा ।। प्रेमपूर्वक रतिक्रीड़ा कर उसने राजा को भेज दिया और हाथ में मेंहदी लगी

करि राजा दिया उठाइ । लगी मिहंदिआ कर रही नार बधायो आइ ॥ ८ ॥ बैन सुनत मूरख उठ्यो भेद न सक्यो पछानि । बाँध्यो बंदइजार कौ अधिक प्रीति मन मानि ॥ ९ ॥ प्रीति कैसियै तन बढै कशट कैसहू होइ । तऊ तरुनि सौ दोसती भूलि न करियहु कोइ ॥ १० ॥ १ ॥

॥ इति स्त्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे अशटदसमो चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ ८१ ॥ ३५१ ॥ अफजूँ ॥

अथ उनीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ बंदसाल त्रिप सुतहि पठायो । प्रात समै पुनि निकट बुलायो । बहुरौ मंत्री कथा उचार्यो । चित्र सिंघ को भरमु निवार्यो ॥ १ ॥ ॥ दोहरा ॥ शाह जहानाबाद मै एक मुगल की बाल । ता सो किया चरित्र इक सो तुम सुनहु त्रिपाल ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ ता को नाम नादरा बानो । अमित रूप ता को जग जानो । अधिक तरुनि को तेज बराजत । जा सम अनत न कतहूँ राजत ॥३॥ ॥ दोहरा ॥ निस दिन बास तहाँ करै मुगलन अनतै जाइ । और इसत्रियन सों

होने के कारण आकर उसने अपने प्रेमी पति से नाड़ा बँधवाया ॥ ८ ॥ बात सुनकर मूर्ख पति उठा, पर रहस्य को न समझ सका और उसने प्रेमपूर्वक स्त्री का इज़ारबंद बाँधा ॥ ९ ॥ कितना ही प्रेमावेग बढ़े अथवा कैसा ही कष्ट हो, परन्तु तरुण स्त्री से भूलकर भी प्रीति नहीं करनी चाहिए ॥ १० ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में अट्ठारहवें
चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १८ ॥ ३५१ ॥ अफजू ॥

उन्नीसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ राजा ने पुत्र को बंदीसाल में भेज दिया और प्रातःकाल पुनः उसे अपने पास बुला लिया । फिर मंत्री ने कथा कही और चित्रसिंह के भ्रम का निवारण किया ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ शाहजहानाबाद में एक मुगल-स्त्री ने जो चरित्र दिखाया, हे राजन् ! अब उसे सुनो ॥२॥ ॥ चौपाई ॥ उसका नाम नादिराबानो था और उसका रूप-सौन्दर्य अपरिमित था । वह अत्यन्त तेजवान थी और अन्य कोई उसके पास शोभा नहीं पाता था ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ (उसका पति) रात-दिन रहता तो वहाँ था परन्तु (अवसर

भजै त्रिय तों कछु न संकाइ ॥४॥ हेर मुगल अनतै रमत तरुनि धार रिसि चित्त। कीना एक बुलाइ ग्रहि बाल बनिक को मित्त ॥ ५ ॥ एक दिवस ता सौ कह्यो भेद सकल समझाइ। पुत्र धाम तिह राखियो निजु पति ते डरपाइ ॥ ६ ॥ पिय सोवत त्रिय जागिकै पत कौ दियो जगाइ। लै आग्या सुत बनक के संग बिहारी जाइ ॥ ७ ॥ पिय सोवत त्रिय जो जगै कहै दुशट कोऊ आइ। तुरतु दोसती पति तजै नात नेह छुटि जाइ ॥ ८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ पिय को प्रिथम जवाइ आपु पुनि खाइयै। पिय पूछे बिनु नैक न लघु कह जाइयै। जो पिय आइसु देइ सु सिर पर लीजियै। हो बिनु ता के कछु कहे न कारज कीजियै ॥ ९ ॥ ॥ दोहरा ॥ बिनु पिय की आग्या लई मै लघु को नहि जाउ। कोटि कशट तन पै सहों पिय को कह्यो कमाउ ॥१०॥ सुनत बचन मूरख मुगल आग्या त्रिय (मू०ग्रं०८३६) कह दीन। रीझि गयो जड़ बैन सुनि सक्यो न कछु छल चीन ॥ ११ ॥ सुनत बचन त्रिय उठि चली पिय की आग्या पाइ। रति मानी सुत बनिक सो ह्रिदै हरख उपजाइ ॥१२॥

पाकर) वह अन्य मुगलों के यहाँ जाता था और अपनी स्त्री को बिना किसी शंका में डाले वह अन्य स्त्रियों से रमण करता था ॥ ४ ॥ मुगल को अन्यत्र रमण करते देखकर उस स्त्री ने मन में जल-भुनकर एक बणिक्-पुत्र को बुलाया और अपना मित्र बना लिया ॥ ५ ॥ एक दिन उसे सारा भेद समझाते हुए अपने पति के डर से उसे अपने पुत्र के घर में छुपा दिया ॥ ६ ॥ सोते हुए पति को जगाकर और उससे आज्ञा लेकर वह स्त्री वणिक्-पुत्र के साथ रमण करने लगी ॥ ७ ॥ सोते प्रियतम के पास जागती हुई स्त्री यदि कहे कि कोई दुष्ट आया है तो वह, चाहे पति का मित्र ही क्यों न हो, उससे उसके सभी नाते-संबंध टूट जाते हैं ॥ ८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ पहले पति को खिलाकर फिर आप खाना चाहिए। पति से पूछे बिना लघुशंका की निवृत्ति के लिए भी नहीं जाना चाहिए। जो पति आज्ञा दे, उसे सिर आँखों पर लेना चाहिए और उससे पूछे बिना कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ वह स्त्री कहने (बड़बड़ाने) लगी कि मैं तो बिना आज्ञा के लघुशंका के लिए भी नहीं जाऊँगी और जितना भी कष्ट सहना पड़े प्रियतम का कहा ही करूँगी ॥ १० ॥ मूर्ख मुगल ने सोते से जागकर स्त्री के वचन सुनकर उसे आज्ञा दी। वह मूर्ख बातें सुनकर रीझ गया और उसके छल को नहीं पहचान सका ॥ ११ ॥ प्रिय की आज्ञा पाकर वह स्त्री उठ चली

परं आपदा कैसियै कोट कशट सहि लेत। तऊ सुघर नर इसत्रियन भेद न अपनो देत ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे उनीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १९ ॥ ३६४ ॥ अफजूं ॥

अथ बीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ भुजंग छंद ॥ बहुरि बंदग्रेहं त्रिपं पूत डार्यो। भयो भोर जब्बं निज ली हकार्यो। तबै मंत्र यो राइ सों बैन भाख्यो। चितर सिंघ के पूत कौ प्रान राख्यो ॥ १ ॥ शहिर चीनमाचीन मै एक नारी। रहै आपने खावंदहि अधिक प्यारी। जु सो बैन भाखै वही बात मानै। बिना ताहि पूछे नही काज ठानै ॥२॥ दिनो रैन डारे रहै ताहि डेरै। बिना ताहि नहि इंद्र की हूर हेरै। त्रिया रूप आनूप लहि पीय जीवै। बिना नारि पूछे नही पान पीवै ॥ ३ ॥ मती लाल नीको रहै नाम बाला। दिपै चारु आभा मनो रागमाला।

और प्रसन्नतापूर्वक वणिक्-पुत्र से रति-क्रीड़ा करने लगी ॥ १२ ॥ अपने पर कितनी ही विपदा पड़े और कितने ही कष्ट सहने पड़ें, परन्तु बुद्धिमान व्यक्ति स्त्रियों को अपना भेद नहीं देते ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में उन्नीसवें चरित्र की शुभ सत समाप्ति ॥ १९ ॥ ३६४ ॥ अफजू ॥

बीसवाँ चरित्र-कथन

॥ भुजंग छंद ॥ पुनः राजा ने पुत्र को बंदीगृह में डाल दिया और प्रातः होते ही उसे पुनः निकाल लिया। तभी मंत्री ने राजा से कहा और चित्रसिंह के पुत्र के प्राणों की रक्षा की ॥ १ ॥ चीनमाचीन नामक शहर में एक स्त्री थी जो अपने पति की बहुत प्यारी थी। वह जो कहती थी वह वही करता था और बिना उसके पूछे वह कोई भी काम नहीं करता था ॥२॥ वह दिन-रात उसी के साथ रहता था और उसके अतिरिक्त इन्द्र की अप्सरा को भी नहीं देखता था। उस स्त्री के अनुपम रूप को देखकर वह जीवित रहता था और बिना पत्नी को पूछे वह पानी भी नहीं पीता था ॥ ३ ॥ उस सुन्दर स्त्री का नाम लालमती था और रागमाला की तरह देदीप्यमान एवं सुन्दर थी। ऐसी सुन्दर न तो कानों से सुनी गई थी, न आँखों से देखी गई

सुनी कान ऐसी न वैसी निहारी। भई है न आगे न ह्वैहै कुमारी ॥ ४ ॥ मनौ आपु लै हाथ ब्रहमै बनाई। किधौ देव जानी किधौ मैन जाई। भई नाहि नहि है न ह्वैहै त्रिवैसी। मनो जच्छनी नागनी किंन्रनैसी ॥ ५ ॥ तिनक देस के राव सौ नेह ठान्यो। महा चतुर तिह चित्त के बीच जान्यो। अधिक रूप आनूप ताको बिराजै। लखे जाहि कंद्रप को द्रप्प भाजै ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ अधिक प्रीत तासौ करी चित मै चतुर पछान। छाडि दई लज्जा सभै बधी बिरह के बान ॥ ७ ॥ ॥ तोटक छंद ॥ लखि रूप लला जू को रीझ रही। जिह जोत प्रभा नहि जात कही। निस एक त्रिया तिह बोल लियो। मन भावत भूप सौ भोग कियो ॥ ८ ॥ सिगरी निस भूप सौ भोग कर्यो। इह बीच त्रिया पति आन पर्यो। तिह आवत जानि डरी हिय मै। इह भाँति चरित्र ठट्यो जिय मै ॥ ९ ॥ ॥ दोहरा ॥ तकिया करि राख्यो त्रिपहि अपणी सेज बणाइ। जाइ पियहि आगे लियो परम प्रीति उपजाइ ॥ १० ॥ भूप लख्यो चित (मू०ग्रं०८३७) मै फस्यो आनि त्रिया के हेत। अधिक चित्त भीतर डर्यो स्वास

थी। न तो ऐसी सुन्दर कोई स्त्री हुई है और न ही होगी ॥ ४ ॥ उसे मानों ब्रह्मा ने अपने हाथ से बनाया हो। वह देवयानी (शुक्राचार्य की पुत्री) थी अथवा कामदेव से उत्पन्न हुई थी। ऐसी स्त्री न तो हुई, न है, न होगी। वह मानो यक्षिणी, नागिनी अथवा किन्नरनी थी ॥ ५ ॥ उसने उस देश के राजा से प्रेम शुरू किया और राजा ने भी उसे चित्त में अत्यन्त चतुर समझा। उसका रूप अत्यन्त शोभायुक्त था और उसे देखकर कामदेव का गर्व भी चूर हो जाता था ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ उस चतुर स्त्री ने राजा से बहुत प्रेम किया और सर्व लज्जा को त्यागकर उसके विरह-बाण से बिंध गई ॥ ७ ॥ ॥ तोटक छंद ॥ अपने प्रियतम के रूप को देखकर वह रीझ उठी। उसकी प्रभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। एक रात उस स्त्री ने राजा को बुलाया और अपनी इच्छानुसार उससे भोग किया ॥ ८ ॥ सारी रात वह राजा के साथ रति-क्रीड़ा में सलंग्न रही और इसी बीच उस स्त्री का पति आ गया। उसे आते देखकर वह मन में डर गयी और उसने इस प्रकार प्रपंच किया ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा को तकिया बनाकर उसने अपनी शय्या पर रख लिया और पूरे प्रेम से पति की अगवानी की ॥ १० ॥ राजा समझ गया कि मैं स्त्री-प्रेम में फँस गया हूँ। वह चित्त में अत्यधिक डर

न ऊचै लेत ॥ ११ ॥ पति सौ अति रति मानि कै रही गरे लपटाइ । कियो सिरानो भूप को सोइ रहै सुख पाइ ॥ १२ ॥ भोर भए उठि पिय गयो त्रिप सो भोग कमाइ । काढि सिराने ते तुरतु सदन दियो पहुचाइ ॥ १३ ॥ जे स्याने ह्वै जगत मै तिय सो करत पियार । ताँहि महाँ जड़ समुझियै चित भीतर निरधार ॥ १४ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रियाः चरित्रे मंत्री भूप संबादे बीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ २० ॥ ३७८ ॥ अफजूं ॥

अथ इकीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ भूप बंदग्रहि निजु सुतहि गहि करि दियो पठाइ । प्रात समै मंत्री सहित बहुरो लियो बुलाइ ॥ १ ॥ रीझ राइ ऐसे कह्यो बचन मंत्रियन संग । पुरख त्रियन चतुरन चरित मोसो कहहु प्रसंग ॥ २ ॥ तीर सतुद्द्रव के हुतो पुरअनंद इक गाँउ । नेत्र तुंग के ढिग बसत काहलूर के ठाउ ॥ ३ ॥ तहाँ सिक्ख साखा बहुत आवत मोद बढाइ ।

गया इसलिए वह साँस भी ऊँचे नहीं ले रहा था ॥ ११ ॥ वह पति से सुखपूर्वक रति-क्रीड़ा करते हुए उसके गले लिपटी रही और वे दोनों राजा को तकिया बनाकर सुखपूर्वक सोए रहे ॥ १२ ॥ प्रातः होते ही पति गया तो उसने राजा से भी भोग किया और तकिए से उसे निकालकर तुरन्त उसके घर पहुँचा दिया ॥ १३ ॥ जो बुद्धिमान होकर भी इस संसार में स्त्री के प्रेम में लीन होते हैं उन्हें बिना किसी संदेह के जड़ (मूर्ख) समझना चाहिए ॥ १४ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में बीसवें चरित्र की शुभ सत समाप्ति ॥ २० ॥ ३७८ ॥ अफजू ॥

इक्कीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ राजा ने अपने पुत्र को पकड़कर बंदीगृह में भेज दिया और प्रातः मंत्री-सहित उसे बुला लिया ॥ १ ॥ राजा ने प्रसन्न होकर मंत्री से कहा कि चतुर स्त्री-पुरुषों के चरित्र की कथा मुझे सुनाओ ॥ २ ॥ सतलुज के किनारे आनन्दपुर नामक एक गाँव था, जो नेत्रतुंग पर्वतमाला के पास कहलूर के निकट था ॥ ३ ॥ वहाँ बहुत से सिक्ख प्रसन्नतापूर्वक आते थे

मन बांछत मुखि माँग वर जात ग्रहिन सुख पाइ ॥ ४ ॥ एक त्रिया धनवंत की तौन नगर मै आनि । हेरि राइ पीड़त भई बिधी बिरह के बान ॥ ५ ॥ मगनदास ता को हुतो सो तिन लियो बुलाइ । कछुक दरब ता को दियो ऐसे कर्यो बनाइ ॥ ६ ॥ नगर राइ तुमरो बसत ताहि मिलावहु मोहि । ताहि मिले दैहो तुझै अमित दरब लै तोहि ॥ ७ ॥ मगन लोभ धन के लगे आनि राव के पास । परि पाइनि कर जोरि करि इह बिधि किय अरदासि ॥ ८ ॥ सिख्यो चहत जो मंत्र तुम सो आयो मुर हाथ । कहै तुमैं सो कीजियहु जु कछु तुहारे साथ ॥ ९ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ चल्यो धारि आतीत को भेस राई । मनापन बिखै स्री भगौती मनाई । चल्यो सो तता के फिर्यो नाहि फेरे । धस्यो जाइकै वा त्रिया के सु डेरे ॥ १० ॥ ॥ चौपई ॥ लखि त्रिय ताहि सु भेख बनायो । फूल पान अरु कैफ मँगायो । आगे टरि ता को तिन लीना । चित को शोक दूरि करि दीना ॥ ११ ॥ ॥ दोहरा ॥ बस्त्र पहिरि बहु मोल को अतिथ भेस को डारि । तवन सेज सोभित (मू०ग्रं०८३८) करी उतम भेख सुधारि ॥ १२ ॥ तब

और मनोवांछित वरदान प्राप्त कर सुखपूर्वक अपने घरों को वापस जाते थे ॥ ४ ॥ एक धनवान की स्त्री उस नगर के राजा को देखकर उस पर आसक्त हो गई और उसके विरह-बाण से बिंध गई ॥ ५ ॥ उसका एक सेवक मगनदास था उसे उसने बुलाया और इस प्रकार समझाकर कहा ॥ ६ ॥ तुम मुझे अपने नगर के राजा से मिलवा दो उससे मिलन होने पर मैं तुमको अपरिमित द्रव्य दूँगी ॥ ७ ॥ मगन धन के लालच में आकर राजा के पास आया और उसके चरणों पर गिरकर उसने प्रार्थना की ॥ ८ ॥ आप जो मंत्र सीखना चाहते थे वह मेरे हाथ आ गया है अतः उसे जानने के लिए जैसे मैं कहूँ वैसा ही करो ॥ ९ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ वह राजा तपस्वी का वेश बनाकर मन में भगवती का स्मरण करता हुआ चला । वह चलता ही चला गया और इस प्रकार बिना मुड़े वह उस स्त्री के निवास में आ पहुँचा ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ स्त्री उसे देखकर सज-धज गई और उसने उसके लिए फूल, पान एवं मदिरा आदि मँगाई । स्वयं आगे पहुँचकर उसने उसका स्वागत किया और चित्त का शोक समाप्त कर दिया ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा ने तपस्वियों के वेश को छोड़कर पुनः मूल्यवान वस्त्र पहने और उसकी शय्या को शोभायुक्त बनाया ॥१२॥ तब उस स्त्री ने कहा

तासो त्रिय यो कही भोग करहु मुहि साथ। पसुपतारि दुख दै घनो मै बेची तव हाथ ॥ १३ ॥ राइ चित्त चिंता करी बैठे ताही ठौर। मंत्र लैन आयो हुतो भई और की और ॥१४॥ ॥ अड़िल्ल ॥ भए पूज तो कहा गुमान न कीजियै। धनी भए तो दुखयन निधन न दीजियै। रूप भयो तो कहा ऐंठ नहि ठानियै। हो धन जोबन दिन चारि पाहुनो जानियै ॥ १५ ॥ ॥ छंद ॥ धरम करे सुभ जनम धरम ते रूपहि पैयै। धरम करे धन धाम धरम ते राज सुहैयै। कह्यो तुहारो मानि धरम कैसे कै छोरों। महाँ नरक के बीच देह अपनी क्यों बोरों ॥ १६ ॥ कह्यो तुहारो मानि भोग तोसो नहि करिहो। कुलि कलंक के हेत अधिक मन भीतर डरिहो। छोरि ब्याहिता नारि केल तोसों न कमाऊँ। धरमराज की सभा ठौर कैसे करि पाऊँ ॥ १७ ॥ ॥ दोहरा ॥ कामातुर ह्वै जो त्रिया आवत नर के पास। महा नरक सो डारियै दै जो जान निरास ॥ १८ ॥ पाइ परत मोरो सदा पूज कहत है मोहि। तासो रीझ रम्यो चहत लाज न आवत तोहि ॥ १९ ॥ क्रिशन

कि मेरे साथ संभोग करो क्योंकि मैं कामदेव से दुखी तुम्हारे हाथ बिक चुकी हूँ ॥ १३ ॥ राजा ने मन में सोचा कि मैं तो मंत्र सीखने आया था यह तो कुछ और ही बात बन गई है ॥ १४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ यदि पूज्य समझे जाओ तो मन में अभिमान नहीं करना चाहिये; धनी होकर निर्धन को दुःख नहीं देना चाहिए; रूपवान होकर अकड़ना नहीं चाहिए और धन-यौवन को चार दिन का मेहमान ही जानना चाहिए ॥ १५ ॥ ॥ छंद ॥ इस जन्म में धर्म का कार्य करने से सुन्दर स्वरूप की प्राप्ति होती है। धर्म से ही धन-धाम एवं राज्य की शोभा बढ़ती है। तुम्हारा कहना मानकर मैं कैसे धर्म का त्याग कर दूं और क्यों मैं अपने शरीर को महानरक में डुबाऊँ ॥ १६ ॥ तुम्हारा कहना मानकर मैं तुमसे भोग नहीं करूँगा और कुल को कलंक लगने के भय से मैं अवश्य डरूँगा। अपनी ब्याहता पत्नी को छोड़कर मैं तुम्हारे साथ रतिक्रिया नहीं करूँगा और यदि मैं ऐसा करूँगा तो धर्मराज की सभा में मुझे स्थान क्योंकर मिलेगा ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ कामातुर स्त्री जब पुरुष के पास आती है और यदि वह पुरुष उसे निराश भेजता है तो उस पुरुष को महानरक में डाला जाना चाहिए ॥ १८ ॥ लोग मेरे चरणों पर गिरते हैं, मेरी पूजा करते हैं। मैं रीझकर तुम्हारे साथ रमण करूँ, क्या ऐसा कहते तुझे लज्जा नहीं आती ॥ १९ ॥ कृष्ण भी जगत के लिए पूज्य थे, परन्तु

पूज जग के भए कीनी रासि बनाइ । भोग राधिका सो करे परे नरक नहि जाइ ।। २० ।। पंच तत्त लै ब्रहम कर कीनी नर की देह । किया आपही तिन बिखै इसत्री पुरख सनेह ।। २१ ।। ।। चौपई ।। ता ते आन रमो मोहि संगा । ब्यापत मुर तन अधिक अनंगा । आज मिले तुमरे बिनु मरिहों । बिरहानल के भीतर जरिहों ।। २२ ।। ।। दोहरा ।। अंग ते भयो अनंग तौ देत मोहि दुख आइ । महाँ रुद्र जू को पकरि ताहि न दयो जराइ ।। २३ ।। ।। छंद ।। धरहु धीरज मन बाल मदन तुमरो कस करिहै । महाँ रुद्र को ध्यान धरो मन बीच सु डरिहै । हम न तुमारे संग भोग रुचि मानि करैगे । त्यागि धरम की नारि तोहि कबहूँ न बरैगे ।। २४ ।। ।। अड़िल्ल ।। कह्यो तिहारो मानि भोग तोसो क्यों करियै । घोर नरक के बीच जाइ परबे ते डरियै । तव आलिगन करे धरम अरिकै मुहि गहिहै । हो अति अपजस की कथा जगत मोकौ नित कहिहै ।। २५ ।। चलैं निंद की कथा बक्त्र कस तिसै दिखैहौ । धरमराज की सभा ज्वाब (मू०ग्रं०८३६) कैसे करि दैहौ । छाडि यराना बाल

उन्होंने भी रासलीलाएँ कीं । उन्होंने राधिका से भोग किया, परन्तु वे नरक में नहीं गये ।। २० ।। परमात्मा ने स्वयं पंचतत्त्वों से पुरुष की देह बनायी है और स्वयं उसमें स्त्री-पुरुष के परस्पर आकर्षण का सृजन किया है ।। २१ ।। ।। चौपाई ।। इसलिए मेरे साथ रमण करो, अब मेरे शरीर में अत्यधिक कामदेव व्याप्त हो गया है । आज तुमसे मिलन के बिना मैं मर जाऊँगी और विरहाग्नि में जल मरूँगी ।। २२ ।। ।। दोहा ।। यह अंग से अनंग होकर भी कामदेव मुझे दुःख दे रहा है । इसी दुःख के कारण रुद्र ने शायद इसे जला दिया था ।। २३ ।। ।। छंद ।। हे स्त्री ! तुम मन में धैर्य रखो, कामदेव तुम्हारा कुछ नहीं कर सकेगा । तुम महारुद्र का मन में ध्यान करो, यह डर जायगा । मैं तुम्हारे साथ भोग नहीं करूँगा और अपनी धर्मपत्नी को त्यागकर तुम्हारा वरण नहीं करूँगा ।। २४ ।। ।। अड़िल्ल ।। तुम्हारा कहना मानकर तुमसे संभोगरत क्यों होऊँ । मुझे घोर नरक में पड़ने से डरना चाहिए । तुमसे आलिंगन करना धर्म को शत्रु समझने के बराबर होगा और मेरे अपयश की कथा इस जगत में सदैव चलती रहेगी ।। २५ ।। निंदा की कथा चलने पर मैं संसार को मुँह कैसे दिखाऊँगा और धर्मराज की सभा में कैसे उत्तर दूंगा ।

ख्याल हमरे नहि परियै। कही सु हम सों कही बहुरि यह
कह्यो न करियै ॥ २६ ॥ नृप कुअरि यौ कही भोग मोसौ
पिय करियै। परे न नरक के बीच अधिक चित माहि न
डरियै। निंद तिहारी लोग कहा करि कै मुख करि है।
त्रास तिहारे सौ सु अधिक चित भीतर डरिहै ॥ २७ ॥ तौ
करिहै कोऊ निंद कछू जब भेद लहैंगे। जौ लखिहै कोऊ
बात त्रास तो मोनि रहैंगे। आजु हमारे साथ मित्र रुचि सौ
रति करियै। हो ना तर छाडौ टाँग तरे अबि होइ
निकरियै ॥ २८ ॥ टाँग तरे सो जाइ केल कै जाहि न आवै।
बैठि निफुंसक रहै रैनि सिगरी न बजावै। बधे धरम के मै न
भोग तुहि साथ करत हों। जग अपजस के हेत अधिक चित
बीच डरत हों ॥ २९ ॥ कोटि जतन तुम करो भजे बिनु
तोहि न छोरों। गहि आपन पर आजु सगर तो को निस
तोरों। मीत तिहारे हेत कासि करवत हूँ लैहों। हो
धरमराज की सभा ज्वाब ठाढी ह्वै दैहों ॥ ३० ॥ आजु पिया
तव संगि सेजु रुचि मान सुहैहों। मन भावत को भोग रुचित

इस दोस्ती का विचार छोड़ो और हे सुन्दरी ! मेरा ख्याल छोड़ो। अब तक जो मुझसे कहा सो कहा अब और कुछ मत कहना ॥ २६ ॥ अनूपकुँवरि ने कहा कि हे प्रिय ! मेरे साथ भोग करो। आप नरक में नहीं जायंगे और व्यर्थ ही इस विचार से मत डरिए। तुम्हारी निंदा लोग कैसे करेंगे, क्योंकि वे तुम्हारा बहुत भय मानते हैं ॥ २७ ॥ फिर तुम्हारी निंदा तो कोई तब करेगा जब कोई इस रहस्य को जानेगा। और फिर यदि कोई जान भी लेगा तो मारे डर के चुप रहेगा। हे मित्र ! आज तुम रुचिपूर्वक मेरे साथ रति-क्रीड़ा करो और नहीं तो मेरी टाँग के नीचे से निकल जाओ ॥ २८ ॥ टाँग के नीचे से वह जाय जो केलिक्रीड़ा न जानता हो और नपुंसक की तरह रात भर बैठकर रात्रि का उपभोग न कर सकता हो। मैं तो धर्म का बँधा तुम्हारे साथ भोग नहीं कर रहा हूँ और यश-अपयश से अत्यधिक डर रहा हूँ ॥ २९ ॥ तुम अनेकों यत्न कर लो पर मैं तुम्हें आज भोगे बिना नहीं छोड़ूंगी। आज मैं अपने हाथ से पकड़कर सारी रात तुमको चूर-चूर करूँगी। हे मित्र ! मैं तुम्हारे लिए काशी में आरा से चिर जाऊँगी और धर्मराज की सभा में मैं खड़ी होकर जवाब दूंगी ॥ ३० ॥ हे प्रियतम ! आज तुम्हारे साथ रुचिपूर्वक शय्या-गमन करूँगी और मनोनुकूल भोग भोगूंगी।

चित माहि कमैंहों। आजु सु रति सभ रैनि भोग सुंदर तव करिहों। शिव बैरी को द्रप सकल मिलि तुमै प्रहरि हों ॥ ३१ ॥ ॥ राइ बाच ॥ प्रथम छत्रि के धाम दियौ बिधि जनम हमारो। बहुरि जगत के बीच कियो कुल अधिक उजारो। बहुरि सभन मै बैठि आपु को पूज कहाऊँ। हो रमों तुहारे साथ नीच कुल जनमहि पाऊँ ॥ ३२ ॥ कहा जनम की बात जनम सभ करे तिहारे। रमो न हम सों आजु ऐस घटि भाग हमारे। बिरह तिहारे लाल बैठि पावक मों बरियै। हो पीव हलाहल आजु मिले तुमरे बिनु मरियै ॥३३॥ ॥ दोहरा ॥ राइ डर्‍यो जउ दै मुझै स्री भगवति की आन। शंक त्याग यासो रमो करिहौ नरक पयान ॥ ३४ ॥ चित के शोक निवरत करि रमो हमारे संग। मिले तिहारे बिनु अधिक ब्यापत मोहि अनंग ॥ ३५ ॥ नरक परन ते मै डरो करो न तुम सो संग। तो तन मो तन कैसऊ ब्यापत अधिक अनंग ॥३६॥ (मू०ग्रं०८४०) ॥ छंद ॥ तरुन कर्‍यो बिधि तोहि तरुनि ही देह हमारो। लखे तुमै तन आजु मदन बसि भयो हमारो। मन को भरम निहारि भोग मोरे संगि करियै।

आज रात तुम्हारे साथ संभोग करके मैं तुम्हारे सौंदर्य को और बढ़ा दूँगी और तुम्हारे साथ मिलकर कामदेव का दर्प भी दूर कर दूँगी ॥ ३१ ॥ ॥ राजा उवाच ॥ पहले तो परमात्मा ने क्षत्रिय-कुल में हमें जन्म दिया है पुनः हमारे कुल का संसार में अत्यधिक सम्मान है। फिर सबके बीच बैठकर मैं अपने को पूज्य कहलाता हूँ। अब यदि मैं तुम्हारे साथ रमण करता हूँ तो नीचकुल में जन्म लूँगा ॥ ३२ ॥ जन्म की क्या बात करते हो ये सब तुम्हारे ही बनाए हुए हैं। यदि आज तुम मेरे साथ रमण नहीं करोगे तो यह मेरा दुर्भाग्य होगा। मैं तुम्हारे विरह में ही अग्नि में जल जाऊँगी और तुमसे मिले विना ज़हर पीकर मर जाऊँगी ॥ ३३ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा डर गया कि यदि मुझे यह भगवती की सौगन्द दे देगी तो मुझे निस्संकोच होकर इससे रमण करना पड़ेगा और नरक जाना पड़ेगा ॥३४॥ हे राजन्! चित्त का शोक निवृत्त कर मेरे साथ रमण करो, क्योंकि तुमसे मिले बिना मुझे कामदेव अधिक प्रभावित कर रहा है ॥ ३५ ॥ तुम्हारे और मेरे तन में कितना ही अधिक काम व्याप्त हो जाय पर नरक के भय से मैं तुम्हारे साथ भोग नहीं भोगूँगा ॥ ३६ ॥ ॥ छंद ॥ विधाता ने तुम्हें तरुण बनाया है और मेरी देह भी तरुण है। तुम्हें देखकर मेरा मन कामवश हो गया है।

नरक परन ते नैक अपन चित बीच न डरियै ।। ३७ ।।
।। दोहरा ।। पूज्ज जानि कर जो तरुनि मुरिकै करत पयान ।
तवनि तरुनि गुर तवन की लागत सुता समान ।। ३८ ।।
।। छंद ।। कहा तरुनि सो प्रीति नेह नहि ओर निबाहहि ।
एक पुरख कौ छाडि और सुंदर नर चाहहि । अधिक तरुन
रुचि मानि तरुनि जासों हित करही । हो तुरतु मूत्र को धाम
नगन आगे करि धरही ।। ३९ ।। ।। दोहरा ।। कहाँ करौ कैसे
बचौ ह्रिदै न उपजत शांत । तोहि मारि कैसे जियो बचन नेह
के नात ।। ४० ।। ।। चौपई ।। राइ चित इह भाँति बिचारो ।
इहाँ सिक्ख कोऊ न हमारो । याहि भजे मेरो ध्रमु जाई ।
भाजि चलौ लिय देत गहाई ।। ४१ ।। ता ते याकी उसतति
करो । चरित्र खेलि याको परहरो । बिनु रति करै तरनि
जिय मारै । कवन सिक्खय मुहि आनि उबारै ।। ४२ ।।
।। अड़िल्ल छंद ।। धन्य तरुनि तव रूप धन्य पितु मात तिहारो ।
धन्य तिहारो देस धन्य प्रतिपालन हारो । धन्य कुअरि तव
बक्त्र अधिक जामै छबि छाजै । हो जलज सूर अरु चंद्र द्रप

मन का भ्रम दूर कर मेरे साथ भोग करो और नरक के भय से मन में विलकुल मत डरो ।। ३७ ।। ।। दोहा ।। जो तरुणी पूज्य जानकर हमारे पास से जाती है वह तरुणी गुरु की पुत्री के समान मानी जाती है ।। ३८ ।। ।। छंद ।। तरुणियों से प्रेम का क्या कहना; वे कभी भी प्रेम नहीं निभातीं और एक पुरुष को छोड़कर अन्य सुन्दर पुरुषों की कामना करने लगती हैं । जिस भी तरुण व्यक्ति से तरुणी अधिक प्रेम प्रदर्शित करती है, उसके सामने तुरन्त नग्न हो प्रस्तुत हो जाती है (अर्थात् स्त्री को तनिक भी लज्जा नहीं होती) ।। ३९ ।। ।। दोहा ।। क्या करूँ, कैसे करूँ, मन अशान्त हो गया है । तुम्हारे वचन प्रेम से सराबोर हैं । तुम्हें मारकर कैसे जीवित रहूँ ।। ४० ।। ।। चौपाई ।। राजा ने चित्त में यह विचार किया कि यहाँ हमारा सेवक भी कोई नहीं है । यदि मैं इसके साथ रमण करता हूँ तो धर्म जाता है और भागता हूँ तो यह स्त्री पकड़वा देगी ।। ४१ ।। इसलिए इसकी प्रशंसा करो और प्रपंच बनाकर इसका त्याग करो । बिना भोग किए यह स्त्री मार डालेगी । कितना ही अच्छा हो यदि कोई मेरा शिष्य सेवक आकर मेरा उद्धार कर दे ।। ४२ ।। ।। अड़िल्ल छंद ।। हे तरुणी ! तुम्हारा रूप, सौंदर्य, माता-पिता, देश, पालक सब धन्य हैं । तुम्हारे मुख की छवि इतनी अनुपम

कंद्रप लखि भाजै ।।४३।। सुभ सुहाग तन भरे चारु चंचल चखु सोहहि । खग म्रिग जच्छ भुजंग असुर सुर नर मुनि मोहहि । शिव सनकादिक थकित रहित लखि नेत्र तिहारे । हो अति असचरज की बात चुभत नहि ह्रिदै हमारे ।। ४४ ।। ।। सवैया ।। पौढती अंक प्रजंक लला को लै काहू सों भेद न भाखत जी को । केल कमात बिहात सदा निसि मैन कलोलन लागत फीको । जागत लाज बढी तह मै डर लागत है सजनी सभ ही को । ता ते बिचारत हौ चित मै इह जागन ते सखि सोवन नीको ।। ४५ ।। ।। दोहरा ।। बहुर त्रिया तिह राइ सो यौ बच कहियो सुनाइ । आज भोग तोसो करौ कै मरिहौ बिखु खाइ ।। ४६ ।। बिसिख बराबरि नैन तव बिधना धरे बनाइ । लाज कौच मोकौ दयौ चुभत न ताँ ते आइ ।। ४७ ।। बने ठने आवत घने हेरत हरत गियान । भोग (मू०ग्रं०८४१) करन कौ कछु नही डहकू बेर समान ।। ४८ ।। धन्य बेर हम ते जगत निरखि पथिक कौ लेत । बरबस खयावत फल पकरि

है कि कमल, सूर्य, चन्द्र एवं कामदेव भी इसे देखकर भाग खड़े होंगे ।। ४३ ।। तुम्हारा शरीर और चंचल नयन शोभायुक्त हैं। खग मृग, यक्ष, भुजंग, असुर, सुर, नर, मुनि सभी तुम पर मोहित हैं। शिव-सनकादिक तुम्हारे नेत्रों को देखे ही चले जाते हैं परन्तु यह आश्चर्य है कि तुम्हारे ये सुन्दर नेत्र मेरे हृदय में नहीं चुभते ।। ४४ ।। ।। सवैया ।। हे प्रियतम ! मैं (विचारों में) तुम्हें आलिंगनबद्ध कर पलंग पर लेट जाती हूँ और किसी को भी यह रहस्य नहीं बताती हूँ। इस प्रकार केलि-क्रीड़ा में ही सदैव रात्रि बीत जाती है और इस क्रीड़ा के सम्मुख कामदेव के हाव-भाव भी फीके लगते हैं। सपनों से जागकर लज्जित होती हूँ और डर भी लगता है। इसलिए चित्त में सोचती हूँ कि इस जागने से तो पुनः सोना ही अच्छा है।। ४५ ।। ।। दोहा ।। पुनः उस स्त्री ने राजा को सुनाकर कहा कि मैं या तो आज तुम्हारे साथ रमण करूँगी अन्यथा विष खाकर मर जाऊँगी ।। ४६ ।। तुम्हारे नयन विधाता ने बाणों की तरह बनाए हैं परन्तु (हे सुन्दरी !) मुझे विधाता ने लज्जा रूपी कवच दिया है, इसलिए ये मुझे नहीं चुभते ।। ४७ ।। तुम्हारे नेत्र सुन्दर हैं और देखते ही ज्ञान को हर लेते हैं, परन्तु मेरे लिए ये भोग का आकर्षण न होकर केवल मामूली बेर की तरह हैं।। ४८ ।। बेर का वृक्ष भी धन्य है जो पथिक को देखकर उसे अपने में उलझाकर बलात् बेर

जान बहुरि घर देत ।। ४९ ।। अटपटाइ बातैं करैं मिल्यो चहत
पिय संग । मैन बान बाला बिधी बिरह बिकल भ्यो अंग ।।५०।।
।। छंद ।। सुधि जब ते हम धरी बचन गुर दए हमारे । पूत
इहै प्रन तोहि प्रान जब लग घट थारे । निज नारी के साथ नेहु
तुम नित्त बढैयहु । परनारी की सेज भूलि सुपने हूँ न
जैयहु ।। ५१ ।। परनारी के भजे सहस बासव भग पाए ।
परनारी के भजे चंद्र कालंक लगाए । परनारी के हेत सीस
दससीस गवायो । हो परनारी के हेत कटक कवरन कौ
घायो ।। ५२ ।। परनारी सौ नेहु छुरी पैनी करि जानहु ।
परनारी के भजे काल ब्याप्यो तन मानहु । अधिक हरीफी
जानि भोग पर त्रिय जो करही । हो अंत स्वान की म्रितु
हाथ लेंडी के मरही ।। ५३ ।। बाल हमारे पास देत देसन त्रिय
आवहि । मन बाँछत बर माँगि जानि गुर सीस झुकावहि ।
सिक्ख्य पुत्र त्रिय सुता जानि अपने चित धरियै । हो कहु
सुंदरि तिह साथ गवन कैसे कर करियै ।। ५४ ।।
।। चौपई ।। बचन सुनत क्रुद्धित त्रिय भई । जरि बरि आठ

खिलाकर फिर उसे घर जाने देता है ।। ४९ ।। इस प्रकार अटपटी बातें करती हुई वह प्रियतम से मिलने के लिए उत्सुक होने लगी । उस स्त्री का अंग-अंग व्याकुल था, क्योंकि काम के कारण विरहाकुल थी ।। ५० ।। ।। छंद ।। जब से मैंने होश सँभाला है, मुझे मेरे गुरु ने उपदेश दिया है कि हे पुत्र ! जब तक तुम्हारे शरीर में प्राण हैं तुम (केवल) अपनी पत्नी के साथ ही स्नेह बढ़ाना और परनारी की शय्या पर भूलकर स्वप्न में भी नहीं जाना ।। ५१ ।। परनारी-गमन से इन्द्र को सहस्र भग प्राप्त हुए; इसी से चन्द्रमा को कलंक लगा; रावण ने दस सिर गँवाए और परनारी (द्रौपदी) के कारण ही कौरवों की असंख्य सेना का (उनके समेत) नष्ट हो गया ।। ५२ ।। परनारी से प्रेम पैनी छुरी के समान जानो । परनारी से स्नेह का अर्थ मौत का आना मानों । अपने आपको अत्यधिक बलशाली समझकर जो परस्त्री-गमन करते हैं वे अंत में ख़ाली हाथ कुत्ते की मौत मरेंगे ।। ५३ ।। हे रमणी, मेरे पास देश-देशान्तरों से स्त्रियाँ आती हैं और मनोवांछित वरदान प्राप्त कर मुझे गुरु मानकर सिर झुकाकर जाती हैं । शिष्य को पुत्र और स्त्री को पुत्री समझना चाहिए । अतः हे सुन्दरी ! तुम ही कहो, इनके साथ भोग क्यों कर किया जाय ।।५४।। ।। चौपाई ।। यह वचन सुनकर स्त्री क्रोधित हो उठी और जल-भुनकर मानों खंड-खंड हो गई । वह कहने लगी कि अभी चोर-

टूक ह्वै गई । अब ही चोरि चोरि कहि उठिहौ । तुहि को पकरि मारि ही सुटिहौ ।। ५५ ।। ।। दोहरा ।। हसि खेलो सुख सों रमो कहा करत हो रोख । नैन रहे निहुराइ क्यो हेरत लगत न दोख ।। ५६ ।। याते हम हेरत नही सुनि सखि हमरे बैन । लखे लगन लगि जाइ जिन बडे बिरहिया नैन ।। ५७ ।। ।। छपै छंद ।। दिजन दीजियहु दान द्रुजन कहि द्रिशटि दिखैयहु । सुखी राखियहु साथ शत्रु सिर खड़ग बजैयहु । लोक लाज कउ छाडि कछू कारज नहि करियहु । परनारी की सेज पाव सुपने हूँ न धरियहु । गुर जबते मुहि कह्यो इहै प्रन लयो सु धारै । हो पर धन पाहन तुलि त्रिया पर मात हमारै ।। ५८ ।। ।। दोहरा ।। सुनत राव के बच स्रवन त्रिय मनि अधिक रिसाइ । चोर चोर कहिकै उठी सिक्खयन दियो जगाइ ।। ५९ ।। सुनत चोर को बच स्रवन अधिक डर्‌यो नरनाहि । पनी पामरी (मू०ग्रं०८४२) तजि भज्यो सुधि न रही मन माहि ।। ६० ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इकीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। २१ ।। ४३८ ।। अफजूं ।।

चोर पुकारती हूँ और लोग तुझे मार ही डालेंगे ।। ५५ ।। ।। दोहा ।। तुम हँस-खेलकर सुखपूर्वक रमण करो; क्यों रुष्ट होते हो । मेरे नयन तुम्हें बुला रहे हैं क्या इन्हें देखकर तुम्हें कष्ट नहीं होता ।। ५६ ।। इसीलिए हे सुन्दरी ! मैं तुम्हारी ओर देख नहीं रहा हूँ; क्यों ये नयन बड़े विरही होते हैं, कहीं देखते-देखते लग ही न जायँ ।। ५७ ।। ।। छप्पय छंद ।। विप्रों को दान दिया जाता है और दुर्जनों को आँखें दिखाई जाती हैं । मित्रों को सुख दिया जाता है और शत्रु के सिर पर खड़ग से बजाकर वार किया जाता है । लोकलाज का कोई भी कार्य नहीं किया जाता है, इसलिए परनारी की शय्या पर भूलकर स्वप्न में भी पाँव नहीं रखा जाता है । गुरु ने जब से यह उपर्युक्त प्रण करवाया है तब से पराया धन मेरे लिए पत्थर के समान और परनारी माता के समान है ।।५८।। ।। दोहा ।। राजा के वचन सुनकर स्त्री मन में अत्यधिक क्रोधित हो उठी और 'चोर-चोर' पुकार कर उसने सब सिक्खों को जगा दिया ।। ५९ ।। वह राजा 'चोर-चोर' की पुकार कानों से सुनकर अत्यधिक डर गया और सुध-बुध भूलकर जूता छोड़कर भाग निकला ।। ६० ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में इक्कीसवें चरित्र की सुभ सत् समाप्ति ।। २१ ।। ४३८ ।। अफजू ।।

अथ बाईसवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। सुनत चोर के बच स्रवन उठ्यो राइ डर
धार । भज्यो जाइ डर पाइ मन पनी पामरी डारि ।। १ ।।
चोरि सुनत जागे सभै भजै न दीना राइ । कदम पाँच सातक
लगे मिले सिताबी आइ ।। २ ।। ।। चौपई ।। चोर बचन सभ
ही सुनि धाए । काढे खड़ग राइ प्रति आए । कूकि कहैं
तुहि जान न दैहैं । तुहि तसकर जमधाम पठैहैं ।। ३ ।।
।। दोहरा ।। आगे पाछे दाहने घेरि दसो दिस लीन । पैंड
भजन कौ ना रह्यो राइ जतन यों कीन ।। ४ ।। वाकी कर
दारी धरी पगिया लई उतारि । चोर चोर करि तिह गह्यो
द्वैक मुतहरी झारि ।। ५ ।। लगे मुतहरी के गिर्यो भूमि
मूरछना खाइ । भेद न काहूँ नर लह्यो मुसकैं लई चढ़ाइ ।।६।।
लात मुसट बाजन लगी सिख्य पहूँचे आइ । भ्रात भ्रात त्रिय
कहि रही कोऊ न सक्यो छुराइ ।। ७ ।। ।। चौपई ।। जूती
बहु तिह मूँड लगाई । मुसकैं ता की ऐठ चड़ाई । बंदसाल

बाईसवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। चोर की बात सुनकर राजा डरकर उठा और जूता भी भूल कर भागने लगा ।। १ ।। चोर की पुकार सुनकर सभी जग गए और लोगों ने राजा को भागने नहीं दिया तथा पाँच-सात क़दम के बाद ही उससे आ मिले ।। २ ।। ।। चौपाई ।। 'चोर' की पुकार सुनकर सभी भागे और उस राजा के ख़िलाफ़ तलवारें निकाल लीं । वे लोग चिल्लाने लगे कि जाने नहीं देंगे और हे तस्कर ! तुम्हें यमलोक भेजेंगे ।। ३ ।। ।। दोहा ।। आगे-पीछे, दायें-बायें सभी दिशाओं से उसे घेर लिया । राजा ने यत्न तो किया पर भागने के लिए कोई रास्ता नहीं बचा ।। ४ ।। लोगों ने हाथ पकड़कर उसकी दाढ़ी पकड़ ली और उसकी पगड़ी उतार ली । उसे 'चोर-चोर कहकर दो-तीन डंडे मारकर पकड़ लिया ।।५।। डंडा लगने से राजा धरती पर गिर पड़ा और मूर्च्छित हो गया । लोगों में कोई भी रहस्य को न समझा और उन्होंने राजा के हाथ बाँध लिये ।। ६ ।। लात और मुक्के चलने लगे तथा अन्य शिष्य भी आ पहुँचे । स्त्री भाई-भाई चिल्ला रही थी (तो लोगों ने समझा कि इसके भाई ने चोरी की है अतः उसके भाई को पकड़ लिया) और उसे कोई न छुड़ा सका ।। ७ ।। ।। चौपाई ।। उसके मुँह पर बहुत से जूते मारे

तिह दिया पठाई। आनि आपनी सेज सुहाई ॥ ८ ॥ इह छल खेलि राइ भज आयो। बंदसाल त्रिय भ्रात पठायो। सिखयन भेद अभेद न पायो। वाही कौ तसकर ठहरायो ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे बाईसवों
चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ २२ ॥ ४४७ ॥ अफजूं ॥

अथ तेईसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ भयो प्रात सभ ही जन जागे। अपने अपने कारज लागे। राइ भवन ते बाहर आयो। सभा बैठ दीवान लगायो ॥ १ ॥ ॥ दोहरा ॥ प्रात भए तवनै त्रिया तिह तजि रिस उपजाइ। पनी पामरी जो हुते सभहिन दए दिखाइ ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ राइ सभा महि बचन उचारे। पनी पामरी हरे हमारे। ताँहि सिख्य जो हमैं बतावै। ता ते काल निकट नहि आवै ॥३॥ (मू०ग्रं०८४३) ॥ दोहरा ॥ बचन सुनत गुर बक्त्र तें सिख्य न सके दुराइ। पनी पामरी के

गए और उसके हाथ बाँध लिये गये। उसे बंदीगृह भेज दिया और वह स्त्री भी अन्ततः अपने पलंग पर सो गई ॥ ८ ॥ इस प्रकार यह प्रपंच खेलकर राजा भागकर आ गया और बंदीगृह में उस स्त्री का भाई भेज दिया गया। कोई भी शिष्य रहस्य को न जान सका और उसके भाई को ही सबने चोर ठहरा दिया ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र में मन्त्री-भूप-संवाद में बाईसवें
चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ २२ ॥ ४४७ ॥ अफजू ॥

तेईसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ प्रातःकाल सब जगे और अपने-अपने कामों में लग गए। राजा भी अपने भवन से बाहर आया और सभा में बैठा ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ प्रातःकाल उस स्त्री ने प्रेम त्यागकर क्रोध में आते हुए वे जूते सबको दिखा दिए ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ इधर राजा ने सभा में कहा कि कोई हमारा जूता चोरी करके ले गया है। जो शिष्य उस व्यक्ति के बारे में (पता लगाकर) बताएगा, मृत्यु उसके निकट नहीं आएगी ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ गुरुमुख से वचन सुनकर सिक्ख छुपा न सके और जूते-कंबल

सहित सो त्रिय दई बताइ ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ तबै राइ यौ बचन उचारे । गहि ल्यावहु तिह तीर हमारे । पन्ही पामरी सँग लै ऐयहु । मोरि कहे बिनु त्रास न दैयहु ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ सुनत राइ के बचन को लोग परे अरराइ । पन्ही पामरी त्रिय सहित ल्यावत भए बनाइ ॥६॥ ॥ अड़िल्ल ॥ कहु सुंदरि किह काज बस्त्र तैं हरे हमारे । देख भटन की भीरि त्रास उपज्यो नहि थारे । जो चोरी जन करै कहौ ता कौ क्या करियै । हो नारि जानि कै टरौ नतर जिय ते तुहि मरियै ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ पर पियरी मुख पर गई नैन रही निहुराइ । धरक धरक छतिया करै बचन न भाख्यो जाइ ॥ ८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ हम पूछहिगे याहि न तुम कछु भाखियो । याही को घर माँहि भली बिधि राखियो । निरनौ करिहैं एक इकांत बुलाइकै । हो तब देहैं इह जान ह्रिदै सुखु पाइकै ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ प्रात भयो त्रिय बहुरि बुलाई । सकल कथा कहि ताँहि सुनाई । तुम कुपि हम परि चहित बनायो । हमहूँ तुम कह चरित दिखायो ॥ १० ॥ ता को भ्रात बंदि ते छोर्‌यो । भाँति भाँति तिह त्रियहि

समेत उस स्त्री के बारे में बता दिया ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब राजा ने कहा कि उसे पकड़कर हमारे पास ले आओ । कंबल, जूता साथ ले आना और मेरे कहे बिना उसे डराना-धमकाना नहीं ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा के वचन सुनकर लोग टूट पड़े और कंबल-जूते समेत उस स्त्री को ले आए ॥६॥ ॥ अड़िल्ल ॥ हे सुन्दरी ! बताओ तुमने मेरे वस्त्र क्यों चुराए । इन शूरवीरों की भीड़ (पहरा) देखकर भी तुम्हें डर नहीं लगा । जो चोरी करे उसे क्या सज़ा दी जानी चाहिए । तुम्हें स्त्री जानकर छोड़ देता हूँ अन्यथा तुम्हें मार डालना चाहिए ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ उसका चेहरा पीला पड़ गया और आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगी । उसकी छाती धड़कने लगी और उसके मुँह से बोल नहीं निकल रहा था ॥ ८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ हम तुमसे पूछ रहे हैं पर तुम कुछ नहीं कह रही हो । ठीक है तुम्हारा निर्णय एकान्त में किया जायगा और तब तुम्हें बिना किसी कष्ट के जाने दिया जायगा ॥९॥ ॥ चौपाई ॥ प्रातः उस स्त्री को पुन: बुलाया गया और उसे सब कुछ बताया गया । तुमने हमारे ऊपर कुपित होकर हमें जाल में फँसाया; परन्तु हमने भी तुम्हें चक्कर में डाल दिया ॥ १० ॥ तब उसका भाई बंदीगृह से छोड़

निहोर्‌यो। बहुरि ऐस जिय कबहूँ न धरियहु। मो अपराध छिमापन करियहु।। ११ ।। ।। दोहरा ।। छिमा करहु अब त्रियह मैं बहुरि न करियहु राँधि। बीस सहंसर टका तिस दई छिमाही बाँधि।। १२ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तेईसवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ।। २३ ।। ४५८ ।। अफजूँ ।।

अथ चौबीसमो चरित्र कथनं ।।

।। सोरठा ।। दीनो बहुरि पठाइ बंदसाल पित पूत कउ। लीनो बहुरि बुलाइ भोर होत अपुने निकटि।। १ ।। ।। चौपई ।। पुनि मंत्री इक कथा उचारी। सुनहु राइ इक बात हमारी। एक चरित त्रिय तुमहि सुनाऊँ। ता ते तुमकौ अधिक रिझाऊँ ।। २ ।। उतर देश त्रिपति इक भारो। सूरज बंस माझि उजियारो। चंद्रमती ताकी पटरानी। मानहु छीर सिंध मथिआनी ।। ३ ।। एक सुता ता के भव लयो (मू०ग्रं०८४४) जानक डारि गोद रवि दयो। जोबन जेब

दिया और उस स्त्री को भिन्न-भिन्न तरीक़े से समझाया गया। उससे (राजा ने) कहा कि मेरा अपराध क्षमा करो, परन्तु दुबारा कभी ऐसी बात मन में मत लाना ।। ११ ।। ।। दोहा ।। हे स्त्री ! अब मुझे क्षमा करो, मैं भी इस झगड़े को और अधिक नहीं बढ़ाना चाहता। उसके बाद उस स्त्री को छःमाही वृत्ति के रूप में बीस हज़ार टके बाँध दिए गए ।। १२ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में तेईसवें
चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। २३ ।। ४५८ ।। अफज़ू ।।

चौबीसवाँ चरित्र-कथन

।। सोरठा ।। पिता ने पुत्र को बंदीगृह में पहुँचा दिया और भोर होते ही उसे पुनः बुला लिया ।। १ ।। ।। चौपाई ।। पुनः मंत्री ने एक कथा कही कि हे राजन् ! तुम मेरी एक बात सुनो। मैं तुमको एक स्त्री का प्रपंच सुनाकर अत्यधिक प्रसन्न करूँगा ।। २ ।। उत्तर देश का एक महाबली सूर्यवंश का प्रतापी राजा था। उसकी पटरानी चंद्रमती थी जिसे मानों क्षीरसागर से मथने के पश्चात् निकाला गया हो ।। ३ ।। उनके यहाँ एक पुत्री पैदा हुई जो मानों स्वयं सूर्य ने उनकी गोदी में डाली हो। उसका यौवन

अधिक तिह बाढी। मानहु चंद्र सार मथि काढी ॥ ४ ॥ धर्‌यो सुमेर कुअरि तिह नामा। जाँ सम और न जग मै बामा। सुंदरि तिहूँ भवन महि भई। जानुक कला चंद्र की वई ॥ ५ ॥ जोबन जेब अधिक तिह धरी। मैन सु नार भरनु जन भरी। वा की प्रभा जात नहि कही। जानक फूल मालती रही ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ जगै जुबन की जेब के झलकत गोरे अंग। जनु करि छीर समुंद्र मै दमकत छीर तरंग ॥ ७ ॥ ॥ चौपई ॥ दच्छिन देस त्रिपत वह बरी। भाँति भाँति के भोगन भरी। दोइ पुत्र कंन्या इक भई। जानुक रासि रूपि की वई ॥ ८ ॥ कितकि दिनन राजा वहु मरियो। तिह सिर छत्र पूत बिधि धरियो। को आग्या ता की ते टरै। जो भावै चित मै सो करै ॥ ९ ॥ ऐस भाँति बहु काल बिहान्यो। चड़्‌यो बसंत सभन जिय जान्यो। ता ते पिय बिनु रह्‌यो न परै। बिरह बान भए हियरा जरै ॥१०॥ ॥ दोहरा ॥ बिरह बान गाड़े लगे कैसक बंधै धीर। मुख फीकी बातै करै पेट पिया की पीर ॥ ११ ॥

भी अत्यधिक रूप से इतना बढ़ा मानों चन्द्रमा की कला समुद्र मथकर पैदा
की गई हो ॥ ४ ॥ सुमेरकुँवरि उसका नाम रखा गया और उसके समान
संसार में अन्य कोई स्त्री नहीं थी। वह तीनों लोकों की सुन्दरी थी और
ऐसी लगती थी मानों चन्द्रमा की शक्ति हो ॥ ५ ॥ वह अत्यधिक सुन्दरी
थी और रति भी उसके सामने पानी भरती थी। उसको शोभा अवर्णनीय
थी और वह मानों मालती के फूल के समान लग रही थी ॥ ६ ॥
॥ दोहा ॥ यौवनपूर्ण उसके अंग ऐसे झलक रहे थे मानों क्षीरसमुद्र में दूध
की तरंगें उठ रही हों ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह दक्षिण देश के राजा के साथ
ब्याह दी गई और भिन्न-भिन्न प्रकार के भोग भोगने लगी। उसके दो पुत्र
और एक कन्या हुई वे भी मानों रूप की राशि थे ॥ ८ ॥ कितने ही दिनों
बाद वह राजा मर गया और छत्र उसके पुत्र के सिर पर धारण किया गया।
उसकी आज्ञा भला कौन टाल सकता था। वह जो चाहता था करता
था ॥ ९ ॥ इस प्रकार बहुत समय बीता और बसंत ऋतु का मौसम आ
गया। उससे अब प्रियतम के बिना रहा नहीं जाता था और विरह-बाणों से
उसका हृदय जला जाता था ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ विरह के गहरे बाण लगने
से उससे धैर्य नहीं बँध रहा था। वह मुख से तो फीकी-फीकी बातें करती
थी, परन्तु उसके मन में प्रियतम के लिए तड़प थी ॥ ११ ॥ उसके शरीर में

सर अनंग के तन गडे कढै दसऊअलि फूटि । लोक लाज कुल कानि सभ गई तरक दै तूटि ॥ १२ ॥ एक पुरख सुंदर हुतो ताकौ लयो बुलाइ । मैन भोग तासौ कियो ह्रिदै हरख उपजाइ ॥ १३ ॥ ॥ चौपई ॥ तासों भोग करत त्रिय रसी । जन ह्वै नारि भवन तिह बसी । नित्त निसा कह ताहि बुलावै । मन भावत के भोग कमावै ॥ १४ ॥ आवत ताहि लोग सभ रोकै । चोर पछानि पाहरू टोकै । जब चेरी तिन बचन सुनावै । तब ग्रहि जार सु पैठै पावै ॥ १५ ॥ भोग जार सो त्रिय अति करै । भाँति भाँति के भोगन भरै । अधिक काम को त्रिय उपजावै । लपटि लपटि करि भोग कमावै ॥ १६ ॥ ॥ दोहरा ॥ जब चेरी पहरून को उत्तर देत बनाइ । तब वहु पावत पैठबो मीत मिलत तिह आइ ॥ १७ ॥ ॥ चौपई ॥ रैनि भई त्रिय मित्र बुलायो । त्रिय को भेस धारि सो आयो । इह बिधि ताँसों बचन उचरे । हम सों भोग अधिक तुम करे ॥ १८ ॥ नारि कहियो सुनि मित्र हमारे । कहो (मू०ग्रं०८४५) बात सो करहु पियारे । मंत्र मोर कानन धरि लीजहु । अवर किसू तन भेद न दीजहु ॥१९॥

कामदेव के बाण गड़े थे जो तन को छेद रहे थे । इसीलिए लोकलाज, कुल की मर्यादा का बंधन भी शीघ्र ही तड़ककर टूट गया ॥ १२ ॥ उसने एक सुन्दर पुरुष को बुलाया और उससे प्रसन्नतापूर्वक भोग-विलास किया ॥ १३ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह उससे ऐसे भोग-विलास करने लगी मानों उसकी स्त्री हो । उसे वह रोज रात में बुलाने लगी और मनोनुकूल भोग-विलास उससे करने लगी ॥ १४ ॥ उस पुरुष को आते देखकर सभी उसे रोकते और चोर या राहगीर जानकर टोकते थे । जब दासी आकर उसके बारे में कहती तभी वह प्रेमी अपनी प्रेमिका से मिल पाता था ॥ १५ ॥ वह स्त्री अपने प्रेमी के साथ विभिन्न प्रकार के भोग-विलास करने लगी । वह स्त्री अत्यधिक कामुक होकर लिपट-लिपटकर रतिक्रीड़ा करने लगी ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥ जब दासी पहरेदारों को समझाती-बुझाती थी, तभी वह प्रेमी मिलने के लिए अन्दर आ पाता था ॥ १७ ॥ ॥ चौपाई ॥ रात्रि के समय स्त्री ने अपने प्रेमी को बुलाया और वह भी स्त्री का वेश धारण कर आ पहुँचा । उस स्त्री ने कहा कि हे मित्र ! तुमने मेरे साथ काफ़ी अधिक रतिक्रीड़ा कर ली है ॥१८॥ स्त्री ने कहा कि हे मित्र ! सुनो और जो मैं कहती हूँ उसे करो । मेरी बात कान से सुनो और किसी अन्य को यह रहस्य मत बताना ॥ १९ ॥ तुम एक

एक दिवस तुम बन मै जैयहु। एक बावरी भीतरि नैयहु। मोहि मिले जदुपति यौ कहियहु। ए बच भाखि मौन ह्वै रहियहु ॥ २० ॥ तुम जे लोग देख हैं आई। यौ कहियहु तिन बचन सुनाई। आनि गाँव ते बचन कहैंगे। सुन बतियाँ हम चक्रित रहैंगे ॥ २१ ॥ चड़ि झंपान सु तहाँ हम ऐहैं। गुरू भाखि तव सीस झुकैहैं। लै तोको अपने घर जैहों। भाँति भाँति के भोग कमैहों ॥ २२ ॥ तवनै जार तैसही कियो। जवन भाँति अबला कहि दियो। भयो प्रात बन माँहि सिधार्‌यो। एक बावरी माहि बिहार्‌यो ॥ २३ ॥ ॥ दोहरा ॥ सज्जन करि बापी बिखै बैठ्यो ध्यान लगाइ। कहियो आनि मुहि दै गए दरशन स्री जदुराइ ॥ २४ ॥ ॥ चौपई ॥ यों सुनि लोग सकल ही धाए। छेरा सकर कुचारू ल्याए। दूध भात आगे लै धरहीं। भाँति भाँति सौ पाइन परहीं ॥ २५ ॥ दरस दयो तुम कौ जदुराई। गुरू भाखि दै गयो बडाई। ताँ ते सभ उसतति हम करहीं। महाँ काल के बंद न परहीं ॥ २६ ॥ ॥ दोहरा ॥ महाँ काल की

दिन वन में जाओ और एक बावली में बैठ जाओ। तुम यह कहकर कि मुझे यदुपति श्रीकृष्ण मिले हैं पुनः चुप हो जाना ॥ २० ॥ तुम्हें जो लोग भी देखने आएँ उन्हें भी तुम यही कहना। गाँव के लोग हमारे पास भी बातें करेंगे जिसे सुनकर हम चकित हो जायेंगे ॥ २१ ॥ तब पालकी में बैठकर हम तुम्हारे पास आएँगे और तुम्हें गुरु मानकर तुम्हारे सामने सिर झुकाएंगे। फिर तुम्हें लेकर अपने घर आ जाएँगे और विभिन्न प्रकार से भोग-विलास करेंगे ॥ २२ ॥ उसके मित्र ने वैसा ही किया जैसा कि उस स्त्री ने कहा था। वह सुबह होते ही वन में चला गया और एक बावली पर जा बैठा ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ स्नान करके वह बावली पर बैठ गया और कहने लगा कि मुझे श्रीयदुपति दर्शन दे गए हैं ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ यह सुनकर सभी लोग चल पड़े और उसके लिए सेंवई, शक्कर एवं अन्य भोजनादि लेकर पहुँच गए। उसके आगे दूध-भात आदि रखे गए और लोग विभिन्न प्रकार से उसके चरण छूने लगे ॥२५॥ लोग कहने लगे कि भगवान कृष्ण तुमको दर्शन दे गए और तुम्हें गुरू बना गए हैं! इसलिए हम तुम्हारी पूजा कर रहे हैं। ऐसा करके हम काल के बंधन से छूट जायँगे ॥ २६ ॥ ॥ दोहा ॥ हे गुरुदेव ! सबका काल के बंधन से उद्धार करो। हम सब

बंद ते सभ को लेहु छुराइ। तव प्रसादि बिचरहि सुरग परहि नरक नहि जाइ ॥ २७ ॥ ॥ चौपई ॥ चली कथा पुरि भीतरि आई। तिन रानी स्रवनन सुनि पाई। चड़ि झंपान तहाँ कह चली। लीने बीस पचासिक अली ॥ २८ ॥ ॥ दोहरा ॥ चली चली आई तहाँ जहाँ हुते निजु मीत। भाखि गुरू पाइन परी अधिक मान सुख चीत ॥२९॥ ॥ चौपई ॥ किह बिधि दरसु स्याम तुहि दीनो। कवन क्रिपा करि कै गुर कीनो। सकल कथा वहु हमै सुनावहु। मोरे चित को ताप मिटावहु ॥ ३० ॥ ॥ दोहरा ॥ जो कछु कथा तुम पै भई सु कछु कहौ तुम मोहि। तुहि जदुपति कैसे मिले कहा दयो बर तोहि ॥ ३१ ॥ ॥ चौपई ॥ मज्जन हेत इहाँ मैं आयो। न्हाइ धोइ करि ध्यान लगायो। इक चित ह्वै द्रिड़ जपु जब कियो। तब जदुपति दरशन मुहि दियो ॥ ३२ ॥ सुनु अबला मै कछू न जानो। कहा दयो मुहि कहाँ बखानो। मै लखि रूप (मू०ग्रं०८४६) अचरज तब भयो। मोकह बिसरि सभै किछु गयो ॥ ३३ ॥ ॥ दोहरा ॥ बनमाला उर मैं धरी पीत बसन फहराइ। निरख दिपत दामनि लजै प्रभा न बरनी

तुम्हारी कृपा से स्वर्ग में विचरण करें और नरक से बच जायँ ॥ २७ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसकी कहानी चलते-चलते नगर तक पहुँची और उस रानी से उसे सुना। वह बीस-पचीस सखियों को लेकर पालकी पर सवार होकर उस ओर चल पड़ी ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ चलते-चलते वह वहाँ पहुँची जहाँ उसका मित्र था। वह उसे गुरुदेव कहते हुए प्रसन्न मन से उसके चरणों पर आ गिरी ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ आपको श्रीकृष्ण ने कैसे दर्शन दिए और कैसे कृपापूर्वक आपको गुरु घोषित किया। आप कृपापूर्वक यह सारी कथा मुझे कहें और मेरे चित्त का ताप दूर करें ॥ ३० ॥ ॥ दोहा ॥ जो-जो आपके साथ बीता वह आप मुझसे कहें और बताएँ कि यदुपति आपको कैसे मिले और कैसे उन्होंने वरदान दिया ॥ ३१ ॥ ॥ चौपाई ॥ मैं यहाँ स्नान करने आया था। नहा-धोकर मैंने ध्यान लगाया और दृढ़ मन से जब मैंने जाप किया तो मुझे श्रीयदुपति ने दर्शन दिया ॥ ३२ ॥ हे नारी ! मैं कुछ नहीं जानता कि उन्होंने मुझे क्या-क्या दिया। मैं तो उनका रूप देखकर आश्चर्यचकित रह गया और मुझे सुध-बुध भूल गयी ॥ ३३ ॥ ॥ दोहा ॥ उन्होंने वनमाला हृदय पर धारण कर रखी थी और पीले वस्त्र लहरा रहे थे। उनको देखकर

जाइ ।। ३४ ।। ।। चौपई ।। अधिक जोति जदुपति की सोहै । खग म्रिग जच्छ भुजंगन मोहै । लहि नैनन को म्रिग सकुचाने । कमल जानि अलि फिरत दिवाने ।। ३५ ।। ।। छंद ।। पीत बसन बनमाल मोर को मुकट सु धारै । मुख मुरली अति फबत हिये कौसतक मनि धारै । सारंग सुदरशन गदा हाथ नंदग असि छाजै । लखे सावरी देह सघन घन सावन लाजै ।। ३६ ।। ।। दोहरा ।। चतुर कान आयुध चतुर चहूँ बिराजत हाथ । दोख हरन दीनो धरन सभ नाथन के नाथ ।। ३७ ।। नवल कान गोपी नवल नवल सखा लिय संग । नवल बस्त्र जा मै धरे रंगित नाना रंग ।। ३८ ।। इहै भेख भगवान को या मै कछू न भेद । इहै उचारत शास्त्र सभ इहै बखानत बेद ।। ३९ ।। इहै भेख पंडित कहैं इहै कहत सभ कोइ । दरसु दयो जदुपति तुमै या मै भेद न होइ ।।४०।। ।। चौपई ।। सभ बनिता पाइन पर परी । भाँति भाँति सों बिनती करी । नाथ हमारे धाम पधारहु । स्री जदुपति को नाम उचारहु ।।४१।। ।। दोहरा ।। धाम चलो हमरे प्रभू करिकै

बिजली भी लजा रही थी; मैं उनकी शोभा का वर्णन नहीं कर सकता ।। ३४ ।। ।। चौपाई ।। उनकी शोभा अत्यधिक सुन्दर थी और पक्षी, मृग, यक्ष, भुजंग सबका मन मोह रही थी । मृग उनकी आँखों को देखकर लज्जित हो रहे थे और भँवरे उनके नेत्रों को कमल जानकर मस्त होकर घूम रहे थे ।। ३५ ।। ।। छंद ।। पीले वस्त्र (पीताम्बर), वनमाल, मोरमुकुट, मुख में बाँसुरी और हृदय पर कौस्तुभ मणि शोभायमान हो रहे थे । धनुष, सुदर्शन, गदा, तलवार हाथ में पकड़े थे और उनकी साँवरी देह को देखकर सावन के घने बादल भी लजा रहे थे ।। ३६ ।। ।। दोहा ।। सुन्दर कृष्ण के चारों हाथों में सुन्दर शस्त्र विराज रहे थे । वे दुखों का हरण करनेवाले दीनों का उद्धार करनेवाले सभी नाथों के भी नाथ हैं ।। ३७ ।। सुन्दर कृष्ण के साथ सुन्दर गोपियाँ और सुन्दर सखा थे । उन सबने रंग-बिरंगे सुन्दर नये वस्त्र पहन रखे थे ।। ३८ ।। भगवान का निस्संदेह यही वेश था और यही सव वेद-शास्त्रादि भी बताते हैं ।। ३९ ।। पंडितगण भी यही वेश बताते हैं । तुमको भगवान ने दर्शन दिए हैं इसमें कोई भी संदेह नहीं है ।।४०।। ।। चौपाई ।। सभी स्त्रियाँ चरणों पर गिर गयीं और विभिन्न प्रकार से प्रार्थनाएँ करने लगीं कि हे स्वामी ! हमारे घर को चलो और श्रीयदुपति के नाम का गुणगान हमें

क्रिपा अपार । हम ठाढी सेवा करैं एक चरन निरधार ।।४२।।
रानी सुत तुमरे जियै सुखी बसै तब देस । हम अतीत बनहीं
भले धरे जोग को भेस ।। ४३ ।। ।। चौपई ।। क्रिपा करहु
ग्रहि चलहु हमारे । लगी पाइ मैं रहो तिहारे । जो कछु
कहो करिहों अब सोई । तव आग्या फेरिहै न कोई ।। ४४ ।।
।। दोहरा ।। मैं या सो गोसटि करें कहि अलि दई उठाइ ।
आपु आइ तासों रमी ह्रिदै हरख उपजाइ ।। ४५ ।। लै ताको
घर को चली मन मानत करि भोग । याहि मिल्यो सभ हरि
कहै भेद न जानहि लोग ।। ४६ ।। ।। चौपई ।। तवन जार
को संग लै चली । लीने साथ पचासिक अली । गोसटि हेत
धाम तिह आवै । शंक त्यागि करि भोग कमावै ।। ४७ ।।
।। दोहरा ।। तवन जार सौ यौ रहै निजु नारी ज्यों होइ ।
लोग गुरू कहि पग (मू०ग्रं०८४७) परै भेद न पावै कोइ ।।४८।।
चंचलान के चरित्र को सकत न कोऊ पाइ । चन्द्र सूर सुर
असुर सभ ब्रहम बिशन सुरराइ ।। ४९ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे चौबीसमो
चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। २४ ।। ५०८ ।। अफजूं ।।

सुनाओ ।।४१।। ।। दोहा ।। हे प्रभु ! कृपापूवक हमारे घर पर चलो; हम सब एक पाँव पर खड़ी होकर आपकी निरन्तर सेवा करेंगी ।। ४२ ।। हे रानी ! तुम्हारे पुत्र और देश सुखी रहें, हम योगी तो योगी-वेश में वन में ही अच्छे-भले हैं ।। ४३ ।। ।। चौपई ।। कृपा करके हमारे घर पर चलो, हम आपके चरणों से लगी रहेंगी । आप जो कहेंगे वही करेंगी और आपकी आज्ञा कोई नहीं उलटाएगा ।। ४४ ।। ।। दोहा ।। मैं इनसे गोष्ठी करूँगी, यह कहते हुए उसने सब सखियों को उठा दिया और मुदित होकर स्वयं उस योगी रूपी अपने मित्र से रमण करने लगी ।। ४५ ।। वह उसे लेकर घर को चल पड़ी । सभी कहने लगे कि उसे भगवान मिले हैं परन्तु कोई भी उसके रहस्य को न जान सका ।। ४६ ।। ।। चौपाई ।। वह पचास के लगभग सखियों सहित अपने प्रेमी को लेकर चल पड़ी । गोष्ठी के बहाने उसके आवास पर आती थी और निस्संकोच उसके साथ रतिक्रीड़ा करती थी ।। ४७ ।। ।। दोहा ।। वह प्रेमी ऐसे रहने लगा जैसे वह अपनी स्त्री के साथ रह रहा हो । लोग उस प्रेमी को गुरु मानकर उसके चरणों पर गिरते थे परन्तु कोई भी भेद को नहीं समझ सका ।। ४८ ।। स्त्रियों के प्रपंच का रहस्य कोई नहीं

समझ सका। चन्द्र, सूर्य, सुर, असुर, ब्रह्मा, विष्णु और इन्द्र भी इनका रहस्य नहीं समझ सके हैं ॥ ४६ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में चौबीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ २४ ॥ ५०८ ॥ अफजू ॥

अथ पचीसमो चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ गंग जमुन भीतर बसै कैलाखर की दून। तिह ठाँ लोग बसै घने प्रतछ पशू की जून ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ बहुरि सु मंत्री बचन उचारे। सुनहु त्रिपति प्रानन ते प्यारे। एक कथा त्रिय तुमहि सुनाऊँ। ता ते तुमरो ताप मिटाऊँ ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ कैलाखर के राव की एक हुती बर नारि। राज नशट के हेतु तिन चित मै किया बिचारि ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ प्रेमकुअरि ता की इक रानी। बिरध राव लखि करि डरपानी। या के धाम एक सुत नाही। इह चिंता ता के चित माही ॥४॥ ॥ दोहरा ॥ पुत्र न ग्रहि याको भयो बिरध गयो ह्वै राइ। केल कला तै थकि गयो सकत न सुत उपजाइ ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ ता ते कछू चरित्र बनैयै। राज धाम ते जान न दैयै। पूत अनत कौ

पचीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ गंगा-यमुना के बीच कैलाक्षर की घाटी थी, जहाँ पर लोग पशुयोनि जैसा जीवन व्यतीत करते थे ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ पुनः मंत्री ने कहा कि हे प्राणों से प्यारे राजन्! तुम सुनो, मैं तुम्हें एक कथा सुनाता हूँ और तुम्हारे मन का ताप दूर करता हूँ ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ कैलाक्षर घाटी के राजा की एक सुन्दर पत्नी थी जिसने राज्य के अनिष्ट को ध्यान में रखकर एक बार चित्त में विचार किया ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसकी एक प्रेमकुमारी नामक रानी थी वह वृद्ध राजा को देखकर भयभीत थी। उसको यही चिन्ता थी कि राजा के घर में एक भी पुत्र नहीं है ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा के पुत्र नहीं और यह बूढ़ा हो गया है। यह रतिक्रीड़ा में अक्षय हो गया है और बच्चा पैदा नहीं कर सकता ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ इसलिए कुछ प्रपंच करना चाहिए और अपने घर से राजगद्दी नहीं जाने देनी चाहिए। अन्य

लै करि परियै। नाम त्रिपति कौ बदन उचरियै ॥ ६ ॥
॥ दोहरा ॥ गरभवती इक त्रिय हुती लीनी निकटि बुलाइ।
रनियहि रह्यो अधान जग ऐसे दई उडाइ ॥ ७ ॥ अधिक
दरब ता कौ दयो मोल पुत्र तिह लीन। सुत उपज्यो ग्रहि
राइ के यौ कहि उतसव कीन ॥ ८ ॥ डोम भाट ढाढीन कौ
दीना दरबु अपार। शेर सिंघ ता कौ धर्‍यो सभहिन नाम
सुधार ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ कितक दिनन राजा मरि गयो।
राव सु शेरसिंघ तह भयो। राव राव सभ लोग बखानै।
ता को भेद न कोऊ जानै ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ करम रेख
की गति हुते भए रंक ते राइ। रावत ते राजा करे त्रिया
चरित्र बनाइ ॥ ११ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे पचीसमो
चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ २५ ॥ ५१९ ॥ अफजूं ॥

अथ छबीसमो चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ कथा सुनाऊँ बनिक की सुनि त्रिपबर तुहि
संग। (मू०ग्रं०८४८) इक त्रिय ताकी बन बिखै बुरि पर खुद्‌यो

किसी का पुत्र धारण कर लेना चाहिए और उसे राजा का बतला देना चाहिए ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ एक गर्भवती स्त्री थी उसे रानी ने अपने पास बुलाया और यह बात उड़ा दी कि रानी गर्भवती है ॥ ७ ॥ उस स्त्री को पर्याप्त द्रव्य दिया और उसका पुत्र मोल ले लिया। राजा के यहाँ पुत्र पैदा हुआ है, यह कहकर खूब उत्सव आदि मनाये गयें ॥८॥ डोम, भाट, गायकों आदि को अपार धन दिया गया और उस पुत्र का नाम शेरसिंह रखा ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ सभी उसे राजा के रूप में जानने लगे परन्तु वास्तविक भेद कोई नहीं जान सका ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ भाग्य की बात थी कि वह भिखारी से राजा बन गया। यह स्त्रियों के चरित्र की ही महिमा है कि वे जिसे चाहें रंक से राजा बना दें ॥ ११ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में पचीसवीं
कथा की शुभ सत् समाप्ति ॥ २५ ॥ ५१९ ॥ अफजू ॥

छब्बीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ हे राजन्! तुम्हें एक वणिक की कथा सुनाता हूँ कि कैसे

बिहंग ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ जब ही बनिक बनिज ते आवै । बीस चोर अब हने सुनावै । प्रात आनि इमि बचन उचारे । तीस चोर मैं आजु सँघारे ॥ २ ॥ ऐसी भाँति नित्त वहु कहै । सुनि त्रिय बैन मोन ह्वै रहै । ता के मुख पर कछू न भाखै । ए सभ बात चित्त मै राखै ॥ ३ ॥ निरतमती इह बिधि तब कियो । बाजसाल ते है इक लियो । बाँधि पाग सिर खड़गन चायो । सकल पुरख को भेस बनायो ॥ ४ ॥ दहिने हाथ सैहथी सोहै । जा के तीर सिपाही को है । सभ ही साज पुरख के बनी । जानुक महाराज पति अनी ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ सिपर सरोही सैहथी धुजा रही फहराइ । महाँबीर सी जानियै त्रिया न समझी जाइ ॥६॥ बनिज हेत बनिया चल्यो अति हरखत सब अंग । गावत गावत गीत सुभ बन मै धस्यो निशंग ॥ ७ ॥ ॥ चौपई ॥ बनिक जात एकलौ निहार्‌यो । छलों याहि यों बाल बिचार्‌यो । मारि मारि करि सामुहि धाई । काढि क्रिपान पहूँची आई ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ कहा

उसकी स्त्री ने वन में (जाकर) उसके नितम्बों पर गोदकर पक्षी बनाया ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब वह वणिक् व्यापार करके लौटता तो सदैव अपनी स्त्री को बताता कि इस बार उसने लगभग बीस चोरों को मार डाला । फिर जाता और प्रातःकाल आकर कहता कि आज मैंने चालीस चोरों को मार डाला ॥ २ ॥ वह जब इस प्रकार कहता तो स्त्री सुनकर मौन रह जाती । वह उसके मुँह पर कुछ नहीं कहती थी पर अन्यथा वह सोचती रहती थी ॥३॥ नृत्यमती नामक स्त्री ने इस प्रकार किया कि घुड़साल से एक घोड़ा लिया । सिर पर पगड़ी बाँधकर हाथ में तलवार पकड़ी और सर्व प्रकार से पुरुष का वेश बना लिया ॥ ४ ॥ दाहिने हाथ में उसके कृपाण विराजमान होने लगी, वह ऐसी लगने लगी मानों कोई सैनिक हो । सर्वप्रकार से पुरुष बनकर वह महराजा की सेना की सेनापति लगने लगी ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ ढाल, तलवार, ध्वजा आदि के साथ वह महावीर समझी जा रही थी और स्त्री नहीं लग रही थी ॥ ६ ॥ बनिया प्रसन्न होकर व्यापार के लिए चला और मस्ती से गीत गाता हुआ निस्संकोच वन में प्रविष्ट हुआ ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ वणिक् को अकेला जाते देखकर उस स्त्री ने उसे छलने के बारे में विचार किया और 'मार-मार' चिल्लाती हुई कृपाण निकालकर उसके सामने आ पहुँची ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ उसने कहा कि ओ मूर्ख, कहाँ जा रहे

जात रे मूड़ मति जुद्ध करहु डर डारि। मारत हों नहि आजु तुहि पगिया बस्त्र उतारि ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ बनिक बचन सुनि बस्त्र उतारे। घास दाँत गहि राम उचारे। सुन तसकर मै दास तिहारो। जानि आपनो आजु उबारो ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ जौ अपणी तै गुदा पर खोदन देइ बिहंग। तो तुम अब जीवत रहो बचै तिहारो अंग ॥ ११ ॥ तबै बनिक तैसै किया ज्यों त्रिय कह्यो रिसाइ। थरहरि करि छित पर गिर्यो बचन न भाख्यो जाइ ॥ १२ ॥ तब तरुनी है ते उतरि इक छुरकी के संग। राम भनै तिह बनिक की बुरि पर खुद्यो बिहंग ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे छबीसमों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ २६ ॥ ५३२ ॥ अफजूं ॥

अथ सताईसमो चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ कंक नाम दिजबर इक सुना। पढ़े पुरान

हो, मुझसे युद्ध करो नहीं तो मैं तुम्हारी पगड़ी और वस्त्र उतारकर तुम्हें मार डालूंगी ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ वणिक् ने यह सुनकर वस्त्रादि उतार दिए और दाँतों में घास के तिनके पकड़कर "राम-राम" पुकारने लगा। वह कहने लगा कि हे दस्युराज ! मैं आपका दास हूँ और मुझे अपना समझते हुए मेरा उद्धार करो ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ उस दस्यु रूपी स्त्री ने कहा कि अगर तुम अपने नितम्बों पर पक्षी गोदने दो तभी तुम जीवित बच सकते हो ॥ ११ ॥ तब वणिक् ने वैसा ही किया जैसा उस स्त्री ने क्रोधित होकर कहा। वह छटपटाकर धरती पर गिर पड़ा और उसका मुँह बंद हो गया अर्थात् वह बोलने में असमर्थ हो गया ॥ १२ ॥ तब स्त्री ने घोड़े से उतरकर हाथ में एक छुरी पकड़ी और कवि राम के कथनानुसार उस वणिक् के नितम्बों पर एक पक्षी का चित्र गोद दिया ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप संवाद में छब्बीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ २६ ॥ ५३२ ॥ अफजू ॥

सत्ताईसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ कंक नामक एक ब्राह्मण था जो कि पुराण, शास्त्र का

शास्त्र बहु गुना। अति सुंदर तिह रूप अपारा। सूर लयो जाते उजियारा ॥ १ ॥ दिज को रूप अधिक तब सोहै। सुर नर नाग असुर (मू०ग्रं०८४६) मन मोहै। लांबे केस छके घुँघरारे। नैन जानु दोऊ बने कटारे ॥ २ ॥ ब्योम कला रानी रस भरी। बिरध राइ सुत हित दुख जरी। तिन त्रिय भोग कंक सौ चहा। लए कपूर आवतो गहा ॥ ३ ॥ त्रिय दिजबर सो बचन उचारे। भजहु आजु तुम हमै पियारे। कंक न ताकी मानी कही। रानी बाँहि जोर तन गही ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ गहि चुंबन लागी करन त्रिपति निकसया आइ। तब त्रिय किया चरित्र इक अधिक ह्रिदै सकुचाइ ॥ ५ ॥ या दिजबर ते मैं भ्रमी सुनु राजा मम सूर। जिनि इन चोरि भखयो कछू सूँघत हुती कपूर ॥ ६ ॥ सूर नाम सुनि मूरि मति अति हरखत भ्यो जीय। सींघत हुती कपूर कह धन्य धन्य इह त्रीय ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पखयाने त्रिया-चरित्रे मंत्री-भूप-संवादे सताईसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ २७ ॥ ५३६ ॥ अफजूं ॥

ज्ञाता था। वह अत्यन्त सुन्दर भी था और सूर्य ने भी मानों उससे उजाला लिया था ॥ १ ॥ द्विज का सौन्दर्य सुर, नर, नाग और असुरादि सबका मन मोहनेवाला था। उसके घुँघराले लम्बे बाल थे और दोनों नयन कटारियों के समान थे ॥२॥ व्योमकला नामक एक यौवनपूर्ण रानी थी जो वृद्ध राजा के साथ रहते हुए पुत्र न होने के दुःख में जल रही थी। वह कंक के साथ रमण करना चाहती थी और उसनें कपूर पकड़कर आते हुए कंक को देखा ॥ ३ ॥ उस स्त्री ने द्विज से कहा कि हे प्रिय! तुम आज मेरे साथ रति-क्रीड़ा करो। कंक ने उसकी बात नहीं मानी और रानी ने अपनी भुजा उसके गले में डाल दी ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ उसको पकड़कर जब वह कंक के चुम्बन ले रही थी तो उधर से राजा आ निकला। उस समय स्त्री ने अत्यन्त लज्जित होकर एक प्रपंच खेला ॥ ५ ॥ वह कहने लगी : हे शूरवीर राजा! मुझे इस ब्राह्मण पर कुछ संदेह हो गया था कि इसने चोरी से कुछ खाया तो नहीं है। इसीलिए मैं इसके मुँह से कपूर की गंध देख रही थी ॥६॥ शूरवीर सम्बोधन सुनकर वह मूर्ख राजा मन में प्रसन्न हो उठा और कपूर सँघ रही स्त्री को धन्य-धन्य कहने लगा ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में सताईसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ २७ ॥ ५३६ ॥ अफजू ॥

अथ अठाईसवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। अनत कथा मंत्री इक कही । सुनि सभ सभा मोनि ह्वै रही । एक अहीर नदी तट रहई । अति सुंदरि तिह त्रिय जग कहई ।। १ ।। ।। दोहरा ।। रूप कुरूप अहीर को सुंदर ता की नारि । वहु तरुनी इक राव को अटकी रूप निहारि ।। २ ।। ।। चौपई ।। दुखत अहीर नारि को राखै । कटु कटु बचन रैन दिन भाखै । गोरस बेचन जान न देई । छीनि बेचि गहनन कह लेई ।। ३ ।। ।। अड़िल्ल ।। सूरछट तिह नाम तरुनि को जानियै । छत्रकेत त्रिप भए अधिक हित मानियै । चंद्रभगा सरिता तट भैंस चरावई । हो जही राव नावन हित नितप्रति आवई ।। ४ ।। ।। चौपई ।। गोरस दुहन त्रियहि तह ल्यावै । समै पाइ राजा तह जावै । दुहत छीरि कटिया दुख देई । त्रिय कह भाखि ताहि गहि लेई ।।५।। ।। दोहरा ।। जब वहु चोवत भैंस को करि कै नीचा सीस । तुरतु आनि त्रिय को भजै बहु पुरखन को ईस ।। ६ ।। भाँति भाँति राजा भजै ताकह मोद बढाइ । चिमटि चिमटि सुंदर रमै लपटि लपटि

अट्ठाईसवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। मंत्री ने एक अन्य कथा कही जिसे सुनकर सारी सभा मौन रह गई। एक अहीरन नदी तट पर रहती थी और बहुत सुन्दर मानी जाती थी ।। १ ।। ।। दोहा ।। कुरूप अहीर की वह सुन्दर स्त्री थी और उस स्त्री को एक राजा से प्रेम हो गया ।। २ ।। ।। चौपाई ।। अहीर स्त्री को दुखी रखता था और रात-दिन कटु वचन कहता था । वह उसे दूध भी बेचने नहीं जाने देता था और उसके गहने भी छीनकर बेच गया था ।। ३ ।। ।। अड़िल्ल ।। सूर्यछटा उस स्त्री का नाम था और छत्रकेतु वह राजा था जिससे उसे प्रेम था । चन्द्रभगा नदी पर वह भैंस चराती थी और वहीं वह राजा नित्यप्रति स्नान के लिए आता था ।।४।। ।। चौपाई ।। दूध दुहने के लिए वह भैंसें वहाँ लाती थी और अवसर पाकर राजा वहाँ पहुँच जाता था । दुहते समय भैंस का बच्चा तंग करता था तो अहीर उसे पकड़ने के लिए स्त्री को पुकारता था ।। ५ ।। ।। दोहा ।। जब वह सिर झुकाकर भैंस दुहता तो राजा तुरन्त पहुँचकर उस स्त्री के साथ रमण करता ।। ६ ।। राजा प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न प्रकार से संभोग करता और वह सुन्दर स्त्री भी

त्रिय जाइ ।। ७ ।। चोट लगे महिखी कँपै दुघद परत छित
आइ । संग अहीर अहीरनी बोलत कोप बढाइ ।। ८ ।।
।। अड़िल्ल ।। सुनहु अहोरन बैन कहा तुम करत हो । भूमि
गिरावत दूध न मो ते (मू०ग्रं०८५०) डरत हो । कह्यो त्रिया
पिय साथ बात सुनि लीजियै । हो कटी दुखावत याहि पियन
पै दीजियै ।। ९ ।। ।। दोहरा ।। राव अहीरनि दुइ तरुन भोग
करहि सुख पाइ । लपटि लपटि राजा रमैं चिमटि चिमटि
त्रिय जाइ ।।१०।। डोलत महिखी ना रहै बोल्यो बचन अहीर ।
कहा करत हो ग्वारनी ब्रिथा गवावत छीर ।। ११ ।। हो
अहीर मै क्या करों कटिया मुहि दुख देत । यौं कहि चूँघन
दीजियै दुघद जियन के हेत ।। १२ ।। अधिक मानि सुख घर
गयो राव अहीर निशंग । यो कहि मंत्री न्रिपति पति पूरन
कियो प्रसंग ।। १३ ।। भेद अहीरन कछु लह्यो आयो अपने
ग्रेह । राम भनै तिह त्रिय भए अधिक बढायो नेह ।।१४।।१।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे अठाईसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। २८ ।। ५५३ ।। अफजूं ।।

लिपट-लिपटकर रति-क्रीड़ा करती ।। ७ ।। चोट लगने से भैंस हिल जाती थी और दूध धरती पर आ गिरता था। तो वह अहीर उस अहीरन को क्रुद्ध होकर कहता ।। ८ ।। ।। अड़िल्ल ।। अहीरन तुम्हें डर नहीं लगता कि तुम दूध गिरने दे रही हो। स्त्री कहती कि हे प्रिय ! भैंस का बच्चा दुखी कर रहा है। यह भूखा है और इसे भी दूध पीने दीजिए ।। ९ ।। ।। दोहा ।। राजा और अहीरन दोनों तरुण सुखपूर्वक संभोग करते और राजा और स्त्री लिपट-लिपट, चिपट-चिपट एक-दूसरे के साथ संलग्न होते ।। १० ।। जब भैंस अधिक हिलने लगी तो ग्वाला फिर बोला कि हे ग्वालिन ! क्यों बेकार दूध गँवा रही हो ।। ११ ।। हे अहीर ! मैं क्या करूँ भैंस का बच्चा दुख दे रहा है। मेरे विचार से तो इसे ही दूध पीने दो क्योंकि यह भूखा है ।। १२ ।। इस प्रकार अहीर और राजा .दोनों प्रसन्न होकर अपने-अपने घर गए और इस प्रकार मंत्री ने भी राजा को सुनाई जा रही कहानी समाप्त की ।। १३ ।। अहीर बिना रहस्य समझे अपने घर गया और कवि राम कहता है कि वह अहीर अपनी स्त्री से और अधिक स्नेह करने लगा ।। १४ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में अट्ठाईसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। २८ ।। ५५३ ।। अफजू ।।

अथ उनतीसवो चरित्र कथनं ॥

॥ सोरठा ॥ बंदसाल के माँहि त्रिपबर दिया उठाइ
सुत । बहुरो लिया बुलाइ भोर होत अपने निकटि ॥ १ ॥
॥ दोहरा ॥ दुतिया मंत्री बुद्धि बर राज रीति की खानि ।
चित्रसिंघ राजा निकट कथा बखानी आनि ॥ २ ॥
॥ चौपई ॥ सरिता निकटि राव इक रहै । मदनकेत नामा
जग कहै । मदनमती तिय तह इक बसी । संग सु तवन राइ
के रसी ॥ ३ ॥ ॥ दोहरा ॥ पैरि नदी के पार को उठि त्रिप
तिह प्रति जाइ । भाँति भाँति तिह नारि को भजत अधिक
सुख पाइ ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ कबहूँ पैरि नदी त्रिप जावै ।
कबहूँ तरि ता को त्रिय आवै । आपु बिखै अति हित
उपजावै । भाँति भाँति सो भोग कमावै ॥ ५ ॥ कोकशास्त्र
की रीति उचरै । भाँति अनिक रसि रसि रति करै ।
लपटि लपटि करि खेल कमावै । वैस ही पैरि नदी घर
आवै ॥ ६ ॥ ऐसी बिधि दोऊ नित्त बिहारै । ताप चित्त
के सकल निवारै । कामकेल बहु बिधि उपजावै । वैस ही

उन्तीसवाँ चरित्र-कथन

॥ सोरठा ॥ राजा ने पुनः पुत्र को बंदीशाला में भेज दिया और भोर होते ही पुनः उसे अपने निकट बुला लिया ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ विद्वान मंत्री, जो राजनीति को भलीभाँति जानता था, ने राजा चित्रसिंह को पुनः कथा सुनाई ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ नदी के पास एक राजा रहता था, जिसका नाम मदनकेतु जाना जाता था। वहाँ एक मदनमती नामक स्त्री रहती थी जो राजा के साथ प्रेमरस में रम गई थी ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा नदी पार कर उस स्त्री के पास जाता था और विभिन्न प्रकार से सुखपूर्वक उस स्त्री के साथ रति-क्रीड़ा करता था ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ कभी राजा नदी पार करके जाता था और कभी स्त्री उस ओर तैरकर आती थी। वह बहुत स्नेह करती थी और विभिन्न प्रकार से संभोग संलग्न होती थी ॥ ५ ॥ वह कोकशास्त्र की विधियों का उच्चारण करती थी और लीन होकर रति-क्रिया सम्पूर्ण करती थी। लिपट-लिपटकर वह क्रीड़ा करती थी और फिर वैसे ही (उत्साहपूर्वक) नदी तैरकर घर आ जाती थी ॥६॥ इस प्रकार दोनों सदैव विहार करते थे और मन का समस्त क्लेश दूर करते थे। विभिन्न प्रकार से

पैरि नदी घर आवै ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ तरी तरुनि आवत हुती ह्रिदै हरख उपजाइ। तब लो लहिर समुंद्र सी निकट पहूँची आइ ॥ ८ ॥ अपनो सो बल करि थकी पार न भई बनाइ। लहरि नदी की आइ तह लै गई कहूँ बहाइ ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ (मू०ग्रं०८५१) बहत बहत कोसन बहु गई। लागत एक किनारे भई। एक अहीर द्रिशटि तिह आयो। हाँक मार त्रिय ताहि बुलायो ॥१०॥ ॥ दोहरा ॥ हे अहीर हौ जात हौ बहत नदी के माहि। जो ह्याँ ते काढै मुझे वहै हमारो नाहि ॥ ११ ॥ ॥ चौपई ॥ धावत सुनि अहीर बच आयो। ऐंचि त्रिया कह तीर लगायो। बहुरि भोग तिह सौ तिन कर्‍यो। घर लै जाइ घरनि तिह कर्‍यो ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ प्रान बचायो आपनौ रति अहीर सौ ठानि। बहुर राव की रुचि बढी अधिक तरुनि की आन ॥ १३ ॥ ॥ चौपई ॥ सुनु अहीर मैं त्रिया तिहारी। तुम प्यारे मुहि मैं तुहि प्यारी। राइ नगर मै नहिन निहारो। तिह देखन कह हिया हमारो ॥ १४ ॥ ॥ दोहरा ॥ चलहु अबै उठिकै दोऊ तवन नगर मैं जाइ। भाँति भाँति के सुख करैं ह्रिदै हरख

कामकेलि कर नदी पार कर वह घर आ जाती थी ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ एक बार तैरती हुई तरुणी प्रसन्न मन से आ रही थी तो समुद्र की लहर के समान एक लहर उसके पास आ पहुँची ॥ ८ ॥ वह बलपूर्वक भी उस लहर को पार न कर सकी और नदी की वह लहर उसे बहाकर ले गई ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह बहुत कोसों तक बहने के बाद वह एक किनारे पर जा लगी। वहाँ एक अहीर नज़र आया और उसे उस स्त्री ने आवाज़ देकर बुलाया ॥१०॥ ॥ दोहा ॥ हे अहीर ! मैं नदी में बह रही हूँ। मुझे जो भी निकाल ले वही मेरा पति है ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ यह सुनकर अहीर भागकर आया और उस स्त्री को खींचकर बाहर ले आया। उसने उससे मुक्त रूप से रमण किया और घर ले जाकर उसे अपनी स्त्री बना लिया ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ अहीर से रतिक्रीड़ा ! करके उस स्त्री ने अपने प्राण तो बचा लिये परन्तु उसके मन में पुनः राजा से मिलन की इच्छा बढ़ी ॥ १३ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह कहने लगी कि हे अहीर ! सुनो : मैं तुम्हारी स्त्री हूँ और हम दोनों ही एक-दूसरे को प्यारे हैं। मैंने नगर का राजा नहीं देखा है और मेरी इच्छा उसके दर्शन करने की हो रही है ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ चलो अभी नगर की ओर चलते हैं और

उपजाइ ॥ १५ ॥ तवन नगर आवत भई लै गूजर को साथ । तिवही तरि भेटत भई उही त्रिपति के साथ ॥ १६ ॥ ॥ चौपई ॥ तैसिय भाँति नदी तरि गई । वैसिय भेट त्रिपति सौ भई । भूप कह्यो बहुते दिन आई । आजु हमारी सेज सुहाई ॥ १७ ॥ ॥ दोहरा ॥ सुनु राजा तुम बिनु अधिक त्रिय पायो तन दुक्खय । तुम हम पै कोऊ ना पठ्यो पूछन कुशल मनुक्खय ॥ १८ ॥ ॥ चौपई ॥ जब त्रिय अधिक दुखय तन पायो । प्रानाकुल हम कूक सुनायो । जो या दुख ते बैद उबारै । सो हमरो ह्वै नाथ बिहारै ॥ १९ ॥ ॥ दोहरा ॥ इक अहीर उपचार करि मोकौ लियो उबारि । अब मो सौ ऐसे कहत होहि हमारी नारि ॥ २० ॥ ॥ चौपई ॥ दुखित होइ तुहि मै यौ कही । मो कर ते बतियाँ अब रही । कहु राजा मोकह का करियै । तोसौ छाडि रंक कह बरियै ॥ २१ ॥ ॥ दोहरा ॥ सुनत बचन ता को त्रिपत लयो अहीर बुलाइ । तुरतु बाँधि ताँ को दिया सरिता बिखै बहाइ ॥ २२ ॥ प्रान उबार्यो सुख दिआ जम ते लिआ

प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न प्रकार के सुखों में लीन हों ॥ १५ ॥ पुनः उसी नगर में वह उस अहीर को साथ लेकर आ गई और उसी प्रकार नदी तैरकर राजा से मिलने गई ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह वैसे ही नदी पार कर राजा से मिली । राजा ने कहा कि तुम बहुत दिनों बाद मिली हो और आज मेरी शय्या पर विराजमान हुई हो ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ हे राजा ! इस स्त्री ने अर्थात् मैंने भी बहुत दुःख पाया है और तुमने तो मेरी कुशल-क्षेम पूछने के लिए भी कोई नहीं भेजा ॥ १८ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब मैं अत्यधिक पीड़ित हो गई तो व्याकुल होकर मैं चिल्लाई जो मेरा इस कष्ट से उद्धार करेगा वही मेरा स्वामी बनकर मेरे साथ विहार करेगा ॥ १९ ॥ ॥ दोहा ॥ एक अहीर ने उपचार करके मुझे बचा लिया और अब मुझसे कह रहा है कि मैं उसकी पत्नी बनूँ ॥ २० ॥ ॥ चौपाई ॥ मैं दुःखी होकर तुमसे कह रही हूँ कि अब बात मेरे हाथ में नहीं रह गई है । हे राजन् ! अब बताओ अब मैं क्या करूँ और क्या तुम्हें छोड़कर उस कंगाल का वरण कर लूँ ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा ने उसकी बात सुनकर अहीर को बुलवाया और उसे बाँधकर तुरन्त नदी में फिकवा दिया ॥ २२ ॥ उस अहीर ने उसके प्राण बचाए और

बचाइ । त्रिप हित ते मार्यो तिसै ऐसो चरित्र दिखाइ ।। २३ ।। १ ।। (मू०ग्रं०८५२)

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे उनतीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। २९ ।। ५७५ ।। अफजूं ।।

अथ तीसवो चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। चित्र सिंघ मंत्री सौ कही । हम ते सकल कुक्रिया रही । तुम जो हम सौ बचन उचारे । जानुक सुधा स्रवन भरि डारे ।। १ ।। ।। दोहरा ।। मन क्रम बच करि मंत्र बरि इहै बचन मुर तोहि । जो कछु चरित इसत्रिन करे सु कछु कहु सभ मोहि ।।२।। एक राव कानो हुतो ताहि कुक्रिया नार । रमी जार सौ राइ की आँख अँबीरह डारि ।। ३ ।। ।। चौपई ।। जबही मास फागु को आयो । नर नारिन आनंद बढायो । घर घर होत कुलाहल भारी । गावन गीत बजावत तारी ।। ४ ।। चाचरमती नाम त्रिय ता कौ । अति सुंदर बिध बपु किय वा को । मानी सैन त्रिपति को नामा ।

उसे यमराज से छुड़ाया परन्तु उस स्त्री ने प्रपंच में डालकर राजा के लिए उसे मार डाला ।। २३ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में उन्तीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। २९ ।। ५७५ ।। अफजू ।।

तीसवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। राजा चित्रसिंह ने मंत्री से कहा कि मेरे तो सभी कुकर्म छूट गए हैं । तुमने तो मुझे ऐसे वचन कहे हैं मानों मेरे कानों में अमृत उँड़ेल दिया हो ।। १ ।। ।। दोहा ।। मन-वचन-कर्म से श्रेष्ठ मंत्री ! मेरी यही प्रार्थना है कि स्त्रियों के जितने भी चरित्र हैं वे सब मुझसे कहो ।। २ ।। एक काना राजा और उसकी एक कुकृत्य करनेवाली स्त्री थी । राजा की आँखों में अबीर डालकर उसने अपने प्रेमी के साथ विहार किया था ।। ३ ।। ।। चौपाई ।। जब फाल्गुन का महीना आया तो नर-नारियों के हृदय में आनन्द बढ़ा । घर-घर कोलाहल होने लगा और लोग तालियाँ बजाकर गीत गाने लगे ।। ४ ।। उसका नाम चाचरमति (चंचलमति) था और विधाता ने उसका शरीर अत्यन्त सुन्दर बनाया था । राजा का नाम मानीसेन था और उसकी पत्नी का नाम चंचलमति

चाचरमती जवन की बामा ॥५॥ रूपवंत नट तवन निहार्‌यो। मदन तबै तन बिसिख प्रहार्‌यो। मन क्रम बच करिकै बसि भई। जानुकदास मोल की लई ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ घर घर चाचरि खेल ही घर घर गैयहि गीत। घर घर होत म्रिदंग धुन घर घर नचत संगीत ॥ ७ ॥ तिह ठाँ एक प्रबीन नट सभ नटुअन को राइ। मदन छपाए काढिऐ मदन कि नवरंग राइ ॥ ८ ॥ ॥ चौपई ॥ चाचर परी नगर मै भारी। गावत गीत सभै नर नारी। नवलासिन हाथन लहकावै। चतुरन के चतुरा तन लावै ॥९॥ ॥ दोहरा ॥ घर घर चाचर गावही घर घर बजत म्रिदंग। हर दर राग अलापियत घर घर बजत मुचंग ॥ १० ॥ घर घर अबला गावही मिलि मिलि गीत बचित्र। मुरली मुरज म्रिदंग धुन जह तह बजत बचित्र ॥ ११ ॥ ॥ चौपई ॥ नर नारिन मिल खेल रचायो। फूल पान कैफान मँगायो। दुहूँ ओर नवलासिन मारैं। मधुर मधुर धुनि गीत उचारैं ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ छैल छबीली खेल ही नर नारिन की भीर। जित जित द्रिशट पसारियै तितहि किसरिया चीर ॥ १३ ॥ घर घर चाचर

था ॥ ५ ॥ उसने एक नट रूपवान देखा और कामदेव के बाण से बिंध गयी। वह मन-वचन और कर्म से उसके वशीभूत हो गयी और उसकी मोल ली हुई दासी लगने लगी ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ घर-घर में खेल-तमाशे और गीत गाए जा रहे थे। घर में मृदंग की ध्वनि पर नृत्य-संगीत हो रहा था ॥ ७ ॥ वहाँ एक नटराज था जो अत्यन्त प्रवीण था और बिलकुल कामदेव के सदृश था ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ नगर में होली की धूम मची थी और सभी नर-नारी गीत गा रहे थे। नई नवेलियाँ हाथ नचा-नचाकर चतुर लोगों को रंग लगा रही थीं ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ घर-घर होली गायी जा रही थी और घर-घर में मृदंग बज रहे थे। हर दरवाज़े पर गीत-संगीत हो रहा था और वाद्य बज रहे थे ॥ १० ॥ घर-घर में स्त्रियाँ मिलकर विचित्र गीत गा रही थीं और मुरली, मृदंग, मुरज आदि वाद्य बज रहे थे ॥११॥ ॥ चौपाई ॥ स्त्री-पुरुषों ने मिलकर खेल बनाया और फूल-पान तथा मद्य मँगाया। दोनों ओर से रंग मारा जाने लगा और मधुर-मधुर गीतों का उच्चारण होने लगा ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ नर-नारियों की छैल-छबीली भीड़ में जिस ओर दृष्टि दौड़ाओ केसरिया वस्त्र दिखाई दे रहे थे ॥ १३ ॥ घर-घर होली गायी

खेलियहि हसि हसि गैयहि गीत। घर घर होत म्रिदंग धुनि घर घर नचत संगीत ॥ १४ ॥ निरखि रूप ता को सकल उरझि रह्यो सुकुमार। रानी हूँ चटपट अटक नट सो कियो पयार ॥ १५ ॥ (मू०ग्रं०८५३) खेलत फागु बचित्र गति नर नारी सुख पाइ। अलताकी आँधी चली मनुख न निरख्यो जाइ ॥१६॥ क्रम क्रम बजै बजंत्र बहु रुनझुन मुरलि मुचंग। झिमि झिमि बरस्यो नेह रस द्रिम द्रिम दया म्रिदंग ॥१७॥ ॥चौपई॥ अलता साथ भयो अँधियारो। द्रिशटि परत नहि हाथ पसारो। रानी पति अंबीर द्रिग धारा। जानुक न्रिपहि अंध कै डारा ॥ १८ ॥ ॥ दोहरा ॥ एक आँखि काना हुतो दुतियो परा अंबीर। गिर्यो अंध जिमि ह्वै न्रिपति द्रिगजुत भयो असीर ॥ १९ ॥ रानी नवरंग राइ कौ तब ही लिया बुलाइ। आलिंगन चुंबन करै दिड़ रति करी मचाइ ॥ २० ॥ जब लगि न्रिप द्रिग पोछि करि देखन लग्यो बनाइ। तब लगि रानी मानि रति नटुआ दिया उठाइ ॥ २१ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तीसवों
चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ३० ॥ ५९६ ॥ अफजूं ॥

जा रही थी और हँस-हँसकर गीत गाए जा रहे थे और घर-घर में मृदंगादि की ध्वनि सुनाई पड़ रही थी ॥ १४ ॥ वह नवयुवक रूप को देखकर उसमें उलझ गया और रानी भी तत्काल उसके प्रेम-जाल में फँस गई ॥ १५ ॥ सभी नर-नारी विचित्र रूप से फाग खेल रहे थे और गुलाल की ऐसी आँधी चली कि मनुष्य भी नहीं दिखाई पड़ रहा था ॥ १६ ॥ धीरे-धीरे क्रमवार मुरली, मुचंग आदि वाद्य बज रहे थे। स्नेह-रस झम-झम बरसने लगा और मृदंग पर थाप पड़ने लगी ॥ १७ ॥ ॥ चौपाई ॥ गुलाल के कारण अँधियारा हो गया और हाथ पसारने पर दिखाई नहीं पड़ता था। रानी ने अपने पति की आँखों में अबीर डालकर मानों उसे अंधा कर दिया ॥१८॥ ॥ दोहा ॥ राजा एक आँख से काना था और दूसरी में अबीर भर गया। राजा मानों अंधा होकर गिर पड़ा ॥ १९ ॥ रानी ने उसी समय नवरंग राम को बुलाया और आलिंगन, चुंबनादि के साथ खूब रतिक्रीड़ा की ॥ २० ॥ जब तक राजा आँख पोंछकर उठा, तब तक रानी ने रतिविहार करके उस नट को उठाकर भगा दिया ॥ २१ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में तीसवें चरित्र की
शुभ सत् समाप्ति ॥ ३० ॥ ५९६ ॥ अफजू ॥

अथ इकत्तीसवो चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। बहुरि राव ऐसे कहा बिहस सु मंत्री संग । चरित चतुर चतुरान के मोसौ कहौ प्रसंग ।। १ ।। ।। चौपई ।। एक बनिक की बाल बखानिय । अधिक दरबु जिह धाम प्रमानिय । तिनिक पुरख सौ हेतु लखायो । भोग काज गहि ग्रेह मँगायो ।। २ ।। ।। दोहरा ।। मान मंजरी शाहु की बनिता सुंदर देह । बिद्यानिधि इक बाल सौ अधिक बढायो नेह ।।३।। ।। चौपई ।। तब तासौ त्रिय बचन उचारे । आजु भजहु मुहि आनि पियारे । तिन वा त्रिय सौ भोग न कर्‌यो । राम नाम लै उर मै धर्‌यो ।।४।। ।। दोहरा ।। राम नाम लै उठि चला जात निहारा नारि । चोर चोर कहिकै उठी अतिचित कोप बिचारि ।। ५ ।। सुनत चोर को बच स्रवन लोक पहूँचै आइ । बंदसाल भीतर तिसै तद ही दिया पठाइ ।। ६ ।। तद लौ त्रिय कुटवार के भई पुकारू जाइ । धन बल ते तिह साध कह जमपुरि दयो पठाइ ।। ७ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इकत्तीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ३१ ।। ६०३ ।। अफजूं ।।

इकतीसवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। पुनः राजा ने हँसकर मंत्री से कहा कि चतुर स्त्रियों के प्रपंचपूर्ण चरित्र मुझे सुनाओ ।। १ ।। ।। चौपाई ।। एक वणिक् की एक स्त्री थी। उसके घर में अपार द्रव्य था। उसका एक पुरुष से स्नेह हो गया। उसने उसे संभोग के लिए घर पर बुलाया ।। २ ।। ।। दोहा ।। उस साहूकार की सुन्दर स्त्री का नाम मानमंजरी था और उसका विद्यानिधि नामक व्यक्ति से अत्यधिक स्नेह था ।। ३ ।। ।। चौपाई ।। तब स्त्री ने उससे कहा कि हे प्रिय ! आज मेरे साथ रमण करो। परन्तु उस व्यक्ति ने उससे संभोग नहीं किया और राम-नाम को हृदय में धारण कर लिया ।। ४ ।। ।। दोहा ।। वह उठकर चला और उसे जाते हुए स्त्री ने देखा। वह क्रोधित होकर चोर-चोर पुकारने लगी ।। ५ ।। चोर की पुकार सुनकर लोग आ पहुँचे और उसे पकड़कर बंदीगृह में डाल दिया ।। ६ ।। तब तक स्त्री ने कोतवाल के पास पहुँचकर पुकार की और धन-बल से उसे उसकी सहायता से यमलोक पहुँचा दिया ।। ७ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में इकतीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ३१ ।। ६०३ ।।

अथ बत्तीसवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। सुनहु त्रिपति इक कथा सुनाऊँ । ता ते तुम कह (मू०ग्रं०८५४) अधिक रिझाऊँ । देस पंजाब एक बरनारी । चंद्र लई जाते उजियारी ।। १ ।। रसमंजरी नाम तिह त्रिय को । निरखि प्रभा लागत सुख जिय को । ता को नाथ बिदेस सिधारो । तिह जिय शोक तवन को भारो ।। २ ।। ।। दोहरा ।। अमित दरब ता के सदन चोरन सुनी सुधारि । रैनि परी ता के परे अमित मसालैं जारि ।।३।। ।। चौपई ।। चोर आवत अति नारि निहारे । ऐस भाँति सो बचन उचारे । सुनु तसकर मैं नारि तिहारी । अपनी जान करहु रखवारी ।।४।। ।। दोहरा ।। सभ ग्रहि को धनु तुम हरहु हमहूँ संग लै जाहु । भाँति भाँति के रैनि दिन मो सौ केल कमाहु ।। ५ ।। प्रथम हमारे धाम को भोजन करहु बनाइ । पाछे मुहि लै जाइयहु ह्रिदै हरख उपजाइ ।। ६ ।। ।। चौपई ।। चोर कह्यो त्रिय भली उचारी । अब नारी तैं भई हमारी । प्रथम भच्छ कै हमहि खवावहु । ताँ पाछे मुरि नारि कहावहु ।। ७ ।। ।। दोहरा ।। चौछत्ता पर तब तरुनि चोरन दियो चर्हाइ ।

बत्तीसवाँ चरित्र कथन

।। चौपाई ।। हे राजन् ! सुनो, तुमको एक कथा सुनाता हूँ और तुम्हें अत्यधिक प्रसन्न करता हूँ। पंजाब देश में एक सुन्दर स्त्री थी। चंद्रमा ने भी चाँदनी उससे ली थी ।। १ ।। उसका नाम रसमंजरी था और उसके सौंदर्य को देखकर अत्यन्त सुख प्राप्त होता था। उसका पति विदेश गया था जिसके दुःख में वह दुःखी थी ।। २ ।। ।। दोहा ।। डाकुओं ने उसके घर पर अपरिमित द्रव्य होने की बात सुनी और वे रात में मशालें जलाकर आ पहुँचे ।। ३ ।। ।। चौपाई ।। स्त्री ने चोरों को आते देखा तो कहने लगी : हे दस्युराज ! मैं तुम्हारी स्त्री हूँ, मुझे अपनी समझकर मेरी रक्षा करो ।। ४ ।। ।। दोहा ।। तुम सारे घर के समेत मुझे भी ले चलो और विभिन्न प्रकार से मेरे साथ केलिक्रीड़ा करो ।। ५ ।। पहले मेरे घर पर भोजन करो और तब प्रसन्नतापूर्वक मुझे ले चलो ।। ६ ।। ।। चौपाई ।। चोरों ने कहा कि स्त्री ने ठीक ही कहा है। अब तुम हमारी हो गई हो। पहले हमें भर पेट भोजन खिलाओ और फिर हमारी स्त्री बनो ।। ७ ।। ।। दोहा ।। तब तरुणी ने चोरों

आपि कराही चारि कै लीने बरे पकाइ ।।८।। ।। चौपई ।। चोर महल पर दए चढ़ाई । आपु मारि तालो उठि आई । बैठि तेल को भोज पकायो । अधिक बिखै भे ताँहि मिलायो ।। ९ ।। ।। दोहरा ।। डारि माहुरा भोज मै चोरन दयो खवाइ । निकसि आपि आवत भई तालो द्रिड़ करि लाइ ।। १० ।। ।। चौपई ।। हसि हसि बैन चोर सों कहै । ता को हाथ हाथ सौं गहै । बातन सों ता को बिरमावै । बैठी आपि तेल अवटावै ।। ११ ।। ।। दोहरा ।। तेल जबै तातो भयो ता की द्रिशटि बचाइ । डारि सीस ता के दयो मार्यो चोर जराइ ।। १२ ।। चोर राज जरिकै मर्यो चोर मर्यो बिखु खाइ । प्रात भए कुटवार के सभ ही दए बँधाइ ।। १३ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे बत्तीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ३२ ।। ६१६ ।। अफजूँ ।।

अथ तेतीसवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। उत्तर देस राव इक कहियै । अधिक रूप

को चौबारे पर चढ़ा दिया और स्वयं कड़ाही चढ़ाकर बड़े बना लिये ।। ८ ।। ।। चौपाई ।। चोरों को महल पर चढ़ा दिया और ताला लगा आई । बैठकर तेल में भोजन तैयार किया और उसमें भली प्रकार विष मिला दिया ।। ९ ।। ।। दोहा ।। भोजन में विष मिलाकर चोरों को खिला दिया और (चोरों के सरदार को साथ लेकर) ताला लगाकर बाहर नीचे आ गई ।। १० ।। ।। चौपाई ।। तब वह उस चोर से हँस-हँसकर बातें करने लगी और उसने उसका हाथ अपने हाथ में पकड़ लिया । बातों से उसको भ्रम में डाले रही और स्वयं तेल औटाती रही ।। ११ ।। ।। दोहा ।। जब तेल खूब गर्म हो गया तो उसकी दृष्टि बचाकर उसके सिर पर डालकर चोर को जलाकर मार डाला ।। १२ ।। दस्युराज जलकर मर गया और बाक़ी चोर विष खाकर मर गए तथा प्रातःकाल उसने कोतवाल को सब बतलाकर उनको उसके सुपुर्द कर दिया ।। १३ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में बत्तीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ३२ ।। ६१६ ।। अफज़ू ।।

तेंतीसवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। उत्तर देश में एक अत्यन्त सुन्दर माना जानेवाला राजा

जाको जग लहियै । छत्रकेत राजा को नामा । निरखि थकित
रहई जिह बामा ।। १ ।। छत्रमंजरी नाम तवन को । अधिक
रूप जग सुनत (मू०ग्रं०८५५) जवन को । भवन चतुरदस माँझि
उजियारी । राजा छत्रकेत की नारी ।। २ ।। छत्रमंजरी ता
की प्यारी । अंग उतंग त्रिपति ते भारी । बहुत जतन
आगम को करै । कैसे राज हमारो सरै ।। ३ ।। कन्या ह्वै
ता के मरि जाहीं । पूत आनि प्रगटै कोऊ नाहीं । त्रिय
कौ शोक अधिक जिय भारो । चरित एक तिय चित्त
बिचारो ।। ४ ।। सुत बिनु त्रिय चित चित्र बिचारी । क्यो
न दैव गति करी हमारी । दिज मुरि हाथ दान नहि लेहीं ।
ग्रहि के लोग उराँभे देहीं ।। ५ ।। ताँते दुराचार कछु करियै ।
पुत्र राव को बदन उचरियै । एक पुत्र लीजै उपजाई ।
त्रिप को कवन निरखि है आई ।। ६ ।। सवति एक तिह
त्रिपति बुलाई । इह ब्यायहु इह जगत उडाई । यौ सुनि
नारि अधिक अकुलाई । सेवकान सो दरबु लुटाई ।। ७ ।।
।। दोहरा ।। सवति त्रास रानी अधिक लोगन दरबु लुटाइ ।

था । उसका नाम छत्रकेतु था और उसकी स्त्री उसे देखती ही रह जाती थी ।। १ ।। उसका नाम छत्रमंजरी था और वह भी संसार में अत्यधिक सुन्दर मानी जाती थी । राजा छत्रकेतु की स्त्री दसों लोकों में प्रकाशस्वरूप मानी जाती थी ।। २ ।। छत्रमंजरी उसकी प्यारी स्त्री थी और उसके उन्नत अंग-प्रत्यंग राजा से भी सुन्दर एवं मांसल थे । वह भविष्य का विचार करती थी और सदैव सोचा करती थी कि कैसे हमारा राजकाज चलेगा ।।३।। उसके कन्या पैदा होकर मर जाती थी और पुत्र पैदा नहीं होता था । उसके हृदय में बहुत शोक था और उसने मन में एक प्रपंच करने का विचार बनाया ।। ४ ।। वह स्त्री सोचने लगी कि पुत्र के बिना परमात्मा हमारी गति क्योंकर करेगा । ब्राह्मण भी मेरे हाथ से दान नहीं लेंगे और घर के लोग मुझे उपालम्भ देंगे ।। ५ ।। इसलिए कुछ दुराचार करके भी एक पुत्र पैदा कर लेना चाहिए । एक पुत्र पैदा कर लिया जाय, कहाँ राजा देखने आ रहा है (कि मैं क्या कर रही हूँ) ।। ६ ।। राजा ने भी उसकी एक सौतन रख ली और अपने विवाह की बात संसार में उड़ा दी । यह सुनकर रानी व्याकुल हो गई और अपने सेवकों में द्रव्य लुटाने लगी ।। ७ ।। ।। दोहा ।। सौतन के भय से रानी सेवकों में अत्यधिक द्रव्य लुटाने लगी । लोग उसकी सौतन को ही

ते वाकी सवतिह चहै सकै न मूरख पाइ ।।८।। ।। चौपई ।। लोग सवति ता की कह चहै । वाकी उसतति न्रिप सो कहै । कहै जु इह प्रभु बरै सु मारो । अधिक टूकरो चलो हमारो ।। ९ ।। सवति त्रास अति त्रियहि दिखावै । ता को मूँड मूँड करि खावै । ताकह दरबु न देखन देहीं । लूटि कूटि बाहर ते लेहीं ।। १० ।। पुनि तिह मिलिहि सवति सौ जाई । भाँति भाँति तिन करहि बडाई । तुम कह बरिहैं न्रिपति हमारो । ह्वैहै अधिक प्रताप तुमारो ।। ११ ।। यौ कहिकै ता कौ धन लूटहि । बहुरि आनि वा त्रिय कह कूटहि । इह बिध त्रास तिनै दिखरावै । दुहूँअन मूँड मूँडिकै खावै ।। १२ ।। ।। दोहरा ।। अनिक भाँति तिह न्रिपति को दुहूँअन त्रास दिखाइ । दरबु जड़नि के धाम कौ इह छल छलहि बनाइ ।। १३ ।। ।। चौपई ।। सवति त्रास जड़ दरबु लुटावै । दुराचार सुत हेत कमावै । अधिक प्रीति तिनके संग ठानै । मूरख नारि भेद नहि जानै ।। १४ ।। ।। दोहरा ।। ते रमि औरन सों कहै इह कुतिया किह काज । एक दरबु हम चाहियै

चाहते थे पर इस मूर्ख को इस बात की समझ नहीं आती थी ।। ८ ।। ।। चौपाई ।। लोग उसकी सौतन को ही चाहते थे और उसकी प्रशंसा राजा के पास करते थे । यह रानी चाहती थी कि राजा उसे मार दे ताकि हमारा खर्चा-पानी और अधिक आसानी से चलता रहे ।। ९ ।। यह सौतिया-भय उसे दिखाती रहती थी और उसे लूट-पाटकर खाती जाती थी । रुपया-पैसा उसे देखने ही नहीं देती थी और बाहर से ही झपट लेती थी ।। १० ।। यह वैसे उस सौतन से भी मिलती थी और विभिन्न प्रकार से उसकी प्रशंसा करती थी । वह कहती थी कि तुम्हें हमारा राजा भलीभाँति अपना लेगा और तुम्हारा यश प्रताप फैलेगा ।। ११ ।। यह कहकर उसका धन लूटती थी और पुनः उसे तंग करती थी । इस प्रकार वह उसे भयभीत करती थी और दोनों को लूट-लूटकर खा रही थी ।। १२ ।। ।। दोहा ।। इस प्रकार दोनों ने राजा को तंग कर दिया और उस प्रपंचपूर्ण स्त्री ने खूब धन-दौलत का अपव्यय किया ।।१३।। ।। चौपाई ।। सौतन के डर से वह द्रव्य लुटाने लगी और पुत्र के लिए दुराचार करने लगी । वह मूर्ख अपने प्रेमियों के साथ अत्यधिक प्रेम करती थी और प्रेम के वास्तविक रहस्य को नहीं समझती थी ।। १४ ।। ।। दोहा ।। अन्यों से रमण करते हुए वह उस सौतन को कुतिया संज्ञा से संबोधित करते हुए कहती थी कि मुझे केवल एक पुत्र रूपी धन चाहिए । यदि भगवान कृपा करें तो

जौ दै स्त्री जदुराज ।। १५ ।। ।। चौपई ।। यह सभ भेद त्रिपति जिय जानै । मूरख नारि न बात पछानै । राजा अवर त्रियान (मू०ग्रं०८५६) बुलावै । भाँति भाँति के भोग कमावै ।। १६ ।। ।। दोहरा ।। ध्रिग ता त्रिय कह भाखियै जाकह पिय न बुलाइ । तिह देखत त्रिय अनत की सेज बिहारन जाइ ।। १७ ।। ।। चौपई ।। मूरख नारि भेद नहि पावै । सवति त्रास ते दरबु लुटावै । ते वाकी कछु प्रीति न मानै । त्रिपति भए कछु और बखानै ।। १८ ।। ।। अड़िल्ल ।। सुनो राइ इक त्रिया सुभ ताँहि बुलाइयै । ता सौ मैन बिहार बिसेख कमाइयै । ऐसी त्रिय कर परै जान नहि दीजियै । हो निजु नारी सो नेहु न कबहूँ कीजियै ।।१९।। ।। चौपई ।। भलो वहै जो भोग कमावै । भाँति भाँति सो दरबु लुटावै । निजु त्रिय साथ न नेह लगैयै । जो जित जग आपन न कहैयै ।। २० ।। ।। दोहरा ।। तुम राजा सम भवर की फूली त्रियहि निहारि । बिनु रस लीने क्यों रहो त्रिय की शंक बिचारि ।। २१ ।। ।। चौपई ।। जिह तुम चाहहु तिस

मुझे दे दें ।। १५ ।। ।। चौपाई ।। इस सारे रहस्य को राजा मन में जानता था परन्तु वह मूर्ख स्त्री इस बात को नहीं समझती थी । राजा भी अन्य स्त्रियों को बुलाता था और विभिन्न प्रकार से उनसे रमण करता था ।। १६ ।। ।। दोहा ।। उस स्त्री को धिक्कार है जिसे पति शय्या पर न बुलाए और उस पुरुष को भी धिक्कार है जिसकी स्त्री अन्य पुरुष की शय्या पर विहार करने जाती हो ।। १७ ।। ।। चौपाई ।। मूर्ख स्त्री इस बात को समझ नहीं रही थी और सौतनों के भय से वह द्रव्य लुटाए चली जा रही थी । वे उसको कुछ भी नहीं समझती थी और राजा के सामने जाकर अन्य प्रकार से बातें करती थी ।। १८ ।। ।।अड़िल्ल ।। हे राजन् ! सुनो, एक स्त्री बहुत अच्छी है उससे रमण कर सुख प्राप्त करो । ऐसी स्त्री हाथ लगे तो जाने नहीं देनी चाहिए और तब तो अपनी स्त्री से भी प्रेम नहीं करना चाहिए ।। १९ ।। ।। चौपाई ।। भला वही है जो भोगता है और द्रव्य लुटाता है । जव तक जगत् की अन्य स्त्रियों को न जीत लो, अपनी स्त्री से भोग करना व्यर्थ है ।।२०।। ।। दोहा ।। हे राजन् ! तुम भँवरे के समान हो और स्त्रियाँ फूलों के समान फूली हुई है । तुम अपनी स्त्री की शंका का त्यागकर सबका रसपान करो ।। २१ ।। ।। चौपाई ।। तुम जिसे चाहो उसे ले आएँ और तुमसे मिला दें । उससे

लै आवहि। अबही तुहि सो आनि मिलावहि। ता सों भोग मानि रुचि कीजै। मधुर बचन स्त्रवनन सुनि लीजै ॥ २२ ॥ यों राजा सों बैन सुनावहि। बहुरि जाइ रानियहि भुलावहि। जौ हम तैं निकसन प्रभु पावैं। अनिक त्रियन सो भोग कमावैं ॥ २३ ॥ ॥ दोहरा ॥ ऐस भाँति नित भ्रितन के निस दिन सोच बिहाइ। त्रिपति समझि कछु दै नही रानी धनहि लुटाइ ॥ २४ ॥ ॥ चौपई ॥ त्रिप इक दिन रानियहि बुलायो। भच्छ भोज अरु मदहि मँगायो। अधिक मदहि राजा लै पियो। थोरिक सो रानी तिन लियो ॥ २५ ॥ त्रिप कह भयो मद्य मद भारो। सोइ रह्यो नहि सुधहि सँभारो। पति सोयो लहि त्रिय मन माही। भेद अभेद पछान्यो नाही ॥२६॥ ॥ दोहरा ॥ त्रिय जान्यो सोयो त्रिपति गई जारि पहि धाइ। जागत को सोवत समझि भेद न लहा कुकाइ ॥ २७ ॥ ॥ चौपई ॥ रानी गई भूप तब जाग्यो। ह्रिदै कुअरि को हित अनुराग्यो। बहुरो तिन को पाछो गह्यो। केल कमात सुन्य ग्रहि लह्यो ॥ २८ ॥ ॥ दोहरा ॥ निरखि राइ त्रिय को रमत सर तनि कान प्रमान।

रुचिपूर्वक भोग करो और हमारे अमृत वचनों को सुनो ॥ २२ ॥ इस तरह के राजा से बात करती थी और फिर रानी को भुलावे में डालती थी। उससे कहती थी कि जब राजा हमारे चंगुल से छूटेगा तभी तो वह किसी अन्य स्त्री से भोग कर सकेगा ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार नौकर रात-दिन इसी चिन्ता में रहने लगे कि राजा तो आजकल कुछ देता नहीं है और रानी धन लुटाती चली जा रही है ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजा ने एक दिन रानी को बुलाया और खाने-पीने के लिए भोजन और शराब मँगाई। राजा ने खूब शराब पी और थोड़ी बहुत रानी ने भी पी ॥ २५ ॥ राजा अत्यधिक मदमस्त हो गया और बेसुध होकर सो गया। पति को सोया जानकर स्त्री ने भेद-अभेद की पहचान गँवा दी ॥ २६ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा को सोता समझकर वह दौ कर अपने प्रेमी के पास पहुँच गई। जागे हुए को भी सोता हुआ उसने मान लिया और भेद नहीं समझ सकी ॥ २७ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब रानी गई तो राजा जागा और उसके मन में भी रानी के प्रति मोह जागा। वह उसके पीछे गया और उसने एक खाली अँधेरे कक्ष में उन्हें रमण करते देखा ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ स्त्री को रमण करते देखकर राजा ने कान तक बाण खींचा और

अब इन दुहुँअन को हनो यो कहि कसी कमान ॥ २९ ॥
॥ चौपई ॥ बहुरि न्रिपति के यौ मनि आई । (मू०ग्रं०८५७)
संकि रहा नहि चोट चलाई । यह बिचार मन माहि बिचारा ।
जार सहित त्रिय कौ नहि मारा ॥ ३० ॥ ॥ दोहरा ॥ जौ
इन कहँ अब मारिहौ इमि बाहरि उडि जाइ । आन पुरख सौ
गहि त्रिया जमपुर दई पठाइ ॥ ३१ ॥ ॥ चौपई ॥ तिन
दुहूँअन नहि बान चलायो । तह ते उलटि बहुरि घर आयो ।
ह्रिदैमती सौ भोग कमानो । पौढि रहा सोवत सो
जानो ॥ ३२ ॥ त्रिय आई तासो रति करिकै । अधिक चित्त
के भीतर डरिकै । पौढि रही त्यों ही लपटाई । सोवत जान
न्रिपति हरखाई ॥ ३३ ॥ सोवत सो न्रिप लखि हरखानी ।
मूरख नारि बात नहि जानी । जागत पति सोवत पहिचाना ।
मोर भेद इन कछू न जाना ॥ ३४ ॥ राव बचन तब त्रियहि
सुनायो । कह गई थी तै हमै बतायो । तब रानी इमि बैन
उचारे । सुनु राजा प्रानन ते पिआरे ॥ ३५ ॥ सुनि न्रिपबर
इक टक मुहि परी । सो तुमरो सोवत हम करी । पुत्र एक

यह सोचकर धनुष कसा कि अभी इन दोनों को मार डालूंगा ॥ २९ ॥
॥ चौपाई ॥ पुनः राजा के मन में यह बात आयी और कुछ सोचकर उसने बाण नहीं चलाया । उसने मन में विचार किया और उस प्रेमी युगल को नहीं मारा ॥ ३० ॥ ॥ दोहा ॥ यदि इसे अभी मारता हूँ तो बाहर तुरन्त यह बात फैल जायगी कि स्त्री को दूसरे पुरुष के साथ संभोगरत पकड़कर राजा ने इसे मार डाला है (और इस प्रकार बदनामी होगी) ॥ ३१ ॥
॥ चौपाई ॥ इसलिए उसने दोनों पर बाण नहीं चलाया और पलटकर वापस घर आ गया । हृदयमती के साथ उसने संभोग किया और ओढ़कर सो गया ॥ ३२ ॥ स्त्री रमण करके आयी । वह चित्त में डरी हुई थी । वह वैसे ही लिपटकर सो गई और राजा को सोता देखकर प्रसन्न हुई ॥ ३३ ॥ वह मूर्ख स्त्री बिना कुछ समझे राजा को सोता समझकर प्रसन्न हुई । जागते पति को सोता देखकर यह सोचकर खुश हुई कि इसने मेरा भेद नहीं समझा है ॥ ३४ ॥ राजा ने तब स्त्री से कहा कि मुझे बताओ तुम कहाँ गई थी ? तब रानी ने कहा कि हे प्राणों से प्यारे राजा ! सुनो ! ॥ ३५ ॥ राजन् ! एक भूल मुझसे हो गई है और वह भी सोते-सोते हुई है कि मेरा मुँह दूसरी ओर हो गया है । विधाता ने (स्वप्न में) मुझे एक पुत्र दिया है जो मुझे प्राणों से

बिधि दिया हमारे। ते मोकह प्रानन ते प्यारे ।। ३६ ।।
।। दोहरा ।। पुत्र सेज के चहुँदिसि लेत भमरिया नित्त। वहै
जानु तुमरे फिरी सत्ति समझियह चित्त ।। ३७ ।। पिय त्रिय
को हनि ना सक्यो मन ते खुरक न जाइ। ता दिन ते तिह
नारि सौ रम्यो न रुचि उपजाइ ।। ३८ ।। भाँति भाँति त्रिप
नारि कह भजन हुतो सुखु पाइ। बात आइ चित जाइ जब
घरी न भोगा जाइ ।।३९।। ।। चौपई ।। इह रानी जिय भीतर
जानै। लजत त्रिपति सौ कछु न बखानै। बातन सौ ताकह
बिरमावै। करि करि अधिक कटाछ दिखावै ।। ४० ।।
।। दोहरा ।। सभ कछु टूटे जुरत हैं जानि लेहु मन मित्त।
ए द्वै टूटे ना जुरहि एकु सीस अरु चित्त ।। ४१ ।। चाकर की
अरु नारि की एकै बडी सजाइ। जिय ते कबहुँ न मारियहि
मन ते मिलहि भुलाइ ।। ४२ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तेतीसवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ।। ३३ ।। ६५८ ।। अफजूं ।।

प्यारा है ।। ३६ ।। ।। दोहा ।। वह पुत्र शय्या के चारों ओर चक्कर लगा रहा था, इसी कारण मैं तुम्हारी ओर से घूम गई हूँ। इसे सत्य समझो ।। ३७ ।। राजा स्त्री को मार तो नहीं सका पर उसके मन से खटका नहीं गया और उस दिन से उसने कभी भी रुचिपूर्वक उससे रमण नहीं किया ।। ३८ ।। भिन्न-भिन्न तरीक़ों से कई बार वह उससे भोग-विलास में संलग्न हुआ परन्तु उसके मन में वही बात आती थी और वह उसके साथ रमण नहीं कर पाता था ।। ३९ ।। ।। चौपाई ।। रानी भी मन में समझ रही थी पर लज्जित होकर वह राजा से कुछ भी नहीं कह पाती थी। वह बातों से ही उसको लुभाती थी और अनेक प्रकार के कटाक्ष करती दिखाती थी ।। ४० ।। ।। दोहा ।। हे मित्र ! जान लो कि सब कुछ टूटा हुआ जुड़ जाता है परन्तु एक सिर और दूसरा चित्त टूटा हुआ कभी नहीं जुड़ता ।। ४१ ।। स्त्रो और नारी की एक ही बड़ी सजा है कि इसे जान से कभी मत मारो और दिल से भुला दो ।। ४२ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप संवाद में तेतीसवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ।। ३३ ।। ६५८ ।। अफजू ।।

अथ चौतीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ सुनहु न्रिपति इक कथा उचरिहौ । तुमरे
चित को भरमु निवरिहौ । त्रिय चरित्र इक तुमै सुनैहौ ।
ता ते तुम कह अधिक रिझैहौ ॥ १ ॥ (मू०ग्रं०८५८) शहर सिरंद
बिखै इक जोगी । कामकेल भीतर अति भोगी । एक
ग्रिहसती के ग्रहि आवै । ता की त्रिय सो भोग कमावै ॥ २ ॥
सुरग नाथ जोगी का नामा । स्त्री छबि मानमती वह बामा ।
वासौ निसु दिन भोग कमावै । ता को नाह नाहि कछु
पावै ॥ ३ ॥ ॥ दोहरा ॥ इक दिन जोगी घर हुतो ग्रिहसती
पहुँच्या आइ । ता सौ कहा बनाइ त्रिय एक चरित
समझाइ ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ काढे खड़ग हाथ तुम धैयहु ।
दौरत निकट सु याके जैयहु । ताहि सुनाइ बचन इम भाख्यो ।
मोरो चोर चोरि इन राख्यो ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ भ्रितजु
तुहारो नाथ इह ताकहु जाहु दुराइ । ता कौ बहुरि निकारिहौ
कछू चरित्र बनाइ ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ कहि ऐसे आइसहि
पठायो । आप तवन सों भोग कमायो । आवत पतिहि

चौंतीसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ हे राजा ! सुनो, एक कथा सुनाता हूँ और तुम्हारे मन का भ्रम निवारण करता हूँ। तुमको एक त्रिया-प्रपंच सुनाता हूँ और तुमको अत्यधिक प्रसन्न करता हूँ ॥ १ ॥ सरहंद शहर में एक योगी था जो वास्तव में भोगी था। वह एक गृहस्थो के घर आता था और उसके साथ रमण करता था ॥ २ ॥ योगी का नाम स्वर्गनाथ और स्त्री का नाम छविमानमती था। वह उस स्त्री से रात-दिन केलिक्रीड़ा करता था, परन्तु उसके पति को इसका पता नहीं चल पाता था ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ एक दिन जब योगी घर में था तो गृहस्वामी आ पहुँचा। उसे उस स्त्री ने प्रपंचपूर्वक कहानी बनाकर सुना दी ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ (उस योगी के साथ के सेवक से उस स्त्री ने कहा कि) तुम तलवार हाथ में लेकर दौड़ते हुए जाओ और मेरे पति के पास पहुँचो। उसे सुनाते हुए कहो कि इस स्त्री ने मेरे चोर को छुपा रखा है ॥५॥ ॥ दोहा ॥ हे सेवक ! तुम अपने स्वामी को छिपा जाओ। मैं पुनः कुछ प्रपंच करके इसको निकालूंगी ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ यह आज्ञा देकर सेवक

दुरायो ता को। आप बचन भाख्यो इमि वा को ॥ ७ ॥ सुनो नाथ इक कथा उचरों। तुम ते अधिक चित्त मे डरों। कोप एक जोगी कह जाग्यो। निजु चेला कह मारन लाग्यो ॥ ८ ॥ मैं जुगिया कह दयो हटाई। वा चेला कह लयो छपाई। चलहु नाथ उठि तुमै दिखाऊँ। ताँ ते तुमरो ह्रिदै सिराऊँ ॥ ९ ॥ ॥ दोहरा ॥ भला किया तैं राखिया सुखित किया मुर चीति। शरनागत दीजत नही इहै बडन की रीति ॥१०॥ सुनत मनोहर बात जड़ रीझि गयो मन माहि। अधिक प्रीति तासों करी भेद पछाना नाहि ॥ ११ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे चौतीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ३४ ॥ ६६९ ॥ अफजूं ॥

अथ पैंतीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ नर चरित्र त्रिप निकटि उचारो। कह्यो नाथ सुनु बचन हमारो। दच्छिन देस राइ इक रहै। अति

को भेज दिया और स्वयं उस योगी से रमण करने लगी। पति के आते ही उसे छिपा दिया और पति से कहने लगी ॥ ७ ॥ हे नाथ! सुनो, मैं डरते-डरते तुमसे एक बात कहना चाहती हूँ। एक योगी अत्यन्त क्रोधित होकर अपने चेले को मारने लगा ॥ ८ ॥ मैंने योगी को तो हटा दिया परन्तु चेले को छिपा लिया है। हे नाथ! आओ मैं तुम्हें दिखाती हूँ और तुम्हारा मन प्रसन्न करती हूँ ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ पति बोला कि तुमने अच्छा किया है और मेरे मन को प्रसन्न किया है जो इसे छिपा कर रख लिया है। बड़े आदमियों की यही रीति है कि वे शरणागत को शत्रु के हवाले नहीं करते ॥ १० ॥ यह सुन्दर बात सुनकर वह मूर्ख मन ही मन प्रसन्न हो गया और भेद जाने बिना अपनी पत्नी से और भी अधिक प्रीति करने लगा ॥ ११ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र में मन्त्री-भूप-संवाद में चौतीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ३४ ॥ ६६९ ॥ अफजू ॥

पैंतीसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ इस प्रकार व्यक्तियों के चरित्रों का उच्चारण करते हुए मंत्री ने राजा से कहा कि हे नाथ! मेरी बात सुनो। दक्षिण देश में एक

सुंदर जा को जग कहै ॥ १ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ ता को रूप अनूप लहन त्रिय आवही। निरखि प्रभा बलि जाहि सभै सुख पावही। पिय पिय ताकह बैन सदा मुख भाखही। हो अधिक प्रीति राजा सो निति प्रति राखही ॥२॥ ॥ दोहरा ॥ द्वै इसत्री ता के रहैं अमित रूप की खानि। एक संग राजा रमै अधिक प्रीति जिय जानि ॥ ३ ॥ (मू०ग्रं०८५९) एक दिवस दोऊ त्रिया न्रिपबर लई बुलाइ। आँखि मीचन खेलत भयो अधिक नेह उपजाइ ॥ ४ ॥ आँखि मूँदि त्रिय एक की दूजी लई बुलाइ। अधिक भोग तासों किया इमि कहि दई उठाइ ॥५॥ मै रुचि सो तोसौ रमों रमों न या के संग। कोटि कशट तन पै सहों कैसो ई दहै अनंग ॥ ६ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ स्त्री असमान कला भजि दई उठाइकै। रुकमकेत न्रिप ऐसो चरित दिखाइकै। मूरख रानी दुतिय न कछु जानत भई। हो लुकमीचन की खेल जान जिय मै लई ॥ ७ ॥ ॥ चौपई ॥ रति करिकै त्रिय दई उठाई। पुनि वांकी दोऊ आँखि छुराई। अधिक नेह तिह संग उपजायो। मूरख नारि भेद नहि पायो ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे पैंतीसवों चरित्र

समापतम सतु सुभम सतु ॥ ३५ ॥ ६७७ ॥ अफजूं ॥

राजा रहता था जिसे संसार में अत्यन्त सुन्दर माना जाता था ॥ १ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ उसकी सुन्दरता देखने के लिए स्त्रियाँ आती थीं और उसका सौन्दर्य देखकर प्रसन्न होती थीं। उसके लिए 'प्रिय-प्रिय' का उच्चारण सदैव करती रहती थीं और उस राजा से अत्यधिक प्रेम करती थीं ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ उसके पास दो अत्यन्त रूपवती थी और उनमें से एक के साथ राजा अधिक रुचिपूर्वक रमण करता था ॥ ३ ॥ एक दिन राजा ने दोनों स्त्रियों को बुलाया और स्नेहपूर्वक आँखमिचौली का खेल खेलने लगा ॥ ४ ॥ एक स्त्री की आँख बंद करके दूसरी को बुलाया और कहा कि मैं तुम्हारे साथ ही अधिक केलिक्रीड़ा करता हूँ ॥ ५ ॥ मैं रुचिपूर्वक तुम्हारे साथ ही रमण करता हूँ और उसके साथ नहीं रमण करता चाहे काम मुझे कितना ही क्यों न जलाए ॥ ६ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ इस प्रकार रुक्मकेतु राजा ने प्रपंच दिखा कर असमान कला को उठाकर भगा दिया। दूसरी मूर्ख रानी कुछ नहीं समझ पाती थी और उसे मात्र आँखमिचौनी का खेल ही समझती रही ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ रतिक्रीड़ा के पश्चात उसने स्त्री को उठा दिया और पुनः उसकी

आँखों की पट्टी खोल दी। फिर उसने दूसरी के साथ अत्यधिक स्नेह का प्रदर्शन किया जिसे मूर्ख स्त्रियाँ नहीं समझ सकीं ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में पैंतीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ३५ ॥ ६७७ ॥ अफजू ॥

अथ छतीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ सुनो राइ इक कथा प्रकासों। तुमरे चित के भ्रमहि बिनासों। गैंडे खाँ डोगर लह रहै। फतेमती तिह त्रिय जग कहै ॥१॥ ता के महिख धाम धन भारी। तिनकी करति अधिक रखवारी। चरवारे बहु तिनै चरावहि। साँझ परै घर को लै आवहि ॥ २ ॥ इक चरवारा सौ त्रिय अटकी। भूलि गई सभही सुधि घट की। नितप्रति तासौं भोग कमावै। नदी पैरि बहुरो घर आवै ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ डोगर सोध एक दिन लह्यो। तुरतु त्रिया को पाछो गह्यो। केल करत निरखे तह जाई। बैठ रहा जिय कोप बढाई ॥ ४ ॥ करि करि केलि सोइ ते गए। बे सँभार निजु तन ते भए। सोवत दुहूँअन नाथ निहार्यो। काढि क्रिपान मारही डार्यो ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ काटि मूँड ता को तुरतु तही

छत्तीसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ हे राजन्! सुनो, एक कथा कहता हूँ और तुम्हारे चित्त के भ्रम का नाश करता हूँ। गैंडे ख़ाँ नामक एक डोगरा था जिसकी स्त्री का नाम फतहमती जाना जाता था ॥ १ ॥ उसके पास भैंसों के रूप में अधिक धन था जिसकी वह रखवाली किया करती थी। चरवाहे उन भैंसों को चराते थे और साँझ होने पर भैंसों को घर वापस ले आते थे ॥ २ ॥ वह स्त्री एक चरवाहे के प्रेम में फँस गयी और उसे सब सुधि भूल गई। वह नित्य नदी पार करके उस चरवाहे से भोग-विलास के पश्चात् वापस घर आने लगी ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ डोगरे को एक दिन इसकी भनक मिल गई और उसने तुरन्त उस स्त्री का पीछा किया। उसने उन्हें केलिक्रीड़ा करते देख लिया और वह अत्यन्त कुपित होकर बैठ गया ॥ ४ ॥ वे केलिक्रीड़ा समाप्त कर सो गए और बेसुध हो गए। उस व्यक्ति ने उन्हें सोते देखकर और कृपाण निकालकर उन्हें मार ही डाला ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ उस चरवाहे

बैठ छपि जाइ। तनिक लात लोहू लगे बाल जगी अकुलाइ ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ मूँड बिना निजु मीत निहार्‌यो। अधिक कोप चित भीतर धार्‌यो। दसों दिसन काढे असि धावै। हाथि परै तिह मारि गिरावै ॥ ७ ॥ डोगर छप्यो हाथ नहि आयो। ढूँढि रही त्रिय ना दरसायो। वैसे ही पैरि नदी कह आई। तहाँ मित्र कह दिया बहाई ॥ ८ ॥ पैरि धाम सरिता कह आई। पौढि रही (मू०ग्रं०८६०) जनु साँप चबाई। पाछे तरि डोगर हूँ आयो। मूरख नारि भेद नहि पायो ॥९॥ ऐस भाँति सो काल बिहान्यो। बीता बरख एक दिन जान्यो। तब डोगर इह भाँति उचारो। करो नारि इकि काज हमारो ॥ १० ॥ एक त्रिया कारज मुर कीजहु। मखनी काढि धाम ते दीजहु। जात कह्यो तह त्रिय मै नाही। हेरि अंधेर डरों मन माही ॥ ११ ॥ डोगर कहा लगत दुखु मोको। भूलि गयो वह दिन त्रिय तोको। नदी पैरि करि पार पराई। जार बहाइ बहुरि घर आई ॥ १२ ॥ चमकि उठी जब बचन उचारे। मोर भेद इन सकल निहारे।

का सिर काटकर तुरन्त वह छिपकर बैठ गया। जब स्त्री को गर्म रक्त लगा तो वह हड़बड़ाकर जग गई ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने अपने मित्र को सिरविहीन देखा तो अत्यन्त क्रोधित हो उठी। वह कृपाण हाथ में लेकर चारों ओर दौड़ने लगी ताकि जो दिखाई दे उसे मार गिराए ॥ ७ ॥ डोगरा छिपा था इसलिए हाथ नहीं लगा और ढूँढ़ने पर भी स्त्री को नहीं मिला। वह पूर्ववत् तैरकर नदी के पार आई और अपने मित्र को उसने नदी में बहा दिया ॥ ८ ॥ वह नदी पार करके आई और इस प्रकार लेट गई मानों उसे साँप ने डस लिया हो। डोगरा भी तैरकर पीछे-पीछे आ गया परन्तु वह मूर्ख स्त्री इस रहस्य को न ज़ान सकी ॥ ९ ॥ इस प्रकार समय बीत गया और एक वर्ष गुज़रने पर एक दिन डोगरे ने कहा कि हे स्त्री ! मेरा एक कार्य कर दो ॥१०॥ मेरा एक काम करो, मुझे घर के अन्दर से मक्खन निकाल कर दे दो। तब स्त्री ने कहा कि मैं भीतर नहीं जाऊँगी, क्योंकि मुझे अँधेरे में जाने से भय लगता है ॥११॥ डोगरे ने कहा कि मुझे सुनकर दुःख एवं हैरानी हो रही है कि तुम्हें वह दिन भूल गया जब तुम नदी पार करके गई थी। और अपने यार को नदी में बहाकर पुनः घर आ गई थी ॥ १२ ॥ यह बात सुनते ही वह भड़क उठी कि इसने मेरे रहस्य को जान लिया है।

तांते अब ही याहि सँघारों । मारि चोर इह गए उचारों ॥१३॥ ॥ दोहरा ॥ पैठि अँधेरे धाम महि काढि लई करवारि । निजु पति पै हत के निमिति करे पचासिक वारि ॥ १४ ॥ निरखि चमक तरवार की दुर्‍या महिख तर जाइ । तनिक न ब्रिण लागन दई इह छल गयो बचाइ ॥ १५ ॥ पैरि नदी गई मित्र को आई तही बहाइ । निजु पति को घाइल किया नैक न रही लजाइ ॥ १६ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे छतीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ३६ ॥ ६६३ ॥ अफजूं ॥

अथ सैंतीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ नर चरित्र न्रिप को निकटि मंत्री कहा बिचारि । तबै कथा छत्तीसवी इह बिधि कही सुधारि ॥ १ ॥ तवन त्रिया को तुरतु ही डोगर घाउ उबारि । ताहि तुरतु मारत भयो गरे रसरिया डारि ॥ २ ॥ वा रसिया कछु छानि कै बाँधिसि बरे बनाइ । आपु ऊच कूकत भयो लोगन सभन

मैं इसे अभी मार डालती हूँ और चिल्लाती हूँ कि इसे चोर मार गए हैं ॥१३॥ ॥ दोहा ॥ उस अँधेरे घर में घुसकर उसने तलवार निकाल ली और अपने पति को मारने के लिए लगभग पचास वार किए ॥ १४ ॥ वह तलवार की चमक देखकर एक भैंस के नीचे जाकर छिप गया और छलपूर्वक बिना कोई घाव लगे अपने आपको बचा गया ॥ १५ ॥ वह स्त्री नदी को तरकर गई, उसने मित्र को बहाया, पति को घायल किया पर तनिक भी लज्जित नहीं हुई ॥ १६ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में छत्तीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ३६ ॥ ६६३ ॥ अफजू ॥

सैंतीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ नर-चरित्र राजा के पास मंत्री ने विचारपूर्वक कहा और इस प्रकार सुधारकर छत्तीसवीं (कवि भूल से छत्तीसवीं कह रहा है वैसे यह सैंतीसवीं कथा है) कथा कही ॥ १ ॥ उस डोगर ने स्त्री का घाव बचाकर तुरन्त उसके गले में रस्सी डालकर उसे मार डाला ॥ २ ॥ उस रस्सी को

सुनाइ ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ सभ लोगन कह धाम बुलायो। निजु देही को घाव दिखायो। पुनि तिन को लै नारि दिखारी। रोइ कूक ऊचे करि मारी ॥ ४ ॥ जब मोरे त्रिय घाव निहार्‍यो। अधिक शोक चित माँझ बिचार्‍यो। भेद पाइ दिय मुहि कह टारी। लै पासी सुरलोक बिहारी ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ दूध दुहत कटिया निमति महिखी मारिस मोहि। घाव भयो तरवार सो कहा बताऊँ तोहि ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ अब आछो तिह कफन बनैयै। (मू०ग्रं०८६१) भली भाँति भुअ खोद गडैयै। हौ हूँ ब्याह अवर नहि करि हौ। या के बिरह लागिकै बरिहौ ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ लोगन सभन बुलाइकै आछो कफन बनाइ। दुराचारनी नारि कह इह बिधि दिया दबाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे सैंतीसवों
चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ३७ ॥ ७०१ ॥ अफजूं ॥

अथ अठतीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ बहुर सु मंत्री कथा उचारी। एक तरुनि

झोंपड़ी की छत में अन्दर बाँधकर स्वयं ऊँचाई पर चढ़कर चिल्लाने लगा ॥३॥ ॥ चौपाई ॥ उसने सब लोगों को बुलाया और अपने घाव दिखाए। पुनः उसने लोगों को स्त्री दिखाई और दहाड़ मारकर रोने लगा ॥ ४ ॥ वह कहने लगा कि जब इस स्त्री ने मेरे घाव देखे तो वह अत्यन्त दुखित हो उठी। मुझे इसने अलग कर दिया और स्वयं गले में रस्सी डालकर स्वर्ग सिधार गई ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ दूध दुहते समय बच्चे के लिए भैंस ने मुझे ऐसे मारा है मानों तलवार का घाव हो गया हो ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ अब अच्छा सा कफ़न इसके लिए तैयार किया जाय और भली प्रकार से भूमि खोदकर इसे गाड़ दिया जाना चाहिए। मैं अब दूसरा ब्याह नहीं करूँगा और इसी के विरह में मर जाऊँगा ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ सब लोगों को बुलाकर अच्छा सा कफ़न बनाकर इस प्रकार उस दुराचारिणी स्त्री को दवा दिया ॥ ८ ॥ २ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में सैंतीसवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ॥ ३७ ॥ ७०१ ॥ अफजू ॥

अड़तीसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ पुनः मंत्री ने कथा सुनाई कि एक तरुणी अत्यन्त यौवनवती

जोबन की भारी। एक चोर ताकह ठग बरियो। अधिक अनंद दुहूँ चित करियो ॥ १ ॥ रैनि भए तसकर उठि जावै। दिन देखत ठग दरबु कमावै। ताँ त्रिय सौ दोऊ भोग कमाही। मूरख भेद पछानत नाही ॥ २ ॥ ठग जानै मोरी है नारी। चोर कहै मोरी हितकारी। त्रिय कै ताहि दोऊ पहिचानै। मूरख भेद न कोऊ जानै ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ एक रुमाल बाल हित काढा। दुहूँअन को जिय आनंद बाढा। वह जानै मोरे हित कै है। चोरि लखै मोही कह दै है ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ चोर त्रियहि प्यारा हुतो ताकहुँ दिया रुमाल। ताकहु नैन निहारि ठग मन मै भया बिहाल ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ मुसट जुद्ध तसकर सों कियो। छीन रुमाल हाथ ते लियो। चोर कहा मो त्रिय इह काढा। यो सुनि अधिक रोस जिय बाढा ॥ ६ ॥ आपु बीच गारी दोऊ देही। दाँति निकार केस गहि लेही। लात मुसट के करैं प्रहारा। जानुक चोट परै घरियारा ॥ ७ ॥ दोऊ लरि इसत्री पहि आए। अधिक कोप ह्वै बचन सुनाए। ठग तसकर दुहूँ बचन उचारी।

थी। एक चोर और एक ठग ने उससे ब्याह कर उससे अत्यधिक भोग-विलास किया ॥ १ ॥ रात को चोर चोरी करने जाता था और दिन में ठग ठगी से पैसा लूटने जाता था। दोनों ही उससे रमण करते थे और मूर्ख एवं अज्ञानी थे ॥ २ ॥ ठग समझता था, यह मेरी स्त्री है, और चोर समझता था, यह मेरी हितैषिणी है। दोनों उसे अपनी स्त्री मानते थे और मूर्ख बन रहस्य को नहीं समझते थे ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ उस स्त्री ने प्रेमपूर्वक एक रूमाल पर कढ़ाई का काम किया जिसे देखकर दोनों आनंदित हो उठे। वह (ठग) समझ रहा था कि इसे मुझसे प्रेम है मुझे देगी और चोर समझ रहा था कि यह मुझे ही देगी ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ स्त्री को चोर प्रिय था इसलिए उसने रूमाल उसे दे दिया। यह देखकर ठग मन में व्याकुल हो उठा ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने चोर से हाथापाई की और उसके हाथ से रूमाल छीन लिया। चोर ने कहा कि इस स्त्री ने मेरे लिए बनाया है और यह सुनकर ठग और अधिक क्रोधित हो उठा ॥ ६ ॥ वे आपस में गालियाँ देने लगे और दाँत पीसते हुए उन्होंने एक-दूसरे के केश पकड़ लिये। वे इस प्रकार लातों और घूँसों से एक-दूसरे पर प्रहार करने लगे मानों घड़ियाल पर चोट पड़ रही हो ॥७॥ दोनों ही लड़कर स्त्री के पास आए और क्रोधित होकर बोले कि तुम बताओ मेरी स्त्री हो या इसकी स्त्री हो ॥ ८ ॥

तैं इह नारि कि मोरी नारी ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ सुन तसकर ठग मै कहो हौ ताही की नारि। जो छल बल जानै घनों जामै बीरज अपार ॥ ९ ॥ बहुरि बाल ऐसे कहा सुनहु बचन मुर एक। सो मो को इसत्री करै जिह महि हुनर अनेक ॥१०॥ ॥ चौपई ॥ सुनि बाला मै बैन तिहारो। अब पौरख तैं देखु हमारो। अधिक बीरज जामै जिय धरिहैं। ताही कह अपनो पति करिहैं ॥ ११ ॥ ठग बच भाखि नगर महि गयो। इसथित एक हाट पर भयो। मुहरैं सकल द्रिशटि तर धरी। (मू०ग्रं०८६२) शाहु भए इह भाँति उचरी ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ ऐस भाँति उचरत भया ह्वै ढीलो सरबंग। मुहरन को सौदा करौ शाहु तिहारे संग ॥ १३ ॥ मदन राइ ठग इम कही मन मै मंत्र बिचारि। लै मुहरैं रुपया देवौ तुम कह शाह सु धारि ॥ १४ ॥ ॥ चौपई ॥ यौ जब शाह बैनि सुन पायो। काढि अशरफी धनी कहायो। ठग की द्रिशटि जबै ते परी। सभ सनकी मन भीतरि धरी ॥ १५ ॥ मुहिरैं डारि गुथरियहि लई। अधिक मारि बनिया कह दई। ऊचे शोर करा पुर माही। मै मुहरन कह बेचत नाही ॥ १६ ॥ शोर सुनत पुरजन सभ धाए। वा बनिया ठग के ढिग आए।

॥ दोहा ॥ स्त्री बोली, हे तस्कर एवं ठग ! तुम सुनो ! मैं तुममें से उसकी स्त्री हूँ, जो छल-बल में अधिक और वीर्यवान हो ॥९॥ पुनः उस स्त्री ने कहा कि मेरी बात सुनो, मुझे वही पत्नी कहे जिसमें अनेकों कलाएँ हों ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ वे बोले, हे स्त्री ! अब तुम हमारे पौरुष को देखो। जिसमें अधिक वीर्य होगा उसे ही पति मानना ॥ ११ ॥ यह कहकर ठग नगर में गया और एक दुकान पर पहुँचा। उस दुकान पर मोहरें देखीं और साहूकार से बोला ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ वह विनम्रता से बोला कि हे साहूकार ! मैं मुहरों का सौदा करना चाहता हूँ; मुझसे सौदा करो ॥ १३ ॥ मदनराय ठग ने कहा कि मुहरें देकर हे साहूकार ! तुम मुझसे रुपया ले लो ॥ १४ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब साहूकार ने ये बातें सुनीं तो उसने अशर्फ़ियाँ निकालकर सामने रख दीं। ठग ने जब मुहरें देखीं तो उसने सन् इत्यादि सब देख लियें ॥ १५ ॥ मुहरें वहीं रहने देकर उसने मुहरों वाली थैली पकड़ ली और बनिये को मारने लगा। ठग शोर मचाने लगा कि मुझे मुहरें नहीं बेचनी हैं ॥ १६ ॥ शोर सुनकर नगर के लोग ठग और बनिये के पास आए।

मुशट जुद्ध निरखत अनुरागे । तिह दुहूँअन कह पूछन लागे ॥ १७ ॥ तुम क्यों जुद्ध करत हो भाई । हमैं कहहु सभ ब्रिथा सुनाई । दुहूँअन कह अबही गहि लैहैं । लै काजी पे न्याइ चुकैहैं ॥१८॥ सुनत बचन उद्दित ठग भयो । ताकह लै काजी पह गयो । अधिक दुखित ह्वै दीन पुकारो । करि काजी तै न्याइ हमारो ॥१९॥ ॥ दोहरा ॥ तब लगि बनिया ह्वै दुखी इमि काजी सो बैन । हमरौ करौ नियाइ तुम कह्यो स्रवत जल बैन ॥ २० ॥ ॥ चौपई ॥ सुनु काजी जू बचन हमारे । कलामु अल्ला की आनि तिहारे । खुदाइ सुनैगो दाद हमारो । ह्वैहौ दामनगीर तुहारो ॥ २१ ॥ ॥ दोहरा ॥ अधिक दीन ह्वै ठग कह्यो सुनु काजिन के राइ । हम पुकार तुम पै करी हमरो करो नियाइ ॥ २२ ॥ ॥ चौपई ॥ तब काजी जिय न्याइ बिचार्यो । प्रगट सभा मे दुहूँ उचार्यो । जो मुहरन को सनहि बतावै । सो सभ आजु अशरफी पावै ॥ २३ ॥ सन मुहरन को बनिक न जानो । मूँदि रहा मुख कछु न बखानो । रोइ पीट करि करत पुकारा । हा हा कियसि कहा करतारा ॥ २४ ॥ ॥ दोहरा ॥ मुहर

उनका मुष्ठिका युद्ध देखकर वे हैरान हो गए और उन दोनों से कारण पूछने लगे ॥ १७ ॥ तुम दोनों क्यों लड़ रहे हो; दोनों अपनी व्यथा सुनाओ। दोनों को अभी पकड़कर न्याय के लिए क़ाज़ी के पास ले चलेंगे ॥ १८ ॥ बात सुनकर ठग तैयार हो गया और बनिये को लेकर क़ाज़ी के पास पहुँचा। वह दुखी होकर क़ाज़ी से कहने लगा कि तुम हमारा न्याय करो ॥ १९ ॥ ॥ दोहा ॥ तब तक बनिया भी दुखी होकर क़ाज़ी से आँखों में आँसू भरकर बोला कि तुम हमारा न्याय करो ॥ २० ॥ ॥ चौपाई ॥ हे क़ाज़ी ! हमारी बात सुनो, तुम्हें अल्लाह की क़सम है। ख़ुदा हमारी फ़रियाद सुनेगा। मैं तुम्हारे ही दामन से जुड़ा हूँ ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ ठग ने भी अत्यधिक दीन भाव से कहा कि हे क़ाज़ीराज ! मैंने भी अपनी फ़रियाद तुम्हारे सामने कही है, तुम हमारे साथ न्याय करो ॥ २२ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब क़ाज़ी ने मन में सोचा और सभा में कहा कि जो मुहरों का सन् बता देगा वही अशर्फ़ी प्राप्त करेगा ॥ २३ ॥ बनिया सभी मुहरों का सन् नहीं जानता था इसलिए आँखें बंद कर चुप रह गया। रो-पीटकर वह चिल्लाने लगा कि हे ईश्वर ! यह तूने क्या किया ? ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥ (तब ठग ने कहा) अकबरी मुहर एक

अकबरी एक सत जहाँगीरी सै दोइ । शाहिजहानी चारि सै देख लेहु सभ कोइ ॥२५॥ ॥ चौपई ॥ सभा बीच जब मुहर उघारी । सो निकसी जो ठगहि उकारी । काजी छीनि शाहु ते लीनी । लै तसकर के कर मैं दीनी ॥२६॥ ॥ दोहरा ॥ जस काजी को पसर्यो ठग भाख्यो सभ गाँउँ । कीनो (मू०ग्रं०८६३) उमर खिताब जिमि आजु हमारो न्याउँ ॥२७॥ ॥ चौपई ॥ ठग लै कै मुहरैं घर आयो । तिन काजी कछु न्याइ न पायो । बनिया काढि सदन ते दीना । झूठे ते साचा ठग कीना ॥२८॥ ॥ दोहरा ॥ ठगहि अशरफी सात सै कर दीनी नर नाहि । ता त्रिय पहि लै आइयो अपने घर के माहि ॥ २९ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे अठतीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ३८ ॥ ७३० ॥ अफजूं ॥

अथ उनतालीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ रैन भई तसकर उठि धायो । सकल स्वान को भेस बनायो । शाहिजहाँ के ग्रहि पग धार्यो । गपै

सौ, जहाँगीरी दो सौ और शाहजहानी चार सौ हैं। यदि चाहें तो सभी देख लें ॥ २५ ॥ ॥ चौपाई ॥ सभा में जब मुहरों को देखा गया तो वे ही निकलीं जो ठग ने बतायी थीं। क़ाज़ी ने वे मुहरें छीनकर शाह से लेकर उस तस्कर ठग को दे दीं ॥ २६ ॥ ॥ दोहा ॥ ठग ने गाँव में क़ाज़ी के यश को फैलाया और कहा कि उसने पवित्र किताब के अनुसार ही मेरा न्याय किया है ॥ २७ ॥ ॥ चौपाई ॥ ठग मुहरें लेकर घर आ गया और वह क़ाज़ी भी इस न्याय के रहस्य को न समझ सका। उसने बनिए को घर से निकाल दिया और झूठे ठग को सच्चा बना दिया ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ उस क़ाज़ी ने, हे राजन् ! ठग को सात सौ अशर्फ़ियाँ दीं और वह उनको अपने घर में स्त्री के पास ले आया ॥ ॥ २९ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में अड़तीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ३८ ॥ ७३० ॥ अफजू ॥

उनतालीसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ रात हुई तो चोर भेस बदलकर निकल पड़ा। वह शाहजहाँ के घर पर गया जहाँ उसने गप्पें हाँकते गप्पी को देखा ॥ १ ॥

कहत गपिआह निहार्‌यो ।।१।। एदिलशाह नाम तसकर बर । आयो शाहि जहाँ जू के घर । राजमती नारी तिह ग्यो तह । राजन को राजा सोवत जह ।। २ ।। ।। सवैया ।। बहुरों तरवारि निकारि कै चोर सु वा गपिया कह मारि लियो । फुनि लाल उतारि लयो पगिया जुत फोरि इजार पै अंड दियो । तब सूखनि शाहु उतारि दई सभ बस्त्रन को तिन हाथ कियो । फुनि गोसटिं बैठि करी तिह सौ त्रिय के हित कै करि गाढ़ हियो ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। शाह लखा बीरज गिरा कीनी दूरि इजार । बस्त्र पगरिया लाल जुत लीने चोर सँभारि ।। ४ ।। ।। चौपई ।। बैठि चोरु असि कथा प्रकाशी । एक चोर दूजो धर फासी । एक नारि सो केल कमावैं । अपनी जानि अधिक सुख पावैं ।। ५ ।। ।। दोहरा ।। दिन तसकर तासौ रमत दरब ठगन ठग जाइ । रैनि चोर चोरत ग्रिहन ताँहि मिलत ठग आइ ।। ६ ।। ।। चौपई ।। होड रुमाल हेत तिन परी । मुहर सात सै ठगहूँ हरी । पुन बारी तसकर की आई । तुमै कथा सो कहौ सुनाई ।। ७ ।। हजरति कै तसकर

उस चोर का नाम अदिलशाह था । वह शाहजहाँ के सुन्दर घर में प्रविष्ट हुआ । वह राजमती स्त्री के लिए वहाँ तक आ पहुँचा जहाँ राजाओं का राजा सो रहा था ।। २ ।। ।। सवैया ।। उस चोर ने तलवार निकालकर उस गप्पी को मार डाला और उसकी लाल पगड़ी उतारकर उसकी सलवार पर अंडा फोड़ दिया । तव शाह ने सलवार उतार दी और सभी वस्त्र उसे पकड़ा दिए । पुनः उसने बैठकर स्त्री के लिए मन पक्का कर शाह से वार्तालाप किया ।। ३ ।। ।। दोहा ।। शाह ने जव देखा कि वीर्य गिरा है तो सलवार उतार दी और इस प्रकार चोर ने वस्त्र और लाल संयुक्त पगड़ी सँभाल ली ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। अब बैठकर चोर ने यह कथा कही कि एक चोर था और दूसरा ठग था । वे एक ही स्त्री से रमण करते थे और अत्यधिक सुख प्राप्त करते थे ।। ५ ।। ।। दोहा ।। दिन में चोर उससे रमण करता था और ठग ठगने जाता था । रात को चोर चोरी करने जाता था और ठग उससे आ मिलता था ।। ६ ।। ।। चौपाई ।। एक रूमाल पर उनकी ज़िदवाज़ी हो गयी और ठग सात सौ मुहरें ठगकर उसके लिए ले आया । फिर चोर की वारी आयी और मैं उसी की बात तुमसे कह रहा हूँ ।। ७ ।। वह चोर हुज़र के घर आया और उसने गप्पी को मार डाला । उसके वस्त्र

ग्रहि आयो। गपिया कह जमलोक पठायो। बस्त्र लाल पगिया जुत हरी। गोसटि बैठि शाह सो करी॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ लाल बस्त्र पगिया हरी लई इजार उतार। प्रान उबारा शाह का होइ तवन की नारि॥ ९ ॥ लाल बस्त्र हर पहुचिया जहाँ न पहुचत कोइ। प्रान उबार्यो शाह को त्रिया तवन की होइ ॥१०॥ ॥ चौपई ॥ दिन (मू०ग्रं०८६४) के चड़े अदालति भई। वहु त्रिय शाह चोर कह दई। ता की करी सिफति बहु भारा। अधिक दियसि धन छोरि भंडारा ॥११॥ ॥ दोहरा ॥ एदिल राजमती लई ठग कहि दियसि निकारि। लाल बस्त्र हर शाह के तिह गपिया कह मारि॥ १२ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे उनतालीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ३९ ॥ ७४२ ॥ अफजूं ॥

अथ चालीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ एक जाट जंगल बसै धाम कलहनी नारि।
जो वहु कहत सु ना करत गारिन करत प्रहार॥ १ ॥

एवं लालयुक्त पगड़ी चोरी कर ली और बैठकर शाह से संगोष्ठी करने लगा॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ जिसने लाल से युक्त वस्त्र और सलवार तक उतार ली तथा शाह के प्राण बचाए, वह स्त्री उसी की होनी चाहिए॥ ९ ॥ मैंने वस्त्र चुराए और वहाँ पहुँचा जहाँ पहुँचने की कोई हिम्मत नहीं करता। मैंने शाह के प्राण बचाए हैं, इसलिए स्त्री मेरी होनी चाहिए॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ दिन को अदालत लगी और शाह ने वह स्त्री चोर को दे दो। उसकी बहुत प्रशंसा की और उसे काफ़ी धन-धान्य दिया॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ अदिल को राजमती मिल गई और ठग को निकाल दिया गया। यह सब गप्पी को मारने और वस्त्रों की चोरी के कारण हुआ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में उनतालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति॥ ३९ ॥ ७४२ ॥ अफजू ॥

चालीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ एक जाट जंगल में अपनी कुलक्षणी स्त्री के साथ रहता था। जो वह कहता था उसे वह नहीं करती थी और उस पर गालियों द्वारा प्रहार करती थी॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ दिलजानमती वह स्त्री थी और उसके

।। चौपई ।। स्त्री दिलजानमती ता की त्रिय। अचलदेव तिह नाम रहत पिय। रहत रैनि दिन ता के डार्‌यो। कबहूँ जान न ग्रहि ते मार्‌यो ।। २ ।। ।। दोहरा ।। जहाँ बिपासा के भए मिलत सतुद्द्रव जाइ। तिह ठाँ ते दोऊ रहहि चौधर करहि बनाइ ।।-३ ।। ।। चौपई ।। जो कारज करनो वह जानत। ताहि करै नही ऐस बखानत। तब वहु काज तरुनि हठ करई। पति की कानि न कछु जिय धरई ।। ४ ।। पितरन पच्छ पहूचा आई। पितु की थिति तिनहूँ सुनि पाई। त्रिय सौ कह्‌ा स्राध नहि कीजै। तिन इम कही अबै करि लीजै ।। ५ ।। सकल स्राध को साज बनायो। भोजन समै दिजन को आयो। पति इमि कही काज त्रिय कीजै। इह कह दछना कछू न दीजै ।। ६ ।। त्रिय भाखा मैं ढील न कैहौ। टका टका बीरा जुत दैहौ। दिजन देत अब बिलंब न करिहौ। तोर मूँड पर ब्रिशटा भरिहौ ।। ७ ।। तब ब्रहमन सभ बैठ जिवाए। अधिक दरबु दै धाम पठाए। पुनि त्रिय सौ तिन ऐस उचारी। सुनहु शास्त्र की रीति पियारी ।। ८ ।। ।। दोहरा ।। पिंड नदी परवाहियहि या महि कछु न बिचार। कहा न कीना तिन तरुन दियो कुठोरहि डारि ।। ९ ।।

पति का नाम अचलदेव था। वह दिन-रात उससे आतंकित रहता था और कभी उसे मारता-पीटता नहीं था ।। २ ।। ।। दोहा ।। जहाँ व्यास और सतलज नदियाँ मिलती हैं वहाँ यह चौधरी रहता था ।।३।। ।। चौपाई ।। जो भी कार्य पति करना चाहे यह स्त्री कहती थी नहीं करूँगी। जो नहीं करना होता था उसे वह तरुणी पति की मान-मर्यादा का ख्याल किए बिना हठ-पूर्वक किया करती थी ।। ४ ।। पितृपक्ष जब आया तो पति ने भी तिथि आदि का पता लगाया। उसने स्त्री से कहा कि श्राद्ध नहीं करना है, तो स्त्री ने कहा कि अभी करेंगे ।। ५ ।। उसने श्राद्ध की पूरी तैयारी की और ब्राह्मणों के भोजन का समय आया। पति ने कहा कि ऐसा करो कि इन पंडितों को दक्षिणा आदि मत दो ।।६।। स्त्री ने कहा कि मैं बिना देर किए एक-एक टका इन लोगों को अवश्य दूँगी। ब्राह्मणों को मैं अवश्य दक्षिणा दूँगी और तुम्हारा मुँह काला करूँगी ।। ७ ।। तब सभी ब्राह्मणों को खिलाया और खूब पैसा देकर बिदा किया। पुनः उसने स्त्री से कहा कि शास्त्रों की रीति सुनो ।। ८ ।। ।। दोहा ।। पिंड को नदी में प्रवाहित करना चाहिए; परन्तु उस स्त्री ने वैसा नहीं किया और उसे अपवित्र स्थान पर फेंक दिया ।। ९ ।।

॥ चौपई ॥ तब तिन जाट अधिक रिसि आनी । ता की नास बिवत जिय आनी । इहु कहि कहूँ बोरि करि मारो । नित्य नित्य को तापु निवारो ॥ १० ॥ तिह त्रिय सो इह भाँति बखानी । जनम धाम नहि जाहु अयानी । करि डोरी तुम कह मै दैहों । उन भाखो यौ ही उठि जैहों ॥ ११ ॥ वा त्रिय को लै संगि सिधायो । चलत चलत सरता तट आयो । बहुरि जाट इह भाँति (मू०ग्रं०८६५) उचारो । सुनु अबला तैं बचन हमारो ॥ १२ ॥ सुखी चलहु चड़ि नाव पिआरी । मानि लेहु यह मोर उचारी । त्रिय कह्यो बैल पूछ गहि जैहौ । अब ही पारि नदी के ह्वैहौ ॥ १३ ॥ ॥ सवैया ॥ भोर हुते गरजै लरजै बरजै सभ लोग रहै नहि ठानी । सासु के त्रास न आवत स्वास दुआरन ते फिरि जात जिठानी । पास परोसिन बास गह्यो बन लोग भए सभही नक वानी । पानी के माँगत पाथर मारत नारि किधौ घर नाहर आनी ॥ १४ ॥ ॥ दोहरा ॥ बैल पूछि गहिकै जबै गई नदी के धार । द्रिड़ करि याकह पकरियै बोल सु कूकि गवार ॥ १५ ॥ छोरि पूछि कर ते दई सुनी कूकि जब कान ।

॥ चौपाई ॥ तब उस जाट को अत्यधिक क्रोध आया और उसने उसको मारने का उपाय सोचा कि इसे मैं पानी में डुबाकर मार डालूँगा और रोज़-रोज़ का कष्ट ही दूर कर दूँगा ॥ १० ॥ उसने स्त्री से इस प्रकार कहा कि तुम अपने मायके मत जाओ । मैं तुमको एक रस्सी दूँगा, परन्तु वह बोली मैं जाऊँगी और बिना डोरी के जाऊँगी ॥ ११ ॥ वह स्त्री को लेकर चलता-चलता नदी तट पर आ पहुँचा । पुनः जाट ने कहा कि तुम मेरी बात सुनो ॥ १२ ॥ नाव में बैठकर आराम से चलो और मेरा कहना मान जाओ । स्त्री ने कहा कि मैं बैल की पूँछ पकड़ अभी नदी पार कर लूँगी ॥ १३ ॥ ॥ सवैया ॥ प्रातः होने पर नदी गरज रही थी उसकी लहरें काँप रही थीं । सास की तो मानों भय से साँस ही रुक गई और जेठानियाँ तो देखकर द्वार से ही घूम गईं । पड़ोसी आदि भी घरों में घुस गए और वन के लोग भी हैरानी से नाव में चढ़ने लगे तथा कहने लगे कि यह कैसी स्त्री है जो पानी माँगने पर पत्थर मारती है । यह तो स्त्री नहीं है मानों शेरनी है ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ बैल की पूँछ पकड़कर जब वह नदी की धारा में पहुँची तो ग्रामीणों ने कहा कि बैल की पूँछ को कसकर पकड़ना ॥ १५ ॥ जब उसने आवाज़ सुनी तो पूँछ छोड़ दी और गालियाँ निकालते हुए यमपुरी पहुँच

गारी भाखत बहि गई जमपुर कियसि पयान ।। १६ ।। नारि कलहनी बोरि करि जाट अयो ग्रिह माहि । कहाँ सुखी ते जन बसैं असिन बियाहन जाहि ।। १७ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे चालीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ४० ।। ७५९ ।। अफजूं ।।

अथ इकतालीसवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। शाहजहाँपुर मै हुती इक पटूआ की नारि । अति चरित्र तिन जो करा सु तुहि कहौ सुधारि ।। १ ।। ।। अड़िल्ल ।। प्रीतिमंजरी त्रिय को नाम बखानियत । सैनापति तिह पति कौ नाम सुजानियत । बीरभद्र नर इक सौहित ता को भयो । हो पठे सहचरी बोलि ताहि निजु घर लयो ।। २ ।। ।। चौपई ।। अधिक तवन सौ नेह लगायो । समै पाइ करि केल मचायो । तब लौ आवत पटूआ भयो । मित्रहि डारि माट महि दयो ।। ३ ।। द्वै तरबूजनि रखि घट माही । इक काट्यो काट्यो इक नाही । गुद्दा भख्यो खपर

गई ।। १६ ।। उस कुलक्षणी को इस प्रकार डुबाकर जाट घर पर आया । वह व्यक्ति कैसे सुखी बस सकता है जो इस प्रकार की स्त्री से विवाहित हो ।। १७ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में चालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ४० ।। ७५९ ।। अफजू ।।

इकतालीसवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। शाहजहाँपुर में रेशम का काम करनेवाले की एक स्त्री थी, उसने जो प्रपंच किया वह अब मैं तुम्हें सुधारकर कहता हूँ ।। १ ।। ।। अड़िल्ल ।। स्त्री का नाम प्रीतिमंजरी और पति का नाम सेनापति था । उसका प्रेम वीरभद्र नामक एक व्यक्ति से हो गया । उसने एक सखी को भेजकर उसे अपने घर पर बुलाया ।। २ ।। ।। चौपाई ।। उससे अत्यधिक प्रेम किया और समय पाकर उससे रमण किया । तभी पति आ गया और उसने मित्र को एक बड़े घड़े में डाल दिया ।। ३ ।। दो तरबूज़ उसने घड़े में रख दिए । एक काट दिया और एक वैसे ही रहने दिया । उसने गूदा तो ख़ा लिया और उसका छिलका उसके सिर पर धर दिया और दूसरे को उसके

सिर धर्यो। दुतिया लै तिह ऊपर जर्यो ॥ ४ ॥ इही बिखै पटूआ ग्रहि आयो। बैठि खात पर प्रमुद बढायो। कह्यो भच्छ कछु तरुनि तिहारे। अब आगे तिह धरहु हमारे ॥ ५ ॥ जब इह भाँति त्रिया सुन पायो। काटि ताहि तरबूज खुलायो। मित्र लेत तिह कौ अति डरा। हमरो घात त्रिया इन करा ॥ ६ ॥ काटि ताहि तरबूज खुलायो। पुनि पटूआ सौ भोग कमायो। केल कमाइ टारि तिह दयो। मित्रहि काढि खाट पर लयो ॥७॥ बहुरि (मू०ग्रं०८६६) मित्र सौ भोग कमायो। मूरख नाथ न कछु छल पायो। दुतिय बार तासौ गति मानी। दूजे कान न किनहूँ जानी ॥ ८ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इकतालीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ४१ ॥ ७६७ ॥ अफजूं ॥

अथ बयालीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ एक पीर मुलतान मै सुत बिनु ता की त्रीय। सो झूरत निजु चित्त महि बिरध निरखि करि पीय ॥ १ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ रुसतमकला तरुनि को नामु

ऊपर रख दिया ॥ ४ ॥ इसी समय रेशम कार्य-कर्त्ता पति घर में आया और प्रमुदित होकर खाने लगा। वह स्त्री से बोला कि खाने को कुछ हो तो लाओ ॥ ५ ॥ जब स्त्री ने सुना तो तरबूज़ काटकर उसे खिलाया। वह मित्र डर गया कि कहीं अब मुझे तो नहीं मारा जायगा ॥ ६ ॥ उसने तरबूज़ काटकर पति को खिलाया और उससे पुनः सम्भोग किया। उससे रमण कर उसे भेज दिया और पुनः मित्र को निकालकर पलंग पर ले लिया ॥ ७ ॥ पुनः मित्र के साथ रमण किया। वह मूर्ख पति कुछ नहीं जान सका। दुबारा उससे केलिक्रीड़ा की, जिसका किसी को भी पता नहीं लग सका ॥ ८ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में इक्तालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ४१ ॥ ७६७ ॥ अफजू ॥

बयालीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ मुलतान में एक पीर रहता था। उसकी पुत्र-विहीन पत्नी अपने वृद्ध पति को देख-देखकर मन मसोसकर रह जाती थी ॥ १ ॥

बखानियै । सेख इनायत भरता ता को जानियै । अधिक बिरध ते भोगु न तासौ ह्वै सकै । हो चड़त खलत ह्वै गिरत घाइ मुखि अति थकै ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ इक दिन पीर पास त्रिय गई । अधिक दुख्य सौ रोवत भई । ता ते माँग लौंग इक लयो । निजु कह गरभवती ठहरयो ॥ ३ ॥ भोग खुदायन भए कमायो । जोरावरी गरभ रखवायो । नौ मासन पाछे सुत भयो । सकल मुरीदन ताहि उडयो ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ पीर बचन जो तुम कह्यो लौंग दयो त्रिय हाथ । ताँ ते सुत उपज्यो सदन क्रिपा तिहारी साथ ॥ ५ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे बयालीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ४२ ॥ ७७२ ॥ अफजूं ॥

अथ त्रेतालीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ कागज कछू खरीद के पूरब गयो पठान । एक गुलाम खरीद करि राखसि ग्रहि महि आनि ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ एक पठान नारि तिह बरी । अब लौ रति तासौ

॥ अड़िल्ल ॥ स्त्री का नाम रुस्तमकला और पति का नाम शेख़ इनायत था। अधिक वृद्धावस्था के कारण वह भोग में अक्षम था और सम्भोग प्रारम्भ करते ही थककर हाँफते हुए गिर पड़ता था ॥२॥ ॥ चौपाई ॥ एक दिन वह स्त्री एक सन्त पीर के पास गई और रोकर अपनी व्यथा सुनाने लगी । स्त्री ने उससे एक लौंग माँगा और अपने को गर्भवती घोषित कर दिया ॥ ३ ॥ उस ख़ुदा के बंदे से रतिक्रीड़ा की और बलात् गर्भ धारण किया । जब नौ माह बाद पुत्र पैदा हुआ तो समस्त मुरीदों ने यह बात उड़ा दी ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ जब पीर ने स्त्री को लौंग दिया तो उसके घर में कृपापूर्वक पुत्र उत्पन्न हुआ ॥ ५ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में बयालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ४२ ॥ ७७२ ॥ अफजू ॥

तेंतालीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ एक पठान काग़ज़ ख़रीदकर पूर्व दिशा में गया और उसने एक ग़ुलाम ख़रीदकर घर में रख दिया ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ पठान ने स्त्री से विवाह किया परन्तु उससे कामक्रीड़ा नहीं की थी। उससे ग़ुलाम

नहि करी। तासौ बचन गुलाम सुनाए। इह तेरे पति के दस खाए॥ २॥ ॥ अड़िल्ल॥ मिरजा खान पठान नाम तिह जानियै। आछो बीबी संखया नारि पछानियै। गाजीपुर के माँझ सु ते दोऊ रहहि। हो जिनकी कथा सुधारि तवागे हम कहहि॥ ३॥ ॥ दोहरा॥ बहुरौ कही पठान सौ इमि गुलाम तिन बात। मै इह त्रिय डाइनि सुनी क्यों या के तट जात॥४॥ ॥ अड़िल्ल॥ त्रिय सौ बचन गुलाम उचारे जाइ करि। तुम सौ नेह बढाइ कही हम आइ करि। जब या कौ सुख सों सोयो लहि लीजियो। हो तब या के खाइन पर द्रिशटि सु कीजियो॥ ५॥ ॥ चौपई॥ इमि (मू०ग्रं०८६७) चेरे तिन बचन उचारो। सुनि साहिब तैं कह्यो हमारो। जब यहि तुहि सों यो लखि लैहैं। तब तेरे दोऊ अंड चबैहैं॥ ६॥ बतिया ते पठान चितधारी। वा त्रिय सो नहि प्रगट उचारी। संग लै जब तिह पति स्वै गयो। तब सिमरन तिह को बच भयो॥ ७॥ हेरनि अंड त्रिया कर डार्यो। पति चमक्यो कर खड़ग सँभार्यो। तब ही त्रिय ताकह हनि दियो। बहुरो नास आपनो कियो॥ ८॥

ने कहा कि पति के अंडकोष खाने की चीज़ होते हैं॥ २॥ ॥ अड़िल्ल॥ उस पठान का नाम मिर्ज़ाख़ान और स्त्री का नाम संख्या था। वे गाजीपुर में रहते थे और उनकी कथा मैं सुधारकर कह रहा हूँ॥ ३॥ ॥ दोहा॥ पुनः गुलाम ने पठान से कहा कि मैंने सुना है यह स्त्री डायन है। तुम इसके पास क्यों जाते हो॥ ४॥ ॥ अड़िल्ल॥ स्त्री से गुलाम ने जाकर कहा कि मैं तुम्हारा शुभचिन्तक हूँ, मेरी बात सुनो: जब यह तुम्हारा पति सुखपूर्वक सो जायगा तो तुम इसके अंडकोष खाने की चेष्टा करना॥ ५॥ ॥ चौपाई॥ पुनः उस गुलाम ने मालिक से कहा कि आप मेरी बात सुनिए। जब यह तुम्हें सोता पाएगी तो तुम्हारे दोनों अंडकोष चबा लेगी॥ ६॥ पठान ने भी बात सुन ली परन्तु स्त्री से कुछ नहीं पूछा। जब वह पति उसे साथ लेकर सो गया तो उसे इस बात का स्मरण बना रहा॥ ७॥ जब स्त्री ने अंडकोषों को टटोलना शुरू किया तो पति ने भड़ककर तलवार सँभाल ली। तब स्त्री ने भी उस पर वार कर दिया और पुनः अपना नाश भी

॥ दोहरा ॥ खान पठानी आपु महि लरि मरि भए परेत। नास दुहन को ह्वै गयो वा गुलाम के हेत ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्ते मंत्री भूप संबादे त्रेतालीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ४३ ॥ ७८१ ॥ अफजूं ॥

अथ चौआलीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ बनिया ऐक ओडछे रहई । अधिक दरब जा के जग कहई । तिलकमंजरी ता की नारी । चंद्र लई ज ते उजियारी ॥ १ ॥ ॥ दोहरा ॥ एक तहाँ राजा रहै अमित तेज की खान । चंद्र सूर जिह रिस करैं अधिक आपु ते जानि ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ सो त्रिय निरखि राइ छबि अटकी । भूलि गई सभ ही सुधि घट की । अधिक नेह राजा सौ ठान्यो । ताँ कह भवन आपनो आन्यो ॥ ३ ॥ बीरकेत सों भोग कमायो । अधिक ह्रिदै महि सुख उपजायो । चिमटि चिमटि तासौ रति करी । भाँति भाँति के भोगन भरी ॥ ४ ॥ केल करत त्रिप सो पति आयो । बडे संदूक

कर लिया ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ वह खान और उसकी स्त्री लड़-मरकर प्रेत बन गए और उस ग़ुलाम की बातों में आकर दोनों का नाश हो गया ॥९॥१॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में तेतालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ४३ ॥ ७८१ ॥ अफजू ॥

चवालीसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ ओड़छा नगर में एक बनिया रहता था। उसके पास अत्यन्त द्रव्य था। उसकी स्त्री तिलकमंजरी थी और ऐसा लगता था मानों चन्द्रमा ने भी उजाला उससे उधार लिया था ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ वहाँ अपरिमित तेज वाला एक राजा था जिससे चाँद-सूर्य भी ईर्ष्या करते थे ॥२॥ ॥ चौपाई ॥ वह स्त्री राजा की छवि में अटक गई और तन-मन की सुधि भूल गई। वह राजा से अत्यधिक स्नेह करने लगी और उसने राजा को अपने घर बुलाया ॥ ३ ॥ वीरकेतु राजा से उसने रमण किया और हृदय में अत्यन्त सुख का अनुभव किया। उसने चिपट-चिपटकर अनेकों प्रकार से उससे केलिक्रीड़ा की ॥ ४ ॥ केलिक्रीड़ा के मध्य ही उस स्त्री का पति आ गया तो उसने राजा को वड़े संदूक़ में डाल दिया। अपने पति से वह

बिखै तिह पायो। आपु नाथ सौ बचन उचारे। सुनो बैन तुम पीय पिआरे ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ जार हमारो चोर तव या संदूक के माहि। छोरि अबै इह देखियै कहौ सु वाहि कराहि ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ सुनि न्रिप अधिक त्रास तिन धार्‍यो। आजु नारि मोको इन मार्‍यो। छोरि संदूक हमै गहि लैहै। काढि क्रिपान भए बध कैहै ॥ ७ ॥ कुंजी डारि शाह ढिग दीनी। द्वै कर जोरि बेनती कीनी। जार संदूक छोरि लखि लीजै। मो बतिया करि साचु पतीजै ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ जब संदूक छोरन लगा लै कुंजी कह हाथ। बहुरि त्रिया ऐसे कहा बचन पिया कें साथ ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ दुहूँ हाथ ता के सिर मारी। गई शाहु मति सगल तिहारी। जो यासौ मै भोग कमैहौ। तौ तौकहु किह भाँति बतैहौ ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ ऐसे बचन बखान करि (मू०ग्रं०८६८) मूरख दिया उठाइ। बहुरि राइ सौ रति करी हिदै हरख उपजाइ ॥११॥ न्रिप सों केल कमाइ करि ग्रहि कह दयो पठाइ। बहुरि सुखी ह्वै पुर बसी शाहु लयो गर लाइ ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे चौआलीसवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ ४४ ॥ ७९३ ॥ अफजूं ॥

कहने लगी कि हे नाथ! तुम मेरी बात सुनो ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ मेरा मित्र और तुम्हारा चोर इस संदूक में है। इसे खोलकर देखो और जो चाहो करो ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ यह सुनकर राजा अधिक डर गया और सोचने लगा कि आज यह स्त्री मुझे मार डालेगी। संदूक खोलकर ये लोग मुझे पा जायेंगे और कृपाण निकालकर मेरा वध कर देंगे ॥ ७ ॥ स्त्री ने कुंजी शाह को दे दी और दोनों हाथ जोड़कर विनती करने लगी कि मेरे प्रेमी को संदूक खोलकर देख लो और मेरे कहने को अजमा लो ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ जब कुंजी हाथ में लेकर वह संदूक खोलने लगा तो पुनः स्त्री ने अपने पति से कहा ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ पति के माथे पर दोनों हाथ मारती हुई स्त्री बोली कि हे शाह! तुम्हारी भी बुद्धि लगता है नष्ट हो गई है। यदि मैं इसके साथ सम्भोग करूँगी तो भला तुम्हें बताऊँगी ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार की बातें कर उसने मूर्ख (पति) को उठाकर भेज दिया और पुनः प्रसन्नतापूर्वक राजा से रतिक्रीड़ा की ॥ ११ ॥ राजा से केलिक्रीड़ा कर

उसे घर भेज दिया और सुखी होकर पुनः बनिये को भी गले से लगा लिया ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में चवालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ४४ ॥ ७९३ ॥ अफजू ॥

अथ पैंतालीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ एक जाट दिल्ली महि रहै । नैनौ नाम जगत तिह कहै । एक नारि ता के कलहारी । ता को रहत प्रान ते प्यारी ॥ १ ॥ स्री त्रियराजमती तिह नामा । नैनौ नाम जाट की बामा । शहिर जहानाबाद बसैवे । दरबवान दुति मान रहैवे ॥ २ ॥ सौदा कारन ताहि पठायो । एक रुपैया हाथ दिवायो । एक हुतो तिह ठाँ को जोगी । नाँगी करि नारी तिन भोगी ॥ ३ ॥ ॥ दोहरा ॥ छोरि गाँठि ताँ के सिखन रुपया लयो चुराइ । छारि बाँधि ता मे धरी ताकी ठौर बनाइ ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ भोग कमाइ बहुरि त्रिय आई । सौदा कारन पुनि घर धाई । लोगन ते अति ही शरमाई । छार ओर नहि द्रिशटि चलाई ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ बिनु सौदा आवत भई तीर पिया के नारि ।

पैंतालीसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ नयनू नामक एक जाट दिल्ली में रहता था । उसकी एक कुलटा स्त्री थी, जिसे वह प्राणों से अधिक प्यार करता था ॥ १ ॥ नयनू नामक जाट की स्त्री का नाम त्रियराजमती था । वह जहानाबाद नामक शहर में रहती थी और द्रव्यमान व रूपवान भी थी ॥ २ ॥ जाट ने उसे एक रुपया देकर सौदा ख़रीदने के लिए भेजा । वहाँ एक योगी था । उसने उस स्त्री को निर्वस्त्र कर उससे केलिक्रीड़ा की ॥३॥ ॥ दोहा ॥ उसके चेलों ने गाँठ खोलकर उसका रुपया चुरा लिया और उसकी जगह राख की गाँठ बाँध दी ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ सम्भोग करके वह स्त्री पुनः सौदे की चिन्ता में घर की ओर दौड़ी । वह लोगों से अत्यन्त लज्जित हुई और बँधी हुई राख का उसको पता नहीं लगा ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ वह सौदे के बिना अपने पति के पास आई । जब उसने गाँठ खोलकर देखी तो उसमें से राख

छोरि गाँठि देखै कहा ता मै निकसी छार ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ कर रुपया मोरे तुम दयो । सौदा ल्यावन काज पठयो । रुपया गिरा राह महि जाई । लोग बिलोकि लाज मुहि आई ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ छार सहित मै सो गह्यो गोद लाज ते डारि । तुम हाथन सो खोजि करि या ते लेहु निकारि ॥ ८ ॥ मूड़ नाहि कछु ना लखा खोजन लागा छार । सो न लहा चुप ह्वै रहा सक्या न भेद बिचारि ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे पैंतालीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ४५ ॥ ८०४ ॥ अफजूं ॥

अथ छयालीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ काजी इक कशमीर मै ता की इस्त्री एक । जंत्र मंत्र अरु बसीकर जानत हुती अनेक ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ अदलमुहंमद नाम तवन पति । न्याइ शास्त्र के बीच निपुनि अति । नूरम बीबी नारि तवन घर । जाके साथ रमत निति अति नर ॥ २॥ (मू०ग्रं०८६९) तिन इक जाट भए रति ठानी । कछु काजी की कानि न मानी । हजरति

निकली ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह बोली कि तुमने मेरे हाथ में रुपया दिया था और मुझे सौदा लेने के लिए भेजा था । रुपया रास्ते में गिर गया और मैं लोगों को देखकर लज्जित हो गई ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ इसीलए मैंने वहाँ से राख की झोली भर ली । अब तुम हाथों से खोजकर उसमें से निकाल लो ॥ ८ ॥ मूर्खं पति ने रहस्य नहीं समझा और राख में रुपया खोजने लगा और जब नहीं मिला तो बिना रहस्य को समझे चुप रह गया ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में पैंतालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ४५ ॥ ८०४ ॥ अफजू ॥

छियालीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ कश्मीर में एक क़ाज़ी था, उसकी एक स्त्री थी जो यंत्र-मंत्र और वशीकरण आदि भलीभाँति जानती थी ॥१॥ ॥ चौपाई ॥ उसका पति आदिलमुहम्मद था जो कि न्याय करने में अत्यन्त निपुण था । उसकी सुन्दर बीवी का नाम नूरम था जिसके साथ बहुत से लोग रमण करते थे ॥२॥ उसने क़ाज़ी की तनिक भी परवाह न करते हुए एक जाट से केलिक्रीड़ा

आइ तबै लगि गयो । मित्रहि बाँधि खाट तर लयो ।। ३ ।।
।। दोहरा ।। आपु मुसफ बाचत भई जाट खाट तर बाँधि ।
काजी को मोहित किया बान द्रिगन के साँधि ।। ४ ।।
।। चौपई ।। खाट ऊपर काजी बैठायो । कामकेल तासौ
उपजायो । ता की कानि न आनत मनै । मूरख चोट
चटाकन गनै ।। ५ ।। ।। दोहरा ।। काम भोग करि काजियहि
दीना बहुरि उठाइ । खाट तरे ते काढि करि जाट लयो उर
लाइ ।। ६ ।। ।। चौपई ।। सुनि लै मीत बचन तैं मेरा । मै
काजी कह बहुत लबेरा । ताकह बहु जूतिन सौ मारा ।
ताते उठत तराको भारा ।। ७ ।। ।। दोहरा ।। जुबै तराक
पनीन के परै तिहारे कान । तौ हम साचु तिसै हनाँ लीजहु
ह्रिदै पछानि ।। ८ ।। सत्ति सत्ति तिन कहा हम सुने तराके
कान । सीस खुरकि ग्रिह कौ गए भेद न सका पछान ।।९।।१।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे छयालीसवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ।। ४६ ।। ८११ ।। अफजूँ ।।

प्रारम्भ कर दी। उसी समय हज़रत क़ाज़ी साहब आ गए तो उसने मित्र को पलंग के नीचे छिपा दिया ।। ३ ।। ।। दोहा ।। जाट को खाट के नीचे छिपाकर वह पाठ करने लगी और उसने अपने नयनों के बाणों से क़ाज़ी को मोहित कर लिया ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। क़ाज़ी को पलंग पर बैठाया और उससे रतिक्रीड़ा की। उसको तनिक भी लज्जा नहीं थी और इधर जाट भी आघात गिनने लगा ।। ५ ।। ।। दोहा ।। क़ाज़ी से भोग करने के बाद उसनें क़ाज़ी को उठा दिया और पुनः पलंग के नीचे से जाट को निकालकर सीने से लगा लिया ।। ६ ।। ।। चौपाई ।। वह कहने लगी : हे मित्र ! तुम मेरी बात सुनो, मैंने आज क़ाज़ी को बहुत लथाड़ा है। उसको मैंने जूतों से मारा, इसीलिए इतनी आवाज़ हो रही थी ।। ७ ।। ।। दोहा ।। जूतों की आवाज ही तुम्हारे कानों में पड़ रही थी। सच में मैंने उसे बहुत मारा है, इसे तुम सत्य मानो ।। ८ ।। हाँ यह सत्य है मैंने भी अपने कानों से आवाज़ सुनी है। वह भी सिर खुजलाता हुआ घर को चला गया और भेद को न समझ सका ।। ९ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में छियालीसवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ।। ४६ ।। ८११ ।। अफजू ।।

अथ सैंतालीसवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। कथा एक स्रवनन हम सुनी । हरियाबाद एक त्रिय गुनी । बादलकुअरि नाम त्रिय तिह को । जानत है सिगरौ जग जिह कौ ।।१।। एक मुगल तिन धाम बुलायो । आछो भोजन ताहि खवायो । ताहि भजन कह हाथ पसारा । तब त्रिय ताहि जूतियन मारा ।। २ ।। मारि मुगल कूकत इमि धाई । यह सुनि बैन प्रजा मिलि आई । करि समोध तिन धाम पठयो । या के कंठ टूक फसि गयो ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। चेत मुगल जब ही भया सीस रह्यो निहुराइ । अति लज्जत जिय मै भया बैन न भाख्यो जाइ ।। ४ ।। अब मै याहि उबारिया सीतल बारि पियाइ । सभ सौ ऐसी भाँति कहि ता कौ दिया उठाइ ।। ५ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे सैंतालीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ४७ ।। ८१६ ।। अफजूं ।।

सैंतालीसवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। एक कथा हमने सुनी कि हरियाबाद में एक स्त्री रहती थी उसको सारा संसार बादलकुँवरि के नाम से जानता था ।। १ ।। उसने एक मुगल को घर पर बुलाया और उसे सुस्वादु भोजन खिलाया । उसने रमण के लिए मुगल के सामने हाथ फैलाया और साथ ही उसे जूतों से मारने भी लगी ।। २ ।। मुगल को मार-मारकर वह चीखते हुए दौड़ने लगी । सब लोग आवाज़ सुनकर दौड़े आए तो स्त्री ने कहा कि इसके गले में रोटी फँस गई थी । यह कहकर उसने सबको वापस भेज दिया ।।३।। ।। दोहा ।। जब मुगल होश में आया तो उसने शर्म के मारे सिर नीचा कर लिया और लज्जा के मारे वह कुछ भी बोल न सका ।। ४ ।। स्त्री फिर कहने लगी कि मैंने इसे ठंडा पानी पिलाकर बचाया है और इस प्रकार उसको घर से भेज दिया ।। ५ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में सैंतालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ४७ ।। ८१६ ।। अफजू ।।

अथ अड़तालीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ जहाँगीर पातिशाह के बेगम नूरजहाँ। बसि कीना (मू०ग्रं०८७०) पति आपना इह जस जहाँ तहाँ ॥१॥ ॥ चौपई ॥ नूरजहाँ इमि बचन उचारे। जहाँगीर सुनु शाह हमारे। हम तुम आजु अखेटक जैहैं। सभ इसत्रिन कह साथ बुलैहैं ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ जहाँगीर ए बचन सुनि खेलन चढ़ा शिकार। सखी सहेली संग लै आयो बनहि मँझार ॥३॥ अरुन बस्त्र तन महि धरे इमि अबला दुति देहि। नर बपुरे का सुरन के चित्त चुराए लेहि ॥ ४ ॥ नवल बस्त्र नवलै जुबन नवला त्रिया अनूप। ता कानन मैं डोलहीं रति से सकल सरूप ॥ ५ ॥ इक गोरी इक साँवरी हसि हसि झूमक देहि। जहाँगीर नर नाह की सगल बलैयाँ लेहि ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ सभ त्रिय हथिन अरूड़ित भई। सभही हाथ बंदूकैं लई। बिहसि बिहसि करि बचन सुनावैं। जहाँगीर कह सीस झुकावैं ॥ ७ ॥ सभ इस्त्रिन कर जोरै कीनौ। एक म्रिगहि जाने नहि दीनौ। केतिक बैठ बलह पर गई। है गै किती अरूड़ित भई ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ किनहूँ गही तुफंग कर

अड़तालीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ जहाँगीर बादशाह की पत्नी नूरजहाँ थी और उसने अपने पति को वश में कर रखा है यह बात चारों ओर फैली हुई थी ॥ १ ॥ ॥चौपाई॥ नूर ने बादशाह से कहा कि आज हम तुम व सभी स्त्रियों को साथ लेकर शिकार खेलने चलेंगे ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ यह सुनकर जहाँगीर शिकार खेलने चल पड़ा और वन के बीचोबीच आ पहुँचा ॥ ३ ॥ लाल वस्त्र धारण किए हुए स्त्रियों की छवि पर मनुष्य क्या देवगणों के चित्त भी न्योछावर हो रहे थे ॥ ४ ॥ नये वस्त्रों और चढ़ती जवानी वाली सुन्दर स्त्रियाँ रति के समान रूपवती थीं और जंगल में विचरण कर रही थीं ॥ ५ ॥ कोई गोरी, कोई साँवली थी और हँस-हँसकर नरसम्राट् जहाँगीर पर न्योछावर हो रही थीं ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ उन स्त्रियों ने हाथियों पर सवार होकर हाथ में बंदूकें पकड़ रखी थीं। वे हँस-हँसकर बातें कर रही थीं और जहाँगीर के सामने सिर झुका रहो थीं ॥ ७ ॥ सब स्त्रियाँ हाथ जोड़े सम्मानपूर्वक बैठी थीं और उन्होंने एक भी मृग को नहीं जाने दिया। कितनी ही बैलों

किनहूँ गही क्रिपान । किनूँ कटारी काढि ली किनहूँ तनी कमान ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ प्रिथम म्रिगन पर स्वान धवाए । पुनि चीता ते हरिन गहाए । बाज जुरन का किया शिकारा । नूरजहाँ पर प्रीति अपारा ॥१०॥ रोझ हरिन झंखार सँघारे । नूरजहाँ गहि तुपक प्रहारे । किनहूँ हने बेगमन बाना । पसुन करा जमधाम पयाना ॥ ११ ॥ ॥ दोहरा ॥ अधिक रूप बेगम निरखि रीझि रहै म्रिग कोटि । गिरे मूरछना ह्वै धरनि लगे बिना सर चोटि ॥ १२ ॥ जिनकै तीखन असि लगै लीजत तिनै बचाइ । जिनै द्रिगन के सर लगे तिनको कछु न उपाइ ॥ १३ ॥ ॥ चौपई ॥ किती सहचरी तुरै धवावै । पहुचि म्रिगन को घाइ लगावै । किनहूँ म्रिगन द्रिगन सर मारे । बिनु प्रानन गिरि गए बिचारे ॥ १४ ॥ इही भाँति सो किआ शिकारा । तब लौ निकसा सिंघ अपारा । यह धुनि शाह स्रवन सुनि पाई । सकल नारि इकठी ह्वै आई ॥१५॥ ॥ दोहरा ॥ बहु अरना भैंसान को आगे धरा बनाइ । ता पाछे हजरति चले बेगम संग सुहाइ ॥ १६ ॥ (मू०ग्रं०८७१)

पर बैठ गईं और कई घोड़ों पर सवार हो गईं ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ किसी ने बंदूक़, किसी ने कृपाण, किसी ने कटार और किसी ने कमान को तान लिया ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ पहले मृगों पर कुत्ते छोड़े और बाद में चीतों द्वारा हिरणों को पकड़वाया । जंगली घोड़ों का शिकार किया गया और बादशाह की प्रीति नूरजहाँ के प्रति अपरिमित थी ॥ १० ॥ रीछ, हिरण, झंखार आदि को नूरजहाँ ने बंदूक़ से मारा । बेगमों के बाणों से मारे गए पशु यमधाम पहुँच गए ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ बेगम के सौंदर्य को देखकर अनेकों मृग रीझ गए और बिना बाण लगे ही मूर्च्छित होकर धरती पर गिर पड़े ॥ १२ ॥ जिनको तीक्ष्ण तलवारें लगी थीं उनको तो बचाया जा सकता था, परन्तु जिनको नयनों के बाण लगे थे उनका कोई उपाय नहीं था ॥ १३ ॥ ॥ चौपाई ॥ कितनी ही सहेलियाँ घोड़ों को दौड़ाती थीं और मृगों को घायल कर देती थीं । कई मृग नयन-बाणों से मरकर निष्प्राण गिर गए थे ॥ १४ ॥ इसी प्रकार शिकार चल रहा था कि एक भयंकर शेर निकला । सम्राट् ने भी आवाज़ सुनी और सभी स्त्रियाँ इकट्ठी होकर उसके पास आ पहुँचीं ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥ भैंसों की ओट आगे कर दी गई और उनके पीछे सम्राट् बेगम के साथ चलते हुए शोभायमान होने लगे ॥ १६ ॥

॥ चौपई ॥ जहाँगीर तकि तुपकि चलाई। सो नहि लगी सिंघ के जाई। अधिक कोप करि केहरि धायो। पातिशाह के ऊपर आयो ॥ १७ ॥ हरि धावत हथिनी भजि गई। नूरजहाँदिक ठाँढन भई। जोध बाइ यहि ताँहि निहार्यो। ताकि तुपक को घाइ प्रहार्यो ॥ १८ ॥ ॥ दोहरा ॥ सिंघ प्राण तबही तजे लगे तुपक के घाइ। तीन सलामै तिन करी जहाँगीर को आइ ॥ १९ ॥ ॥ चौपई ॥ अधिक खुशी हजरति जू भए। जन मुहि प्रान आजु इह दए। धन्य धन्य निजु त्रिय कह कीनो। प्रान दान हमको इन दीनो ॥ २० ॥ ॥ दोहरा ॥ नूरजहाँ की सहचरी कौतक सकल निहार। जहाँगीर स्रवनन सुनत भाख्यो बचन सुधार ॥ २१ ॥ ॥ चौपई ॥ जिन केहरि त्रिय बली सँघारो। तिह आगे क्या मनुख बिचारो। हाहा दैया कहा क्या करियै। ऐसी ढीठ नारि ते डरियै ॥ २२ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ जहाँगीर ए बचन जबै स्रवनन सुन्यो। चित मै अधिक रिसाइ सीस अपुनो धुन्यो। ऐसी त्रिय के निकट न बहुरो जाइयै। हो करै देह को घात बहुरि क्या पाइयै ॥ २३ ॥ ॥ चौपई ॥ जहाँगीर सुनि बचन डरान्यो। त्रिय को त्रास अधिक जिय मान्यो। सिंघ हनत

॥ चौपाई ॥ जहाँगीर ने बंदूक़ का निशाना लगाया, परन्तु वह शेर को नहीं लगा। शेर और अधिक क्रोधित होकर चला और सम्राट् पर टूट पड़ा ॥ १७ ॥ शेर के आते ही हथिनी भाग गई और नूरजहाँ आदि रानियाँ खड़ी हो गईं। जोधबाई ने यह देखा और बंदूक़ से निशाना लगाया ॥ १८ ॥ ॥दोहा॥ बंदूक़ का घाव लगते ही शेर ने प्राण त्याग दिये और बेगम ने आकर तीन बार सलाम किया ॥ १९ ॥ ॥ चौपाई ॥ सम्राट् ने अत्यधिक प्रसन्न होकर यह माना कि मुझे प्राणदान इसी ने दिया है। अपनी स्त्री को प्राणदान देने के लिए धन्य-धन्य कहा ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ नूरजहाँ की सहेली ने जहाँगीर को सुनाते हुए कहा ॥ २१ ॥ ॥ चौपाई ॥ जिसने महाबली शेर को मार दिया, मनुष्य उसके सामने क्या चीज़ है। हे अल्लाह ! ऐसी ज़बर्दस्त स्त्री से तो डरना चाहिए ॥ २२ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ जहाँगीर ने जब ये वचन सुने तो क्रोधित होकर सिर धुनने लगा। ऐसी स्त्री के पास यदि जाऊँगा तो निश्चित मेरा भी नाश हो जायगा ॥२३॥ ॥ चौपाई ॥ जहाँगीर सुनकर डर गया और मन में स्त्री से अत्यधिक भयभीत हो गया। जिसको

जिह् लगी न बारा । तिह आगे क्या मनुख बिचारा ।। २४ ।। ।। दोहरा ।। अति बिचित्र गति त्रियन की जिनै न जानै कोइ । जो बाछैं सोई करैं जो चाहे सो होइ ।। २५ ।। पियहि उबारा हरि हना एक तुपक के ठौर । ताकौं छलि पल मै गई भई और की और ।। २६ ।। जहाँगीर पतिशाह तब मन मै भया उदास । ता संग सौ बातैं सदा डर ते भया निरास ।।२७।।१।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे अड़तालीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ४८ ।। ८४३ ।। अफजूं ।।

अथ उनचासवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। आनंदपुर नाइन इक रहई । नंदमती ता को जग कहई । मूरख नाथ तवन को रहै । त्रिय कह कछू न मुख ते कहै ।।१।। ता के धाम बहुत जन आवैं । निस दिन ता सो भोग कमावैं । सो जड़ परा हमारे रहई । ता को कछू न मुख ते कहई (मू०ग्रं० ७२) ।। २ ।। जब कबहूँ वहु धाम सिधावै । यौ ता सो त्रिय बचन सुनावै । याकह कलि की

शेर मारते ज़रा भी देर नहीं लगी, उसके सामनें बेचारा मनुष्य क्या चीज़ है ।। २४ ।। ।। दोहा ।। स्त्रियों की गति भी विचित्र है । वे जो चाहती हैं करती हैं और कोई भी उनके रहस्य को नहीं समझ पाता है ।। २५ ।। उसने प्रियतम बचाया, और एक बंदूक़ से शेर को मार डाला, ये स्त्रियाँ अब पल भर में उसके लिए और की और हो गई ।। २६ ।। तब जहाँगीर मन ही मन उदास हो गया और उस स्त्री से हमेशा भयभीत रहने लगा ।। २७ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपोख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में अड़तालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ४८ ।। ८४३ ।। अफजू ।।

उनचासवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। आनन्दपुर में एक नाउन रहती थी और लोग उसे नंदमती के नाम से जानते थे । उसका पति मूर्ख था और स्त्री को कभी कुछ न कहता था ।। १ ।। उसके घर बहुत से लोग रात-दिन आते थे और उससे रति-क्रीड़ा करते थे । वह मूर्ख हमारे यहाँ पड़ा रहता था और उस स्त्री को कभी मुख से कुछ भी नहीं कहता था ।। २ ।। जब वह कभी घर जाता था तो उसकी स्त्री कहती थी कि मेरे पति को तो क़लियुग की ज़रा सी

बात न लागी । मेरो पिया बडो बडभागी ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। निसु दिन शबदन गावही सभ साधन को राउ । मो पति गुर को भगति है लगी न कलि की बाउ ।। ४ ।। ।। चौपई ।। यह जड़ फूलि बचन सुनि जावै । अधिक आपु कह साधु कहावै । वह जारन सौ निसु दिन रहई । इह कछु तिनै न मुख ते कहई ।। ५ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे उनचासवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ४९ ।। ८४८ ।। अफजूं ।।

अथ पचासवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। रानी एक ओडछे रहै । पुहपमंजरी जिह जग कहै । ता के तुल्लि अवर कोऊ नाही । या ते नारि रिसत मन माही ।। १ ।। अधिक रूप ता कौ बिधि दयो । जाते बसि राजा ह्वै गयो । जो त्रिय कहै बचन सोई मानै । बिनु पूछे कछु काजु न ठाने ।।२।। रानी राज देस को कयो । राजा रानी की सम भयो । जो त्रिय करै वहै जग मानै ।

भी हवा नहीं लगी है । मेरा प्रियतम भाग्यशाली है ।।३।। ।। दोहा ।। रात-दिन उससे यही कहती थी, यह सब साधुओं का राजा है, गुरु का भक्त है, इसे कलियुग की ज़रा सी भी हवा नहीं लगी ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। यह मूर्ख इतनी सी बात सुनकर फूल जाता था और अपने-आपको और अधिक साधु कहलाता था । वह सदैव अपने प्रेमियों के साथ रहती थी और यह कभी भी मुख से उसे कुछ नहीं कहता था ।। ५ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में उनचासवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ४९ ।। ८४८ ।। अफजू ।।

पचासवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। ओरछा नगर में एक रानी रहती थी, जिसका नाम पुष्पमंजरी था । उसके समान अन्य कोई नहीं था और इसीलिए सभी स्त्रियाँ उससे ईर्ष्या करती थीं ।। १ ।। विधाता ने उसे अत्यधिक सौंदर्य प्रदान किया था इसीलिए राजा भी उसके वश में हो गया था । जो रानी कहती थी वही करता था और उससे पूछे बिना कोई काम नहीं करता था ।। २ ।। रानी राज्य करती थी और राजा रानी के समान हो गया था । वह जो कहती

न्रिप की चित कोऊ कानि न आनै ।।३।। ।। दोहरा ।। रानी राज कमावई पति की करै न कानि । राजा कौ रानी किया देखत सकल जहान ।। ४ ।। ।। चौपई ।। राजा को रानी बसि कियो । जीत जंत्र मंत्रन सौ लियो । जब चाहत तब देत उठाई । पुनि सुहात तब लेत बुलाई ।।५।। ।। दोहरा ।। हेरि एक सुंदर पुरख रानी तजी सियान । पुरख भेस धरि तिह सदन निस कह किया पयान ।। ६ ।। ।। चौपई ।। इही बीच राजा जू आयो । रानी बिना सखी दुख पायो । धाम न पैठन न्रिप कह दीना । तब त्रिय ताँहि बचन असि कीना ।।७।। ।। दोहरा ।। कछू भूल तुम ते भई ता ते त्रिय किय मान । मुर ग्रहि करन न दीजियहु न्रिप कहँ कहा पयान ।। ८ ।। ।। चौपई ।। रानी तासो भोग कमाई । बहुरो धामु आपुने आई । यह चरित्र कह तिनै सुनायो । ता ते त्रिय कह अधिक रिझायो ।। ९ ।। तब तिन त्रियै अधिक धन दीनो । भाँति अनेक निहोरो कीनो । भली सखी हमरी मुख भाखी । हमरी आजु लाज इन राखी ।।१०।। ।। दोहरा ।। अधिक (मू०ग्रं०८७३)

थी सारी प्रजा वही करती थी और राजा की कोई भी मन में परवाह नहीं करता था ।। ३ ।। ।। दोहा ।। रानी राजा की परवाह किए बिना राज्य कर रही थी और सारा संसार देख रहा था कि राजा को रानी बना दिया गया है ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। राजा को रानी ने वश में कर रखा था और उसे यंत्रों-मंत्रों से जीत लिया था । उसे जब चाहती थी उठा देती थी और पुनः जब मन चाहता था उसे बुला लेती थी ।। ५ ।। ।। दोहा ।। एक सुन्दर पुरुष देखकर रानी ने बुद्धि का त्याग कर दिया और पुरुष का वेश बनाकर उस पुरुष के घर चली गई ।।६।। ।। चौपाई ।। इसी बीच राजा आया और रानी को न पाकर दुखी हुआ । सखियों ने उसे घर में बैठने नहीं दिया और उससे यह कहा ।। ७ ।। ।। दोहा ।। तुमसे अवश्य कुछ भूल हुई है] जिससे रानी ने मान किया और रुष्ट होकर कहा है कि राजा को मेरे घर में मत आने दो ।। ८ ।। ।। चौपाई ।। रानी ने अपने प्रेमी से रमण किया और पुनः अपने घर आ गई । सखियों ने उसे सारा वृत्तांत सुनाया और रानी को अत्यधिक प्रसन्न किया ।। ९ ।। तब रानी ने उनको काफ़ी धन दिया और उनसे अनेक प्रकार से विनती की । हे सखी ! तुम भली हो, तुमने आज मेरी लाज रख ली है ।। १० ।। ।। दोहा ।। राजा ने अत्यधिक विनीत होकर रानी को मना

निहोरौ राइ करि रानी लई बनाइ। अधिक प्रीति तासो करी भेद न सकिया पाइ ॥ ११ ॥ जौ त्रिप चमकाना रहै त्रिय का करत बिस्वास। अ़वर पुरख पर अटिक त्रिय करत तवन को नास ॥ १२ ॥ चित्त न दीजै आपनो सभ को लेहु बनाइ। तब सभ कह जीतत रहो राज करो सुख पाइ ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ इति स्त्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे पचासवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ५० ॥ ८६१ ॥ अफजूँ ॥

अथ इकियानवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ मारवार इक शाहु कहावै। अनिक दरबु कौ बनिज चलावै। दैदै करज ब्याज बहु लेई। पुन्य दान बिप्रन कह देई ॥ १ ॥ सीलमती ता की त्रिय भारी। सूरज लखी न चंद्र निहारी। निरखि रूपि निजु पति को जीयै। तिह निरखे बिनु पानि न पीयै ॥ २ ॥ ता के पति को रूपि अपारा। रीझि दिया ता को करतारा। उदैकरन ता कौ शुभ नामा। सीलमंजरी ताकी बामा ॥३॥ ॥ दोहरा ॥ रूप

लिया। उससे और अधिक प्रेम किया परन्तु इसका रहस्य न समझ सका ॥ ११ ॥ जो भी राजा स्त्री का विश्वास करता है उसकी स्त्री दूसरे के प्रेम में लीन होकर उस राजा का नाश ही कर देती है ॥ १२ ॥ सबको अपना बना लो, परन्तु किसी को अपना भेद मत बताओ और इस प्रकार सब को जीते रहो और सुखपूर्वक राज्य करो ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में पचासवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ५० ॥ ८६१ ॥ अफजू ॥

इक्यावनवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ मारवाड़ में एक सेठ रहता था जिसका अत्यन्त द्रव्य का व्यापार था। वह क़र्ज़ देकर ब्याज लेता था और ब्राह्मणों को दान-पुण्य करता था ॥ १ ॥ उसकी स्त्री शीलवान थी जो कि सूर्य और चन्द्रमा से भी बढ़कर सुन्दर थी। वह अपने पति के रूप-सौंदर्य को देखकर ही जीवित रहती थी और बिना उसे देखे पानी भी नहीं पीती थी ॥ २ ॥ उसके पति का रूप-सौंदर्य भी अद्वितीय था जो कि परमात्मा ने प्रसन्न होकर उसे दिया था। उसका नाम उदयकर्ण था और उसकी पत्नी शीलमंजरी थी ॥ ३ ॥

अनूपम शाहु को जो निरखत बर नारि। लोक लाज कह छोरि करि ताँकह रहत निहारि ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ एक त्रिया के इमि चित आई। हेरि रूप ता को ललचाई। कवन कहा चित चरित बनैयै। जाते साहु मीत करि पैयै ॥ ५ ॥ ता की त्रिय सों प्रीति लगाई। धरम बहिन अपनी ठहराई। नई नई निति कथा सुनावै। शाहु त्रिया कह अधिक रिझावै ॥ ६ ॥ सुनि शाहुनि तुहि कथा सुनाऊँ। तुमरे चित को गरबु मिटाऊँ। जैसो अति सुंदर पति तेरौ। तैसे ही चीनहु पिय मेरौ ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ तेरे अरु मेरे पतिह भेद रूप नहि कोइ। उठि करि आपु बिलोकियै तोर कि मोरो होइ ॥ ८ ॥ ॥ चौपई ॥ आजु साझि निजु पतिहि लियैहों। तुमरी द्रिशटि अगोचर कैहों। शाहु त्रियहि कछु भेद न पायो। तिह देखन कह चित ललचायो ॥ ९ ॥ आपु अगमने त्रिया उचारे। शाहु कुक्रिआ नारि तिहारे। ता को सकल चरित्र दिखैहों। तुमको मीत आपनो कैहों ॥ १० ॥ तब तुम गवन हमारो कीजो। निजु त्रिय चरित्र देखि जब लीजो। तहाँ ठाँढ (मू०ग्रं०८७४) तुम को लै करिहौ। मीत अयो तब ताहि

॥ दोहा ॥ उस सेठ का रूप अनुपम था और जो भी स्त्री उसे देखती थी, लोक-लाज को छोड़कर उसे देखते ही रह जाती थी ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ एक स्त्री का मन उसे देखकर ललचा उठा। उसने सोचा कि कौन सा प्रपंच किया जाय जिससे सेठ मेरे वश में हो जाय ॥ ५ ॥ उस स्त्री ने सेठ की स्त्री से मित्रता की और उसे अपनी धर्मबहिन बना लिया। वह नित्य उसे नई-नई कथाएं कहती और उसे प्रसन्न करने लगी ॥ ६ ॥ वह कहने लगी कि हे सेठानी! सुनो मैं तुमको एक कथा सुनाती हूँ और तुम्हारे चित्त के गर्व का हरण करती हूँ। जैसा तेरा पति सुन्दर है वैसा ही मेरा भी पति है ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ तेरे और मेरे पति में थोड़ा भी अन्तर नहीं है। आओ देखो तेरा पति है या मेरा पति है ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ आज सन्ध्या समय मैं अपने पति को लाऊँगी और तुम्हें दिखाऊँगी। सेठानी इस रहस्य को न समझ सकी और उसके पति को देखने की इच्छा करने लगी ॥ ९ ॥ स्वयं उस स्त्री ने आगे होकर उस सेठ से कहा कि तुम्हारी स्त्री दुराचारिणी है। मैं तुम्हें उसका चरित्र दिखाऊँगी। तुम मेरे मित्र बन जाओ ॥ १० ॥ तुम मेरे मीत बनकर मेरे पास आओ और अपनी स्त्री का चरित्र देख लो। मैं

उचरिहौ ।। ११ ।। ।। दोहरा ।। जब वहु ता की छोरि त्रिय
निरखै नैन पसारि । तब तुम अपने चित बिखै लीजहु चरित
बिचारि ।।१२।। तहाँ ठाढ ता को किया आपु गई तिह पास ।
सो पति आयो देखियै चित को छोरि बिस्वास ।। १३ ।।
।। चौपई ।। ता की कही कान त्रिय धरी । ता की छोरि
द्रिशटि जब करी । यह कौतक सभ शाहु निहार्यो ।
दुराचार इह नारि बिचार्यो ।।१४।। मोसो सत्ति तवन त्रिय
कह्यो । यौ कहि शाहु मौन ह्वै रह्यो । निज त्रिय भएं
नेह तजि दीनो । तिह त्रिय साथ यरानो कीनो ।। १५ ।।
।। दोहरा ।। छल्यो शाहु त्रिय त्रियासुत ऐसो चरित सुधारि ।
तासो नेहु तुराइकै किया आपुनो यार ।। १६ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इकियानवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ५१ ।। ८७७ ।। अफजूं ।।

अथ बावनों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। उत्तर देस त्रिपति इक भारो । सूरज

तुमको अपने साथ खड़ा करके यह कहूँगी कि मेरा पति आया है ।। ११ ।। ।। दोहा ।। जब वह खिड़की खोलकर आँखें फाड़-फाड़कर तुम्हारी तरफ़ देखेगी तब तुम अपने मन में उसके चरित्र के बारे में विचार बना लेना ।।१२।। उसे वहाँ खड़ा करके वह सेठानी के पास गई और कहने लगी, मेरा पति आया है, तुम विश्वासपूर्वक उसे देख लो ।। १३ ।। ।। चौपाई ।। सेठानी ने उस स्त्री की बात को माना और खिड़की खोलकर देखने लगी । सेठ ने यह सब देखा और अपनी स्त्री को दुराचारिणी समझने लगा ।। १४ ।। यह सोच कर कि मुझे उस स्त्री ने ठीक ही कहा है, सेठ चुप हो गया । उसने अपनी स्त्री के साथ स्नेह छोड़ दिया और उस स्त्री से दोस्ती कर ली ।। १५ ।। ।। दोहा ।। उस स्त्री ने अपने प्रपंच के बल पर अपनी पत्नी में अनुरक्त उस सेठ को छल लिया और उससे उसका संबंध तुड़वाकर उसे अपना मित्र बना लिया ।। १६ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र में मन्त्री-भूप-संवाद में इक्यावनवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ५१ ।। ८७७ ।। अफजू ।।

बावनवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। उत्तर देश में एक बड़ा राजा था जो कि सूर्यवंश का

बंस बिखै उजियारो। इंद्रप्रभा ता की पटरानी। बिजैसिंघ राजा बर आनी ॥ १ ॥ ॥ दोहरा ॥ एक सुता ता के तवन अमित रूप की खानि। कामदेव ठटके रहत रतिसम ताहि पछानि ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ जोबन अधिक ताहि जब भयो। लै ता को गंगा पितु गयो। बडे बडे राजा तह ऐहै। तिन मै भलो हेरि तह दैहै ॥ ३ ॥ चले चले गंगा पहि आए। बंध सुता इसत्रिन संग ब्याए। स्त्री जानवि को दरशन कीनो। पूरब पाप बिदा करि दीनो ॥ ४ ॥ बडे बडे भूपति तह आए। तवनि कुअरि को सकल दिखाए। इन पर द्रिशटि सभन पर करियै। जो जिय रुचै तिसी कौ बरियै ॥५॥ ॥दोहरा॥ हेरि त्रिपति सुत त्रिपत के कन्या कही बिचार। सुभट सिंघ सुंदर सुघर बरहो वहै कुमार ॥६॥ अधिक रूप ता को निरखि सभ राजा रिसि खाहि। जिय किय याहि बिवाहिकै ग्रहि अपुने लै जाहि ॥७॥ ॥ चौपई ॥ भूपति सकल अधिक रिसि करैं। हाथ हथ्यारन ऊपर धरैं। कुपि कुपि बचन बक्त्र ते कहैं। बिनु रन किये आजु नहि रहैं ॥ ८ ॥ राइ (मू०ग्रं०८७५) प्रोहितन लिया बुलाई। सुभट सिंघ प्रति दए पठाई। सो

उजाला था। उसकी रानी इंद्रप्रभा थी और वह दानी राजा विजयसिंह था ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ उनकी एक अपरिमित रूप से सुन्दर पुत्री थी जिसे कामदेव भी रति के समान सुन्दर मानता था ॥२॥ ॥चौपाई॥ जब वह अधिक यौवनपूर्ण हुई तो उसका पिता यह सोचकर उसे गंगा-तट पर ले गया कि वहाँ बड़े-बड़े राजाओं में से कोई भला वर ढूँढ़ देगा ॥ ३ ॥ बहुत सी स्त्रियों समेत वे चलते-चलते गंगा-किनारे आ पहुँचे श्री गंगा के दर्शन किए और पूर्वजन्म के पापों को त्यागा ॥ ४ ॥ वहाँ आए हुए समस्त बड़े-बड़े राजा राजकुमारी को दिखाए गए और कहा गया कि इन सब पर नज़र डालकर जिसे चाहो उसका वरण करो ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ राजकुमारों को देखकर राजकुमारी ने विचारकर कहा कि सुभटसिंह नामक सुन्दर राजकुमार से ही वह विवाह करेगी ॥ ६ ॥ उसका अत्यधिक रूप-सौंदर्य देखकर सभी राजा ईर्ष्यालु हो रहे थे और सोच रहे थे कि जैसे भी हो इसे ब्याहकर घर ले जायँ ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ सभी राजा (राजकुमारी का निर्णय सुनकर) अत्यन्त कुपित हो उठे और हथियारों पर हाथ रखने लगे। वे कुपित होकर कहने लगे कि आज बिना युद्ध किए नहीं जाने देंगे ॥ ८ ॥ राजा ने पुरोहितों को बुला लिया और सुभटसिंह को बुला भेजा। उसे कहा कि आप मुझ पर

पर कही अनुग्रहु करियै । बेद बिधान सहित इह बरियै ।। ९ ।।
।। दोहरा ।। सुभटसिंघ ऐसे कही त्रिय मुर आगे एक । ब्याह
दूसरौ ना करों जौ जन कहै अनेक ।।१०।। ।। चौपई ।। प्रोहित
भूपति सौ इह उचरै । सुभटसिंघ याको नहि बरै । ताते
कछू जतन प्रभ कीजै । इह कन्या अवरै न्रिप दीजै ।। ११ ।।
।। दोहरा ।। तब कन्या ऐसे कही बचन पिता के साथ । जो
को जुद्ध जीतै मुझै वहै हमारो नाथ ।। १२ ।। ।। चौपई ।। सभ
भूपन न्रिप ऐस सुनायो । आप जुद्ध को बिवत बनायो । जो
कोऊ तुमल जुद्ध ह्याँ करहै । वहै याहि कन्या कह बरिहै ।।१३।।
।। दोहरा ।। सुनत बचन बीरान के चित मै भया अनंद । मथि
समुंद्र दल पाइहैं आजु कुअरि मुखचंद ।।१४।। ।।चौपई।। सभन
जुद्ध के साज बनाए । गंगा तीर बीर चलि आए । पहिरि
कवच सभ सूर सुहावैं । डारि पाखरै तुरै नचावैं ।। १५ ।।
गरजैं करी अस्व हिहनाने । पहिरे कवच सूर निजुकाने ।
किनहूँ काढि खड़ग कर लीनो । किनूँ केसरिया बाना
कीनो ।। १६ ।। ।। दोहरा ।। किनूँ तिलौने बस्त्र करि कटि

कृपा करिए और वेद-विहित विधान से (मेरी कन्या का) वरण कीजिए ।। ९ ।। ।। दोहा ।। सुभटसिंह ने कहा कि मेरे पास ऐसी ही सुन्दर स्त्री है । इसलिए मैं अनेक लोगों के कहने पर भी यह विवाह नहीं करूँगा ।। १० ।। ।। चौपाई ।। पुरोहितों ने राजा को बताया कि सुभटसिंह यह विवाह नहीं करेगा । अब आप यत्न कीजिए और यह कन्या किसी अन्य राजा को अर्पण कीजिए ।। ११ ।। ।। दोहा ।। तब कन्या ने अपने पिता से कहा कि युद्ध में जो मुझे जीतेगा मैं उसी का वरण करूँगी और वही मेरा स्वामी होगा ।। १२ ।। ।। चौपाई ।। सब राजाओं को राजा ने अपना निर्णय सुनाया और स्वयं युद्ध की व्यूह-रचना के बारे में सोचा । जो कोई तुमुल युद्ध करेगा उसी के साथ इस कन्या का विवाह होगा ।। १३ ।। ।। दोहा ।। यह बात सुनकर और यह सोचकर कि आज युद्ध के बाद राजकुमारी का मुखचन्द्र प्राप्त होगा, वीर आनन्दित हो उठे ।। १४ ।। ।। चौपाई ।। सबने युद्ध का उपक्रम किया और चलकर गंगा के किनारे आ पहुँचे । कवच पहने वीर शोभित होने लगे और घोड़ों पर ज़ीनें कसकर घोड़ों को नचाने लगे ।। १५ ।। हाथी गरजने लगे, घोड़े हिनहिनाने लगे और कवच पहनकर वीर पास आने लगे । किसी ने खड़ग निकाल लिया और किसी ने केसरिया बाना पहन लिया ।। १६ ।। ।। दोहा ।। किसी ने लाल वस्त्र पहन लिये और किसी ने कमर के साथ कृपाण

सो कसी क्रिपान। जो गंगा तट जूझिहै करिहैं स्वरग पयान ॥ १७ ॥ जोरि अनिन राजा चढ़े परा निशाने घाव। भाँति भाँति जोधा लरे अधिक ह्रिदै कर चाव ॥ १८ ॥ ॥ चौपई ॥ तब कन्या सभ सखी बुलाई। भाँति भाँति सो करी बडाई। कै लरि करि सुरसरि तट मरिहौ। नातर सुभटसिंघ कह बरिहौ ॥ १९ ॥ ॥ दोहरा ॥ तब कन्या ऐसे कहे सकल सखिन सो बैन। बिकट कटक के सुभट भट पठवों जम के ऐन ॥ २० ॥ सकल सखिन को शस्त्र दै अवर कवच पहिराइ। निकसि आपु ठाढी भई जै दुंदभी बजाइ ॥ २१ ॥ ॥ चौपई ॥ कन्या रथ आरूड़ित भई। जुद्धि समग्री सभियन दई। सफाजंग महि तुरै नचाए। सुर सुरपति देखन रन आए ॥ २२ ॥ ॥ दोहरा ॥ उमडे अमित अनेक दल बारद बूँद समान। बनि बनि न्रिप आवत भए समर सुयंबर जान ॥ २३ ॥ ॥ चौपई ॥ मचयो (मू०ग्रं०८७६) तुमल जुद्ध तह भारी। नाचे सूरबीर हंकारी। तानि धनुख रन बिसिख चलावन। माइ मरे पद कूकि सुनावत ॥२४॥ जिह बचित्र के बान लगावै। वहै सुभट म्रितुलोक सिधावै। जा पर तमकि

बाँध ली। आज जो भी गंगा-तट पर जूझेगा, स्वर्ग जायगा ॥ १७ ॥ अनेकों राजाओं ने चढ़ाई कर दी और नगाड़े पर चोटें पड़ने लगीं। योद्धा अनेकों भाव लेकर उत्साहपूर्वक विभिन्न प्रकार से युद्ध करने लगे ॥ १८ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब कन्या ने सभी सखियों को बुलाया और विभिन्न प्रकार से सबकी प्रशंसा की। वह कहने लगी कि या तो लड़ाई में गंगा के किनारे मर जाऊँगी अथवा केवल सुभटसिंह का वरण करूँगी ॥ १९ ॥ ॥ दोहा तब कन्या ने समस्त सखियों से कहा कि आज मैं पूरी सेना के वीरों को यमलोक भेज दूँगी ॥ २० ॥ सब सखियों को शस्त्र एवं कवच पहनाकर वह दुंदुभि बजाती हुई आप निकलकर खड़ी हो गई ॥ २१ ॥ ॥ चौपाई ॥ कन्या रथ पर सवार हो गई और युद्ध-सामग्री उसने सबको दे दी। युद्धस्थल में उसने घोड़े नचाए। इन्द्र एवं अन्य देवता भी युद्ध देखने आए ॥ २२ ॥ ॥ दोहा ॥ बादलों की बूँदों की तरह अनेक दल उमड़ पड़े। राजा लोग स्वयंवर की बात सुनकर सज-धजकर आने लगे ॥२३॥ ॥ चौपाई ॥ भीषण युद्ध मच गया और अहंकारी शूरवीर नृत्य करने लगे। धनुष तानकर बाण चलनें लगे और वीर 'हे माँ मरे' कह चिल्लाने लगे ॥ २४ ॥ जिसे बाण मारा जाता था वही सुभट मृत्यु को प्राप्त होता था। जिस पर कृपाण की

तेग की झारै । ता को मूँड काटिही डारै ।। २५ ।। काहू सिमटि सैहथी हनै । एक सुभट मन माहि न गनै । देखैं सुर बिबान चड़ि सारे । चटि पट सुभट बिकट कटि डारे ।। २६ ।। गीधन को मन भयो अनंदं । आजु भखै मानस के अंगं । दहिने बाएँ जोगिनि खड़ी । लै पातर स्रोनत कह अड़ी ।।२७।। मारू दुहूँ दिसन मै बाजै । दुहूँ ओर शस्त्रन भट साजै । ऊपर गिद्ध साल मँडराही । तरै सूरमा जुद्ध मचाही ।। २८ ।। ।। सवैया ।। बाल को रूप अनूपम हेरि चहूँ दिसि ते न्रिप चौपि चले । गजराजन बाजन के असवार रथी रथ पाइक जोरि भले । जब राइ बचित्र क्रिपान गही तजि लाज हठी हठ यौ बिचले । मनो राम के नाम कहे मुख ते अघ ओघन के त्रसि ब्रिंद टले ।। २९ ।। कोप प्रचंड भले मन मै भट चोपि चढ़े चहूँ घा चपि धाए । काढि क्रिपान लई बलवानन तानि कमानन बान चलाए । बूँदन ज्यों बरखे चहूँ ओरन बेधि सनाहन पार पराए । बीरन चीर बिदीरन भूमि को बारि को फारि पतार सिधाए ।। ३० ।। ।। चौपई ।। चटपट सुभट

चमक पड़ती उसका सिर कट ही जाता था ।। २५ ।। किसी पर सैहथी पकड़कर वार किया जाता था और राजकुमारी किसी भी वीर को कुछ भी नहीं समझ रही थी । देवगण विमानों पर चढ़कर देख रहे थे कि किस प्रकार शीघ्र ही सभी वीर मारे जा रहे हैं ।। २६ ।। गिद्ध यह सोचकर आनन्दित हो उठे कि आज मनुष्यों का मांस खाने को मिलेगा । दायें-बायें योगिनियाँ रक्त के लिए खप्पर लेकर खड़ी हो गई ।। २७ ।। दोनों ओर से नगाड़े बज उठे और वीर शस्त्रों सहित शोभायमान होने लगे । ऊपर गिद्ध मँड़राने लगे और नीचे शूरवीर युद्ध मचाने लगे ।। २८ ।। ।। सवैया ।। कन्या का अनुपम रूप-सौंदर्य देखकर वीर चारों दिशाओं से प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़े । गजी, बाजी और रथी शौर्यपूर्वक चल पड़े । जब राजा ने कृपाण पकड़ी तो कई हठी ऐसे विचलित हो उठे जैसे राम के नाम का उच्चारण करते ही पापों के झुंड खंड-खंड हो जाते हैं ।। २९ ।। वीर प्रचंड रूप से क्रोधित होकर चारों दिशाओं से टूट पड़े । वीरों ने कृपाणें निकाल लीं और तान-तानकर बाण चलाने लगे । बाण चारों ओर से वर्षा की बूँदों की तरह बरसने लगे और कवचों को बेधकर पार जाने लगे । बाण वीरों को चीरकर भूमि फाड़कर पाताललोक तक चले गए ।। ३० ।। ।। चौपाई ।। शीघ्र ही वीरवर कट गए

बिकट कटि गए । केते करी करन बिनु भए । टूटे रथ कूटं भट डारे । नाचे भूत प्रेत मतवारे ।। ३१ ।। मुनि नारद कहूँ बेनु बजावै । कहूँ रुद्र डमरू डमकावै । रुधिर खप्पर जुगिन भरि भारी । मारहि भूत प्रेत किलकारी ।। ३२ ।। रन अगंम कोऊ जान न पावै । डह डह डह शिव डमरु बजावै । कह कह कहूँ कालिका कहकै । जानुक धुजा काल की लहकै ।। ३३ ।। हसत पारबती नैन बिसाला । नाचत भूत प्रेत बैताला । कह कहाट कहूँ काल सुनावै । भीखन सुने नाद भै आवै ।। ३४ ।। बिनु सीसन केतिक भट डोलहि । केतिन मारि मारि करि बोलहि । किते तमकि रन तुरैं नचावैं । जूझि कितक जमलोक सिधावैं ।। ३५ ।। कटि कटि परे सुभट छित भारे । भूप सुता करि कोप पछारे । जिनके परी हाथ नहि प्यारी । बिनु मारे हनि मरे (मू०ग्रं०८७७) कटारी ।। ३६ ।। ।। दोहरा ।। मोड़तेस अंबेर पति अमित सैन लै साथ । बाल निमिति आवत भए गहै बरछियै हाथ ।। ३७ ।। बिकट सिंघ अंबेर पति अमिटसिंघ तिह नाम ।

और कितने ही हाथी कर्णविहीन हो गए । रथ टूट गए, वीर काट-कूट डाले गए और मस्त भूत-प्रेत नाचने लगे ।। ३१ ।। कहीं नारद मुनि वीणा बजाने लगे और कहीं रुद्र डमरू बजाने लगे । योगिनियाँ रुधिर के खप्पर भरने लगीं और भूत-प्रेत किलकारियाँ मारने लगे ।। ३२ ।। इस अनोखे और समझ में आनेवाले युद्ध में शिव डमरू डमडमा रहे हैं । कालीदेवी अट्टहास कर रही हैं और ऐसी लग रही हैं मानों काल का झंडा लहरा रहा हो ।। ३३ ।। पार्वती अपने विशाल नेत्रों का प्रदर्शन कर हँस रही हैं और भूत-प्रेत-बैताल नृत्य कर रहे हैं । काल के क़हक़हे भीषण रूप से सुनाई दे रहे हैं और भय उत्पन्न कर रहे हैं ।। ३४ ।। कितने हो शूरवीर बिना सिर के घूम रहे हैं और कितने ही 'मार,मार' चिल्ला रहे हैं । अनेकों भड़ककर युद्ध में अश्वों को नचा रहे हैं और अनेकों ही जूझकर यमलोक पहुँच रहे हैं ।। ३५ ।। धरती पर कई महाबली कटकर गिर रहे हैं और राजकुमारी नें क्रोधित होकर अनेकों को पछाड़ फेंका है । जिनके हाथ वह राजकुमारी नहीं लगी वे बिना मारे ही स्वयं अपनी कटारों के वार से मर गए ।। ३६ ।। ।। दोहा ।। अब आमेर और मेड़ता के राजा अपार सेना साथ लेकर हाथ में बरछी आदि लेकर उस राजकुमारी के लिए आ पहुँचे ।। ३७ ।। दुर्दमनीय आमेर पति का नाम

कबहूँ दई न पीठ रन जीते बहु संग्राम ।।३८।। ।। चौपई ।। ते त्रिप जोरि सैन द्वै धाए। भाँति भाँति बाजित्र बजाए। राज सुता जब नैन निहारे। सैना सहित मार ही डारे ।।३९।। जब अबला त्रिप दोऊ सँघारे। ठटके सुभट सकल तब भारे। खेत छाडि यह तरुनि न टरिहैं। सभहिन को प्रानन बिनु करिहैं ।। ४० ।। बूँदीनाथ रणुत कट धायो। अधिक मदुत कट सिंघ रिसायो। नाथ उजैन जिसै जग कहई। वा कहि जीतै जग को रहई ।। ४१ ।। जब अबला आवत वहु लहे। हाथ हथ्यार आपने गहे। अधिक कोप करि कुवति प्रहारे। छिनिक बिखैं दल सहित सँघारे ।। ४२ ।। गंगांद्री जमुनांद्री हठे। सारस्वती ह्वै चले इकठे। सतुद्रवाइ अति द्रिड़ पग रोपे। बयाहाद्री सिगरे मिलि कोपे ।।४३।। ।। दोहरा ।। परम सिंघ पूरो पुरख करमसिंघ सुर ग्यान। धरमसिंघ हाठो हठी अमित जुद्ध की खान ।। ४४ ।। अमरसिंघ अरु अचलसिंघ मन मै कोप बढाइ। पाचौ भूप पहारियै सनमुखि पहुचे आइ ।।४५।। ।। चौपई ।। परबतीस पाचों त्रिप धाए। खसीया अधिक

अमिटसिंह था। उसने युद्ध में कभी भी पीठ नहीं दिखाई ।। ३८ ।। ।। चौपाई ।। वे दोनों राजा सेनाओं को इकट्ठा कर चल पड़े और उन्होंने अनेक प्रकार के वाद्य बजाए। राजकुमारी नें जब यह देखा तो उन सबको सेना-सहित मार ही डाला ।। ३९ ।। जब राजकुमारी ने दोनों राजाओं को मार डाला तो सभी वीर स्तंभित हो गए। वे सोचनें लगे कि यह कन्या युद्धस्थल नहीं छोड़ेगी और सबको निष्प्राण करके ही छोड़ेगी ।। ४० ।। बूँदीनरेश रणोत्कट चल पड़ा और मद्योत्कटसिंह भी क्रोधित हो उठा। उज्जैननाथ कहा जानेंवाला राजा ललकारकर जगत को जीतनेवाला था ।। ४१ ।। उसने जब राजकुमारी को आते देखा तो उसने अपने हाथों में शस्त्र पकड़ लिये। उस नवयुवती ने क्रोधित होकर उसको और उसके दल को क्षण भर में नष्ट कर दिया ।। ४२ ।। गंगा, यमुना और सरस्वती के राजा हठपूर्वक इकट्ठे होकर चल पड़े। सतलज-व्यास के राजाओं ने अपने पैर जमाए और सभी मिलकर कुपित हो उठे ।। ४३ ।। ।। दोहा ।। परमसिंह पूर्णपुरुष, कर्मसिंह देवतुल्य और धर्मसिंह अत्यन्त हठी था और युद्ध की खान था ।। ४४ ।। अमरसिंह, अचलसिंह मन में क्रोधित हुए और ये पाँचों पहाड़ी राजा (कन्या से लड़ने के लिए उसके) सम्मुख आ पहुँचे ।। ४५ ।। ।। चौपाई ।। पाँचों पहाड़ी राजा चल पड़े। ये अपने (खाने के) लिए बहुत

संग लै आए । पाहन ब्रिशटि कोप करि करी । मारि मारि मुख ते उचरी ।। ४६ ।। दुंदभ ढोल दुहूँ दिसि बाजे । साजे शस्त्र सूरमा गाजे । कुपि कुपि अधिक ह्रिदन मै लरे । कटि कटि मरे बरंगनि बरे ।। ४७ ।। भूप पाँचऊ बान चलावैं । बाँधे गोल सामुहे आवैं । तब बचित्र दे शस्त्र प्रहारे । छिनिक बिखै सकले हनि डारे ।। ४८ ।। देइ बचित्र पाँच त्रिप मारे । और सुभट चुनि चुनि हनि डारे । सात त्रिपति अवरैं तब चले । जोधा जोर जुद्ध करि भले ।। ४९ ।। कहि राज मघधेस्वर कोपे । अंग बंग राजन पग रोपे । और कुलिंग देस पति धायो । त्रिगति देसएस्वर हूँ आयो ।। ५० ।। राजा काम रूप को धायो । अमित कटक लीने संग आयो । दारुण रण सूरन तह कर्यो । रवि ससि चक्यो इंद्र थरहर्यो ।। ५१ ।। अंग कटे (मू०ग्रं०८७८) तरफै कहूँ अँगरी । बीर परे उछरत कहूँ टँगरी । हठि हठि भिरे सुभट रन माही । जंबक गीध मासु लै जाही ।। ५२ ।। ।। अड़िल्ल ।। बाल सूरमा

से बकरे भी साथ लेकर आए थे । इन्होंने क्रोधित होकर पत्थरों की वर्षा की और मुख से 'मार-मार' का उच्चारण करने लगे ।। ४६ ।। दोनों ओर से दुंदुभि-ढोल आदि बजने लगे और सुसज्जित होकर शूरवीर गरजने लगे । वे अत्यधिक कुपित होकर लड़ने लगे और मर-मरकर अप्सराओं का वरण करने लगे ।। ४७ ।। पाँचों राजा बाण चला रहे थे और गोल बाँधकर सामने की ओर बढ़ रहे थे । तब (राजकुमारी ने) विचित्र प्रकार से शस्त्रों द्वारा प्रहार किया और क्षण भर में सबको चुन-चुनकर मार डाला ।। ४८ ।। अनोखे तरीके से उन पाँचों को तथा अन्य वीरों को चुन-चुनकर मार डाला । तब सात राजा और चले जो युद्धकर्म के महान योद्धा थे ।। ४९ ।। मगधेश्वर क्रोधित हो उठा और अंग-बंग के राजाओं ने पैर जमा दिए । कलिंग देश का राजा भी चला और इस प्रकार तीनों ओर से देशों के राजा आ पहुँचे ।। ५० ।। कामरूप का राजा अपरिमित सेना लेकर आ पहुँचा । इन वीरों ने भीषण युद्ध किया, जिसे देखकर सूर्य, चन्द्र तथा इन्द्र भी काँप उठे ।। ५१ ।। कहीं अंग कट गए, कहीं अँगुलियाँ तड़फड़ाने लगीं । वीर कहीं पर और टाँगें कहीं पर उछल रही थीं । सभी शूरवीर हठपूर्वक युद्ध में भिड़ रहे थे और गीदड़ गिद्ध-मांस ले जा रहे थे ।। ५२ ।। ।। अड़िल्ल ।। बाला ने क्रोधित होकर शूरवीरों को मार डाला । जिनको

मारे कोप बढाइकै। जो चितु रहै सँघारे रथहि धवाइकै। पैदल अमित बिदारे अति चित कोप करि। हो रथी गजी हनि डारे शस्त्र अनिक प्रहरि ।। ५३ ।। ।। चौपई ।। सपतावत न्रिप बाल निहारे। अमित कोप करि बिसिख प्रहारे। स्यंदन सहित सूत सभ घाए। सैन सहित म्रितलोक पठाए ।। ५४ ।। अवर न्रिपत तबही उठि धाए। बाँधे गोल सामुहे आए। दसौ दिसन क्रुद्धित ह्वै ढूके। मारैं मार बक्र ते कूके ।। ५५ ।। ।। दोहरा ।। बीरकेत बाँको रथी चित्रकेत सुरग्यान। छत्रकेत छत्री अमित बिकट केत बलवान ।। ५६ ।। इंद्रकेत उपइंद्र धुज चित अति कोप बढाइ। गीधकेत दानव सहित तहाँ पहूँचे आइ ।। ५७ ।। सपत न्रिपति आयुध धरे अमित सैन लै साथ। धाइ परे नाहिन डरे कढे बढारी हाथ ।।५८।। ।।चौपई।। शस्त्र सँभारि सूरमा धाए। जोरे सैनकुअरि ढिग आए। आयुध हाथ बचित्र धरे। अमित सुभट प्रानन बिनु करे ।। ५९ ।। बीरकेत को मूँड उतार्यो। चित्रकेत कटि ते कट डार्यो। छत्रकेत छत्री पुनि घायो। बिकटकेत म्रितलोक पठायो ।।६०।।

चाहा रथ दौड़ाकर मार डाला। असंख्य पैदलों को कुपित होकर मार डाला। रथियों, गजियों को अनेकों प्रहार कर मार डाला ।। ५३ ।। ।। चौपाई ।। राजकुमारी ने सात राजाओं को आते देखा। उसने अत्यन्त क्रोधित होकर बाण चलाए। उसने घोड़ों समेत सारथियों को मार डाला और सेना-सहित उनको मृत्युलोक भेज दिया ।। ५४ ।। तभी अन्य राजा टूट पड़े और झुंड बनाकर सामने आ पहुँचे। दसों दिशाओं से वे सब टूट पड़े और 'मार-मार' चिल्लाने लगे ।। ५५ ।। ।। दोहा ।। वीरकेतु बाँका रथी था और चित्रकेतु अत्यन्त चतुर था। छत्रकेतु दुर्दमनीय क्षत्रिय और विकटकेतु महाबली था ।। ५६ ।। इन्द्रकेतु, उपेन्द्रध्वज चित्त में क्रोध बढ़ाकर गिद्धकेतु दानव सहित वहाँ आ पहुँचे ।। ५७ ।। सातों राजा अपरिमित सेना लेकर हाथ में तलवारें पकड़कर अभय होकर टूट पड़े ।। ५८ ।। ।। चौपाई ।। शस्त्रों को लेकर शूरवीर चले और सेना एकत्र कर उस राजकुमारी के सामने आ गए। उसनें अपने विचित्र शस्त्रों को हाथ में पकड़कर अनेकों शूरवीरों को निष्प्राण कर दिया ।। ५९ ।। उसने वीरकेतु का सिर काट डाला और चित्रकेतु को कमर से काट दिया। पुनः छत्रकेतु क्षत्रिय को मार डाला और विकटकेतु को मृत्युलोक भेज दिया ।। ६० ।।

।। दोहरा ।। इंद्रकेत उपइंद्र धुज दोनौ हने रिसाइ। गीतकेत दानव दियै जमपुरि बहुरि पठाइ ।। ६१ ।। सैना सातहूँ त्रिपन की कोपि परी अरराइ। ते बाला तबही दए म्रितु के लोक पठाइ ।। ६२ ।। सुमतकेत सूरा बडो समरसिंघ लै संग। ब्रहम केत लै दल चला उमडि चली जनु गंग ।। ६३ ।। तालकेत खट बक्र धुज जोधा हुते बिसेख। सो या पर आवत भए किये काल को भेख ।।६४।। ।। चौपई ।। दानव गीधकेत को भ्राता। काककेत तिहूँ लोकि बिख्याता। क्रूरकेत दानव इक धायो। लीने अमित दैत दल आयो ।। ६५ ।। ।। सवैया ।। काकधुजा करि कोप तही छिन आनि पर्यो करवार निकारे। सिंघ सला सरदूल सिलीमुख साल तमालह ने अहिकारे। स्वान स्त्रिगाल सुरांतक सीस धुजा रथ नाग (मू०ग्रं०८७९) धराधर भारे। यौ बरखे नभ ते हरखे रिपु आनि दसों दिसि ते भभकारे ।।६६।। ।। दोहरा ।। माया दैत पसारिकै पुनि बोला इमि बैन। जुद्धु सुयंबर जीति तुहि लै जैहौ निजु अैन ।।६७।। ।।सवैया।। राज सुता करि कोप तिही छिन सामुहि ह्वै हथियार गहे। बलवान कमान को तानि हने कबि राम भनै चित मै जु चहे।

।। दोहा ।। इन्द्रकेतु और उपेन्द्रध्वज दोनों को क्रोधित होकर मार डाला। गीधकेतु दानव को भी यमलोक भेज दिया ।। ६१ ।। सातों राजाओं की सेना क्रोधित होकर टूट पड़ी। उस राजकुमारी ने तत्काल सबको मृत्युलोक भेज दिया ।। ६२ ।। सुमतिकेतु, समरसिंह को साथ लेकर चला और ब्रह्मकेतु ऐसे चला मानों गंगा उमड़कर बह रही हो ।। ६३ ।। तालकेतु और षट्वक्रध्वज विशिष्ट योद्धा थे जो कि काल का रूप धारण कर इस (राजकुमारी) पर टूट पड़े ।। ६४ ।। ।। चौपाई ।। गिद्धकेतु दानव का भाई काककेतु तीनों लोकों में विख्यात था। क्रूरकेतु नामक एक दानव अपार सेना लेकर वहाँ पहुँचा ।। ६५ ।। ।। सवैया ।। काककेतु क्रोधित होकर तत्क्षण कृपाण निकालकर आ पहुँचा। शेर, शिला और सर्पमुख वाला वह वीर किलकारियाँ मारने लगा। उसने अपनी माया से कुत्ते, गीदड़, वज्र, रथ, नागादि की पृथ्वी पर वर्षा कर दी। इस प्रकार इस सबकी वर्षा करते हुए दसों दिशाओं से वह फुफकारने लगा ।। ६६ ।। ।। दोहा ।। इस प्रकार की माया का प्रहार कर दैत्य बोला कि तुम्हें मैं स्वयंवर में जीतकर आज अपने घर ले जाऊँगा ।। ६७ ।। ।। सवैया ।। राजकुमारी ने क्रोधित होकर उसी क्षण सामने होकर शस्त्र पकड़े। कवि राम के कथनानुसार उसने तान-

सर सूर दइंतन के तन मै इह भाँति लगे नहि जात कहे। मनो इंद्र के बाग अशोक बिखै फुलवारिन के फल फूल रहे ॥ ६८ ॥ काढि क्रिपान महाँ कुपि कै भट कूदि परे सरदार करोरे। बाल हने बलवान घने इक फाँसिन सौ गहिकै झकझोरे। साज परे कहूँ ताज गिरे गजराज गिरे छित पै सिर तोरे। लूटे रथी रथ फूटे कहूँ बिनु स्वार फिरै हिहनावत घोरे ॥ ६९ ॥ ॥ चौपई ॥ जे भट अमित कोप करि धाए। ते बिनु तन ह्वै सुरग सिधाए। चटपट बिकट पलटि जे लरे। कटि कटि मरे बरंगनिन बरे ॥ ७० ॥ जे भट बिमुखाहव ह्वै मूए। इत के भए न उत के हूए। गरजि प्रान बीरन जिन दए। दै दुंदभी स्वरग जनु गए ॥ ७१ ॥ ॥ दोहरा ॥ जिन इस्त्रिन जरि अगनि मै प्रान आपने दीन। झगरि बरंगनिन ते तहाँ छीनि पतिन कंह लीन ॥ ७२ ॥ ॥ चौपई ॥ ऐसे बाल बीर बहु मारे। सुमतिसिंघ आदिक हनि डारे। समरसैन राजा पुनि हयो। तालकेत म्रितलोक पठयो ॥ ७३ ॥ ब्रहमकेत कह पुनि हनि दीनो। कारतिकेय धुज को बध कीनो।

तानकर कमान से बाण चलाए और मनचाहे लोगों को मार डाला। शूरवीर दैत्यों को बाण इस प्रकार लगे मानों इन्द्र की वाटिका में अशोक के पेड़ों में फूल लगे हों ॥ ६८ ॥ कृपाणें निकालकर महाबली वीर युद्ध में कूद पड़े। कन्या ने वीरों को मार डाला और फाँस में पकड़कर झकझोर दिया। कहीं ज़ीनें, कहीं घोड़े, कहीं हाथी पड़े थे और उनके सिर छटपटा रहे थे। कहीं रथी विक्षिप्त पड़े थे और कहीं बिना सवारों के घोड़े हिनहिना रहे थे ॥ ६९ ॥ ॥ चौपाई ॥ जितने भी वीर क्रोधित होकर आगे बढ़े वे सब निष्प्राण होकर स्वर्ग पहुँच गए। जो फुर्ती से पलटकर लड़े वे सब मारे गए और अप्सराओं ने उनका वरण कर लिया ॥ ७० ॥ जो शूरवीर युद्ध से विमुख होकर मरे, वे न इधर के हुए और न ही उधर (परलोक) के हुए। जिन वीरों ने गरजकर युद्ध में प्राण दिये वे मानों दुंदुभियाँ बजाते हुए स्वर्ग पहुँच गए ॥ ७१ ॥ ॥ दोहा ॥ जिन स्त्रियों ने सती होकर प्राण त्यागे उन्होंने लड़-झगड़कर अप्सराओं से अपने पतियों को छीन लिया ॥ ७२ ॥ ॥ चौपाई ॥ इस प्रकार उस बाला ने बहुत से वीरों को मारा और सुमतिसिंह आदि को नष्ट कर डाला। पुनः राजा समरसेन को मार डाला और तालकेतु को भी मृत्युलोक भेज दिया ॥ ७३ ॥ फिर ब्रह्मकेतु को मारा और पुनः

क्रूरकेत दानव तब धायो । तुमल जुद्ध तिह ठौर मचायो ॥७४॥
कौलकेत दानव उठि धायो । कमठकेत चित अधिक रिसायो ।
केतउलूक चला दल लैकै । कुतिसित केत क्रोध तन तैकै ॥७५॥
कोलकेत लिय तबै सँघारा । कुतिसित केत मार ही डारा ।
कच्छपकेत गदा गहि घायो । केतलूक म्रितलोक पठायो ॥७६॥
जा तन बाल गदा की मारै । एकै घाइ चौथि सिर डारै ।
जा केतकि मारे तन बाना । करै बीर जमपुरी पयाना ॥ ७७॥
॥ दोहरा ॥ ता को जुद्धु बिलोकि करि कवन सुभट ठहराइ ।
जो समुहै आवत भया जमपुर दिया पठाइ ॥ ७८ ॥
॥ सवैया ॥ कोप अनेक भरे अमरारदन आनि परै कर वारि उघारे । पट्टिस (मू०ग्रं०८८०) लोह हथी परसे अमितायुध लै करि कोप प्रहारे । नारि सँभारि हथ्यार सुरारि हकारि हने नहि जात बिचारे । खेलि बसंत बडे खिलवार मनो मद चाखि गिरे मतवारे ॥७९॥ ॥ दोहरा ॥ है गै रथ बाजी घने जोधा हने अनेक । जीति सुयंबर रन रही भूपति बचा न एक ॥ ८० ॥ बाजन की बाजी परी बाजन बजे अनेक ।

कार्तिकेयध्वज का वध किया । तब क्रूरकेतु दानव वहाँ पहुँचा और उसने भीषण युद्ध प्रारम्भ कर दिया ॥ ७४ ॥ तब कौलकेतु उठकर आया और कमठकेतु चित्त में अत्यधिक क्रोधित हो उठा । उलूककेतु अपना दल लेकर और कुत्सितकेतु क्रोध से तमतमाता हुआ चला ॥ ७५ ॥ कौलकेतु का स्त्री ने तभी संहार कर दिया और कुत्सितकेतु को भी मार ही डाला । कच्छपकेतु को गदा पकड़कर मार डाला और उलूककेतु को भी मृत्युलोक भेज दिया ॥ ७६ ॥ जिसके भी शरीर पर बाला ने ग़दा से वार किया उसको एक ही वार में उसके सिर को कुचल डाला । कितनों ही को तन में बाण मारकर यमपुरी भेज दिया ॥ ७७ ॥ ॥ दोहा ॥ उसके युद्ध को देखकर भला कौन वीर सामने ठहरता था । जो भी सामने आता था उसे यमलोक पहुँचा दिया गया ॥ ७८ ॥ ॥ सवैया ॥ देवताओं को भी मार गिरानेवाले कई योद्धा क्रोधित होकर तलवारें उघाड़कर टूट पड़े । लोहे की पट्टियाँ और हाथों में फरसे एवं अनेकों अन्य अस्त्र-शस्त्र लेकर वे वार करने लगे । उस कन्या ने शस्त्रों को सँभालकर देवताओं के इतने शत्रुओं को ललकार कर मार गिराया कि उनकी गिनती नहीं हो सकती । वे ऐसे गिर रहे हैं मानों बसन्त में मद पीकर मदकची गिर रहे हों ॥ ७९ ॥ ॥ दोहा ॥ रथ, घोड़ों और अनेक योद्धाओं को नष्ट कर दिया और वह कन्या स्वयंवर जीत गई तथा

बिसिख बहुत बरसे तहाँ बचा न बाजी एक ॥ ८१ ॥ ॥ चौपई ॥ दैत दए जमधाम पठाई । बारी सुभटसिंघ की आई । तिह त्रिय कहा आइ तुम लरो । कै अब हारि मान मुहि बरो ॥ ८२ ॥ सुभटसिंघ जब यौ सुनि पायो । अधिक चित्त मै कोप बढायो । मै का जुद्ध त्रिया ते डरिहो । या को त्रास मानि यह बरिहो ॥ ८३ ॥ कहूँ मत्ति गैवर गर जाही । कहूँ पाखरे हैं हिहनाही । शस्त्र कवच सूरा कहूँ कसैं । जुगिन रुधिर खप्पर भरि हसैं ॥ ८४ ॥ ॥ सवैया ॥ स्त्री सुभटेस बडो दल लै उमड्यो गहिकै करि आयुध बाँके । बीर हठी कवची खड़गी पर सीस भई सरदार निसाँके । एक टरे इक आन अरे इक जूझ गिरे ब्रिण खाइ त्रिया के । छार चड़ाइकै अंग मलंग रहे मनौ सोइ पिये बिजया के ॥ ८५ ॥ ॥ चौपई ॥ ऐसो बीर खेत तह पर्यो । एक सुभट जीवत न उबर्यो । दस हज़ार माते गज मारे । बीस हज़ार बरबाज बिदारे ॥ ८६ ॥ तीस ऐत पैदल कह मार्यो । तेइस लच्छ

कोई भी राजा नहीं बचा ॥ ८० ॥ घोड़ों में मानों होड़ लग गई हो तथा वहाँ अनेकों वाद्य बज उठे । वहाँ अनेकों तीर बरसे तथा एक भी घोड़ा नहीं बचा ॥ ८१ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब दैत्यों को यमलोक पहुँचा दिया तो सुभटसिंह की बारी आई । तब राजकुमारी ने, उससे कहा कि या तो अब आकर तुम मुझसे लड़ो नहीं तो हार मानकर मेरा वरण करो ॥ ८२ ॥ सुभटसिंह यह सुनकर चित्त में अत्यधिक, क्रोधित हो उठा । क्या मैं स्त्री से युद्ध करने से डरता हूँ और क्या मैं इससे डरकर इसका वरण कर लूँगा ॥८३॥ कहीं मदमस्त हाथी गरज रहे थे और कहीं घोड़े हिनहिना रहे थे । कहीं शूरवीर शस्त्र और कवच कस रहे थे और कहीं योगिनियाँ रुधिर के खप्पर भरकर हँस रही थीं ॥ ८४ ॥ ॥ सवैया ॥ सुभटसिंह हाथ में भीषण शस्त्र पकड़कर और विशाल दल साथ लेकर चल पड़ा । उसकी सेना में बहुत ही हठी, खड़ग एवं कवचधारी तथा सबको संतुष्ट करनेवाले वीर थे । कोई तो टल जाता था, कोई अड़ जाता था और कोई उस स्त्री के घाव खाकर गिर पड़ता था । वे ऐसे गिर पड़ते थे मानों कोई मलंग (साधू) भंग पीकर और भभूत लगाकर गिर पड़ा हो ॥ ८५ ॥ ॥ चौपाई ॥ इतने वीर वहाँ खेत रहे कि एक भी जीवित न बचा । दस हज़ार मदमस्त हाथी और बीस हज़ार सुन्दर घोड़े मार डाले गए ॥ ८६ ॥ तीस लाख पदाति और तेईस

रथ हनि डार्यो। द्वादस लच्छ रथी अति मारिस। महाँरथी अनगनत सँघारिस ।। ८७ ।। ।। दोहरा ।। सुभटसिंघ तनहा बचा साथी रहा न एक। है गै रब बाजी घने रथ कटि गए अनेक ।।८८।। ।। चौपई ।। दुंद जुद्ध त्रिय पतिह मचायो। निरखन दिनिस निसिस रन आयो। ब्रहमा चढ़े हंस पर आए। पंच बदन हूँ तहाँ सुहाए ।। ८९ ।। त्रिय कोमल पिय बान प्रहारै। जिय ते ताँहि मारि नहि डारै। लगे बिसिख के जिन पति मरै। मुहि पैठब पावक महि परै ।। ९० ।। चारि पहर निज पति सों लरी। दुहूँअन बिसिख ब्रिशटि बहु करी। तब लौ सूर असत ह्वै गयो। प्राची दिशा चंद्र प्रगटयो ।। ९१ ।। ।। दोहरा ।। हाकाहकी आहव भयो रह्यो सुभट कोऊ नाहि। जुद्ध (मू०ग्रं०८८१) करत अति थकत भे रहत भए रन माहि ।। ९२ ।। ।। चौपई ।। लगे ब्रिनन के घाइल भए। अति लरि अधिक स्रमत ह्वै गए। आहव बिखै गिरे बिसंभारी। कर ते किनहूँ क्रिपान न डारी ।।९३।। ।। दोहरा ।। प्रेत नच्चहि जुगनि हसहि जंबुक गीध फिराहि। निसि सिगरी मुरछित रहे दुहूँ रही सुधि नाहि ।। ९४ ।।

लाख रथ नष्ट कर दिए गए। बारह लाख रथी और असंख्य महारथी मार गिराए गए ।। ८७ ।। ।। दोहा ।। सुभटसिंह अकेला बचा और उसका कोई भी साथी नहीं बचा। उसके अनेकों रथ, घोड़े, हाथी कटकर गिर गए ।।८८।। ।। चौपाई ।। उस स्त्री ने पति से द्वन्द्व युद्ध किया जिसे देखने के लिए सूर्य और चन्द्र भी रणस्थल में आ गए। ब्रह्मा हंस पर चढ़कर वहाँ आए तथा पंचानन शिव भी वहाँ शोभित होने लगे ।। ८९ ।। वह स्त्रो पति को कोमल बाण मार रही थी ताकि वह बाण लगने से मर न जाय। यदि पति मर गया तो मुझे अग्नि में जलना पड़ेगा ।। ९० ।। चार प्रहर वह अपने पति से लड़ी और दोनों ने बाणों की वर्षा की। तब तक सूर्यास्त हो गया और पूर्व दिशा में चन्द्रमा प्रकट हुआ ।। ९१ ।। ।। दोहा ।। भीषण युद्ध हुआ तथा कोई भी वीर नहीं बचा। सभी युद्ध करते-करते युद्धस्थल में थककर रह गए ।। ९२ ।। ।। चौपाई ।। घावों से वे घायल हो गए और अत्यधिक युद्ध के कारण वे थक गए। दोनों युद्धस्थल में गिर पड़े परन्तु किसी ने भी कृपाण अपने हाथ से नहीं गिरायी ।। ९३ ।। ।। दोहा ।। प्रेत हँस रहे थे, योगिनियाँ हँसकर नृत्य कर रही थीं तथा गिद्ध-गीदड़ घूम रहे थे। वे सारी रात मूर्च्छित रहे और दोनों को कोई सुधि नहीं रही ।। ९४ ।। पूर्व दिशा में

प्राची दिसि रवि प्रगटया भई चंद्र की हानि। पुनि पति त्रिय रन को उठे अधिक कोप मन रानि ।। ९५ ।। आठ जाम दोऊ उठि करि लरे। टूकत तनु त्राणन के झरे। अधिक लराई दुहूँ मचई। अथयो सूर रैन ह्वै गई ।। ९६ ।। चारि बाज बिसिखन त्रिय मारे। रथ के काटि दोऊ चक डारे। नाथ धुजा कटि भूमि गिराई। सूति दिया जमलोक पठाई ।। ९७ ।। सुभटसिंघ कह पुनि सर मार्यो। मूरछित करि प्रिथवी पर डार्यो। बिनु सुधि भए ताहि लख लीनो। आपु बेखि तिह त्रिय को कीनो ।। ९८ ।। रथ ते उतरि बारि लै आई। कान लाग करि बात सुनाई। सुनो नाथ मै त्रिया तिहारी। तुमको जो प्रानन ते प्यारी ।। ९९ ।। ।। दोहरा ।। जल सीचे जागति भयो अति तन लागे घाइ। भलो बुरो खल अखल को कछू न चीना जाइ ।। १०० ।। ।। चौपई ।। त्रिय को नाम जबै सुनि पायो। घूमत घायल बचन सुनायो। धन्य धन्य करि करी बडाई। किह निमित इह ठाँ तूँ आई ।। १०१ ।। ।। दोहरा ।। सुनु राजा मै लाज तजि याँते पहुँची आइ। जिय

सूर्य निकला और चन्द्र ओझल हुआ तो दोनों पति-पत्नी अत्यधिक क्रोधित होकर लड़ने के लिए उठे ।। ९५ ।। दोनों उठकर आठ प्रहर तक लड़े और कवचों के फट जाने से उनके शरीरों में घाव लगने लगे। दोनों में घनघोर युद्ध हुआ और दिन से रात हो गई ।। ९६ ।। स्त्री ने चारों घोड़े मार दिए और रथ के दोनों पहिये काट डाले। पति की ध्वजा को भी काटकर भूमि पर गिरा दिया और सारथि को भी यमलोक भेज दिया ।। ९७ ।। पुनः उसने सुभटसिंह को बाण मारा और मूर्च्छित कर पृथ्वी पर गिरा दिया। जव उसने उसे सुधिविहीन देखा तो उसने वधू का रूप धारण कर लिया ।।९८।। रथ से उतरकर वह कन्या पास आई और कान के पास उसने कहा कि हे नाथ, सुनो ! मैं तुम्हारी पत्नी हूँ जो कि तुम्हें प्राणों से भी प्यारी है ।। ९९ ।। ।। दोहा ।। जल के छींटों से अत्यन्त विकट रूप से घायल सुभटसिंह होश में आ गया। अव उसे भले-बुरे दुश्मन-मित्र की कोई पहचान न रही ।। १०० ।। ।। चौपाई ।। जब पत्नी की वात सुनी तो घूमकर घायल उस सुभटसिंह ने 'धन्य-धन्य' कहते हुए उसकी प्रशंसा की और उससे पूछा कि तुम यहाँ क्यों आ गई हो ? ।।१०१।। ।। दोहा ।। हे राजन् ! मैं लज्जा को त्यागकर इसलिए यहाँ आई हूँ कि यदि तुम जीवित होगे तो तुमको ले आऊँगी, परन्तु यदि तुम

ते निरखि लिआइ हौ मरे बरौगी जाइ ।। १०२ ।। त्रिप घायल घूमत द्रिगन मूँदि बचन इमि चीन । मन बांछत बरु माँगियै मै त्रिय तुम बर दीन ।। १०३ ।। ।। चौपई ।। जब मै तुहि जीवत लखि लयो । जनु बिधि नयो जनम तुहि दयो । ताते ह्रिदै शंक नहि धरियै । बहुरि ब्याह मोसौ अब करियै ।। १०४ ।। जो त्रिय कहा वहै पति मान्यो । भेद अभेद कछु दुखित न जान्यो । चकमक झारि आगि तह जारी । चारि भावरै लई पयारी ।। १०५ ।। पुनि बचित्र दे ऐस उचारौ । सुनो नाथ तुम बचन हमारौ । त्रिपरांतक अरि अति मुहि भयो । तुम बिनु मोहि अधिक दुख दयो ।। १०६ ।। तुरतु नाथ हम सो उठि रमो । सभ (मू०ग्रं०८८२) अपराध हमरो छमो । तब राजा तिह साथ बिहार्यो । त्रिय को ताप दूरि करि डार्यो ।। १०७ ।। ।। दोहरा ।। लपटि लपटि राजा रम्यो चिमटि चिमटि गई तीय । बिकट सु दुख झट पट कटे अधिक बढा सुख जीय ।। १०८ ।। ।। चौपई ।। पति रति करि रथ लयो चड़ाई । बर्यो प्रात दुंदभी बजाई । सभ राजन को दल बल हरा । आपन सुभटसिंघ पति

मर चुके होगे तो भी मैं मरकर तुम्हारा वरण करूँगी ।। १०२ ।। घायल राजा ने आँखें घुमाते हुए उससे कहा कि हे स्त्री ! तुम मनोवांछित वरदान माँगो, मैं दूँगा ।। १०३ ।। ।। चौपाई ।। मैंने जब तुम्हें देखा तो यह समझा है मानों विधाता ने तुम्हें नया जन्म दिया है । इसलिए अब शंका का त्याग कीजिए और मुझसे पुनः विवाह कीजिए ।। १०४ ।। जो स्त्री ने कहा पति ने वैसा ही किया और घायल अवस्था में वह भेद-अभेद कुछ नहीं समझ सका । वहीं पत्थर रगड़कर आग जलायी और प्रिय ने चार फेरे लिये ।।१०५।। पुनः स्त्री ने कहा कि हे नाथ ! मेरी बात सुनो । मैं काम से दुखी हूँ और तुम्हारे बिना इसने मुझे अत्यधिक दुख दिया है ।। १०६ ।। आप तुरन्त मुझसे रमण कीजिए और मेरे अपराध क्षमा कीजिए । तब राजा ने उसके साथ विहार किया और उसके कष्ट को दूर किया ।। १०७ ।। ।। दोहा ।। राजा ने लिपट-लिपटकर और स्त्री ने चिमट-चिमटकर रमण किया । उनके सभी दुख कट गए और उनके सुखों में वृद्धि हुई ।। १०८ ।। ।। चौपाई ।। पति ने रतिक्रिया करके उसे रथ पर चढ़ा लिया और दुंदुभियाँ बजाते हुए प्रातः उसे वरण कर लिया । राजकुमारी ने सभी राजाओं के गर्व को चूर किया और

करा ॥ १०९ ॥ ॥ दोहरा ॥ तुमल जुधु तिह त्रिय करा सभ राजन को घाइ। सुभटसिंघ को पति करा जै दुंदभी बजाइ ॥ ११० ॥ है गै रथ बाजी हने छीन त्रिपन बल कीन। समर सुयंबर जीति करि सुभटसिंघ पत लीन ॥ १११ ॥ ॥ चौपई ॥ दानविंद्र प्रिथवीस सँघारे। है गै रथ पैदल दलि डारे। किसू बीर को भै न धरत भी। सुभटसिंघ कह जीतब रत भी ॥ ११२ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे बावनों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ ५२ ॥ ९८९ ॥ अफजूँ ॥

अथ त्रिपनों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ रानी एक ठवर इक रहै। बिजैकुअरि ता को जग कहै। बडे राज की दुहिता सोहै। जा सम अवर न दूसर को है ॥ १ ॥ तिन सुंदर इक पुरख निहारा। कामबान ता के तन मारा। निरखि सजन की छबि उरझाई। पठै सहचरी लयो बुलाई ॥ २ ॥ कामकेल तिह संगि कमायो।

सुभटसिंह को अपना पति बनाया ॥ १०९ ॥ ॥ दोहरा ॥ उस स्त्री ने तुमुल युद्ध करके सभी राजाओं को मार डाला और दुंदुभियाँ वजाते हुए सुभटसिंह को अपना पति बनाया ॥ ११० ॥ अनेकों हाथी-घोड़े नष्ट कर दिये गए और राजाओं का बल क्षीण करते हुए समर रूपी स्वयंवर को जीतकर राजकुमारी ने सुभटसिंह को अपना पति बनाया ॥१११॥ ॥ चौपाई ॥ दानव राजाओं और पृथ्वीपतियों को मार डाला तथा हाथी, घोड़ों, पैदलों को मार डाला। उस स्त्री ने किसी भी वीर का डर नहीं माना और सुभटसिंह को जीतकर उससे रमण किया ॥ ११२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में बावनवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ॥ ५२ ॥ ९८९ ॥ अफ़जू ॥

तिरपनवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ एक रानी थी जिसको संसार विजयकुँवरि के नाम से जानता था। वह बड़े राजा की पुत्री थी और उसके समान दूसरा कोई नहीं था ॥ १ ॥ उसने एक सुन्दर पुरुष को देखा और उसके तन में काम का बाण आ लगा। उस प्रियतम की छवि देखकर वह उलझकर रह गई

भाँति भाँति सों गरे लगायो। रात्रि दो पहर बीते सोए। चित के दुहूँ सकल दुख खोए ॥ ३ ॥ सोवत उठै बहुरि रति मानै। रही रैनि जब घरी पछानै। आपु चेरियहि जाइ जगावै। तिह संग दै उहि धाम पठावै ॥ ४ ॥ इह बिध सों तिह रोज बुलावै। अंत रात्रि के धाम पठावै। लपटि लपटि तासो रति मानै। भेद और कोऊ पुरख न जानै ॥ ५ ॥ एक दिवसि तिह लिया बुलाई। कामकेल करि दयो उठाई। चेरी कह निंद्रा अति भई। सोइ रही तिह संग न गई ॥ ६ ॥ चेरी बिना जार हूँ धायो। चौंकी हुती तहाँ चलि आयो। ता को काल पहूँच्यो आई। तिन मूरख कछु बात न पाई ॥७॥ ॥ दोहरा ॥ को है रे तैं कह चला ह्यां आयो किह काज। यह तिह बात न (मू०ग्रं०८८३) सहि सक्यो चला तुरतु दै भाज ॥ ८ ॥ तिनै हटावै ज्वाब दै चेरी हुती न साथ। धाइ परे ते चोर कहि गहि लीना तिह हाथ ॥९॥ ॥ चौपई ॥ चली खबर रानी पहि आई। बैठी कहा काल की खाई। तुमरो

और उसने सहेली को भेजकर उसे बुला लिया ॥ २ ॥ उसके साथ कामकेलि की और विभिन्न प्रकार से उसे आलिंगनबद्ध किया। रात के दो पहर बीत गए और इस प्रकार उन्होंने चित्त के समस्त दुखों को समाप्त किया ॥३॥ सोकर उठकर पुनः रति-संलग्न हुए और इसी प्रकार रात्रि केवल एक घड़ी बचती थी तो दासी जाकर स्वयं उनको जगाती थी। रानी उसे दासी के साथ वापस घर भेज देती थी ॥ ४ ॥ इस प्रकार वह स्त्री उसे रोज बुलाती थी और रात्रि के अन्त में उसे उसके घर भेज देती थी। वह उन्मत्त होकर उससे रतिक्रीड़ा करती थी और इस रहस्य को अन्य कोई नहीं समझता था ॥ ५ ॥ एक दिन स्त्री ने उसे बुलाया और केलिक्रीड़ा करके उसे बाहर भेज दिया। दासी को नींद आ गई और वह उसके साथ नहीं गई ॥ ६ ॥ वह प्रेमी भी दासी के बिना ही चल पड़ा और वह वहाँ आ पहुँचा जहाँ पहरेदारों की चौकी थी। अब उसका काल आ पहुँचा था और वह मूर्ख इस रहस्य को समझ नहीं पाया था ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ पहरेदारों ने पूछा कि तुम कौन हो और यहाँ किस काम से आए हो। वह इस बात का उत्तर न दे सका और भाग खड़ा हुआ ॥ ८ ॥ दासी यदि साथ होती तो इसका उत्तर देती, इसलिए पहरेदार उसके पीछे दौड़ पड़े और उसका हाथ जा पकड़ा ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ मौत के मुँह में बैठी रानी के पास यह खबर पहुँची कि तुम्हारे मित्र को चोर समझकर पकड़ लिया गया है और इस

मीत चोर करि गह्यो। सभहूँ भेद तुहारो लह्यो ॥ १० ॥ रानी हाथ हाथ सौ मार्‍यो। केस पट करि जूट उपार्‍यो। जा दिन पिय प्यारे बिछुराही। ता सम दुख जग दूसर नाही ॥ ११ ॥ ॥ दोहरा ॥ लोकलाज के त्रास ते ताहि न सकी बचाइ। मीत प्रीत तजिकै हना सतुद्रव दयो बहाइ ॥ १२ ॥ ॥ चौपई ॥ कह्यो कि यह त्रिप बध कह आयो। इह पूछहु तुहि कवन पठायो। मारि तुरतु तहि नदी बहायो। भेद दूसरे पुरख न पायो ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे त्रिपनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ५३ ॥ १००२ ॥ अफजूं ॥

अथ चौअनो चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ मंत्री कथा सताइसी दुतिय कही त्रिप संग। सु कबिराम औरै चली तबही कथा प्रसंग ॥ १ ॥ त्रितिया मंत्री यौ कही सुनहु कथा मम नाथ। इस्त्री कह चरित्र इक कहो तुहारे साथ ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ चाँभाँ जाट हमारे रहै।

प्रकार तुम्हारे समस्त भेद का पता चल गया है ॥ १० ॥ रानी ने दुख में हाथ पर हाथ मारा और अपनी केशराशि नोचने लगी। जिस दिन प्रियतम बिछुड़ता है, उस दिन के समान दुखदायी दिन अन्य कोई नहीं होता ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ लोक-लाज के कारण मित्र को नहीं बचा सकी और प्रेम का त्याग कर उसे मारकर सतलज में बहा दिया ॥ १२ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने यह कहा कि यह राजा का वध करने आया था। यह कहकर उससे पूछने लगी कि तुम्हें किसने भेजा है। तब उसे मारकर तुरन्त नदी में बहा दिया और इस रहस्य को कोई दूसरा पुरुष नहीं जान सका ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में तिरपनवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ५३ ॥ १००२ ॥ अफजू ॥

चौवनवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ मंत्री ने राजा को चौवनवीं (सत्ताइस की दुगुनी) कथा सुनाई। अब कवि राम के कथनानुसार और ही कथा चल निकली ॥ १ ॥ फिर उसने कहा कि हे नाथ ! मैं तुमसे स्त्री का एक अन्य चरित्र कहता हूँ ॥२॥ ॥ चौपाई ॥ चाँभा नामक व्यक्ति हमारे यहाँ रहता था जिसे लोग जाट की

जाति जाट ताकी जग कहै। कांधल ता की त्रिय सौ रहई। बालमती कह कछू न कहई ॥ ३ ॥ ॥ दोहरा ॥ एक चच्छु ता के रहै मुख कुरूप के साथ। बालमती को भाखई बिहसि आपु को नाथ ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ रैनि भई कांधल तह आवत। लै जाँघै दोऊ भोग कमावत। कछुक जागि जब पाव डुलावै। द्रिग पर हाथ राखि त्रिय जावै ॥ ५ ॥ हाथ धरे रजनी जढ़ जानै। सोइ रहै नहि कछू बखानै। इक दिन निरखि जार को धायो। एक चच्छु अति कोप जगायो ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ काढि क्रिपान पहूँचियो तबै तुरत ही जार। भरि मूठी कर रेत की गयो आँखि मै डारि ॥ ७ ॥ अंध भयो बैठो रह्यो गयो जार तब भाज। एक चच्छु की बात सुनि रीझि रहे महाराज ॥ ८ ॥ १ ॥ (मू०ग्रं०८८४)

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे चौअनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ५४ ॥ १०१० ॥ अफजूं ॥

जाति का जानते थे। कांधल नामक व्यक्ति उसकी पत्नी के साथ रहता था और जाट अपनी पत्नी को कुछ भी नहीं कहता था ॥३॥ ॥ दोहा ॥ उस जाट के एक ही आँख थी और बालमती स्त्री उसे हँस-हंसकर नाथ कहती थी ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ रात होते ही काँधल आ जाता था और दोनों परस्पर रमण करते थे। पति जब थोड़ा सा जगकर पाँव हिलाता था तो पत्नी उसकी आँख पर हाथ रख देती थी ॥ ५ ॥ आँख पर हाथ रखे जाने से वह अँधेरे के कारण रात ही मानता था और विना कुछ कहे सोया रहता था। एक दिन पत्नी के प्रेमी को जाता हुआ देखकर एक नेत्रवाले जाट को गुस्सा आया ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ वह जैसे ही कृपाण निकालकर आगे बढ़ा उस प्रेमी ने मुट्ठी भरकर रेत उसकी आँख में डाल दी और भाग गया ॥७॥ वह अंधा होकर बैठा रहा और वह यार भाग गया। इस प्रकार एक चक्षु की बात सुनकर राजा प्रसन्न हो उठा ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में चौवनवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ५४ ॥ १०१० ॥ अफजू ॥

अथ पंचावनों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। उत्तर देस राव इक भारो । सूरज बंस माँझ उजियारो । रूपमती ता की बरनारी । जनुक चीरि चंद्रमा निकारी ।।१।। वह त्रिय एक नीच सो रहै । अधिक निंद ता की जग कहै । इह बिरतांत त्रिपति जब सुन्यो । अधिक कोप करि मसतक धुन्यो ।। २ ।। त्रिय की लाग त्रिपति हूँ करी । बातैं करत द्रिशटि महि परी । ताँ दिन ते तासौ हित त्याग्यो । अवर त्रियन के रस अनुराग्यो ।। ३ ।। अवर त्रियन सौ प्रीति लगाई । ता त्रिय सौ दिय नेह भुलाई । ता के धाम नित्य चलि आवै । प्रीति ठानि नहि केल कमावै ।। ४ ।। ।। दोहरा ।। चारि पहर रजनी त्रियहि रमत हुतो सुख पाइ । रोस भयो जब ते ह्रिदै घरी न भोगा जाइ ।। ५ ।। ।। चौपई ।। जब राजा पूजा कह जावै । तब वह समौ जार त्रिय पावै । मिलि बातैं दोऊ यौं करहीं । त्रिप की कानि कछू नहि धरहीं ।। ६ ।। सामुहि ताहि हुतो

पचपनवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। उत्तर देश में एक बड़ा राजा था जो कि सूर्यवंश का उजाला था। उसकी रानी रूपमती थी जो मानों चन्द्रमा से उत्पन्न हुई थी ।। १ ।। वह स्त्री एक नीच व्यक्ति के साथ रहती थी और लोग उसकी अत्यधिक निन्दा करते थे। राजा को जब यह पता लगा तो वह सिर धुन कर रह गया ।। २ ।। राजा ने स्त्री की खोज की तो वह बातें करती हुई दिखाई दी। उस दिन से उसने उससे प्रेम करना छोड़कर दूसरी स्त्रियों से प्रेम करना शुरू कर दिया ।। ३ ।। उसने अन्य स्त्रियों से प्रेम करना शुरू कर दिया और इस स्त्री को भुला दिया। वह उसके कक्ष में रोज़ आता था, प्रीति प्रदर्शित करता था परन्तु उससे रमण नहीं करता था ।। ४ ।। ।। दोहा ।। वह चारों प्रहर उससे क्रीड़ा करता था परन्तु अब रुष्ट होने से वह एक प्रहर भी उससे संभोग नहीं करता था ।। ५ ।। ।। चौपाई ।। जब राजा पूजा के लिए जाता था तो वही समय उस प्रेमी को मिलता था। वे उस समय मिलकर बातें करते थे और राजा की कोई परवाह नहीं करते थे ।। ६ ।। राजा के कक्ष का द्वार भी सामने था। एक दिन राजा दीवार

दरवाजो। लागि रहा भीतन सौ राजो। जब इह भाँति जार सुनि पायो। भाजि गयो न सक्यो ठहरायो॥ ७॥ ॥ दोहरा॥ निरखि कोप न्रिपराइ के नीच तुरतु गयो भाज। भाँति अनेक मनाइयो तऊ न थिरा निलाज॥८॥ ॥चौपई॥ तिह हित नारि जतन बहु कीने। बहुत रुपए खरचि कह दीने। कोटि करे एको नहि भयो। तिह पति डारि ह्रिदै ते दयो॥ ९॥ जब वहु बात न्रिपति चित आवै। शंकि रहै नहि भोग कमावै। यह सभ भेद इकु नारी जानै। लजत नाथ सौ कछु न बखानै॥ १०॥ ॥ दोहरा॥ तब राजे ऐसे कहा या त्रिय कछू न देउँ। नाम जार को लै तुरतु या को धनु हरि लेउँ॥ ११॥ ॥ चौपई॥ काहू कह मुहरैं चटवाई। काहू कहा मित्र की न्याई। काहू संग नेह उपजायो। किसू त्रिया संग भोग कमायो॥ १२॥ ॥ दोहरा॥ काहू कह सुभ पट दए काहू कह धनु दीन। ऐसी बिधि चेरी सकल न्रिप अपनी करि लीन॥ १३॥ ॥ चौपई॥ ऐस ही बाहर को बसि करी। सभ इसत्री न्रिप के रस ढरी। जो राजा कह भेद न देई। तिह त्रिय न्रिप

के साथ लगा सब सुनता रहा। जब प्रेमी को यह पता लगा तो वह रुक न सका और भाग गया॥ ७॥ ॥ दोहा॥ राजा का क्रोध देखकर वह नीच तुरन्त भाग गया। रानी ने उसे अनेकों प्रकार से मनाया परन्तु वह निर्लज्ज तनिक भी नहीं रुका॥ ८॥ ॥ चौपाई॥ राजा के प्रेम के लिए रानी ने बहुत प्रयत्न किया, द्रव्य भी खर्च किया, परन्तु राजा नहीं माना और उसने उस रानी को हृदय से निकाल दिया॥ ९॥ जब राजा को उस बात का विचार आता तो वह शंकालु हो उठता और उससे रमण नहीं करता था। यह सारा रहस्य एक स्त्री जानती थी जो लज्जा के कारण यह सब अपने पति से नहीं कहती थी॥ १०॥ ॥ दोहा॥ तब राजा ने सोचा कि इस स्त्री को कुछ नहीं दूँगा और इसके यार के बहाने इसका सारा धन छीन लूँगा॥ ११॥ ॥ चौपाई॥ उसनें किसी को मोहरें दीं, किसी से मित्रता की, किसी से प्रेम किया और किसी स्त्री के साथ केलिक्रीड़ा की॥ १२॥ ॥ दोहा॥ किसी को सुन्दर वस्त्र दिए और किसी को धन दिया तथा इस प्रकार समस्त दासियों को अपना बना लिया॥ १३॥ ॥ चौपाई॥ इसी प्रकार बाहर की स्त्रियों को वश में कर लिया और इस प्रकार सभी स्त्रियाँ राजा के रस में ढ़ल गईं। जो राजा को भेद नहीं देती थी उसे राजा पास

पैठन नहि देई ॥१४॥ ॥ दोहरा ॥ सभ चेरी न्रिप बसि भई सभ सौ राखत नेह । जु कछु बात तव त्रिय करै (मू०ग्रं०८८५) आनि इसै कह देह ॥ १५ ॥ सभ इस्त्रिन सों सो त्रिया जो कछु कहित बखानि । मुख वा पै हा हा करैं कहैं न्रिपति सों आनि ॥ १६ ॥ ॥ चौपई ॥ एक दिवस न्रिप मंत्र बिचार्यो । चित मै इहै चरित्र सु धार्यो । जड़ त्रिय को सभ धन हरि लेऊँ । लै अपने खरचन कह देऊँ ॥ १७ ॥ रानी की चेरी कहलावै । आनि भेद सभ न्रिपहि जितावै । त्रिय तिन कह अपनी करि मानै । मूरख नारि भेद नहि जानै ॥ १८ ॥ निजु सुत तें तिह मात कहावै । अधिक धाम ते दरब लुटावै । जो चित की तिह बात सुनावत । सो कहि करि न्रिप कह समझावत ॥ १९ ॥ भलो बुरो तुहि मै बहु कहिहों । तो पर रूठि लहत तहि रहिहों । वाको भाखि अधिक तुहि मारौ । त्रिय न लहत चित ते तुहि डारौ ॥२०॥ ॥दोहरा॥ न्रिप तासौ ऐसौ कहा रहो तिसी की होइ । भेद सकल मुहि दीजियहु जु कछु कहै त्रिय सोइ ॥२१॥ वाही की होई रहत नित तिह अधिक

नहीं आने देता था ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ सभी दासियाँ स्नेह से राजा के वश में हो गईं और उसकी रानी जो भी बात करती थी वे तुरन्त आकर राजा को कह देती थीं ॥ १५ ॥ इसी प्रकार वह रानी इन सभी स्त्रियों से जो बातें करती थी, ये सामने तो हा-हा करती थी परन्तु इधर फ़ौरन आकर राजा को बता देती थीं ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ एक दिन राजा ने मन में सोचा और यह चरित्र बनाने की युक्ति सोची कि इस जड़ स्त्री का सब धन ले लिया जाय और इसे ख़र्च करने के लिए मैं धन दिया करूँगा ॥ १७ ॥ जो रानी की दासी कहलाती थी, वह आकर राजा को सारा रहस्य बतला देती थी। रानी उसे अपनी समझती थी और मूर्खतावश इस भेद को नहीं समझती थी ॥ १८ ॥ वह दासी उसके पुत्र द्वारा माता-समान ही समझी जाती थी और वह अत्यधिक द्रव्य उस पर लुटाती थी। वह जो भी चित्त की बात उससे करती वह दासी राजा को आ बताती ॥ १९ ॥ राजा ने दासी को समझाया कि मैं तुम्हें बुरा-भला कहूँगा, तुमसे नाराज़ हो जाऊंगा। अपनी रानी की बात कर तुम्हें मारूँगा। वह स्त्री भेद नहीं समझेगी और मैं (दिखाने के लिए) तुम्हें चित्त से निकाल दूंगा ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ राजा ने दासी से कहा कि तुम उसकी होकर रहो और जो वह कहती करती है, उसका समस्त भेद मुझे देती रहो ॥ २१ ॥ वह उस रानी की होकर रह गई और

रिझाइ । जु कछु भेद अबला कहै देत त्रिपत कह आइ ।। २२ ।।
।। चौपई ।। एक तिया कह राइ बुलायो । कछुक दरब ता ते
चटवायो । मै जु कहौ कहियहु तिह जाई । हौ तो पहि
तव मित्र पठाई ।। २३ ।। ।। दोहरा ।। त्रिप नारी वहु दरबु
दै अपनी करी बनाइ । सभ ब्रितांत लै तवन को सभ कहियहु
मुहि आइ ।। २४ ।। ।। चौपई ।। मोर न कछू भेद तिहि
दिजियहु । ता के चोरि चित्त कह लिजियहु । वाही की होइ
तुम रहियहु । लै ता को अंतर मुहि कहियहु ।। २५ ।।
।। दोहरा ।। ता के मिति को नाम लै पतिया लिखी बनाइ ।
हम बिखरच रहते घने कछु धनु दैहु पठाइ ।।२६।। देस छाडि
परदेस मै बसा बहुत दिन आइ । प्रेम जानि कछु कीजियहु
मुशकल समै सहाइ ।। २७ ।। तिया तिहारे ह्वै रहे इमि
समझो मन माहि । हम से तुम कह बहुत है तुम से हम कह
नाहि ।। २८ ।। ।। चौपई ।। हमरे खरचन कह कछु दिजियहु ।
वै दिन यादि हमारे किजियहु । प्रीति पुरातन प्रिया
बिचरियहु । हम पर अधिक क्रिपा तुम करियहु ।। २९ ।।
तवन राति की बाति सँवरियहु । मो पर नारि अनुग्रहु

जो कुछ भी वह कहती थी उसका भेद आकर राजा को बता देती थी ।। २२ ।।
।। चौपाई ।। राजा ने एक स्त्री को बुलाया और उसे थोड़ा सा द्रव्य देकर
लालच दिया । उससे कहा कि जैसा मैं कहूँ वैसा करो और यह समझो कि
तुम्हें रानी के मित्र की ओर से भेजा जा रहा है ।। २३ ।। ।। दोहा ।। राजा
ने बहुत सा धन देकर उस स्त्री को अपना वना लिया और कहा कि सारा
हाल मुझसे कहती रहना ।। २४ ।। ।। चौपाई ।। मेरा भेद उसे मत वताना,
लेकिन उसका रहस्य लेकर मुझसे कहती रहना । तुम उसकी होकर रहना
और उसका भेद मुझसे कहना ।। २५ ।। ।। दोहा ।। रानी के मित्र के नाम
से राजा ने पत्र में लिखा कि मुझे ख़र्च की तंगी है मुझे काफ़ी धन भेज
दो ।। २६ ।। मैं देश छोड़कर परदेस में बसा हूँ, इसलिए प्रेम को स्मरण कर
मेरी सहायता करो ।। २७ ।। हे प्रिय ! मैं तो तुम्हारा हूँ, फिर भी मेरे जैसे
तुम्हारे पास बहुत होंगे पर तुम्हारे जैसा मुझे अन्य कोई नहीं है ।। २८ ।।
।। चौपाई ।। पुराने दिनों को याद करते हुए मुझे ख़र्च करने के लिए कुछ भेज
दो । पुरानी प्रीति का स्मरण करते हुए मुझ पर, हे प्रिय ! कृपा
करो ।। २९ ।। उस रात की बात को याद करना और मुझ पर कृपा करना ।
इस पत्र को तुम्हीं जान रही हो, किसी दूसरे व्यक्ति को इसका पता नहीं

करियहु । या पतिया कह तुही पछानै । अवर पुरख कोऊ दुतिय न जानै ।। ३० ।। ।। दोहरा ।। (मू०ग्रं०८८६) जब वै दिन हमरे हुते ए दिन तुमरे आइ । क्रिपा जानि किछु दीजियहु करियहु मोहि सहाइ ।। ३१ ।। बाचत बतिया मूढ़ त्रिय फूल गई मन माहि । तुरतु काढि बहु धनु दिया भेद लख्यो जढ़ नाहि ।। ३२ ।। ।। चौपई ।। काढि दरबु मूरख त्रिय दीनो । ता को सोध फेरि नहि लीनो । लै अपनो त्रिप काज चलायो । त्रियहि जानि मुर मित धन पायो ।। ३३ ।। ।। दोहरा ।। त्रिय जाना मुर मीत कह दरब पहूच्यो जाइ । मूड़ न माना त्रिपति हरि लीना रोज चलाइ ।। ३४ ।। ।। चौपई ।। हित मित के त्रिय दरबु लुटायो । निजु नायक सौ नेहु गवायो । हरि धनु लै त्रिप रोज चलावै । वाको मूँड मूँड नित खावै ।। ३५ ।। ।। दोहरा ।। जो जनु जासौ रुचि करै ताही को लै नामु । दरबु कढावै त्रियन ते आपु चलावै कामु ।। ३६ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे पंचावमों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ।। ५५ ।। १०४६ ।। अफजूं ।।

है ।।३०।। ।।दोहा।। कभी हमारे दिन (अच्छे) थे, अब आज तुम्हारे दिन अच्छे हैं (और मेरे बुरे हैं)। इसलिए कृपा कर मुझे कुछ दो और मेरी सहायता करो ।। ३१ ।। पत्र पढ़ते ही वह मूढ़ स्त्री फूली न समायी और बिना रहस्य को समझते हुए बहुत सा धन निकाल कर दे दिया ।।३२।। ।। चौपाई ।। मूर्ख ने धन दिया और जानने की कोशिश नहीं की। राजा ने धन से अपना काम किया और वह मूर्ख स्त्री समझती रही कि मेरा धन मेरे मित्र तक पहुँच गया है ।।३३।। ।। दोहा ।। मूर्ख स्त्री ने सोचा कि द्रव्य मेरे मित्र के पास पहुँच गया और यह न जाना कि राजा ने युक्तिपूर्वक उसका हरण किया है ।। ३४ ।। ।। चौपाई ।। उस रानी ने मित्र के प्रेम में द्रव्य लुटाया और अपने पति के प्रेम को गँवा दिया। राजा नित्य उससे धन लेने लगा और इस प्रकार उसे मूर्ख बनाकर धन खाने लगा ।। ३५ ।। ।। दोहा ।। इस प्रकार (चतुर व्यक्ति) जो जिससे प्रेम करता है उसका नाम लेकर पैसा लूटता है (और अपना काम चलाता है) ।। ३६ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में पचपनवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ।। ५५ ।। १०४६ ।। अफजू ।।

अथ छपनों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ चंद्रदेव के बंस मै चन्द्रसैन इक भूप। चंद्रकला ता की त्रिया रति के रहत सरूप ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ चंद्रदेव जबही स्वै जावै। तब त्रिय जार पास उठि जावै। केल कमाइ रहत तह जाई। तैसि ही सोइ रहत लपटाई ॥ २ ॥ सोवत जग्यो भेद न्रिप जान्यो। चित राख्यो नहि प्रगटि बखान्यो। चित्त चौगनो नेहु बढायो। मूरख नारि भेद नहि पायो ॥ ३ ॥ आँखि मूँदि जागत स्वै रह्यो। भौंदू नारि सोत सो लह्यो। तुरतु जार के तट चलि गई। उठि न्रिप कर क्रिपान गह लई ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ उठि राजा त्रिय भेस धर गहि क्रिपान ली हाथ। रानी यों जानी जियहि आवत चेरी साथ ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ पाइन को खटको नहि कर्‌यो। कर महि काढि खड़ग कहि धर्‌यो। भोग करत जब तिनै निहार्‌यो। इहै चित महि चरित बिचार्‌यो ॥ ६ ॥ रमत जार सो त्रिय लख पाई। कर महि काढि क्रिपान कँपाई। दुहूँ हाथ करि

छप्पनवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ चन्द्रवंश में चन्द्रसेन नामक एक राजा था और चन्द्रकला उसकी स्त्री थी जो कि रति के समान सुन्दर स्वरूप वाली थी ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ चन्द्रदेव जब सो जाता था वह अपने प्रेमी के पास चली जाती थी। उसके साथ रतिक्रीड़ा करती थी और लिपटकर सो रहती थी ॥ २ ॥ सोते से जगकर राजा ने भेद को जान लिया परन्तु उसे प्रकट नहीं किया। वह अपनी रानी से बल्कि चार गुना प्रेभ करने लगा और वह मूर्ख स्त्री इस रहस्य को नहीं समझ सकी ॥ ३ ॥ आँख बंद कर वह सोता रहा और उस मूर्ख स्त्री ने उसे सोता समझा। वह तुरन्त उठकर मित्र के पास चली गई और उधर राजा ने उठकर कृपाण पकड़ ली ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा ने उठकर स्त्री का वेश धारण किया और कृपाण हाथ में पकड़ ली। रानी ने समझा कि कोई दासी साथ आ रही है ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने पाँव का खटका भी नहीं किया और हाथ में खड़ग पकड़ लिया। जब इसने उन्हें रतिक्रीड़ा में संलग्न देखा तो मन में एक बात सोची ॥ ६ ॥ जब यार के साथ रमण करती स्त्री को देखा तो कृपाण निकालकर इसने चमकाई और

कुअत प्रहार्‌यो। दुहूँअन चारि टूक करि डार्‌यो ॥ ७ ॥
॥दोहरा॥ चंद्रकला को जार जुत हनि न्रिप लयो उठाइ ।(मू०ग्रं०८८७)
वैसह अपनी खाट तर राखत भयो बनाइ ॥ ८ ॥ ढरि दुहूँअन
कौ खाट तर घरी एक दो टारि। मारि मारि कहिकै उठा
कढे कोप करवार ॥ ९ ॥ चोर मोहि मारत हुतो त्रिय के
लाग्यो घाइ। काढि भगौती तुरतु मै याको दयौ सु घाइ ॥१०॥
॥ चौपई ॥ जबै लोग न्रिप पूछन आए। यहै तिनौ सौं
बचन सुनाए। जब तसकर मुहि घाव चलायो। हौ बचि
गयो त्रिया कौ घायौ ॥११॥ जब द्रिड़ घाव त्रिया के लग्यो।
तब तौ काढि भगौती जाग्यो। त्रिय के नेह कोप मन धार्‌यो।
चोरहि ठौर मार ही डार्‌यो ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ नर नारी
पुर सभ कहै धंनि राजा तव हीय। बदलो लीनो बाम को
चोर सँघार्‌यो जीय ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे छपनों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ ५६ ॥ १०५९ ॥ अफजूं ॥

दोनों हाथों से बलपूर्वक प्रहार किया तथा दोनों को चार टुकड़े कर दिया ॥७॥ ॥ दोहा ॥ चन्द्रकला को उसके मित्र समेत मार कर राजा ने उठा लिया। और अपने पलंग के नीचे रख दिया ॥ ८ ॥ पलंग के नीचे थोड़ी देर दोनों को रखकर, तलवार निकालकर राजा 'मार-मार' कहकर चिल्ला उठा ॥९॥ चोर मुझे मार रहा था, परन्तु मेरी स्त्री को मार गया। मैंने भी कृपाण निकालकर उसे तुरन्त यमलोक पहुँचा दिया ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ जब लोग राजा से पूछने आए तो उसने सबको यही बताया। जब चोर ने मुझ पर वार किया तो मैं तो बच गया पर स्त्री मारी गई ॥११॥ जब गहरा घाव स्त्री को लग चुका था तो मैंने जगकर कृपाण निकाली। स्त्री के प्रेम को अनुभव कर मैंने चोर को स्थान पर ही मार डाला ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ नगर के सब नर-नारी राजा को धन्य-धन्य कहने लगे क्योंकि राजा ने चोर को मार कर स्त्री का बदला लिया था ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में छप्पनवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ॥ ५६ ॥ १०५९ ॥ अफजू ॥

अथ सतावनों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ बंग देस बंगेस्वर राजा। सभ ही राजन को सिरताजा। कितक दिनन राजा मर गयो। सभ जग इंद्रमती को भयो ॥ १ ॥ ॥ दोहरा ॥ दिन थोरन को सत रह्यो भई हकूमति देस। राजा ज्यों राजहि कियो भई मरद के भेस ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ ऐसहि बहुत बरस ही बीते। बैरी अधिक आपने जीते। एक पुरख सुंदर लखि पायो। रानी तासौ नेह लगायो ॥ ३ ॥ अधिक प्रीति रानी को लागी। छूटै कहा निगौडी जागी। रैनि परी तिह तुरतु बुलायो। केल दुहुँनि मिलि अधिक मचायो ॥ ४ ॥ रहत बहुत दिन तासौ भयो। गरभ इंद्रमतियहि रहि गयो। उदर रोग को नाम निकार्यो। किनूँ पुरख नहि भेद बिचार्यो ॥ ५ ॥ नव मासन बीते सुत जनियो। मानौ आपु मैन सो बनियो। एक नारि के घर मै धरियो। ता को धाम दरबु सों भरियो ॥ ६ ॥ काहू कहो बात इह नाही। यौ कहि फिरि आई घर माही। दुतिय कान किनहूँ

सत्तावनवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ बंग देश में बंगेश्वर नामक राजा सभी राजाओं का सिरमौर था। कई दिनों बाद राजा मर गया और इस प्रकार उसका सारा राज्य इंद्रमती का हो गया ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ थोड़े दिनों तक उसने सतीत्व रखा और मर्द वेश में राजा के समान राज्य किया ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ इस प्रकार बहुत से वर्ष बीत गए और उसने अनेकों शत्रुओं को जीत लिया। उसने एक सुन्दर पुरुष देखा और उससे प्रेम शुरू कर दिया ॥ ३ ॥ रानी प्रेम में अत्यधिक लग गई और अब यह निगोड़ी प्रीति छूटे नहीं छूट रही थी। रानी ने रात में उसे बुलाया और स्वच्छन्द क्रीड़ा की ॥ ४ ॥ उसके साथ बहुत दिन तक रहते-रहते इंद्रमती को गर्भ रह गया। उसने उसे उदर-रोग के नाम से प्रचारित कर दिया और इस प्रकार किसी को भी पता नहीं लगा ॥ ५ ॥ नौ महीने बाद पुत्र पैदा किया, जो ऐसा लग रहा था मानों कामदेव हो। उसे उसने एक स्त्री के घर में रख दिया और उस स्त्री का घर द्रव्य से भर दिया ॥ ६ ॥ उससे यह कहकर कि किसी से नहीं कहना, वह अपने महल में आ गई। उस रानी ने क्या कहा और क्या किया, यह

नहि जाना। कहा किया तिय कहा बखाना ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ ता के कछू न धन हुतो दिया जरावै धाम। ता के घर मै सौपियो रानी को सुत राम ॥८॥ ॥ चौपई ॥ रानी इक दिन सभा बनाई। तवन त्रियादिक सभै बुलाई। जब तिह त्रिय को सुतहि (मू०ग्रं०८८८) निहार्यो। ता ते लै अपनो करि पार्यो ॥ ९ ॥ ॥ दोहरा ॥ लै पारक करि पालियो किनूँ न पायो भेद। रमा शास्त्र को सुर असुर उचरि न साकहि बेद ॥ १० ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे सतावनों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ५७ ॥ १०६९ ॥ अफजूं ॥

अथ अठावनों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ काशमीर के शहिर मै बीरजसैन नरेश। ता के दल के बलहु ते कंपति हुतो सुरेश ॥ १ ॥ चित्रदेवि ता की त्रिया बुरी ह्रिदै जिह बुद्धि। मंदसील जाको रहै चित्त की रहै कुसुद्धि ॥ २ ॥ बोलि रसोयहि तिन कही इह राजै बिखु देहु। बहुतु बढैहौ हौं तुमै अबै अधिक धन लेहु ॥ ३ ॥

कानोंकान तक किसी को खबर नहीं हुई ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ जिसके घर में दीया जलानेवाला कोई नहीं था, राम कवि के कथनानुसार उसके घर में रानी का पुत्र सौंप दिया गया ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ रानी ने एक दिन सभा की और उसमें अन्य स्त्रियों समेत उस स्त्री को भी बुलाया। जब उसने स्त्री के पुत्र को देखा तो उसे लेकर अपने हाथ में पकड़ लिया ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ उसे लेकर उसने पाला और इस तथ्य के रहस्य को कोई नहीं समझ सका। स्त्री-शास्त्र के ज्ञान का उच्चारण सुर-असुर कोई नहीं कर सकता ॥ १० ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में सत्तावनवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ५७ ॥ १०६९ ॥ अफजू ॥

अट्ठावनवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ काश्मीर में वीर्यसेन नरेश था जिसके दल-बल से इन्द्र भी काँपता था ॥ १ ॥ उसकी स्त्री चित्रदेवी थी जो हृदय और बुद्धि में बुरी और शीलवान भी नहीं थी ॥ २ ॥ उसने रसोइए से कहा कि तुम राजा को

ता की कही न तिन करी तब त्रिय चरित बनाइ । राजा कौ निउता कह्यो सऊअन सहित बुलाइ ॥४॥ ॥ चौपई ॥ राजा सऊअन सहित बुलायो । भाँति भाँति पकवान पकायो । ता मै जहर घोरि कै डार्यो । राजा जू को मार ही डार्यो ॥५॥ जब राजा जू म्रित बसि भए । तब ही पकर रसोइआ लए । वहै ताम लै ताँहि खुआर्यो । ताहू कौ तब ही हनि डार्यो ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे अठावनों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ५८ ॥ १०७५ ॥ अफजूं ॥

अथ उनसठवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ शहिर निकोदर बनियो रहै । द्वै इस्त्री जग ता के कहै । लाडमकुअरि सुहागम देई । जिन ते बहु सिच्छ्या त्रिय लेई ॥ १ ॥ बनियो अनत देस कह गयो । अधिक शोक दुहूँअन को भयो । बहुत काल परदेस बितायो । खाटि कमाइ देस कह आयो ॥ २ ॥ कितक दिनन बनिया

विष दे दो, मैं तुम्हें धन आदि देकर बहुत बढ़ाऊँगी ॥ ३ ॥ जब उसने रानी का कहा नहीं माना तो रानी ने प्रपंच किया और राजा को उसके साथियों समेत भोजन पर बुलाया ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजा को साथियों-समेत बुलाया और भाँति-भाँति के पकवान बनाए । उनमें ज़हर घोल दिया और इस प्रकार राजा को मार ही डाला ॥ ५ ॥ जब राजा मर गया तो इसने तुरन्त रसोइए को पकड़ लिया । वही भोजन उसे खिलाया और मार डाला ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में अट्ठावनवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ५८ ॥ १०७५ ॥ अफजू ॥

उनसठवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ नकोदर शहर में एक बनिया रहता था; संसार जानता था कि उसके दो स्त्रियाँ हैं । उनका नाम लाडमकुँवरि और सुहागमदेवी था । स्त्रियाँ उनसे विभिन्न प्रकार की शिक्षा लिया करती थीं ॥ १ ॥ बनिया जब दूसरे देश में गया तो उनको बहुत शोक हुआ । उसने बहुत सा समय परदेश में बिताया और खा-कमाकर वह देश में वापस आया ॥ २ ॥

घर आयो। दुहूँ त्रियन पक़वान पकायो। वहु जानै मोरे घर ऐहै। वहु जानै मेरे ही जैहै ॥ ३ ॥ एक गाव बनिया रहि गयो। आवत चोर त्रियन को भयो। जागत हेरि त्रियहि नहि आयो। दुतिय त्रिया के घर कौ धायो ॥ ४ ॥ त्रिय जान्यो मेरे पति आए। मम घर ते हटि याके धाए। दोऊ चली हम पतिहि हिटैहैं। मोरि आपने धाम लयैहैं ॥५॥ ॥ दोहरा ॥ दोऊ त्रिय धावत भई (मू०ग्रं०८८६) अधिक कोप मन कीन। तसकर को पति जानिकै दुहू त्रियन गहि लीन ॥ ६ ॥ तसकर को पति भाव ते देख्यो दिया जराइ। चोर जानि कुटवार के दीनो धाम पठाइ ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे उनसठवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ ५९ ॥ १०८२ ॥ अफजूं ॥

अथ साठवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ राजा रनथंभौर को जाको प्रबल प्रताप। राव रंक जाको सदा निस दिन जापहि जाप ॥ १ ॥ रंगराइ

कितने ही दिनों बाद जब बनिया आया तो दोनों स्त्रियों ने पकवान बनाए। एक सोचने लगी कि वह मेरे घर आएगा और दूसरी सोचने लगी कि वह मेरे घर पर ही खाना खाएगा ॥ ३ ॥ मार्ग में बनिया एक गाँव में रुक गया और इधर स्त्रियों के घर में चोर आ गया। जब उसने एक स्त्री को जागते हुए देखा तो वह दूसरी स्त्री के घर की ओर चला ॥ ४ ॥ पहली स्त्री ने देखा कि शायद मेरा पति आया है और मेरे घर से हटकर दूसरी के घर चला गया है। दोनों ही चल पड़ीं कि हम अपने पति को अपने घर लेकर आएँगी ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ दोनों स्त्रियाँ क्रोधित होकर चल पड़ीं और चोर को पति समझकर उन्हें पकड़ लिया ॥ ६ ॥ दीपक जलाकर दोनों ने चोर को पति-भाव से देखा और चोर जानकर उसे कोतवाल के पास क़ैद करके भेज दिया ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में उनसठवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ॥ ५९ ॥ १०८२ ॥ अफजू ॥

साठवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ रणथम्भौर का प्रबल प्रतापी राजा था जिसका राजा, रंक सभी रात-दिन स्मरण करते थे ॥ १ ॥ उसकी स्त्री रंगराय थी जो अत्यन्त

ता की त्रिया अति जोबन तिह अंग। राजा कौ प्यारी रहै जिह लखि लजै अनंग ॥ २ ॥ एक दिवस तिव राव नै सुभ उपबन मै जाइ। रंगराइ सुत मानिकै लीनी कंठ लगाइ ॥३॥ रंगराइ सौ राइ तब ऐसे कही बनाइ। ज्यो स्त्री द्वै मै गही तौहि न नर गहि जाइ ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ केतक दिवसि बीत जब गए। रंगराइ सिमरन बच गए। एक पुरख सौ नेह लगायो। बिना समस जाकौ लखि पायो ॥ ५ ॥ नारी को तिह भेस बनायो। राजा सौ इह भाँति जतायो। ग्रहि ते बहिनि हमारी आई। हम तुम चलि तिह करै बडाई ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ टरि आगे तिह लीजिऐ बहु कीजै सनमान। मोरे ढिग बैठारियै अमित दरबु दै दान ॥ ७ ॥ तिह त्रिप टरि आगे लिये बैठार्यो त्रिय तीर। अति धनु दै आदर कर्यो भए त्रियन के भीर ॥ ८ ॥ जब राजा ढिग बैठयो तब दुहूँअन लपटाइ। कूकि कूकि रोवत भई अधिक सनेह बढाइ ॥ ९ ॥ रंग राइ तिह पुरख को त्रिय को भेस सुधारि। दच्छिनंग राजा लयो बामैं अंग सु यार ॥ १० ॥ यह भगनी तैं प्रानपति याते प्रीतम कौन। दिन देखत त्रिय

यौवनवती थी। वह राजा को अत्यन्त प्यारी थी और कामदेव भी उसे देखकर लज्जित होता था ॥ २ ॥ एक दिन राजा ने उपवन में जाकर रानी को गले से लगा लिया ॥ ३ ॥ राजा कहने लगा कि हे रानी! जैसे मैंने दो स्त्रियों को वश में कर रखा है वैसे तुम दो व्यक्तियों को वश में नहीं कर सकती ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ कितने ही दिन बीत गए और रंगराय को बातें भूल गईं। उसने एक पुरुष से प्रेम किया। वह व्यक्ति मूँछविहीन था ॥ ५॥ उसका वेश नारी का बनाया और रानी ने राजा से कहा कि घर में मेरी बहन आई है तुम चलकर उसकी प्रशंसा करो ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ आगे पहुँचकर उसका सम्मान कीजिए और उसे अपरिमित द्रव्य दान में दीजिए ॥७॥ राजा ने आगे बढ़कर उसे स्त्री के पास बैठाया। उसे अपरिमित धन दिया। उसके पास स्त्रियों की भीड़ लग गई ॥ ८ ॥ जब वह राजा पास में बैठा तो दोनों स्त्रियाँ लिपटकर चीख़-चीख़कर रोने लगीं और अत्यधिक स्नेह जताने लगी ॥ ९ ॥ रंगराय ने उसका वेश स्त्री का बनाकर दायीं तरफ़ राजा को बैठाया और बायीं तरफ़ अपने प्रेमी को बैठा लिया ॥१०॥ यह मेरी बहिन है और तुम मेरे प्राणपति हो, मुझे इससे बढ़कर कौन प्रिय है। देखो

छलि गई जिह लखि भजियै मौन ॥ ११ ॥ अतिभूत गति बनितान की जिनै न पावै कोइ। भेद सुरासुर ना लहै जो चाहैं सो होइ ॥ १२ ॥ १ ॥ (मू०ग्रं०८६०)

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे साठवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ ६० ॥ १०६४ ॥ अफजूं ॥

अथ इकासठवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ बनियो ग्वारिएर के माँही। घर धन बहु खरचत कछु नाँही। ता के घर तसकर इक आयो। तिन शाहुनि सों बचन सुनायो ॥१॥ बनिक बोलि शाहुनि सो भाख्यो। राम हमै निपूत करि राख्यो। धन बहु धाम काम किह आवै। पुत्र बिना मुर बंश लजावै ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ सुनु शाहुनि हमरे बिधहि पूत न दीना धाम। चोरहु सुत कै राखियै जो ह्याँ ल्यावै राम ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ चोरहु होइ पूत करि राखो। ता ते कछू न मुख ते भाखो। शाहुनि सहित बनिक जब मरिहै। हमरो कवन दरबु लै करिहै ॥ ४ ॥ यह जब

स्त्री दिन-दहाड़े छल गई। ऐसी स्त्री को देखकर तो मौन-साधना ही श्रेयष्कर है ॥ ११ ॥ स्त्रियों की अद्भुत लीला है, इसका रहस्य सुर-असुर कोई नहीं जान सकता। ये जो चाहें वही होता है ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में साठवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ॥ ६० ॥ १०६४ ॥ अफजू ॥

इकसठवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ ग्वालियर में एक बनिया रहता था, जिसके घर में बहुत धन था पर खर्च नहीं करता था। उसके घर में एक चोर आ गया तो उसने सेठानी से कहा ॥ १ ॥ सेठ ने सेठानी से कहा कि ईश्वर ने हमें पुत्र-हीन ही रखा है। घर में अपार धन है, परन्तु यह किस काम का है। पुत्र के बिना तो मेरा वंश लज्जित होता है ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ हे सेठानी! सुनो; परमात्मा ने हमारे घर में पुत्र नहीं दिया है। यदि भगवान यहाँ कोई चोर ही ला दे तो उसे हम पुत्र बनाकर रख लें ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ चोर भी हो तो उसे पुत्र बना लें और मुँह से कुछ नहीं कहेंगे। सेठानी समेत जब यह सेठ मर जायगा तो हमारे द्रव्य का क्या होगा ॥ ४ ॥ जब चोर के कानों में

भनक चोरि सुनि पाई । फूलि गयो बस्त्रन नहि माई । जाइ
बनिक कौ पूत कहैहों । याके मरे सकल धन लैहों ।। ५ ।।
तब लौ चोर द्रिशटि पर गयो । अधिक बनिक के आनंद
भयो । पल्यो पलोस्यो सुतु बिधि दीनो । ता को पूत पूत
कहि लीनो ।। ६ ।। खाट उपर तसकरहि बैठायो । भलो
भलो पकवान खवायो । पूत पूत करि शाहुनि धाई । शाहु
चउतरे जाइ जताई ।। ७ ।। ।। दोहरा ।। पंच पियादे संग
लै चोरहि दयो दिखाइ । इह पैंडे आयो हुतो मै सुत कह्यो
बुलाइ ।। ८ ।। ।। चौपई ।। अमित दरबु हमरे बिधि दयो ।
पूत न धाम हमारे भयो । याकउ हम कहि पूत उचारो ।
ताते तुम मिलिकै नहि मारो ।। ९ ।। पूत पूत बनिया कहि
रह्यो । पंच पयादन तसकर गह्यो । ता को कह्यो एक
नहि कीनो । लै तसकर फासी सो दीनो ।। १० ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इकसाठवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ६१ ।।,११०४ ।। अफजूं ।।

यह भनक पड़ी तो वह फूला न समाया । वह सोचने लगा कि मैं इस वणिक् का पुत्र कहलाऊँगा और इसके मरने पर समस्त धन का स्वामी बन जाऊँगा ।। ५ ।। तब तक चोर पर नज़र पड़ जाने से वणिक् अत्यधिक प्रसन्न हो उठा कि पलापलाया पुत्र मिल गया । उसे पुत्र-पुत्र कहकर स्वीकार किया ।। ६ ।। उसे पलंग पर बैठाया और सुन्दर भोजन खिलाया । पुत्र-पुत्र चिल्लाती हुई सेठानी भी आयी और सेठ ने भी बाहर चबूतरे पर आकर सबसे कहा ।। ७ ।। ।। दोहा ।। पाँच सिपाही साथ लेकर चोर को दिखा दिया और बताया कि यह रास्ते पर आ रहा था, इसे मैंने पुत्र मान लिया है ।। ८ ।। ।। चौपाई ।। परमात्मा ने अपार द्रव्य हमें दिया है पर पुत्र नहीं दिया । इसे हमने पुत्र माना है अतः इसे मारो मत ।। ९ ।। वणिक् उसे पुत्र-पुत्र कहता रहा और इधर पाँचों सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया । वणिक् की एक नहीं मानी और उस चोर को फाँसी पर चढ़ा दिया ।। १० ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में इकसठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ६१ ।। ११०४ ।। अफजू ।।

अथ बासठवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ महाँसिंघ के घर बिखै तसकर रहै अपार । नितिप्रति ता के ल्यावही अधिक खजानो मारि ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ हरन दरबु तसकर चलि आयो । सो गहि लयो जान नहि पायो । महाँसिंघ ता को यौ कहियो । तुम अपने चित मैं द्रिड़ रहियो ॥२॥ ॥ दोहरा ॥ तुमरे सिर पर काढि कै ठाढे ह्वै तरवारि । तुम डरि कछु न उचारियो लैहो जियत उबारि ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ तुमको मारन कौ लै जैहै । काढि भगौती ठाढे ह्वैहै । ढीठतु आपन चित मै गहियहु । (मू०ग्रं०८६१) त्रास मानि कछु तिनै न कहियहु ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ ता कौ ढीठ बधाइकै काढि लई तरवारि । तुरतु घाव ताको कियो हनत न लागी बारि ॥ ५ ॥ ता को हनि डारत भयो कछू न पायो खेद । गाँव सुखी अपने बस्यो किनूँ न जान्यो भेद ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे बासठवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ६२ ॥ १११० ॥ अफजूं ॥

बासठवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ महासिंह के घर में अनेक तस्कर रहते थे जो कि नित्य काफ़ी धन-दौलत चुराकर लाते थे ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसके यहाँ चोरी करने चोर आया। उसे महासिंह ने पकड़ लिया और जाने नहीं दिया। महासिंह ने उससे कहा कि तुम मन पक्का किए रहना ॥२॥ ॥दोहा॥ तुम्हारे सिर पर सभी तलवार निकाले खड़े हैं। तुम डर के मारे कुछ नहीं कहना, मैं तुमको बचा लूँगा ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ तुमको मारने के लिए ले जायेंगे, क्योंकि सभी तलवार निकालकर खड़े हैं। तुम दिल पक्का रखना और डर के कारण कुछ मत कहना ॥४॥ ॥दोहा॥ उसको बँधवाकर तलवार निकाल ली और तुरन्त उसे घायल करके मार दिया ॥ ५ ॥ उसको मार डालने में उसे तनिक भी दुख नहीं हुआ। इस प्रकार वह अपने गाँव में सुखपूर्वक बसने लगा तथा किसी को भी इस रहस्य का पता न लग सका ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में बासठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ६२ ॥ १११० ॥ अफजू ॥

अथ त्रिसठवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। प्रबलसिंघ दच्छिन को न्रिप बर । बहु भाँतनि को धन ता के घर । चारु चचछु ता की त्रिय रहई । जो वहु कहै सु राजा करई ।। १ ।। अति सुंदरि वहु नारि सुनीजै । ता को पटतर का को दीजै । राजा अधिक प्यार तिह राखै । कटु बच कदी न मुख ते भाखै ।। २ ।। बंगस के राजे कहलावैं । भाँति भाँति के भोग कमावैं । इक सुंदर नर रानी लहियो । तबही आनि मैन तिह गहियो ।। ३ ।। तासौ नेहु रानियहि कीनो । ग्रहि ते काढि अमित धनु दीनो । तिह जारहि इह भाँति सिखायो । आपु चरित इह भाँति बनायो ।। ४ ।। ।। दोहरा ।। दरवाजे इह कोट के रह्यो सवेरे लागि । अति दुरबल को भेस करि सभ बस्त्रन को त्याग ।। ५ ।। ।। चौपई ।। ता के ग्रहि जब न्रिप पग धार्यो । बिखु दै ताहि मारि ही डार्यो । दीन बचन तब त्रियहि उचारे । मोहि त्याग गे राज हमारे ।। ६ ।। मरती बार न्रिपति मुहि कह्यो । सो मै बचन हिदै द्रिड़

तिरसठवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। दक्षिण का एक प्रतापी राजा प्रबलसिंह था जिसके पास अपार द्रव्य था । सुन्दर नयनोंवाली उसकी स्त्री थी और जो वह कहती थी राजा वैसे ही करता था ।। १ ।। वह अत्यन्त सुन्दर नारी सुनी (कही) जाती थी, उसकी उपमा भला किससे दी जाय । राजा भी उसे कभी कटु वचन नहीं कहता था और खूब प्यार करता था ।। २ ।। वे बंगश (सोमाप्रांत का एक क्षेत्र) के राजा थे और विभिन्न प्रकार के भोग-विलासों में तल्लीन रहते थे । रानी ने एक सुन्दर व्यक्ति को देखा और कामासक्त हो गई ।।३।। रानी ने उससे खूब प्यार किया और उसे घर से खूब धन-दौलत दी । इस प्रेमी को सिखाया और इस प्रकार प्रपंच किया ।। ४ ।। ।। दोहा ।। उससे कहा कि तुम क़िले के दरवाज़े पर प्रातः वस्त्र आदि त्यागकर दीन-हीन अवस्था में खड़े रहना ।। ५ ।। ।। चौपाई ।। अब राजा जब रानी के घर आया तो उसे रानी ने विष पिलाकर मार डाला । तब रानी दुखी होकर बोली कि मुझे मेरे प्राणप्यारे छोड़ गए हैं ।।६।। मरते समय जो राजा ने मुझसे कहा है, वह मैंने मन में पक्का कर लिया है । राजा ने कहा है कि राज्यसत्ता

गह्यो । राज साज दुरबल को दीजो । मेरो कह्यो मानि
त्रिय लीजो ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ अति सुंदर दुरबल घनो कोट
दुआरे होइ । राज साज तिह दीजियहु लाज न करियहु
कोइ ॥ ८ ॥ ॥ चौपई ॥ हम तुम कोट दुआरै जैहैं । ऐसे
पुरख लहै तिह ल्यैहैं । राज साज ताही को दीजै । मेरो
बचन स्रवन सुनि लीजै ॥ ९ ॥ मरते पति मुहि बचन उचारे ।
सो हौ उचरत साथ तुमारे । दिजबर स्राप भूप को दियो ।
ताँते भेख रंक को कियो ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ इही कोट
के द्वार मै बसियहु भूपति जाइ । देह त्रिपति की त्याग कै
देह रंक की पाइ ॥ ११ ॥ तब राजै तासो कह्यो ह्वैहै कबै
उधारि । जो त्रिप सो दिजबर कह्यो सो मै कहो सुधार ॥१२॥
॥ चौपई ॥ (मू०ग्रं०८९२) कछु दिन दुरग द्वार सो रहिहों ।
अति दुख देह आपनी लहिहों । खोजत तब रानी ह्याँ ऐहै ।
तुमको राज आपनो दैहै ॥ १३ ॥ ॥ दोहरा ॥ राज वैस ही
करैगो रूप न वैसा होइ । ज्यों राजा मुहि कहि मुए तुमै
कहत मै सोइ ॥ १४ ॥ ॥ चौपई ॥ हम तुम मिलि खोजन

किसी दुर्बल व्यक्ति को देना और मेरा कहा अवश्य मान लेना ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ जो कोई अत्यन्त सुन्दर हो परन्तु दुर्बल हो और क़िले के दरवाज़े पर खड़ा हो उसे निस्संकोच राज्य दे देना ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ हम और आप सब क़िले के द्वार पर चलेंगे और यदि ऐसा पुरुष कोई मिल जाय तो मेरी बात को कानों से सुनो कि राज-काज सब उसी को दे देना ॥ ९ ॥ मरते समय मेरे पति ने ऐसा ही मुझसे कहा था, वह मैं आप लोगों के सामने कह रही हूँ । ब्राह्मणों ने राजा को श्राप दे दिया था, इसीलिए उन्होंने एक निर्धन का वेश धारण किया है ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ इसी क़िले के द्वार पर राजा की देह त्यागकर और निर्धन की देह पाकर राजा रह रहा है ॥ ११ ॥ तब राजा ने कहा कि मेरा उद्धार कैसे होगा । इस संदर्भ में ब्राह्मण ने राजा से कहा उसे मैं बताती हूँ ॥ १२ ॥ ॥ चौपाई ॥ कुछ दिन तुम क़िले के द्वार पर अपनी देह को दुख देते हुए रहोगे तब रानी एक दिन खोजती हुई यहाँ आएगी और तुम्हें अपना राज्य वापस देगी ॥१३॥ ॥दोहा॥ बेशक तुम्हारा रूप वैसा नहीं होगा पर राज्य तुम उसी भाँति करोगे । यह सब जो राजा ने मुझसे कहा वह मैं बता रही हूँ ॥ १४ ॥ ॥ चौपाई ॥ हम और आप मिलकर उसे खोजने चलेंगे और राजा ने जसा कहा है वैसा ही करेंगे ।

तह जैयै। जो त्रिप कह्यो सु काज कमैयै। तब हो जियत जगत मै रहिहों। ऐसो रूप भूप जब लहिहों ॥ १५ ॥ रानी को लै मंत्री धायो। तवन पुरख करि त्रिप ठहरायो। सकल देस को राजा कीनो। राज साज सभ ता को दीनो ॥ १६ ॥ ॥ दोहरा ॥ निजु त्रिप आपु सँघारिकै रानी चरित बनाइ। रंकहि लै राजा कियो हिदै हरख उपजाइ ॥ १७ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया-चरित्रे मंत्री भूप संवादे त्रिसठवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ६३ ॥ ११२७ ॥ अफजूं ॥

अथ चौसठवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ मैंगलसिंघ राव इक रहई। रघुबंसी जा को जग कहई। ता के भवन एक बर नारी। जनु बिधि अपन करन गड़ि डारी ॥१॥ ॥ सोरठा ॥ दंतप्रभा तिह नाम जाको जग जानत सभै। सुर सुरपति अभिराम थकित रहत तिह देखि दुति ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ इक चेरी ता के भवन जा मै अति रस रीति। बेद ब्याकरन शास्त्र खट पड़ी कोक

मैं तभी इस संसार में जीवित रह सकूँगी जब इस प्रकार के राजा को पा लूँगी ॥ १५ ॥ रानी को लेकर मंत्री चला और उस पुरुष को राजा बना दिया गया। उसे सम्पूर्ण देश का राजा बना दिया और राज्यसत्ता उसे सौंप दी गई ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥ अपने राजा को मारकर निर्धन को प्रपंचपूर्ण तरीके से राजा बना दिया और अपने हृदय में प्रसन्नता पैदा की ॥ १७ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र में मन्त्री-भूप-संवाद में तिरसठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ६३ ॥ ११२७ ॥ अफजू ॥

चौंसठवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ मैंगलसिंह नामक एक राजा था जिसे संसार जानता था कि वह रघुवंशी है। उसके महल में एक रानी थी जिसको मानों परमात्मा ने स्वयं गढ़कर बनाया था ॥ १ ॥ ॥ सोरठा ॥ उसका नाम दंतप्रभा था और उसकी सुन्दरता को देखकर देवगण भी क्लान्त होते थे ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ एक रस एव रीति से पूर्ण दासी उसके पास रहती थी। वह वेद, व्याकरण, षट्शास्त्र, कोकशास्त्र एवं संगीत में निपुण थी ॥ ३ ॥ राजा

संगीत ।। ३ ।। सो राजा अटकत भयो ता को रूप निहारि । दै न सकै ताँ को कछू त्रिय की शंक बिचार ।। ४ ।। ।। चौपई ।। एक अँगूठी त्रिप कर लई । लै तवनै चेरी कौ दई । ताहि कथा इह भाँति सिखाई । कहियहु परी मुंद्रिका पाई ।। ५ ।। एक दिवस त्रिप सभा बनाई । सभ इसत्री ग्रहि बोलि पठाई । त्रिपत कही मुंद्री मम गई । वहु कहि उठी चीन्हि मै लई ।। ६ ।। यह मुंद्रिका कहाँ ते पाई । डारी हुती द्रिशटि मम आई । सो मै करि उठाइ कर लई । लै राजा जी तुमकौ दई ।।७।। ।।दोहरा।। जाको परमेसुर दई मै ताहू को दीन । भेद न काहू त्रिय लह्यो त्रिप छल गयो प्रबीन ।। ८ ।। १ ।। (मू०ग्रं०८९३)

।। इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे चौसठवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ६४ ।। ११३५ ।। अफजूं ।।

अथ पैसठवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। रा इक राठ महोबै रहैं । मित्रसिंघ जाको जग कहैं । दच्छिन पैंड चलन नहि देई । कूटि लूटि लोगन

उसके सौंदर्य में अटक गया परन्तु अपनी स्त्री के भय से उसे कुछ दे नहीं पाता था ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। राजा ने एक अंगूठी ली और दासी को दे दी। उसे यह समझा दिया कि वह यह वताए कि पड़ी हुई मिली है ।।५।। एक दिन राजा ने सभी स्त्रियों को बुलाया । राजा ने कहा कि मेरी अँगूठी खो गई है । वह दासी कह उठी कि मेरे पास है, इसे पहन लीजिए ।।६।। यह तुम्हें कहाँ से मिली ? वह बोली कि रास्ते में पड़ी हुई थी, मैंने देख ली और उठा ली । वही अव मैं आपको हे राजन् ! दे रही हूँ ।। ७ ।। ।। दोहा ।। राजा ने कहा कि जिसे परमेश्वर ने दी है मैं भी उसी को देता हूँ । इस प्रकार स्त्री रहस्य न समझ सकी और राजा उसे छल गया ।। ८ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में चौसठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ६४ ।। ११३५ ।। अफजू ।।

पैंसठवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। मृत्युसिंह नामक एक लुटेरा महोबा नगर में रहता था । वह लोगों को राह नहीं चलने देता था और मार-पीटकर उन्हें लूट लेता

कह लेई ।। १ ।। जो लिडियाइ तिह कौ धन ल्यावै । जो ऐठै तिह मारि गिरावै । लूटि कूटि सभ ही कौ लेई । अधिक दरबु इस्त्री कौ देई ।।२।। एक दिवस धारा को गयो । सूरमान संग भेटा भयो । है दौराइ चलत गिर पर्यो । तब तिन आन सूरमन धर्यो ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। बाँधि कालपी लै गए ताँहि हनन के भाइ । तनक भनक सुन तिह त्रिया तहाँ पहूँची आइ ।। ४ ।। ।। चौपई ।। चुनि चुनि गोबर है पर धरै । काहू की शंका नहि करै । पति कौ बध न होइ यौ धाई । इह मिसि निकटि पहूची आई ।।५।। ।।दोहरा।। झटकि बाँह ते निजु पतिह है पर लयो चराइ । ताही कौ असि छीनि कै ताँहि चंडारहि घाइ ।। ६ ।। ।। चौपई ।। जवन स्वार पहुँच्यो तिह मार्यो । एकै बान मारिही डार्यो । काहू तों चित डरत न भई । निजुपति लै पुरवा कह गई ।।७।।१।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे पैंसठवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ।। ६५ ।। ११४२ ।। अफजूं ।।

था ।। १ ।। जो डर जाता था उसे लूट लेता था और जो अकड़ता था उसे मार गिराता था । इस प्रकार वह सबको लूट लेता था और धन लाकर स्त्री को देता था ।। २ ।। एक दिन वह धारा नगरी में गया और वहाँ कुछ शूरवीरों से मिला । घोड़ा दौड़ाते समय वह गिर गया और शूरवीरों ने उसे पकड़ लिया ।। ३ ।। ।। दोहा ।। वे उसे बाँधकर कालपी नगर में मार डालने के लिए ले आए । इस बात का पता लगते ही वह स्त्री वहाँ आ पहुँची ।।४।। ।। चौपाई ।। वह गोबर चुन-चुनकर घोड़ों पर लादे जा रही थी और किसी का भी भय नहीं मान रही थी । वह ऐसे चली कि पति का वध न हो पाए और इस प्रकार (उस नगर के) पास आ पहुँची ।। ५ ।। ।। दोहा ।। उसने भुजा झटककर अपने पति को घोड़े पर चढ़ा लिया और चांडाल की कृपाण छीनकर उसे ही मार दिया ।। ६ ।। ।। चौपाई ।। जो भी सवार पहुँचा उसे मार डाला और एक ही बाण से उसे समाप्त कर दिया । मन में वह किसी से भी नहीं डरी और अपने पति को लेकर अपने नगर में वापस चली आई ।। ७ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में पैंसठवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ।। ६५ ।। ११४२ ।। अफजू ।।

अथ छियासठवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ दुहिता एक वजीर की रूप शहिर के माहि । ता के सम तिहूँलोक मै रूपवती कोऊ नाहि ॥ १ ॥ अगनत धनु बिधि घर दयो अमित रूप कौ पाइ । लोक चौदहूँ मै सदा रोशन रोशन राइ ॥ २ ॥ साम देश के साह को सुंदर एक सपूत । सूरति सीरति मै जनुक आपु बन्यो पुरहूस ॥ ३ ॥ सुमतिसैन सूरा बडो खेलन चल्यो शिकार । स्वान सिचाने संग लै आयो बनै मँझार ॥ ४ ॥ सुमितसैन सभ सभा मै ऐसे उचरे बैन । जिह आगे आवै हनै औ कोऊ म्रिगहिह नैन ॥५॥ ॥ चौपई ॥ म्रिग जाके आगै ह्वै आवै । वहै आपनौ तुरै धवावै । कै म्रिग मारै कै गिरि मरै । यौ ग्रहि कौ दरशन नहि करै ॥ ६ ॥ हुकम धनी को ऐसो भयो । राजपुत्र आगै म्रिग गयो । सुमतिसिंघ तब तुरै धवायो । पाछे लग्यो हिरन के आयो ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ पाछे लाग्यो हिरन के रूप (मू०ग्रं०८९४) पहूँचयो आइ । दुहिता हेरि वजीर की रूप रही मुरछाइ ॥ ८ ॥ ॥ चौपई ॥ पान खाइ कर पुरी

छाछठवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ रूपनगर में एक वज़ीर की तीनों लोकों में अनुपम सौंदर्यशालिनी पुत्री थी ॥ १ ॥ अपरिमित रूप के साथ-साथ परमात्मा ने उसे अपार धन-दौलत भी दी थी और उस रोशनराय का तेज चौदह भुवनों में फैला हुआ था ॥ २ ॥ स्याम देश के एक धनी का सुन्दर पुत्र था जो शक्ल-सूरत में इन्द्र के समान था ॥ ३ ॥ सुमतिसेन नामक वह शूरवीर बाज़ और कुत्ते लेकर शिकार खेलने के लिए चला ॥ ४ ॥ सुमतिसेन नै सभा में कहा कि मृग आदि जिसके सामने आए वही उसको मारे ॥५॥ ॥ चौपाई ॥ मृग जिसके सामने आए वही अपना घोड़ा दौड़ाए । या तो वह मृग मारे अन्यथा स्वयं मर जाए और वापस यहाँ दिखाई न दे ॥ ६ ॥ परमात्मा की मर्ज़ी हुई कि मृग उसी राजपुत्र के सामने ही आया । तब सुमतिसिंह ने घोड़ा दौड़ाया और हिरन के पीछे लग गया ॥७॥ ॥दोहा॥ वह हिरन के पीछे-पीछे लगा हुआ रूपनगर आ पहुँचा और वज़ीर की पुत्री को देखकर मूर्च्छित होकर गिर पड़ा ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ स्त्री ने पान खाकर राजा के पुत्र पर

बनई। पीक डारि त्रिप सुत पर दई। सुमतिसैन मुरि ताहि निहार्यो। ता को शोक दूरि करि डार्यो ॥ ९ ॥ मंदर पै त्रिप सुतहि बुलायो। मन भावत को भोग कमायो। हरिन हनन यौ हुतो सु भाख्यो। कामकेल दुहुँअन रस चाख्यो ॥ १० ॥ चारि पहर रजनी सुख पायो। कामकेल दुहुँअन को भायो। अति प्रमुदित मन भीतर भए। भाँति भाँति के आसन लए ॥ ११ ॥ ॥ दोहरा ॥ कोकशास्त्र को उच्चरैं रमत दोऊ सुख पाइ। भाँति भाँति आसन करै गनना गनी न जाइ ॥ १२ ॥ प्रात होत निसि बसि चल्यो गह्यो पियादन आइ। बाँधि हनन को लै चले रह्यो न कछू उपाइ ॥ १३ ॥ ॥ चौपई ॥ त्रिप सुत बाँधि पियादन लयो। देखन लोग नगर को गयो। राजा जू के धाम ते नेर्यो। महलन चढ़े राव जू हेर्यो ॥ १४ ॥ रौशनि तुरकी तुरा बुलायो। आपु पुरख को भेख बनायो। सवा लाख को अभरन कर्यो। श्याम बरन को बाना धर्यो ॥ १५ ॥ ॥ दोहरा ॥ तिह को रूप निहारिकै भूप रह्यो मुरछाइ। कौन त्रिपत को पुत्र यह ता को लेहु बुलाइ ॥ १६ ॥

पीक थूक दी। सुमतिसेन ने होश में आकर उसे देखा और उसके शोक को दूर कर दिया ॥ ९ ॥ राजा के लड़के नें उस कन्या को मंदिर में बुलाया और मनचाहे ढंग से उससे रमण किया। उसे बताया कि वह हिरण मारनें आया है। इस प्रकार दोनों नें कामकेलि का रस चखा ॥ १० ॥ चार प्रहर रात सुख प्राप्त किया और दोनों ने कामक्रीड़ा की। मन में प्रसन्न होकर भाँति-भाँति के आसनों का प्रयोग किया ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ कोकशास्त्रानुरूप दोनों ने सुख पाया और असंख्य विधियों का प्रयोग सुख-प्राप्ति के लिए किया ॥ १२ ॥ रात बीतने और सुवह होते ही सैनिकों ने उसे पकड़ लिया और उसे मारने के लिए लेकर चल पड़े ॥१३॥ ॥चौपाई॥ सिपाहियों नें राजपुत्र को बाँध लिया। सारे नगर के लोग देखने लगे। जब राजा के महल के पास से गए तो महल से राजा ने भी देखा ॥ १४ ॥ उसने (कन्या ने) तीव्रगामी तुर्की घोड़ी मँगवाई और स्वयं पुरुष का वेश बनाया तथा सवा लाख के आभूषण पहने तथा काला वेश धारण किया ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥ उसके स्वरूप को देखकर राजा मूर्च्छित हो उठा और कहने लगा कि इसे बुलाओ, ये किस राजा का पुत्र है ? ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजा

।। चौपई ।। त्रिप को बचन भ्रित सुनि धाए । मंत्री की दुहिता ढिग आए । कौन देस एस्वर तुहि जायो । चलो राव जू बोलि पठायो ।। १७ ।। ।। दोहरा ।। कौन त्रिपति को पुत्र तैं क्यों आयो इह देश । क्यो मुसकी घोरा चर्यो धर्यो असित क्यो भेस ।। १८ ।। ।। छपै छंद ।। न हैं त्रिपति को पुत्र न हैं देसन को राई । तव मंत्री की सुता लखन कौतक कौ आई । शास्त्र सिम्रितन माहि सदा स्त्रवनन सुनि पायो । ततु लखन के हेत मोर हियरा उमगायो । तबै उचरिहौ बैन जबै नेत्रन सों लहिहों । बिनु नेत्रन के लहे भेद त्रिप तुमै न कहिहों ।।१६।। ।। चौपई ।। कह्यो त्रिपति मुहि भेद बतावहु । रौशनराइ न ह्रिदे लजावहु । तुमरी कही ह्रिदै मै राखो । भेद और तन कछू न भाखो ।। २० ।। ।। दोहरा ।। सुन राजा जू मै कहों किसू न दीजहु भेद । जु कछु शास्त्र सिम्रित कहत और उचारत बेद ।। २१ ।। जहा साध कह चोर करि मारत लोग रिसाइ । (मू०ग्रं०८६५) तुरतु धरनि तिह ठौर की धसकि रसातल जाइ ।। २२ ।। ।। चौपई ।। जो शास्त्र सिम्रतन सुणि पाई । सो कौतक देखन कह आई । देखो कहा इह ठाँ अब

की आज्ञा सुनकर सेवक चल पड़े और मंत्री की पुत्री के पास आए । वे कहने लगे कि तुम किस राजा के पुत्र हो, चलो तुम्हें राजा ने बुलाया है ।। १७ ।। ।। दोहा ।। तुम किस राजा के पुत्र हो और यहाँ क्यों आए हो ? इतने अच्छे घोड़े पर क्यों चढ़े हो और तुम्हारा वेश काला क्यों है ? ।। १८ ।। ।। छप्पय छंद ।। न तो मैं राजा का पुत्र हूँ, और न ही किसी देश का राजा हूँ । मैं तो तुम्हारी मंत्री की पुत्री देखने आया हूँ । शास्त्र-स्मृतियों में अनुभव के निचोड़ लिखे हैं, आज वही तत्व देखने-समझने के लिए मैं आया हूँ । जब मैं नेत्रों से देख लूँगा तभी हे राजन् ! तुम्हें बताऊँगा । बिना देखे कुछ नहीं बताऊँगा ।। १६ ।। ।। चौपाई ।। राजा ने (पुरुष वेश में उस रोशनराय से) कहा कि तुम मुझे रहस्य बताओ और तनिक भी संकोच मत करो । मैं तुम्हारी बात किसी को नहीं कहूँगा और रहस्य को छिपाए रखूँगा ।। २० ।। ।। दोहा ।। हे राजन् ! सुनो, मैं वह कहता हूँ जो शास्त्रों-स्मृतियों और वेदों में लिखा है ।। २१ ।। जहाँ साधु पुरुष को चोर समझकर लोग क्रोधित हो मार डालते हैं, वहाँ धरती तुरन्त धसककर रसातल में चली जाती है ।। २२ ।। ।। चौपाई ।। जो शास्त्रों-स्मृतियों में लिखा है उसी आश्चर्यजनक कार्य को देखने

ह्वैहै। फटिहै धरनि कि नहि फटि जैहै ॥ २३ ॥
॥ दोहरा ॥ जु कछु कथा स्रवनन सुनी सु कछु कही तुय देव ।
अपने चित मै राखियो किसू न दीजहु भेव ॥ २४ ॥ सुनत
बचन ता के त्रिपति निकटि बोलि तिह लीन । स्याम शाह
को पुत्र लखि तुरतु बिदा करि दीन ॥ २५ ॥ दुहिता दई
वजीर की है गै दए अनेक । पति कीनो छल कै तुरतु बार न
बाँक्यो एक ॥२६॥ ॥ चौपई ॥ झूठा ते साचा करि डार्यो ।
किनहूँ भेद न ह्रिदै बिचार्यो । साम देस लै ताहि सिधाई ।
तेग तरे ते लयो बचाई ॥ २७ ॥ ॥ दोहरा ॥ अतिभुत गति
बनितान की जिह न सकत कोऊ पाइ । भेद हाथ आवै
नही कोटिन कियो उपाइ ॥ २८ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे छिआसठवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ६६ ॥ ११७० ॥ अफजूं ॥

अथ सतासठवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ दच्छिन देस बिचच्छन नारी । जोगी गए

आया हूँ। अब देखो यहाँ क्या होता है, धरती फटती है कि नहीं ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ हे राजन् ! जो मैंनें कानों से सुना, वह आपसे कह दिया है। आप इसे अपने मन में रखिए और किसी से न कहिए ॥ २४ ॥ उसकी बातें सुनकर राजा ने उसे पास बुलाया और स्याम के राजा के पुत्र को पहचान उसे तुरन्त बिदा कर दिंया ॥ २५ ॥ उसे वज़ीर की पुत्री तथा अनेकों हाथी घोड़े दिए। इस प्रकार उस कन्या ने छलपूर्वक उसे अपना पति बना लिया और उसका बाल भी बाँका न होने दिया ॥ २६ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने झूठे को सच्चा प्रमाणित कर दिया और कोई भी इस रहस्य को न समझ सका। वह उसे लेकर स्याम देश में चली गई और उसे तलवार की धार से बचा लिया ॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ स्त्रियों की गति अद्भुत है इसे कोई नहीं जान सकता। अनेकों उपाय करने पर भी कोई इनके रहस्य को नहीं समझ सकता ॥ २८ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में छाछठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ६६ ॥ ११७० ॥ अफजू ॥

सड़सठवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ दक्षिण देश की स्त्रियाँ विलक्षण हैं, जहाँ योगी भी जाकर

भए घर बारी। चतुरसिंघ राजा तह भारो। चंद्रबंस मै रहैं उजियारो ॥ १ ॥ हैं गै रथ पैदल बहु वा के। और भूप कोऊ तुलि न ता के। रूपकला ता की बरनारी। जनु रति पति ते भई कुमारी ॥२॥ अधिक राव ता के बसि रहै। जो वहु मुख ते कहै सु कहै। रूपमती तिह त्रास न डरै। जो चित भावै सोई करै ॥ ३ ॥ ॥ दोहरा ॥ इक दिन बैठे त्रियन मै होड परी तिन माहि। पिय देखत कोऊ जार सों भोग सकत करि नाहि ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ रानी बात चित्त मै राखी। मुख ते कछू न तिह ठाँ भाखी। एक दोइ जब मास बितायो। आनि राव सों बचन सुनायो ॥ ५ ॥ सुनु न्रिप मै शिव पूजन गई। बानी मोहि तहा ते भई। एक बात ऐसी वहि जैहै। सभ को भोग करत द्रिशटैहै ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ जु कछु मोहि शिवजू कह्यो सु कछु कह्यो तुहि देव। चित अपने मै राखियहु किसू न दीजहु भेव ॥ ७ ॥ ऐसे न्रिप सो भाखि कै दिन द्वै चारि बिताइ। सकल कोठरिन ते लए सभ ही जार बुलाइ ॥ ८ ॥ आपन सों लौडियन सों (मू०ग्रं०८९६) जार दए चिमटाइ। पठै एक चेरी दई कहौ

गृहस्थी बन जाते हैं। वहाँ चन्द्रवंश का प्रकाशस्वरूप चतुरसिंह नामक महाबली राजा था ॥ १ ॥ उसके पास हाथी-घोड़े-रथ-पैदल आदि बहुत थे और अन्य कोई भी राजा उसके समान नहीं था। उसकी स्त्री रूपकला थी और वह ऐसी लगती थी मानों रति ने कौमार्य धारण किया हो ॥ २ ॥ अनेकों राजा उसके वश में थे और जो वह कहता था वही सब करते थे। रूपमती उससे नहीं डरती थी और जो मन में आता था वही करती थी ॥३॥ ॥ दोहा ॥ एक दिन स्त्रियों में इस बात पर होड़ लग गई कि पति के देखते-देखते अपने प्रेमी से कौन रमण कर सकती है ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ रानी ने बात मन में रखी और मुँह से कुछ नहीं कहा। जब एक-दो महीने बीत गए तो उसनें राजा से कहा ॥ ५ ॥ हे राजन् ! सुनो, मैं शिव-पूजन के लिए गई थी। मुझे वहाँ (आकाश-) वाणी हुई कि एक बार जो यहाँ आएगा उसे सभी भोग में लिप्त दिखाई देंगे ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ जो मुझसे शिव ने कहा है, हे देव ! वही मैंनें तुमसे कहा है। तुम इसको अपने चित्त में रखना अर्थात् किसी को भी बताना नहीं ॥ ७ ॥ राजा से यह कहकर दो-चार दिन बीतने के बाद उसने समस्त कारागृहों से अपने प्रेमी बुला लिये ॥ ८ ॥ अपने और दासियों को मित्र से संलग्न कर दिए। उधर एक दासी को राजा को बतानें

त्रिपति सों जाइ ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ जु मै तुमैं शिव बानी कही । वहै बात तुमरे ग्रहि लही । छोरि शस्त्र चलि तुरतु निहारहु । कछू कोप नहि ह्रिदै बिचारहु ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ तुरतु बचन सुनि त्रिप गयो केल करत जह त्रीय । शिव के बचन सँभारिकै ठटकि रहत भ्यो जीय ॥ ११ ॥ ॥ चौपई ॥ मुहि जु त्रिया शिव बैन उचारे । साच भए वह धाम हमारे । रूपमती मुहि झूठ न कहियो । अब सो साच तवन को लहियो ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ रति करिकै सभ ही त्रियन दीने जार उठाइ । आपु आनि त्रिप सों कह्यो बहिगी बात बनाइ ॥ १३ ॥ जो मैं तुम सों त्रिप कह्यो बात अबै वह लही । कोप न चित मै कीजियहु शिव के बचन सही ॥ १४ ॥ किंनर जच्छ भुजंग गन नर मुनि देव अदेव । त्रिय चरित्र को चित मै रंच न चीनत भेव ॥ १५ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे सतासठवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ६७ ॥ ११८५ ॥ अफजूं ॥

के लिए भेज दिया ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ जो मैंनें तुमसे शिववाणी कही थी वही बात आज आपके घर में दिखाई दे रही है । शस्त्रों का त्याग कर तुरन्त देखो और मन में तनिक भी क्रोध न करो ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ बात सुनकर राजा तुरन्त वहाँ पहुँचा जहाँ स्त्रियाँ क्रीड़ा कर रही थीं और शिव-वचनों को सत्य होता देखकर ठिठक कर रह गया ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह सोचने लगा कि स्त्री ने जो बात मुझसे कही थी वह मेरे घर में ही सत्य प्रमाणित हो रही है । रूपमती ने मुझसे झूठ नहीं कहा था, आज उसके सत्य को मैंने जान लिया ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ रतिक्रीड़ा कर सबने अपने प्रेमियों को उठा दिया और रानी भी बात बनाती हुई राजा के पास आकर बैठ गई ॥ १३ ॥ हे राजन् ! जो मैंने तुमसे कहा था वही अब हुआ है, इसीलिए कुपित मत होइए, शिव के वचन सत्य हैं ॥ १४ ॥ किन्नर, यक्ष, भुजंग, गण, नर-मुनि देव, अदेव कोई भी स्त्री के प्रपंचों को नहीं समझ सका है ॥ १५ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में सड़सठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ६७ ॥ ११८५ ॥ अफजू ॥

अथ अठसठवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ शाहु एक गुजरात को ता के ग्रहि इक पूत । सौदा कौ चौकस करै पितु ते भयौ सपूत ॥ १ ॥ नाऊ के इक पुत्र सो ता को रहै पियार । सूरति मै दोऊ एक से कोऊ न सके बिचार ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ शाहु पुत्र ससुरारे चलो । संग लए नउआ सुत भलो । गहिरे बन भीतर दोऊ गए । बचन कहत नउआ सुत भए ॥ ३ ॥ नउआ को सुत बचन उचारे । सुनो शाहु सुत बैन हमारे । तब हौं यार तुमै पहिचानौ । मेरो कह्यो अबै जौ मानौ ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ अस्व बस्त्र सभ आपने तनकिक मोको देहु । यह बुगचा तुम लै चलौ चलि आगै फिरि लेहु ॥५॥ ॥चौपई॥ शाहु पुत्र सोई तब करियो । ता कौ बुगचा निजु सिरि धरियो । निजु घोरा पै ताहि चढ़ायो । अपुने बस्त्रन सों पहिरायो ॥६॥ नउआ सुत तिह भेख बनायो । दे बुगचा सुत शाहु चलायो । ता को अति ही चित हरखानो । शाहु पुत्र कछु भेद न जानो ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ चलत चलत ससुरारि कौ गाव

अड़सठवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ गुजरात का एक धनी था, उसके घर में एक पुत्र था जो कि पिता का सपूत था और सौदेबाज़ी में पूर्ण रूप से चौकस था ॥१॥ उसका प्रेम एक नाई के पुत्र से था और उन दोनों की शक्ल एक-सी होने के कारण कोई उन्हें पहचान नहीं पाता था ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ धनी का पुत्र नाई के पुत्र को लेकर ससुराल की तरफ़ चल पड़ा। जब वे गहरे वन में गए तो नाई-पुत्र ने यह कहा ॥ ३ ॥ नाई के पुत्र ने कहा कि हे धनी-पुत्र ! तुम मेरी बात सुनो। मैं तुम्हें तभी मित्र मानता हूँ यदि तुम मेरी एक बात अभी मानो ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ तुम मुझे थोड़े समय के लिए अपना अश्व और वस्त्र दे दो और यह झोला तुम लेकर मेरे आगे-आगे चलो ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ धनी-पुत्र ने वैसा ही किया और झोला पकड़कर अपने सिर पर रख लिया। उसे अपने घोड़े पर चढ़ा दिया और उसे अपने वस्त्र पहना दिये ॥ ६ ॥ नाई-पुत्र ने उसका वेश बना लिया और धनी-पुत्र को झोला देकर रवाना कर दिया। वह मन में अत्यन्त प्रसन्न था, पर धनी-पुत्र इस रहस्य को न समझ सका ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ चलते-चलते ससुराल का गाँव

पहूँच्यो आइ। उतरि न तिह सुत शाहु को है पर लियो चराइ ॥ ८ ॥ शाहु पुत्र तिह कहि रह्यो लयो न तुरै चढ़ाइ। (मू०ग्रं०८६७) शाहु पुत्र लखि तिह धनी सकल मिलत भे आइ ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ शाहु पुत्र नउआ करि मान्यो। नउआ सुत सुत शाहु पछान्यो। अति लजाइ मन मै वहु रह्यो। तिन प्रति कछू बचन नहि कह्यो ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ नउआ सुत को शाहु की दीनो बधू मिलाइ। शाहु पुत्र सों यौ कह्यो द्वारे बैठहु जाइ ॥ ११ ॥ ॥ चौपई ॥ तब नउआ यौ बचन उचारे। कहौ काज इह करो हमारो। बहु बकरी तिह देहु चरावै। दिवस चराइ राति घर आवै ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ शाहु पुत्र छेरी लए बन मै भयो खराब। सूकि दूबरो तन भयो हेरे लजत रबाब ॥ १३ ॥ ॥ चौपई ॥ अति दुरबल जब ताहि निहार्यो। तब नउआ सुत बचन उचार्यो। एक खाट याको अब दीजै। मेरो कह्यो बचन यह कीजै ॥ १४ ॥ ॥ दोहरा ॥ खाट शाहु को पुत्र लै अधिक दुख्य भयो चित्त। गहिरे बन मै जाइ कै रोवत पीटत नित्त ॥ १५ ॥ महाँरुद्र अरु पारबती जार हुतै नर नाहि। ता कों दुखित बिलोकि कै दया भई मन

आ गया पर धनी-पुत्र को उसने घोड़े पर नहीं बैठाया ॥८॥ धनी-पुत्र कहता रहा पर उसे उसने घोड़े पर नहीं चढ़ाया। सभी नाई-पुत्र को धनी-पुत्र समझकर मिलने के लिए आने लगे ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ धनी-पुत्र को नाई और नाई-पुत्र को धनी-पुत्र मान लिया गया। धनी-पुत्र मन में लज्जित-सा हुआ परन्तु उसने इस संबंध में कोई बात नहीं की ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ नाई-पुत्र को धनी-पुत्र की वधू मिला दी गई और धनी-पुत्र को कह दिया गया कि वह दरवाज़े पर जाकर बैठे ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब नाई ने यह कहा कि एक कार्य करो; इसे बहुत सी बकरियाँ दे दो जिन्हें यह दिन भर चराकर संध्या को घर लौटे ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार धनी-पुत्र बकरियाँ लेकर वन में भटकता रहा और ग्लानि से सूखकर दुर्बल हो गया ॥ १३ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब उसे बहुत दुर्बल देखा तो नाई-पुत्र ने कहा कि इसे एक खटिया दे दी जाय और इस प्रकार मेरी बात मानी जाय ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ खटिया लेकर धनी-पुत्र अत्यधिक दुखी हुआ और नित्य घने जंगल में जाकर रोने-पीटने लगा ॥ १५ ॥ उधर से रुद्र एवं पार्वती जा रहे थे।

माहि ।। १६ ।। ।। चौपई ।। दया मान यों बचन उचारे ।
सुनहु शाहु के सुत दुखयारे । जाहि चमरु तूँ तूँ मुख कहिहैं ।
छेरी लगी भूँमि सौं गहिहैं ।। १७ ।। ।। दोहरा ।। जबै उझरु
तूँ भाखिहै तुरतु वहै छुटि जाइ । जब लगि यों कहिहै नही
मरै धरनि लपटाइ ।। १८ ।। ।। चौपई ।। जबै चमरु तू वहि
मुख कहै । चिमटियो अधर धरनि सों रहै । साचु बचन
शिव को जब भयो । तब तिह चित यह ठाट ठट्यो ।। १९ ।।
।। दोहरा ।। सभै चमरु तू मै बिना या पुर मै ह्वै जाहि ।
जह तह नर नारी हुती लगी रही छित माहि ।। २० ।। सोत
जगत बैठत उठत चिमट गए छिन माहि । कूक उठी पुर मै
घनी नैक रही सुधि नाहि ।। २१ ।। पति धोती बाँधित फस्यो
पाक पकावत त्रीय । नौआ त्रिय सोवत फस्यो कछु न रही
सुधि जीय ।। २२ ।। ।। चौपई ।। शाहु पुत्र तब ता कै आयो ।
कहा भयो कहि तिसै सुनायो । जु कछु कहों मुहि काज
कमाऊँ । बैदहि ढूढि तिहारै ल्याऊँ ।। २३ ।। लै घोरी
सुत शाहु सिधायो । खोजि बैद को संग लै आयो । तिह
जंगल की हाजति भई । घोरी शाहु पुत्र को दई ।। २४ ।।

धनी-पुत्र को दुखी देखकर उनके मन में दया आ गई ।।१६।। ।।चौपाई।। दया करके उन्होंने कहा कि हे धनी-पुत्र ! सुनो; तुम जिसे कहोगे कि 'चिपक जा', वही बकरी धरती पर सो जायगी ।। १७ ।। ।। दोहा ।। जब तुम 'उठ जा' कहोगे, वह उठ जायगी और मरेगी नहीं केवल धरती से लिपटी रहेगी ।।१८।। ।। चौपाई ।। वह जब 'चिपक जा' कहता तो वह धरती से चिपककर रह जाती और इस प्रकार शिव का वचन सत्य हुआ । तब उसने मन में एक विचार किया ।। १९ ।। ।। दोहा ।। तब उसने कहा कि मेरे बिना नगर के सभी लोग चिपक जायँ और सभी नर-नारी धरती के साथ चिपक गए ।।२०।। सोते-जागते सभी धरती से चिपक गए और नगर भर में हाहाकार मच उठी ।। २१ ।। पति धोती बाँधते फँस गया और स्त्री पकवान पकाते-पकाते चिपक गई । नवविवाहित स्त्री के साथ सोता पुरुष फँस गया और किसी को भी सुधि न रही ।।२२।। ।। चौपई ।। धनी-पुत्र तब वहाँ पहुँचा तो उस (नाई-पुत्र) ने जैसे-जैसे हुआ वह कह सुनाया । तब धनी ने कहा कि तुम जो मुझसे कहो, मैं करूँ और तुम्हारे लिए कोई वैद्य ढूँढ़ लाऊँ ।। २३ ।। धनी-पुत्र अब घोड़ी लेकर चला और एक वैद्य को साथ लेकर आ गया । उसे

॥ दोहरा ॥ (मू०ग्रं०८६८) जाइ बुटै तब बैठियो लई कुपीन उठाइ । डला भए पौछन लग्यो कह्यो चमरु तूँ ताहि ॥२५॥ हाथ लँगोटी रहि गई डला फस्यो बुरि माहि । चरन झार के संग फसे ताहि रही सुधि नाहि ॥ २६ ॥ लए अस्वनी शाहु को पूत पहूचयो आइ । कह्यो बैद मै क्या करों इह दुख को सु उपाइ ॥ २७ ॥ ॥ चौपई ॥ शाहु पुत्र तब बचन उचारो । सुनो बैद उपचार हमारो । हमरो इह आगे दुख भयो । इह उपचार दूरि ह्वै गयो ॥ २८ ॥ ॥ दोहरा ॥ या घोरी के भग बिखै जीभ दई सौ बार । तुरतु रोग हमरो कट्यो सुनहु बैद उपचार ॥ २९ ॥ ॥ चौपई ॥ तबै बैद सोऊ क्रिआ कमाई । ता के भग मैं जीभ धसाई । कह्यो चमरु तूँ सो लगि गई । अति हासी गदहा को भई ॥३०॥ लए लए ता को पुर आयो । सगल गाव को दरस दिखायो । बैद कछू उपचारहि करौ । इनके प्रान छुटन ते डरौ ॥ ३१ ॥ ॥ पुरजन बाच ॥ ॥ दोहरा ॥ अधिक दुखी पुर जन भए कछू न चल्यो उपाइ । चलत फिरत या कों निरखि रहे चरन

पाख़ाना जाने की हाजत हुई और उसने घोड़ी धनी-पुत्र को थमा दी ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥ तब वह लँगोट खोलकर एक झाड़ी के पास जा बैठा। जब मिट्टी से गुदा पोंछने लगा तो धनी-पुत्र ने कहा, ‘चिपक जा’ ॥ २५ ॥ उसके हाथ में लँगोटी रह गई और मिट्टी की डली गुदा में फँस गई; उसके पैर झाड़ी में फँस गए और उसे कोई भी सुधि न रही ॥ २६ ॥ तब धनी-पुत्र घोड़ी लेकर उसके पास पहुँचा और कहने लगा कि हे वैद्य ! मैं इस दुख का क्या उपाय करूँ ॥२७॥ ॥ चौपाई ॥ साहु-पुत्र ने तब कहा कि हे वैद्य जी ! मेरा उपचार सुनिए। मुझे भी एक बार यही दुख हुआ था जो इस उपचार से दूर हो गया था ॥२८॥ ॥ दोहा ॥ इस घोड़ी की भग में मैंने सौ बार जीभ रगड़ी थी और इसी उपचार से मेरा रोग तुरन्त कट गया था ॥२९॥ ॥चौपाई॥ तब वैद्य ने वही क्रिया की और घोड़ी की जननेंद्रिय में जीभ धँसा दी। तब उसे कहा कि चिपक जा और वह चिपक गया और इस प्रकार उस गधे की बहुत हँसी हुई ॥ ३० ॥ उसको इसी प्रकार लेकर गाँव में आया और उसे सारे नगर को दिखाया। हे वैद्य ! कुछ उपचार करो और इनके प्राण बचाओ ॥३१॥ ॥ पुरजन उवाच ॥ ॥ दोहा ॥ नगर के लोग अत्यन्त दुखी हुए और इसको चलता-फिरता देखकर इसके पाँव पड़ने लगे ॥ ३२ ॥ ॥ चौपाई ॥ हे नाथ !

लपटाइ ।। ३२ ।। ।। चौपई ।। हमरे नाथ उपाइहि कीजै । अपने जानि राखि करि लीजै । इनै करी कछु चूक तिहारी । महा रोग ते लेहु उबारी ।। ३३ ।। ।। शाह सुत बाच ।। सकल कथा तिन भाखि सुनाई । पुर लोगन सभहूँ सुनि पाई । लै दूजी कन्या तिह दीनी । भाँति भाँति उसतति मिल कीनी ।। ३४ ।। और सकल पुर छोरि उबार्‌यो । नउआ सुत चिमट्‌यो ही मार्‌यो । ब्याह दूसरो अपनो कीनो । निजु पुर को बहुरों मगु लीनो ।। ३५ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे अठसठवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ६८ ।। १२२० ।। अफजूं ।।

अथ उनहत्तरो चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। चपलसिंघ राजा बडो राजकला तिह नारि । इंद्रदेव रीझे रहै जानि सची अनुहारि ।। १ ।। सो रानी इक चोर सो रम्यो करत दिनु रैनि । ताहि बुलावै निजु सदन आपु जाइ तिह ऐन ।। २ ।। एक दिवस आवत सदन त्रिपबर लख्यो बनाइ । लूटि कूटि तसकर लयो सूरी

कुछ उपाय कीजिए और अपना समझकर हमारी रक्षा कीजिए । इन सब लोगों ने ज़रूर कुछ ग़लती की है आप हमें इस महारोग से बचा लीजिए ।।३३।। ।। धनी-पुत्र उवाच ।। तब उसने सारी कथा सुनाई जिसे सब लोगों से सुना । तब उसे एक अन्य कन्या दी और विभिन्न प्रकार से उसकी स्तुति की ।। ३४ ।। तब धनी ने सम्पूर्ण नगर का उद्धार किया, परन्तु नाई-पुत्र को चिपटाकर ही मार डाला । तब उसने दूसरा विवाह किया और पुनः अपने घर का रास्ता लिया ।। ३५ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में अड़सठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ६८ ।। १२२० ।। अफजू ।।

उनहत्तरवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। चपलसिंह नामक एक बड़ा राजा था और उसकी स्त्री राजकला थी । उसके रूप-सौंदर्य पर इन्द्र भी रीझा हुआ था ।। १ ।। वह रानी दिन-रात एक चोर के साथ रमण किया करती थी । उसे अपने घर बुलाती थी और स्वयं भी उसके घर जाती थी ।। २ ।। एक दिन राजा ने उसे

दियो चराइ ॥ ३ ॥ जब स्रोनत भभको उठत (मू०ग्रं०८९९) तब आँखें खुलि जाहि । जबै स्वासतर कौ रमै कछू रहै सुधि नाहि ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ रानी जब बतिया सुनि पाई । तसकर के मिलबे कह धाई । जब स्रोनत ऊरध तिह आयो । छुटी आँखि दरशन त्रियु पायो ॥ ५ ॥ तब रानी तिह बचन उचारे । सुनु तसकर मम बैन पियारे । जो कछु आग्या देहु सु करौ । तुम बिनु मारि कटारी मरौ ॥ ६ ॥ तब तसकर यौ बैन उचारे । यहै हौस मन रही हमारे । मरत समै चुंबन तव करौ । बहुरौ या सूरी पर मरौ ॥ ७ ॥ जब रानी चुंबन तिह दीनो । स्रोण भभाको तसकर कीनो । तब तसकर को मुख जुरि गयो । नाक काटि रानी को लयो ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ जब तसकरु चुंबन कर्‍यो प्रान तजे ततकाल । नाक कट्यो मुख मै रह्यो रानी भई बिहाल ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ नाक कटाइ त्रिया घर आई । जोरि त्रिपति कौ बात सुनाई । काटि नाक शिव भवन चरायो । सो नहि लग्यो रुद्र यौ भायो ॥ १० ॥ पुन शिवजू यौ बचन उचारो । चोर बक्र मै नाक तिहारो । तुरतु तहाँ

देख लिया और उसे मार-पीटकर फाँसी पर चढ़ा दिया ॥ ३ ॥ उसके अन्दर से खून का भभका उठते ही उसे थोड़ा-बहुत होश आ जाता था। उसकी साँस चलने लगती थी अन्यथा उसे कोई होश न था ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब रानी ने यह बात सुनी तो वह तस्कर से मिलने के लिए दौड़ी। जब रक्त ऊपर की तरफ़ आया तो फिर उसकी आँख खुली और उसने स्त्री को देखा ॥ ५ ॥ तब रानी ने कहा कि हे तस्कर ! सुनो; तुम बताओ मैं क्या करूँ। तुम्हारे बिना मैं कटार मारकर मर जाऊँगी ॥ ६ ॥ तब तस्कर नें कहा कि मेरे मन में यही इच्छा रही है कि मरते समय तुम्हारा चुंबन लूँ और फिर फाँसी पर चढ़ जाऊँ ॥ ७ ॥ जब रानी ने चुम्बन दिया तो फिर रक्त का भभका उठा। जब तस्कर ने मुँह लगाया और रानी का नाक काट लिया ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ चुम्बन लेते ही तस्कर ने प्राण त्याग दिए। नाक कटने से और उसके मुँह में रह जाने से रानी घबरा गई ॥ ९ ॥ ॥चौपाई॥ नाक कटवाकर रानी घर में आ गई और बना-बनाकर बात राजा को बताई कि मैंने अपनी नाक काटकर शिव के मंदिर में चढ़ा दी है। भगवान शिव को यही मंज़ूर था ॥१०॥ पुनः शिवजी नें यह कहा कि तुम्हारी नाक एक चोर के मुँह में पड़ी है। उसे तुरन्त चोर के मुँह से निकालो और

ते काढि मँगैयै । आनि त्रिया के बक्र लगैयै ।। ११ ।।
।। दोहरा ।। तब राजै सोई कियो शिव को बचन पछानि ।
ता के मुख सो काढ कै नाक लगायो आनि ।। १२ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे उनहत्तरो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ६९ ।। १२३२।। अफजूं ।।

अथ सत्तरो चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। एक लहौर सुनारो रहैं । अति तसकर ता को जग कहै । शाहु त्रिया ता को सुनि पायो । घाड़ घड़न हित ताहि बुलायो ।। १ ।। ।। दोहरा ।। चित्रप्रभा त्रिय शाहु की जैमल नाम सुनार । घाड़ घड़त भ्यो स्वरन को तवन त्रिया के द्वार ।। २ ।। ।। चौपई ।। जौन सुनारो घात लगावै । तवनै घात त्रिया लखि जावै । एक उपाइ चलन नहि देई । ग्रहि को धन मम हर नहि लेई ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। कोरि जतन सठ करि रह्यो कछू न चल्यो उपाइ । आपन सुत को नाम लै रोदनु कियो बनाइ ।। ४ ।।

स्त्री के मुँह पर लगा दो ।। ११ ।। ।। दोहा ।। तब राजा ने शिव का वचन मानते हुए वही किया और उसके मुँह से नाक निकालकर इसके मुँह पर लगा दिया ।। १२ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में उनहत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ६९ ।। १२३२ ।। अफजू ।।

सत्तरवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। लाहौर में एक सुनार रहता था लोग उसे बड़ा तस्कर मानते थे । राजा की स्त्री ने उसके बारे में सुना तो उसे गहने बनाने के लिए बुलाया ।। १ ।। ।। दोहा ।। धनिक की स्त्री का नाम चित्रप्रभा था और सुनार का नाम जयमल था जो गहने बनाने के लिए उस स्त्री के द्वार पर आया था ।।२।। ।। चौपाई ।। सुनार चुराने के लिए जैसे ही घात लगाता वैसे ही स्त्री जान जाती । वह उसका एक भी उपाय चलने नहीं देती थी, ताकि वह उसका धन न चुरा ले ।। ३ ।। ।। दोहा ।। अनेकों प्रयत्न करने पर भी धूर्त सुनार की एक न चली । तब वह अपने पुत्र का नाम लेकर रुदन करनें लगा ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। मेरा वंदन नामक पुत्र मर गया है और परमात्मा

॥ चौपई ॥ बंदन नाम पुत्र हौ मरियो । मेरो सकलो सुखु बिधि हरियो । यौ कहि मूँड धरनि पर मार्‌यो । (मू०ग्रं०६००) भाँति भाँति हिय द्रुपत पुकार्‌यो ॥ ५ ॥ एक पुत्र ताहू को मरियो । सो चितारि तिन रोदन करियो । तब ही घात सुनारे पायो । नाल बीच करि स्वरन चुरायो ॥ ६ ॥ तपत सुलाक डारि छित दई । सोनहि माटी सो मिलि गई । कह्‌यो न सुत ग्रहि भयो हमारै । पाछे मूठी छार को डारै ॥ ७ ॥ जब सुनार त्रिय सौ सुनि पाई । बहु मूठी भरि राखि उडाई । सुन सुनार तेरे सिर माही । जाके एक पुत्र ग्रहि नाही ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ पूतन सौ पति पाइयै पूत भिरत रन जाइ । इह मिस राख उडाइ कै लई सुलाक छपाइ ॥६॥ ॥ चौपई ॥ तब ऐसे त्रिय बचन उचारे । मोरे पति परदेस पधारे । ता ते मै औसी कौ डारो । ऐहैं न ऐहैं नाथ बिचारो ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ कर सौ औसी काढि कै लई सुलाक उठाइ । ह्‌याँ रोदन कोऊ किन करो कहि सिर धरी बनाइ ॥ ११ ॥ चोर सुनारो चुप रह्‌यो कछू न बोल्यो जाइ । पाई परी सुलाक कहि सोना लयो भराइ ॥ १२ ॥

ने मेरा समस्त सुख छीन लिया है। यह कहकर उसने धरती पर सिर मारा और विभिन्न प्रकार से विलाप करने लगा ॥ ५ ॥ उसका इकलौता पुत्र मर गया है, यह सोचकर स्त्री भी रोने लगी। उसी समय सुनार ने घात लगाई और नलिका में डालकर स्वर्ण चुरा लिया ॥ ६ ॥ उसने गर्म शलाका धरती पर डाल दी। तब वह कहने लगा कि मेरा अब पुत्र नहीं जो मेरी मिट्टी को देखेगा ॥ ७ ॥ जब स्त्री ने सुनार की बातों के रहस्य को भाँपा तो मुट्ठियाँ भरकर राख फेंकते हुए कहा कि यह राख तुम्हारे सिर पर है, क्योंकि तुम्हारा तो कोई पुत्र नहीं है ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ पुत्रों से ही सम्मान होता है और पुत्र ही युद्ध में भिड़ते हैं, यह कहते-कहते उस सुनार ने वह शलाका छिपा दी ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब स्त्री ने कहा कि मेरा पति परदेस गया हुआ है इसलिए मैं धरती पर लकीरें खींचकर ज्योतिष के माध्यम से यह पता लगा रही हूँ कि मेरा प्रियतम आएगा अथवा नहीं ॥१०॥ ॥दोहा॥ इस प्रकार हाथ से लकीरें बनाते हुए उसने नलिका को उठा लिया और कहा कि यहाँ पर रुदन मत करो और जाओ ॥ ११ ॥ चोर सुनार चुप रह गया और स्त्री ने नलिका पड़ी हुई मिली कहकर सोने समेत ले ली ॥१२॥ इस प्रकार

हरी सुलाक हरी त्रियहि स्वरन तोल भरि लीन । चल्यो दरबु दै गाँठि को दुखित सुनारो दीन ।। १३ ।। छल रूपी छैली सदा छकी रहत छित माहि । अछल छलत छित पतिन कौ छली कौन ते जाहि ।। १४ ।। १ ।।

।। इति स्त्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे सत्तरो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ७० ।। १२४६ ।। अफजूं ।।

अथ इकहत्तरो चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। नगर पाँवटा बहु बसै सारमौर के देस । जमुना नदी निकटि बहै जनुकपुरी अलिकेस ।। १ ।। नदी जमुन के तीर मै तीरथ मुचन कपाल । नगर पाँवटा छोरि हम आए तहाँ उताल ।। २ ।। ।। चौपई ।। खिलत अखेटक सूकर मारे । बहुते म्रिग औरै हनि डारे । पुनि तिह ठाँ को हम मगु लीनो । वा तीरथ के दरशन कीनो ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। तहा हमारे सिख्य सभ अमित पहूँचे आइ । तिनै दैन को चाहियै जोरि भलो सिरपाइ ।। ४ ।। नगर पाँवटे

स्त्री ने सोना भरकर वह नलिका ले ली और सुनार अपनी गाँठ का द्रव्य देकर दुखी होकर चला गया ।। १३ ।। छल-रूपिणी स्त्री धरती पर हमेशा सुखी रहती है। जो धरती के राजाओं को भी छल लेती है, वह अछल भला किससे छली जा सकती है ।। १४ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में सत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ७० ।। १२४६ ।। अफजू ।।

इकहत्तरवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। सिरमौर राज्य में पाँवटा नगर था जिसके पास यमुना नदी बहती थी और वह कुबेर की नगरी के समान था ।। १ ।। यमुना नदी के किनारे कपालमोचन नामक तीर्थस्थल था। हम पाँवटा नगर छोड़कर तुरन्त वहाँ आ गए ।। २ ।। ।। चौपाई ।। शिकार खेलते हुए वहाँ अनेकों शूकर एवं मृग मारे। पुनः हमने उस स्थान का रास्ता पकड़ा और उस तीर्थ के दर्शन किए ।। ३ ।। ।। दोहा ।। वहाँ हमारे अनेकों शिष्य आ पहुँचे और उन्हें देने के लिए सिरोपाओं (सम्मान में दिया गया पीला वस्त्र) की आवश्यकता थी ।।४।। पाँवटे नगर में लोगों को भेजा गया, परन्तु वहाँ से एक

बूरियै पठए लोक बुलाइ । एक पाग पाई नही निहफल पहुचे आइ ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ मोलहि एक पाग नहि पाई । तब मसलति हम जियहि बनाई । जाहि इहाँ मूतति लखि पावो । ता की छीन पगरिया ल्यावो ॥ ६ ॥ जब प्यादन (मू०ग्रं०६०१) ऐसे सुनि पायो । तिही भाँति मिलि सभन कमायो । जो मनमुख तीरथ तिह आयो । पाग बिना करि ताँहि पठायो ॥७॥ ॥ दोहरा ॥ राति बीच करि आठ सै पगरी लई उतारि । आनि तिनै हम दीह मै धोवनि दई सुधारि ॥८॥ ॥चौपई॥ प्रात लेत सभ धोइ मगाई । सभ ही सिखयन को बँधवाई । बची सु बेचि तुरतु तह लई । बाकी बची सिपाहिन दई ॥ ९ ॥ ॥ दोहरा ॥ बटि कै पगरी नगर को जात भए सुख पाइ । भेद मूरखन ना लह्यो कहा गयो करि राइ ॥ १० ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संवादे इकहत्तरो चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ ७१ ॥ १२५६ ॥ अफजूं ॥

भी पगड़ी नहीं मिली और लोग असफल होकर वापस आ गए ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ मोल देने पर भी जब एक भी पगड़ी नहीं मिली तो हमने मन में एक उपाय सोचा कि जिसे भी यहाँ लघुशंका निवृत्त होते देखो उसकी पगड़ी छीन ले आओ ॥ ६ ॥ जब साथ चलनेवाले सिपाहियों ने यह सुना तो वैसा ही किया । जो भी बुरा व्यक्ति इस प्रकार उस तीर्थ पर आया उसे पगड़ी-विहीन करके भेज दिया गया ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ एक ही रात में आठ सौ पगड़ियाँ उतार ली गयीं । तब उन्हें दिन में धो लिया गया ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ प्रातः वे सब धुली हुई मँगवाकर सब शिष्यों को बँधवा दीं । जो बच गईं उन्हें तुरन्त बेच दिया गया और जो फिर भी बच गईं उन्हें सिपाहियों को दे दिया ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ पगड़ियों के दाम वसूलकर सुखपूर्वक अपने नगर को चल दिए । इस प्रकार किसी भी मूर्ख ने रहस्य को न समझा कि यह राजा क्या कर गया है ॥ १० ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में इकहत्तरवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ॥ ७१ ॥ १२५६ ॥ अफजू ॥

अथ बहत्तरो चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ राजा एक पहार को चित्रनाथ तिह नाम । ता को जन सभ देस के जपत आठहूँ जाम ॥ १ ॥ इंद्रमुखी रानी रहै ता के रूप अनूप । सची जानि करि जक रहै जाहि आपु पुरहूत ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ त्रिपपुर तरै नदी इक बहै । चंद्रभगा ता को जग कहै । तट टील पै महल उसारे । जनु बिसकरमै करन सुधारे ॥ ३ ॥ ॥ दोहरा ॥ गहिरो जाको जल रहै जा सम नदी न आन । डरत तैरि कोऊ ना सकै लागत सिंधु समान ॥ ४ ॥ साहु एक गुजरात को घोरा बेचन काज । चलि आयो तिह ठाँ जहाँ चित्रनाथ महाराज ॥ ५ ॥ रूप अनूपम साहु को जौन लखै नर नारि । धन आपन की क्या चली तन मन डारहि वार ॥६॥ ॥ चौपई ॥ एक तियहि बहु शाहि निहार्यो । इंद्रमुखी के निकट उचार्यो । ऐसो पुरखु भोग को पैयै । प्रान सहित ता के बलि जैयै ॥ ७ ॥ सुनु रानी तिह बैलि पठैयै । मैन भोग तिह साथ कमैयै । तुम ते ता को जो सुत हो है । ता के रूप तुल्लि कह को

बहत्तरवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ पहाड़ का एक राजा चित्रनाथ नाम का था । उसे उसके सब लोग आठों पहर स्मरण करते रहते थे ॥ १ ॥ उसकी रानी इंद्रमुखी अनुपम सौंदर्यशालिनी थी । वह शची के समान सुन्दर थी जिसे देखकर इन्द्र भी विस्मित हो जाते थे ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजा के नगर के समीप एक नदी बहती थी जिसका नाम संसार में चन्द्रभगा था । उसके तट पर ऐसे सुन्दर महल बनाए गए थे मानों विश्वकर्मा ने स्वयं उनका निर्माण किया हो ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ उस नदी का जल गहरा था । उसके समान अन्य कोई नदी नहीं थी । उसे मारे डर के कोई तैर कर पार नहीं कर सकता था, क्योंकि वह समुद्र के समान लगती थी ॥ ४ ॥ गुजरात का एक धनी चित्रनाथ के पास चलकर घोड़ा बेचने के लिए आया ॥ ५ ॥ धनी का अनुपम रूप देखकर नर-नारी धन तो क्या तन-मन भी न्यौछावर करने लगे ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ एक स्त्री ने उस धनी को देखा और इन्द्रमुखी से कहा कि यदि ऐसा पुरुष रतिक्रीड़ा के लिए मिल जाय तो उस पर प्राण न्यौछावर कर दिये जायं ॥ ७ ॥ हे रानी ! उसे बुलाओ और उसके साथ कामक्रीड़ा करो ।

है ॥ ८ ॥ ता को जो इस्त्री लखि पैहै । बहुरि आपने धाम न जैहै । ताही पै आशिक ह्वै रहिहै । राम नाम को ज्यो नित कहि है ॥ ९ ॥ ॥ दोहरा ॥ तव सुत को जो इसत्री नैकु निहरिहै नित्त । स्री राघव के नाम ज्यों सदा सँभरिहैं चित्त ॥ १० ॥ ॥ चौपई ॥ जब रानी ऐसे सुनु पायो । बोलि शाहु को धाम पठायो । भाँति भाँति आसन तिह दीनो । उर अपने तें जुदा न कीनो ॥११॥ (मू०ग्रं०९०२) ॥दोहरा॥ तब लग राजा तुरतु ही धाम गयो तिह आइ । चारि ममटियहि तह दयो शोक ह्रिदै उपजाइ ॥ १२ ॥ दो सै गज दो बैरकैं लीनी शाहु मँगाइ । बडी धुजन सौ बाँधिकै बाँधी भुजन बनाइ ॥ १३ ॥ रूँई मनिक मँगाइकै अंग लई लपटाइ । बाँधि घौघरो पवन लखि कूदत भयो रिसाइ ॥ १४ ॥ ॥ चौपई ॥ ज्यों ज्यों पवन झलातो आवै । धीमैं धीमैं तरकह जावै । दुहूँ बैरकन शाह उडार्यो । गहिरी नदी बिखै लै डार्यो ॥ १५ ॥ घुँघरन जोर नदी नर तर्यो । धुजन होत तह हुतो उबरयो । रूँई ते कछु चोट न लागी । प्रान बचाइ गयो बडभागी ॥ १६ ॥ ॥ दोहरा ॥ जब ता को जीवत सुन्यो

जो उससे पुत्र होगा, भला उसके समान सुन्दर कौन होगा ॥ ८ ॥ उसे जो स्त्री देखेगी वह वापस घर नहीं जायगी और जैसे राम-नाम का प्रीतिपूर्वक रोज़ स्मरण किया जाता है ;तुम्हारे पुत्र का स्मरण करेगी ॥९॥ ॥दोहा॥ जो भी स्त्री तुम्हारे पुत्र को तनिक भी देख लेगी वह राम-नाम की तरह उसे मन में सँभालकर रखेगी ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ जब रानी ने यह सुना तो धनी को घर पर बुलवाया । उसे विभिन्न प्रकार के आसन दिए और उसे अपने हृदय से लगाए रखा ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ तब तक राजा घर आ गया और उसने उसे हृदय में दुखी होकर चार डंडे मारे ॥ १२ ॥ दो सौ गज लम्बे बाँस धनी ने मँगाए और बड़ी-बड़ी ध्वजाओं के साथ भुजाएँ बाँध दीं ॥ १३ ॥ मन भर के क़रीब रूई मँगवाकर शरीर पर लपेट ली और घुँघरू बाँधकर हवा का रुख देखकर (क़िले से) हठपूर्वक कूद पड़ा ॥ १४ ॥ ॥ चौपाई ॥ जैसे-जैसे पवन का झोंका आता वह धीरे-धीरे खिसकता चला जाता था । दोनों बाँसों ने धनी को उठाया और लाकर नदी में फेंका ॥१५॥ घुँघरुओं के बल पर वह नदी में तैरता रहा और बाँसों के सहारे वह पार हो गया । रूई के कारण उसे कुछ भी चोट नहीं लगी और इस प्रकार उस भाग्यशाली ने अपने प्राण बचा लिये ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥ जब रानी ने उसे

रानी स्रवनन माहि। या दिन सो सुख जगत मै कह्यो कहूँ
कोऊ नाहि ॥१७॥ ॥ चौपई ॥ कूदि शाहु जो प्रान बचायो।
तिन राजै कछु भेद न पायो। तब रानी धीरज मन भयो।
चित जु हुतो सकल भ्रम गयो ॥ १८ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संवादे वहत्तरवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ ७२ ॥ १२७४ ॥ अफजूं ॥

अथ तिहत्तरो चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ बजवारे बनिया रहै केवल ता कों नाम।
निसु दिनु करै पठान के ग्रहि को सगरो काम ॥ १ ॥
॥ चौपई ॥ सुंदर त्रिय ता कै ग्रहि रहै। पुहपवती ता को
जग कहै। बाँके संग नेहु तिन लायो। केवल को चित ते
बिसरायो ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ एक दिवस केवल गयो ग्रहि
को कौनै काज। देखै क्या निजु त्रिय भए बाँको रह्यो
बिराज ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ जब त्रिय पति आवत लखि
पाइस। यहै चित्त मै चरित बनाइस। सौ छित्तर तिह
मूँड लगायो। छोरि पठान क़ह्यो क्यों आयो ॥ ४ ॥

जीवित सुना तो उसे इसके समान सुख देनेवाला अन्य कोई समाचार न लगा ॥ १७ ॥ ॥ चौपाई ॥ धनी ने कैसे कूदकर प्राण बचाए, इस रहस्य को राजा न जान सका। तब रानो के मन में धैर्य आया और उसके चित्त का भ्रम नष्ट हो गया ॥ १८ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में बहत्तरवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ॥ ७२ ॥ १२७४ ॥ अफजू ॥

तिहत्तरवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ बजवारे नामक नगर में केवल नामक वणिक् रहता था। वह रात-दिन पठान के घर का काम किया करता था ॥१॥ ॥चौपाई॥ उस वणिक् की सुन्दर पत्नी थी जिसका नाम पुष्पावती था। उसने एक प्रेमी के साथ प्रेम कर लिया और केवल का विस्मरण कर दिया ॥२॥ ॥दोहा॥ एक दिन केवल घर के किसी काम से गया तो क्या पाता है कि बाँके उसके घर में विराजमान है ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब स्त्री ने पति को आते देखा तो एक प्रपंच किया। उसने उसके मुँह पर सौ जूते मारे और कहा कि तुम पठान को छोड़कर क्यों आए हो ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ आप स्वयं जूतेबाज़ी में

॥ दोहरा ॥ आपु जूतियन जुरि गई रही न ताँहि सँभारि । ऐसे चरित्र बनाइकै बाँको दयो निकारि ॥ ५ ॥ अति चित कोप बढाइकै तपत ताँब्र कर नैन । बिकट बिक्र करि आपनों कहै बनकि सों बैन ॥६॥ ॥ त्रियो बाच ॥ ॥कबित्तु॥ जाँ को लोन खैयै ता को छोरि कबहूँ न जैयै जा को लोन खैयै ता के आगे ह्वैकै जूझियै । जा को लोन (मू०ग्रं०९०३) खैयै ता को दगा कबहूँ न दैयै साची सुनि लैयै ता सौ साचहूँ को लूझियै । चोरी न कमैयै आपु देवै सो भी बाँटि खैयै झूठ न बनैयै कछू लैबे कौ न रूझियै । रोस ना बढैयै बुरी भाखै सो भी मानि लैयै चाकरी कमैयै नाथ मोरी बात बूझियै ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ बनियै जूती खाइकै सीख लई मन माहि । कह स्यानी त्रिय ग्रहि गयो भेद पछान्यो नाहि ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे तिहत्तरो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ७३ ॥ १२८२ ॥ अफजूं ॥

लग गई और उसके पति को भी कोई ध्यान न रहा और इस प्रकार के चरित्र से बाँके को निकाल दिया ॥ ५ ॥ उस स्त्री ने क्रोधित होकर लाल आँखें निकालकर मुँह टेढ़ा कर वणिक् से कहा ॥ ६ ॥ ॥ स्त्री उवाच ॥ ॥ कवित्त ॥ जिसका नमक खाओ उसे कभी नहीं छोड़ना चाहिए और उसके आगे होकर लड़ मरना चाहिए । जिसका नमक खाओ उसे कभी धोखा मत दो। मेरी सच्ची बात सुनो, उसके लिए प्राण दे देना चाहिए । कभी चोरी नहीं करनी चाहिए और जो मालिक दे उसे भी बाँट खाना चाहिए । कभी झूठ मत बोलो और कभी कुछ लेने के लिए ज़िद नहीं करनी चाहिए । हे नाथ ! कभी गुस्सा मत करो, अगर मालिक बुरा-भला भी कहे तो मान लेनी चाहिए और मेरी बात का मर्म समझकर निष्ठापूर्वक नौकरी करनी चाहिए ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ वणिक् ने जूते खाकर शिक्षा ग्रहण कर ली और यह कहकर कि स्त्री सयानी है, बिना भेद समझे घर के अन्दर चला गया ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में तिहत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ७३ ॥ १२८२ ॥ अफजू ॥

अथ चहत्तरो चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ चोर एक - चतुरो रहै बैरम ता को नाँव । जात शेख जादो रहै बसै कालपी गाँव ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ चौ चोबा ग्रिह बस्त्र बनायो । आपन को उमराव कहायो । मै हजरति ते मनसब लयो । पलवल देस परगना भयो ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ ता के कछु उपचारु को कीजै ह्रिदै बिचार । तहा चलन को साजु सभ लीजै मोल सुधारि ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ सकल गाँव के बनिक बुलाए । सौ क रुपैया तिन चटवाए । कह्यो त्यार साजु करि दीजै । अब ही रोक रुपैया लीजै ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ रोक रुपैयन खरचि कै लीजै मुहर बटाइ । भर बरदारी को घनो खरचन होइ बनाइ ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ जो तिम कही सु बनिकन मानी । कछू शंक चित बीच न आनी । मुहरैं अधिक आनि कर दई । तसकर डारि गुथरियहि लई ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ और खजानो शाहु को सभही लयो मँगाइ । जाइ जहानाबाद मै देहौ धन पहुचाइ ॥ ७ ॥ ॥ चौपई ॥ बनियन के बैठे सो

चौहत्तरवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ बैरम नाम का एक चतुर चोर था जो शेख जाति का था और कालपी नामक गाँव में रहता था ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने चार चोबों वाले सुन्दर वस्त्र बनाए और अपने आपको उमराव कहलाने लगा । वह कहने लगा कि मुझे बादशाह ने मनसब (पदवी) दी है और मेरा परगना पलवल है ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ उस देश के सुधार के लिए मुझे कुछ करना चाहिए और विधिपूर्वक चलने का उपक्रम करना चाहिए ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने गाँव के सब वणिकों को बुलाया और उनके खाने-पीने पर लगभग सौ रुपए खर्च किए । उनसे कहा कि तैयारी करो और कुछ रुपया-पैसा इकट्ठा करो ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ रुपया लेकर मोहरों में बदल लेना चाहिए, ताकि वहाँ काफ़ी होनेवाले ख़र्च का वहन किया जा सके ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ जैसा उसने कहा वणिक् ने वैसा ही किया और किसी प्रकार की शंका नहीं की । उसे लाकर अनेक मुहरें दे दीं और चोर ने उसे अपनी झोली में डाल लिया ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ वहाँ के धनी का भी सारा ख़ज़ाना मँगा लिया और यह कहा कि मैं इसे जहानाबाद (दिल्ली) पहुँचा दूँगा ॥ ७ ॥

गयो। सभही धनु इकठो कै लयो। साथिन तिनिक द्वार बैठायो। सोयो खान न जात जगायो ॥८॥ ॥दोहरा॥ छोरि द्वारो पाछलो भाजि गए ततकाल। सभ रुपयन हर लै गए बनिया भए बिहाल ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ इति स्त्री चरित्र पख्याने पुरखु चरित्रे मंत्री भूप संबादे चहत्तरो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ७४ ॥ १२९१ ॥ अफजूं ॥

अथ पचहत्तरो चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ मुगल एक गजनी रहै बखतियार तिह नाम। बडे सदन ता के बने बहुत गाँठि मै दाम ॥ १ ॥ ता के घर इक हय हुतो ता को (मू०ग्रं०९०४) चोर निहारि। याको क्योंहूँ चोरियै कछू चरित्र सु धारि ॥२॥ आनि चाकरी की करी ता के धाम तलास। मुगल महीना कै तुरतु चाकर कीनो तास ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ महियाना अपनो करवायो। करजाई को नामु सुनायो। ता की सेवा को बहु करियो। बखतियार को धनु है हरियो ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ दिन को

॥ चौपाई ॥ वणिकों के बैठे-बैठे ही वह सो गया और साथियों को द्वार पर बैठा दिया। उन्हें यह कहा कि मुझ सोए हुए को कोई न जगाए ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ उन्हें द्वार पर छोड़कर पिछले दरवाज़े से सभी भाग गए और इस प्रकार बेहाल वणिकों को छोड़कर रुपया-चुराकर भाग गए ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में चौहत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ७४ ॥ १२९१ ॥ अफजू ॥

पचहत्तरवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ गज़नी में बख़्तयार नामक एक मुग़ल रहता था, जिसके बड़े-बड़े घर थे और जिसके पास बहुत धन-दौलत थी ॥१॥ उसके घर में एक घोड़ा था जिसे चोर ने देखा और सोचा कि इसकी कैसे चोरी किया जाय ॥२॥ उसने मुग़ल के घर पर आकर नौकरी की तलाश की और मुग़ल ने उसे मासिक वेतन पर नौकर रख लिया ॥३॥ ॥ चौपाई ॥ मासिक देना लिखवा लिया और मुग़ल को अपना नाम क़र्ज़दार लिखवा लिया। फिर उसने मुग़ल की सेवा की और बख़्तयार का धन आदि चोरी कर लिया ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ दिन में वह धन लेकर चल पड़ा और यह कहने लगा कि मुग़ल

धनु है हरि चल्यो करजाई कहलाइ। सकल लोक ठटके रहै रैनाई लखि पाइ ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ पाछे मुगल पीटतो आयो। करजाई धनु तुरा चुरायो। जो इह बैनन को सुनि पावै। ताही को झूठो ठहरावै ॥ ६ ॥ जाते दरबु करजु लै खायो। कहा भयो तिन तुरा चुरायो। क्यों तै दरबु हुधारो लयो। कहाँ भयो जो है लै गयो ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ वाही को झूठा कियो भेद न पावै कोइ। वह दिन धन है हर गयो राम करै सो होइ ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने पुरखु चरित्रे मंत्री भूप संबादे पचहत्तरो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ७५ ॥ १२९९ ॥ अफजूं ॥

अथ छिहत्तरवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ पुनि मंत्री ऐसे कह्यो सुनियै कथा त्रिपाल। तेही चोर चरित्र इक कियो सु कहो उताल ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ जब तसकर धनु तरा चुरायो। पुनि ता के चित मै यौ आयो। अतिभुत एक चरित्र बनैयै। त्रिय सुंदरि

मेरा क़र्ज़दार है और लोगों के देखते-देखते रात में घोड़ा लेकर चला गया। लोग देखते रह गए ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ बाद में मुग़ल रोता-चिल्लाता आया कि क़र्ज़दार मेरा धन और घोड़ा चुराकर ले गया है। जो-जो इस बात को सुनता था वही मुग़ल को झूठा ठहराता था ॥ ६ ॥ जिससे तुमने धन क़र्ज़ में लिया है, क्या हुआ यदि उसने तुम्हारा घोड़ा और धन ले लिया है। तुमने उससे धन उधार क्यों लिया और क्या हुआ यदि वह घोड़ा ले गया ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ सबने बिना रहस्य को समझे उसी को झूठा किया। उस दिन तो उसका धन और घोड़ा चोरी हो ही गया। जैसा राम करता है वैसा ही होता है ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में पचहत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ७५ ॥ १२९९ ॥ अफजू ॥

छिअत्तरवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ पुनः मंत्री ने कहा कि हे राजन्! उसी चोर ने एक अन्य प्रपंच किया उसे भी सुनो ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब उस चोर नें धन और घोड़ा चुरा लिया तो पुनः उसके मन में यह विचार आया कि यह अद्भुत

जाते ग्रहि पैयै ॥२॥ ॥ दोहरा ॥ धाम जवाई आपनो राख्यो नामु बनाइ । बिधवा त्रिय के धाम मै डेरा कीनो जाइ ॥३॥ ॥ चौपई ॥ वाके ह्रिदै अनंदित भयो । मोरे धाम पूत बिधि दयो । धाम जवाई नाम जतायो । आदर कै भोजनहि खवायो ॥ ४ ॥ ऐसी भाँति बरिस जब बीती । वह त्रिय दुख भे भई निचीती । वह तिह घर को कामु चलावै । बिधवा बधू खेद नहि पावै ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ केतिक दिन तह चलि गयो ता की सुता चुराइ । त्रिय रोवत कुटवार के तट चट कूकी जाइ ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ धाम जवाई दुहिता हरी । देखहु दैव कहा इह करी । सूर उदोत गयो नहि आयो । मैं त्रिय को कछु सोध न पायो ॥ ७ ॥ काजी कोटवार जब सुन्यो । दुहूँ बिहसकै माथो धुन्यो । जाको सुता दानु तैं दयौ । कहा भयो जौ ग्रहि लै गयो ॥ ८ ॥ सभहिन तिह झूठी (मू०ग्रं०९०५) करि मान्यो । भेद अभेद कछु ह्रिदै न जान्यो । लूटि दरबु ता को सभ लयो । तबही देस निकारो दयो ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे छिहत्तरवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ७६ ॥ १३०८ ॥ अफजूं ॥

प्रपंच किया जाय जिससे एक सुन्दर स्त्री की प्राप्ति हो ॥२॥ ॥दोहा॥ उसने अपना नाम घरजँवाई रखा और एक विधवा स्त्री के घर में आकर डेरा लगा लिया ॥३॥ ॥ चौपाई ॥ वह हृदय में आनन्दित हो उठी कि परमात्मा ने हमें एक पुत्र दे दिया है। उसने उसे अपना नाम घरजँवाई बताया और स्त्री ने उसे आदरपूर्वक भोजनादि कराया ॥ ४ ॥ इसी प्रकार जब एक वर्ष बीत गया तो वह स्त्री एक-दम निश्चिन्त हो गई। वह चोर उसके घर का काम करता था और इस प्रकार विधवा स्त्री को कोई भी दुख न रहा ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ काफ़ी दिनों बाद वह उसकी लड़की को भगाकर ले गया और अब यह स्त्री रोटी-पीटती कोतवाल के पास पहुँची ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह कहने लगी कि घरजँवाई ने मेरी पुत्री चुरा ली है। हे ईश्वर ! यह क्या हो गया है। सूर्यास्त हो गया पर वह नहीं आया है और न ही मुझे उसकी कुछ ख़बर मिली है ॥ ७ ॥ क़ाज़ी और कोतवाल ने जब सुना तो दोनों ने हँसकर माथा पीटा। वे कहने लगे कि जिसको तूने अपनी पुत्री दे दी है अब क्या हो गया यदि वह उसे अपने घर ले गया ॥ ८ ॥ सबने उसे झूठी मा

और रहस्य को न समझा। उलटा उसका सब द्रव्य लूट लिया और देश-निकाला दे दिया ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में छिअत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ७६ ॥ १३०८ ॥ अफजू ॥

अथ सतत्तरवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ चंद्रपुरी भीतर हुतो चंद्रसैन इक राव। बल गुन बीरज मै जनुक त्रिदसेस्वर के भाव ॥ १ ॥ भागवती ता की त्रिया जाको रूप अपार। रति रतिनाथ पछानि तिह झुकि झुकि करहि जुहार ॥ २ ॥ एक पुरख सुंदर हुतो रानी लयो बुलाइ। भोग अधिक तासो कियो ह्रिदै हरख उपजाइ ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ केल करत राजा जू आयो। रानी ह्रिदै अधिक दुखु पायो। याको दया कहौ का करिहौ। याके हने बहुरि हौ मरिहौ ॥ ४ ॥ ॥ जार बाच ॥ तबै जार यौ कथा उचारी। रानी करहु न चिंत हमारी। यह तरबूज काटि मुहि दीजै। याकी गरी भच्छ करि लीजै ॥ ५ ॥ तब रानी सोऊ काज कमायो। काटि ताहि तरबूज खुलायो। लै खोपर तिन सिर पै धरियो। स्वास लेत कह छेकौ

सतहत्तरवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ चन्द्रपुरी में चन्द्रसेन नामक एक राजा था। वह बल-गुण में इन्द्र के समान प्रतापी था ॥ १ ॥ उसकी स्त्री भागवती अनुपम रूप-सौंदर्यवाली थी जिसे कामदेव व रति भी झुक-झुककर प्रणाम करते थे ॥ २ ॥ रानी ने एक अत्यन्त सुन्दर पुरुष को बुलाया और प्रसन्नतापूर्वक उससे अत्यधिक संभोग किया ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब वे केलिक्रीड़ा में रत थे तो राजा आ गया जिससे रानी अत्यधिक दुखी हो उठीं। अब मुझे कृपापूर्वक बताओ कि मैं इसका क्या करूँ ? (सोचती हूँ) पहले इसको मार दूँ और फिर स्वयं मर जाऊँ ॥ ४ ॥ ॥ जार उवाच ॥ तब प्रेमी ने रानी से कहा कि तुम मेरी चिन्ता न करो। यह तरबूज़ काटकर मुझे दे दो और इसका गूदा स्वयं खा जाओ ॥ ५ ॥ रानी ने तब वैसा ही किया और काटकर तरबूज़ उसे खिला दिया। उसका आवरण उसने लेकर सिर पर धारण कर लिया और श्वास

करियो ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ धरि खोपर सिर पर नदी तर्यो त्रिपति दर सोइ। दिन लोगन देखत गयो भेद न जानत कोइ ॥ ७ ॥ तब रानी ऐसे कह्यो सुनियै बचन रसाल। बहत जात तरबूज जो मोहि मिलै दरहाल ॥ ८ ॥ बचन सुनत राजा तबै पठए मनुख अनेक। जात बहे तरबूज कौ पहुचत भयो न एक ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ तब रानी यौ बचन उचारे। सुनहु नाथ बडभाग हमारे। बूडि कोऊ जाके हित मरै। मोर मूँड अपजस बहु धरै ॥१०॥ ॥ दोहरा ॥ रानी हित हिदवान के मनुख बुरायो एक। यह अपजस न कबहु मिटै भाखहि लोग अनेक ॥ ११ ॥ ॥ चौपई ॥ आपहि दै तरबूज तरायो। आपहि आइ त्रिपहि रिसवायो। आपहि होर मनुच्छन लीना। त्रिया चरित्र न किनहूँ चीना ॥ १२ ॥ १ ॥ (मू०ग्रं०९०६)

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे सततरवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ ७७ ॥ १३२० ॥ अफजूं ॥

लेने के लिए उसमें एक छेद भी कर दिया ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ सिर पर वह तरबूज़ का खोल धारणकर राजा के सामने नदी तैरता हुआ निकल गया। लोग देखते रह गए पर कोई भी रहस्य को न जान सका ॥ ७ ॥ तब रानी ने कहा कि यह जो तरबूज़ बहता जा रहा है मुझे यह चाहिए ॥ ८ ॥ राजा ने यह सुनकर अनेकों लोगों को भेजा। वे सभी दौड़े पर कोई भी तरबूज़ तक न पहुँच सका ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब रानी ने कहा कि हे नाथ! सुनो, व्यर्थ ही कोई व्यक्ति उसके लिए मर जाय इससे मुझे बहुत अपयश मिलेगा ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ रानी ने उस तरबूज़ के संदर्भ में ही एक व्यक्ति को बुलाया जो कहने लगा कि यदि ऐसा हो गया तो यह अपयश कभी नहीं मिटेगा, ऐसा सभी कह रहे हैं ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ स्वयं ही उस स्त्री ने तरबूज़ तैराया। फिर स्वयं राजा को क्रोधित किया (और आदमी दौड़ाए)। स्वयं ही अन्य मनुष्यों को बुलवाया। त्रिया-चरित्र को कोई भी नहीं समझ सका है ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में सतहत्तरवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ॥ ७७ ॥ १३२० ॥ अफजू ॥

अथ अठहत्तरवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ एक तखान उजैन मै बिभचारनि तिह नारि । तासो कर्‌यो चरित्र तिन सो तुहि कहौ सुधारि ॥१॥ ॥ चौपई ॥ सुमति बाढियहि तबै उचारो । सुनु गीगो तै बचन हमारो । हौ अबही परदेस सिधैहौ । खाटि कमाइ तुमै धनु ल्यैहौ ॥ २ ॥ यौ कहिकै परदेस सिधारो । खाट तरे छपि रह्यो बिचारो । तब बाढिन इक जार बुलायो । कामकेल तिह साथ कमायो ॥ ३ ॥ कामकेल तासौ त्रिय मान्यो । खाट तरे निजु पतिहि पछान्यो । सभ अंगन बिहबल ह्वै गई । चित के बिखै दुखित अति भई ॥ ४ ॥ तब तासौ त्रिय बचन उचारे । मुहि का करत दई के मारे । प्रान नाथ मेरौ घर नाहीं । हौ जिह बसत बाँह की छाहीं ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ निति अँसूआँ आँखिन भरौ रहों मलीने भेस । पौर लगे बिहरौ नही प्राननाथ परदेस ॥ ६ ॥ लगत बीरिया बान सी बिखु सो लगत अनाज । प्राननाथ परदेस गे ता बिन

अठहत्तरवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ उज्जैन में एक बढ़ई था। उसकी व्यभिचारिणी स्त्री ने जो प्रपंच किया, वह मैं तुमसे कहता हूँ ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ सुमति नामक वढ़ई ने कहा कि हे गीगो ! (बढ़ई की स्त्री का नाम) सुनो, मैं परदेश जा रहा हूँ और धन कमाकर लाऊँगा ॥२॥ यह कहकर वह परदेश चला गया, परन्तु वास्तव में वह खटिया के नीचे छुप गया। तव वढ़ई स्त्री ने एक यार को बुलाया और उसके साथ केलिक्रीड़ा करने लगी ॥ ३ ॥ उसके साथ उसने कामकेलि की, परन्तु खाट के नीचे भी छुपे अपने पति को उसने देख लिया। उसके सब अंग व्याकुल हो गए और वह अत्यन्त दुखी हो गई ॥४॥ तब उसने अपने प्रेमी को कहना शुरू किया कि हे भाग्यहीन ! यह तुम मेरे साथ क्या कर रहे हो। मेरा प्राणनाथ घर पर नहीं है। मैं उसी की छत्रछाया में रहती हूँ ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ मैं नित्य उसके लिए आँखों में आँसू भरे रहती हूँ और प्राणनाथ के परदेश गए होने पर मैं बिलकुल बाहर नहीं निकलती हूँ ॥ ६ ॥ पान-बीड़ी मुझे वाण के समान और अनाज भी ज़हर के समान लगता है। मेरे प्राणनाथ परदेश गए हुए हैं। मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता ॥ ७ ॥

कछू न साज ।।७।। बाढी ऐसे बचन सुनि मन मै भयो कुसाल ।
जार सहित त्रिय खाट लै नाचि उठ्यो ततकाल ।। ८ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे अठहत्तरवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ७८ ।। १३२८ ।। अफजूं ।।

अथ उनासीवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। बनिक एक बानारसी बिसनदत्त तिह नाम । बिस्वमती ता की त्रिया धन जाके बहु धाम ।। १ ।।
।। चौपई ।। बनियो हेत बनिज के गयो । मैन दुख्य त्रिय को अति दयो । तिह त्रिय पै ते रह्यो न जाई । केल कियो इक पुरख बुलाई ।। २ ।। केल कमात गरभ रहि गयो । कीने जतन दूरि नहि भयो । नव मासन पाछे सुत जायो । तवनहि दिवस बनिक घर आयो ।। ३ ।। बनिक कोप करि बचन सुनायो । कछु त्रिय तै बिभचार कमायो । भोग करे बिनु पूत न होई । बाल ब्रिध जानत सभ कोई ।। ४ ।। सुनहु शाहु मै कथा सुनाऊँ । तुमरे चित को भरमु मिटाऊँ । इक जोगी तुमरे ग्रिह आयो । तिह प्रसादि ते ग्रहि सुत पायो ।।५।।

वह बढ़ई ऐसे वचन सुनकर मन में पुलकित हो उठा और प्रेमी-सहित स्त्री की खटिया सिर पर उठाकर नाच उठा ।। ८ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में अठहत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ७८ ।। १३२८ ।। अफजू ।।

उन्नासीवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। वाराणसी के एक वणिक् का नाम विष्णुदत्त था । उसके पास बहुत धन था और उसकी स्त्री का नाम विश्वमती था ।। १ ।।
।। चौपाई ।। वणिक् व्यापार के लिए गया और उसकी स्त्री कामपीड़ित हो उठी । उससे रहा न गया और उसने एक पुरुष को बुलाया ।। २ ।। उसी केलिक्रीड़ा से उसे गर्भ रह गया जो किसी भी तरह न गिरा । नौ मास बाद पुत्र पैदा हुआ और उसी दिन वह वणिक् भी घर आया ।। ३ ।। वणिक् ने कुपित होकर पूछा कि हे स्त्री ! क्या तूने व्यभिचार किया है ? क्योंकि बिना भोग के पुत्र नहीं हो सकता, इसे सब जानते हैं ।।४।। (स्त्री नें कहा—) सुनो धनी ! मैं कथा कहती हूँ और तुम्हारे भ्रम का निवारण करती हूँ । तुम्हारे

।। दोहरा ।। मुरजनाथ जोगी हुतो सो आयो (मू०ग्रं०९०७) इह धाम । द्रिशटि भोग मोसौ कियौ सुत दीनो ग्रहि राम ।। ६ ।। बनिक बचन सुनि चुप रह्यो मन मै भयो प्रसन्य । द्रिशटि भोग जिनि सुत दियौ धरनी तल सो धन्य ।। ७ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे उनासीवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ७९ ।। १३३५ ।। अफजूं ।।

अथ अस्सीवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। बिंद्राबन ग्रहि नंद के कान्ह लयो अवतार । तीनि लोक जाको सदा निति उठि करत जुहार ।। १ ।। ।।चौपई।। सभ गोपी ता के गुन गावहि । नित्य किशन कह सीस झुकावहि । मन महि बस्यो प्रेम अति भारी । तन मन देत आपनो वारी ।। २ ।। राधा नाम गोपि इक रहै । क्रिशन क्रिशन मुख ते निति कहै । जगनायक सौ प्रेम लगायो । सूत सिधन की भाँति बढायो ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। क्रिशन क्रिशन मुख ते कहै छोरि धाम को काम । निसदिन रटत

घर में एक योगी आया था, उसी के प्रसाद से यह पुत्र-प्राप्ति हुई है ।। ५ ।। ।। दोहा ।। मुरजनाथ नामक योगी यहाँ आया था और उसने मुझसे दृष्टिभोग किया जिससे परमात्मा ने मुझे पुत्र दिया ।।६।। वणिक् यह वचन सुनकर चुप रह गया और प्रसन्न हो उठा । वह उस योगी को धन्य मानने लगा जिसने दृष्टिभोग से पुत्र दिया था ।। ७ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में उन्नासीवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ७९ ।। १३३५ ।। अफजू ।।

अस्सीवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। वृन्दावन में नन्द के घर कृष्ण ने अवतार लिया । तीनों लोक उसकी अर्चना करते थे ।। १ ।। ।। चौपाई ।। सब गोपियाँ उसके गुणानुवाद करती थीं और उसे शीश झुकाती थीं । सबके मन में प्रेमपूर्वक वह बस गया था और सभी अपना तन-मन उस पर न्यौछावर करती थीं ।। २ ।। राधा नामक एक गोपी थी, जो रात-दिन 'कृष्ण-कृष्ण' उच्चारण किया करती थी । उसने जगतनायक से प्रेम किया और सीधे सूत्र की भाँति उसे बढ़ाया ।। ३ ।। ।। दोहा ।। घर का काम-काज छोड़कर वह रात-दिन कृष्ण-

बिहंग ज्यों जगनायक को नाम ।। ४ ।। ।। चौपई ।। त्रास न पितु माता को करै । क्रिशन क्रिशन मुख ते उचरै । हेरनि ताँहि नित्त उठि आवै । नंद जसोमति देखि लजावै ।। ५ ।। ।। स्वैया ।। जोबन जेब जगे अति सुंदर जात जराव जुरी कह नातैं । अंगहु ते ब्रिज लोग सभे हरिराइ बनाइ कही इक बातैं । हाथ उचाइ हनी छतियाँ मुसकाइ लजाइ सखी चहूँ घातैं । नैनन सो कह्यो ए जदुनाथ सु भौंहन सो कह्यो जाहु इहाँ तैं ।। ६ ।। ।। दोहरा ।। नैनन सो हरिराइ कहि भौहन उत्तर दीन । भेद न पायो कउनहूँ क्रिशन बिदा करि दीन ।। ७ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे अस्सीवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ८० ।। १३४२ ।। अफजूं ।।

अथ इकासवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। नगर सिरोमनि को हुतो सिंघ सिरोमनि

कृष्ण कहती और पक्षी (तोते) की तरह उस जगतनायक का नाम स्मरण किया करती थी ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। वह माता-पिता से (भी) नहीं डरती थी और कृष्ण-कृष्ण पुकारती रहती थी । वह कृष्ण को ढूँढ़ने नित्य जाती थी, परन्तु नन्द-यशोदा को देखकर लज्जायुक्त हो उठती थी ।। ५ ।। ।। सवैया ।। उसका यौवन ज्योति की भाँति जगमगा रहा था और वह (कृष्ण से) प्रेम के नाते जुड़ती जाती थी । इधर व्रज के लोग भी घबराकर बातें करने लगे, उधर राधा ने घबराकर छाती पीट ली, जिसे घात लगाकर देखती हुई सखियाँ देखकर मुस्कुरा उठीं । आँखों ही आँखों के संकेत से कृष्ण ने उससे कहा कि तुम यहाँ से चली जाओ ।। ६ ।। ।। दोहा ।। कृष्ण ने आँखों के संकेत से ही उसे उत्तर दिया और इस प्रकार बिना किसी के जाने उसे कृष्ण ने विदा कर दिया ।। ७ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में अस्सीवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ८० ।। १३४२ ।। अफजू ।।

इक्यासीवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। शिरोमणि नगर में शिरोमणि सिंह राजा था । वह कामदेव के समान सुन्दर स्वरूप वाला था और उसके पास अपरिमित द्रव्य

भूप। अमित दरबु घर मै धरे सुंदर काम सरूप ॥ १ ॥
॥ चौपई ॥ द्रिग धन्या ता की बरनारी। न्रिप को रहै लाज
ते प्यारी। एक दिवस राजा घर आयो। रंग नाथ जोगियहि
बुलायो ॥२॥ ॥ दोहरा ॥ ब्रहमबाद तासौ कियो राजै निकट
बुलाइ। जु कछु कथा तिन सो भई सो मै कहत बनाइ ॥ ३ ॥
एक नाथ सभ जगत मै ब्यापि रह्यो सभ देस। (मू०ग्रं०९०८)
सभ जोनिन मै रवि रह्यो ऊच नीच के भेस ॥ ४ ॥
॥ चौपई ॥ सरबब्यापी स्रीपति जानहु। सभही को पोखक
करि मानहु। सरब द्याल मेघ जिनि ढरई। सभ काहू कर
किरपा करई ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ सभ काहू कौ पोखई सभ
काहू कौ देइ। जो ताँते मुख फेरई माँगि मीच कह लेइ ॥६॥
॥ चौपई ॥ एकन सोखै एकन भरै। एकन मारै इकनि
उबरै। एकन घटवै एक बढावै। दीनद्याल यौ चरित
दिखावै ॥ ७ ॥ रूप रेख जाके कछु नाहीं। भेख अभेख सभ
के घट माहीं। जा पर क्रिपा चच्छु करि हेरै। ता की कौन
छाह कौ छेरै ॥ ८ ॥ जच्छ भुजंग अकाश बनायो। देव
अदेव थपि बादि रचायो। भूमि बारि पंच ततु प्रकासा।

था ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसकी सुन्दर स्त्री दृगधन्या थी जो कि राजा को अत्यन्त प्यारी थी। एक दिन राजा घर आया और उसने रंगनाथ नामक योगी को बुलाया ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा ने उसे पास बुलाकर उससे ब्रह्म-संवाद किया। जो कुछ कथा हुई वह मैं तुमसे कहता हूँ ॥ ३ ॥ एक ही परमात्मा सभी देशों, योनियों और ऊँच-नीच में बस रहा है ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ श्री परमात्मा को सर्वव्यापक मानो और उसे ही सबका पोषक मानो। जैसे सर्वदयालु बादल बरसता है उसी प्रकार वह सब पर कृपा करता है ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ वह सबका पोषण करता है और सबको देता है। जो उससे मुँह फेरता है वह मानो मौत अपने मुँह से माँगता है ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह एक ओर सुखाता है, एक ओर भरता है। एक ओर घटाता है और एक ओर बढ़ाता है। इस प्रकार दीनदयालु अपने चरित्र दिखाता है ॥ ७ ॥ उसकी कोई रूपरेखा नहीं है और वेश-अवेश-रूप में वह सबके अन्दर विराजमान है। जिस पर उसकी कृपा-दृष्टि हो जाती है उसकी छाया को भी कोई नहीं देख सकता है ॥ ८ ॥ उसी नें यक्ष, भुजंग, आकाश बनाया और देव-दानव बनाकर उनमें विवाद प्रारम्भ करवाया। पृथ्वी, जल आदि

आपहि देखत बैठ तमासा ।। ६ ।। ।। दोहरा ।। जीव जंत सभ थापि कै पंथ बनाए दोइ । झगरि पचाए आप महि मोहि न चीनै कोइ ।। १० ।। ।। चौपई ।। यह सभ भेद साधु कोऊ जानै । सत्तिनामु को तत्त पछानै । जो साधक या कौ लखि पावै । जननी जठर बहुरि नहि आवै ।।११।। ।।दोहरा।। जब जोगी ऐसे कह्यो तब राजै मुसकाइ । तत्त ब्रहम के बादि कौ उचरत भयो बनाइ ।। १२ ।। ।। चौपई ।। जोगी डिंभ कि जोगी जियरो । जोगी देह कि जोगी हियरो । सो जोगी जो जोग पछानै । सत्तिनामु बिनु अवरु न जानै ।। १३ ।। ।। दोहरा ।। डिंभ दिखायो जगत को जोगु न उपज्यो जीय । या जग के सुख ते गयो जनमु ब्रिथा गे कीय ।। १४ ।। ।। चौपई ।। तब जोगी हसि बचन उचारो । सुनहु राव जू ग्यान हमारो । सो जोगी जो जोग पछानै । सत्तिनामु बिनु अवरु न जानै ।। १५ ।। ।। दोहरा ।। जब चाहत है आतमा इक ते भयो अनेक । अनिक भाँति पसरत जगत बहुरि एक को एक ।। १६ ।। ।। चौपई ।। यह नहि मरै न काहू मारै । भूला लोक भरमु बीचारै । घट घट ब्यापक अंतरजामी ।

पाँच तत्त्वों को वनाकर स्वयं सबका तमाशा देखता है ।।६।। ।।दोहा।। उसी ने जीव-जन्तु बनाकर दो मार्ग (जीवन-मृत्यु) बनाए परन्तु परमात्मा का कहना है कि सभी आपस के झगड़ों में उलझे हैं और मुझे कोई नहीं पहचानता है ।। १० ।। ।। चौपाई ।। यह रहस्य कोई साधु ही जानता है और सत्यनाम के रहस्य को पहचानता है। जो साधक इसको पा जाता है वह माता के गर्भ में नहीं आता ।। ११ ।। ।। दोहा ।। जब योगी ने यह सब कहा तो राजा मुस्कुराया और ब्रह्म के तत्व को बताने लगा ।। १२ ।। ।। चौपाई ।। योग वेश है, प्राण है, देह है अथवा हृदय है। योग को पहचाननेवाला योगी सत्यनाम विना अन्य कुछ नहीं जानता ।। १३ ।। ।। दोहा ।। लोगों को पाखण्ड दिखाया और मन में योगवृत्ति नहीं पैदा हुई तो समझ लो उसका जन्म भी व्यर्थ गया और इस संसार के सुख से भी गया ।। १४ ।। ।। चौपाई ।। तब योगी ने हँसकर राजा से कहा कि मेरा ज्ञान सुनो। योगी वही है जो योग को पहचानता है और सत्यनाम के बिना अन्य कुछ नहीं जानता है ।। १५ ।। ।। दोहा ।। आत्मा जब भी चाहता है जगत में एक से अनेक हो जाता है और पुनः एक हो जाता है ।। १६ ।। ।। चौपाई ।। यह न मरता है न किसी

सभ ही महि रवि रह्यो सुआमी ।।१७।। ।। कबित्त ।। घोरा कहूँ भयो कहूँ हाथी ह्वैके गयो कहूँ पंछी रूप लयो कहूँ फल फूल रह्यो है । पावक ह्वै दह्यो कहूँ पौन रूप कह्यो कहूँ चीत ह्वैकै गह्यो कहूँ पानी ह्वै कै बह्यो है । अंबर उतारे रावनादिक सँघारे कहूँ बन मै बिहारे ऐसे बेदन मै कह्यो है । (मू०ग्रं०९०९) पुरख ह्वै आपु कहूँ इसत्रिन को रूप धर्यो मूरखन भेद ता को नैकहूँ न लह्यो है ।।१८।। ।।चौपई।। कवन मरै का को कोऊ मारै । भूला लोक भरम बीचारै । यह न मरत मारत है नाही । यौ राजा समझहु मन माही ।। १९ ।। ।। दोहरा ।। बिना नाम ता के जपे बाल ब्रिध कोऊ होइ । राव रंक राजा सभै जियत न रहसी कोइ ।। २० ।। ।। चौपई ।। सत्तिनामु जो जिय लखि पावै । ता के काल निकट नहि आवै । बिना नाम ता के जो रहिहै । बन गिर पुर मंदिर सभ ढहिहै ।। २१ ।। ।। दोहरा ।। चकिया कैसे पट बने गगन भूमि पुनि दोइ । दुहूँ पुरन मै आइकै साबित गया न कोइ ।। २२ ।। ।। चौपई ।। सत्तिनाम जो पुरख पछानै ।

को मारता है । लोग भ्रमपूर्वक ही अन्य विचार किया करते हैं । वह सभी में रमण करनेवाला घट-घट व्यापक अन्तर्यामी है ।। १७ ।। ।। कवित्त ।। कहीं वह घोड़ा, कहीं हाथी, कहीं पक्षी और कहीं फल-फूल बना हुआ है । कहीं वह अग्नि बनकर जलाता है, कहीं पवन है, कहीं चित्त में रमण करता है और कहीं पानी बनकर बहता है । कहीं आकाश में रहता है, कहीं रावणादिक को मारता, वन में विचरण करता हुआ वेदों में बताया गया है । कहीं वह पुरुष है और कहीं उसने स्त्री का वेश धारण किया है । परन्तु मूर्ख उसका रहस्य नहीं समझ पाए हैं ।।१८।। ।। चौपाई ।। कौन मारता है और किसको मारता है, लोग भ्रम में भूले यही विचार किए जा रहे हैं । हे राजा ! मन में यह बात समझ लो कि यह न मारता है, न मरता है ।।१९।। ।।दोहा।। बालक वृद्ध सभी उसका जाप करते हैं । राजा-रंक कोई भी जीवित नहीं बचता है ।। २० ।। ।। चौपाई ।। जो सत्यनाम का दर्शन हृदय में कर लेता है, काल उसके पास नहीं आता । उसके नाम-विहीन वन, पर्वत, नगर, मकान सभी ढह जायँगे ।। २१ ।। ।। दोहा ।। आकाश और धरती दोनों चक्की के पाट के समान हैं, जिनके बीच में आनेवाला कोई भी जीवित नहीं बचा है ।। २२ ।। ।। चौपाई ।। जो पुरुष सत्यनाम को पहचानता है, प्रामाणिक

सत्तिनाम लै बचन प्रमानै। सत्तिनामु मारग लै चलही। ता को काल न कबहूँ दलही ॥ २३ ॥ ॥ दोहरा ॥ ऐसे बचनन सुनत ही राजा भयो उदासु। भूमि दरबु घर राज तें चित मै भयो निरासु ॥ २४ ॥ जब रानी ऐसे सुन्यो दुखत भई मन माँह। देस दरबु ग्रहि छाडिकै जात लख्यो नर नाह ॥ २५ ॥ तब रानी अति दुखित ह्वै मंत्री लयो बुलाइ। क्यों हूँ न्रिप ग्रहि राखियै कीजै कछू उपाइ ॥ २६ ॥ ॥ चौपई ॥ तब मंत्री इमि बचन उचारो। सुनु रानी तैं मंत्र हमारो। ऐसो जतन आजु हम करिहै। न्रिप ग्रहि राखि जोगियहि मरिहै ॥ २७ ॥ रानी जो हौ कहौ सु करियहु। राजा जू ते नैक न डरियहु। या जुगिया कह धाम बुलैयहु। लौन डारि भुअ माँझ गडैयहु ॥ २८ ॥ ॥ दोहरा ॥ तब रानी त्यों ही कियो जुगियहि लयो बुलाइ। लौन डारि भुअ खोदिकै गहि तिह दयो दबाइ ॥ २९ ॥ ॥ चौपई ॥ जाइ न्रिपति पति बचन उचारे। जुगिया माटी लई तिहारे। मरती बार बचन यो कह्यो। सो मै द्रिड़ु करि जिय महि गह्यो ॥ ३० ॥ मोरी कही भूप सौ कहियहु। तुम बैठे ग्रहि ही मै रहियहु। इन रानिन कौ तापु न दीजहु। राजि जोग दोनों ही

मानता है, उसके मार्ग पर चलता है, उसे काल भी कभी नष्ट नहीं करता ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ यह वचन सुनते ही राजा उदास हो गया और भूमि, द्रव्य, घर, राज-काज आदि सबसे निराश हो गया ॥ २४ ॥ जब रानी नें यह सुना तो मन में दुखी हो उठी। उसने देश-द्रव्य आदि को छोड़कर जाते हुए राजा को देखा ॥ २५ ॥ तब रानी नें दुखी होकर मंत्री को बुलाया और उससे कहा कि कैसे भी राजा को घर में रखो ॥२६॥ ॥ चौपाई ॥ तब मंत्री ने यह कहा कि रानी ! तुम मेरी बात सुनो। मैं आज ऐसा कार्य करूंगा कि राजा को तो घर पर रख लूँगा और योगी को मार-डालूँगा ॥ २७ ॥ हे रानी ! जो मैं कहूँ वही करना और राजा जी से तनिक नहीं डरना। इस योगी को घर में बुलाओ और इसे नमक डालकर भूमि में गाड़ दो ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ तब रानी ने वैसा ही किया और योगी को बुला लिया। उसे नमक डालकर और भूमि खोदकर दबा दिया ॥ २९ ॥ ॥ चौपाई ॥ जाकर राजा से कह दिया कि योगी तो मर गया। मरते समय उसने जो कहा मैंने उसे पल्ले बाँध लिया है ॥ ३० ॥ उसने कहा कि राजा से कह देना कि तुम घर में ही बैठे रहो। इन रानियों को कष्ट मत दो और राज-योग

कीजहु ।। ३१ ।। पुनि मोसो इक बचन उचारो । जौ त्रिप कह्यो न करै तिहारो । तब पाछे यह बचन उचरियहु । राजा जू के तप कह हरियहु ।। ३२ ।। जो तिन कही सु पाछे कहिहौ । तुमरे सकल भरम को दहिहौ । (मू०ग्रं०९१०) अब सुनि लै तैं बचन हमारो । जा ते रहिहैं राज तिहारो ।।३३।। ।। दोहरा ।। सुत बालक तरुनी त्रिया तैं त्यागत सभ साज । सभ बिधि कियो कसूति ग्रहि क्यों करि रहसी राज ।। ३४ ।। पूत परे लोटत धरनि त्रिया परी बिललाइ । बंधु भ्रित रोदन करैं राजबंस तें जाइ ।।३५।। ।। चौपई ।। चेले सभै अनंदित भए । दुरबल हुते पुशट ह्वै गए । नाथ त्रिपहि जोगी करि ल्यैहै । द्वार द्वार के टूक मँगैहै ।। ३६ ।। ।। दोहरा ।। त्रिप कह जोगी भेस दै अबही लियो है नाथ । यौ मूरखु जानै नही कहाँ भई तिह साथ ।। ३७ ।। सुत बालक तरुनी त्रिया क्यों त्रिप छाडत मोहि । चेरी सभ रोदन करैं दया न उपजत तोहि ।। ३८ ।। सुनु रानी तोसों कहो ब्रहम ग्यान को भेद । जु कछु शास्त्र सिम्रित कहत और उचारत बेद ।। ३९ ।।

दोनों ही भोगो ।। ३१ ।। पुनः उसने मुझसे कहा कि यदि राजा तुम्हारा कहना न माने तो उससे कहना कि तुम्हारे तप की सारी शक्ति का हरण कर लिया जायगा ।।३२।। जो उसने और कहा, वह बाद में बताऊँगी और तुम्हारे भ्रम को नष्ट करूँगी । अब तुम मेरी बात सुनो, जिससे तुम्हारा राज्य बचा रह सके ।। ३३ ।। ।। दोहा ।। बालक, जवान स्त्री तुम त्याग रहे हो, भला बताओ तुम्हारा राज्य कैसे बचेगा ।। ३४ ।। पुत्र और स्त्रियाँ धरती पर लोट रहे हैं । भाई और सेवक रो रहे हैं कि राज्य हमारे वंश से जा रहा है ।। ३५ ।। ।। चौपाई ।। इधर योगी के चेले आनंदित होकर दुर्बलता त्यागकर हृष्ट-पुष्ट हो गए । वे सोचने लगे कि हमारा गुरु राजा को योगी बनाकर ले आएगा और द्वार-द्वार भीख मँगवाएगा ।। ३६ ।। ।। दोहा ।। वे सोच रहे थे कि राजा योगी बनकर अब आता ही होगा; परन्तु वे मूर्ख यह नहीं जान रहे हैं कि उसके साथ क्या हुआ ।। ३७ ।। पुत्र, बालक, तरुणी स्त्रियाँ सभी रो रही हैं और कह रही हैं कि राजा ! तुम हमको क्यों छोड़ रहे हो, क्या तुम्हें दया नहीं आती ।। ३८ ।। हे रानी ! सुनो, मैं तुम्हें ब्रह्मज्ञान का और जो शास्त्र-स्मृति तथा वेद कहते हैं, उन सबका रहस्य समझाता हूँ ।।३९।। ।। चौपाई ।। माता बच्चे को प्यार करती है, पर उधर काल सिर

।। चौपई ।। सुत हित कै माता दुलरावै । काल मूँड पर दात बजावै । वुह नित लखै पूत बढि जावत । लहै न मूड़ काल निजकावत ।।४०।। को माता बनिता सुता पाँच तत्त की देह । दिवस चार को पेखनो अंत खेह की खेह ।।४१।। ।।चौपई।। प्रानी जनम प्रथम जब आवै । बालापन मै जनमु गवावै । तरुनापन बिखियन कै कीनो । कबहु न ब्रहम ततु को चीनो ।।४२।। ।। दोहरा ।। बिरध भए तनु काँपई नामु न जपियो जाइ । बिना भजन भगवान के पाप ग्रिहत तन आइ ।। ४३ ।। मिरतु लोक मै आइकै बाल ब्रिध कोऊ होइ । ऊच नीच राजा प्रजा जियत न रहिसी कोइ ।। ४४ ।। रानी ऐसे बचन सुनि भूमि परी मुरछाइ । पोसतिया की नींद ज्यों सोइ न सोयो जाइ ।। ४५ ।। जो उपज्यो सो बिनसिहै जग रहिबो दिन चारि । सुत बनिता दासी कहा देखहु ततु बीचार ।। ४६ ।। ।। छंद ।। पति पूतन ते रहै बिजै पूतन ते पैयै । दिरबु कपूतन जाइ राज सपूतन बहुरैयै । पिंड पुत्र ही देहि प्रीति पूतो उपंजावहि । बहुत दिनन को बैर गयो पूतं बहुरावहि । जो

पर खड़ा दाँत पीस रहा होता है। वह समझती है कि मेरा पुत्र वड़ा हो रहा है, परन्तु यह नहीं जानती कि काल पास आ रहा है ।।४०।। कौन माता, स्त्री और पुत्र है, सभी पाँच तत्त्वों का मिश्रण मिट्टी है, जो चार दिन दिखाई देकर अंत में मिट्टी हो जाता है ।। ४१ ।। ।। चौपाई ।। प्राणी जब जन्म लेता है तो बचपने में ही सारा जन्म गँवा देता है। तरुणाई में विषय-विकारों में लीन रहा और ब्रह्मतत्त्व को कभी नहीं पहचाना ।। ४२ ।। ।। दोहा ।। जब वृद्ध हुआ, तन काँपने लगा तो नाम-स्मरण नहीं हो पाता। अब भगवद्भजन बिना पाप आ पकड़ते हैं ।। ४३ ।। मृत्युलोक में आकर चाहे कोई राजा हो चाहे प्रजा हो, बालक हो, वृद्ध हो, कोई जीवित नहीं बचता है ।। ४४ ।। रानी यह वचन सुनकर पोस्ती की तरह मूर्च्छित होकर धरती पर गिर पड़ी ।। ४५ ।। तत्त्व विचारकर देखो कि चाहे सुत हो, स्त्री हो अथवा दासी हो उसे संसार में चार दिन ही रहना है। जो पैदा हुआ है, उसको विनष्ट होना है ।। ४६ ।। ।। छंद ।। पुत्र होने से पति (प्रसन्न) रहता है और विजय भी पुत्रों के ही कारण मिलती है। कुपुत्र द्रव्य बाँट देते हैं और सुपुत्र पुनः राज्य प्राप्त करवा देते हैं। पुत्र ही इस शरीर के लिए प्रीति उत्पन्न करते हैं और बहुत दिनों के द्वेष को पुत्र ही संभालकर रखते हैं।

पूतन कौ छाडि न्रिपति तपस्या को जावै। परै नरक सो जाइ अधिक तन मै दुखु पावै ।। ४७ ।। न को हमारो पूत न को हमरी कोई नारी। न को हमारो पिता न को हमरी महतारी। न को हमारी भैंन न को हमरो (मू०ग्रं०९११) कोई भाई। न को हमारो देस हौ न काहू कौ राई। ब्रिथा जगत मै आइ जोग बिनु जनम गवायो। तज्यो राज अरु पाट यहै जियरे मुहि भायो ।।४८।। जननि जठर महि आइ पुरख बहुतो दुखु पावहि। मूत्र धाम कौ पाइ कहत हम भोग कमावहि। थूक त्रिया कौ चाटि कहत अधराम्रित पायो। ब्रिथा जगत मै जनमु बिना जगदीस गवायो ।। ४९ ।। ।।रानी बाचु।। रिखि याही ते भए न्रिपति याही उपजाए। ब्यासादिक सभ चतुर इही मारग ह्वै आए। परसे याके बिनाँ कहो जग मै को आयो। प्रथम ऐत भव पाइ बहुरि परमेश्वर आयो ।। ५० ।। ।। दोहरा ।। अति चातुरि रानी सुमति बातैं कही अनेक। रोगी कै पथ ज्यों न्रिपति मानत भयो न एक ।। ५१ ।। ।। राजा बाच ।। ।। छंद ।। पुनि राजै यौ कही बचन सुनि मेरो रानी। ब्रह्म ग्यान की बात कछू तैं नैकु न जानी। कहा

इसलिए जो पुत्रों को छोड़कर राजा तपस्या को जाता है, वह नरक में पड़ता है और अधिक दुख पाता है ।।४७।। न मेरा कोई पुत्र है, न नारी है, न पिता है और न ही माता है। न कोई मेरी बहिन है और न कोई मेरा भाई है। न कोई मेरा देश है और न मैं कहीं का राजा हूँ। मैंने तो योग बिना यह जन्म ही व्यर्थ गँवा दिया है। अब तो राज-पाट छोड़ना ही मुझे प्रिय है ।। ४८ ।। माँ के पेट में आकर पुरुष बहुत दुख पाता है। पुनः मूत्रधाम अर्थात् संभोग-सुख प्राप्त कर कहता है कि मैं सुख भोग रहा हूँ। स्त्री के थूक को चाटकर कहता है कि मैंने अधरामृत प्राप्त किया है। इसके बिना परमात्मा के इस जन्म को व्यर्थ ही गँवा दिया है ।।४९।। ।।रानी उवाच।। ऋषि एवं राजा इसी से पैदा हुए हैं और व्यासादि भी इसी मार्ग से अवतरित हुए हैं। इसे स्पर्श किए बिना कोई भला जग में हो सकता है। पहले इसी मार्ग से संसार में अवतरित होकर फिर परमात्मा को पाया जाता है ।। ५० ।। ।। दोहा ।। सुमति रानी ने अनेकों बातें की, परन्तु रोगी के परहेज़ की तरह राजा ने एक नहीं मानी ।। ५१ ।। ।। राजा उवाच ।। ।। छंद ।। राजा ने पुनः कहा कि हे रानी ! तुमने ब्रह्मज्ञान की एक भी बात नहीं समझी। यह अभागी स्त्री भी क्या चीज़ है जिससे अत्यधिक स्नेह किया जाय। यह

बापुरी त्रिया नेह जासौ अति करिहै। महाँ मूत को धाम बिहसि आगे तिह धरिहै ॥ ५२ ॥ ॥ दोहरा ॥ पुनि राजै ऐसे कह्यो सुनु हो राजकुमारि। जो जोगी तुम सौ कह्यो सो मुहि कहौ सुधारि ॥ ५३ ॥ ॥ चौपई ॥ दुतिय बचन जोगी जो कह्यो। सो मै ह्रिदै बीच द्रिड़ गह्यो। जौ तुम कहौ सु बचन बखानो। तुम जो साचु जानि जिय मानो ॥ ५४ ॥ मंदर एक उजार उसरियहु। बैठे तहाँ तपस्या करियहु। हौ तह और मूरति धर ऐहों। ब्रहम ग्यान त्रिप को समुझैहों ॥ ५५ ॥ ॥ दोहरा ॥ बानी तहाँ अकाश की ह्वै है तुमै बनाइ। तब तुम सत्ति पछानियो जोगी पहुचयो आइ ॥ ५६ ॥ ॥ चौपई ॥ रानी बन मै सदन सवार्यो। छात बीच रौजन इक धार्यो। जाके बिखै मनुख छपि रहैं। जो चाहै चित मै सो कहै ॥ ५७ ॥ बैठे तरे नजरि नहि आवै। बानी नभ ही की लखि जावै। रानी तहाँ पुरख बैठायो। अनित दरब दै ताहि सिखायो ॥ ५८ ॥ ॥ दोहरा ॥ एक पुरख चाकर हुतो नाम सिंघ आनूप। वहि जुगिया की बैस थो ताकी सकल सरूप ॥५९॥ ॥ चौपई ॥ तासौ कह्यो त्रिपहि समुझैयहु। तुम जोगी आपहि ठहिरैयहु। क्यों हूँ त्रिपहि

तो बस प्रसन्न होकर संभोग के लिए मल-मूत्र का भंडार आगे कर देती है ॥ ५२ ॥ ॥ दोहा ॥ पुनः राजा ने राजकुमारी (पत्नी) से पूछा कि योगी ने जो दूसरा वचन कहा वह भी मुझसे कहो ॥ ५३ ॥ ॥ चौपाई ॥ योगी ने जो दूसरी बात कही, वह मैंने हृदय में दृढ़ कर ली है। जो कहा है वही कहती हूँ, इसे तुम सत्य जानो ॥५४॥ उजाड़ वीराने में एक मंदिर बनवाओ और बैठकर वहाँ तपस्या करो। हम-तुम और मूर्ति राजा को ब्रह्मज्ञान की बातें समझाएँगे ॥ ५५ ॥ ॥ दोहा ॥ तब वहाँ आकाशवाणी होगी और तब तुम सत्य समझना कि पहुँचा हुआ योगी आया था ॥५६॥ ॥चौपाई ॥ रानी ने वन में एक भवन बनवाया और उसकी छत में एक झरोखा रखा ताकि उसके पीछे व्यक्ति छिपकर जो चाहे कह सके ॥ ५७ ॥ वह नीचे बैठे हुए को दिखाई नहीं पड़े और उसकी बात आकाशवाणी ही लगे। रानी ने वहाँ एक व्यक्ति को बैठाया और उसे अनन्त द्रव्य देकर सिखा दिया ॥ ५८ ॥ ॥ दोहा ॥ अनूपसिंह नामक एक सेवक था जो योगी के स्वरूप का था ॥५९॥ ॥ चौपाई ॥ उससे कहा कि तुम योगी बनकर राजा को समझाना। जैसे

मोरि घर ल्यावहु। जो कछु मुख माँगहु सो पावहु ॥ ६० ॥ ॥ दोहरा ॥ जब (मू०ग्रं०९१२) ताँसो ऐसो बचन रानी कह्यो बुलाइ। चतुरु पुरखु आगे हुतो सकल भेद ग्यो पाइ ॥ ६१ ॥ ॥ चौपई ॥ तब रानी राजा पहि आई। लीने द्वै कंथा करवाई। इक तुम धरो एक हौ धरिहों। तुमरे संग तपस्या करिहों ॥ ६२ ॥ ॥ दोहरा ॥ जब रानी ऐसे कह्यो तब राजै मुसकाइ। जो तासों बातैं करी सो तुहि कहो सुनाइ ॥ ६३ ॥ ॥ स्वैया ॥ है बन को बसिबो दुख को कहु सुंदरि तूँ संग क्यों निबहैहैं। सीत तुसार परै तन पै सु इतो तब तौ हठहूँ न गहैहैं। साल तमाल बडे जह ब्याल निहाल तिनै बहुधा बिललैहैं। तूँ सुकुमारि करी करतार सु हारि परे तुहि कौन उठैहैं ॥ ६४ ॥ ॥ रानी बाच ॥ सीत समीर सहौं तन पै सुनु नाथ तुमै अब छाडि न जैहों। साल तमाल बडे जह ब्याल निहाल तिनै कछु ना डरपैहों। राज तजो सज साज तपो धन लाज धरे प्रभ संग सिधैहों। बात इहै दुख गात सहों बन नायक के संग पात चबैहों ॥ ६५ ॥ ॥ राजा बाच ॥ ॥ दोहरा ॥ राज भली बिध राखियहु नाथ सँभरियहु नित्त।

भी हो राजा को घर ले आना। जो माँगोगे मैं वही दूँगी ॥ ६० ॥ ॥ दोहा ॥ जब रानी ने उससे ऐसे कहा तो वह चतुर पुरुष सब समझ गया ॥ ६१ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब रानी राजा के पास आई और दो गुदड़ी बनवा ली। राजा से कहा कि एक तुम धारण करो, एक मैं धारण करती हूँ और मैं भी तुम्हारे साथ तपस्या करती हूँ ॥ ६२ ॥ ॥ दोहा ॥ जब रानी ने यह सब किया तो राजा ने मुस्कुराकर कहा कि जो तुमसे बातें हुई हैं वे सब मुझसे कहो ॥ ६३ ॥ ॥ सवैया ॥ हे सुन्दरी ! वन का निवास दुखपूर्ण है, भला तुम कैसे रह सकोगी ? वहाँ शीत, तूफ़ान सब तन पर सहना पड़ेगा, तुम भला हठपूर्वक कैसे सहोगी ? वहाँ पेड़ों जितने बड़े-बड़े सर्प हैं, जिन्हें देखकर ही तुम व्यथित हो उठोगी। तुम बहुत सुकुमारी हो, अगर तुम कहीं गिर गई तो तुम्हें कौन उठाएगा ? ॥ ६४ ॥ ॥ रानी उवाच ॥ मैं ठंडी वायु के थपेड़े तन पर सहूँगी पर हे नाथ ! तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊँगी। पेड़ों जितने बड़े सर्प देखकर भी मैं नहीं डरूँगी। राज्य का त्याग कर और तपोधन की प्राप्ति के लिए मैं आपके संग जाऊँगी। मैं शरीर पर दुख झेलूँगी, परन्तु पत्ते चबाते हुए शेरों के साथ रहूँगी ॥ ६५ ॥ ॥ राजा उवाच ॥

सुत सेवा नित कीजियहु बचन धारियहु चित्त ।। ६६ ।। ।। सवैया ।। राज तजो सजि साज तपोधन काज न बासव की ठकुराई । अस्व पदांतु बने बन बारुण चाहत हो न कछू प्रभताई । बालक बार तजे बरनारि तजों ससुरारि यहै ठहराई । जाइ बसों बन मै सुखु सो सुनु सुंदरि आजु इहै मन भाई ।। ६७ ।। ।। दोहरा ।। जो इसत्री पति छाडिकै बसत धाम के माहि । तिनको आगे स्वरग के भीतरि पैठब नाहि ।। ६८ ।। ।। रानी बाच ।। ।। कबित ।। बालकन बोरो राज इंद्रहूँ को छोरो और भूखनन तोरो कठिनाई ऐसी झलिहों । पात फल खैहों सिघ साँप ते डरैहों नाहि बिना प्रान प्यारे के हिमाचल मै गलिहों । जौन हौ सु हैहौ मुख देखो पाछे चली जैहौ ना तौ बिरहागिन की आगि बीच बलिहों । कौन काज राजहूँ को साज महाराज बिन नाथ जू तिहारो रहे रहों चले चलिहों ।। ६९ ।। ।। सवैया ।। देस तजो करि भेस तपोधन केस मरोरि जटानि सवारों । लेस करौ न कछू धन कौ प्रभ की पन्हियाँ पर ह्वै तन वारों । बालक कोरि करौ इक ओर

।। दोहा ।। तुम राज्य को भली प्रकार सँभालो और अपने स्वामी का स्मरण करती रहना । मेरी बात मानकर तुम पुत्र की सेवा करना ।। ६६ ।। ।। सवैया ।। राज्य त्यागकर तपोधन के लिए तैयार होकर जाते समय मुझे इन्द्र का राज्य भी अच्छा नहीं लग रहा । मुझे अश्व, वारुणी और प्रभुता कुछ भी नहीं चाहिए । मैंने बालक, सुन्दर स्त्री, ससुरालादि सभी छोड़कर सुखपूर्वक वन में जाकर रहने का मन बनाया है ।। ६७ ।। ।। दोहा ।। जो स्त्री पति को छोड़कर घर में बैठती है उसे आगे स्वर्ग में बैठने नहीं दिया जाता ।। ६८ ।। ।। रानी उवाच ।। ।। कवित्त ।। बालकों को डुबा दूँगी, इन्द्र के राज्य को भी छोड़ दूँगी, आभूषणों को तोड़ दूँगी और सभी कठिनाइयों को झेल लूँगी । पत्तों को और पेड़ों के फलों को खा लूँगी, साँप, सिंहों से नहीं डरूँगी, परन्तु प्राणनाथ के बिना हिमालय पर्वत में गल मरूँगी । जो होगा सो होगा, मैं तो तुम्हारा मुख देखकर तुम्हारे पीछे-पीछे चली आऊँगी अन्यथा तुम्हारी विरहाग्नि में जल मरूँगी । राजा के बिना भला यह राज्य किस काम का है । हे नाथ ! आप रहोगे तो रहूँगी, आप चले जायँगे तो मैं भी चलूँगी ।। ६९ ।। ।। सवैया ।। मैं देश का त्याग कर तपस्वी का वेश बना कर जटाएँ सँवार लूँगी । मैं धन से तनिक भी मोह नहीं करूँगी और प्रियतम के जूतों पर अपना तन न्यौछावर कर दूँगी । करोड़ों बालकोंओ

सु बस्त्रन छोरि कै राम सँभारों । इंद्र के राज नही मुहि काज बिना महाराज (मू०ग्रं०९१३) सभै घर जारौ ।। ७० ।। अंगन मै सजि हौ भगवे पट हाथ बिखै चिपिया गहि लैहों । मुंद्रन कान धरै अपने तव मूरति भिच्छहि माँगि अघैहों । नाथ चलौ तुम ठौर जहाँ हमहूँ तिह ठौर बिखै चलि जैहों । धाम रहों नहि बात कहों पट फारि सभै अब जोगिन ह्वैहों ।। ७१ ।। ।। राजा बाच ।। रानी को रूप निहारि महीपत सोच बिचार कर्यो चित माही । राज करो सुख सो सुनि सुंदर तोहि तजे लरका मरि जाही । सो न मिटै न हटै बन तें त्रिप झारि पछोरि भले अवगाही । मात परी बिललात धरा पर नारि हठी हठ छाडत नाही ।। ७२ ।। ।। अड़िल्ल ।। जब रानी त्रिप लखी सत्ति जोगनि भई । छोरिन चलियो धाम संग अपने लई । धारि जोग को भेस मात पहि आइयो । हो भेस जोग त्रिप हेरि सभन दुख पाइयो ।। ७३ ।। ।। दोहरा ।। बिदा दीजियै दास कौ बन कौ करै पयान । बेद बिधानन ध्याइहौ जौ भव के भगवान ।।७४।। ।। माता बाच ।। ।। सवैया ।। पूत रहौ बलि जाउँ कछू दिन पाल करौ इन देसन कौ । तुहि

सुन्दर वस्त्रों को एक ओर छोड़कर मैं भगवान में मन लगाऊंगी । मुझे तो इन्द्र के राज्य से भी कुछ लेना-देना नहीं है, मैं महाराज से विहीन होकर सभी घर-बार जला दूँगी ।। ७० ।। अंगों पर भगवे वस्त्र सजाकर मैं हाथ में खप्पर पकड़ लूँगी । कानों में मुद्राएँ धारण कर तुम्हारे नाम की भीख माँग कर प्रसन्न रहूँगी । हे नाथ ! तुम जिस स्थान पर जाओगे मैं वहीं जाऊँगी । अब मैं घर में नहीं रहूँगी और तुरन्त कपड़े फाड़कर योगी बन जाऊँगी ।।७१।। ।। राजा उवाच ।। रानी के सौंदर्य को देखकर राजा मन में सोचने लगा और कहने लगा कि हे रानी ! तुम सुखपूर्वक राज करो, तुम्हारे: बिना सभी पुत्र मर जायँगे । राजा ने खूब पुचकारा, विचारा पर वह नहीं हटी । उधर माता धरती पर व्याकुल पड़ी तड़प रही है, परन्तु यह हठी स्त्री अपना हठ नहीं छोड़ रही है ।।७२।। ।। अड़िल्ल ।। जब राजा ने देखा कि रानी सचमुच योगिनी हो गई है तो उसे साथ लेकर वह घर छोड़ने को उद्यत हुआ । अब वह योगी-वेश में अपनी माता के पास आया । उसका योगी-वेश देखकर सभी को दुख हुआ ।। ७३ ।। ।। दोहा ।। अब इस दास को विदा दीजिए ताकि मैं वन में जा सकूँ और वेद-विहित ढंग से भगवान का ध्यान करूँ ।। ७४ ।। ।। माता उवाच ।। ।। सवैया ।। हे देशों के पालक पुत्र ! मैं तुम्हारे ऊपर

क्यो करि जान कहों मुख ते अति ही दुख लागत है मन कौ। ग्रहि ते तुहि काढि इतो सुख छाडि कहाँ कहि हों इन लोगन कौ। सुनु साचु सपूत कहों मुख तें तुहि कैसे कै देउँ बिना बन कौ ।। ७५ ।। ।। चौपई ।। राज करो सुत बन न पधारो। मेरो कह्यो मंत्र बीचारो। लोगन के कहबो अनुसरियै। राज जोग घर ही महि करियै ।। ७६ ।। ।। राजा बाच ।। ।। दोहरा ।। मातहि सीस झुकाइकै पुनि बोल्यो न्रिप बैन। ऊच नीच राजा प्रजा जैहै जम के ऐन ।।७७।। ।।सवैया।। मात की बात न मानी कछू तजि रोवत ही रनिवासहि आयो। आवत ही दिज लोग बुलाइ जितो धन हो घर मो सु लुटायो। संग लए बनिता अपुनी बनिकै जुगिया बन ओर सिधायो। त्याग कै देस भयो अथितेस भजौ जगतेस यहै ठहरायो ।। ७८ ।। ।। कबितु ।। लाँबी लाँबी साल जहाँ ऊचे बटताल तहाँ ऐसी ठौर तप को पधारै ऐसो कौन है। जाकी प्रभा देखि प्रभ खांडव की फीकी लागै नंदन निहारि बन ऐसो भजै मौन है। तारन की कहा नैकु नभ न निहार्यो जाइ सूरज की जोति तहाँ चंद्र की न जौन है। देव न निहार्यो दैत कोऊ (मू०ग्रं०६१४) न

न्यौछावर हूँ। मैं अत्यन्त दुखी हूँ और तुम्हें जाने के लिए कैसे कहूँ। तुम्हें घर से निकालकर इन सब लोगों को मैं क्या उत्तर दूँगी ? हे पुत्र ! मैं तुम्हें कैसे वन के लिए विदा करूँ ? ।। ७५ ।। ।। चौपाई ।। हे पुत्र ! तुम मेरी बात मानो और वन को मत जाओ। लोगों का कहना मानो और घर में ही राजयोग प्राप्त करो ।। ७६ ।। ।। राजा उवाच ।। ।। दोहा ।। माता के सामने सिर झुकाकर राजा बोला कि ऊँच-नीच, राजा-प्रजा सभी यमलोक जायँगे ।। ७७ ।। ।। सवैया ।। उसने माता की बात नहीं मानी और उसे रोता हुआ छोड़कर रनिवास में आ गया। आते ही ब्राह्मणों को बुलाकर उसने घर का सारा द्रव्य लुटा दिया। अपनी स्त्री को साथ लिया और वन की ओर चल पड़ा। वह देश को त्यागकर फ़क़ीर हो गया और परमात्मा का भजन करने की उसने मन में ठान ली ।। ७८ ।। ।। कवित्त ।। लम्बे-लम्बे साल के वृक्ष और बड़े-बड़े तालाब जहाँ हैं, वहाँ यह तपस्या के लिए कौन आया है। इस जंगल की प्रभा के सामने खांडव वन की भी प्रभा फीकी है। यह कौन मौन होकर भजन कर रहा है। तारे तो इतने हैं कि आकाश दिखाई नहीं देता और चन्द्रमा भी सूर्य के समान ज्योतिर्मान है। यह कोई

बिहार्यो जहाँ पंछी को न गम्य तहा चीटी को न गौन है ।।७९।।
।। चौपई ।। जब ऐसे बन मै दोऊ गए । हेरत तवन महल को
भए । तुरतु ताँहि त्रिप बचन सुनायो । तप को भलो ठौर
हम पायो ।।८०।। ।।रानी बाच।। या मै बैठि तपस्या करिहैं ।
राम राम मुख ते उचरिहैं । या घर मै दिन कितक बितैहैं ।
भसमीभूत पाप सभ कैहैं ।। ८१ ।। ।। दोहरा ।। रानी जाहि
बुलाइकै भेद कह्यो समझाइ । वहै पुरख जुगिया बन्यो त्रिपति
मिलत भ्यो आइ ।। ८२ ।। ।। चौपई ।। त्रिप को त्रियहि
कह्यो समुझाई । जोगी वहै पहूँचयो आई । मरत बचन
मोसो तिन कहियो । सो मै आजु साचु करि लहियो ।। ८३ ।।
।। दोहरा ।। उठि राजा पाइन पर्यो ताकह गुरू पछानि ।
बैठि गोसटि दोनो करी सो मैं कहत बखानि ।। ८४ ।।
।। जोगी बाच ।। न्हाइ नदी सों जो त्रिपति बैठहुगे ह्याँ आइ ।
तब तुम सै मैं भाखिहों ब्रहम बादि समुझाइ ।। ८५ ।।
।। चौपई ।। ऐसे जतन त्रिपति को टार्यो । छात बिखै इक
नर पैठार्यो । साधु साधु इह बच सुनि कहियहु । तीन
बार कहिकै चुप रहियहु ।।८६।। न्याइ धोइ राजा जब आयो ।

देव-दैत्य नहीं है; पक्षी तो क्या यहाँ चींटी भी नहीं जा सकती ।। ७९ ।।
।। चौपाई ।। जब ऐसे वन में दोनों चले गए तो वहाँ उन्होंने एक मकान
देखा । राजा ने तुरन्त कहा कि यही तपस्या के लिए मुझे सुन्दर स्थान मिला
है ।। ८० ।। ।। रानी उवाच ।। इसमें बैठकर तपस्या करेंगे और राम-राम
का उच्चारण मुख से करेंगे । अनेकों दिन यहाँ बिताएँगे और पापों को
भस्मीभूत कर देंगे ।। ८१ ।। ।। दोहा ।। रानी ने जिस पुरुष को सारी बात
समझाई थी वही पुरुष योगी-वेश में राजा को आ मिला ।। ८२ ।।
।। चौपाई ।। स्त्री ने राजा से कहा कि वही योगी आ पहुँचा है । उसने
मरते समय जो कहा था वही आज सत्य हो गया है ।।८३।। ।। दोहा ।। राजा
उसे गुरु मानकर उसके चरणों में आ गिरा । उन्होंने जो गोष्ठी की अब मैं
उसे बताता हूँ ।। ८४ ।। ।। योगी उवाच ।। हे राजा ! जब नदी में स्नान
करके तुम यहाँ आकर बैठोगे तो मैं तुम्हें ब्रह्मज्ञान समझाऊँगा ।। ८५ ।।
।। चौपाई ।। इस प्रकार उस राजा को वहाँ से हटाया और छत पर एक
(अन्य) व्यक्ति को बैठा दिया । उससे कहा कि साधु-साधु वचन तीन बार
कहकर चुप रह जाना ।। ८६ ।। जब राजा नहा-धोकर वापस आया तो उस

तब तिह नर यौ बचन सुनायो। सुनु न्रिप जब माटी मै लई। धरमराज आग्या मुहि दई ॥ ८७ ॥ ॥ दोहरा ॥ तैं राजा को तीर तजि क्यों आयो इह ठौर। मोसो ब्रिथा बखानियै सुनु जोगिन सिरमौर ॥ ८८ ॥ ॥ चौपई ॥ धरम राज मुहि बचन उचारे। सु हौ कहत हौ तीर तिहारे। मोरी कही राव सौ कहियहु। ना तर भ्रमत नरक महि रहियहु ॥ ८९ ॥ जैसो कोटि जग्य तपु कीनो। तैसो साच न्याइ करि दीनो। न्याइ शास्त्र लै राज कमावै। ता के निकट काल नहि आवै ॥ ९० ॥ ॥ दोहरा ॥ जो न्रिप न्याइ करै नही बोलत झूठ बनाइ। राज त्याग तपस्या करै परै नरक महि जाइ ॥ ९१ ॥ ब्रिध मात अरु तात की सेवा करियो नित्त। त्याग न बन को जाइयै यहै धरमु सुनु मित्त ॥ ९२ ॥ जौ हौ जोगी वहै हौ पठै दयो ध्रमराइ। तौ इहाँ बोलै तुरतु अपनो रूप छपाइ ॥ ९३ ॥ जब जोगी ऐसे कह्यो ताहि भेद समुझाइ। सत्ति सत्ति तब तिन कह्यो (मू०ग्रं०९१५) तीन बार मुसकाइ ॥ ९४ ॥ जियबो जग कौ सहल है यहै कठिन द्वै काम। प्रात सँभरिबो राज को राति सँभरिबो राम ॥ ९५ ॥ ॥ चौपई ॥ महाराज ऐसी

पुरुष ने कहा, हे राजन्! सुनो, जब मैं मरा तो धर्मराज ने मुझे यह आज्ञा दी ॥८७॥ ॥ दोहा ॥ तुम राजा के पास से यहाँ क्यों आए हो? हे योगी! मुझसे सारी बातें कहो ॥ ८८ ॥ ॥ चौपाई ॥ धर्मराज ने जो मुझसे कहा वह मैं अब तुमसे कहता हूँ। उसने कहा कि मेरा कहा हुआ राजा से कहना अन्यथा तुम नरक में भ्रमण करते रहोगे ॥ ८९ ॥ करोड़ों यज्ञों की तपस्या के बराबर सच्चा न्याय करने का महत्त्व है। जो न्याय-शास्त्र के अनुरूप राज करता है, काल उसके पास नहीं आता ॥ ९० ॥ ॥ दोहा ॥ जो राजा न्याय नहीं करता और झूठ बोलता है; राज्य त्यागकर तपस्या करता है, वह नरक में जाता है ॥९१॥ वृद्ध माता-पिता की नित्य सेवा करो और हे मित्र! धर्म की बात सुनो तथा घर को त्यागकर वन में मत जाओ ॥ ९२ ॥ यदि मैं वही योगी हूँ जिसे धर्मराज ने भेजा है तो वह (धर्मराज) प्रच्छन्न रूप से तुरन्त बोले ॥ ९३ ॥ जब योगी ने राजा को यह बात समझाकर कही तब उस (छिपे व्यक्ति) ने तीन बार मुस्कुराकर 'सत्य-सत्य' कहा ॥ ९४ ॥ संसार में जीवित रहना आसान है और प्रातः राज्य सँभालना तथा रात्रि में भगवान-भजन करना यही दो काम असंभव हैं ॥९५॥ ॥ चौपाई ॥ राजा

सुनि बानी । चित कै बिखै साच करि मानी । दिन कौ राजु आपनौ करिहौ । परे रात्रि के राम सँभरिहौ ।। ९६ ।। रानी महाराज समुझाइसि । जोग मारग ते छलि बहुराइसि । त्रिप धरि बस्त्र धाम मै आयो । बहुर आपनौ राज कमायो ।। ९७ ।। ।। दोहरा ।। जियते जुगिया मारियो भुअ के बिखै गडाइ । त्रिय त्रिप को बहुराइयो ऐसो चरित बनाइ ।। ९८ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इकासवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ८१ ।। १०४० ।। अफजूं ।।

अथ बिआसवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। जहाँगीर आदिल मरि गयो । शाहिजहाँ हजरति जू भयो । दरिया खाँ पर अधिक रिसायो । मारन चह्यो हाथ नहि आयो ।। १ ।। ।। दोहरा ।। तिह हजरति मारन चहै हाथ न आवै नित्त । राति दिवस जागत उठत बसत सोवते चित्त ।। २ ।। शाहजहाँ जू पलँघ पर सोत उठ्यो

ने यह बात सुनकर उसे मन में सत्य करके जाना कि दिन में मैं राज करूँगा और रात में भगवद्भजन करूँगा ।। ९६ ।। रानी ने राजा को समझाया और योग-मार्ग से उसे वापस बुला लिया । नृप पुनः वस्त्र धारण कर घर आया और राज्य करने लगा ।। ९७ ।। ।। दोहा ।। जीवित योगी को मारकर भूमि में गाड़ दिया और प्रपंच बनाकर रानी ने राजा को वापस बुला लिया ।। ९८ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के, मंत्री-भूप-संवाद में इक्यासीवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ८१ ।। १०४० ।। अफजू ।।

बयासीवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। जब न्यायी राजा जहाँगीर मर गया तो शाहजहाँ राजा हुआ । वह दरिया खाँ पर बहुत कुपित था और उसे मारना चाहता था पर वह उसके हाथ नहीं आया ।। १ ।। ।। दोहा ।। राजा उसे मारना चाहता था पर वह हाथ नहीं आता था । यही कार्य उसके मन सोते-जागते बना रहता था ।। २ ।। शाहजहाँ पलंग पर सोते-सोते बड़बड़ाकर उठ जाता था

3

बरराइ । बरिया खाँ को मारियो करि कै क्रोरि उपाइ ।।३।। ।। चौपई ।। सोवत शाहजहाँ बररायो । जागत हुती बेगम सुनि पायो । चिंता करी शत्रु कौ मरियै । पति को शोक संताप निवरियै ।। ४ ।। ।। बेगम बाच ।। टूँबि पाव हजरतहि जगायो । तीन कुरनसै करि सिर न्यायो । जो तुम कह्यो सु मै बीचार्‌यो । दरिया खाँ कह जानहु मार्‌यो ।। ५ ।। ।। दोहरा ।। मुशकिल हनन हरीफ को कबहु न आवै दाव । जड़ को कहा सँघारिबो जाको रिजल सुभाव ।। ६ ।। ।। सोरठा ।। स्यानी सखी बुलाइ पठई मंत्र सिखाइकै । दरिया खाँ को जाइ ल्यावहु चरित बनाइकै ।।७।। ।। चौपई ।। स्यानी सखी समझि सभ गई । दरिया खाँ के जात ग्रहि भई । गोशे बैठि सु मंत्र बतायो । तव ग्रहि मै बेगमहि पठायो ।। ८ ।। ।। दोहरा ।। रूप तिहारो हेरिकै बेगम रही लुभाइ । हेत तिहारे मिलन के मो क़ह दयो पठाइ ।। ९ ।। हजरति त्रिय को चोरि चित कहा फिरत हो ऐठि । (मू०ग्रं०९१६) बेगि बुलायो बेगमहि चलहु देग महि बैठ ।। १० ।। छरिया उरदा बेगनी

और चिल्लाता था कि कोई भी उपाय करके दरिया ख़ाँ को मार डालो ।।३।। ।। चौपाई ।। एक बार ऐसे ही शाहजहाँ बड़बड़ाया और जाग रही बेगम ने सुना। वह सोचने लगी कि शत्रु को मारकर पति का शोक दूर करना चाहिए ।।४।। ।। बेगम उवाच ।। उसने थोड़ा सा झटककर राजा को जगाया और तीन बार कोर्निश करके राजा को जगाया। जो आपने कहा है कि दरिया ख़ाँ को मारना चाहिए उसके बारे में मैंने सोचा है ।। ५ ।। ।। दोहा ।। चतुर शत्रु को मारना दुष्कर कार्य है। जड़मूर्ख को जिसका स्वभाव सीधा है मारना क्या मुश्किल है ।। ६ ।। ।। सोरठा ।। रानी ने चतुर सखी को बुलाया और सिखाया कि किसी प्रकार कोई प्रपंच बनाकर दरिया ख़ाँ को लाओ ।। ७ ।। ।। चौपाई ।। चतुर सखी सब समझकर दरिया ख़ाँ के घर पर गई। पास में बैठकर उसनें कहा कि मुझे बेगम ने तुम्हारे घर भेजा है ।। ८ ।। ।। दोहा ।। तुम्हारा रूप-सौंदर्य देखकर बेगम ललचा गई है और तुमसे मिलन करने के लिए उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है ।। ९ ।। हे हज़रत ! तुम स्त्री का चित्त चुरा कहाँ अकड़े हुए घूम रहे हो। तुम्हें बेगम ने शीघ्र बुलाया है अतः तुम देग में बैठकर (छुपकर) वहाँ चलो ।। १० ।। तुम वहाँ चलो जहाँ अनेकों चोबदार और खोज करनेवाले हैं और जहाँ कोई

खोजे जहाँ अनेक। पंखी फटिक सकै नही पहुचै मनुख न एक ।। ११ ।। ।। चौपई ।। ताहू द्रिशटि तहाँ जो परै। टूक टूक हजरति तिह करै। ग्रहि कौ पलटि बहुरि नहि आवै। हन्यो भाँग के भारे जावै ।। १२ ।। ।। दोहरा ।। तहाँ पहूँचन को कछू पैयतु नही उपाइ। चलहु देग मै बैठि कै जाते लख्यो न जाइ ।। १३ ।। ।। चौपई ।। बेगम जद ते तुमै निहार्यो। खान पान सभ कछू बिसार्यो। लगन लगे बिहबल ह्वै गई। ग्रहि को छाडि दिवानी भई ।। १४ ।। सीस फूल सिर पर जब धारै। कोटि सूर जनु चड़े सवारै। जबै बिहसिकै बिरी चबावै। देखी पीक कंठ महि जावै ।।१५।। ।।दोहरा।। हजरति तिह पूछे बिना कछू न उचरत बैन। लाल भए बिसंभार मन हेरि बाल के नैन ।। १६ ।। ता को तुमरो रूप लखि पुलिकि पसीज्यो अंग। बेसंभार भुअ पै गिरी जनु करि डस्यो भुजंग ।। १७ ।। खान सुनत त्रिय बात कौ मन महि भयो खुशाल। ज्यों तुम कहौ तिवै चलौ मिलौ जाइ ततकाल ।।१८।। ।। चौपई ।। यह जड़ बात सुनत हरखयो। दुरबल हुतो

भी पक्षी, मनुष्य या कोई अन्य नहीं जा सकता ।। ११ ।। ।। चौपाई ।। उन लोगों को जो वहाँ दिखाई पड़ता है उसे शाह की आज्ञा से टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाता है। वह पुनः पलटकर घर नहीं आ पाता और बेभाव ही मारा जाता है ।। १२ ।। ।। दोहा ।। वहाँ पहुँचने का कोई उपाय नहीं है अतः देग में बैठकर चलो ताकि कोई देख न सके ।। १३ ।। ।। चौपाई ।। बेगम ने जब से तुम्हें देखा है, खान-पान सभी छोड़ दिया है। वह इसी लगन के कारण व्याकुल हो गई है, और घर-बार को छोड़कर पागल हो गई है ।। १४ ।। सिर पर जब वह पुष्पाभूषण धारण करती है तो मानो करोड़ों सूर्यों का प्रकाश हो जाता है। जब वह मुस्कुराकर पान का बीड़ा चबाती है तो पीक उसे गले में जाती हुई दिखाई पड़ती है ।। १५ ।। ।। दोहा ।। वादशाह उसे पूछे बिना कोई बात नहीं करता और उस वालिका के नेत्रों को देखकर उसके नेत्र भी कामासक्त होकर लाल हो जाते हैं ।। १६ ।। तुम्हारा रूप-सौंदर्य देखकर उसका अंग-अंग पुलकित हो उठा है और वह बेहोश होकर धरती पर ऐसे गिर पड़ी है मानों उसे सर्प ने डँस लिया हो ।।१७।। दरियाखान उस स्त्री की वात सुनकर प्रसन्न होकर बोला कि तुम जैसे कहो मैं वैसे ही करूँगा और तुरन्त उसे जा मिलूँगा ।। १८ ।। ।। चौपाई ।। यह मूर्ख बात सुनकर प्रसन्न

पुशट ह्वै गयो। जौ तुम कहौ सु काज कमैयै। बेगम सी भोगन कह पैयै ॥ १९ ॥ ॥ दोहरा ॥ हजरति जाको रूप लखि रह्यो प्रेम सौ पाग। सो हम सौ अटकत भई धन्य हमारे भाग ॥ २० ॥ ॥ चौपई ॥ यह सुनि भेद चित्त महि राख्यो। और मित्रतन प्रगटि न भाख्यो। प्रथम देग मै बस्त्र बिछयो। ता मै बैठि आपु पुनि गयो ॥ २१ ॥ ॥ दोहरा ॥ खान तिहारौ रूप लखि बेगम रही लुभाइ। शाहिजहाँ कौ छाडिकै तो पर गई बिकाइ ॥ २२ ॥ ॥ चौपई ॥ तौन पठान देग महि डारिस। लै हजरति ग्रहि ओर सिधारस। देखत लोग सभै तह जावै। वाकौ भेद न कोऊ पावै ॥ २३ ॥ लै बेगम के धाम उतार्यो। बेगम ता को दारिद मार्यो। सखी भेज पति लयो बुलाई। कान लागिकै बात जताई ॥२४॥ ॥ दोहरा ॥ सखी भेजि पतिशाह को लीनो निकट बुलाइ। जो चारहु सो कीजियै दीनी देग दिखाइ ॥ २५ ॥ ॥ चौपई ॥ जब (मू०ग्रं०६१७) बेगम कहि चरित बखान्यो। प्रानन ते प्यारी तिह जान्यो। पुनि कछु

हो उठा। वह था तो दुर्बल परन्तु फूल गया और हृष्ट-पुष्ट दिखाई देने लगा। वह कहने लगा कि तुम जो कहोगी मैं वैसा ही करूँगा और बेगम को भोगूँगा ॥ १९ ॥ ॥ दोहा ॥ जिसके रूप-सौंदर्य पर शाह मोहित है वह मेरे पर आसक्त है, यह तो मेरा अहोभाग्य है ॥ २० ॥ ॥ चौपाई ॥ यह भेद उसने अपने मन में रखा और किसी भी मित्रादि को नहीं बताया। उसने पहले देग में वस्त्र बिछाया और फिर उसमें बैठ गया ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ हे खान! तुम्हारे रूप पर लुब्ध बेगम शाहजहाँ को छोड़कर तुम्हारे पर बिक गई है ॥ २२ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने पठान को देग में डाला और राजा के महल की ओर लेकर चल पड़ी। सभी लोग उसे देखने लगे पर किसी को कोई रहस्य न पता लगा ॥ २३ ॥ उसने उसे बेगम के कक्ष में उतरवा दिया और इधर बेगम ने भी उसकी दरिद्रता दूर कर दी। सखी को भेजकर उसने पति को बुलवा लिया और उसके कानों में सारी बात कह दी ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥ सखी को कहकर बादशाह को बुलाकर उसे देग दिखाकर मनचाहा कार्य करने के लिए कह दिया ॥ २५ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब बेगम ने अपना चरित बताया तो राजा ने उसे प्राणों से प्यारी जाना। पुनः उसने कहा कि कुछ और प्रपंच करना चाहिए और क़ाज़ी को पूछकर इसको

कह्यौ चरित्रहि करियै । पूछि काजियहि याकह मरियै ।।२६।।
।। दोहरा ।। तब बेगम तिह सखी सों ऐसे कह्यो सिखाइ ।
भूत भाखि इह गाडियहु चौक चाँदनी जाइ ।। २७ ।।
।। चौपई ।। तिह त्रिय लए हनन कों आवै । मूरख पर्यो
देग मै जावै । जानै आजु बेगमहि पैहौ । काम कला तिह
साथ कमैहौ ।। २८ ।। लए देग को आवै कहाँ । काजी
मुफती सभ है जहाँ । कोटवार जह कशट दिखावै । बैठि
चौतरे न्याउँ चुकावै ।।२९।। ।। दोहरा ।। ।। सखी बाच ।। भूत
एक इह देग मै कहु काजी क्या न्याइ । कहौ तौ याको
गाडियै कहौ तो देउ जराइ ।। ३०.।। तब काजी ऐसे कह्यो
सुनु सुंदरि मम बैन । याको जीयतहि गाडियै छूटै किसू
हनैन ।। ३१ ।। कोटवार काजी जबै मुफती आयसु कीन ।
देग सहित तह भूत कहि गाडि गोरि महि दीन ।। ३२ ।।
जीति रह्यो दल शाह को गयो खजाना खाइ । सो छल सौ
त्रिय भूत कहि दीनो गोरि गडाइ ।। ३३ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे बिआसवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ।। ८२ ।। १४७३ ।। अफजूँ ।।

मार डालना चाहिए ।। २६ ।। ।। दोहा ।। तब बेगम ने सखी को कहा कि इसे भूत कहकर चाँदनी चौक में गड़वा दो ।। २७ ।। ।। चौपाई ।। उसे मारने के लिए स्त्री चली और वह मूर्ख देग में पड़ा हुआ चल पड़ा । वह समझ रहा था कि आज बेगम प्राप्त होगी और उससे कामक्रीड़ा करूँगा ।। २८ ।। वह देग को लिए वहाँ पहुँची जहाँ क़ाज़ी और मुफ़ती (मौलव) सभी बैठे थे। कोतवाल वहीं चबूतरे पर बैठकर न्याय करता था और दण्ड देता था ।। २९ ।। ।। दोहा ।। ।। सखी उवाच ।। हे क़ाज़ी महोदय ! इस देग में एक भूत है, कहो तो इसे गाड़ दिया जाय और कहो तो इसे जला दिया जाय ।। ३० ।। तब क़ाज़ी ने कहा, हे सुन्दरी ! इसे गाड़ दिया जाना चाहिए, क्योंकि छूट भागने पर यह किसी को मार न डाले ।। ३१ ।। कोतवाल, क़ाज़ी और मुफ़्ती ने जब आज्ञा दी तो देग-सहित उस भूत को मिट्टी में गाड़ दिया गया ।।३२।। इस प्रकार शाह का दल जीत गया और शत्रु को स्त्री ने भूत कहकर मिट्टी में गाड़ दिया ।। ३३ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में बयासीवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ।। ८२ ।। १४७३ ।। अफजू ।।

अथ तिरासीवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ राजौरी के देश मै राजपुरो इक गाउँ ।
तहाँ एक गूजर बसै राजमल्ल तिह नाउँ ॥ १ ॥
॥ चौपई ॥ राजो नाम एक तिह नारी । सुंदर अंग बंस
उजियारी । तिन इक नर सौ नेह लगायो । गूजर भेद तबै
लखि पायो ॥ २ ॥ जार लख्यो गूजर मुहि जान्यो । अधिक
चित भीतर डर मान्यो । छाडि गाँव तिह अनत सिधायो ।
बहुरि न ता को दरसु दिखायो ॥ ३ ॥ ॥ दोहरा ॥ राजो
बिछुरे यार के चित मै भई उदास । निति चिंता मन मै करै
मीत मिलन की आस ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ यहि सभ भेद
गूजरहि जान्यो । ता सौ प्रगट न कछू बखान्यो । चिंता यहै
करी मन माहीं । या के धन छोडौ ग्रहि नाहीं ॥ ५ ॥
॥ दोहरा ॥ पतिया लिखी बनाइकै तवन मीत के नाम । एक
अतिथ को हाथ दै पठी त्रिया के धाम ॥६॥ ॥ चौपई ॥ जब
पतिया तिम छोरि (मू०ग्रं०६१८) बचाई । मीत नाम सुनि कंठ
लगाई । यहै यार लिखि ताँहि पठायो । तुम बिनु अधिक

तिरासीवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ राजौरी प्रदेश के राजपुर नामक गाँव में राजमल नामक एक गूजर था ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ सुन्दर अंग-प्रत्यंगों वाली राजो नामक उसकी नारी थी जो अपने वंश का उजाला थी । उसका प्रेम एक व्यक्ति से हो गया और गूजर इस भेद को जान गया ॥ २ ॥ प्रेमी भी जान गया कि गूजर जान गया है अतः वह मन में बुरी तरह डर गया । वह गाँव छोड़कर अन्यत्र चला गया और पुनः उसे दिखाई नहीं दिया ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ राजो अपने प्रेमी से बिछुड़कर उदास हो गई । वह मित्र से पुनः मिलने के लिए उदास रहने लगी ॥ ४ ॥ गूजर भी यह सब जान गया पर प्रकट में उसने कुछ नहीं कहा । उसने मन में सोचा कि अब इसके पास कोई धन-दौलत नहीं रहने दूँगा ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ उसने उसके मित्र के नाम एक पत्र लिखा और एक व्यक्ति के हाथ उसे स्त्री के पास भेज दिया ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब पत्र उसने पढ़वाया तो मित्र का नाम सुनकर उसे गले से लगा लिया । मित्र ने यही लिखा था कि तुम्हारे बिना मैं अत्यधिक कष्ट

कष्ट हम पायो ।। ७ ।। पतिया मै लिखि यहै पठायो । तुम बिनु हम सभ किछु बिसरायो । हमरी सुधि आपन तुम लीजहु । कछु धनु काढि पठै मुहि दीजहु ।। ८ ।। ।। दोहरा ।। सुनत बात मूरख त्रिया चित मै भई प्रसन्य । मीत चितार्‌यो आजु मुहि धरनीतल हौ धन्य ।। ९ ।। ।। चौपई ।। भेजि कहूँ त्रिय इहै सिखायो । लिखि पतिया मै यहै पठायो । प्रात समै पिछवारे ऐहौ । दुहूँ हाथ भए ताल बजैहौ ।। १० ।। जब तारी स्रवनन सुनि पैयहु । तुरतु तहाँ आपन उठि ऐयहु । काँध उपरि करि थैली लैयहु । मेरो कह्यो मानि त्रिय लैयहु ।। ११ ।। प्रात समै तारी तिन करी । सो धुनि कान त्रिया के परी । थैली काँध ऊपर करि डारी । भेद न लख्यो दैव की मारी ।। १२ ।। ।। दोहरा ।। यौही बार छि सात करि लयो दरबु सभ छीन । भेद न मूरख तिय लख्यो कहा जतन इह कीन ।। १३ ।। ।। चौपई ।। याही जतन सकल धन हर्‌यो । रानी हुते रंक तह कर्‌यो । हाथ मित्र के दरबु न आयो । नाहक अपनो मूँड मुँडायो ।। १४ ।। १ ।।

।। इति स्त्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे तिरासीवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ।। ८३ ।। १४८७ ।। अफजूं ।।

पा रहा हूँ ।। ७ ।। पत्र में यह (भी) लिखा था कि तुम्हारे बिना मुझे सब कुछ भूल गया है। तुम मेरी खोज-खबर लो और कुछ धन मुझे भेजो ।। ८ ।। ।। दोहा ।। यह सुनकर वह मूर्ख स्त्री मन में प्रसन्न हो उठी। वह सोचने लगी मैं धन्य हूँ कि मुझे मेरे मित्र ने याद किया है ।। ९ ।। ।। चौपाई ।। कहने वाले को स्त्री ने भेज दिया और कह दिया कि मैंने पत्र में लिख दिया है कि प्रातः पिछवाड़े आना और दोनों हाथों से ताली बजाना ।। १० ।। जब ताली मैं सुनूँगी तो तुरन्त आऊँगी। तुम दीवार के ऊपर थैली कर देना और मेरा कहना मान लेना ।। ११ ।। प्रातः उसने ताली बजाई जिसे स्त्री ने सुना। उसने थैली दीवार के ऊपर की और इस भेद को भाग्यहीन स्त्री न जान सकी ।। १२ ।। ।। दोहा ।। इसी प्रकार छः-सात बार करके उसने सभी द्रव्य छीन लिया और मूर्ख स्त्री इस भेद को न जान सकी ।।१३।। ।। चौपाई ।। इस प्रकार सारा धन लेकर उस रानी को कंगाल कर दिया। उस मित्र के हाथ कुछ भी न आया और व्यर्थ ही उसने अपना सिर मुँड़ाया ।। १४ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में तिरासीवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ।। ८३ ।। १४८७ ।। अफजू ।।

अथ चौरासीवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ महाँराष्ट्र के देस मै महाँराष्ट्र पति राव । दरबु बटावै गुनि जनन करत कबिन को भाव ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ इंद्रमती ता की पटरानी । सुंदर सकल भवन मै जानी । अति राजा ता के बसि रहै । जो वहु कहै वहै त्रिप कहै ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ मोहनसिंघ सपूत सुभ द्रावण देसहि एस । महाराष्ट्र पति नगर मै गयो अथित के भेस ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ जब रानी तिह ओर निहार्यो । यहै आपने ह्रिदै बिचार्यो । जोगिन यह राजा सो लहियै । भेजि मानुखन याकौ गहियै ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ भेजि मानुखन गहि लयो लीनो धाम बुलाइ । दुहिता दई बिवाहिकै जानि देस को राइ ॥ ५ ॥ बचन सुनत त्रिप रिसि भर्यो छोडि राम को जाप । दुहिता दई बिवाहि (मू०ग्रं०६१६) तिह जाकै माइ न बाप ॥ ६ ॥ ॥ राजा बाच ॥ ॥ चौपई ॥ माइ न बाप जानियत जाकौ । दुहिता कहूँ दीजियत ताकौ । याकौ अबै बाँधि करि मारो । रानी दुहिता सहित सँघारो ॥ ७ ॥

चौरासीवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ महाराष्ट्र देश में महाराष्ट्रपति राव नामक राजा था, जो कवियों और गुणीजनों में धन-दौलत लुटाया करता था ॥१॥ ॥चौपाई॥ उसकी पटरानी इन्द्रमती थी जो सारे संसार में सुन्दर मानी जाती थी। राजा उसके वश में था और जो वह कहती थी वही करता था ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ द्रविड़ देश के राजा का पुत्र मोहनसिंह एक साधु का वेष धारण कर महाराष्ट्रपति के नगर में गया ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब रानी ने उसको देखा तो अपने हृदय में विचार किया कि राजा से इस योगी को माँग लिया जाय और मनुष्यों को भेजकर इसे पकड़वा लिया जाए ॥४॥ ॥ दोहा ॥ कुछ व्यक्ति भेजकर उसे पकड़ कर घर बुला लिया। और उसे देश का राजा समझकर अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ कर दिया ॥ ५ ॥ यह सुनकर राजा राम का जाप छोड़कर यह सोचकर क्रुद्ध हो उठा कि पुत्री उसके साथ ब्याह दी जिसका कोई माँ-बाप नहीं है ॥ ६ ॥ ॥ राजा उवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ जिसके माँ-बाप का भी पता नहीं है उसको अपनी पुत्री क्यों दे रहे हो। इसको अभी बाँधकर मार दो और साथ ही रानी को भी पुत्री

रानी बचन सुनत डरि गई। चीनत कछू उपाइ न भई। जाते जामाता नहि मरियै। सुता सहित इह जियत निकरियै ।। ८ ।। रानी एक मँगाइ पिटारो। दुहुँअन दुहूँ कनारे डारो। एक पिटारो और मँगायो। वह पिटार तिह भीतर पायो ।। ६ ।। ।। दोहरा ।। अंतरहूँ के पिटार मैं डारे रतन अपार। तिह ढकनौ दै दुतिय मैं दई मिठाई डार ।।१०।। ।। चौपई ।। दुतिय पिटार मिठाई डारी। वह पिटार नहि देत दिखारी। सभ को द्रिशटि सिरीनी आवै। ता को भेद न कोऊ पावै ।। ११ ।। पलै चेरियहि त्रिपति बुलायो। गहि बहिया सभ सदन दिखायो। हमका तुम ते नैक न डरिहै। बिनु तव कहे सगाई करिहै ।। १२ ।। ।। रानी बाच ।। ।। दोहरा ।। चित को शोक निवारिकै राव कचहिरी जाहु। तव हित धरी बणाइकै चलहु मिठाई खाहु ।। १३ ।। ।। चौपई ।। छोरि पिटार पकवान खवायो। वहु कछु भेद राइ नहि पायो। पुनि इह कह्यो दान करि दीजै। मेरो कह्यो मानि त्रिप लीजै ।। १४ ।। जब पिटार तिह छोरि दिखायो।

सहित समाप्त कर दो ।। ७ ।। रानी वचन सुनते ही डर गयी, उसे कुछ अन्य न सूझा जिससे दामाद न मारा जाय और जीवित ही यहाँ से निकल जाय ।। ८ ।। रानी ने एक पिटारा मँगाया और दोनों को दोनों किनारों में बैठा दिया। एक पिटारा और मँगाया और उसे इसमें डाल दिया ।। ६ ।। ।। दोहा ।। अन्दर के पिटारे में अपार रत्न डाल दिए। उसे ढक कर दूसरे में मिठाई डाल दी ।। १० ।। ।। चौपाई ।। दूसरी पिटारी में मिठाई डाल दी और वह छुप गई। सबको मिठाई दिखाई देने लगी और कोई भी रहस्य नहीं समझ सका ।। ११ ।। अब उसने दासी को भेजकर राजा को बुलाया और उसको बाँह से पकड़कर उसे सारा घर दिखाया। उसे यह कहा कि हे राजन् ! क्या हमें तुम्हारा डर नहीं है जो हम तुमसे पूछे बिना सगाई कर देंगे ।। १२ ।। ।। रानी उवाच ।। ।। दोहा ।। इसलिए हे राजन् ! चित्त के शोक का निवारण कर तुम दरबार में जाओ। आओ मैंने तुम्हारे लिए मिठाई बनाई है, तुम इसे खाओ ।। १३ ।। ।। चौपाई ।। रानी नें पिटारा खोलकर पकवान खिलाए और राजा इस भेद को नहीं समझ सका। पुनः उसने कहा कि इसे दान कर दीजिएगा और हे राजन् ! मेरा कहना मान लो ।। १४ ।। जब उसने पिटारा खोलकर दिखाया तो दामाद बुरी तरह डर

अति डर जामाता मन आयो। अब ही मोकह पकरि निकरिहै। बहुरो बाँधि मारिही डरिहै ॥ १५ ॥ हौ इह ठौर आनि त्रिय मार्‍यो। अब उपाइ क्या करों बिचार्‍यो। कासौ कहौ संग कोऊ नाही। इह चिंता ता के मन माही ॥ १६ ॥ ॥ दोहरा ॥ शस्त्र अस्त्र घोरा नहीं साथी संग न कोइ। अति मुशकलि मोकौ बनी करता करै सु होइ ॥ १७ ॥ साथी कोऊ सँग नही का सों करों पुकार। मनसा बाचा करमना मुहि हनिहै निरधार ॥ १८ ॥ खाइ मिठाई राव तब कियो पिटारो दान। वह बिवाहि तिह लै गयो अधिक हिदै सुखु मानि ॥ १९ ॥ दुहिता जामाता सहित जीयत दयो पठाइ। सभ देखत दिन काढियो त्रिपहि मिठाई खवाइ ॥ २० ॥ ॥ चौपई ॥ बनिता चरित हाथ नहि आयो। देव दैत किनहूँ नहि पायो। त्रिया चरित्र न किसहू कहियै। चित मैं (मू०ग्रं०९२०) समझि मोनि ह्वै रहियै ॥ २१ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे चौरासीवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ ८४ ॥ १५०८ ॥ अफजूं ॥

गया कि अभी मुझे पकड़कर बाहर निकाल लेंगे और बाँधकर मार डालेंगे ॥१५॥ यह तो बहुत बुरी जगह इस स्त्री ने मारा, अब मैं क्या उपाय करूँ ? अव मैं किससे क्या कहूँ, कोई मेरे साथ नहीं है। यही चिन्ता उसके मन में थी ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥ मेरे पास अस्त्र-शस्त्र, घोड़ा, साथी कुछ भी नहीं है। वही अच्छा होगा जो परमात्मा चाहेगा ॥ १७ ॥ मेरे पास कोई साथी नहीं है, मैं किससे पुकार करूँ, ये तो मुझ मनसा-वाचा-कर्मणा निरस्त्र को मार ही डालेंगे ॥ १८ ॥ राजा ने मिठाई खाकर बाक़ी सब दान कर दिया। अब वह उसे ब्याहकर प्रसन्नतापूर्वक चला गया ॥ १९ ॥ उस स्त्री ने पुत्री को दामाद समेत जीवित निकाल दिया। यह सब उसने राजा को मिठाई खिलाकर सबके देखते-देखते कर दिया ॥ २० ॥ ॥ चौपाई ॥ स्त्रियों का चरित्र देव-दानव कोई भी नहीं समझ सका है। त्रिया-चरित्र किससे क्या कहा जाय, इसे तो देखकर चुप ही रह जाना चाहिए ॥ २१ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद के चौरासीवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ॥ ८४ ॥ १५०८ ॥ अफजू ॥

अथ पचासीवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ उरीचंग उचिस्स्रव राजा । जाकी तुल्लि कहूँ नहि साजा । रूपकला ता की वर नारी । मानहु काम कंदला प्यारी ॥ १ ॥ ॥ दोहरा ॥ इंद्रनाथ जोगी हुतो सो तहि निकस्यो आइ । झरनन ते झाई परी रानी लयो बुलाइ ॥२॥ ॥ चौपई ॥ जोगी दै अंजनु तह आवै । गुटकै बलु कै बहु उडि जावै । जिसी ठौर चाहै तिसु जावै । भाँति भाँति कै भोग कमावै ॥ ३ ॥ भाँति भाँति के देस निहारै । भाँति भाँति की प्रभा बिचारै । अंजन बल तिह कोऊ न पावै । तिसी ठौर रनियहि लै जावै ॥४॥ ॥दोहरा॥ भाँति भाँति के देस मैं भाँति भाँति करि गौन । ऐसे सुखन बिलोक कै त्रिप पर रीझत कौन ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ जब यह भेद राव लखि पावा । अधिक कोप मन माँझ बसावा । चित महि कह्यो कौन बिधि कीजै । जाते नास त्रिया करि दीजै ॥ ६ ॥ राजा तहा आपि चलि आयो । पाइन को खरको न जतायो । सेज सोत जोगियहि निहार्यो । काढि

पचासीवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ उरीचंका में उच्चश्रव नामक अनुपम राजा था। कामकंदला के समान प्यारी उसकी रूपकला नामक स्त्री थी ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ इन्द्रनाथ नामक योगी उधर से निकला। रानी ने उसे झरोखे से देख लिया और बुलवा लिया ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ योगी ने उसे अंजन दिया जिसके बल पर वह उड़ जाती थी। जहाँ चाहती थी जाती थी और विभिन्न प्रकार के संभोग करती थी ॥ ३ ॥ वह विभिन्न प्रकार के देश और उनकी प्रभा देखती। अंजन के बल से उसे कोई न देखता और वह पुनः उस रानी को उसी स्थान पर ले आता था ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ भाँति-भाँति के देशों में विभिन्न प्रकार से जाने पर और ऐसे सुखों को देखकर भला राजा पर कौन रीझता ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब राजा को इस रहस्य का पता लगा तो वह मन में अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। उसने चित्त में सोचा कि कुछ ऐसा किया जाय कि इस स्त्री का नाश हो जाय ॥ ६ ॥ राजा स्वयं वहाँ (रानी के पास) गया और पाँव से उसने आहट नहीं की। उसने शय्या पर योगी को सोते

क्रिपान मार हो डार्‌यो ।। ७ ।। ।। चौपई ।। गुटका हुतो हाथ महि लयो । जुगियहि डारि कुठरियहि दयो । स्रोन पोछ बस्त्रन सो डार्‌यो । सेवत रानी कछु न बिचार्‌यो ।। ८ ।। ।। दोहरा ।। जुगियाहू के बक्त्र ते पतिया लिखी बनाइ । रानी मै बेखरचिहौ कछु मुहि देहु पठाइ ।। ९ ।। ।। चौपई ।। इसी भाँति लिखि नित्ति पठावै । सभ रानी को दरबु चुरावै । धनी हुती निरधन ह्वै गई । त्रिपहूँ डारि चित्त ते दई ।।१०।। जो त्रिप धनु इस्त्री ते पावै । टका टका करि दिजन लुटावै । तिह सौतन सौ केल कमावै । ता के निकट न कबहूँ आवै ।। ११ ।। सभ ता को धनु लयो चुराई । सौतिन के ग्रहि भीख मँगाई । लए ठीकरौ हाथ बिहारै । भीख सोति ता को नहि डारै ।। १२ ।। द्वार द्वार ते भीख मँगाई । दरबु हुतो सो रह्यो न काई । भूखन मरत (मू०ग्रं०९२१) दुखित अति भई । टूकन ही माँगत मरि गई ।। १३ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे पचासीवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ।। ८५ ।। १५२१ ।। अफजूं ।।

देखा और क्रुपाण निकालकर उसे मार डाला ।। ७ ।। ।। चौपाई ।। वहाँ जो गुटका था उसे ले लिया और योगी को कोठरी में डाल दिया । रक्त को वस्त्रों से पोंछ दिया और सोती हुई रानी को कुछ पता न चला ।। ८ ।। ।। दोहा ।। राजा ने योगी की ओर से रानी को पत्र लिखा कि मेरे पास खर्च के लिए धन नहीं है, मुझे कुछ धन भेज दो ।। ९ ।। ।। चौपाई ।। इसी प्रकार रोज़ लिखकर रानी के सारे द्रव्य को हर लिया । वह धनी से निर्धन हो गई और राजा ने उसे मन से भुला दिया ।। १० ।। राजा जो धन स्त्री से प्राप्त करता था उसे थोड़ा-थोड़ा करके ब्राह्मणों को बाँट देता था । रानी की सौतनों के साथ केलिक्रीड़ा करता था और रानी के पास कभी नहीं जाता था ।। ११ ।। उसने रानी का सारा धन ले लिया और उसे सौतनों के दरवाज़े पर भीख माँगने के लिए मजबूर कर दिया । वह हाथ में फूटा बर्तन लेकर घूमती थी और सौतनें उसे भीख भी नहीं देती थीं ।। १२ ।। उसे द्वार-द्वार पर भीख मँगाई गई; उसके पास अब कोई द्रव्य नहीं था । भूख से वह अत्यन्त व्याकुल रोटी माँगते-माँगते ही मर गई ।। १३ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में पचासीवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ।। ८५ ।। १५२१ ।। अफजू ।।

अथ छिआसीवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। चामरंग के देस मै इंद्रसिंघ थो नाथ । सकल सैन चतुरंगनी अमित चढ़त तिह साथ ।। १ ।। चंद्रकला ता की त्रिया जा सम त्रिया न कोइ । जो वहु चाहै सो करै जो भाखै सो होइ ।। २ ।। ।। चौपई ।। संदरि एक सखी तह रहै । तासौ नेह राव निरबहै । रानी अधिक ह्रिदै मै जरई । यासों प्रीत अधिक न्रिप करई ।। ३ ।। गांधी इक खत्री तह भारो । फतहचंद नामा उजियारो । सो तिन चेरी बोलि पठायो । कामकेल तिह साथ कमायो ।। ४ ।। भोग कमात गरभ रहि गयो । चेरी दोसु राव सिर दयो । राजा मोसौ भोग कमायो । ताते पूत सपुतु उपजायो ।। ५ ।। न्रिप इह भेद लह्यो चुप रह्यो । तासौ प्रगट न मुख ते कह्यो । मै यासो नहि भोगु कमायो । चेरी पुत्र कहा ते पायो ।। ६ ।। ।। दोहरा ।। फतहचंद को नामु लै चेरी लई बुलाइ । मारि आपने हाथ ही गडहे दई गडाइ ।। ७ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे छिआसीवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ८६ ।। १५२८ ।। अफजूं ।।

छियासीवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। चामरंग देश में इन्द्रसिंह नामक राजा अपरिमित चतुरंगिणी सेना का स्वामी था ।। १ ।। उसकी अद्वितीय रूप से सुन्दर स्त्री चंद्रकला थी । वह जो चाहती और कहती थी वही होता था ।।२।। ।।चौपाई।। उसकी एक सुन्दर सखी थी जिससे राजा का स्नेह था । यह देखकर रानी हृदय में जलती थी कि राजा इससे अत्यधिक प्रेम करता है ।। ३ ।। वहाँ एक सुगंधी बेचने वाला प्रभावशाली व्यापारी था जिसका नाम फतहचन्द था । उस दासी ने उसे बुलाया और उसके साथ कामक्रीड़ा की ।। ४ ।। उससे संभोग करने पर उसके गर्भ रह गया जिसका दोष उसने राजा के सिर पर मढ़ दिया । वह कहने लगी कि राजा के भोग से ही मुझे सुपुत्र पैदा हुआ है ।। ५ ।। राजा इस भेद को जान गया पर मुँह से कुछ नहीं बोला । वह सोचने लगा कि मैंने तो दासी के साथ भोग किया ही नहीं, फिर इसे पुत्र कहाँ

से उत्पन्न हो गया ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ उसने फतहचन्द का नाम लेकर दासी को बुलाया और उसे मार कर अपने हाथों से ही गड़हे में दबा दिया ॥७॥१॥

॥ श्री चरित्नोपाख्यान के पुरुष-चरित्न के मंत्री-भूप-संवाद में छिआसीवें चरित्न
की शुभ सत् समाप्ति ॥ ८६ ॥ १५२८ ॥ अफजू ॥

अथ सतासवों चरित्न कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ राजा एक भुटंत को चंद्रसिंघ तिह नाम । पूजा स्री जदुनाथ की करत आठहूँ जाम ॥१॥ ॥चौपई॥ चंद्रप्रभा ता के त्रिय घर मै । कोबिद सभ ही रहत हुनर मै । ता को हेरि नित्य न्रिप जीवै । तिह हेरे बिनु पानि न पीवै ॥ २ ॥ एक भुटंती सौ वहु अटकी । भूलि गई सभही सुधि घटकी । राति दिवस तिह बोलि पठावै । कामकला तिह संग कमावै ॥ ३ ॥ भोग कमात राव ग्रहि आयो । ता को रानी तुरतु छपायो । न्रिपहि अधिक मद आनि पियार्‍यो । करिकै मत्त खाट पर डार्‍यो ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ ता को खलरी स्वान की लई तुरतु पहिराइ । राजा जू के देखते ग्रहि कौ दयो पठाइ ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ आपु न्रिपति सो बचन उचारो । सुनो नाथ इह स्वान तिहारो । मोकौ (मू०ग्रं०६२२)

सत्तासीवाँ चरित्न-कथन

॥ दोहा ॥ भूटान का चन्द्रसिंह नामक एक राजा था जो श्रीयदुनाथ की पूजा आठों प्रहर किया करता था ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसकी स्त्री चन्द्रप्रभा थी । कवि भी उसकी प्रशंसा करते थे । राजा उसे देखकर जीता था और उसे देखे बिना पानी भी नहीं पीता था ॥ २ ॥ वह एक भूटानी से अनुरक्त हो गई और अपनी सब सुधि खो बैठी । वह उसे रात-दिन बुलाती थी और कामक्रीड़ा करती थी ॥ ३ ॥ जब वे क्रीड़ारत थे तो राजा घर में आ गया । रानी ने तुरन्त उसे छुपा दिया । राजा को अधिक शराब पिला दी और मदमस्त करके पलंग पर लिटा दिया ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ पुनः उसे (अपने प्रेमी को) कुत्ते की खाल पहना दी और राजा के देखते-देखते उसे घर को भेज दिया ॥५॥ ॥ चौपाई ॥ स्वयं राजा से कहने लगी कि राजन् ! देखो यह आपका कुत्ता है । यह मुझे प्राण से अधिक प्यारा है । इसे तुम

अधिक प्रान ते प्यारो । याकौ जिनि पाहन तुम मारो ॥ ६ ॥
॥ दोहरा ॥ सति सति तब न्रिप कह्यो ताहि टूकरो डारि ।
आगे ह्वैकै निकसियो सक्यो न मूड़ बिचारि ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे सतासवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ ८७ ॥ १५३५ ॥ अफजूं ॥

अथ अठासीवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ इंद्रदत्त राजा हुतो गोखा नगर मझार ।
कंजप्रभा रानी रहै जाको रूप अपार ॥ १ ॥ सरब मंगला
कौ भवन गोखा शहिर मँझार । ऊच नीच राजा प्रजा सभ
तिह करत जुहार ॥२॥ ॥ चौपई ॥ ता के भवन सकल चलि
आवहि । आनि गोर कौ सीस झुकावहि । कुंकम और
अच्छतन लावहि । भाँति भाँति को धूप जगावहि ॥ ३ ॥
॥ दोहरा ॥ भाँति भाँति दै प्रक्रमा भाँति भाँति सिर न्याइ ।
पूज भवानी कौ भवन बहुरि बसै ग्रहि आइ ॥ ४ ॥
॥ चौपई ॥ नर नारी सभ तह चलि जाही । अच्छत धूप
कुंकमहि लाही । भाँति भाँति के गीतन गावै । सरब मंगला

पत्थर मत मारो ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा ने कहा यह सत्य है और उसे रोटी का टुकड़ा डाल दिया। वह उसके सामने से निकल गया और मूर्ख राजा जान न सका ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में सत्तासीवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ॥ ८७ ॥ १५३५ ॥ अफजू ॥

अट्ठासीवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ गोखा नगर में इन्द्रदत्त नामक राजा था जिसकी अनुपम सुन्दरी रानी कंजप्रभा थी ॥ १ ॥ सर्वमंगलकारी (देवी) का मंदिर गोखा-नगर जहाँ राजा-प्रजा, ऊँच-नीच, सभी प्रार्थना किया करते थे ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ वहाँ सभी आते थे, सिर झुकाते थे, कुंकुम, अक्षत लगाते एवं धूप-दीप जलाते थे ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ विभिन्न प्रकार से परिक्रमा कर सिर झुकाकर भवानी की पूजा कर सभी अपने घरों को जाते थे ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ नर-नारी सभी वहाँ जाते थे और अक्षत, धूप, कुंकुम के साथ भाँति-भाँति के गीत गाकर उस सर्वमंगला को सिर झुकाते थे ॥ ५ ॥ कोई

को सिर न्यावै ।। ५ ।। जो इच्छा कोऊ मन मै धरै। जाइ भवानी भवन उचरै। पूरन भावना तिनकी होई। बाल ब्रिद्ध जानत सभ कोई ।। ६ ।। ।। दोहरा ।। फलत आपनी भावना या मै भेद न कोइ। भलो भले को होत है बुरो बुरे को होइ ।। ७ ।। चेत्र अशटमी के दिवस उतसव तिह ठाँ होइ। ऊच नीच राजा प्रजा रहै न घर मै कोइ ।। ८ ।। ।।चौपई।। दिवस अशटमी को जब आयो। जात्री एक रानियहि भायो। तासौ भोग करत मन भावै। घात एकहूँ हाथ न आवै ।। ९ ।। यहै बिचार चित्त महि आयो। जात्री कह पिछवार सदायो। तासो घात यहै बदि राखी। प्रगट राव जू तन यो भाखी ।। १० ।। जानसि मिति पिछवारे आवा। बदि संकेति यौ बचन सुनावा। सखियहि सहित कालि मै जैहो। पूज गौरजा कौ ग्रहि ऐहौ ।। ११ ।। ।। दोहरा ।। जो कोऊ हमरो हितू तह मिलियो मुहि आइ। भेद राव कछु ना लह्यो मीतहि गई जताइ ।। १२ ।। ।। स्वैया ।। रानी पछानी कि मंदर के पिछवारे है मेरो खरो सुखदाई। चाहत बात कह्यो सकुचे तब कीनी है बैननि (मू०ग्रं०९२३) मैं चतुराई। पूछि सखी अपनी मिसहीं उत प्यारे को ऐसी सहेट बताई।

भी कामना होने पर व्यक्ति भवानी के सामने प्रार्थना करता था। बालक, वृद्ध सब जानते थे कि सबकी भावना वहाँ पूरी होती थी ।।६।। ।।दोहा।। सब स्थानों पर अपनी ही भावना फलवती होती है। भले का भला और बुरे का बुरा ही होता है ।। ७ ।। चैत्र अष्टमी को वहाँ उत्सव होता था और उस दिन राजा-प्रजा कोई भी घर पर नहीं रहता था। (अर्थात् सभी वहाँ इकट्ठा होते थे।) ।।८।। ।। चौपाई ।। जब अष्टमी का दिन आया तो रानी को एक यात्री भा गया। उसका मन उससे रतिक्रीड़ा करने को चाहने लगा परन्तु उसे कोई मौका हाथ नहीं आ रहा था ।। ९ ।। यह विचार मन में बना कर उसने यात्री को पिछवाड़े बुलाया। उससे घात बनाकर प्रकट रूप से राजा से बोली ।। १० ।। जब उसने देखा कि मित्र पिछवाड़े आ गया है तो उसने इशारा करते हुए यह कहा कि कल सखियों समेत मैं गौरी पूजा करके घर आऊँगी ।। ११ ।। ।। दोहा ।। यदि कोई मेरा हितैषी मुझसे मिलना चाहे तो कल वहाँ मुझे मिले। इसका रहस्य राजा तो न समझ सका परन्तु मित्र को उसने भेद समझा दिया ।। १२ ।। ।। सवैया ।। रानी ने पहचान लिया कि मंदिर के पिछवाड़े मेरा सुखदायक मित्र खड़ा है। वह बात करना

साथ चलौंगी हौ कालि चलौंगी मैं देबी को देहुरो पूजन माई ।। १३ ।। ।। चौपई ।। यौ न्रिप सों कहि प्रगट सुनाई । मीतहि उतै सहेट बताई । भवन भवानी के मै जैहों । पूजि मंगला को फिरि ऐहों ।। १४ ।। ।। दोहरा ।। जो कोऊ हमरो हितू है तह मिलियो मुहि आइ । भेद कछू न्रिप ना लख्यो मीतहि गई जताइ ।। १५ ।। यौ कहिकै रानी उठी कर्यो मीत ग्रहि गौन । न्रिपति प्रफुल्लित चित भयो गई शिवा के भौन ।। १६ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे अठासीवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ८८ ।। १५५१ ।। अफजूं ।।

अथ नवासीवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। माँझा देस जाट इक रहै । काज क्रिसानी को निरबहै । रैनि दिना खेतन मैं रहई । रामसीह नामा जग कहई ।। १ ।। राधा नाम नारि ग्रहि ताँके । कछू न लाज रहत तन वाँके । नित उठि बागवान पै जावै । भोग

चाहता है पर संकोच कर रहा है । इसलिए उसने चतुरतापूर्वक अपनी सखी को स्थान भी बता दिया कि कल वह वहाँ देवी पूजा करनें जायगी ।। १३ ।। ।। चौपाई ।। इस प्रकार प्रकट में राजा से कहते हुए उसने मित्र को स्थान भी बता दिया कि मैं वहाँ भवानी पूजा को जाऊँगी और पूजा के बाद वापस घर आऊँगी ।। १४ ।। ।। दोहा ।। यदि कोई मेरा हितैषी हो तो मुझे वहाँ आकर मिल ले । इस प्रकार मित्र को उसने सब बता दिया और राजा कुछ भी नहीं समझ सका ।। १५ ।। यह कहकर रानी मित्र के घर चली गई और राजा समझा कि वह गिरजा के मंदिर में गई है ।। १६ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में अट्ठासीवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ८८ ।। १५५१ ।। अफजू ।।

नवासीवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। मध्य देश में एक जाट रहता था और खेती का कार्य करता था । उसका नाम रामसिंह था, वह रात-दिन खेती कार्य में लीन खेतों में ही रहता था ।। १ ।। उसके घर में राधा नामक स्त्री थी जो पूर्णतया निर्लज्ज थी । वह रोज़ माली के पास जाती थी और भोग-विलास के बाद

कमाइ बहुरि ग्रहि आवै ।। २ ।। लै सतुआ पति ओर सिधाई । चली चली माली पहि आई । बस्त्र छोरि कै भोग कमायो । तिह सतुआ की करी बनायो ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। सतुअन करी बिनाइकै ता मैं बध्यो बनाइ । सतुआ ही सो जानियै करी न चीन्यो जाइ ।। ४ ।। ।। चौपई ।। भोग करत भामिनि सुख पायो । जामिक तासौ केल कमायो । माली के ग्रहि ते जब आई । बस्त्र आपनो लयो उठाई ।। ५ ।। लै सतुआ निजु पति पहि गई । छोरत बस्त्र हेत तिह भई । हाथी हेरि चौक जड़ रह्यो । तुरतु बचन तब ही त्रिय कह्यो ।।६।। सोवत हुती सुपन मुहि आयो । करी मत्त पाछै तव धायो । मैं डरि पंडित लयो बुलाई । जो उन कह्यो सु क्रिआ कमाई ।। ७ ।। ।। दोहरा ।। सतुअन करी बनाइकै दंतन चाबे कोइ । ताकौ गैवर मत्त को कबहूँ त्रास न होइ ।। ८ ।। फूलि गयो जड़ बात सुनि भेद न सकियो पाइ । (मू०ग्रं०९२४) सतुअन करी तुराइकै मुहि त्रिय लयो बचाइ ।। ९ ।। १ ।।

।। इति स्त्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे नवासीमों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ८९ ।। १५६० ।। अफजूं ।।

घर आ जाती थी ।। २ ।। जब वह सत्तू लेकर पति की ओर चली तो चलते-चलते माली के पास आ पहुँची । निर्वस्त्र होकर उसने भोग किया और उन सत्तुओं की कढ़ी बनाई ।।३।। ।। दोहा ।। सत्तुओं की तरह की ही उसने कढ़ी बनाई जो सचमुच कढ़ी ही लगती थी और सत्तुओं की पहचान नहीं होती थी ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। उस स्त्री ने भोग में सुख प्राप्त किया और लगभग एक प्रहर तक रतिक्रीड़ा की । जब वह माली के घर से चली तो उसने अपना वस्त्र उठा लिया ।। ५ ।। तब सत्तू लेकर अपने पति के पास गई और वस्त्र छोड़कर उससे प्रेम करने लगी । वह हाथी को देखकर चौंक गया और तुरन्त स्त्री ने कहा ।। ६ ।। मैं सो रही थी तो मुझे स्वप्न आया कि मत्त हाथी तुम्हारे पीछे भाग रहा है । तब मैंने डर कर पंडित को बुलाया और जैसा उसने कहा वैसा ही किया ।। ७ ।। ।। दोहा ।। उसने कहा कि सत्तुओं की कढ़ी बनाकर जो कोई खाएगा उसे हाथी का डर नहीं रहेगा ।। ८ ।। वह मूढ़ यह सुनकर फूला न समाया (और उसके देर से आने के) भेद को न समझ सका । वह सोचने लगा कि स्त्री ने सत्तुओं की कढ़ी बनाकर मुझे बचा लिया है ।। ९ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में नवासीवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ८९ ।। १५६० ।। अफजू ।।

अथ नबवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ शहिर इटावा मैं हुतो नाना नाम सुनार ।
ता की अति ही देह मै दीनो रूप मुरार ॥१॥ ॥ चौपई ॥ जो
त्रिय ता को नैन निहारैं । आपुन को करि धन्य बिचारैं ।
याके रूप तुलि कोऊ नाहीं । यौ कहिकै अबला बलि
जाहीं ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ दीपकला नामा हुती दुहिता
राजकुमारि । अमित दरबु ता के रहै दासी रहै हज़ार ॥ ३ ॥
पठै एक तिन सहचरी लयो सुनार बुलाइ । रैनि दिना तासो
रमै अधिक चित्त सुखु पाइ ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ राति दिवस
तिह धाम बुलावै । कामकेल तिह संग कमावै । प्रीति मानि
तिह साथ बिहारै । वाके लिये प्रान दै डारै ॥ ५ ॥ एक
दिवस तिह धाम बुलायो । तब लौ पितु ता के ग्रहि आयो ।
कछू न चल्यो जतन इह कीनो । अंजन आँजि बिदा करि
दीनो ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ अधिक मूड़ ता को पिता सक्यो
भेद नहि चीन । आँखन अंजन आँजि त्रिय मीत बिदा करि
दीन ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे नबवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ ९० ॥ १५६७ ॥ अफजूं ॥

नब्बेवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ इटावा शहर में नाना नामक एक सुनार रहता था जिसे विधाता ने अत्यन्त सुन्दर बनाया था ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ जो स्त्री उसे देख लेती थी अपने आपको धन्य समझती थी । सब स्त्रियाँ, उसे यह कहकर कि इसके तुल्य कोई नहीं है, उस पर न्योछावर होती थीं ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ वहाँ एक राजकुमारी दीपकला नामक थी जिसके पास अपरिमित द्रव्य था और हज़ारों दासियाँ थीं ॥ ३ ॥ एक सखी को भेजकर उसनें सुनार को बुला लिया और रात-दिन उससे सुखपूर्वक रमण करनें लगी ॥४॥ ॥चौपाई॥ रात-दिन उसे घर बुलाती थी और उससे केलिक्रीड़ा करती थी । प्रीतिपूर्वक उसके साथ रमण करती थी और उसके लिए प्राण तक देने के लिए तैयार रहती थी ॥ ५ ॥ एक दिन उसने सुनार को घर पर बुलाया और तब तक राजकुमारी का पिता आ गया । तब इसके सारे प्रयत्न निष्फल हो गए और राजकुमारी ने उसकी आँख में अंजन डालकर उसे विदा कर दिया ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥ उसका मूर्ख पिता इस रहस्य को न समझ सका और इस प्रकार आँखों में अंजन डालकर स्त्री ने अपने मित्र को विदा कर दिया ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में नव्वेवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ९० ॥ १५६७ ॥ अफजू ॥

अथ इकानवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ गोबिंद चंद नरेश के माधवनल निजु मीत ।
पड़े ब्याकरन शास्त्र खट कोक सार संगीत ॥ १ ॥
॥ चौपई ॥ मधुर मधुर धुनि बेनु बजावै । जो कोऊ त्रिय
स्त्रवनन सुनि पावै । चित मै अधिक मस्त ह्वै झूलै । ग्रहि
की सकल ताहि सुधि भूलै ॥ २ ॥ पुरबासी न्रिप पै चलि
आए । आइ राइ तन बचन सुनाए । कै माधवनल कौ अब
मरियै । ना तो याकह देस निकरियै ॥३॥ ॥ दोहरा ॥ इह
हमरी इसत्रीन के लेत चित्त बिरमाइ । जो हम सभ कौ
काढियै तौ इह रखियै राइ ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ तोरि राव
तब जलज मँगाए । भाँति बिछौना की बिछवाए । सकल
सखी तिह पर बैठाई । भाँति भाँति की प्रभा बनाई ॥ ५ ॥
माधवनल कौ बोलि पठाइस । तवन सभा भीतर बैठाइस ।
रीझि (मू०ग्रं०९२५) बिप्र तब बेन बजाई । सभ इसत्रिन के

इक्यानबेवाँ चरित्र-कथन

॥दोहा॥ गोविंदचन्द्र राजा का मित्र माधवानल था जो कि व्याकरण आदि षट्शास्त्र, कोकशास्त्र एवं संगीतसार का अध्येता था ॥१॥ ॥ चौपाई ॥ वह मधुर बाँसुरी बजाता था। जो स्त्री कानों से (उसकी बाँसुरी) सुनती थी, वह मदमत्त होकर घर की भी सुधि भूल जाती थी ॥ २ ॥ नगर के लोग राजा के पास आए और कहने लगे : या तो माधव को तुरन्त मार दीजिए अन्यथा उसे देश से निकाल दीजिए ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ यह हमारी स्त्रियों के चित्त को लुभा लेता है। या तो हम सबको निकाल दो या फिर इसी को निकालो ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजा ने उन्हें भेजकर कमल के फूल मँगवाए और उन्हें बिछौने की भाँति बिछवा दिया। सब सखियों को विभिन्न प्रकार से शोभायुक्त कर उन पर बैठा दिया ॥ ५ ॥ माधवानल को बुलाया और उस सभा में बैठाया। उस विप्र ने प्रसन्न होकर तब बाँसुरी बजाई जो कि

चित्त सु भाई ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ सभ अबला मोहित भई नाद स्रवन सुनि पाइ । सभहिन के तन सों गए कमल पत्र लपटाइ ॥७॥ ॥ चौपई ॥ माधवनल त्रिप तुरतु निकार्यो । बिप्र जानि जिय ते नहि मार्यो । कामावती नगर चलि आयो । कामकंदला सौ हित भायो ॥८॥ ॥ दोहरा ॥ कामसैन राजा जहाँ तह दिज पहुच्यो जाइ । प्रगट तीनि सै साठि त्रिय नाचत जहाँ बनाइ ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ माधव तौन सभा महि आयो । आनि राव कौ सीस झुकायो । सूरबीर बैठे बहु जहाँ । नाचत कामकंदला तहाँ ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ चंदन की तन कंचुकी कामा कसी बनाइ । अँगिया ही सभ को लखै चंदन लख्यो न जाइ ॥ ११ ॥ चंदन की लै बासना भवर बहिठ्यो आइ । सो तिन कुच की बायु ते दीनौ ताहि उठाइ ॥ १२ ॥ ॥ चौपई ॥ इह सु भेद बिप नै लहि लयो । रीझत अधिक चित्त महि भयो । अमित दरबु त्रिप ते जो लीनो । सो लै कामकंदलहि दीनो ॥ १३ ॥ ॥ दोहरा ॥ अमित दरबु हम जो दयो सो इह दयो लुटाइ । ऐसे बिप्र फजूल कों मोहि न राख्यो जाइ ॥ १४ ॥

सभी स्त्रियों को अच्छी लगी ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ उस नाद को सुनकर सभी स्त्रियाँ मोहित हो उठीं और वे कमलपत्र सबके तन से चिपक गए ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजा ने माधवानल को तुरन्त निकाल दिया और ब्राह्मण समझ कर जान से नहीं मारा । तब वह कामावती नगर में पहुँचा और कामकंदला को अच्छा लगने लगा ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ यह विप्र वहाँ आ पहुँचा जहाँ कामसेन नामक राजा था और जिसके सामने तीन सौ साठ स्त्रियाँ नृत्य किया करती थीं ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ माधव उस सभा में पहुँच गया और उसने राजा के सामने सिर झुकाया । जहाँ बहुत से शूरवीर बैठे थे, कामकंदला वहाँ नृत्य कर रही थी ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ चंदन की कंचुकी उस कामिनी ने कस रखी थी और चंदन की अपेक्षा सबको उसकी कंचुकी ही नज़र आ रही थी ॥ ११ ॥ चंदन की गंध से वहाँ भँवरा आ बैठा जिसे उसने अपने कुचों के झटके से उड़ा दिया ॥ १२ ॥ ॥ चौपाई ॥ यह सब विप्र (माधव) ने देखा और मन ही मन मोहित हो उठा । उसने जो अपरिमित द्रव्य राजा से लिया था वह कामकंदला को दे दिया ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ (राजा ने सोचा) जो धन मैंने इसे दिया वह इसने लुटा दिया, ऐसा व्यर्थ ब्राह्मण मुझसे नहीं रखा जायगा ॥ १४ ॥ ॥ चौपाई ॥ इसे विप्र जानकर मारना तो नहीं

॥ चौपई ॥ बिप्र जानि जियते नहि मरियै। इह पुर ते तिह तुरतु निकरियै। जाके दुर्यो धाम लहि लीजै। टूक अनेक तवन को कीजै ॥१५॥ यह सभ भेद बिप्र सुनि पायो। चल्यो चल्यो कामा ग्रहि आयो। मो पर कोप अधिक न्रिप कीनो। तिह हित धाम तिहारो चीनो ॥१६॥ ॥दोहरा॥ सुनत बचन कामा तुरत दिज ग्रहि लयो दुराइ। राजा की निंद्या करी ताहि गरे सो लाइ ॥ १७ ॥ ॥ कामा बाच ॥ ॥ चौपई ॥ ध्रिग इह राइ भेद नहि जानत। तुमसे चतुरन सौ रिसि ठानत। महाँमूड़ न्रिप को का कहियै। या पापी के देस न रहियै ॥ १८ ॥ ॥ दोहरा ॥ चलौ त एकै मगु चलौ रहौ रहौ तिह गाँउ। निसु दिन रटौ बिहंग ज्यो मीत तिहारो नाँउ ॥ १९ ॥ बिरह बान मो तन गडे का सों करों पुकार। तनक अगनि को सिव भए जरौ सँभारि सँभारि ॥ २० ॥ आजु सखी मैं यौ सुन्यो पहु फाटत पिय गौन। पहु हियरे झगरा पर्यो पहिले (मू०ग्रं०६२६) फटि है कौन ॥ २१ ॥ ॥ माधव बाच ॥ ॥ चौपई ॥ तुम सुख सों सुंदर ह्याँ रहो। हम को बेगि बिदा मुख कहो। हमरो

चाहिए, परन्तु नगर से तुरन्त निकाल देना चाहिए। यह जिसके घर में छिपा है उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाने चाहिए ॥ १५ ॥ यह रहस्य विप्र को पता चल गया तो वह दौड़ा-दौड़ा उस कामकंदला के घर आया और कहने लगा : मुझ पर राजा अत्यधिक कुपित है इसलिए मैं तुम्हारे घर आया हूँ ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥ यह सुनकर कामा ने विप्र को घर में छिपा लिया और उसे गले से लगाते हुए राजा की निन्दा की ॥ १७ ॥ ॥ कामा उवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ इस राजा को धिक्कार है जो रहस्य नहीं जानता और तुम्हारे जैसे चतुर पुरुषों से ईर्ष्या करता है। ऐसे महामूढ़ पापी को क्या कहा जाय, परन्तु इसके देश में नहीं रहना चाहिए ॥ १८ ॥ ॥ दोहा ॥ मैं तुम्हारे साथ एक रास्ते पर चलूँगी; तुम जहाँ रहोगे वहीं रहूँगी और रात-दिन पक्षी (तोते) की तरह तुम्हारा ही नाम रटूँगी ॥ १९ ॥ मेरे तन में विरह-बाण लगा है, मैं किसे पुकारूँ ? इसी अग्नि में मैं धीरे-धीरे जल रही हूँ ॥ २० ॥ हे सखी ! आज मैंने सुना है कि पौ फटते ही प्रियतम चले जायँगे। पौ (प्रातः) और हृदय में इस बात का झगड़ा है कि पहले कौन फटेगा ॥ २१ ॥ ॥ माधव उवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ हे सुन्दरी ! तुम सुखपूर्वक यहाँ रहो और मुझे विदा दो। मेरा शोक मत करना और नित्य राम-नाम का स्मरण

कछू ताप नह करियहु । निस राम को नाम सँभरियहु ॥२२॥
॥ दोहरा ॥ सुनत बचन कामा तबै भूमि परी मुरछाइ ।
जनु घायल घाइन लगे गिरै उठै बरराइ ॥ २३ ॥
॥ सोरठा ॥ अधिक बिरह के संग पीत बचन कामा भई ।
रकत न रहियो अंग चलियो मीत चुराइ चित ॥ २४ ॥
॥ दोहरा ॥ टाँक तोल तन ना रह्यो मासा रह्यो न मास ।
बिरहिन कौ तीनो भले हाड चाम अरु स्वास ॥ २५ ॥ अति
कामा लोटत धरनि माधवनल के हेत । टूटो अमल अफीमियहि
जनु पसवारे लेत ॥ २६ ॥ मिलत नैन नहि रहि सकत जानत
प्रीति पतंग । छूटत बिरह बियोग ते हो भत अपनो
अंग ॥ २७ ॥ ॥ कामा बाच ॥ ॥ चौपई ॥ खंड खंड कै
तीरथ करिहौ । बारि अनेक आगि मै बरिहौ । काँसी बिखै
करवत्तिहि पैहौ । ढूँढि मीत तोकौ तऊ लैहौ ॥ २८ ॥
॥ अड़िल्ल ॥ जहाँ पियरवा चले प्रान तितही चले । सकल
सिथिल भए अंग संग जैहै भले । माधवनल कौ नामु मंत्र सो
जानियै । हो जातो लगत उचाट सत्ति करि मानियै ॥ २९ ॥

करना ॥ २२ ॥ ॥ दोहा ॥ यह वचन सुनकर कामिनी भूमि पर मूर्च्छित होकर ऐसे गिर पड़ी जैसे घायल व्यक्ति तड़पता और बड़बड़ाता है ॥ २३ ॥ ॥ सोरठा ॥ वह स्त्री विरहाकुल होकर पीले रंग की हो गई । उसके तन में रक्त तक नहीं बचा, क्योंकि उसका मित्र उसका चित्त चुराकर चल दिया था ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥ एक छटाँक भी उसका भार नहीं रह गया और एक माशा भर मांस भी उसके तन पर न बचा । उस विरहिणी के हाड़, चाम और मांस तीनों ही गल गए ॥२५॥ माधवानल के प्रेम में वह कामिनी धरती पर ऐसे लोटने लगी जैसे नशा टूटने पर अफ़ीमी तड़पता है ॥ २६ ॥ पतंगा प्रीति जानता है जो शमा से आँख मिलाकर रह नहीं सकता । वह विरह से प्रभावित होकर अपना शरीर जला देता है ॥२७॥ ॥कामा उवाच॥ ॥ चौपाई ॥ मैं खंड-खंड अर्थात् सारी-सारी धरती का तीर्थ करूँगी, अनेकों बार अग्नि में जल मरूँगी, काशी में करवत पर चढ़ूँगी परन्तु तुम्हारे जैसे मित्र को अवश्य ढूँढ़ लूँगी ॥ २८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ जहाँ प्रियतम जायँगे, मेरे प्राण भी उसी ओर चलेंगे । मेरे समस्त अंग शिथिल हो गए हैं । ये यदि उसके साथ चलेंगे तो ही ठीक रहेंगे । माधवानल के नाम का ही ऐसा मंत्र है जिससे मेरे पर उच्चाटन प्रभाव पड़ गया है ॥ २९ ॥ ॥ दोहा ॥ यदि तुम्हारे प्रेम में

॥ दोहरा ॥ जो तुमरी बांछा करत प्रान हरै जम मोहि। मरे परात चुरैल ह्वै चमकि चितैहौ तोहि ॥ ३० ॥ बरी बिरह की आगि मै जरी रखैहौ नाउँ। भाँति जरी की बरी की ढिग ते कबहूँ न जाउँ ॥ ३१ ॥ साच कहत है बिरहनी रही प्रेम सौ पागि। डरत बिरह की अगनि सौ जरत काठ की आगि ॥ ३२ ॥ तब माधवनल उठि चल्यो भ्यो पयन को भेस। जस धुनि सुनि सिर धुनि गयो बिक्रम जहाँ नरेस ॥ ३३ ॥ ॥ चौपई ॥ बिक्रम जहाँ नित्ति चलि आवै। पूजि गौरजा कौ ग्रहि जावै। मंदिर ऊच धुजा फहराहीं। फटकांचल लखि ताँहि लजाहीं ॥ ३४ ॥ ॥ दोहरा ॥ तिही ठौरि माधव गयो दोहा लिख्यो बनाइ। जौ बिक्रम इह बाचि है ह्वैहै मोर उपाइ ॥ ३५ ॥ जे नर रोगन सौ ग्रसे तिन को होत उपाउ। बिरह त्रिदोखन जे ग्रसे तिनको कछु न बचाउ ॥ ३६ ॥ ॥ चौपई ॥ बिक्रम (मू०ग्रं०९२७) सैनि तहाँ चलि आयो। आनि गौरजा कौ सिर न्यायो। बाँचि दोहरा को चकित रहियो। को बिरही आयो ह्याँ कहियो ॥ ३७ ॥ ॥ दोहरा ॥ को बिरही आयो हियाँ ता कौ लेहु बुलाइ। जो

ही यमराज मेरे प्राणों का हरण कर लें तो मैं मरकर चुड़ैल बनकर भी घूमती हुई तुम्हारा ही स्मरण करूँगी ॥ ३० ॥ विरहाग्नि में जलती हुई मैं अपना नाम 'जली' रख लूँगी और कभी तुमसे दूर नहीं होऊँगी ॥ ३१ ॥ प्रेम से पगी विरहिणी उसी प्रकार जलती है जैसे लकड़ी की आग भड़क उठती है ॥ ३२ ॥ तब माधवानल पवन-वेश धारण कर चल पड़ा और यश सुनकर विक्रम के राज्य में जा पहुँचा ॥ ३३ ॥ ॥ चौपाई ॥ विक्रम रोज वहाँ आता था और गौरी-पूजन करके घर जाता था। मंदिर की ऊँची ध्वजाएँ फहरा रही थीं और उसकी स्फटिक की रचना सौन्दर्य में सबको लज्जित करती थी ॥३४॥ ॥ दोहा ॥ उसी स्थान पर माधव ने यह सोचकर दोहा लिखा कि इसे यदि विक्रम पढ़ लेगा तो मेरा उपाय कर देगा ॥३५॥ जो रोगी हो उसका तो उपाय हो जाता है, परन्तु जो त्रिदोष का रोगी हो उसका कुछ भी बचाव नहीं है ॥ ३६ ॥ ॥ चौपाई ॥ विक्रम सेना-समेत वहाँ चला आया और उसने गौरी के सामने सिर झुका दिया। वह दोहा पढ़कर चकित रह गया और कहने लगा कि यहाँ कौन विरही आ गया है ॥ ३७ ॥ ॥ दोहा ॥ यहाँ कौन विरही आया है, उसे बुलाओ। वह अपने जीवित रहने के लिए जो उपाय

वहु कहै सो हौ करौ ता कौ जियन उपाइ ।। ३८ ।। ।। चौपई ।। बिक्रम माधव बोलि पठायो । आदरु दै आसनु बैठायो । कहसि दिजाग्या देहु सु करिहौ । प्रानन लगे हेतु तुहि लरिहौ ।। ३९ ।। जब माधव कहि भेदु सुनायो । तब बिक्रम सभ सैन बुलायो । साजे शस्त्र कौच तन धारे । कामवती की ओर सिधारे ।। ४० ।। ।। सोरठा ।। दूत पठायो एक कामसैन न्रिप सौ कहै । कामकंदला एक दै सभ देस उबारियै ।। ४१ ।। ।। चौपई ।। कामवती भीतर दूतायो । कामसैन जू को सिरु न्यायो । बिक्रम कह्यो सु ताहि सुनावा । अधिक राव को दुख उपजावा ।। ४२ ।। ।। दोहरा ।। सिनिसि चड़े दिन के भए निसि रवि करै उदोत । कामकंदला को दियब तऊ न हम ते होतु ।। ४३ ।। ।। दूतो बाच ।। ।। भुजंग छंद ।। सुनो राज क्या नारि कामा बिचारी । कहाँ गाँठि बाँधी तुमौ जानि प्यारी । कही मानि मेरी कहा नाहि भाखो । इनै दै मिलौ ताहि कौ गरव राखो ।। ४४ ।। हठी है हमारी सु तुमहूँ पछानो । दिसा चारि जाकी सदा लोह

कहेगा वही करूँगा ।। ३८ ।। ।। चौपाई ।। विक्रम ने माधव को बुलाया और उसे आदरपूर्वक आसन पर बैठाया । जो यह विप्र आज्ञा देगा वही मैं करूँगा और तुम्हारे प्राणों के लिए मैं लड़ाई भी मोल ले लूँगा ।। ३९ ।। तब माधव ने सारी बात कही और विक्रम ने अपनी सेना को बुलाया । वे सभी सुसज्जित होकर कवच धारण कर कामवती की ओर चल पड़े ।। ४० ।। ।। सोरठा ।। उसने कामसेन राजा के पास यह कहला कर दूत भेजा कि कामकंदला को दे दो और अपने देश की रक्षा करो ।।४१।। ।।चौपाई।। उसने कामवती में दूत भेजा जिसने कामसेन के सामने आ सिर झुकाया । जो विक्रम ने कहा था, कह सुनाया और इस प्रकार राजा भी दुखी हो उठा ।।४२।। ।। दोहा ।। दिन में चाहे चाँद निकल आए और रात में सूर्य उदित हो जाय, परन्तु कामकंदला का दिया जाना मेरे लिए संभव नहीं ।।४३।। ।।दूत उवाच।। ।। भुजंग छंद ।। हे राजन् ! सुनो ! ये कामकंदला कौन सी ऐसी (सुन्दर) स्त्री है जिसे तुमने गाँठ बाँधकर रखा है और यह तुम्हें क्यों जान से भी प्यारी है । मेरा कहना मानो, जो मैं अपने राजा के कहे अनुसार तुमसे कह रहा हूँ । तुम इसे उसको दे दो और उसका मान रखो ।। ४४ ।। यह हमारा हठ है, तुम इसे जान लो । चारों दिशाएँ सदैव (हमारे राजा का) लोहा मानती हैं ।

मानो। बली देव आदेव जाकौ बखानै। कहा रोक तू तौंन सों जुद्धु ठानै ॥ ४५ ॥ बजी दुंदभी दीह दरबार भारे। जबै दूत कटू बैन ऐसे उचारे। हठ्यो बीर हाठौ कह्यो जुद्ध मंडो। कहा बिक्रमा काल को खंड खंडो ॥ ४६ ॥ चड़्यो लै अनी को बली बीर भारे। खँडेले बघेले धँधेरे पवारे। गहरवार चौहान गहलौत दौरै। महाँ जंग जोधा जिते नाहि औरै ॥ ४७ ॥ सुन्यो बिक्रमा बीर सभ ही बुलाए। ठटे ठाट गाड़े चले खेत आए। दुहूँ ओर ते सूर सैनाँ उमंगैं। मिलै जाइ जमुना मनौ धाइ गंगैं ॥ ४८ ॥ किते बीर करवारि काढैं चलावैं। किते चरम पै घाइ ता को बचावैं। किते बरम पै चरम रुपिगर मझारैं। उठै नाद भारे छुटै चिनगारैं ॥ ४९ ॥ किते गोफनै गुरज गोला चलावैं। किते अरध चंद्रादि बाना बजावैं। किते सूल सैथी सुआ हाथ लैकै। मंडे आनि जोधा महाँ कोप ह्वैकै ॥५०॥ फरी धोप (मू०ग्रं०९२८) खंडे लए फाँस ऐसी। मनौ नारि के साहु की ज़ुलम जैसी। करी मत्त की भाँति भारत बिहारैं। जिसे कंठि डारैं तिसै

जिसे देव-दानव सभी महाबली जानते हैं, तुम उसके साथ किस बल-बूते पर युद्ध करना चाहते हो ? ॥ ४५ ॥ उस राजा (कामसेन) के दरबार में उस समय दुंदुभियाँ बज उठीं जब दूत ने ऐसे कटु वचन कहे। उस महाबली राजा ने कहा कि युद्ध किया जाय और विक्रम को खंड-खंड कर दिया जाय ॥ ४६ ॥ वह महाबली खंडेले, बुंदेले आदि वीरों को लेकर बड़ी सेना-सहित युद्ध के लिए चल पड़ा। उसकी सेना में गहरवार, चौहान, गहलौत आदि महायुद्धों में अजेय योद्धा थे ॥ ४७ ॥ इधर विक्रम ने जब सुना तो उसने भी सभी वीरों को बुलाया जो कि युद्धभूमि में आ उपस्थित हुए। दोनों ओर से वीर सेना इस प्रकार उमड़ पड़ी थी जैसे गंगा-यमुना एक-दूसरे की तरफ़ दौड़ती हैं ॥ ४८ ॥ कहीं वीर तलवार निकालकर चलाने लगे और कहीं तन पर घाव बचाने लगे। कहीं कवचों और ढालों पर पड़ती तलवारों से भीषण नाद और चिंगारियाँ उठ रही थीं ॥ ४९ ॥ कहीं घूमनेवाले अस्त्र, कहीं गदाएँ और गोले चल रहे थे। कहीं अर्धचंद्र रूप वाले बाण आदि चल रहे थे। कहीं शूल, सैहथी आदि हाथ में लेकर महायोद्धा कुपित होकर युद्ध कर रहे थे ॥ ५० ॥ खड़ग में फाँस ऐसे पकड़ रखी थी जैसे (कुछ) पुरुष स्त्री को मार डालने के लिए फंदा पकड़े हों। मदमत्त हाथी विचरण कर रहे थे और जिसे भी गले से पकड़ते थे खींचकर मार डालते थे ॥ ५१ ॥

ऐंच मारैं ।। ५१ ।। ।। चौपई ।। जब इह भाँति सकल भट्ट लरे। टूक टूक रन मैं ह्वै परे। तब बिक्रम हसि बैन उचारो। कामसैन सुनु कह्यो हमारो ।।५२।। ।।दोहरा।। दै बेस्वा इह बिप्र कौ सुनु रे बचन अचेत। ब्रिथा जुझावत क्यों कटक एक नटी के हेत ।। ५३ ।। ।। चौपई ।। कामसैन तिह कही न करी। पुनि बिक्रम हसि यहै उचरी। हम तुम लरैं कपट तजि दोई। कै जीतैं के हारैं कोई ।। ५४ ।। अपनी अपने ही सिर लीजै। औरन के सिर ब्रिथा न दीजै। बैठि बिगारि आपु जो करियै। नाहक और लोक नहि मरियै ।। ५५ ।। ।। दोहरा ।। कामसैन इह बचन सुनि अधिक उठ्यो रिस खाइ। अपनौ तुरै धवाइ कै बिक्रम लयो बुलाइ ।। ५६ ।। कामसैन ऐसे कह्यो सूर सामुहें जाइ। झागि सैहथी ब्रिण करै तौ तूँ बिक्रम राइ ।। ५७ ।। झागि सैहथी पेट महि चित महि अधिक रिसाइ। आनि कटारी को कियो कामसैन को घाइ ।। ५८ ।। ऐसे कौ ऐसो लहत जियत न छाडत और। मारि कटारी राखियो जियत राव तिह ठौर ।। ५९ ।। ।। चौपई ।। जीति ताँहि सभ सैन बुलाई।

।। चौपाई ।। इस प्रकार लड़ते-लड़ते जब सभी योद्धा टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़े तब विक्रम ने हंसकर कामसेन से कहा ।। ५२ ।। ।। दोहा ।। हे मूर्ख ! यह वेश्या इस विप्र को दे दो, क्यों एक नारी के लिए सेना को मरवा रहे हो ।। ५३ ।। ।। चौपाई ।। कामसेन ने कहा नहीं माना परन्तु विक्रम ने पुनः हँसकर कहा कि हम-तुम निष्कपट होकर लड़ें और जीतें या हार जायँ ।।५४।। अपनी लड़ाई अपने सिर पर लें तथा व्यर्थ ही दूसरों के सिर पर डालें। अपनी लड़ाई बिगाड़कर नाहक इसमें और लोगों को न मरवाएँ ।। ५५ ।। ।। दोहा ।। कामसेन यह सुनकर अत्यधिक क्रोधित हो उठा और उसने अपने घोड़े को दौड़ाकर विक्रम को (युद्ध के लिए) बुलाया ।। ५६ ।। कामसेन ने शूरवीर के सामने जाकर कहा कि यदि तुम भाले-तलवार से मेरे घाव कर दो तो मैं तुम्हें विक्रम समझूँ ।। ५७ ।। अत्यधिक क्रोधित होकर उसने कमर से तलवार निकालकर कटारी से कामसेन को घायल कर दिया ।। ५८ ।। जैसे को तैसा मिल गया और उसे जीवित न छोड़ा। तलवार मारकर जीवित राजा को वहीं मार गिराया ।। ५९ ।। ।। चौपाई ।। जीतकर वहाँ सम्पूर्ण सेना को बुलाया और वहाँ विभिन्न प्रकार की बधाइयाँ बजने लगीं।

भाँति भाँति की बजी बधाई। देवन रीझि इहै बरु दयो।
ब्रणी हुतो अब्रणी ह्वै गयो ॥ ६० ॥ ॥ दोहरा ॥ अथित
भेख सजि आपु न्रिप गयो बिप्र के काम। जह कामा लोटत
हुती लै माधव को नाम ॥ ६१ ॥ ॥ चौपई ॥ जातै इहै बचन
तिन कहियो। माधव खेत हेत तव रहियो। सुनत बचन
तब ही मरि गई। न्रिप लै इहै खबरि दिज दई ॥ ६२ ॥
यह बच जब स्रोनन सुनि लीनों। पलक एक महि प्रानहि
दीनों। जब कौतक इह राइ निहार्यो। जरन मरन का
निग्रह धार्यो ॥ ६३ ॥ चिता जराइ जरन जब लाग्यो।
तब बैताल तहाँ ते जाग्यो। सींचि अम्रित तिह दुहुँन जियायो।
न्रिप के चित को तापु मिटायो ॥ ६४ ॥ (मू०ग्रं०९२६)
॥ दोहरा ॥ सहि सैथी पावक बर्यो दुहूँअन लयो बचाइ।
कामा दई दिजोतमहि धन्य बिक्रमा राइ ॥ ६५ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संवादे इकानवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ९१ ॥ १६३२ ॥ अफजूं ॥

देवताओं ने प्रसन्न होकर वरदान दिया जिससे घायल विक्रम के सभी घाव समाप्त हो गए ॥ ६० ॥ ॥ दोहा ॥ अतिथि का वेश धारण कर राजा स्वयं विप्र के काम के लिए वहाँ गया जहाँ कामकंदला माधव का नाम ले-लेकर तड़प रही थी ॥ ६१ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजा ने उसे कहा कि माधव तो लड़ाई में मारा गया और वह यह सुनते ही मर गई। फिर यही समाचार उसने विप्र को दिया ॥ ६२ ॥ जब यह वचन उसने कानों से सुने तो पलक झपकते ही प्राण त्याग दिए। राजा ने जब यह कौतुक देखा तो उसने भी जल मरने का हठ ठान लिया ॥ ६३ ॥ जब वह चिता जलाकर जलने लगा तब वहाँ एक बैताल जाग उठा। उसने अमृत सींचकर दोनों को जीवित कर दिया और राजा के चित्त के शोक का हरण किया ॥ ६४ ॥ ॥ दोहा ॥ तलवार के वार सहकर वह अग्नि में जला और दोनों को बचा लिया। कामकंदला, द्विजवर को देनेवाला विक्रमराय धन्य है ॥ ६५ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में इक्यानवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ९१ ॥ १६३२ ॥ अफजू ॥

अथ बानवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। दछिन देस बिचचछन नारी । जोगी गए भए घर बारी । मंगलसैन राव जगु कहई । सभ अरि कुल जाते त्रिण गहई ।। १ ।। सरूपकला ता की बरनारी । मानहु महारुद्र की प्यारी । तासो नेह न्रिपति को रहै । करै सोई जोई वह कहै ।। २ ।। ।। रुआमल छंद ।। रंगमहल बिखै हुते नर राइ तवनै काल । रूपप्रभा बिराजती तह सुंदरी लै बाल । कान्हरे नाद औ नफीरी बेनु बीन म्रिदंग । भाँति भाँतिन के कुलाहल होत नाना रंग ।। ३ ।। एक नटूआ तह रहै तिह बिसुनदत्वा नाम । राव जू ता कौ नचावत रहै आठौ जाम । अमित रूप बिलोकि ता कौ रानियहि निजु नैन । ह्वै गिरी बिसंभार भूपै बधी सायक मैन ।।४।। ।। तोमर छंद ।। रानियिह सखी पठाइ । सो लयो धाम बुलाइ । तजि कै न्रिपति की कानि । तासौ रमी रुचि मानि ।। ५ ।। तिह अमित रूप निहारि । शिव शत्र ग्यो सर मारि । तब लौ न्रिपति ग्यो आइ । अबला अधिक दुख पाइ ।। ६ ।। तब कियो इहै

बानबेवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। दक्षिण देश की स्त्रियाँ इतनी विलक्षण हैं कि वहाँ जाकर योगी भी घर-बारी हो गए हैं। मंगलसेन वहाँ का राजा था जिससे सभी शत्रु हार मानते थे ।। १ ।। गौरी के समान प्यारी उसकी सुन्दर नारी का नाम स्वरूपकला था। राजा उसे प्रेम करता था और जो वह कहती थी वही करता था ।। २ ।। ।। रूआमल छंद ।। जब राजा रंगमहल में होते तो स्वरूपकला सुन्दर स्त्रियों को साथ लेकर वहाँ विराजमान रहा करती थी। वहाँ नाद-नफीरी तथा अन्य वाद्य बजते तथा विभिन्न प्रकार के कोलाहल होते ।। ३ ।। विष्णुदत्त नामक एक नट वहाँ रहता था जिसे राजा आठों प्रहर नचाता रहता था। रानी अपनी आँखों से उसका अपरिमित रूप-सौंदर्य देखकर कामबाण से बिंधकर धरती पर गिर पड़ी ।। ४ ।। ।। तोमर छंद ।। रानी ने सखी भेजकर उसे घर बुला लिया और राजा की मर्यादा को त्यागकर उससे रमण करने लगी ।। ५ ।। उसका अपार रूप-सौंदर्य देखकर उसे कामदेव बाण मार गया। तब तक राजा आ गया जिससे रानी को अत्यन्त कष्ट हुआ ।।६।। तब उसने एक उपाय कर एक देग को मँगा

उपाइ । इक देग लई मँगाइ । तापैं तवा कौ दीन । कोऊ सकै ताहि न चीन ॥ ७ ॥ जाँ मै घनौ जल परै । तनकौ न बूँदिक ढरै । ता मै गुलाबहि पाइ । काढ्यो पतिहि दिखराइ ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ सींच्यो वहै गुलाब लै पति की पगिया माहि । छिरकि सभन पहि काढियो भेद लह्यो जड़ नाहि ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ नाथ बाग जो मै लगवायो । यह गुलाब तिह ठाँ ते आयो । सकल सखिन जुत तुम पै डार्यो । प्रफुलत भयो जड़ कछु न बिचार्यो ॥ १० ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्ने मंत्री भूप संवादे बानवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ९२ ॥ १६४२ ॥ अफजूं ॥

अथ तिरानवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ चल्यो जुलाहो साहुरे उडि जा कहता जाइ । बद्धिक कुसगुन जानिकै मार्यो ताहि बनाइ ॥ १ ॥ (मू०ग्रं०९३०) ॥ बद्धिक बाच ॥ उडि उडि आवहु फासियहु यौं करता मगु जाइ । जो ऐसो बच पुनि कह्यो हनिहै तोहि रिसाइ ॥ २ ॥

लिया । उसको तवे से ढक दिया ताकि कोई देख न सके ॥ ७ ॥ उसमें बहुत पानी समाता था और एक बूंद भी बाहर नहीं गिरता था । उसमें गुलाब डालकर पति को निकालकर दिखाया ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ वही गुलाब उसने पति की पगड़ी में लगा दिया और इसी प्रकार गुलाब छिड़कते हुए उसे निकाल दिया जिसे कोई भी मूर्ख न जान सका ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह कहने लगी कि हे नाथ ! जो बाग़ मैंने लगवाया है यह गुलाब वहाँ से आया है । इसे मैंने समस्त सखियों समेत तुम्हें अर्पण किया है । यह सुनकर वह मूर्ख प्रफुल्लित हो उठा ॥ १० ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में बानवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ९२ ॥ १६४२ ॥ अफजू ॥

तिरानबेवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ एक जुलाहा ससुराल जा रहा था और 'उड़ जा' कहता जा रहा था । एक बधिक ने इसे अपशकुन जानकर उसे ख़ूब मारा ॥ १ ॥ ॥ बधिक उवाच ॥ तुम 'उड़-उड़ आओ और फँसो' कहते हुए रास्ते पर जाओ और यदि तुमने विपरीत वचन कहे तो तुम्हें मैं क्रोधित होकर मार

।। चौपई ।। फसि फसि जावहु उडि उडि आइ । ऐसे कहत
जुलाहो जाइ । चोरन कुसगुन चित्त बिचार्यो । दो सै
जुत्ती सौ तिह मार्यो ।।३।। ।।चोरन बाच।। ।। दोहरा ।। लै
आवहु धरि जाइयहु यौ कहि करौ पयान । जो उहि भाँति
बखानिहो हरिहै तुहि तन बान ।। ४ ।। जब चोरन ऐसे कह्यो
तब ता ते डरपाइ । लै आवहु धरि जाइयहु यौ मगु कहतौ
जाइ ।। ५ ।। चार पुत्र पातिशाह के इक नै तजा परानि ।
दाबन ता कौ लै चले अधिक शोक मन मानि ।। ६ ।।
।। चौपई ।। तब लौ कहत जुलाहो ऐयहु । लै लै आवहु धर
धर जैयहु । सैना के स्त्रवनन यह परी । पंद्रह सै पनही तह
झरी ।। ७ ।। तिन सों कह्यो कहों सु उचारो । कह्यो बुरा
भयो कहत पधारो । भेद अभेद की बात न जानी । जो तिन
कह्यो वहै जढ़ मानी ।। ८ ।। एक राव ताके बहु नारी ।
पूत न होत ताहि दुख भारी । और ब्याहि ब्याकुल ह्वै कीनो ।
ता के भवन पूत बिधि दीनो ।। ९ ।। सभहिन आनंद चित्त
बढायो । तब लौ कहत जुलाहो आयो । बुरा भयो कहि ऊच
पुकार्यो । सुन्यो जाँहि पनहिन तिन मार्यो ।। १० ।।

डालूंगा ।।२।। ।।चौपाई।। 'उड़-उड़ आओ और फँसो' यह कहता हुआ जुलाहा चला जा रहा था तो चोरों ने सुना और बुरा मनाया तथा दो सौ जूते उसके सिर पर लगाए ।। ३ ।। ।। चोर उवाच ।। ।। दोहा ।। "ले आओ और रख जाओ" यह कहते हुए तुम जाओ । यदि तुम पहले की तरह कहोगे तो हम तुम्हारे प्राण हर लेंगे ।। ४ ।। तब चोरों से डरते हुए 'ले आओ धर जाओ' यह कहते हुए वह मार्ग पर चला ।।५।। उधर राजा के चार पुत्रों में से एक मर गया और बाकी उसे दबाने के लिए दुखी होकर ले जा रहे थे ।। ६ ।। ।। चौपाई ।। तब तक उन्हें जुलाहा मिला जो कह रहा था कि "ले आओ और रख जाओ" । जब राजा की सेना ने यह सुना तो उन सबने पंद्रह सौ जूते उसके सिर पर मारे ।। ७ ।। उन्होंने कहा कि तुम यह कहते हुए जाओ कि "बहुत बुरा हुआ" । उसने भेद-अभेद न समझा और जो उन्होंने कहा था उसे ही मान लिया ।। ८ ।। एक राजा के पास बहुत स्त्रियाँ थीं परन्तु पुत्र न होने से वह अत्यधिक दुखी था । उसने व्याकुल होकर एक और विवाह किया और विधाता ने उसे पुत्र दिया ।। ९ ।। सभी प्रसन्न हो उठे और तब तक जुलाहा वहाँ आ पहुँचा और ज़ोर से चिल्लाया कि 'बुरा हुआ' । जिसने भी यह सुना उसने उसे जूते मारे ।। १० ।। ।। पुरजन उवाच ।। जब

॥ पुरजन बाच ॥ भला भयो इह कहित पधार्‌यो । जब लोगन जूतिन सो मार्‌यो । जात भयो तिह ठाँ बडभागी । जह अति अगनि नगर महि लागी ॥ ११ ॥ गिरि गिरि परै महल जह भारे । छपरन के जह उडै अवारे । भला भयो यो मूड़ पुकार्‌यो । जाहि सुन्यो ताही गहि मार्‌यो ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ दस हजार पनहीन की सही जुलाहे मारि । ता पाछे पहुचत भयो जहा हुती ससुरारि ॥१३॥ ॥चौपई॥ ग्रहि जन कहा खाहु नहि खावै । भूखन मरत न लजत बतावै । आधी रैनि बीत जब गई । लागत अधिक छुधा तिह भई ॥ १४ ॥ लकरी भए तेल घट फोर्‌यो । तीनो सकल नैक नहि छोर्‌यो । सूरज चड़्‌यो उडग छपि गए । फाँसि पान सो कउआ लए ॥१५॥ ॥ दोहरा ॥ तानो बेचि क्रिपान ली चल्यो चाकरी (मू०ग्रं०६३१) धाइ । मारत मारग सिंघ जह तिह ठाँ पहुच्यो जाइ ॥ १६ ॥ त्रसित जुलाहो द्रुम चड़्‌यो गहे सैहथी हाथ । तरे आनि ठाढो भयो सिंघ रोस के साथ ॥१७॥ ॥ चौपई ॥ सिंघहि द्रिशटि जुलाहे परी । बरछी कंपत हाथ ते झरी । मुख मै लगी पिसटि तर निकसी । जनु करि कंज

सबने जूते मारे तो कहा कि 'भला हुआ' कहते जाओ। अब यह भाग्यवान वहाँ पहुँचा जहाँ एक नगर में आग लगी हुई थी ॥ ११ ॥ वहाँ बड़े-बड़े भवन गिर रहे थे और उड़-उड़कर छप्परों के अंबार लगे हुए थे। वहाँ वह मूर्ख कहने लगा कि 'भला हुआ'। इसे जिसने भी सुना उसने इसे मारा ॥१२॥ ॥ दोहा ॥ दस हज़ार जूता खा जुलाहा ससुराल पहुँचा ॥१३॥ ॥ चौपाई ॥ घर वालों ने कहा कि खाना खाओ पर इसने लज्जावश नहीं खाया और भूखा मरने लगा। जब आधी रात बीती तो इसे बहुत भूख लगी ॥ १४ ॥ उसने लकड़ी लेकर तेल का घड़ा फोड़ दिया और तीनों में से कुछ भी नहीं छोड़ा। सूर्य निकला और तारे छिप गए तो उसने हाथ से कौए फँसा लिये ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥ अपना ताना-बाना बेचकर उसने कृपाण ली और चल पड़ा तथा रास्ते में उस स्थान पर आ पहुँचा जहाँ शेर लोगों को मार खाता था ॥ १६ ॥ भयभीत जुलाहा कृपाण हाथ में लेकर पेड़ पर चढ़ गया और इधर नीचे क्रुद्ध शेर आ खड़ा हुआ ॥ १७ ॥ ॥ चौपाई ॥ शेर की दृष्टि जब जुलाहे पर पड़ी तो उसके हाथ से बर्छी गिर पड़ी। वह उसके मुख में लगी और उसकी पीठ से ऐसे निकली मानो कोई कली खिली

कली सी बिगसी ।। १८ ।। जान्यो साचु सिंघ मरि गयो ।
उतर्‌यो पूछि कान कटि लयो । जाइ न्रिपति कौ
ताहि दिखायो । अधिक महीनो अपन करायो ।। १९ ।।
।। दोहरा ।। एक शत्र ता को हुतो चढ़ियो अनी बनाइ ।
सैनापति पचमार कै इह न्रिप दियो पठाइ ।। २० ।।
।। चौपई ।। यह पचमार खबरि सुन पाई । नारि जुलाही
हुती बुलाई । चित मै अधिक दुहूँ डर कीनो । अरध राति
बन को मगु लीनो ।। २१ ।। जब त्रिय सहित जुलाहो भाज्यो ।
तब ही घोर घटा घन गाज्यो । कबहूँ चमिकि बिजुरिया
जावै । तब मारग को चीन न आवै ।। २२ ।। मग तै भूलि
तिसी मगु परियो । जह न्रिप अरि को लसकर ढरियो ।
कूंई हुती द्रिशटि नहि आई । ता मौ पर्‌यो जुलाहो जाई ।।२३।।
।। दोहरा ।। जब ताही कूँई बिखै जाइ पर्‌यो बिसंभार । तब
ऐसे त्रिय कहि उठी आनि पर्‌यो पचमार ।। २४ ।।
।। अड़िल्ल ।। आनि पर्‌यो पचमार सभन सुनि पायो । अति
लशकर चित माँहि सु त्रास बढायो । लोह अधिक तिन माँहि
भाँति ऐसी पर्‌यो । हो जोधा तिन ते एक न जियते
उबर्‌यो ।।२५।। ।। दोहरा ।। पूत पिता के सिर दई पिता पूत

हो ।। १८ ।। शेर सचमुच मर गया और जुलाहे ने पेड़ से उतरकर उसकी
पूंछ और कान काट लिये । उसने वे सब राजा को दिखाए और अपना
मासिक वेतन बढ़वा लिया ।। १९ ।। ।। दोहा ।। राजा का एक शत्रु था जो
सेना-सहित उस पर आ चढ़ा । राजा ने उस शेर-मार को सेनापति बनाकर
भेज दिया ।। २० ।। ।। चौपाई ।। जब जुलाहे ने यह खबर सुनी तो उसने
अपनी पत्नी को बुलाया । दोनों चित्त में अत्यधिक डर गए और आधी रात
को वन को भाग गए ।। २१ ।। जब स्त्री-सहित जुलाहा भागा तो उसी समय
घनघोर मेघगर्जन हुआ । कभी-कभी बिजली चमकती थी और मार्ग का
पता नहीं चलता था ।। २२ ।। वह रास्ता भूलकर उसी रास्ते पर आ
निकला जहाँ राजा के शत्रु की सेना पड़ी हुई थी । वहाँ एक कुआँ था,
जुलाहा उसी में जा गिरा ।। २३ ।। ।। दोहा ।। जब वह बेहोश होकर कुएँ
में गिर पड़ा तब स्त्री ने चिल्लाकर कहा कि शेर-मार गिर पड़ा है ।। २४ ।।
।। अड़िल्ल ।। शेर-मार आ पड़ा है, यह सुनकर सारी सेना मन में डर गई ।
वे आपस में ही लड़ने लगे और उनमें से एक भी योद्धा जीवित न बचा ।।२५।।
।। दोहा ।। पिता ने पुत्र को और पुत्र ने पिता को मारा, और इसी प्रकार सभी

सिर माँहि। इसी भाँति सभ कटि मरे रह्यो सुभट कोऊ नाहि ॥ २६ ॥ ॥ चौपई ॥ तज पुर तिसी जुलाही आई। आइ बारता न्रिपहि जताई। जब यह भेद राव सुनि पायो। पठै पालकी ताहि बुलायो ॥ २७ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे तिरानवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ९३ ॥ १६६९ ॥ अफजूं ॥

अथ चौरानवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ चाँदन हूँ के देश मैं प्रगट चाँदपुर गाउ। बिप्र एक तिह ठाँ रहै दीनद्याल तिह नाउ ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ दिसन दिसन की इस्त्री आवहि। आइ बिप्प को सीस झुकावहि। सुभ बानी (ग्रं॰ग्रं॰९३२) मिलि यहै उचारैं। रति पति की अनुहारि बिचारैं ॥२॥ ॥दोहरा॥ एक नारि तिह ठाँ हुती रति सम रूप अपार। सो यापै अटकत भई रति पति ताँहि बिचार ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ कबहूँ त्रिय ता के ग्रहि आवै। कबहूँ तिह घर बोलि पठावै। एक दिवस दिन कौ वहु आयो। तब अबला इह चरित दिखायो ॥ ४ ॥ ॥ सवैया ॥ बैठी हुती सखी मद्धि अली न

वीर कट मरे ॥ २६ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब जुलाही वह स्थान छोड़कर आई और उसने सारी वार्त्ता राजा को बताई। जब राजा ने यह भेद सुना तो उसने पालकी भेज उस जुलाहे को मँगवा लिया ॥ २७ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में तिरानवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ९३ ॥ १६६९ ॥ अफजू ॥

चौरानबेवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ चन्द्रदेश में चाँदपुर नामक एक गाँव था। वहाँ दीनदयाल नामक एक ब्राह्मण रहता था ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ देश-देशान्तरों की स्त्रियाँ आती थीं और उस ब्राह्मण के सामने सिर झुकाती थीं। यह भी उन्हें मीठी बातें कहता था और स्त्रियों को कामदेव के समान लगता था ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ एक स्त्री वहाँ रति के समान सुन्दर थी, वह इसे कामदेव-समान मानकर इससे लिप्त हो गई ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ अब कभी तो वह स्त्री इसके घर आने लगी और कभी इसे अपने घर बुलाने लगी। एक दिन दिन में वह आया तो इस स्त्री ने यह प्रपंच दिखाया ॥ ४ ॥ ॥ सवैया ॥ वह

मौं दीनदयाल सौ नेहु नवीनो। बैननि चित करै चित मैं इत नैननि प्रीतम को मनु लीनो। नैन की काल को बीचल देखि सु सुंदरि घात चितैबे को कीनो। ही लखि पाइ जँभाइ लई चुटकी चटकाइ बिदा करि दीनो ॥ ५ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे चौरानवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ९४ ॥ १६७४ ॥ अफजूं ॥

अथ पंचानवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ दुहिता एक जाट उपजाई। माँगत भीखि हमारे आई। बिंदो अपनो नामु रखायो। चेरिन के संग द्रोह बढायो ॥ १ ॥ डोला माटी को तिन लयो। ता मै डारि सरसवहि दयो। चारि मेख लोहा की डारी। दाबि गई ता की पिछवारी ॥ २ ॥ आप राव तन आनि जतायो। इकु टौना इह कर मम आयो। जौ तुम कहो तो आनि दिखाऊँ। कछु मुख ते आग्या तव पाऊँ ॥ ३ ॥ त्रिप कह्यो आनि दिखाइ दिखायो। सभहिन के चित्त भरमुपजायो। सत्ति सत्ति सभहूँन बखान्यो। ता को भेद न किनहूँ

सखियों में बैठी बातें कर रही थी कि मुझे दीनदयाल से प्रेम नहीं है। बातें तो वह ऐसी कर रही थी और मन में उसी प्रियतम का ध्यान कर रही थी। तैरती हुई दृष्टि से उसने उस ओर देखने का प्रयत्न किया और जम्हाई लेकर चुटकी बजाते हुए अपने मित्र को विदा कर दिया ॥ ५ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में चौरानवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ९४ ॥ १६७४ ॥ अफजू ॥

पंचानबेवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ एक जाट की लड़की थी जो भीख माँगती हुई हमारे पास आई। उसका नाम बिन्दु था और वह अन्य दासियों से लड़ती थी ॥ १ ॥ उसने मिट्टी का घरौंदा लिया, उसमें सरसों डाल दी, चार लोहे की कीलें लीं और पिछवाड़े जाकर दबा दिया ॥ २ ॥ आकर उसने राजा से कहा कि यह एक टोना मैंने पाया है। यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं तुम्हें लाकर दिखाऊँ ॥ ३ ॥ राजा के कहने पर उसने लाकर दिखा दिया और सबको भ्रम में डाल दिया। सभी ने उसे सत्य समझा और कोई भी उसका रहस्य

जान्यो ॥ ४ ॥ इह चुगली जिह ऊपर खाई। सो चेरी त्रिप पकरि मँगाई। कुठरन मारि अधिक तिह मारी। सी ना मुख ते नैक उचारी ॥ ५ ॥ मारि परी वह नैकु न मान्यो। यह त्रिय हठी रावहूँ जान्यो। दिब की बात चलन जब लागी। आधी राति गए तब भागी ॥ ६ ॥ भेजि मनुख त्रिप पकरि मँगाई। एक कोठरी मै रखवाई। बिखु को खाना ताँहि खवायो। वाहि म्रितु के धाम पठायो ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे पचानवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ९५ ॥ १६८१ ॥ अफजूं ॥

अथ छ्यानवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ मरग चौहडे के बिखै एक पठानी नार। बैरम (मू०ग्रं०९३३) खाँ ता को रहै भरता अति सुभ कार ॥१॥ तवन पठानी को हुतो नाम गौहरा राइ। जानु कनक की पुत्रिका बिधना रची बनाइ ॥ २ ॥ अरि बलु कै आवत भए ता पैं अति दल जोरि। दैहै याहि निकारिकै लैहै देस मरोरि ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ दूत तबै बैरम पहि आयो। ता

न समझ सका ॥ ४ ॥ इसने जिस दासी का नाम बताया राजा ने उसे पकड़वा बुलाया। उसे कोड़ों से मारा गया पर उसने मुख से आह तक नहीं निकाली ॥ ५ ॥ मार पड़ने पर भी वह न मानी और राजा भी जान गया कि यह स्त्री बहुत हठी है। जब रात में सब कहानियाँ कहने लगे तो आधी रात को यह भाग गई ॥६॥ राजा ने फिर लोगों को भेजकर उसे पकड़ मँगाया और एक कोठरी में बंद कर दिया। उसे विषयुक्त भोजन दिया और मृत्युलोक में पहुँचा दिया ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में पंचानवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ९५ ॥ १६८१ ॥ अफजू ॥

छियानबेवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ मरग नामक नगर में एक पठान की स्त्री थी। बैरम खाँ उसका पति था जो नेक काम करता था ॥१॥ उस पठानी का नाम गौहरराय था और मानो वह सोने की पुतली थी जिसे विधाता ने रुचिपूर्वक बनाया था ॥ २ ॥ एक बार शत्रु दलबलपूर्वक उस स्त्री और प्रदेश को लेने आ

को अधिक रोस उपजायो । बैठ्यो कहा दैव के खोए । तोपैं
करे आरबिन ढोए ।। ४ ।। बैरम अधिक बचन सुनि डरियो ।
आपु भजन को सामो करियो । तद चलि तीर पठानी आई ।
ता सों कह्यो सु चहौ सुनाई ।। ५ ।। ।। दोहरा ।। तोर पिता
ऐसो हुतो जाको जग मै नाम । तूँ कातर ऐसो भयो छाडि
चल्यो संग्राम ।। ६ ।। ।। चौपई ।। अपनी पगिया मोकह दीजै ।
मेरी पहिर इजारहि लीजै । जब मै शस्त्र तिहारो धरिहौ ।
टूक टूक बैरिन के करिहौ ।। ७ ।। यौ कहि पतिहि भोहरे
दीनो । ता कै छीनि आयुधन लीनो । शस्त्र बाँधि नर भेख
बनायो । पहिरि कवच दुंदभी बजायो ।।८।। ।।दोहरा।। सैन
सकल लै कै चड़ी सूरन सकल जताइ । बैरम खाँ मुहि भ्रित
कौ बीरा दयो बुलाइ ।। ९ ।। ।। चौपई ।। सैना सकल संग लै
धाई । बाँधे गोल सामुहे आई । बैरम खाँ इक भ्रित पठायो ।
मोकह जीति तब आगे जायो ।। १० ।। यौ सुनि सूर सकल
रिस भरे । भाँति भाँति कै आयुधु धरे । ताँ कों घेरि
दसौ दिसि आए । तानि कमानन बान चलाए ।। ११ ।।

गया ।। ३ ।। ।। चौपाई ।। बैरम के पास दूत आया और वह अत्यधिक क्रोधित हो उठा । दूत ने कहा कि भाग्य के मारे हुए क्या बैठे हो, शत्रु तो तोपें ढोकर चढ़ाई कर रहे हैं ।। ४ ।। बैरम यह सुनकर डर गया और दौड़ने का उपक्रम करने लगा । तब पठानी उसके पास आयी और बोली ।। ५ ।। ।। दोहा ।। तेरे पिता का तो जगत् में नाम था, परन्तु तुम ऐसे कायर हो कि युद्ध से भाग रहे हो ।। ६ ।। ।। चौपाई ।। तुम अपनी पगड़ी मुझे दे दो और मेरी सलवार-धोती पहन लो । मैं तुम्हारे शस्त्र लेकर शत्रुओं के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगी ।। ७ ।। यह कहकर पति को तहखाने में डाल दिया और उसके सभी शस्त्र ले लिये । शस्त्र पहनकर उसने नर-वेश एवं कवच धारण कर दुंदुभियाँ बजवा दीं ।। ८ ।। ।। दोहा ।। सेना लेकर वह चढ़ गई और समस्त वीरों को उसने जताया कि बैरम खाँ ने इस युद्ध का बीड़ा मुझे सौंपा है ।। ९ ।। ।। चौपाई ।। समस्त सेना साथ लेकर वह सामने आई और दूसरी ओर पता चला कि बैरम खाँ ने एक सेनापति भेजा है जो यह कहता है कि मुझे जीतकर आगे जाओ ।। १० ।। यह सुनकर वीर क्रोध से भर उठे और विभिन्न प्रकार के शस्त्र उन्होंने सँभाल लिये । उन्होंने उसे दसों दिशाओं से घेर लिया और कमान तानकर आगे बढ़कर बाण चलाने लगे ।। ११ ।। ।। दोहा ।। तलवार,

।। दोहरा ।। असि फाँसी धरि सिपर लै गुरज गुफन लै हाथ । गिरि गिरि गे जोधा धरनि बिधे बरछियन साथ ।। १२ ।। ।। भुजंग छंद ।। लए हाथ सैथी अरब खरब धाए । बँधे गोल हाठे हठी खेत आए । महा कोप कै बाल के तीर ढूके । दुहूँ ओर ते मार ही मारि कूके ।। १३ ।। ।। सवैया ।। छोरि निसासन के फररे भट ढोल ढमाकन दै करि ढूके । ढालन कौं गहिकै कर भीतर मार ही मारि दसौ दिसि कूके । वार अपार बहे कई बार गए छुटि कंचन कोटि कनूके । लोह लुहार गढ़ै जनु जारि उठैं इक बारि तिनारि भभूके ।। १४ ।। ।। भुजंग छंद ।। गुरिए खेल महमंदिले जाक धाए । 'दओजई अफरीदीए कोपि आए । हठे सूर लोदी महा कोप कै कै । परे आनि कै बाढवारीन लै कै ।। १५ ।। परी (मू०ग्रं०६३४) बाढवारीन की मारि भारी । गए जूझि जोधा बडेई हँकारी । महा मारि बानान की गाड़ ऐसी । मनौ कुआर के मेघ की ब्रिसटि जैसी ।। १६ ।। परे आनि जोधा चहूँ ओर भारे । महाँ मार ही मारि ऐसे पुकारे । हटे नाहि छत्री छके छोभ ऐसे । मनो साच स्री काल की ज्वाल जैसे ।। १७ ।। धए अरब आछे महाँ सूर भारी । करै तीनहूँ लोक जिनकौ जुहारी ।

पाश, गदा हाथों में लिये पर्वतों के समान योद्धा बर्छियों से बिंध गए ।। १२ ।। ।। भुजंग छंद ।। हाथों में कृपाणें लिये अनेक सैनिक आए और हठपूर्वक गोल घेरा बनाकर लड़ने लड़े । वे कुपित होकर स्त्री को बाण मारने लगे । चारों ओर से मार-मार की आवाज़ें आने लगी ।। १३ ।। ।। सवैया ।। झंडे फहराते, ढोल बजाते, ढाल हाथों में पकड़कर दसों दिशाओं से वीर 'मार-मार' चिल्लाने लगे । वीरों से कई सुनहरी चिंगारियाँ छूटने लगीं । ऐसे भभके उठ रहे थे मानो लोहार लोहे की कोई वस्तु पीट-पीटकर बना रहा हो ।।१४।। ।। भुजंग छंद ।। गुरीए, मुहम्मदी, दउजई, अफ़रीदी, पठान कुपित होकर आ गए । लोदी शूरवीर हठ करके लड़ने लगे और तलवारें लेकर टूट पड़े ।।१५।। कृपाणों की भारी मारकाट में कई बड़े-बड़े अहंकारी योद्धा जूझ गए । बाण इतने घनघोर चलने लगे मानो कुआर के महीने की वर्षा हो ।। १६ ।। चारों ओर से भारी योद्धा आ पड़े और 'मार-मार' पुकारने लगे । क्षुब्ध क्षत्री काल की ज्वाला के समान प्रत्यक्ष होने लगे ।। १७ ।। अरब देश के भारी वीर चल पड़े जिनके सामने त्रिलोकी भी नतमस्तक होती है । वे हाथों में

लए हाथ तिरसूल ऐसो भ्रमावै । मनो मेघ मै दामनी दमकि जावै ॥१८॥ ॥ चौपई ॥ धाए बीर जोरि दल भारी । बाना बधे बडे हंकारी । तान धनहियन बान चलावै । बाँधे गोल सामुहे आवै ॥ १९ ॥ जब अबला वह नैन निहारे । भाँति भाँति के शस्त्र प्रहारे । मूँड जंग बाहन बिनु कीने । पठै धाम जम के सो दीने ॥ २० ॥ जूझि अनेक सुभट रन गए । हैगै रथी बिना असि भए । जूझे बीर खेत भट भारी । नाचे शूर बीर हंकारी ॥ २१ ॥ ॥ दोहरा ॥ लगे ब्रिणन के सूरमा परे धरनि पै आइ । गिरे परे उठि पुनि लरे अधिक ह्रिदै करि चाइ ॥ २२ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ किते गोफनै गुरज गोले उभारें । किते चंद्र त्रिसूल सैथी सँभारैं । किते परघ फाँसी लए हाथ डोलैं । किते मारही मारकै बीर बोलैं ॥ २३ ॥ ॥ दोहरा ॥ अति चित कोप बढाइकै सूरन सकलन घाइ । जहाँ बालि ठाढी हुती तहाँ परत भे आइ ॥२४॥ ॥चौपई॥ किचपचाइ जोधा समुहावैं । चटपट सुभट बिकट कटि जावैं । जूझि प्रान सनमुख जे देही । डारि बिवान बरंगनि लेही ॥ २५ ॥ ॥ दोहरा ॥ जे भट आनि अपचछरनि लए

त्रिशूल ऐसे घुमा रहे थे मानो बादलों में बिजली चमकती हो ॥ १८ ॥ ॥ चौपाई ॥ बड़ी सेना-सहित वीर टूट पड़े और बड़े-बड़े अहंकारियों को बाणों से वेध दिया । धनुष तानकर वे बाण चलाते थे और गोल बाँधकर सामने आते थे ॥ १९ ॥ जब यह स्त्री उनको देख लेती तो विभिन्न शस्त्रों से उन पर वार करती । वह उन्हें शीश, जंघा एवं वाहन-विहीन करके यमलोक भेज देती थी ॥ २० ॥ अनेकों योद्धा जूझ गए और रथ, कृपाण, अश्व-विहीन हो गए । अनेकों वीर जूझ गए और अहंकारी वीर नृत्य करने लगे ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ घाव लगे वीर धरती पर आ गिरे । वे उठते-गिरते और पुनः युद्ध करते थे ॥ २२ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ कोई चक्रदार अस्त्र, गदा, गोला सँभाल रहा था और कितने ही चन्द्र, त्रिशूल, कृपाणादि सम्हाल रहे थे । कितने ही लोग पाश, परिघ आदि हाथ में लिये घूम रहे थे और कितने ही 'मार-मार' चिल्ला रहे थे ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ चित्त में कोप बढ़ाकर समस्त शूरवीरों को मारते हुए वीर वहाँ आ पहुँचे जहाँ यह स्त्री खड़ी थी ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ क्रुद्ध योद्धा सामने आते थे और शीघ्र ही कट जाते थे । जो सामने लड़ते हुए प्राण देते थे, अप्सराएँ उन्हें विमानों पर चढ़ाकर (वरण के लिए) ले जाती थी ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥ अप्सराओं ने जिन शूरवीरों को

बिवान चढ़ाइ । तिन्नि प्रति और निहारिकै लरतु सूर समुहाइ ॥ २६ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ चहूँ ओर ते चावडें चीतकारी । रहे गिद्ध आकाश मँडराइ भारी । लगे घाइ जोधा गिरे भूमि भारे । ऐसी भाँति झूमै मनौ मत्तवारे ॥ २७॥ परी बान गोलान की भीर भारी । बहै तीर तरवारि काती कटारी । हठे ऐंठियारे महाँ बीर धाए । बद्धे गोल गाढ़े चले खेत आए ॥ २२ ॥ गुरिया खोल महमंदिले जाक मारे । दओजई अफरीते लोदी सँघारे । बली सूरन्याजी ऐसी भाँति कूटे । चले भाज जोधा सभै सीस फूटे ॥२९॥ ॥सवैया॥ सूर गए कटि कै झट दै (मू०ग्रं०९३५) तब बाल कुपी हथिआर सँभारे । पटिस लोह हथी परसे इकबार ही बैरनि के तन झारे । एक लरे इक हारि टरे इक देखि डरे मरि गे बिनु मारे । बीर करोरि सरासन छोरि द्रिणान कौ तोरि सुआनन डारे ॥ ३० ॥ ॥ चौपई ॥ कोपे अरि बिलोकि तब भारे । दुंदभि चले बजाइ नगारे । टूटे चहूँ ओर रिसि कै कै । भाँति भाँति के आयुधु लै कै ॥३१॥ ॥ दोहरा ॥ बज्रबान बिछुआ बिसिख बरस्यो सार अपार । ऊच नीच कायर सुभट सभ

विमान पर चढ़ा लिया, उन्हें देखकर शूरवीर और भी सम्मुख होकर लड़ते थे ॥ २६ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ चारों ओर चीलें चीत्कार कर रही थीं और गिद्ध आकाश में मँड़रा रहे थे । भारी वीर घायल होकर भूमि पर ऐसे गिर रहे थे मानो मदमस्त हाथी झूम रहे हों ॥ २७ ॥ बाण, गोले, तीर, तलवार, काती, कटारियाँ बह रही थीं । महान हठी और गर्वीले वीर चल पड़े और वे झुंड बाँधकर युद्धक्षेत्र में आ पहुँचे ॥ २८ ॥ जादू की गाँठ खोलकर मुहम्मदी जिसे भी मार रहे थे वे दउजई, अफ़रीदी सभी मारे जा रहे थे । इस प्रकार महावली काट-कूट डाले गए । सभी फूटे हुए सिरों वाले योद्धा भाग खड़े हुए ॥ २९ ॥ ॥ सवैया ॥ तीरों के मारे-काटे जाने पर उस स्त्री ने कुपित होकर शस्त्र सँभाले । उसने एक ही बार में पट्टी, लौहहस्तिका, फरसे आदि से शत्रु पर प्रहार किए । कुछ तो लड़े, कुछ हारकर भाग गए । कुछ डर गए और बिना मारे ही मर गए । वीरों ने करोड़ों वाण छोड़कर दृढ़ वीरों को काटकर कुत्तों के लिए फेंक दिया ॥ ३० ॥ ॥ चौपाई ॥ तब शत्रुगण यह देखकर अत्यन्त क्रुद्ध हो उठे और दुंदुभियाँ बजाते हुए चल पड़े । वे विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र लेकर चारों ओर से टूट पड़े ॥ ३१ ॥ ॥ दोहा ॥ वज्रबाण, बिछुआ और विशिख नामक बाण अपार संख्या में

कीने इक सार ॥ ३२ ॥ ॥ चौपई ॥ ऐसी भाँति खेत जब
परियो । अरबराइ कुपि बचन उचरियो । जाको जियत
जान नही दीजै । घेरि दसो दिसि ते बधु कीजै ॥ ३३ ॥
अरबराइ कुपि बचन उचारे । कोपे सूरबीर ऐठ्यारे । तानि
कमानन बान चलाए । बेधि बाल को पार पराए ॥ ३४ ॥
॥ दोहरा ॥ बेधि बान जब तन गए तब तिय कोप बढाइ ।
अमित जुद्ध तिह ठाँ कियो सो मै कहत बनाइ ॥ ३५ ॥
॥ चौपई ॥ लगे देह ते बान निकारे । तन पुनि वहै बैरियन
मारे । जिनकी देह घाव दिड़ लागे । तुरतु बरंगनिन सो
अनुरागे ॥ ३६ ॥ ऐसी भाँति बीर बहु मारे । बाजी करी
रथी हनि डारे । तुमल जुद्ध तिह ठाँ अति मचियो । एक
सूर जीयत नहि बचियो ॥ ३७ ॥ अरबराइ आपन तब धायो ।
आनि बाल सो जूझ मचायो । चतुर बान तब लिया प्रहारे ।
चारो अस्व मार ही डारे ॥ ३८ ॥ पुनि रथ काटि सारथी
मार्यो । अरबराइ को बान प्रहार्यो । मोहित कै ता को
गहि लीनो । दुंदभि तबै जीति कौ दीनो ॥ ३९ ॥ ता को

बरसने लगे और अब ऊँच-नीच, कायर-वीर सबकी एक ही गति होने लगी ॥ ३२ ॥ ॥ चौपाई ॥ इस प्रकार जब युद्ध होने लगा तो अरबराय कुपित होकर कहने लगे कि इसे जीवित नहीं जाने देना है और इसे दसों दिशाओं से घेरकर वध कर दो ॥ ३३ ॥ अरबराय के क्रुद्ध वचनों को सुनकर गर्वीले वीर कुपित हो उठे । उन्होंने कमान तान-तानकर बाण चलाए जो उस बाला को बेधकर पार निकल गए ॥ ३४ ॥ ॥ दोहा ॥ जब बाणों से तन बिंध गया तो उस स्त्री ने कुपित होकर जो भीषण युद्ध किया, अब मैं उसे कहता हूँ ॥ ३५ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने देह में लगे बाण निकाले और खींचकर वही बाण वापस मारे । वे बाण जिसको भी लगे वह तुरन्त अप्सराओं द्वारा वरण कर लिया गया अर्थात् मर गया ॥ ३६ ॥ इस प्रकार बहुत से वीरों को मार डाला गया और उसने अश्वारोही, गजारोही, रथी आदि मार डाले । वहाँ भीषण युद्ध हुआ और एक भी वीर जीवित नहीं बचा ॥ ३७ ॥ तब हड़बड़ा कर अरबराय स्वयं चला और उस बाला से युद्ध करने लगा । तब स्त्री ने चार बाण चलाए और चारों घोड़ों को मार डाला ॥ ३८ ॥ पुनः सारथी एवं रथ को काटकर उसने अरबराय पर बाण चलाया । उसे मोहित (बेहोश) करके पकड़ लिया और अपनी जीत की दुंदुभि बजा दी ॥ ३९ ॥ उसे बाँधकर वह घर ले आई और विभिन्न

बाँधि धाम लै आई। भाँति भाँति सो दरबु लुटाई। जै दुंदभी द्वार पै बाजी। ग्रहि के लोक सकल भे राजी ॥ ४० ॥ ॥ दोहरा ॥ काढि भोहरा ते पतिहि दीनो शत्रु दिखाइ। बिदा कियो इक अस्व दै औ पगिया बधवाइ ॥ ४१ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे छ्यानवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ९६ ॥ १०२२ ॥ अफजूं ॥

अथ सतानवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ स्यालकोट के देस मै सालबाहना राव। खट दरशन कौ मानई राखत सभ को भाव ॥ १ ॥ स्री त्रिपरारि मती (मू०ग्रं०९३६) हुती ता की त्रिय कौ नाम। भजै भवानी कौ सदा निसु दिन आठौ जाम ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ यह जब भेद बिक्रमै पायो। अमित सैन लैकै चढ़ि धायो। नैकु सालबाहन नहि डरियो। जोरि सूर सनमुख ह्वै लरियो ॥३॥ ॥ दोहरा ॥ तब तासौ स्री चंडिका ऐसे कह्यो बनाइ। सैन म्रितका की रचो तुम मैं देउँ जियाइ ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ जो जगमात कहियो सो कीनो।

प्रकार से उसने द्रव्य न्योछावर किया। जब द्वार पर दुंदुभि बजने लगी तो घर के सभी लोग प्रसन्न हो उठे ॥ ४० ॥ ॥ दोहा ॥ तब उसने तहखाने से पति को निकालकर शत्रु को दिखा दिया। तब उसने उसे एक घोड़ा और पगड़ी देकर विदा कर दिया ॥ ४१ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में छियानवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ९६ ॥ १०२२ ॥ अफजू।

सत्तानबेवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ स्यालकोट में शालिवाहन नामक एक राजा था जो षट्दर्शन को मानता था और सबसे प्रेम करता था ॥ १ ॥ उसकी स्त्री का नाम त्रिपुरारिमति था जो आठों प्रहर भवानी का जाप करती थी ॥ २ ॥ ॥चौपाई॥ जब विक्रम को यह पता लगा तो अपरिमित सेना लेकर चढ़ आया। शालिवाहन भी तनिक नहीं डरा और सामने होकर लड़ा ॥३॥ ॥दोहा॥ तब श्रीचंडिका ने राजा से कहा कि तुम मिट्टी की सेना बनाओ, मैं उसमें प्राण डाल दूँगी ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ जैसा जगत्माता ने कहा उसने वही किया

सैन म्रितका की रचि लीनो। क्रिपा द्रिशटि स्री चंडि निहारे। जगे सूर हथियार सँभारे ।।५।। ।। दोहरा ।। माटी ते मरदोपजे करिकै क्रुद्ध बिसेख। है गै रथ पैदल घने न्रिप उठि चले अनेक ।। ६ ।। ।। चौपई ।। गहिरे नाद नगर मै बाजे। गहि गहि गुरज गरबिया गाजे। चूक टूक भाखैं जो ह्वैहै। बहुरो फेरि धाम नहि जैहै ।। ७ ।। ।। दोहरा ।। यहै मंत्र करि सूरमा परे सैन मै आइ। जो बिक्रम को दलु हुतो सो लै चले उठाइ ।। ८ ।। ।। भुजंग छंद ।। रथी कोटि कूटे करी क्रोरि मारे। किते साज औ राज बाजी बिदारे। घने घूमि जोधा तिसी भूमि जूझे। कहा लौ गनौ मैं नहीं जात बूझे ।। ९ ।। ।। रूआमल छंद ।। अमित सैना लै चल्यो तह आपु राजा संग। जोरि कोरि सु बीर मंत्री शस्त्र धारि सुरंगि। सूल सैथिन के लगे अरु बेधि बानन साथ। जूझि जूझि गए तहाँ रन भूमि मद्धि प्रमाथ ।। १० ।। ।। भुजंग छंद ।। जगे जंग जोधा गए जूझि भारे। किते भूमि घूमै मनो मत्तवारे। किते मारही मारि ऐसे पुकारैं। किते शस्त्र छोरैं त्रिया भेख धारैं ।। ११ ।। जबै आनि जोधा चहूँघात गज्जे। महाँसंख औ दुंदभी नाद

और मिट्टी की सेना बना ली। जब चंडिका ने कृपादृष्टि उस पर डाली तो सभी शूरवीर अस्त्र सँभालकर जीवित हो उठे ।। ५ ।। ।। दोहा ।। मिट्टी से ही वीर क्रुद्ध होकर उठ पड़े और इस प्रकार अश्व, हाथी, रथ, पैदल अनेकों चलने लगे ।। ६ ।। ।। चौपाई ।। नगर में घनघोर नाद बजने लगे और गर्वीले वीर रह-रहकर गरजने लगे। वे ललकार कर कहने लगे कि वापस घर नहीं जाना है ।।७।। ।।दोहा।। यही विचार कर शूरवीर सेना पर टूट पड़े और विक्रम के सैन्यदल को उठाकर ले चले ।। ८ ।। ।। भुजंग छंद ।। अनेकों रथी, गजी, राजा, घोड़े मार डाले। अनेकों योद्धा उसी युद्धभूमि में जूझ पड़े। कहाँ तक गिनती करूँ, गणना नहीं की जा सकती ।। ९ ।। ।। रूआमल छंद ।। राजा अपरिमित सेना लेकर चल पड़ा। उसकी सेना में अनेकों सुन्दर शस्त्रधारी योद्धा थे। शूल, सैहथी, बाणों से बिंधे उस रणभूमि में वीरों के झुंड के झुंड जूझ गए ।। १० ।। ।। भुजंग छंद ।। जंग में गए योद्धा जूझ गए और अनेकों मतवाले वीर घूमने लगे। कहीं वीर मार-मार पुकारने लगे और कहीं वीर शस्त्र छोड़कर बचाव के लिए स्त्री-वेश धारण कर ले रहे थे ।। ११ ।। जब योद्धा चारों ओर से पहुँचकर गरजने लगे तो शंख और दुंदुभियों के नाद

बज्जे । परी जौ अभीतान की भीर भारी । तबै आपु स्री कालिका किल्लकारी ॥१२॥ तहाँ आपु लै रुद्र डौरू बजायो । चतर साठि मिलि जोगनी गीत गायो । कहूँ कोपकै डाकनी हाँक मारै । कहूँ भूत औ प्रेत लागे बिहारै ॥ १३ ॥ ॥ तोमर छंद ॥ तब बिक्रमै रिसि खाइ । भट्ट भाँति भाँति बुलाइ । चित मै अधिक हठ ठानि । तिह ठाँ परत भे आनि ॥ १४ ॥ अति कह सु जोधा आनि । लरि मरत भे तजि कानि । बाजंत्र कोटि बजाइ । रन राग मारू गाइ ॥ १५ ॥ ॥ चौपई ॥ आनि परे ते सकल निबेरे । उमडे और काल के प्रेरे । जे (मू०ग्रं०९३७) चलि दल रन मंडल आए । लरि मरिकै सभ स्वरग सिधाए ॥ १६ ॥ ऐसी भाँति सैन जब लरियो । एक बीर जीयत न उबरियो । तब हठि राव आपि दोऊ धाए । भाँति भाँति बादित्र बजाए ॥१७॥ तुरही नाद नफीरी बाजी । संख ढोल करनाएँ गाजी । भाँति भाँति मो घुरे नगारे । देखत सुर बिवान चड़ि सारे ॥ १८ ॥ जो बिक्रम तिह घाइ चलावै । आपि आनि स्री चंडि बचावै । तिह ब्रिण एक लगन नहि देवै । सेवक

बजने लगे। जब वीरों की भीड़ बढ़ गई तब स्वयं कालका किलकारियाँ भरने लगीं ॥ १२ ॥ वहाँ रुद्र ने भी अपना डमरू वजाया और चौंसठ योगिनियाँ भी मिलकर गीत गाने लगीं। कहीं क्रोधित होकर डाकिनियाँ हकारने लगीं और कहीं नग्न भूत-प्रेत विचरण करने लगे ॥ १३ ॥ ॥ तोमर छंद ॥ तब विक्रम ने क्रुद्ध होकर भाँति-भाँति के वीर बुलाए। वे सभी चित्त में अत्यधिक हठ ठानकर उस स्थान पर एकत्र हो गए ॥ १४ ॥ अनेकों योद्धा बिना कोई परवाह के लड़कर मरने लगे। अनेकों वाद्य बजने लगे और युद्ध में मारू राग बजनें लगा ॥ १५ ॥ ॥ चौपाई ॥ जो आ पड़े उन समस्त को नष्ट कर दिया और काल से प्रेरित मरने के लिए और वीर उमड़ पड़े। जो भी लड़ने के लिए रणमंडल में आ गए वे सब मरकर स्वर्ग चले गए ॥ १६ ॥ इस प्रकार जब सेना लड़ी तो एक भी वीर जीवित न बच सका। तब दोनों हठी राजा चल पड़े और भाँति-भाँति के वाद्य बजने लगे ॥ १७ ॥ तुरहियाँ, नाद, नफीरियाँ बज गई तथा शंख, ढोल आदि गरजने लगे। भाँति-भाँति के नगाड़े बजने लगे और देवगण विमानों पर चढ़कर देखने लगे ॥ १८ ॥ विक्रम जो भी घाव चलाता तो श्रीचंडिका आकर स्वयं बचा लेती थी। उसे

जानि राखि कै लेवै ॥ १६ ॥ ॥ दोहरा ॥ देवी भगत पछानि तिह लगन न दीने घाइ । बज्र बान बरछीन को बिक्रम रह्यो चलाइ ॥ २० ॥ ॥ चौपई ॥ सालबाहन की इक पटरानी । सो रन हेरि अधिक डरपानी । पूजि गौरजा ताहि मनाई । भूत भविख्य वहै ठहिराई ॥ २१ ॥ तब तिह दरसु गौरजा दयो । उठि राणी तिह सीस झुकयो । भाँति भाँति जगमात मनायो । जीत होइ हमरी बरु पायो ॥ २२ ॥ ॥ दोहरा ॥ सालबाहन बिक्रम भए बाज्यो लोह अपार । आठ जाम आहव बिखै जुद्ध भयो बिकरार ॥ २३ ॥ ॥ चौपई ॥ स्यालकोटि नायक रिसि भरियो । चित्र बचित्र चौपि रन करियो । तनि धन बान बज्र से मारे । राव बिक्रमा स्वरग सिधारे ॥ २४ ॥ ॥ दोहरा ॥ जीति बिक्रमाजीत को चित मै हरख बढाइ । अंतहपुर आवत भयो अधिक ह्रिदै सुखु पाइ ॥ २५ ॥ ॥ चौपई ॥ जब राजा अंतहपुर आयो । सुन्यो जु बरु रानी जू पायो । मोकौ कह्यो जीति इह दई । तासौ प्रीति अधिक ह्वै गई ॥ २६ ॥

एक भी घाव नहीं लगने देती थी और उसे सेवक समझकर रख लेती थी ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥ देवी ने अपने भक्त को पहचानकर उसे घाव नहीं लगने दिया। विक्रम ने अनेकों ही वज्र के समान बाण और बरछियाँ चलाईं ॥ २० ॥ ॥चौपाई ॥ शालिवाहन की एक रानी थी जो युद्ध देखकर अत्यधिक डर गई। उसने गौरी की पूजा की और भूत-भविष्य में उसे ही अपना रक्षक माना ॥ २१ ॥ गौरी ने उसे दर्शन दिया और रानी ने उसके सामने अपना सिर झुकाया। विभिन्न प्रकार से उसने जगत्माता की स्तुति की। और जीत का वरदान प्राप्त किया ॥ २२ ॥ ॥ दोहा ॥ शालिवाहन और विक्रम के मध्य लोहा बजने लगा और आठ प्रहर तक विकराल युद्ध हुआ ॥ २३ ॥ ॥ चौपाई ॥ स्यालकोट का नायक (शालिवाहन) क्रोध में भरकर विचित्र ढंग से युद्ध करने लगा। उसने तानकर वज्र के समान बाण मारे जिससे विक्रमराव स्वर्ग सिधार गए ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा, विक्रमाजीत को जीतकर चित्त में हर्षित हो सुखपूर्वक अंतःपुर में आ गया ॥२५॥ ॥ चौपाई ॥ जब राजा अंतःपुर में आया तो उसने रानी द्वारा प्राप्त वरदान की बात सुनी। वह कहने लगा कि मुझे विजयश्री इसी ने दी है। इस प्रकार राजा की प्रीति उससे अधिक हो गई ॥ २६ ॥

॥ दोहरा ॥ हमरे हित इह रानियै लीनी गौरि मनाइ। रीझि भगौती बरु दयो तब हम जिते बनाइ ॥२७॥ ॥चौपई॥ निस दिन रहै तवन के डेरै। और रानियन ओर न हेरै। बहुत मास रहतें जब भयो। देबी पूत एक तिह दयो ॥ २८ ॥ ता को नाम रिसालू राख्यो। ऐसो बचन चंडिका भाख्यो। महाँ जती जोधा इह होई। जा सम और न जग मै कोई ॥ २९ ॥ ज्यों ज्यों बढत रिसालू जावै। नित्ति अखेट करै म्रिग घावै। सैर देस देसन को करै। किसहू राजा ते नहि डरै ॥ ३० ॥ खेल अखेटक जब ग्रहि आवै। तब चौपर की खेलि मचावै। (मू०ग्रं०९३८) जीति जीति राजन कौ लेई। छोरि छोरि चित करि देई ॥ ३१ ॥ एक डोम ता के ग्रहि आयो। खेल रिसालू साथ रचायो। पगिया बस्त्र अस्व जब हारे। चित चित यौ बचन उचारे ॥ ३२ ॥ चौपरबाज तोहि तब जानो। मेरो कह्यो एक तुम मानो। सिरकप के संग खेल रचावो। तब तिह खेल जीति ग्रहि आवो ॥ ३३ ॥ यौ सुण बचन रिसालू धायो। चढ़ि घोरा पै तहीं सिधायो। सिरकप के देसंतर आयो। आनि राव सौ खेल रचायो ॥३४॥

॥ दोहा ॥ हमारे हित के लिए रानी ने गौरी को मना लिया। भगवती ने प्रसन्न होकर वरदान दिया, तभी मुझे जीत प्राप्त हुई ॥२७॥ ॥चौपाई॥ अब राजा रात-दिन उसी के महल में रहने लगा और अन्य रानियों की तरफ़ उसने देखना भी छोड़ दिया। बहुत मास तक जब वह वहाँ रहा तो देवी ने उसे एक पुत्र दिया ॥ २८ ॥ उसका नाम उन्होंने रसालू चंडी के कहने पर रखा। चंडी ने यह भी कहा कि यह महान यती और योद्धा होगा और इसके समान वीर सारे जगत् में कोई नहीं होगा ॥२९॥ जैसे-जैसे रसालू बढ़ने लगा तो वह आखेट करके मृगादि मारने लगा। वह देश-देशान्तरों की सैर करने लगा और किसी भी राजा से नहीं डरता था ॥ ३० ॥ जब शिकार से वापस घर आता तो चौपड़ के खेल में लीन हो जाता। वह खेल में राजाओं को भी जीतकर चित्त कर देता था ॥ ३१ ॥ एक डोम उसके घर पर आया और रसालू के साथ उसने खेलना शुरू किया। जब वह पगड़ी, वस्त्र, अश्व आदि हार गया तो उस चतुर व्यक्ति ने कहा ॥ ३२ ॥ मैं तुम्हें चौपड़बाज़ तब मानूँगा यदि तुम मेरा कहना मानो। तुम सिरकाट नामक राजा के साथ खेलो और उसे जीतकर घर आओ ॥ ३३ ॥ यह वचन सुनकर रसालू घोड़े पर चढ़कर उस ओर चल पड़ा। सिरकाट राजा के देश में

तब सिरकप छल अधिक सुधारे। शस्त्र अस्त्र बस्त्रन जुत हारे। धन हराइ सिर बाजी लागी। सोऊ जीति लई बडभागी ।। ३५ ।। जीति ताहि मारन लै धायो। यौ सुनि कै रनिवासहि पायो। याकी सुता कोकिला लीजै। जिय ते बध याकौ नहि कीजै ।। ३६ ।। तब तिह जान माफ़ कै दई। ताकी सुता कोकिला लई। दंडकार मै सदन सवार्यो। ता के बीच राख तिह धार्यो ।। ३७ ।। ता कौ लरिकापन जब गयो। जोबन आनि दमामो दयो। राजा निकट न ता के आवै। याते अति रानी दुखु पावै ।।३८।। एक दिवस राजा जब आयो। तब रानी यो बचन सुनायो। हम को लै तुम संग सिधारौ। बन मै जहाँ म्रिगन कौ मारौ ।। ३९ ।। लै राजा तिह संग सिधायो। जह म्रिग हनत हेत तह आयो। दै फेरा सर सौ म्रिग मार्यो। यह कौतक कोकिला निहार्यो ।। ४० ।। तब रानी यौ बचन उचारे। सुनो बात न्रिप साथ हमारे। द्रिग सर सों म्रिग को हौ मारौ। तुम ठाढे यह चरित निहारौ ।। ४१ ।। घूँघट छोरि कोकिला धाई। म्रिग लखि ताँहि गयो उरझाई। असित रूप जब ताहि

आ गया और उससे खेल शुरू कर दिया ।। ३४ ।। तब सिरकाट अत्यधिक छल-कपट के बावजूद शस्त्र, अस्त्र, वस्त्र सब हार गया। धन हारकर उसने सिर की बाज़ी लगा दी और वह भी रसालू ने जीत ली ।। ३५ ।। अब वह उसे मारने के लिए ले चला तो उसने रनिवास से यह पुकार सुनी कि इसकी पुत्री कोकिला ले लो और इसे जान से मत मारो ।। ३६ ।। तब उसे माफ़ कर दिया और रसालू ने उसकी पुत्री कोकिला को ले लिया। दण्डकारण्य में घर बनाया और उसमें वह उसे रखने लगा ।। ३७ ।। जब उसका बचपन बीता तो यौवन धूमधाम से आ पहुँचा। राजा उसके पास नहीं आता था इससे रानी अत्यधिक दुखी होती थी ।। ३८ ।। एक दिन जब राजा आया तो रानी ने यह कहा कि तुम मुझे वहाँ लेकर चलो वन में तुम जहाँ मृग मारते हो ।। ३९ ।। राजा उसे साथ ले वहाँ पहुँचा जहाँ वह मृग मारता था। राजा को तीर से मृग मारते हुए कोकिला ने देखा ।। ४० ।। रानी ने तब कहा कि राजन्! सुनो, मैं अपनी आँखों के बाणों से ही मृगों को मार दूंगी, तुम यहाँ खड़े होकर देखो ।। ४१ ।। अब कोकिला घूँघट उठाकर चली तो मृग उसे देखकर उलझकर रह गया। जब उसने अपार सौंदर्य देखा

निहार्‌यो। ठाढि रह्‌यो नहि शंक पधार्‌यो ॥ ४२ ॥ कर सौ म्रिग रानी जब गहियो। यह कौतक रीसालू लहियो। तब चित भीतर अधिक रिसायो। कान काट कै ताहि पठायो ॥ ४३ ॥ कान कट्‌यो म्रिग लखि जब पायो। सो होडी महलन तर आयो। सिंधु देस एस्वर गहि लयो। चढ़ि घोरा पै पाछे धयो ॥ ४४ ॥ तब आगे ता के म्रिग धायो। महल कोकिला के तर आयो। होडी ता को रूप निहार्‌यो। हरि अरि सर ताँ को तनि मार्‌यो ॥ ४५ ॥ (मू०ग्रं०९३९) होडी जब कोकिला निहारी। बिहसि बात इह भाँति उचारी। हम तुम आउ बिराजहिं दोऊ। जा को भेद न पावत कोऊ ॥४६॥ है ते उतर भवन पग धार्‌यो। आनि कोकिला साथ बिहार्‌यो। भोग कमाइ बहुरि उठि गयो। दुतय दिवस पुनि आवत भयो ॥४७॥ तब मैना यह भाँति बखानी। का कोकिला तूँ भई अयानी। यौ सुनि बैन ताहि हनि डार्‌यो। तब सुक तिह इह भाँति उचार्‌यो ॥ ४८ ॥ भलो कर्‌यो मैना तैं मारी। सिंध एस के साथ बिहारी। मोकह काढि हाथ पै लीजै। बीच पिंजरा रहन न दीजै ॥ ४९ ॥

तो वह निस्संकोच खड़ा रहा और दौड़ा नहीं ॥ ४२ ॥ रानी को मृग हाथ से पकड़े हुए रसालू ने देखा तो मन में क्रोधित होकर राजा ने उस मृग के कान काटकर उसे दौड़ा दिया ॥ ४३ ॥ मृग ने जब अपने कान कटे हुए देखे तो वह (घूमता-घूमता) गक्खर राजा हूडी के महल के नीचे आ गया। सिंधु देश के ऐश्वर्यशाली राजा (हूडी) ने उसे देखा और घोड़ा लेकर वह उसके पीछे-पीछे चल पड़ा ॥४४॥ मृग आगे-आगे चलता हुआ कोकिला के महल के नीचे आ गया। राजा हूडी ने (कोकिला का) रूप-सौंदर्य देखा और वह कामबाण से बिंध गया ॥ ४५ ॥ हूडी ने जब कोकिला को देखा तो वह हँसकर बोली कि आओ हम-तुम दोनों बैठें। इसका रहस्य कोई नहीं जान पायगा ॥४६॥ राजा अश्व से उतरकर महल में गया और कोकिला के साथ विहार किया। वह संभोग करके चला गया और दूसरे दिन पुनः आया ॥ ४७ ॥ तब मैना ने कहा कि हे कोकिला! तू क्यों नासमझ बन गई है। यह सुनकर कोकिला ने उसे मार डाला। तब शुक ने यह कहा : ॥४८॥ तुमने अच्छा किया जो मैना को मार दिया और सिंधु नरेश के साथ रमण किया है। अब मुझे निकालकर हाथ पर रख लो और पिंजरे में मत रहने दो ॥ ४९ ॥

।। सोरठा ।। जिन रीसालू धाइ इह ठाँ पहुँचै आइकै । मुहि तुहि सिंधु बहाइ जमपुर देइ पठाइ लखि ।। ५० ।। ।। चौपई ।। तब तिह काढि हाथ पै लयो । द्रिशटि चुकाइ सुआ उडि गयो । जाइ रिसालू साथ जतायो । खेलत कहाँ चोर ग्रहि आयो ।। ५१ ।। यौ सुनि बैनि रिसालू धायो । तुरतु धौलहर के तट आयो । भेद कोकिला जब लखि पायो । सफ के बिखै लपेटि दुरायो ।। ५२ ।। कह्यो बक्त्र फीको क्यों भयो । जनु करि राहु लूटि ससि लयो । अँबियन की अँबिया किन हरी । ढीली सेज कहो किह करी ।। ५३ ।। ।। दोहरा ।। जब ते गए अखेट तुम तब ते मैं दुख पाइ । घायल ज्यों घूँमत रही बिना तिहारे राइ ।। ५४ ।। ।। चौपई ।। बात बही अँबियन लै गई । मो तन मैनु उपावति भई । तब मै लए अधिक पसवारे । जैसे म्रिग सायक के मारे ।।५५।। ता ते लरी मोतियन छूटी । उडग सहित निसि जनु रवि तूटी । हौं अति दुखित मैन सौ भई । याते सेज ढील ह्वै गई ।।५६।। ।।दोहरा।। तव दरशन लखि चित्त को मिटि ग्यो

।। सोरठा ।। कहीं ऐसा न हो कि रसालू यहाँ पहुँच जाय और मुझे तथा तुम्हें यहाँ देखकर सिंधु में बहा दे ।। ५० ।। ।। चौपाई ।। तब उसे निकालकर हाथ पर बैठा लिया । तोता नज़र बचाकर उड़ गया और जाकर उसने रसालू से कहा कि तुम्हारे घर में चोर आ घुसा है ।। ५१ ।। यह सुनकर रसालू दौड़ पड़ा और तुरन्त महल के पास आ पहुँचा । जब कोकिला को पता चला तो उसने राजा को टाट में छिपा दिया ।। ५२ ।। राजा ने आते ही कहा कि तुम्हारा मुख ऐसा फीका क्यों पड़ गया है ,मानो राहु ने चन्द्र को ग्रस लिया हो । आमों की अमराइयाँ किसने नष्ट कर डाली और यह शय्या किसने ढीली कर दी है ।। ५३ ।। ।। दोहा ।। (रानी ने कहा) जबसे तुम शिकार को गए मैं अत्यन्त दुखी और घायल की तरह होकर, हे राजन् ! घूमती रही हूँ ।। ५४ ।। ।। चौपाई ।। हवा चली और अमराइयाँ गिर गई तथा मेरे तन में काम पैदा कर गई है । तब अधिक करवटें बदलने से मैं ऐसी लग रही थी मानो मृग को बाण से मार डाला हो ।। ५५ ।। इसीलिए मोतियों की लड़ी ऐसे टूट गई मानो रात के तारागण दिन चढ़ते ही छिटक कर छुप जाते हैं । मैं काम के कारण अत्यन्त दुखी हो गई हूँ; इसी से शय्या ढीली हो गई है ।। ५६ ।। ।। दोहा ।। तुम्हारे दर्शन करके मेरा शोक उसी

शोक अपार। ज्यो चकवी पति आपने दिवकर नैन निहार ॥५७॥ ॥ चौपई ॥ यौ राजा रानी बिरमायो। घरी क बातन सों उरझायो। पुनि तासौ इह भाँति उचारो। सुनो राव जू बचन हमारो ॥ ५८ ॥ ॥ चौपई ॥ हम तुम कर मेवा दोऊ लेहीं। डारि डारि या सफ मै देहीं। हम दोऊ दाव इहै बदि डारै। सो हारै जिह परै किनारै ॥ ५९ ॥ ॥ दोहरा ॥ तब दुहूँअन मेवा लयो ऐसे बैन बखानि। चतुरि न्रिपति (मू०ग्रं०६४०) अति चित हुतो इही बीच ग्यो जानि ॥६०॥ ॥ चौपई ॥ तब राजै इह बचन उचारी। सुनु रानी कोकिला पियारी। एक हराइ म्रिगहि मैं आयो। कंपत बूट मै दुर्यो डरायो ॥ ६१ ॥ होडी बात मूँड इह आनी। म्रिग पै करि कोकिला पछानी। कहो तो तुरत ताहि हनि ल्याऊँ। ताँ को तुमको मासु खवाऊँ ॥ ६२ ॥ तब कोकिला खुशी ह्वै गई। चाहत थी चित मै सो भई। यह इन मूढ़ भेद नहि पायो। तजि याकौ म्रिग को तब धायो ॥ ६३ ॥ सीढ़िन बीच न्रिपति लग रह्यो। तीर कमान हाथ मै गह्यो। जब होडी तिह ठाँ चलि आयो। बिहसि रिसालू बचन

प्रकार समाप्त हो गया है जैसे चकवी का दिन प्रारम्भ होने पर पति से मिलनें पर दुःख नष्ट हो जाता है ॥ ५७ ॥ ॥ चौपाई ॥ इस प्रकार रानी ने राजा के साथ प्रपंच किया और कुछ समय तक उसे बातों में उलझाए रखा। पुनः राजा से कहा कि हे राजन्! मेरी बात सुनो ॥ ५८ ॥ ॥ चौपाई ॥ हम-तुम दोनों मेवा खाएँगे और इस टाट में फेंक-फेंककर निशाना लगाएँगे। हम-दोनों यह दाँव लगाएँगे और जिसका मेवा किनारे पर पड़ेगा वह हारा माना जायगा ॥ ५९ ॥ ॥ दोहा ॥ तब दोनों ने यह कहकर मेवा लिया। परन्तु राजा चतुर था और इसी बीच इस भेद को जान गया ॥६०॥ ॥चौपाई॥ तब राजा नें यह कहा कि प्यारी रानी! सुनो, मेरा एक खोया मृग इधर आया है और मुझसे डरकर-घास में छिपा काँप रहा है ॥६१॥ राजा ने जब यह बात कही तो कोकिला ने समझा, राजा सचमुच मृग की बात कर रहा है। राजा ने कहा कि कहो तो मृग मार लाऊँ और उसका मांस तुम्हें खिलाऊँ ॥ ६२ ॥ तब कोकिला प्रसन्न हो गई क्योंकि जो वह चाहती थी वही हुआ। परन्तु इस मूर्ख हूडी ने यह भेद नहीं समझा। राजा उसे छोड़कर मृग के लिए चल पड़ा ॥ ६३ ॥ और (राजा) धनुष-बाण हाथ में लेकर सीढ़ियों में लगकर खड़ा हो गया। जब हूडीराज (निकलता हुआ) वहाँ पहुँचा तो राजा रसालू

सुनायो ।। ६४ ।। अब तुम कह्यो पौरखहि धरो । मो पर प्रथम घाइ कह करो । कंपत त्रसत न शस्त्र सँभार्यो । तनि धनु बान रिसालू मार्यो ।। ६५ ।। लागत बान धरनि गिर परियो । एकै ब्रिण लागत ही मरियो । ता को तुरतु मासु कटि लीनो । भूँजि कोकला कौ लै दीनो ।। ६६ ।। जब तिह मासु कोकिला खायो । लग्यो सलौनों अति चित भायो । याके तुल्लि मासु कोऊ नाहीं । राजा मैं रीझी मन माहीं ।। ६७ ।। तब रीसालू बचन उचारे । वहै मिरग कर पर्यो हमारे । जियत तूँ जासौ भोग कमायो । मरे परांत मासु तिह खायो ।। ६८ ।। जब यह तनिक भनिक सुनि लई । लाल हुती पियरी ह्वै गई । ध्रिग जियबो इह जगत हमारो । जिन घायो निजु मीत पियारो ।। ६९ ।। ।। दोहरा ।। सुनत कटारी त्रिपति की लै अपने उरि मार । उरि हनि धौलहर ते गिरी होडहि नैन निहार ।। ७० ।। उदर कटारी मारिकै परी महल तै टूटि । एक घरी ससकत रही बहुर प्रान गे छूटि ।। ७१ ।। ।। चौपई ।। ग्रहि ते टूटि धरनि पर परी ।

नें हंसकर कहा : ।। ६४ ।। मैं तुम्हें कहता हूँ कि तुम पौरुष धारण करो और पहले मुझ पर घाव करो । वह भय से काँपने लगा और उसने शस्त्र नहीं संभाला । इधर रसालू ने धनुष तानकर बाण मारा ।। ६५ ।। बाण लगते ही वह एक ही घाव में धरती पर मरकर गिर पड़ा । (रसालू ने) तुरन्त उसका मांस काट लिया और भूनकर कोकिला को दिया ।। ६६ ।। खाने पर कोकिला को मांस अत्यन्त स्वादिष्ट लगा । वह कहने लगी कि हे राजा ! इसके समान मांस अन्य कोई नहीं है; मैं परम प्रसन्न हूँ ।। ६७ ।। तब रसालू ने कहा कि मेरे हाथ वही मृग लगा है जिससे जीवित रहने पर तुमने संभोग किया है । अब उसके मरने पर तुमने उसका मांस खाया है ।।६८।। जब (रानी कोकिला ने) यह बात सुनी तो उसका रंग लाल से पीला हो गया । वह कहने लगी कि इस जगत् में जीना धिक्कार है, जिसने मेरा प्रियतम मार डाला ।। ६९ ।। ।। दोहा ।। सुनते ही उसने राजा की कटारी अपने सीनें में मार ली और हूडी की सूरत आँखों में बसाती हुई महल से नीचे गिर पड़ी ।। ७० ।। पेट में कटारी मारकर महल से गिर पड़ी । एक घड़ी तक वह तड़पती रही और बाद में उसके प्राण छूट गए ।। ७१ ।। ।। चौपाई ।। वह मानो आकाश से टूटकर धरती पर गिर पड़ी और लज्जा में प्राण त्याग कर उसने

लाज मरत गमपुर मगु धरी। तब चलि तहाँ रिसालू आयो। मास कूकरन दुहूँ खवायो ॥ ७२ ॥ ॥ दोहरा ॥ जो बनिता पति आपनो त्याग और पै जाइ। सो ऐसो पुनि तुरतु ही क्यों नहि लहत सजाइ ॥ ७३ ॥ १ ॥ (मू०ग्रं०६४१)

॥ इति स्री चरित्र पख्याने पुरखु चरित्रे मंत्री भूप संबादे सतानवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ९७ ॥ १७९५ ॥ अफजूं ॥

अथ अठानवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ चंद्रभगा सरिता निकट राँझन नामा जाट। जो अबला निरखैं तिसै जात सदन परि खाट ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ मोहत तिह त्रिय नैन निहारे। जनु सावक सायक के मारे। चित मै अधिक रीझ के रहैं। राँझन राँझन मुख ते कहैं ॥ २ ॥ करम काल तह ऐसो भयो। तौनै देस काल पर गयो। जियत न को नर बचयो नगर मै। सो उबर्यो जाके धनु घर मै ॥ ३ ॥ चित्रदेवि इक रानि नगर मै। राँझा एक पूत तिह घर मै। ता के और न बचियो

नर्क का रास्ता लिया। तब तक रसालू वहाँ आ पहुँचा और दोनों का मांस उसने कुत्तों को खिलाया ॥७२॥ ॥ दोहा ॥ जो स्त्री अपने पति को छोड़कर दूसरे पुरुष के पास जाती है, उन्हें भला तुरन्त ही ऐसी सज़ा क्यों नहीं मिल जाती है ॥ ७३ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में सत्तानवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ९७ ॥ १७९५ ॥ अफजू ॥

अट्ठानबेवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ चन्द्रभगा (चिनाब) नदी के किनारे राँझा नामक जाट था जिसे जो भी स्त्री देखती (पागल होकर) खाट पकड़ लेती ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ स्त्रियाँ उसे आँखों से देखकर वैसे ही मोहित हो जाती थीं जैसे कोई (हिरण का) बच्चा बाण से मारा जाने पर गिर पड़ता है। वे चित्त में अत्यन्त रीझकर राँझा-राँझा बोलती जाती थीं ॥ २ ॥ कालचक्र कुछ ऐसा चला कि उस देश में अकाल पड़ गया। कोई भी व्यक्ति नगर में जीवित नहीं बचा। केवल वही बचा जिसके घर में धन-धान्य था ॥ ३ ॥ नगर में चित्रदेवी नामक एक रानी थी जिसके घर में राँझा नामक पुत्र था।

कोई। माइ पूत वै बाचे दोई ॥ ४ ॥ रनियहि भूख अधिक जब जागी। ता कौ बेचि मेखला साजी। निति पीसन पर द्वारे जावै। जूठ चून चौका चुनि खावै ॥ ५ ॥ ऐसे ही भूखन मरि गई। न पुनि बिधि तहाँ भ्रिसटि अति दई। सूके भए हरे जनु सारे। बहुरि जीत के बजे नगारे ॥ ६ ॥ तहाँ एक राँझा ही उबरियो। और लोग सभ तह को मरियो। राँझो जाट हेत तिन पार्यो। पूतभाव ते ताहि जियार्यो ॥७॥ पूत जाट को सभ को जानै। तिन ते कोऊ न रह्यो पछानै। ऐसे काल बीत कै गयो। ता मै मदन दमामो दयो ॥ ८ ॥ महिखी चारि नित्ति ग्रहि आवै। राँझा अपनो नामु सदावै। पूत जाट को तिह सभ जानै। राजपूतु कै को पहिचानै ॥ ९ ॥ इती बात राँझा की कही। अब चलि बात हीर पै रही। तुम कौ ता की कथा सुनाऊँ। ताते तुमरो ह्रिदै सिराऊँ ॥१०॥ ॥ अड़िल्ल ॥ इंद्रराइ के नगर अपसरा इक रहै। मैनकला तिह नाम सकल जग यौ कहै। ता कौ रूप नरेश जो कोऊ निहारही। हो गिरै धरनि पर झूमि मैन सर मारही ॥ ११ ॥ ॥ चौपई ॥ तौनै सभा कपिल मुनि आयो।

उनके माँ-पुत्रों के सिवा अन्य कोई नहीं बचा ॥ ४ ॥ जब रानी अत्यधिक क्षुधातुर हो गई तो उसने उसे बेचकर संन्यास धारण कर लिया। अब वह नित्य लोगों के दरवाज़े पर पीसने जाती थी। वहाँ पर चौके में बचा जूठा (अन्न-) चूर्ण खाती थी ॥ ५ ॥ वह ऐसे ही भूखों मर गई। पुनः विधाता ने भरपूर दृष्टि की। सभी सूखे हरे और पुनः जय-जयकार होने लगी ॥ ६ ॥ राँझा अकेला ही बचा था और उसके बाकी सब मर गए थे। जाट ने राँझा को प्रेम से, पुत्र की तरह पाला ॥ ७ ॥ अब सब यही जानते थे कि यह जाट का पुत्र है। इसी प्रकार काफ़ी समय बीत गया तो इधर कामदेव ने आ नगाड़ा बजाया ॥ ८ ॥ वह रोज़ भैंसें चराकर घर आता था और राँझा नाम से पुकारा जाता था। सभी उसे जाट का पुत्र समझते थे और कोई भी नहीं जानता था कि यह राजपुत्र है ॥ ९ ॥ इतनी बात तो राँझा की हुई, अब बात हीर पर टिक गई है। तुम्हें अब उसकी कथा कहकर तुम्हारा हृदय प्रसन्न करता हूँ ॥ १० ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ इन्द्रराज के नगर में समस्त जगत् द्वारा जानी जानेवाली मैनकला नामक अप्सरा रहती थी। जो भी राजा उसके रूप-सौंदर्य को देख लेता था, वह कामबाण से बेहोश होकर धरती पर गिर पड़ता था ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ उस स्थान पर कपिल मुनि आया और

औसर जहा मैनका पायो । तिह लखि मुनि बीरज गिरि गयो । चपि चित मै स्रापस तिह दयो ।। १२ ।। तुम गिरि मिरतलोक मै परो । जूनि सयाल जाट की धरो । हीर आपनो नाम सदावो । जूठ कूठ तुरकन की खावो ।।१३।। ।। दोहरा ।। तब अबला कंपति भई ताके परिकै पाइ । क्योहू होइ उधार मम सो दिज कहो उपाइ ।। १४ ।। ।। चौपई ।। इंद्र सु म्रितमंडल जब जैहै । राँझा अपनो नामु कहैहै । तैसो अधिक प्रीति उपजावै । अमरावती (मू०ग्रं०९४२) बहुरि तुहि ल्यावै ।।१५।। ।। दोहरा ।। जूनि जाट की तिन धरी म्रितमंडल मै आइ । चूचक के उपजी भवन हीर नाम धरवाइ ।। १६ ।। ।। चौपई ।। इसी भाँति सों काल बिहान्यो । बीत्यो बरख एक दिन जान्यो । बालापनो छूटि जब गयो । जोबन आनि दमामो दयो ।। १७ ।। राँझा चारि महिखियन आवै । ता को हेरि हीर बलि जावै । तासौ अधिक नेहु उपजायो । भाँति भाँति सौ मोह बढायो ।। १८ ।। ।। दोहरा ।। खात पीत बैठत उठत सोवत जागत नित्ति । कबहूँ न बिसरै चित्त ते सुंदर दरस नमित्त ।। १९ ।। ।। हीर बाच ।। ।। सवैया ।। बाहर जाउ

उसने मेनका को देखा। उसे देखकर मुनि का वीर्यपात हो गया और मुनि ने मन में क्रुद्ध होकर उसे श्राप दिया ।। १२ ।। अब तुम मृत्युलोक में जाओ और स्याल जाट के घर जन्म धारण करो। अपना नाम हीर रखो और तुर्कों के यहाँ का हलाल खाना खाओ ।। १३ ।। ।। दोहा ।। तब वह अबला स्त्री काँपकर मुनि के चरणों पर आ गिरी और कहने लगी, हे विप्र ! मेरे उद्धार का उपाय बताओ ।। १४ ।। ।। चौपाई ।। इन्द्र जब मृत्युमंडल में जायगा तो अपना नाम राँझा कहलाएगा। तुमसे वह प्रेम करेगा और तुम्हें पुनः अमरावती में ले आएगा ।। १५ ।। ।। दोहा ।। अब उसने (मेनका ने) जाट का जन्म लिया और हीर नाम धरवा कर वह चूचक के घर में पैदा हो गई ।। १६ ।। ।। चौपाई ।। इस प्रकार समय बीता और वर्ष बीतते गए। जब बचपन पीछे छूट गया और यौवन ने आ नगाड़े बजाए ।। १७ ।। राँझा भैंसें चराकर वापस आता तो हीर उस पर न्योछावर होती थी। उसनें उससे अत्यधिक प्रेम कर लिया और अपना स्नेह बढ़ाया ।।१८।। ।।दोहा।। अब खाते-पीते, बैठते-उठते, सोते-जागते कभी वह प्यारा उसे भूलता नहीं था ।।१९।। ।। हीर उवाच ।। ।। सवैया ।। वह बाहर जाता तो बाहर जाती, यदि वह

तौ बाहर ही ग्रहि आवत आवत संग लगेही। जौ हठ बैठि रहो घर मै पिय पैठि रहै हिय मै पहि लेही। नींद हमै नकवानी करी छिनही न आराम सखी सुपनेही। जागत सोवत रात द्योस कहूँ मुहि राँझन चैन न देही ॥ २० ॥ ॥ चौपई ॥ राँझन राँझन सदा उचारै। सोवत जागत ताँहि सँभारै। बैठत उठत चलतहूँ संगा। ताही कौ जानै कै अंगा ॥ २१ ॥ काहूँ को जो हीर निहारै। राँझन ही रिद बीच बिचारै। ऐसी प्रीति पिआ की लागी। नींद भूख ता की सभ भागी ॥ २२ ॥ राँझन ही के रूप वह भई। ज्यो मिलि बूँदि बारि मों गई। जैसे म्रिग म्रिगया को लहे। होत बधाइ बिना ही गहे ॥ २३ ॥ ॥ दोहरा ॥ जैसे लकरी आगि मै परत कहूँ ते आइ। पलक द्वैक तामै रहै बहुरि आगि ह्वै जाइ ॥ २४ ॥ हरिजा असि ऐसे सुन्यो करत एक ते दोइ। बिरह बढावनि जो बधे एक दोइ ते होइ ॥ २५ ॥ राँझन हीर परेम में रहै एक ही होइ। कहिबे कौ तन एक ही लहिबे को तन दोइ ॥ २६ ॥ ॥ चौपई ॥ ऐसी प्रीति प्रिया

घर आता तो उसके साथ लीन रहती। यदि प्रियतम घर बैठता तो वह भी हठपूर्वक उसे हृदय में धारण कर घर बैठी रहती। वह कहती कि हमारी नींद हे सखी ! इसने छीन ली है और स्वप्न में भी आराम नहीं कर पा रही हूँ। रात-दिन जागते-सोते ये राँझा मुझे चैन नहीं लेने दे रहा है ॥ २० ॥ ॥ चौपाई ॥ वह सदैव राँझा-राँझा पुकारती थी और सोते-जागते उसका स्मरण किया करती थी। उठते-बैठते, चलते-घूमते वह उसे अपना ही अंग समझती थी ॥ २१ ॥ हीर किसी को भी देखती तो उसे मन में राँझा ही समझती। प्रियतम की उसे ऐसी लगन लगी कि नींद-भूख सब भाग गई ॥ २२ ॥ वह राँझा-स्वरूप ही हो गई मानो पानी की बूँद पानी से मिल गई हो। वह ऐसी हो गई जैसे मृग मृगी को देखकर बेबस हो जाता है और बाँध लिया जाता है ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ वह ऐसी हो गई थी जैसे लकड़ी कहीं से आकर आग में गिरती है तो कुछ समय के लिए लकड़ी के रूप में रहती है परन्तु फिर वह भी अग्निरूप ही हो जाती है ॥ २४ ॥ हरिजा ने जब यह सुना तो उन एक हो चुके प्रेमियों को दो कर दिया। बढ़ते हुए विरह में उन्हें मारकर एक से दो कर दिया गया ॥ २५ ॥ राँझा हीर के प्रेम में लीन होकर हीर के साथ ही एक हो गया था। कहने को तन एक था परन्तु देखने को शरीर दो थे ॥ २६ ॥ ॥ चौपाई ॥ प्रिया का प्रेम इतना

की भई । सिगरी बिसरि ताँहि सुधि गई । राँझा जू के रूपु रिझानी । लोक लाज तजि भई दिवानी ।। २७ ।। तब चूचक इह भाँति बिचारी । यह कन्या नहि जियत हमारी । अब ही यह खेरा को दीजै । या मै तनिक ढील नहि कीजै ।। २८ ।। खेरहि बोलि तुरतु तिह दयो । राँझा अतिथ होइ संग गयो । मागत भीख घात जब पायो । लै ताको सुर लोक सिधायो ।। २९ ।। राँझा हीर मिलत जब भए । चित के सकल शोक मिट गए । हियाँ की (मू०ग्रं०९४३) अवधि बीति जब गई । बाटि दुहूँ सुरपुर की लई ।। ३० ।। ।। दोहरा ।। राँझा भयो सुरेश तह भई मैनका हीर । या जग मै गावत सदा सभ कबि कुल जस धीर ।। ३१ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे अठानवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ९८ ।। १८२६ ।। अफजूं ।।

अथ निंनानवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। पोठोहार नार इक रहै । रुद्रकला ता को जग कहै । तिह ग्रहि रोज खुदाई आवैं । धन डरपाइ ताँहि

बढ़ा कि उसे समस्त सुध-बुध भूल गई । राँझे के रूप में दीवानी, उसे सब सुधि-बुधि भूल गई थी और न ही कोई लोक-लाज थी ।। २७ ।। तब चूचक ने सोचा कि यह मेरी कन्या जीवित नहीं बचेगी । इसे तुरन्त खेड़ा (लोगों) को दे देना चाहिए और इस कार्य में देरी नहीं करनी चाहिए ।। २८ ।। उसने तुरन्त खेड़ा लोगों को बुलाया । राँझा भी फ़क़ीर बनकर साथ चला गया । भीख माँगते हुए जब उसे अवसर हाथ लगा तो वह उसे लेकर सुरलोक चला गया ।। २९ ।। हीर और राँझा जब मिले तो उसके चित्त के समस्त शोक मिट गए । जब यहाँ का समय बीत गया तो दोनों ने स्वर्ग की राह पकड़ ली ।। ३० ।। ।। दोहा ।। राँझा इन्द्र बन गया और हीर मेनका बन गई । इस संसार में सभी कविगण सदैव इनका यशोगान किया करते हैं ।।३१।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में अट्ठानवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ९८ ।। १८२६ ।। अफजू ।।

निन्यानबेवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। पोठोहार में एक स्त्री रहती थी जिसको संसार चन्द्रकला कहता था, उसके घर में रोज़ मुल्लागण आते और डराकर उससे धन ले

लै जावैं ।। १ ।। इक दिन इन कछु धनु नहि दयो । कोप खुदाइन के मन भयो । सभ ही हाथ कुरान उठाए । मिलि गिलि भवन तवन के आए ।। २ ।। हानत कह्यो नबी की करी । यह सुनि बचन नारि अति डरी । तिन को सदन बीच बैठायो । खान मुहब्बत साथ जतायो ।। ३ ।। ता के तुरत पयादे आए । इक ग्रहि मै बैठाइ छिपाए । खाना भलो तिनागे राख्यो । आपु खुदाइन सो यों भाख्यो ।। ४ ।। हानत मै न नबी की करी । मो तो कहो चूक का परी । ता की जो निंदा मैं करों । अपने मारि कटारी मरों ।। ५ ।। जो कछु लैनो होइ सु लीजै । हानत को मुहि दोसु न दीजै । बिहसि खुदाइन बचन उचार्यो । धन लालच हम चरित सु धार्यो ।। ६ ।। ।। दोहरा ।। जो हौ कछू मुहंमदहि मुख तें काढों गारि । तो मैं आपन आप ही मरों कटारी मारि ।।७।। ।। चौपई ।। तैं नहिं कछू नबी को कह्यो । धन के हेत तोहि हम गह्यो । अधिक दरबु अब ही मुहि दीजै । ना तर मीच मूँडि पै लीजै ।। ८ ।। ।। दोहरा ।। हम बहु लोग पिशौर के इनी तुहमतन साथ । धनी करै निधणी घने ह्वै ह्वै गए

जाते ।। १ ।। एक दिन इसने धन नहीं दिया तो मुल्ला क्रोधित हो उठे। सब हाथ में क़ुर्आन शरीफ़ उठाकर मिलकर इसके घर आए ।। २ ।। तुमने मुहम्मद साहब की निन्दा की है। यह सुनकर वह स्त्री मन में भयभीत हो उठी। उसने उन्हें घर में प्रेम जताते हुए बैठाया और (नगर के राजा) मुहब्बत खान् को भी बात बतला दी ।। ३ ।। उसके भी कुछ सिपाही आ गए जिन्हें इसने छिपाकर बैठा दिया। अब इसने उन मुल्लाओं के सामने सुन्दर भोजन रखा और कहा ।।४।। मैंने नबी की निन्दा नहीं की है। बताओ मुझसे क्या ग़लती हुई है। यदि मैंने उसकी निन्दा की हो तो स्वयं मैं कटारी मारकर मर जाऊँगी ।। ५ ।। आप लोगों को जो (रिश्वत) चाहिए वह ले लीजिए और मुझ पर निन्दा का आरोप मत लगाओ। मुल्लाओं ने हँसकर कहा कि हमनें भी यह प्रपंच धन के कारण ही किया है ।। ६ ।। ।। दोहा ।। यदि हम भी मुहम्मद की निन्दा करें तो स्वयं कटारी मारकर मर जायँगे ।। ७ ।। ।। चौपाई ।। तुमने कुछ नहीं किया है, हम लोगों ने तो मात्र धन के लिए ही यह प्रपंच किया है और तुम्हें पकड़ा है। हम लोगों को काफ़ी धन तुरन्त दे दो नहीं तो अभी तुमको मार डालेंगे ।। ८।। ।। दोहा ।। हम लोगों ने ऐसे ही आरोपों से पेशावर के अनेकों धनी लोगों को निर्धन एवं अनाथ कर

अनाथ ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ यों सुनि बचन पयादनु पायो । वेई सभ झूठे ठहिरायो । ग्रहि पैं निकसि तिनै गहि लीनो । सभहिन की मुशकै कसि दीनो ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ लात मुशट कुररे घने बरसीं पन्ही अपार । दै मुशकन कौ लै चले हेरतु लोक हजार ॥ ११ ॥ ॥ चौपई ॥ तिनको बाँधि लै गए तहाँ । खान मुहब्बति बैठो जहाँ । पनहिन नारि नवाब दिलाई । तोबह तोबह करै खुदाई ॥ १२ ॥ पनहिन के मारत मरि गए । तब वै डारि नदी मै दए । चुप ह्वै रहे तुरक सभ सोऊ । तब ते तुहमति देत न कोऊ ॥ १३ ॥ ॥ दोहरा ॥ तब तिन बिप्प (मू०ग्रं०९४४) बुलाइकै दीनो दान अपार । छल कै कै जूतिन भए बीस खुदाई मारि ॥ १४ ॥ ॥ चौपई ॥ चुप तब ते ह्वै रहे खुदाई । काहू साथ न रारि बढाई । सोई करै जु हिंदू कहैं । तुहमति दै काहूँ ना गहैं ॥ १५ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे निंनानवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ९९ ॥ १८४१ ॥ अफजूं ॥

दिया है ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ सिपाहियों ने यह सब सुना और पाया कि ये लोग झूठे एवं पाखंडी हैं । घर से निकलकर उनको पकड़ लिया और हाथ बाँध दिए ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ उन पर अनेक लात-घूंसे और जूते बरसे । सिपाही उन्हें बाँधकर ले चले और हज़ारों लोग उन्हें देखने लगे ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ उनको बाँधकर वहाँ ले गए जहाँ मुहब्बत ख़ाँ बैठा था । खान ने उस स्त्री से भी उन्हें जूते लगवाए । सारी ख़ुदाई तोबा-तोबा करने लगी ॥ १२ ॥ जूतों के मारे ही वे मर गए । तब उन्हें नदी में डाल दिया गया । इस पर सभी तुर्क चुप रह गए और तब से किसी ने आरोप नहीं लगाया ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ तब इसने विप्रों को बुलाकर अपार धन दिया । इस प्रकार इस स्त्री नें छलपूर्वक बीस मुल्लाओं को जूतों से मरवा दिया ॥१४॥ ॥ चौपाई ॥ तब से मुल्लागण चुप रह गए और उन्होंनें किसी के साथ झगड़ा नहीं किया । अब वे वही करने लगे जो हिन्दू कहते थे । अब वे किसी पर आरोप नहीं लगाते थे ॥ १५ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद के निन्यानवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ९९ ॥ १८४१ ॥ अफजू ॥

अथ सौवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ रोपरराव रुपेश्वर भारो। रघुकुल बीच अधिक उजियारो। चित्रकुअरि रानी इक ता के। रूपवती कोऊ तुल्लि न वाके ॥ १ ॥ दानव एक लंक ते आयो। ता को रूपि हेरि उरझायो। मन मै अधिक रीझि करि गयो। ता को लगा न तजि तिह दयो ॥ २ ॥ तब तिन मंत्री अधिक बुलाए। अनिक भाँति उपचार कराए। तहाँ एक मुल्लाँ चलि आयो। आनि आपना ओजु जनायो ॥ ३ ॥ तब तिन घात दानवहि पायो। एक हाथ सौ महल उचायो। दुतिय हाथ ता कौ गहि लीनो! तवन छात भीतर धरि दीनो ॥ ४ ॥ ॥दोहरा॥ धर्‍यो थंभ ऊपर तिसै इक कर छात उठाइ। मारि मुलाना को दयो जम के धाम पठाइ ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ तह इक और मुलानो आयो। सोऊ पकरि टाँग पटकायो। तीजौ और आइ तह गयो। सोऊ डारि नदी मै दयो ॥६॥ तब इक त्रिया तहाँ चलि आई। भाँति भाँति तिह करी बडाई। लिहज पिहज बहु ताँहि खवायो। मदरो प्याइ

सौवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ रोपड़ नामक शहर में रूपेश्वर नामक महान् राजा था जो कि रघुकुल में उजाला था। उसकी रानी चित्रकुँवरि थी जो अत्यन्त रूपवती थी ॥ १ ॥ लंका से एक दानव आया और उसके रूपजाल में उलझ गया। वह मन में अत्यन्त रीझ गया और उसे लगा कि उसके उस स्त्री के बिना प्राण चले जायँगे और वह उसे नहीं त्याग सकता ॥ २ ॥ तब राजा ने अनेकों मंत्री बुलाए और अनेकों प्रकार से उपचार करवाए। वहाँ एक मुल्ला भी आ गया और उसने भी ज़ोर लगाया ॥ ३ ॥ तब दानव को एक अवसर मिला और उसने एक हाथ से महल उठा लिया और दूसरे से उसे (मुल्ला को) पकड़कर छत के भीतर धर दिया ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ उसनें एक हाथ से छत को ऊँचा उठाकर उसे स्तम्भ पर रखा और इस प्रकार मौलाना को मारकर यमलोक पहुँचा दिया ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब वहाँ एक और मुल्ला आया। उसने उसे भी टाँग पकड़कर पटक दिया। तीसरा एक और मुल्ला आया और उसे भी उसने नदी में डाल दिया ॥६॥ तब एक स्त्री वहाँ आयी और उसने बार-बार उसकी प्रशंसा की। उसने अनेक प्रकार

ताँहि रिझवायो ॥ ७ ॥ ता के निति बुहारी देवै । ता को चित चुराइकै लेवै । इक दिन होइ बिमन सी रही । तब ऐसे दानो तिन कही ॥ ८ ॥ खात पीत हमरो तूँ नाहीं । सेवा करत रहत ग्रहि माहीं । अधिक रीझि निसचरहि उचारो । देउँ वहै जो ह्रिदै बिचारो ॥ ९ ॥ जब दो तीनि बार तिन कहियो । ता पै अधिक रीझि कै रहियो । कह्यो असुर लाग्यो इक त्रिया को । सकै दूरि कर तूँ नहि ता को ॥ १० ॥ तब तिन जंत्र तुरतु लिखि लीनो । लै ता को कर भीतर दीनो । जाको तूँ इक बार दिखैहै । जरि बरि ढेर भसमि सो ह्वैहै ॥ ११ ॥ ताकै कर ते जंत्र लिखायो । लै कर मै तहि को दिखरायो । जब सु जंत्र दानो लखि लयो । सो जरि ढेर भसम ह्वै गयो ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ देवराज जिह दैत कौ जीत सकत (मू०ग्रं०९४५) नहि जाइ । सो अबला इह छल भएँ जमपुर दयो पठाइ ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे सौवौं चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ १०० ॥ १८५४ ॥ अफजूं ॥

के भोजन और मदिरा पिलाकर उस दानव को प्रसन्न किया ॥ ७ ॥ वहाँ नित्य झाड़ देती थी और उसका मन प्रसन्न करती थी। एक दिन वह उदास-सी बैठी थी तो दानव ने उससे कहा ॥ ८ ॥ तुम हमारा कुछ भी खाती-पीती नहीं हो और घर में नित्य सेवा करती रहती हो। दानव ने प्रसन्न होकर कहा, जो माँगोगी और सोचोगी वही दे दूँगा ॥ ९ ॥ जब दो-तीन बार प्रसन्न होकर असुर ने कहा तो स्त्री ने कहा कि मेरी तकलीफ़ तुम दूर नहीं कर सकते ॥ १० ॥ तब उसने तुरन्त एक यंत्र लिखकर उस स्त्री के हाथ में दे दिया और कहा कि इसे जिसे भी दिखाओगी वह भस्म हो जायगा ॥११॥ उसने उससे यंत्र लिखवाया और हाथ में लेकर उसी को दिखा दिया। जब दानव ने यंत्र देख लिया तो वहीं जलकर भस्म हो गया ॥१२॥ ॥दोहा॥ देवराज भी जिस दैत्य को नहीं जीत सकते थे, इस अबला ने उसे यमलोक भेज दिया ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाखयान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में सौवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ॥ १०० ॥ १८५४ ॥ अफजू ॥

अथ इक सौ इक चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। रावी तीर जाट इक रहै । मेहीवाल नाम जग कहै । निरखि सोहनी बसि ह्वै गई । ता पै रीझि सु आशिक भई ।। १ ।। जब ही भान असत ह्वै जावै । तब ही पैरि नदी तह आवै । द्रिड़ गहि घट उर के तर धरै । छिन महि पैर पार तिह परै ।। २ ।। एक दिवस उठिकै जब धाई । सोवत हुतो बंधु लखि पाई । पाछे लागि भेद तिह चह्यो । कछू सोहनी ताहि न लह्यो ।। ३ ।। ।। भुजंग छंद ।। छकी प्रेम बाला तिसी ठौरि धाई । जहाँ दाबिकै बूट मै माट आई । लियो हाथ ता कौ धसी नीर स्याने । मिली जाइ ता कौ यही भेद जाने ।। ४ ।। मिली जाहि ता कौ फिरी फेरि बाला । दिपै चारि सोभा मनो आगि ज्वाला । लए हाथ माटा नदी पैरि आई । कोऊ नाहि जानै तिनी बात पाई ।। ५ ।। भयो प्रात लै काच माटा सिधायो । तिसै डारि दीनो उसै राखि आयो । भए सोहनी रैनि जब ही सिधाई । वहै माट लैकै छकी प्रेम

एक सौ एकवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। रावी के किनारे महीवाल नामक एक जाट रहता था । सोहनी नामक स्त्री उसे देखकर उस पर आशिक हो गई और उसके वश में हो गई ।। १ ।। जब सूर्यास्त हो जाता था तो वह नदी तैरकर उसके पास आ जाती थी । हाथ से घड़ा पकड़कर वह क्षण भर में तैरकर पार हो जाती थी ।। २ ।। एक दिन जब वह चली तो सोते हुए भाई ने जगकर उसे देख लिया । उसने पीछे जाकर सोहनी का रहस्य जाना जिसे सोहनी न जान सकी ।। ३ ।। ।। भुजंग छंद ।। वह प्रेम की पुतली उसी स्थान की ओर गई जहाँ पेड़ के नीचे उसने घड़ा दवा रखा था । उसने घड़ा हाथ में लिया और जल में घुस गई तथा अपने प्रियतम से जा मिली । यह भेद उसने देखा ।।४।। वह उससे मिलकर वापस आई तो ऐसे शोभायमान हो रही थी मानो अग्नि की लपट हो । हाथ में घड़ा लेकर नदी पार आ गई और समझी कि कोई भी नहीं जान पाया है ।। ५ ।। वह भाई सुबह कच्चा घड़ा लेकर वहाँ पहुँचा और उस पक्के घड़े को तो वहीं तोड़ दिया और कच्चा वहाँ रख आया । रात होते ही सोहनी चली और उसी घड़े को लेकर उसनें अपने आपको पानी

आई ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ आधिक जब सरिता तरी माटि गयो तब फूटि । डुबकी लेते तन गयो प्रान बहुरि गे छूटि ॥ ७ ॥ ॥ चौपई ॥ मेहीवाल अधिक दुखु धार्यो । कहाँ सोहनी रही बिचार्यो । नदी बीच खोजत बहु भयो । आई लहिर डूबि सो गयो ॥ ८ ॥ एक पुरख यह[चरित्र सुधार्यो । मेहीवाल सोहनियहिं मार्यो । काचो घट वाको दै बोर्यो । मेहीवाल हूँको सिर तोर्यो ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इक चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १०१ ॥ १८६३ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ दोइ चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ अवधपुरी भीतर बसै अज सुत दशरथ राव । दीनन की रच्छा करै राखत सभ को भाव ॥ १ ॥ दैत देवतन को बन्यो एक दिवस संग्राम । बोलि पठायो इंद्र नै लै दसरथ को नाम ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ दूतहिं कह्यो तुरतु तुम जैयहु । सैन सहित दहरथ को ल्यैयहु । ग्रहि (मू०ग्रं०९४६)

में ठेल दिया ॥६॥ ॥दोहा॥ जब आधी नदी पार की तो घड़ा फूट गया और डुबकियाँ लेती हुई उसके प्राण-पखेरू उड़ गए ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ महीवाल अत्यधिक दुखी होकर सोचने लगा कि सोहनी कहाँ गई। वह उसे नदी में खोजने लगा और लहरों में वह भी डूब गया ॥ ८ ॥ किसी पुरुष ने यह कहा है कि महीवाल ने ही सोहनी को मार दिया था। कच्चा घड़ा देकर सोहनी को मार डाला गया और महीवाल का भी सिर फोड़ दिया गया ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में एक सौ एकवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १०१ ॥ १८६३ ॥ अफजू ॥

एक सौ दूसरा चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ दीनों की रक्षा करनेवाले और सबसे प्रेमभाव रखनेवाले, राजा अज के पुत्र दशरथ अवधपुरी में रहते थे ॥ १ ॥ एक बार देव-दैत्यों का युद्ध हुआ तो इन्द्र ने दशरथ को (सहायता के लिए) बुलाया ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ इन्द्र ने दूतों को कहा कि तुम तुरन्त जाओ और सेना-समेत दशरथ को ले आओ। उसे कहो कि घर के सभी कार्य छोड़कर आए और हमारी ओर से युद्ध करे ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ सत्कृत नामक दूत ने दशरथ

के सकल काम तज आवै । हमरी दिसि ह्वै जुद्धु मचावै ।।३।।
।। दोहरा ।। दूत सतक्रित जो पठ्यो सो दसरथ पै आइ । जो
तासो स्वामी कह्यो सो तिह कह्यो सुनाइ ।। ४ ।।
।। चौपई ।। बासव कह्यो सु ताँहि सुनायो । सो सुनि भेद
केकई पायो । चले चलों रहिहौ तौ रहिहौं । ना तर देह
अगनि मै दहिहौं ।। ५ ।। त्रिय को मोह त्रिपति सौं भारो ।
तिह संग लै उहि ओरि पधारो । बाल कह्यो सेवा तव करहों ।
जूझो नाथ पावकहि बरिहों ।। ६ ।। अवधराज तह तुरतु
सिधायो । सुर असुरन जह जुद्ध मचायो । बज्रबान बिछुआ
जह बरखैं । कुपि कुपि बीर धनुहियन करखैं ।। ७ ।।
।। भुजंग छंद ।। बधे गोल गाढ़े चल्यो बज्रधारी । बजै देव
दानव जहाँ ही हक्कारी । गजैं कोटि जोधा महाकोप कै कै ।
परे आनिकै बाढ वारीन लैकै ।। ८ ।। भजे देव दानो अनिक
बान मारे । चले छाडिकै इंद्र के बीर भारे । रह्यो एक
ठाढो तहाँ बज्रधारी । परियो ताहि सों राव तहि मारि
भारी ।। ९ ।। इतै इंद्र राजा उतै दैत भारे । हटे ना हठीले
महा रोह वारे । लयो घेरि ता को चहूँ ओर ऐसे । मनो

के पास आकर जैसा स्वामी (इन्द्र) ने कहा था, संदेश कह सुनाया ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। इन्द्र ने जो कहा था वह उसने कह सुनाया और कैकेयी को भी इस सबका पता लग गया। वह राजा से कहने लगी कि तुम चलोगे तो मैं भी चलूँगी और तुम रहोगे तो मैं भी रहूँगी. अन्यथा मैं जलकर भस्म हो जाऊँगी ।। ५ ।। उस रानी का राजा से घनिष्ठ प्रेम था। वह उसे साथ लेकर उधर चला गया। स्त्री ने कहा कि हे नाथ ! मैं तुम्हारी सेवा करूँगी और यदि तुम जूझ गए तो मैं सती हो जाऊँगी ।। ६ ।। अवधनरेश तुरन्त वहाँ पहुँचा जहाँ सुर-असुरों का युद्ध चल रहा था। वहाँ वज्र, बाण आदि की वर्षा हो रही थो और वीर क्रुद्ध हो-होकर धनुष खींच रहे थे ।। ७ ।। ।। भुजंग छंद ।। वह वज्रधारी (इन्द्र) अपने समूह के साथ वहाँ चला जहाँ देव-दानव (एक-दूसरे को) ललकार रहे थे। महाक्रुद्ध होकर अनेकों वीर गर्जन कर रहे थे और कृपाणें लेकर टूट पड़ रहे थे ।। ८ ।। अनेकों देव-दानव भाग रहे थे और इन्द्र के भारी वीर छोड़-छाड़कर भाग चले। युद्धस्थल में केवल एक वज्रधारी वीर बचा रहा जिससे राजा का भीषण युद्ध हुआ ।।९।। इधर इन्द्रराज था और उधर भारी दैत्य थे। दोनों ओर से क्रुद्ध वीर हटाए नहीं हट रहे थे। उसे चारों ओर से ऐसे घेर लिया मानो चारों ओर से घनघोर

पवन उट्ठै घटा घोर जैसे ॥ १० ॥ परी देव दावान की मारि भारी। हठ्यो एक हाठे तहाँ छत्रधारी। अज्यानंदजू कौ सते लोक जानै। परे आनि सोऊ महाँ रोस ठानै ॥ ११ ॥ महाँ कोप कै कै हठी दैत ढूके। फिरे आनि चारों दिसा राव जू के। महाँ बज्र बानान कै घाइ मारैं। बली मार ही मारि ऐसे पुकारैं ॥ १२ ॥ हटे ना हठीले हठे ऐठियारे। मंडे कोप कै कै महाँबीर मारे। चहूँ ओर बादित्र आनेक बाजैं। उठ्यो राग मारू महाँ सूर गाजैं ॥ १३ ॥ कितै हाँक मारे किते बाक दाबे। किते ढाल ढाहे किते दाढ़ चाबे। किते बाक सौ हल हले बीर भारी। किते जूझि जोधा गए छत्रधारी ॥ १४ ॥ ॥ दोहरा ॥ असुरन की सैना हुते असुर निकसियो एक। सूत सँघारि अजनंद कौ मारे बिसिख अनेक ॥ १५ ॥ ॥ चौपई ॥ भरथ मात ऐसे सुनि पायो। काम सूति अजि सुत कौ आयो। आपन भेख सुभट को धरियो। जाइ सूत पन त्रिप को करियो ॥ १६ ॥ स्यंदन ऐसी भाँति धवावै। त्रिप को बान न लागन पावै। जायौ चाहत अजि सुत (मू०ग्रं०६४७) जहाँ। लै अबला

घटाएँ उठी हों ॥१०॥ देव-दानवों की भीषण लड़ाई हुई, परन्तु एक छत्रधारी वीर वहाँ हठपूर्वक डटा रहा। इस अजेयानन्द को सातों लोक जानते हैं। अब वीर उस पर भी क्रुद्ध होकर टूट पड़े ॥ ११ ॥ महाक्रोधित होकर हठी दैत्य टूट पड़े और इन्द्र के चारों ओर एकत्र हो गए। महावज्रों और बाणों के घाव मारे जाने लगे तथा महाबली मार-मार ही पुकारने लगे ॥ १२ ॥ महाहठी वीर पीछे नहीं हटे और क्रुद्ध होकर अनेकों वीर मारे जाने लगे। चारों ओर अनेक वाद्य बजने लगे और महामारू राग के स्वर गूँज़ने लगे ॥ १३ ॥ कितनों को मार डाला गया और कितनों को दबा दिया गया। कइयों को ढाल पर रोका गया और कइयों को चबा लिया गया। कितने ही बाँके वीर योद्धा वहाँ जूझ गए ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ असुरों की सेना से एक वीर निकला और उसने अज-नंदन दशरथ का सारथि मारकर दशरथ पर अनेकों वाण चलाए ॥ १५ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब कैकेयी ने सुना कि दशरथ का सारथि युद्ध में काम आ गया है तो उसने वीरों का वेष बनाया और राजा के सारथि का कार्य किया ॥ १६ ॥ वह घोड़ों को ऐसे दौड़ाती थी कि राजा को बाण नहीं लग पाता था। दशरथ जहाँ भी जाना चाहता था यह स्त्री

पहुचावै तहाँ ॥ १७ ॥ ऐसे अबला रथहि धवावै । जह पहुचै ता कौ न्रिप घावै । ऊडी धूरि लगी असमाना । असि चमकै बिजुरी परमाना ॥ १८ ॥ तिलु तिलु टूक एक करि मारे । एक बीर कटि ते कटि डारे । दसरथ अधिक कोप करि गाज्यो । रन मै राग मारुआ बाज्यो ॥१९॥ ॥दोहरा॥ संख नफीरी कान्हरे तुरही भेर अपार । मुचंग सनाई डुगडुगी डवरू ढोल हजार ॥ २० ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ चले भाजि लेंडी सु जोधा गरज्जैं । महा भेर भारीन सौ नाद बज्जैं । परी आनि भूतान की भीर भारी । मंडे कोप कै कै बडे छत्रधारी ॥२१॥ दिपैं हाथ मै कोटि काढी क्रिपानै । गिरै भूमि मै झूमि जोधा जुआनै । परी आनि बीरान की भीर भारी । बहै शस्त्र औ अस्त्र काती कटारी ॥ २२ ॥ बजे सार भारो कितै ही पराए । किते चुंग बाँधे चले खेत आए । परी बान गोलान की मारि ऐसी । मनो क्वार के मेघ की ब्रिशटि जैसी ॥ २३ ॥ परी मारि भारी मच्यो लोह गाढो । अहिल्लाद जोधान के चित्त बाढो । कहूँ भूत औ प्रेत नाचैरु गावै । क़हूँ जोगिनी पीत

उसे वहीं पहुँचा देती थी ॥ १७ ॥ कैकेयी ऐसे रथ चला रही थी कि राजा जहाँ पहुँचता योद्धाओं को मार देता था । धूल आसमान को छूने लगी और कृपाण बिजली के समान चमकने लगी ॥ १८ ॥ एक-एक वीर को तिल-तिल काटकर मार डाला और एक ही वीर ने काटते-काटते सबको काट दिया । दशरथ अत्यधिक क्रुद्ध होकर गरजा और युद्ध में मारू राग बजने लगा ॥ १९ ॥ ॥ दोहा ॥ युद्ध में शंख, नफ़ीरी, कानरे, तुरही, भेरी, मुचंग, डुगडुगी, डमरू, ढोल आदि के स्वर सुनाई पड़ने लगे ॥ २० ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ योद्धाओं का गर्जन सुन डरपोक भाग रहे थे और विशाल भेरियों से नाद वज रहे थे । भूतों की भारी भीड़ आ पड़ी और अनेकों बड़े छत्रधारी क्रुद्ध दिखाई देने लगे ॥ २१ ॥ हाथों में कृपाणें चमक रही थीं और योद्धा युद्धस्थल में गिर रहे थे । वीरों की भारी भीड़ आ पड़ी तथा शस्त्र, अस्त्र, काती, कटारी आदि चलने लगे ॥ २२ ॥ लोहा बजने लगा और कितने ही लोग दौड़ गए तथा कितने ही झुंड बाँधकर युद्धस्थल पर आ गए । बाणों, गोलों की वर्षा ऐसी हुई मानो कुआर के बादलों की वर्षा हो ॥ २३ ॥ भारी मार-काट में लोहा बरसा और योद्धाओं के चित्त की प्रसन्नता बढ़ने लगी । कहीं भूत-प्रेत नाचने, गाने लगे और कहीं योगिनियाँ लहू पीती हुई

लोहू सुहावै ॥ २४ ॥ कहूँ बीर बैताल बाँके बिहारै । कहूँ बीर बीरान को मारि डारै । किते बान लै सूर कंमान ऐंचै । कितै घैंचि जोधान के केस खैंचै ॥ २५ ॥ कहूँ पारबती मूँड माला बनावै । कहूँ राग मारू महाँरुद्र गावै । कहूँ कोप कै डाकनी हाक मारैं । गए जूझि जोधा बिना ही सँघारैं ॥ २६ ॥ कहूँ दुंदभी ढोल सहनाइ बज्जैं । महाँकोप कै सूर केते गरज्जैं । परे कंठ फासी किते बीर मूए । तनं त्याग गामी सु बैकुंठ हूए ॥ २७ ॥ किते खेत मै देव देवारि मारे । किते प्रान सुरलोक तजि कै बिहारे । किते गाइ लागो महाँबीर झूमैं । मनो पान कै भंग मालंग घूमैं ॥ २८ ॥ बली मार ही मारि कै कै पधारे । हने छत्रधारी महाँ ऐंठियारे । कई कोटि पत्री तिसी ठौर छूटे । उडे छिप्र सौ पत्र से छत्र टूटे ॥ २९ ॥ मच्यो जुद्ध गाड़ो मँडौ बीर भारे । चहूँ ओर ते कोप कै कै हकारे । हूए पाक शाहीद जंगाह म्यानै । गए जूझि जोधा घनो स्याम जानै ॥ ३० ॥ ॥ चौपई ॥ अजि सुत जहाँ चित्त लै जावै । तहीं (मू०ग्रं०६४८) केकई लै पहुचावै । अब्रिण राखि ऐसो रथ हाँक्यो । निजु

शोभा बढ़ा रही थीं ॥ २४ ॥ कहीं वीर बैताल विचरण कर रहे थे, कहीं वीर वीरों को मार गिरा रहे थे। कहीं वीर कमान खींच रहे थे, और कहीं योद्धाओं के केश खींच रहे थे ॥ २५ ॥ कहीं पार्वती मुंडमाला बना रही थी और कहीं रुद्र महामारू राग गा रहे थे। कहीं जब डाकिनियाँ क्रुद्ध होकर ललकारती थीं तो कई योद्धा बिना मारे ही मर जाते थे ॥ २६ ॥ कहीं दुंदुभियाँ और शहनाइयाँ बज रही थीं और कहीं क्रुद्ध हो महाबली गरज रहे थे। गले में पाश डाले कितने वीर तन त्यागकर बैकुंठवासी हो गए ॥ २७ ॥ देवताओं ने कितने ही असुर युद्धस्थल में मार डाले और कितने ही प्राण त्यागकर सुरलोक चले गए। कितने ही महावीर ऐसे झूम रहे थे मानो भाँग का नशा पीने पर भंगेड़ी झूम रहे हों ॥ २८ ॥ महाबलियों ने मार-मार पुकारकर अनेकों छत्रधारियों को नष्ट कर दिया। कई करोड़ कृपाणें वहाँ टूट गयीं और छत्र पत्रों के समान उड़ गए ॥२९॥ भारी वीरों ने भीषण युद्ध किया और चारों ओर से वीरों को ललकारा जाने लगा। युद्ध में शहीद हुए वीर श्याम कवि के कथनानुसार जूझ गए ॥ ३० ॥ ॥ चौपाई ॥ दशरथ जहाँ का भी विचार करता, कैकेयी उसे वहाँ ले जाती थी। घावों से बचा

पिय को इक बार न बाँक्यो ॥३१॥ जहा केकई लै पहुचायो। अजिसुत ता कौ मारि गिरायो। ऐसो कह्यो बीर संग्रामा। खबरें गई रूम अरु शामा ॥ ३२ ॥ ऐसी भाँति दुशट बहु मारे। बासव के सभ शोक निवारे। गह्यो दाँत त्रिण उबर्यो सोऊ। ना तर जियत न बाच्यो कोऊ ॥ ३३ ॥ ॥ दोहरा ॥ पति राख्यो रथ हाँकियो सूरन दयो खपाइ। जीति जुद्ध द्वै बर लए कै कै अति सुभ काइ ॥ ३४ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ दोइ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १०२ ॥ १८९७ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ तिन चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ अशट नदी तिह ठाँ मिलि गई। बहती अधिक जोर सो भई। ठट्टा शहिर बस्यो तह भारो। जन बिधि दूसर स्वरग सु धारो ॥ १ ॥ ॥ दोहरा ॥ तहाँ धाम पतिशाह के जल्लन नामा पूत। सूरति सीरति मै अधिक बिधिनै सज्यो सपूत ॥ २ ॥ जो अबला ता कौ लखै रीझि रहै

कर उसने ऐसे रथ हाँका कि उसके प्रियतम का एक भी बाल-बाँका नहीं हुआ ॥ ३१ ॥ उस वीर ने ऐसा भीषण युद्ध किया कि उसकी ख़बरें रूम और शाम देश तक पहुँच गईं ॥३२॥ इस प्रकार बहुत से दुष्टों को मारा और इन्द्र के शोक को दूर किया। जिसने दाँतों में घास दबाकर शरण ली वही बचा अन्यथा सब मारे गए ॥ ३३ ॥ ॥ दोहा ॥ पति की रक्षा की, रथ हाँका और शूरवीरों को मार डाला। उस सुन्दर कायावाली स्त्री कैकेयी ने युद्ध जीतकर दो वर भी प्राप्त कर लिये ॥ ३४ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ दूसरे चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १०२ ॥ १८९७ ॥ अफजू ॥

एक सौ तीसरा चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ जहाँ आठ नदियाँ मिलती हैं, वहाँ घनघोर नाद होता है। उस स्थान पर ठट्टा नगर बसा हुआ ऐसा लगता है मानो दूसरा स्वर्ग हो ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ वहाँ बादशाह का जल्हन नामक पुत्र था जो सूरत-सीरत दोनों में परमात्मा का रचा हुआ सुपुत्र था ॥२॥ जो स्त्री उसे देखती थी वह मन में रीझ जाती थी और सुध-बुध भूलकर मूर्च्छित होकर गिर

मन माहि । गिरै मूरछना ह्वै धरनि तनिक रहै सुधि नाहि ।। ३ ।। शाह जलाल शिकार कौ इक दिन निकस्यो आइ । म्रिगियन कौ मारत भयो तरल तुरंग धवाइ ।। ४ ।। ।। चौपई ।। एक मिरग आगे तिह आयो । तिह पाछे तिन तुरै धवायो । छोरि सैन ऐसे वह धायो । शहिर बूबना के महि आयो ।। ५ ।। अधिक तिखा जब ताहि संतायो । बाग बूबना के महि आयो । पानी उतरि अस्व ते पीयो । ता को तब निंद्रहि गहि लीयो ।। ६ ।। तब तह सोइ रह्यो सुख पाई । भई साँझ अबला तह आई । अमित रूप जब ताहि निहार्यो । हरि अरि सर ता के तन मार्यो ।। ७ ।। ता कौ रूप हेरि बसि भई । बिनु दामन चेरी ह्वै गई । ता की लगन चित्त मै लागी । नींद भूख सिगरी तिह भागी ।। ८ ।। ।। दोहरा ।। जाके लागत चित्त मैं लगन पिया की आन । लाज भूखि भागत सभै बिसरत सकल सियान ।। ९ ।। जा दिन पिय प्यारौ मिलै सुख उपजत मन माहि । ताँ दिन सो सुख जगत मै हर पुर हूँ मै नाहि ।। १० ।। जाके तन बिरहा बसै लगत तिसी को पीर । जैसे चोरहि रौल को परत (मू०ग्रं०९४९) गोल पर भीर ।। ११ ।। ।। बूबना बाच ।। कौन देस एस्वरज

पड़ती थी ।। ३ ।। जलालशाह एक दिन उधर शिकार को आ निकला और घोड़े दौड़ाकर मृगों को मारने लगा ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। उसके सामने एक मृग आ गया जिसके पीछे उसने घोड़ा दौड़ाया । वह सेना को पीछे छोड़कर बूबना के शहर में आ गया ।। ५ ।। जब उसे अधिक प्यास लगी तो वह बूबना के बाग़ में आ पहुँचा । उसने अश्व से उतरकर पानी पिया और उसे नींद ने घेर लिया ।। ६ ।। वह वहाँ सो रहा । साँझ होने पर एक स्त्री वहाँ आई जिसका रूप-सौंदर्य देखते ही काम ने अपना बाण उसे मारा ।। ७ ।। उसका रूप देखकर वह उसके वश में हो गई और उसकी दासी बन गयी । अब उसे उसी की लगन लग गई और भूख-नींद सब उड़ गई ।। ८ ।। ।। दोहा ।। जिसके चित्त में प्रिय की लगन लग जाती है उसकी लाज-भूख सब भूल जाती है और सारे संसार का विस्मरण हो जाता है ।। ९ ।। जिस दिन उसे प्यारा मिलता है उसके मन में सुख प्राप्त होता है और उस दिन जैसा सुख उसे स्वर्ग में भी नहीं प्राप्त होता ।। १० ।। जिसके तन में विरह होता है उसे ही दर्द होता है । ऐसे ही जिसको शारीरिक कष्ट फोड़ा आदि होता

तूँ कौन देस को राव। क्यों आयो इह ठौर तूँ मोकह भेद बताव ॥ १२ ॥ ॥ जलू बाच ॥ ॥ चौपई ॥ ठट्टा देस एस्वर महि जायो। खिलत अखेटक इह ठाँ आयो। पियत पानि हार्‍यो स्वै गयो। अब तुमरो दरशन मुहि भयो ॥ १३ ॥ ॥ दोहरा ॥ हेरि रूप ता कौ तरुनि बसि ह्वै गई प्रबीन। जैस बूँद की मेघ ज्यों होत नदी मै लीन ॥ १४ ॥ प्रीति लाल की उर बसी बिसरी सकल सियान। गिरी मूरछना ह्वै धरनि बिधी बिरह के बान ॥ १५ ॥ ॥ सोरठा ॥ रकत न रह्यो सरीर लोक लाज बिसरी सकल। अबला भई अधीर अमित रूप पिय को निरखि ॥ १६ ॥ ॥ चौपई ॥ जा दिन मीत पियारो पैयै। तौन घरी उपर बलि जैयै। बिरह बंधी चेरी तिह भई। बिसरि लाज लोगन की गई ॥ १७ ॥ ॥ दोहरा ॥ निरखि बूबना बसि भई परी बिरह की फास। भूखि प्यास भाजी सकल बिनु दामन की दास ॥१८॥ बत्तिस अभरन त्रिय करै सोरह सजत शिंगार। नाक छिदावत आपनो पिय के हेतु पियार ॥ १९ ॥ तीय पिया के चित्त मै

है उसे ही उस दर्द का अनुभव होता है ॥ ११ ॥ ॥ बूबना उवाच ॥ हे ऐश्वर्यशाली ! तुम किस देश के राजा हो ? तुम यहाँ क्यों आए हो मुझे इसका रहस्य बताओ ॥ १२ ॥ ॥ जल्ह उवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ मैं ठट्टा नरेश का पुत्र हूँ और आखेट खेलता हुआ यहाँ आ गया हूँ। पानी पीते ही मैं थका हुआ सा गया था और अब तुम्हारा दर्शन कर रहा हूँ ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ उसका रूप देखकर तरुणी उसी तरह वश में हो गई जैसे बादल की बूंद गिरकर नदी में लीन हो जाती है ॥ १४ ॥ उस प्रियतम की प्रीति उसके हृदय में बस गई और वह अपनी समस्त चतुराई भूल गई। वह विरह-वाण से बिंधकर मूर्च्छित होकर धरती पर गिर पड़ी ॥१५॥ ॥सोरठा॥ उसके शरीर में रक्त ही शेष नहीं बचा और समस्त लोक-लज्जा उसे भूल गई। वह अबला प्रियतम का सौंदर्य देखकर अधीर हो उठी ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ जिस दिन प्यारे मित्र की प्राप्ति होगी उस समय पर मैं न्योछावर हो जाऊंगी। विरह में बँधी वह उसकी दासी बन गई और वह लोक-लाज भी भूल गई ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ बूबना उसे देखकर विरह के पाश में फंस गई। उसकी भूख-प्यास सब समाप्त हो गई और वह विना दाम की दासी बन गई ॥ १८ ॥ बत्तीसों आभूषण उसने पहने और सोलह श्रृंगार उसने किए। प्रिय के प्रेम में उसने नाक भी छिदवा लिया ॥ १९ ॥ प्रिय एवं

ऐसो लाग्यो नेह। भूख लाज तन की गई दुहुअन बिसर्‍यो ग्रेह ॥ २० ॥ ॥ सवैया ॥ बीन सकै बिगसै नहि काहू सौ लोक की लाज बिदा करि राखैं। बीरी चबात न बैठि सकै बिल मै नहि बाल हहा करि भाखैं। इंद्र को राज समाजन सो सुख छाडि छिनेक बिखै दुख गाखैं। तीर लगो तरवारि लगो न लगो जिनि काहू सौ काहू की आखैं ॥ २१ ॥ ॥ दोहरा ॥ हेरि बूबना कौं धरनि लोटत मात अधीर। चतुरि हुती चीनत भई पिय बिरह की पीर ॥ २२ ॥ ॥ चौपई ॥ याकी लगनि किसू सों लागी। ताते भूखि प्यास सभ भागी। ताते बेगि उपायहि करियै। जाते सगरो शोक निवरियै ॥ २३ ॥ ह्रिदै मंत्र इह भाँति बिचार्‍यो। निज पति सों इह भाँति उचार्‍यो। सुता तरुनि तुमरे ग्रहि भई। ता की करन सगाई लई ॥ २४ ॥ याको अधिक सुयंबर कैहैं। बडे बडे राजान बुलैहैं। दुहिता द्रिशटि सभन पर करिहै। जो चित रुचे तिसी कह बरिहै ॥ २५ ॥ भयो प्रात यह ब्योत बनायो। पुरबासिन सभहीन बुलायो (मू०ग्रं०९५०) देस देस

प्रियतमा के मन में ऐसा स्नेह लगा कि उन दोनों को तन की भूख, लज्जा एवं घर आदि सब भूल गए ॥ २० ॥ ॥ सवैया ॥ (ऐसे प्रेमी) किसी अन्य के साथ प्रसन्न नहीं होते और लोक-लाज को भी तिलांजलि दे देते हैं। वे पान का बीड़ा भी बैठकर आराम से नहीं चबा सकते। उनका ध्यान ज़रा भी इधर-उधर नहीं होता और बच्चों की तरह हड़हड़ाकर हँस पड़ते हैं। वे इन्द्र के राज-समाज और सुख को भी इस प्रेम के दुख के लिए क्षण भर में छोड़ देते हैं। इसलिए चाहे तीर लग जाय, तलवार लग जाय, पर कभी किसी की किसी से आँखें न लगें ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ बूबना की माँ ने जब बूबना को अधीर होकर लेटते देखा तो वह चतुर स्त्री थी, फ़ौरन् उसके प्रिय विरह की पीड़ा को समझ गई ॥ २२ ॥ ॥ चौपाई ॥ इसकी लगन किसी के साथ लग गई है, इसीलिए इसकी सब भूख-प्यास भाग गई है। इसलिए शीघ्र ही कोई उपाय किया जाय और इसके शोक का निवारण किया जाय ॥ २३ ॥ हृदय में विचारकर उसने अपने पति से कहा कि तुम्हारी पुत्री जवान हो गई है अब उसकी सगाई (विवाह) कर देना चाहिए ॥ २४ ॥ इसका हम लोग स्वयंबर करेंगे और बड़े-बड़े राजाओं को बुलाएँगे। हमारी पुत्री सबको देख लेगी और जिसे चाहेगी उसका वरण कर लेगी ॥ २५ ॥

बहु दूत पठाए । नरपति सभ ठौरन ते आए ।। २६ ।। ।। दोहरा ।। तौन बाग मै बूबना नित प्रति करत पयान । भेटत शाह जलाल को रैनि बसै ग्रहि आनि ।। २७ ।। ।। चौपई ।। ऐसी प्रीति दुहूँ मै भई । दुहूँअन बिसरि सकल सुधि गई । कमलनाभ की छबि पहिचनियत । टूक दु प्रीति तार इक जनियत ।।२८।। ।। दोहरा ।। भयो प्रात पित बूबना राजा लए बुलाइ । आग्या दुहिता को दई रुचै बरो तिह जाइ ।।२९।। ।। चौपई ।। यहै सकेत तहाँ बदि आई । शाहि जलालहि लयो बुलाई । जब सो द्रिशटि तवू पर करिहौ । फूलन की माला उर डरिहौ ।। ३० ।। चड़ि बिवान देखन न्रिप गई । द्रिशटि करत सभहिन पर भई । जब तिह शाह जलाल निहार्यो । फूल हार ता के उर डार्यो ।। ३१ ।। भाँति भाँति तब बाजन बाजे । जनियत शाहि जलू के गाजे । सभ न्रिप बक्र फूक ह्वै गए । जानक लूटि बिधातहि लए ।। ३२ ।। ।। दोहरा ।। फूक बस्त्र भे सभ न्रिपति गए आपने ग्रेह । जलू बूबना को तबै अधिक बढत भयो नेह ।।३३।।

प्रातः उसने यह योजना बनाकर सब नगरवासियों को बुलाया । देश-देशान्तरों को दूत भेजे और सब स्थानों से राजा आ गए ।। २६ ।। ।। दोहा ।। बूबना अब उस बाग़ में नित्य जाती थी और शाह जलाल के साथ रमण कर रात को घर आ जाती थी ।। २७ ।। ।। चौपाई ।। दोनों में ऐसा प्यार हुआ कि दोनों को समस्त सुधि भूल गई । वे ईश्वर (विष्णु) की छवि के समान सुन्दर लगते थे । दो शरीर अवश्य थे पर ज्योति उनमें एक ही लगती थी ।। २८ ।। ।। दोहा ।। प्रातःकाल बूबना के पिता ने राजाओं को बुला लिया और पुत्री को मनचाहा वर चुनने को कह दिया ।। २९ ।। ।। चौपाई ।। इधर इसने कहलवाकर शाह जलाल को भी वहाँ बुलवा लिया । उसने यह सोचा कि जब मैं उसकी तरफ़ देखूंगी तो उसी के गले में माला डाल दूंगी ।। ३० ।। वह पालकी में बैठकर राजाओं को देखने गई और सब पर दृष्टि डाली । तब उसने शाह जलाल को देखा और फूलों का हार उसके गले में डाल दिया ।। ३१ ।। तब शाह जलाल के लिए भाँति-भाँति के बाजे बजने लगे । सभी राजाओं के चेहरे उड़ गए और वे ऐसे लग रहे थे मानों विधाता ने उन्हें लूट लिया हो ।। ३२ ।। ।। दोहरा ।। निराश राजागण अपने घर चले गए और इस प्रकार जलाल और बूबना का परस्पर स्नेह बढ़

।। चौपई ।। इह छल सो अबला करि आई । जानक रंक नवो निधि पाई । ऐसे बसि तरुनी ह्वै गई । मानहु शाह जलालै भई ।। ३४ ।। ।। दोहरा ।। अरुन बस्त्र अति क्रांत तिह तरुनि तरुन को पाइ । भाँति भाँति भोगन भयो ताँहि गरे सौ लाइ ।। ३५ ।। ।। चौपई ।। ऐसी प्रीति दुहू की लागी । जा को सभ गावत अनुरागी । सो तज गत डोलत ही मग मै । जाहिर भई सगल ही जग मै ।। ३६ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ तिन चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १०३ ।। १९३३ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ चार चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। इक अबला थी जाट की तसकर सो तिन नेह । केल कमावत तौन सो निति बुलावत ग्रेह ।। १ ।। ।। चौपई ।। एक दिवस तसकर ग्रहि आयो । बहसि नारि यौ बचन सुनायो । कहा चोर तुम दरबु चुरावत । सो तुम निजु धन हिरि लै जावत ।। २ ।। ।। दोहरा ।। काँपत हो चित

गया ।। ३३ ।। ।। चौपाई ।। इस प्रकार का छल उस अबला ने किया । वह ऐसी लग रही थी मानों किसी निर्धन को नवनिधियाँ मिल गई हों । इस प्रकार वह तरुणी वश में होकर मानों शाह जलाल हो गई ।। ३४ ।। ।। दोहा ।। उस युवक व युवती ने लाल वस्त्र पहने और विभिन्न प्रकार से भोग-विलास किया ।। ३५ ।। ।। चौपाई ।। उनमें ऐसा प्रेम बना कि सभी उनके गुण गाने लगे । उनकी प्रेमगाथा छोटे-छोटे रास्तों से चल जगत् भर में प्रसिद्ध हो गई ।। ३६ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ तीसरे चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १०३ ।। १९३३ ।। अफजू ।।

एक सौ चौथा चरित्र-कथन

।। दोहा ।। एक जाट की स्त्री को एक चोर से प्रेम था । वह उससे केलिक्रीड़ा करती थी और नित्य उसे अपने घर बुलाती थी ।। १ ।। ।। चौपाई ।। एक दिन वह चोर घर आया तो नारी नें मुस्कुराकर वचन सुनाया कि तुम द्रव्य चुराते हो और अपने घर में ले जाते हो ।। २ ।। ।। दोहा ।। तुम प्रातःकाल को देखते ही चित्त में काँप उठते हो और हे चित्त-

मै अधिक नंकु निहारत भोर। भजत संधि को तजि सदन (मू०ग्रं०६५१) चित्त चुरावो चोर ॥३॥ ॥चौपई॥ प्रथम सांधि दै दरबु चुरावै। पुनि अपुने पति कौ दिखरावै। काजी मुफती सकल निहारै। सो तसकर तिह राह पधारै ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ धनु तसकर कौ अमित दै घर ते दयो पठाइ। कोटवार को खबरि करि हौ मिलिहौ तुहि आइ ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ अमित दरबु दै चोर निकार्‌यो। दै साँधहि इह भाँति पुकार्‌यो। पतिहि जगाइ कह्यो धन हर्‌यो। इह देसेस न्याइ नहि कर्‌यो ॥ ६ ॥ ॥ त्रियो बाच ॥ कोटवार मैं जाइ पुकार्‌यो। किनी चोर धन हर्‌यो हमार्‌यो। सकल लोक तिह ठाँ पग धरियै। हमरो कछूक न्याइ बिचरियै । ७ ॥ काजी कोटवार कौ ल्याई। सभ लोगन को साँधि दिखाई। ता कौ हेरि अधिक पति रोयो। चोरन मोर सकल धनु खोयो ॥ ८ ॥ देखत तिनै मूँद वह लई। रहन तैसियै अंदर दई। दिन बीत्यो रजनी ह्वै आई। तिसी पैंड ह्वै आपु सिधाई ॥ ९ ॥ ॥ दोहरा ॥ काजी औ कुटवार पै निजु पति साँधि दिखाइ। प्रथमै धनु पहुचाइकै बहुर मिली तिह जाइ ॥ १० ॥

चोर ! तुम सेंध की तरफ़ भाग निकलते हो ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ पहले तो उसने सेंध लगाकर स्वयं द्रव्य चुराया और फिर अपने पति को दिखाया। क़ाज़ी, मुफ़्ती सबने देखा कि चोर उस रास्ते (सेंध) से गया है ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ उस स्त्री नें अपने घर का अपरिमित धन देकर घर से भेज दिया और कह दिया कि कोतवाल को खबर करके मैं भी तुझसे आ मिलूँगी ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ अपार द्रव्य देकर चोर को निकाल दिया और सेंध लगाकर चिल्लाने लगी। पति को जगाकर कहा कि देश का राजा न्यायी नहीं है, देखो हमारा धन चोरी हो गया है ॥ ६ ॥ ॥ त्रिया उवाच ॥ कोतवाल के पास जाकर उसने पुकार की कि किसी चोर ने हमारा धन चुरा लिया है। सब वहाँ चलो और हमारे साथ न्याय करो ॥ ७ ॥ वह क़ाज़ी, कोतवाल सबको ले आयी और उन्हें सेंध दिखाई। यह देखकर पति भी रो पड़ा कि चोरों ने मेरा समस्त धन चुरा लिया है ॥ ८ ॥ उन लोगों को दिखाकर वह सेंध बंद कर दी पर अन्दर से वैसे ही रहने दी। दिन बीता, रात हुई तो वह स्त्री उसी राह से बाहर निकल गई ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ क़ाज़ी, कोतवाल और पति को सेंध दिखाकर, पहले स्वयं सारा धन पहुँचाकर

॥ चौपई ॥ सभ कोऊ ऐसी भाँति बखानै । न्याइ न भयो ताहि कर मानै । धनु बिनु नारि झखत अति भई । ह्वै जोगन बन माँझ सिधई ॥ ११ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सो चार चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १०४ ॥ १६४४ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ पाँच चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ अलिमरदा कौ सुत इक रहै । तासबेग नामा जग कहै । बचा जौहरी को तिन हेर्‍यो । महाँरुद्र रिपु ता कौ घेर्‍यो ॥ १ ॥ ता के द्वारे देखन जावै । रूप निहारि ह्रिदै सुखु पावै । केल करों यासो चित भायो । तुरतु दूत ग्रहि ताहि पठायो ॥ २ ॥ दूत अनेक उपचार बनावै । मोहनराइ हाथ नहि आवै । तिह तासो इह भाँति उचार्‍यो । तासबेग तासौ खिझि मार्‍यो ॥ ३ ॥ चोटन लगे दूत रिसि भर्‍यो । मूरख जानि जतन तिह कर्‍यो । मोहन आजु कह्यो मै ऐहो । ता कौ तासबेग तूँ पैहो ॥ ४ ॥ यह सुनि बैन फूलि

पुनः उस (अपने प्रेमी) के साथ जा मिली ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ सब यही कहने लगे कि पूर्ण न्याय न मिल पाने के कारण वह स्त्री पागल हो गई है और योगिनी बनकर वन को चली गई है ॥ ११ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सो चौथे चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १०४ ॥ १६४४ ॥ अफजू ॥

एक सौ पाँचवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ अलीमर्द का एक पुत्र तासबेग नामक था। उसने जौहरी का एक लड़का देखा और कामदेव ने उसे घेर लिया ॥ १ ॥ वह रोज़ उसका रूप-सौंदर्य देखने उसके दरवाज़े पर जाता था और उसे देखकर अत्यन्त सुख प्राप्त करता था। उससे केलिक्रीड़ा के विचार से तुरन्त उसने एक दूत उसके घर भेजा ॥ २ ॥ दूत ने अनेकों उपाय किए पर मोहनराय हाथ नहीं आया। दूत ने बेग को बताया कि वह हाथ नहीं आ रहा तो खीझ कर बेग ने उसे पीटा ॥ ३ ॥ चोट खाकर दूत क्रोधित हो उठा, और उसने बेग को मूर्ख समझकर फिर यत्न किया। उसने तासबेग से कहा कि आज मोहनराय ने आने को कहा है ॥ ४ ॥ यह सुनकर वह मूर्ख फूला नहीं समाया

जड़ गयो । साच बात चीनत चित भयो । लोग उठाइ पान मद करियो । मानुख हुतो जोनि पसु (मू०ग्रं०६५२) परियो ॥५॥ मो मन मोल मोहनहिं लयो । तब ते मैं चेरो ह्वै गयो । एक बार जौ ताँहि निहारो । तन मन धन ताँ पैं सभ वारो ॥ ६ ॥ बिनु सुधि भए दूत तिह चीनो । अंड फोरि आसन पर दीनो । भूखन बस्त्र पाग तिह हरी । मूरख कौ सुधि कछू न परी ॥ ७ ॥ मदरा की अति भई खुमारी । प्रात लगे जढ़ बुधि न सँभारी । बीती रैनि भयो उजियारो । तन मन अपनो आप सँभारो ॥ ८ ॥ हाथ जाइ आसन पर परियो । चौकि बचन तब मूड़ उचरियो । निकट आपनो दूत बुलायो । तिन कहि भेद सकल समुझायो ॥ ९ ॥ ॥ दोहरा ॥ मत्त भए तुम मद भए सक्यो कछू नहि पाइ । मम प्रसाद तुमरे सदन आयो मोहनराइ ॥ १० ॥ ॥ चौपई ॥ मोहन तुमको अधिक रिझायो । भाँति भाँति करि भाव लडायो । तब तुम कछु शंका न बिचारी । भूखन बस्त्र पाग दै डारी ॥११॥ तासों अधिक केल तैं कीनो । भाँति भाँति ता कौ रस लीनो । बीती रैनि प्रात जब भयो । तब तुम ताँहि बिदा करि

और उसने इसे सच मान लिया । उसने लोगों को भेजकर मद्यपान किया और मनुष्य से पशु के स्तर पर आ गया ॥ ५ ॥ मेरा मन तो मोहन के हाथों बिक चुका है और मैं तभी से उसका दास हो गया हूँ । यदि मैं एक बार भी तुम्हें देख लूँ तो तन-मन-धन सब न्योछावर कर दूँ ॥ ६ ॥ जब दूत ने उसे शराब के नशे में बेसुध देखा तो उसके बिस्तर पर एक (मुर्गी का) अंडा फोड़ दिया । उसके आभूषण, वस्त्र, पगड़ी आदि चुरा ली और उस मूर्ख को कुछ भी पता नहीं चला ॥ ७ ॥ मदिरा की खुमारी ने उस मूर्ख को प्रातःकाल तक बेसुध बनाए रखा । जब रात बीतने पर उजाला हुआ तो उसने अपना तन-मन सँभाला ॥ ८ ॥ जब उसका हाथ बिस्तर पर पड़ा तो मूर्ख चौंककर कहने लगा । उसने अपने दूत को पास बुलाया और सारा भेद पूछने पर उसने समझाया ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ तुम तो मदमस्त थे इसलिए कुछ भी नहीं कर सके हालाँकि मोहनराय मेरी मेहनत से तुम्हारे घर में आया था ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ मोहन ने विभिन्न प्रकार के हाव-भावों से तुमको अत्यधिक प्रसन्न किया । तब तुमने शंका-रहित होकर अपने आभूषण, वस्त्र और पगड़ी आदि सब उसे दे दिए ॥ ११ ॥ उससे तुमने अत्यधिक केलिक्रीड़ा की और अनेकों प्रकार से रसास्वादन किया । जब

दयो ॥ १२ ॥ तब तें अधिक मत्त ह्वै सोयो । परें परें आधो दिन खोयो । मिटि मद गयो जबै सुध पाई । तब मोकौ तैं लयो बुलाई ॥१३॥ यह सुनि बात रीझि जढ़ गयो । छोरि भंडार अधिक धनु दयो । भेद अभेद कछु नैकु न कीनो । लूट्यो हुतो लूटि धनु लीनो ॥ १४ ॥ यह चरित्र वह निति बनावै । मदरो प्याइ अधिक तिह स्वावै । सुधि बिनु भयो ताँहि जब जानै । लेत उतारि जु कछु मनु मानै ॥ १५ ॥ ॥ दोहरा ॥ ऐसे करै चरित्र वहु सकै मूड़ नहि पाइ । मदरो अधिक पिवाइकै मूँड मूँडि लै जाइ ॥ १६ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पाँच चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १०५ ॥ १९६० ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ छटि चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ चार यार मिलि मता पकायो । हम कौ भूखि अधिक संतायो । ता ते जतन कछू अब करियै । बकरा या मूरख को हरियै ॥ १ ॥ कोस कोस लगि ठाढे भए । मन

रात बीती तो प्रातः तुमने उसे विदा कर दिया ॥ १२ ॥ तब से तुम मस्त होकर सो रहे हो और पड़े-पड़े ही तुमने आधा दिन खो दिया है। जब नशा खत्म हुआ तो तुमने मुझे बुलाया है ॥ १३ ॥ यह बात सुनकर मूर्ख प्रसन्न हो गया और उसने भंडार से काफ़ी धन निकालकर उसे दिया। उसनें भेद-अभेद कुछ नहीं जाना और लूटा हुआ धन लूट लिया ॥ १४ ॥ अब वह नित्य यही प्रपंच करने लगा और मदिरा पिलाकर बेग को सुलाने लगा। जब वह जान जाता था कि अब वह बेसुध हो गया है, तो उसका जो मन मानता था उतार लेता था ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार के प्रपंच का रहस्य वह मूर्ख नहीं समझ पाता था और यह उसे अत्यधिक मदिरा पिलाकर मूँड़-मूँड़कर इसका सब धन ले जा रहा था ॥ १६ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में एक सौ पाँचवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १०५ ॥ १९६० ॥ अफजू ॥

एक सौ छठवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ चार मित्रों ने मिलकर सलाह की कि हम लोगों को बहुत अत्यधिक भूख सता रही है अतः कुछ किया जाना चाहिए और इस मूर्ख का बकरा चुरा लेना चाहिए ॥ १ ॥ वे सभी एक-एक कोस पर खड़े हो गए

मैं इहै बिचारत भए । वह जा के आगे ह्वै आयो । तिन तासौ इह भाँति सुनायो ।। २ ।। कहाँ सु ऐहि काँधो पै लयो । का तोरी मति को ह्वै गयो । याको पटकि धरनि पर मारो । सुख (मू०ग्रं०६५३) सेती निज धाम सिधारो ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। भलौ मनुक्ख पछानि कै तौ हम भाखत तोहि । कूकर तैं काँधै लयो लाज लगत है मोहि ।। ४ ।। ।। चौपई ।। चारि कोस मूरख जब आयो । चहूँअन यौ बच भाखि सुनायो । साचु समुझि लाजत चित भयो । बकरा स्वानि जानि तजि दयो ।। ५ ।। ।। दोहरा ।। तिन चारौ गहि तिह लयो भखियो ताकह जाइ । अजि तज भजि जड़ि घर गयो छल नहि लख्यो बनाइ ।। ६ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ छटि चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १०६ ।। १९६६ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ सात चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। जोधनदेव जाट इक रहै । मैनकुअरि तिह त्रिय जग अहै । जोधनदेव सोइ जब जावै । जार तीर तब

और मन में इरादा कर लिया । वह जिसके भी सामने जाता, वही उसे यह कहता ।। २ ।। यह कंधे पर तुमने क्या उठा रखा है, तुम्हारी मति को क्या हो गया है ? इसे धरती पर पटको और सुखपूर्वक अपने घर जाओ ।। ३ ।। ।। दोहा ।। तुम्हें भला व्यक्ति समझकर हम यह कह रहे हैं, और तुम कंधे पर कुत्ता लिये जा रहे हो, इधर हमें लज्जा का अनुभव हो रहा है ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। जब चार कोस तक वह मूर्ख आया तो चोरों ने उसे यही कहा । उसने सच मानकर चित्त में लज्जा का अनुभव किया और बकरे को कुत्ता समझकर फेंक दिया ।। ५ ।। ।। दोहा ।। उन चारों ने उसे पकड़ लिया और घर जाकर खा गए । यह मूर्ख बकरा छोड़ गया और इसने इस छल को नहीं समझा ।। ६ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ छठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १०६ ।। १९६६ ।। अफजू ।।

एक सौ सातवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। जोधनदेव जाट की स्त्री का नाम मैनकुँवरि था ।

त्रिया सिधावै ॥ १ ॥ जब सोयो जोधन बडभागी । तब ही मैनकुअरि की जागी । पति कौ छोरि जार पै गई । लागी सांधि द्रिशटि पर गई ॥ २ ॥ तब ग्रहि पलटि बहुरि वहु आई । जोधनदेवहि दयो जगाई । तेरी मत्ति कौनें कहु हरी । लागी संधि द्रिशटि नहि परी ॥ ३ ॥ जोधन जगत लोग सभ जागे । ग्रहि ते निकसि चोर तब भागे । केते हने बाँधि कई लए । केते त्रसत भाजिकै गए ॥ ४ ॥ जोधनदेव प्रफुल्लित भयो । मेरौ धाम राखि इह लयो । त्रिय की अधिक बडाई करी । जढ़ कौ कछू खबर नहिं परी ॥ ५ ॥

॥ दोहरा ॥ धाम उबार्‌यो आपनो कीनो चोर खुआरु । मीत जगायो आनि कै धंनि सु मैनकुआरि ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ सात चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १०७ ॥ १९७२ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ आठ चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ एक दिवस स्री कपिल मुनि इक ठाँ कियो

जोधनदेव जब सो जाता था तो यह स्त्री अपने प्रेमी के पास चली जाती थी ॥ १ ॥ जब जोधन सो गया तो मैनकुंवरि जागी । पति को छोड़कर वह प्रेमी के पास गई । आते पर उसे घर में सेंध लगी हुई दिखाई पड़ गई ॥ २ ॥ तब वह घर पलटी और उसने जोधनदेव को जगा दिया और कहा कि तेरी मति कहाँ गई है ? क्या तुझे सेंध लगी दिखाई नहीं देती ॥ ३ ॥ जोधन के जागते ही सब लोग जग गए और चोर घर से निकलकर भाग खड़े हुए । कितने ही मार दिए, कई बाँध लिये और कई डरकर भाग गए ॥४॥ जोधनदेव प्रसन्न हो उठा कि स्त्री ने मेरा घर बचाया । उसने स्त्री की अत्यधिक प्रशंसा की, परन्तु वह मूर्ख रहस्य को नहीं समझ सका ॥५॥ ॥दोहा॥ अपना घर बचाया, चोरों को परेशानी में डाला, अपने मित्र को जगाया; ये सब कार्य करनेवाली मैनकुँवरि धन्य है ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ सातवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १०७ ॥ १९७२ ॥ अफजू ॥

एक सौ आठवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ एक दिन कपिल मुनि, एक स्थान पर जाने पर, एक अप्सरा

पयान । हेरि अपसरा बसि भयो सो तुम सुनहु सुजान ।। १ ।। रंभा नामा अपसरा ता के रूप निहारि । मुनि को गिरयो तुरतु ही बीरज भूमि मझार ।। २ ।। गिर्यो रेति मुनि को जबै रंभा रह्यो अधान । डारि सिंधु सरिता तिसै सुरपुर कर्यो पयान ।। ३ ।। ।। चौपई ।। बहत बहत कन्या तह आई । आगे जहाँ सिंध को राई । ब्रहमदत्त सो नैन निहारी । तह ते काढि (मू०ग्रं०६५४) सुता करि पारी ।। ४ ।। ससिया संखया ता की धरी । भाँति भाँति सों सेवा करी । जब जोबन ता को ह्वै आयो । तब राजै इह मंत्र पकायो ।। ५ ।। पुंनू पातिशाह कौ चीनो । पठै दूत ता को इक दीनो । पुंनू बचन सुनत तह आयो । राव ब्याह को बिटत बनायो ।। ६ ।। ।। दोहरा ।। म्रिगीअहि ते जाके सरस नैन बिराजत स्याम । जीति लई ससि की कला याते ससिया नाम ।। ७ ।। ।। चौपई ।। पुर के लोक सकल मिलि आए । भाँति भाँति बादित्र बजाए । मिलि मिलि गीत सभै सुभ गावहि । ससियहि हेरि सभै बलि जावहि ।। ८ ।। ।। दोहरा ।। नाद नफीरी कान्हरे दुंदभि बजे अनेक । तरुनि ब्रिधि बाला जिती

को देखकर उसके वश में हो गए; अब, हे सज्जनो ! उसे सुनो ।। १ ।। रम्भा नामक अप्सरा को देखकर तुरन्त ही मुनि का वीर्यपात हो गया ।। २ ।। जब मुनि का वीर्यपात आ तो रम्भा ने उसे सँभाला और उससे उसे कन्या पैदा हुई जिसे वह सिंधु नदी में बहाकर स्वयं पुनः स्वर्गलोक चली गई ।। ३ ।। ।। चौपाई ।। बहती-बहती कन्या वहाँ आ पहुँची जहाँ सिंधु का राजा था। ब्रह्मदत्त ने उसे निकाला और पुत्री की तरह पाला ।। ४ ।। उसका नाम शशिकला रखा और विभिन्न प्रकार से उसकी सेवा की। जब वह युवती हो गई तो राजा ने सोचा ।। ५ ।। पुन्नू राजा को उसने (उसके विवाह योग्य) पहचानकर दूत भेजकर उसे बुला लिया। पुन्नू यह बात सुनते ही आ गया कि राजा ने बेटी के ब्याह का उपक्रम किया है ।। ६ ।। ।। दोहा ।। उसके काले नेत्र मृगी के समान शोभायमान हैं। उसने शशि की कलाओं को भी जीत लिया है, इसी से उसका नाम शशिकला है ।। ७ ।। ।। चौपाई ।। नगर के सभी लोग भाँति-भाँति के वाद्य बजाते हुए वहाँ आ पहुँचे। सभी मिलकर मंगल गीत गा रहे थे और शशिकला को देखकर न्योछावर हो रहे थे ।। ८ ।। ।। दोहा ।। नाद, नफ़ीरी, कानरे एवं अनेकों दुंदुभियाँ बजने लगीं। तरुणी, वृद्ध, बालिका कोई भी घर में बैठी नहीं रही अर्थात् सभी उसे देखने के लिए

ग्रहि महि रही न एक ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ अबला रही धाम कोऊ नाहीं। हेरि रूप दुहूँअन बलि जाहीं। इन भीतर पुंनू कहु कोहै। सबज्ञ धनुख जाके कर सोहै ॥ १० ॥ ॥ सवैया ॥ ढोल म्रिदंग बजे सभही घर यौ पुर आजु कुलाहल भारी। गावत गीत बजावत ताल दिवावत आवति नागरि गारी। भेर हजार बजी इक बार महाँ छबियार हसैं मिलि नारी। देहि असीस कहैं जगदीस इह जोगी जियो जुग चारि तिहारी ॥ ११ ॥ रूप अपार लखैं न्रिप को पुरबासिन कौ उपज्यो सुख भारो। भीर भई नर नारिन की सभहूँ सभ शोक बिदा करि डारो। पूरन पुन्य प्रताप ते आजु मिल्यो मन भावत मीत पियारो। आवत जाँहि कहै मन माहि सु बाल जिओ पति लाल तिहारो ॥ १२ ॥ केसरि अंग बरातिन के छिरके मिलि बाल सु आनंद जीके। छैलनि छैल छके चहूँ ओरन गावत गीत सुहावत नीके। राज को रूप लखे अति ही गन राजन के सभ लागत फीके। यौ मुसकाहि कहैं मन माँहि सभै बलि जाहि पियारी के पीके ॥१३॥ सात सुहागनि लै बटनो घसि लावत है पिय के तन मै। मुरछाइ लुभाइ रही अबला लखि लालची लाल तिसी छिन मै। न्रिपराज

बाहर आ गईं ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ कोई भी स्त्री घर में नहीं रही और सभी उसका रूप-सौंदर्य देखकर न्योछावर हो रही थीं। इन सब में पुन्नू वह है जिसके हाथ में हरा धनुष शोभायमान है ॥ १० ॥ ॥ सवैया ॥ ढोल-मृदंग बज रहे हैं और नगर में भारी कोलाहल है। ताल बजाते, गीत गाते, गालियाँ देते नगरवासी चले आ रहे हैं। हज़ारों भेरियाँ एक साथ बज उठी हैं और सुन्दर छविवाली स्त्रियाँ हँस रही हैं। सभी आर्शीवाद दे रही हैं और प्रार्थना कर रही हैं कि हे ईश्वर! यह जोड़ी चिरंजीवी हो ॥ ११ ॥ राजा का सौंदर्य देखकर नगरवासी प्रसन्न हो उठे। नर-नारियों की भीड़ लग गई और सबने अपने-अपने कष्टों को विदाई दे दी। आज ही पुण्य-प्रताप से मनभावन प्रियतम मिला है। सभी आते-जाते कह रहे हैं कि हे बालिके! तुम्हारा पति चिरंजीवी हो ॥ १२ ॥ बालिकाओं ने आनंदित हो बरातियों पर केसर छिड़का। तरुण-तरुणियाँ चारों ओर प्रसन्न हैं और सुन्दर गीत गा रहे हैं। राजा के रूप को देखकर राजाओं के झुंड फीके लग रहे हैं। सभी मुस्कुराकर कह रही हैं कि प्यारी के प्रियतम पर हम न्योछावर हैं ॥१३॥ सात सुहागिनें उबटन लाकर प्रिय के तन पर लगाती हैं और उस प्यारे को

सु राजत है तिन मो लखि यौ उपमा उपजी मन मै । सजि साज बिराजत है सु मनो निसि राजन छत्रन के गन मै ॥ १४ ॥ सिधु के संख सुरेस के आवज सूर के नाद सुनै दरवाजे । मोजन के मुरली मधुरी (मू०ग्रं०६५५) धुनि देवन के बहु दुंदभि बाजे । जीत के लोग महेसन के मुख मंगल के ग्रहि मंदल राजे । ब्याह तहीं न्रिप राज तबै अति आनंद के अति आनक बाजे ॥ १५ ॥ ब्याह भयो जबही इह सौ तब बात सुनी न्रिप की बरनारी । चौकि रही अति ही चित मै कछु और हुती अब और बिचारी । मंत्र करे लिखि जंत्र घने अरु तंत्रन सो इह बात सुधारी । लागी उचाट रहै चित मै कबहूँ न सुहाइ पिया को पियारी ॥ १६ ॥ ॥ चौपई ॥ यौ उचाट अति ही तिह लागी । नीद भूखि सिगरी ही भागी । सोत उठै चकि कछु न सुहावै । ग्रहि को छोरि बाहरो धावै ॥ १७ ॥ ॥ दोहरा ॥ तब ससिया अति चमकि चित ता कौ कियो उपाइ । सखी जिती स्यानी हुती ते सभ लई बुलाइ ॥ १८ ॥ ॥ चौपई ॥ तब सखियन यह कियो उपाई । जंत्र मंत्र करि लयो बुलाई । ससिया संग प्रेम अति भयो । पहली त्रिय परहरि करि दयो ॥ १९ ॥ भाँति भाँति तासो रति मानै ।

देखकर लालचवश तत्क्षण मूर्च्छित हो जाती हैं । उसे सम्राट् के रूप में देखकर लगता है मानो चन्द्रमा रात्रि में ताराओं के मध्य विराजमान हो ॥ १४ ॥ सिंधु-नरेश के दरवाज़े पर शंख, मुरली, दुंदुभियाँ आदि वाद्य बजने लगे । (दोनों) राजाओं के घर मंगल-वाद्य बजने लगे । राजा के ब्याह में आनन्द के ढोल बजने लगे ॥ १५ ॥ जब इधर (पुन्नू का) विवाह हो गया तो राजा की (पहली) स्त्रियों ने भी सुना । वे सब चौंक उठीं और कुछ अन्य ही सोचने लगीं । उन्होंने मंत्र-यंत्र और तन्त्र से बात को सुधारना चाहा ताकि यह (नई पत्नी) का मन सदैव उचाट रहे और यह कभी भी प्रियतम को प्यारी न लगे ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसका मन उचाट हो गया और उसकी नींद, भूख आदि उड़ गई । वह सोती-सोती चौंककर उठ जाती थी, उसे कुछ अच्छा नहीं लगता था और वह घर को छोड़कर बाहर की ओर भागती थी ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ तब शशि ने भी मन में क्रुद्ध हो उपाय किया और भी चतुर सखियाँ थीं उनको उसने बुला लिया ॥ १८ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब सखियों ने यंत्र-मंत्र-बल से राजा को आकृष्ट किया । राजा का प्रेम अब शशिकला के साथ हो गया और उसने पहली स्त्रियों का त्याग कर दिया ॥१९॥

बरस दिवस को इक दिन जानै । ता पर मत्त अधिक त्रिप भयो। ग्रहि को राज बिसरि सभ गयो ॥ २० ॥ ॥ दोहरा ॥ एक तरुनि दूजै चतुरि तरुन तीसरे पाइ । चहत लगायो उरन सो छिनकि न छोर्यो जाइ ॥ २१ ॥ ॥ चौपई ॥ रैनि दिवस ताँसो रति मानै । प्रानन ते प्यारे पहिचानै । लागी रहत तवन के उर सो । जैसे भाँति माखिका गुर सों ॥ २२ ॥ ॥ सवैया ॥ लाल को ख्याल अनूपम हेरि सु रीझ रही अबला मन माही । छैलनि छैल छके रस सो दोऊ हेरि तिनै मन मै बलि जाही । कामकसी सु ससी ससि सी छबि मीत सो नैन मिले मुसकाही । यौ डहकी बहकी छबि यार पीयाहूँ को पाइ पतीजत नाही ॥ २३ ॥ ॥ कबित्त ॥ जोबन के जोर जोरावरी जागी जालिम सो जग ते अन्यारी यो बिसारी सुभि चीतकी । निसिदिन लागियो रहत तासो छबि की ज्यों एकै ह्वै गई सु मानो ऐसी राजनीत की । अपने ही हाथन बनावत शिगार ताके पास की सखी न कौन नैकहू प्रतीत की । अंग लपटाइ मुखु चापि बलि जाइ ताके ऐसे ही पियारी जानै प्रीतम सो प्रीत

अब वह पूरे वर्ष को-मात्र एक दिन मानकर उसके साथ रतिक्रीड़ा में संलग्न रहने लगा। राजा उस पर अत्यधिक आसक्त हो गया और घर के राज-काज का सब हाल भूल गया ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ एक तो तरुणी, दूसरी चतुर और तीसरे वहाँ तरुण का साथ था; वह तो उसे सदैव हृदय से लगाए रखता था उसे तनिक भी नहीं छोड़ता था ॥ २१ ॥ ॥ चौपाई ॥ रात-दिन उससे रति-क्रीड़ा करती और प्राणों से भी अधिक प्यारा मानती। वह उसी प्रकार उसके वक्षस्थल से सदैव लगी रहती जैसे मक्खी गुड़ से चिपकी रहती है ॥ २२ ॥ ॥ सवैया ॥ उस प्रिय का विचार मन में करके वह स्त्री (शशि) मन ही मन प्रसन्न होती है। स्त्री-पुरुष सब उन्हें देखकर मन ही मन न्योछावर होते हैं। काम से ग्रस्त शशि भी अपने प्रियतम से नयन मिलते ही मुस्कुराती है। वह तो इतनी बावली हो गई है कि प्रियतम को पाकर भी अघा नहीं रही है ॥ २३ ॥ ॥ कवित्त ॥ नवयौवन के बल से उस महाबली का बल ऐसा जागा कि उसने जगत्-भलाई विस्मरित कर दी (और अपनी ही केलि-क्रीड़ा में लीन हो गया)। वह दिन-रात उसी के सौंदर्य में ऐसे लीन रहने लगा कि मानों वह और राज-काज एक ही हो। वह सखियों की, दासियों की परवाह किए बिना अपने ही हाथ से उसका श्रृंगार करने लगा। वह भी अंगों से, मुख से उसके साथ लिपट-लिपट जाती थी और इसी प्रकार उससे

की ॥ २४ ॥ ॥ दोहरा ॥ रूप लला को लालची लोचनलाल अमोल । बंक बिलोकनि (मू०ग्रं०६५६) खरच धनु मो मन लीनो मोल ॥ २५ ॥ ॥ स्वैया ॥ रीझ रही अबला मन मै अति ही लखि रूपसरूप की धानी । स्याम छुटी सिगरी सभ की लखि लाल को खयाल भई अति यानी । लाज तजी सजि साज सभै लखि हेरि रही सजनी सभ स्यानी । हौ मन हेरि रही न हट्यो बिनु दामन मीत के हाथ बिकानी ॥ २६ ॥ ॥ ससिया बाच ॥ अंग सभै बिनु संग सखी शिव को अरि आनि अनंग जग्यो । तब ते न सुहात कछू मुहि को सभ खान औ पान सियान भग्यो । झटकै पटको चित ते झट दै न छुटे इह भाँति सो नेह लग्यो । बलि हौ जु गई ठग कौ ठगनै ठग मै न ठग्यो ठग मोहि ठग्यो ॥ २७ ॥ ॥ कबित्तु ॥ देखे मुख जीहौ बिनु देखे पियहूँ न पाणी तात भात त्याग बात इहै है प्रतीत की । ऐसो प्रन लैहौं पिय कहै सोई काज कैहौं अतिही रिझैहौं यहै सिच्छा राजनीत की । जौ कहै बकैहौं कहै पानी भरि आनि दैहौं हेरे बलि जैहौं सुन सखी बातचीत की । लगन निगोडी लागो जाते नीद भूखि भागी प्यारो मीत मेरो हौ पियारी अति मीत

प्रेम करती थी ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥ इधर प्रियतम का रूप-सौंदर्य भी ललचानेवाला था । उसके नेत्र अमूल्य थे । मैंने भी उससे मन को अपनी बाँकी चितवन रूपी धन को खर्च का मोल लिया है ॥ २५ ॥ ॥ सवैया ॥ वह स्त्री भी उसका रूप-सौंदर्य देखकर रीझ रही थी । उसके ख्याल में समस्त सखियाँ डूब-उतरा रही हैं और लज्जा का त्याग कर सभी उसे देख रही हैं । हे सखी ! मैं अपने मन को बहुत मना कर रही थी पर यह नहीं माना और बिना दाम ही उसके हाथ बिक गया ॥ २६ ॥ ॥ शशि उवाच ॥ उसके विरह में हे सखी ! सबके अंगों में कामदेव जग रहा है । तब से मुझे खान-पान कुछ अच्छा नहीं लगता और मेरी चतुरता भाग खड़ी हुई है । भटकने-पटकने पर भी उससे लगा हुआ स्नेह छूटता नहीं । वैसे तो मैं ठग को ठगने गई थी पर ठग ने मुझे ही ठग लिया है ॥ २७ ॥ ॥ कवित्त ॥ मैं तो उसको देखकर 'जीऊंगी और बिना उसे देखे पानी भी नहीं पीऊँगी । मैं तो ऐसा प्रण लूंगी कि जो प्रियतम कहेगा वही कार्य करूँगी । यही राजनीति की भी शिक्षा है । जो कहेगा वही कहूँगी, वह यदि पानी भरकर लाने को कहेगा तो पानी भी भर लाऊंगी । मैं तो उसकी बातचीत सुनकर भी बलिहार जाऊँगी । जब से मेरी लगन उससे लगी है, नींद-भूख भाग गई है । मैं उस प्यारे की हूँ और वह

की ॥ २८ ॥ ॥ चौपई ॥ यह सभ बात तवन सुनि पाई ।
पहिले ब्याहि धाम मै आई । यासौ प्रीति सुनत रिसि भरी ।
मसलत जोरि सूर निजु करी ॥ २९ ॥ जनमे कुअरि बाप के
रही । ह्वै बेरकत मेखला गही । घात आपने पति को
करिहों । सुत के छत्र सीस पर धरिहों ॥ ३० ॥ जनु ग्रहि
छोरि तीरथन गई । मानहु रहत चंद्र ब्रत भई । या सुहाग
ते राँडै नीकी । याको लगत राजेश्वरि फीकी ॥ ३१ ॥
॥ दोहरा ॥ खिलत अखेटक जो हनै हमरे पति को कोइ ।
तो सुनिकै ससियान के जियत न बचिहै सोइ ॥ ३२ ॥
॥ चौपई ॥ बैठि मंत्र तिन यहै पकायो । अमित दरबु दै दूत
पठायो । खिलत अखेटक राव जबै है । तब मेरो उर मै सर
खैहै ॥ ३३ ॥ ताको कालु निकट जब आयो । पुंनू शाह
सिकार सिधायो । जब गहिरे बन बीच सिधार्यो । तनि धनु
बान शत्रु तब मार्यो ॥ ३४ ॥ लागत तीर बीर रिसि भरियो ।
तुरै धवाइ घाइ तिह करियो । ताको मारि आपु पुनि मरियो ।
सुरपुर माँझि पयानो करियो ॥ ३५ ॥ ॥ दोहरा ॥ मारि

प्यारा मेरा है ॥ २८ ॥ ॥ चौपाई ॥ यह सब जब पहली स्त्री ने देखा-सुना तो
उसने सोचा कि पहले तो मैं विवाह करके इस घर में आई थी । वह स्नेह
भरकर उसके प्रेम की बातें सुनती थी । उसने शूरवीरों को इकट्ठा करके
सलाह बनाई ॥ २९ ॥ मैं अपने पिता के यहाँ रह लूँगी और विरक्त होकर
गुदड़ी धारण कर लूँगी । मैं अपने पति को मार डालूँगी और अपने पुत्र को
राजा बना दूँगी ॥ ३० ॥ मैं समझ लूँगी कि घर छोड़कर मैं तीर्थ पर रह रही
हूँ और चन्द्र-व्रत धारण किए हूँ । इस सुहाग से तो मैं विधवा ही भली हूँ ।
इसकी राजशाही तो अब मुझे फीकी लगने लगी है ॥ ३१ ॥ ॥ दोहा ॥ यदि
आखेट खेलते मेरे पति को कोई मार डाले तो इसे सुनकर शशिकला भी जीवित
नहीं बचेगी ॥ ३२ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने बैठकर यही मंत्र पकाया और
अपार द्रव्य देकर एक दूत को भेजा । दूत ने कहा कि राजा जब शिकार खेल
रहा होगा तो मेरा तीर उसकी छाती में लगेगी ॥ ३३ ॥ पुन्नू शाह का काल
जब पास आ गया तो वह शिकार को चल पड़ा । जब वह गहरे वन में पहुँचा
तो शत्रु ने तानकर बाण मारा ॥ ३४ ॥ बाण लगते ही वीर क्रोध से भर
उठा और घोड़ा दौड़ाकर उसने उसे भी मार डाला । उसे मारकर आप भी
मर गया और स्वर्ग सिधार गया ॥ ३५ ॥ ॥ दोहा ॥ उसे मारकर राजा
धरती पर गिर पड़ा । सेवकों ने पास पहुँचकर उसे सँभाला ॥ ३६ ॥

तवन को रावजी पर्‌यो धरनि पर आइ। (मू०पं०६५७) भ्रितन
निकट पहूँचि कै लयो गरे सौ लाइ ॥ ३६ ॥ ॥ चौपई ॥ ऐसो
हाल चाकरन भयो। जनुक धनी न्रिधनी ह्वै गयो। न्रिप
दै कहा धाम हम जैहैं। कहा रानियहि बक्त्र दिखैहैं ॥ ३७ ॥
नभ बानी तिनको तब भई। भ्रित सुधि कहा तुमारी गई।
जोधा बडो जूझि जह जावै। रन छित तें तिन कौन
उचावै ॥ ३८ ॥ ॥ दोहरा ॥ ता ते या की कबर खनि गाडहु
इही बनाइ। अस्व बस्त्र लै जाहु घर देहु सँदेसो जाइ ॥ ३९ ॥
बानी सुनि गाड्‌यो तिसै भए पवन भ्रित भेस। अस्व बस्त्र
लै लालके बालहि दयो सँदेश ॥ ४० ॥ ॥ चौपई ॥ बैठी
बाल जहाँ बडभागी। चित्त चोर की चितवनि लागी। तब
लौ खबरि चाकरन दई। अरुन हुती पियरी ह्वै गई ॥ ४१ ॥
॥ दोहरा ॥ चड़ि बिवान तह त्रिय चली जहा हन्यो निजु पीय।
कै लै ऐहौ पीय कौ कै तह देहौ जीय ॥ ४२ ॥ ॥ चौपई ॥ चली
चली अबला तह आई। दाब्यो जहाँ मीत सुखदाई। कबर
निहारि चक्रित चित भई। ताँही बिखै लीन ह्वै गई ॥ ४३ ॥
॥ दोहरा ॥ मरन सभन के मूँड पै सफल मरन है ताहि।

॥ चौपाई ॥ नौकर तो ऐसे हो गए मानों कोई धनी निर्धन होने पर व्याकुल हो उठता हो। राजा को गँवाकर हम लोग घर कैसे जायँगे और रानी को क्या मुँह दिखाएँगे ॥ ३७ ॥ तब उनकी आकाशवाणी हुई कि हे सेवको ! तुम लोगों की सुधि कहाँ गई है। जब कोई योद्धा जूझ जाता है तो उसे युद्धस्थल से कौन उठाता है ॥ ३८ ॥ ॥ दोहा ॥ इसलिए इसकी क़ब्र बनाकर इसे यहीं गाड़ दो और इसका अश्व, वस्त्रादि घर ले जाकर इसकी खबर दे दो ॥ ३९ ॥ वाणी सुनकर सेवकों ने उसे गाड़ दिया और पवन-वेग से अश्व, वस्त्र लेकर आकर बालिका (शशिकला) को संदेश दिया ॥ ४० ॥ ॥ चौपाई ॥ बाला उस चित्त-चोर की चितवन में लीन जहाँ बैठी थी, वहाँ आकर सेवकों नें खबर दी। खबर सुनते ही उसका लाल रंग पीला पड़ गया ॥ ४१ ॥ ॥ दोहा ॥ वह पालकी पर सवार हो वहाँ से यह सोचकर प्रिय के वधस्थान की ओर चली कि या तो प्रियतम को वापस ले आऊंगी अथवा स्वयं भी प्राण त्याग दूंगी ॥ ४२ ॥ ॥ चौपाई ॥ चलते-चलते वह वहाँ पहुँची जहाँ मीत दबाया हुआ दिखाया गया। क़ब्र को देखकर वह स्तंभित हो गयी और उसी में लीन हो गई ॥ ४३ ॥ ॥ दोहा ॥ मरना तो सबका है, पर मरना उसका सफल है जो क्षण भर में प्रिय की प्रीत में तन त्याग

तनक बिखै तन कौ तजै हिय सों प्रीति बनाइ ।। ४४ ।। तन गाड्यो जह तुम मिले अंग मिल्यो सरबंग । सभ कछु तजि ग्रहि को चल्यो प्रान पियारे संग ।। ४५ ।। पवन पवन आनल अनल नभ नभ भू भू संग । जल जल के संग मिलि रह्यो तनु पिय के सरबंग ।। ४६ ।। ।। चौपई ।। पिय हित देह तवन त्रिय दई । देवलोक भीतर लै गई । अरधासन बासव तिह दीनो । भाँति भाँति सौ आदरु कीनो ।। ४७ ।। ।। दोहरा ।। देव बधून अपचछरन लयो बिवान चड़ाइ । जैजैकार अपार हुअ हरखे सुनि सुरराइ ।। ४८ ।। मछरी औ बिरहीन के बध को कहा उपाइ । जल पिय तै बिछुराइ यहि तनिक बिखै मरि जाइ ।। ४९ ।। पाप नरक ते ना डरी करी सवति की कानि । अति चित कोप बढाइकै पिय लगवायो बान ।। ५० ।। ।। चौपई ।। सवति साल अति ही चित धार्यो । निजु पति सो (मू०ग्रं०९५८) सायक सौ मार्यो । या सुहाग ते राँडे रहिहौ । प्रभ को नाम निस्ति उठि कहि हौ ।। ५१ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ आठ चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १०८ ।। २०२३ ।। अफजूं ।।

दे ।। ४४ ।। तन गाड़ने से जहाँ तुम मिलते हो या सोचकर उसने अपने अंग उसके अंगों से मिला दिए । और उसके प्राण अब सब कुछ छोड़कर उस प्राण प्यारे के साथ हो लिये ।। ४५ ।। पवन से पवन, अग्नि से अग्नि, आकाश से आकाश, मिट्टी मिट्टी से और जल जल के साथ मिलकर सभी एक-दूसरे में लीन हो गए ।। ४६ ।। ।। चौपाई ।। अपने प्रियतम के हित में उस स्त्री ने शरीर त्याग दिया और उसे देवलोक में ले गई । इन्द्र ने उसे आधा आसन दिया और विभिन्न प्रकार से उसका आदर किया ।। ४७ ।। ।। दोहा ।। देव-वधुओं, अप्सराओं ने उसे विमान पर चढ़ा लिया, उनकी जय-जयकार की जिसे सुनकर देवराज (इन्द्र) प्रसन्न हो उठे ।। ४८ ।। मछली और विरहिणी के वध का उपाय यह कहा गया कि वे क्रमशः जल और पिय अर्थात् पति से विछोह होने पर शीघ्र प्राण त्यज देंगी ।। ४९ ।। वह पहली स्त्री पाप रूपी नरक से न डरकर सौत से ईर्ष्या करती रही । उसने ही क्रुद्ध होकर अपने पति को बाण मरवाया ।। ५० ।। ।। चौपाई ।। सौत ने अत्यधिक डाह की और अपने ही पति को बाण से मार डाला । उसने यही सोचा कि इस सुहाग से विधवा ही रहूँगी और नित्य प्रभु-नाम का स्मरण करूँगी ।। ५१ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ आठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १०८ ।। २०२३ ।। अफजू ।।

अथ इक सौ नौं चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। यह चलि खबर जात भी तहाँ । बैठि सभा
धरम की जहाँ । सवति साल तिन त्रियहि निहार्यो ।
निजु पति बान साथ हनि डार्यो ।। १ ।। ।। धरमराइ बाच ।।
।। दोहरा ।। जा दुख ते जिन इसत्रियहि निजु पति हन्यो
रिसाइ । ताँ दुख ते तिह मारियै करियै वहै उपाइ ।। २ ।।
।। चौपई ।। उरबसि प्रात हुती सु नगर मैं । नाचत हुती काल
के घर मै । तिह बीरो तिह सभा उचायो । सकल पुरख को
भेख बनायो ।। ३ ।। ।। उरबसी बाच ।। मुशकिल हनन तवन
को गुनियै । जाको अधिक सील जगु सुनियै । जाको चित
चंचल पहिचानहु । ताकौ लई हाथ मै मानहु ।। ४ ।। यौ
कहि निकसि मोल हय लयो । जा पै लाख टका दस दयो ।
चमकि चलै जब तुरै बिराजै । जा कौ निरखि इंद्र हय
लाजै ।। ५ ।। आप अनूप बस्त्र तन धारै । भूखन सकल
जराइ सुधारै । लाँबे केस काँध पर छोरे । जनुक फुलेलहि
जात निचोरे ।। ६ ।। अंजन आँजि आँखियन दयो । जनु

एक सौ नौवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। यह खबर वहाँ पहुँची जहाँ धर्मराज की सभा बैठी थी। सबने सौतियाडाह वाली स्त्री को देखा कि इसने ही अपने पति को बाण से मार डाला है ।। १ ।। ।। धर्मराज उवाच ।। ।। दोहा ।। जिस दुःख से इस स्त्री ने अपने पति को क्रुद्ध हो मार डाला अब ऐसा उपाय किया जाना चाहिए कि इसे भी उसी दुःख से मृत्यु प्राप्त हो ।। २ ।। ।। चौपाई ।। उर्वशी उसी नगर में रहती थी जो धर्मराज के यहाँ नृत्य कर रही थी। उसने यह बीड़ा उठाया और पुरुष वेश धारण किया ।। ३ ।। ।। उर्वशी उवाच ।। जग में जो अधिक शीलवान होता है, उसका मारा जाना कठिन होता है। जिसका चित्त चंचल होता है वह तो मेरे हाथ ही में समझा जाता है ।। ४ ।। यह कहकर उसने एक लाख दस टके का घोड़ा मोल लिया। जब वह घोड़े पर बैठती थी तो वह चमक कर चल पड़ता था और उसे देखकर इन्द्र का घोड़ा की लज्जित होता था ।। ५ ।। समस्त आभूषण जड़ित कर अनुपम वस्त्र धारण किए। लंबे केश कंधे पर छोड़ दिए, मानो वे इत्र में निचोड़े गए हों ।। ६ ।। आँख में अंजन लगाकर तो मानो उसने श्रृंगार को भी लूट लिया हो। बालों

करि लूटि शिगारहि लयो। जुलफ जंजीर जालमै सोहै। सुर नर नाग असुर मन मोहै ॥ ७ ॥ राजत भ्रिकुटि धनुक सी भारी। मोहत लोक चौदहनि प्यारी। जाकी नैक द्रिसटि मै परै। ताकी सकल बुद्धि परहरै ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ खट मुख मुखखट पंच शिव बिधि कीने मुख चारि। उरबसि केरे रूप को तऊ न पायो पार ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ आयुध सकल अंग तिन करे। सोहत सभ साजन सौ जरे। हीरन की मुकता जग सोहै। ससि को मनो तारिका मोहै ॥ १० ॥ ॥ सवैया ॥ आयुध धारि अनूपम सुंदरि भूखन अंग अजाइब धारे। लाल को हार लसै उर भीतरि भान तें जानु बडे छबियारे। मोतिन की लरकै मुख पै म्रिग नैनि फबे म्रिग से कजरारे। मोहत है सभही के चितैं निजु हाथ मनो ब्रिजनाथ सुधारे ॥ ११ ॥ (मू०ग्रं०९५९) छोरि दए कच काँधन ऊपर सुंदर पाग सौ सीस सुहावै। भूखन चारु लसै सभ अंगन भाग भर्यो सभही कह भावै। बाल लखैं कहि लाल तिसै लटकावत अंगन मै जब आवै। रीझत कोटि सुरी असुरी सुधि हेरि छुटै

की लटें ज़ंजीर की तरह शोभायमान हो रही थीं, जिनसे सुर, नर एवं नाग, सबका मन मोहित हो रहा था ॥ ७ ॥ धनुष के समान भृकुटि शोभायमान हो रही थी और वह प्रियतमा चौदह लोकों को मोहित कर रही थी। जिसकी भी दृष्टि उस पर पड़ती थी उसकी बुद्धि का हरण हो जाता था ॥८॥ ॥ दोहा ॥ कार्तिकेय ने छः मुँह, शिव ने पाँच और ब्रह्मा ने चार मुख बना लिये, परन्तु उर्वशी के रूप-सौंदर्य का फिर भी पार न पा सके ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने समस्त शस्त्र सुसज्जित कर लिये जो उसके अंगों पर शोभायमान हो रहे थे। हीरों की माला के समान वह जगत को मोहने लगी और ऐसी लग रही थी पानों तारिका-मंडल में चन्द्र सबको मोहित कर रहा हो ॥ १० ॥ ॥ सवैया ॥ अनुपम शस्त्र पहनकर उसने विचित्र आभूषण पहने। लालों के हार सुशोभित हो रहे थे जो सूर्य से भी अधिक छवि वाले थे। मोतियों की लड़ियाँ उस मृगनयनी के मुख पर छवि प्राप्त कर रही थीं। वे सबका मन मोह रही थीं और ऐसी लग रही थीं मानों व्रजनाथ कृष्ण ने स्वयं पहनाई हों ॥ ११ ॥ उसने सुन्दर बालों को कंधे पर छोड़ दिया और उसके सिर पर पगड़ी शोभा दे रही थी। सुन्दर अंगों पर आभूषण शोभित हो रहे थे और सबको अच्छे लग रहे थे। बालाएँ उसको आते हुए को देखकर प्रसन्न हो रही थी तथा देव-दानव-स्त्रियाँ बेसुध होकर अपने सतीत्व को छोड़ती जा रही

सत हू छुट जावै ॥ १२ ॥ भूखन धारि चड़्यो रथ ऊपरि बाँधि क्रिपान निखंग बनायो। खात तंबोल बिराजत सुंदर देव अदेवन को बिरमायो। बासन नैन सहंस्रन सौ छबि हेरि रह्यो कछु पार न पायो। आपु बनाइ अनूपम को बिधि ऐंचि रह्यो दुति अंतु न पायो ॥ १३ ॥ पान चबाइ भली बिधि साथ जराई जरै हथियार बनाए। अंजन आँजि अनूपम सुंदरि देव अदेव सभै बिरमाए। कंठ सिरीमनि कंकन कुंडल हार सु नारि हिए पहिराए। किनर जच्छ भुजंग दिसा बिदिसान कै लोक बिलोकिन आए ॥ १४ ॥ इंद्र सहस्र बिलोचन सौ अविलोक रह्यो छबि अंतु न आयो। सेख असेखन ही मुख सौ गुन भाखि रह्यो परु पार न पायो। रुद्र पियारी की सारी की कोर निहारन कौ मुख पंच बनायो। पूत कियो खट चारि बिधै चतुरानन याही ते नामु कहायो ॥ १५ ॥ कंचन कीर कलानिधि केहर कोक चपोल करी कुरराने। कलिपाद्रमका अनुजाक भनी बिनु दारिम दामनि देखि बिकाने। रीझत देव अदेव सभै नर देव भए छबि हेरि दिवाने। राजकुमार सो जानि परै तिह

थीं ॥१२॥ आभूषण धारण कर वह रथ पर चढ़ा और उसने कृपाण एवं तरकस बाँधा। पान खाते हुए उसने देव-अदेव सबको भ्रम में डाल दिया। इन्द्र हज़ारों नयनों से देखने पर भी उसकी छवि का अन्त नहीं पा सका। विधाता स्वयं उसको बनाकर उसकी छवि को अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर पा रहा है ॥१३॥ भली प्रकार पान चबाते हुए उसने जड़ाऊ शस्त्र बनवाए। आँखों में सुन्दर काजल डाल उस सुन्दरी नें देव-अदैव सबको भ्रमित कर दिया। उस नारी ने (पुरुष-वेश में) कंठ में मणियाँ, हाथ में कंगन, कुंडल आदि पहने। किन्नर, यक्ष, भुजंगादि तथा दिशा-विदिशाओं से लोग उसे देखने के लिए आए ॥१४॥ इन्द्र हज़ारों नेत्रों से देखने पर भी उसकी छवि का अन्त नहीं पा सका। शेष ने भी अनंत मुखों से उसकी प्रशंसा की पर गुणानुवाद न कर सका। रुद्र ने तो उस प्यारी की साड़ी को देखने के लिए पाँच मुँह बनाए और उसके पुत्र (कार्तिकेय) ने छः मुख और विधि अर्थात् ब्रह्मा ने इसीलिए चार मुँह बनाए और अपना नाम चतुरानन रखवाया ॥ १५ ॥ चन्द्रमा, सिंह, कपोत, हाथी आदि पशु-पक्षी उसे देखकर व्याकुल हो उठे। कल्पवृक्ष, कौस्तुभ मणि, अनार का सौंदर्य और बिजली सभी मानो उसके सौंदर्य के हाथों बिक गए। देव-अदेव, सम्राट् सभी उसकी छवि को देखकर दीवाने हो गए।

बाल के अंग न जात पछाने ।। १६ ।। ।। दोहरा ।। दस सीसन रावन रहै लिखत बीस भुज जाइ । तरुनी के तिल की तऊ सक्यो न छबि कौ पाइ ।। १७ ।। ।। सवैया ।। लालन को सरपेच बध्यो सिर मोतिन की उर माल बिराजै । भूखन चारु दिपैं अति ही दुति देखि मनोजव को मनु लाजै । मोद बढै निरखे चित मै तनिकेक बिखै तन को दुख भाजै । जोबन जोति जगै सु मनो सुरराज सुरान के भीतर राजै ।। १८ ।। छोरे हैं बंद अनूपम सुंदरि पान चबाइ शिंगार बनायो । अंजन आँजि दुहूँ अखियान सु भाल मैं केसरि लाल लगायो । झूमक देत झुकै झुमके कबि राम सुभाव भलो लखि पायो । मानहु सो तिन के मन कौ इक बारहि बाँधि कै जेल चलायो ।। १९ ।। हार शिंगार करो सभ ही तिन केस छुटे (मू॰ग्रं॰९६०) सिर स्याम सुहावैं । जोबन जोति जगै अति ही मुनि हेरि डिगैं तप ते पछुतावैं । किंनर जच्छ भुजंग दिसा बिदिसान की बाल बिलोकन आवैं । गंध्रब देव अदेवन की त्रिय हेरि प्रभा सभ ही बल जावैं ।। २० ।। ।। दोहरा ।। ऐसो भेख बनाइकै तह

उसके अंग बालिका के अंग न लगकर राजकुमार के अंग लग रहे थे ।। १६ ।। ।। दोहा ।। दस सिर और बीस भुजाओं के पराक्रम से रावण भी उस तरुणी के सौंदर्य के तिल मात्र को भी नहीं जान सका ।। १७ ।। ।। सवैया ।। लालों की पेंचदार पगड़ी सिर पर और छाती पर मोतियों की माला विराजमान हो रही है । उसके आभूषणों की दीप्ति को देखकर कामदेव भी लज्जित हो रहा है । उसे देखकर मन में प्रसन्नता बढ़ती है और तन के दुखों का नाश होता है । उसके यौवन के तेज से ऐसा लगता है मानो देवों में इन्द्र शोभायमान हो रहा हो ।। १८ ।। सुन्दरी ने केश खुले छोड़े हैं और पान चबाती हुई उसने सुन्दर श्रृंगार किया है । दोनों आँखों में अंजन डालकर उसने माथे पर केसर का टीका लगाया है । कवि राम के कथनानुसार उसके झुमके झुके हुए उसकी शोभा बढ़ा रहे हैं । उसकी छवि से ऐसा लग रहा था मानो मन को बाँधकर जेल में डाल दिया गया हो ।। १९ ।। हार-श्रृंगार किए हुए उसके शरीर पर खुली केशराशि शोभायमान हो रही थी । उसके यौवन के तेज के सामने मुनियों का तप भी डगमगा जाता है, जिससे वे बाद में पछताते हैं । देश-विदेशों की किन्नरियाँ, यक्ष, भुजंगादि उसे देखने के लिए आ रहे हैं । गंधर्व, देव, अदेव सबकी स्त्रियाँ उसकी प्रभा देखकर न्यौछावर हो रही हैं ।। २० ।। ।। दोहा ।। ऐसा वेश बनाकर वह वहाँ से चली और पलक

ते कर्यो पियान। पलक एक बीती नही तहाँ पहूँची आनि ॥ २१ ॥ ॥ चौपई ॥ एती कथा सु यापै भई। अब कथ चलि तिह त्रिय पै गई। निजुपति मारि राज जिन लयो। लै सु छत्र निजु सुत सिर दयो ॥ २२ ॥ मुखु फीको करि सभन दिखावै। चित अपने मै मोद बढावै। सो पुंनू निजु सिर ते टारो। राज कमैहै पुत्र हमारो ॥ २३ ॥ ॥ दोहरा ॥ सवति साल ते मै जरी निजु पति दयो सँघार। बिधवा ही ह्वै जीविहौ जौ राखे करतार ॥ २४ ॥ ॥ चौपई ॥ सवति साल सिर पै तहि सहियै। बिधवा ही ह्वैकै जग रहियै। धन को टोटि कछू मुहि नाही। ऐस कहै अबला मन माही ॥ २५ ॥ ॥ दोहरा ॥ मन भावत को भोग मुहि करनि न देतो राइ। अबि चित मै जिह चाहि हो लैहो निकट बुलाइ ॥ २६ ॥ ॥ चौपई ॥ बैठि झरोखे मुजरा लेवै। जिह भावै ताको धनु देवै। राजकाज कछु बाल न पावै। खेल बिखै दिनु रैनि गवावै ॥ २७ ॥ एक दिवस तिन त्रिय यो कीयो। बैठि झरोखे मुजरा लीयो। सभ सूरन को बोलि पठायो। यह सुनि भेव उरबसी पायो ॥ २८ ॥ भूखन वहै अंग तिन धरे।

झपकते ही वहाँ आ पहुँची ॥ २१ ॥ ॥ चौपाई ॥ इधर तो इतनी बात हुई और बात उस स्त्री की आती है जिसने अपना पति मारकर राज्य प्राप्त किया था और छत्र अपने पुत्र के सिर पर धारण करवाया था ॥ २२ ॥ वह ऊपर से तो सबको उदास चेहरा दिखाती थी पर मन में प्रसन्न रहती थी। वह सोचती थी कि पुन्नू को मैंने सिर से टाल दिया है और अब मेरा पुत्र ही राज्य करेगा ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ सौतियाडाह में जली हुई मैंने अपने पति को मार डाला। अब मैं प्रभु-इच्छा के अनुरूप विधवा जीवन ही व्यतीत करूँगी ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह स्त्री मन में सोचने लगी कि मुझे धन की तो कमी नहीं है, अब मैं विधवा रहकर ही जीवन व्यतीत करूँगी, क्योंकि अब मुझे सौत का दुख तो नहीं है ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा जीवित रहने पर तो मनपसंद भोग मुझे करने नहीं देता था, अब जिसे मन चाहेगा मैं बुला लिया करूँगी ॥ २६ ॥ ॥ चौपाई ॥ अब वह झरोखे में बैठकर मुजरा देखती थी और जिसे चाहती थी धन देती थी। इस स्त्री को राजकाज का तो कुछ ज्ञान था नहीं; वह खेल में ही दिन-रात व्यतीत करती थी ॥ २७ ॥ एक दिन उस स्त्री ने झरोखे में बैठकर सब शूरवीरों को बुलाया। उर्वशी को भी इस बात का पता लग गया ॥ २८ ॥ उसने वही सुन्दर आभूषण धारण

निजु आलै तैं निकसनि करे। मुशकी ताजी चड़ी बिराजै। निस को मनो चंद्रमा लाजै ॥ २९ ॥ ॥ सवैया ॥ स्याम छुटे कच काँधन ऊपरि सोभित है अति ही घुंघरारे। हार शिंगार दिपै अति चारु सु मो पहि ते नहि जात उचारे। रीझत देव अदेव सभै सु कहा बपुरे नर देव बिचारे। बाल कौ रोक सभै तजि शोक त्रिलोक को लोक बिलोकित सारे ॥ ३० ॥ हार शिंगार बनाइकै सुंदरि अंजन आँखिन आँजि दियो। अति ही तन बस्त्र अनूप धरे जनु कंद्रप को बिनु द्रप्प कियो। कलगी गजगाह बनी घुँघरार चड़ी हय कै हुलसात हियो। बिनु दामन ही इह कामनि यो सभ भामिनि को मन मोल लियो ॥ ३१ ॥ सीस फबै कलगी तुररो सुभ लालन को सरपेज सुहायो। हार अपार (मू०ग्रं०९६१) धरे उर मै मनु देखि मनोजव को बिरमायो। बीरी चबात कछू मुसकात बँधे गजगाह तुरंग नचायो। स्याम भनै महिलोक की मानहु माननि को मनु मोहनु आयो ॥ ३२ ॥ ॥ दोहरा ॥ प्रभावती रानी तबै ताको रूप निहारि। रीझि अधिक चित मै रही हर अरि सर गयो मारि ॥ ३३ ॥

किये और वह अपने घर से निकली। वह काले घोड़े पर चढ़ी हुई ऐसी लग रही थी, मानो काली रात में चन्द्रमा चढ़ा हुआ रात्रि को लज्जित कर रहा हो ॥ २९ ॥ ॥ सवैया ॥ कंधे पर काले घुँघराले बाल अत्यन्त शोभित हो रहे थे। उसके हार-श्रृंगार का तो वर्णन नहीं किया जा सकता। मनुष्यों की तो बात ही क्या, देव-दानव सभी उस पर रीझ रहे थे। त्रिलोकी के लोग उस सुन्दर स्त्री को देखने के लिए रोके ले रहे थे ॥ ३० ॥ सुन्दर श्रृंगार के बाद उसने आँखों में अंजन लगाया। सुन्दर अनुपम वस्त्र धारण कर उसने कामदेव का भी मानों गर्व चूर कर दिया हो। वह गजगामिनी कलगी आदि धारण कर प्रसन्नतापूर्वक घोड़े पर चढ़ी। इस (पुरुष रूपी) स्त्री ने तो सब स्त्रियों का मन बेभाव ही मोल ले लिया ॥ ३१ ॥ शीश पर कलगी और लाल युक्त पगड़ी शोभायमान हो रही थी। अनेकों हार गले में पड़े थे जिन्हें देखकर कामदेव भी भ्रम में पड़ गया था। बीड़ा चबाती हुई और मुस्कुराती हुई उसने बँधे हुए हाथियों में अपने घोड़े को नचाया। कवि श्याम का कथन है कि वह ऐसा लग रहा था मानो वह धरती की सभी मानिनी स्त्रियों का मन मोहने के लिए आया हो ॥ ३२ ॥ ॥ दोहा ॥ रानी प्रभावती तब उसका रूप देखकर मन में अत्यधिक रीझ गई और कामदेव उसे बाण मार गया ॥ ३३ ॥

।। कबित्तु ।। कैधौ काहू रिखि इंद्र आसन ते टारि दयो कैधौ इह सूरज सरूप धरि आयो है। कैधौ चंद्र चंद्रलोक छोरि कै सिपाही बन मेरे जान तीरथ अन्हैबै को सिधायो है। कैधौ है अनंग अरधंगक के अंतक ते मानुख को रूप कैकै आपु कौ छपायो है। कैधौ यह ससि याके रसिया नैं कोप कैकै मेरे छलबे कौ कछू छल सो बनायो है ।। ३४ ।। ।। चौपाई ।। जब लौ बैन कहन नहि पाई। तब लौ निकट गयो वहु आई। रूप निहारि मत्त ह्वै झूली। ग्रहि की सकल ताँहि सुधि भूली ।।३५।। ।। सोरठा ।। पठए दूत अनेक अमित दरबु तिन कौ दयो। कह्यो महूरत एक क्रिपा करो इह ग्रहि बसो ।। ३६ ।। ।। कबित्तु ।। कैधौ अलिकेस हो कि ससि हो दिनेस हो कि रूप हूँ कि भेस हो जहान मै सुहाए हो। शेश हो सुरेस हो गनेश हो महेश हो जी कैधौ जगतेश तुम बेदन बताए हो। कालिंद्री के एस हो कि तुम ही जलेस हो बतावौ कौन देस के नरेसुर के जाए हो। कहो मेरे एस किह काज निजु देस छोरि चाकरी को भेस कै हमारे देस आए हो ।। ३७ ।। हौ न अलिकेस हौ न ससि हौ दिनेश हौ न रूपहू के भेस कै जहान मै सुहायो हौं।

।। कवित्त ।। ऐसा लग रहा है मानो किसी ऋषि ने इन्द्र को सिंहासन से हटा दिया हो अथवा सूर्य ही यह रूप धारण करके आया है; मानो चन्द्रमा चन्द्रलोक छोड़कर सिपाही बनकर तीर्थ-स्नान करने के लिए आया है; मानो कामदेव ने अर्द्धांगिनी के वियोग में मनुष्य का रूप धारण कर अपने आपको छिपाया हो, अथवा यह शशि के रसिया नें मुझे छलने के लिए कोई प्रपंच किया है ।। ३४ ।। ।। चौपाई ।। अभी वह इतना कह ही नहीं पायी थी कि तब तक वह समीप आ गया। उसका रूप देखकर वह मस्त हो उठी और उसे घर-बाहर की समस्त सुधि भूल गई ।। ३५ ।। ।। सोरठा ।। उसने दूतों को अपार द्रव्य देकर भेजा और कहलवाया कि कृपापूर्वक एक मुहूर्त तक मेरे घर में रहो ।। ३६ ।। ।। कवित्त ।। तुम अलकापुरी के स्वामी कुबेर हो, शशि हो, सूर्य हो अथवा सौंदर्य साक्षात् होकर संसार में शोभायमान हो रहे हो। तुम शेष, इन्द्र, गणेश, महेश हो अथवा वेद द्वारा बताए गए जगदीश हो। तुम कालिन्दी-ईश कृष्ण हो, वरुण हो अथवा तुम ही बताओ तुम कौन से देश के राजा के पुत्र हो ? हे मेरे स्वामी ! तुम बताओ कि तुम किस कार्य-वश अपना देश छोड़कर नौकरी के लिए मेरे देश में आए हो ? ।। ३७ ।। न तो मैं कुबेर, चन्द्र, सूर्य अथवा साक्षात् सौंदर्य हूँ; न ही मैं शेष, इन्द्र, गणेश,

शेश न सुरेस हौ गनेश हौ महेश नही हौ न जगतेश हो जू बेदन बतायो हौं। कालिंद्री के एस अथितेश मै जलेस नही दच्छिन के देस के नरेसुर को जायो हौं। मोहन है नाम आगे जैहो ससुरारे धाम सोभा सुनि तुमरी तमाशे काज आयो हौं ॥ ३८ ॥ ॥ सवैया ॥ तेरी सोभा सुनि कै सुनि सुंदरि आयो ईहाँ चलि कोस हजारौ। आजु महूरत है तिन को कछु साथ मिलै नहीं त्रास बिचारौ। रीत है धाम इहै हमरे निजु नारि बिना नहीं और निहारौ। खेलो हसौ सुख सो तुम हूँ मुहि देहु बिदा ससुरारि सिधारौ ॥ ३६ ॥ बात बिदा की सुनी जब ही बिनु चैन भई न सुहावत जीकी। लाल गुलाल सी बाल हुती ततकाल भई मुख की छबि फीकी। हाथ (मू०ग्रं०६६२) उचाइ हनी छतिया उर पै लसै यौ मुँदरी अँगुरी की। देखन को पिय कौ तिय की प्रगटी अखियाँ जुग जान कही की ॥ ४० ॥ ॥ दोहरा ॥ मनु तरफत तव मिलन को तनु भेटत नहि जाइ। जीभ जरो तिन नारि की दै तुहि बिदा बुलाइ ॥ ४१ ॥ ॥ कबित्तु ॥ कोऊ दिन रहो हसि बोलो आछी बातै कहो कहा ससुरारि की अनोखी प्रीति पागी है। यहै राज लीजै याको

महेश और वेद-प्रचारित जगदीश हूँ। मैं कृष्ण, विष्णु, वरुण भी नहीं हूँ और दक्षिण देश के राजा का पुत्र हूँ। मेरा नाम मोहन है और मैं ससुराल जा रहा हूँ। तुम्हारी प्रशंसा सुनकर मैं तमाशा देखने के लिए तुम्हारे यहाँ चला आया हूँ ॥ ३८ ॥ ॥ सवैया ॥ तुम्हारी प्रशंसा सुनकर, हे सुन्दरी ! मैं हज़ारों कोस चलकर यहाँ आया हूँ। आज इसी मुहूर्त में अगर कुछ सामीप्य मिल जाए तो कोई भय वाली बात नहीं। परन्तु हमारे घर की यह रीति है कि अपनी स्त्री के बिना किसी की ओर भी नहीं देखना चाहिए। आप भी खेलिए, हँसिए और मुझे भी ससुराल पहुँचने के लिए विदा करें ॥ ३६ ॥ जब उसकी विदाई की बात सुनी तो वह व्याकुल हो उठी। उसके मुख की गुलाल समान लाली क्षण भर में फीकी हो गई। हाथ उठाकर उसने छाती पीट ली जिससे अँगुली की अँगूठी की छाप पड़ गई। ये निशान भी ऐसे लग रहे थे मानों प्रियतम का दर्शन करने के लिए अन्य आँखें खुल गई हों ॥ ४० ॥ ॥ दोहा ॥ मेरा मन तुझे मिलने के लिए तड़फ रहा है और मेरे तन का मिलन तुमसे नहीं हो पा रहा। उस स्त्री की तो जीभ जल जाय जो तुम्हें बुलाकर फिर तुम्हें जाने के लिए कहे ॥ ४१ ॥ ॥ कवित्त ॥ कुछ दिन रहो, हँस-बोलकर सुन्दर बातें करो, तुम्हें ससुराल का क्या अनोखा प्रेम जगा है। तुम

राजा ह्वै कै राज कीजै हाथु चाइ दीजै मोहि यहै जिय जागी है। तुमको निहारि किय मारनै सुमार मोकौ ताते बिसंभार भई नींद भूखि भागी है। तहाँ कौ न जैयै मेरी सेज कौ सुहैयै आनि लगन निगौडीनाथ तेरे साथ लागी है ॥ ४२ ॥ एक पाइ सेवा करौ चेरी ह्वैकै नीर भरौ तुमही कौ बरौ मोरी इच्छा पूरी कीजियै। य है राज लेहु हाथ उठाइ मोकौ टूका देहु हम सौ बढावौ नेहु जाते लाल जीजियै। जौ कहौ बिकैहौ जहाँ भाखो तहाँ चली जैहौ। ऐसो हाल हेरि नाथ कबहूँ प्रसीजियै। याही ठौर रहो हसि बोलो आछी बातै कहो जान ससुरारि को न नामु फेर लीजियै ॥ ४३ ॥ ॥ सवैया ॥ क्यो निजु त्रिय तजिके सुनि सुंदरि तोहि भजे ध्रम जात हमारो। राज करौ अपनो तुमहीं सुख सो इन धामन बीच बिहारो। मैं प्रगट्यो जब ते तब ते तजि कान त्रिया नहि आन निहारो। क्या तुम ख्याल परो हमरे मन धीर धरो रघुनाथ उचारो ॥ ४४ ॥ क्रोरि उपाइ करो ललना तुम केल करे बिनु मै न टरोंगी। भाजि रहोब कहा हम ते तुम भाँति भली तुहि आज बरोंगी।

यहीं का राज्य लेकर राजा होकर राज करो। मेरा तो मन कर रहा है कि अपने हाथों से तुम्हें सब कुछ दे दूँ। तुमको देखकर मुझ पर काम का आक्रमण हो गया है; इसी से मैं व्याकुल हो उठी हूँ और मेरी नींद, भूख भाग गई है। आप वहाँ न जाइए और मेरी शय्या को सुशोभित कीजिए। मेरी लगन निगोड़ी तो आपके साथ लग गई है ॥ ४२ ॥ मैं एक पाँव पर खड़ी हो तुम्हारी सेवा करूँगी, दासी बनकर तुम्हारा पानी भरूँगी। तुम मुझे ही अपनाकर मेरी इच्छा को पूरा करो। यह राज ले लो, मुझे मात्र खाने के लिए दे दो; मुझसे स्नेह बढ़ाओ और मुझे जीवित रहने दो। जहाँ कहोगे बिक जाऊँगी, जहाँ कहोगे चली जाऊँगी। मेरा यह हाल देखकर तो नाथ ! आपको पसीजना चाहिए। आप इसी स्थान पर रहो, हँस-बोलकर यहाँ सुन्दर-सुन्दर बातें करो, परन्तु ससुराल का नाम फिर कभी मत लो ॥ ४३ ॥ ॥ सवैया ॥ मैं अपनी सुन्दर स्त्री को छोड़कर तुम्हारे संग यदि रमण करूँगा तो मेरा धर्म चला जायगा। तुम अपना यह राज्य स्वयं करो और सुखपूर्वक अपने घर में रहो। मैं तो जब से पैदा हुआ हूँ, मैंने लज्जा का त्याग कर किसी अन्य स्त्री को देखा तक भी नहीं ! तुम कौन से विचार में पड़ गई हो ? मेरे ख्याल से तो तुम धैर्य धारण करो और श्रीरघुनाथ के नाम का उच्चारण करो ॥ ४४ ॥ हे प्रियतम, तुम करोड़ों उपाय करो पर मैं तुमसे रतिक्रिया किये बिना नहीं

जौन मिलो तुम आजु हमै अबही तब मै बिख खाइ मरोंगी ।
प्रीतम के दरसे परसे बिनु पावक मैन प्रवेश करोंगी ।। ४५ ।।
।। मोहन बाच ।। ।। चौपई ।। रीति यहै कुल परी हमारे ।
सु मैं कहत हो तीर तिहारे । चल किसहूँ के धाम न जाही ।
चलि आवै छोरै तिह नाही ।। ४६ ।। जब यह बात तियहि
सुनि पाई । निजु मति बीच यहै ठहराई । हों चलि धाम
मीत के जैहों । मन भावत के भोग कमैहों ।। ४७ ।।
।। सवैया ।। आजु पयान करोंगी तहाँ सखी भूखन बस्त्र अनूप
बनाऊँ । मीत के धाम बद्यो मिलिबो निसि होत नही अब
ही मिलि आऊँ । सावन मो मन भावन के लिए सात समुंद्रन
को तरि जाऊँ । क्रोरि उपाउ करौ सजनी पिय को तन कै तन
भेटन पाऊँ ! (मू०ग्रं०९६३) ।। ४८ ।। ।। चौपई ।। जब ते मै
भव मो भव लीयो । आनि त्रिया सौ भोग न कीयो । जौ
ऐसो चित रिझ्यो तिहारो । नौब कहा बसि चलत
हमारो ।। ४९ ।। हौ न पियान धाम तव करों । नरक परन
ते अति चित डरों । तुमही धाम हमारे ऐयहु । मन भावत
को भोग कमैयहु ।। ५० ।। बातैं करत निसा परि गई । त्रिय

मानूँगी । तुम मुझसे भागकर कहाँ जाओगे, मैं आज भली प्रकार तुम्हारा वरण
करूँगी । यदि तुम मुझे प्राप्त न हुए तो मैं आज ही विष खाकर मर
जाऊँगी । प्रियतम के दर्शन-स्पर्श के बिना मैं कामाग्नि में जल मरूँगी ।।४५।।
।। मोहन उवाच ।। ।। चौपाई ।। जो मेरे कुल की रीति है वह मैं तुमसे कहता
हूँ । चलकर मैं किसी के घर पर नहीं जाऊँगा पर यदि घर पर कोई आ
जाय तो उसे जाने नहीं दूँगा ।। ४६ ।। जब स्त्री ने यह सुना तो मन में सोच
लिया कि मैं चलकर प्रिय के घर तक ;जाऊँगी और मनचाहा भोग-विलास
करूँगी ।। ४७ ।। ।। सवैया ।। आज हे सखी ! सुन्दर वस्त्र पहनकर मैं वहाँ
जाऊँगी । मित्र के घर पर मिलनें का मैंने प्रण किया है । रात तो क्या मैं
अभी;मिलने जाऊँगी । मैं इस मनभावन के लिए सात समुद्रों को भी तैरकर
जा सकती हूँ । हे सखी ! करोड़ों उपाय करके भी प्रियतम के तन को भोगने
की इच्छा रखती हूँ ।। ४८ ।। ।। चौपाई ।। जब से मैं पैदा हुआ हूँ, मैंने स्त्री से
भोग नहीं किया है । परन्तु यदि तुम्हारे मन में यह बैठ गया है, तो भला मेरा
क्या वश चल सकता है ।। ४९ ।। मैं तो नरक में पड़ने से डरते हुए तुम्हारे
घर में नहीं आ रहा हूँ । तुम ही मेरे घर पर चली आना और मनचाहा
विलास करना ।। ५० ।। बातें करते-करते रात हो गई और स्त्री की काम-

कौ कामकरा अति भई। अधिक अनूपम भेस बनायो। ता कौ तिह ग्रहि ओर पठायो ॥ ५१ ॥ तब मोहन निजु ग्रहि चलि आयो। अधिक अनूपम भेस बनायो। टकियन की चपटी उर बसी। मोम मारि आसन सौ कसी ॥ ५२ ॥ बिखि को लेप तवन सौ कीयो। सिवहि रिझाइ माँग करि लीयो। जाके अंग तवन सौ लागै। ता कै लै प्रानन जम भागै ॥ ५३ ॥ तब लौ नारि गई वहु आई। कामातुर ह्वैकै लपटाई। ता को भेद कछू नहि जान्यो। उरबसि कौ करि पुरख पछान्यो ॥ ५४ ॥ तासो भोग अधिक जब कीनो। मन मै मानि अधिक सुख लीनो। बिखु के चड़े मत्त तब भई। जम के धाम बिखै चलि गई ॥ ५५ ॥ उरबसि जब ता को बध कीयो। सुरपुर को मारग तब लीयो। जहाँ काल सुभ सभा बनाई। उरबसि यौ चलिकै तह आई ॥ ५६ ॥ ता कौ अमित दरबु तिन दीयो। मेरो बडो काम तुम कीयो। निजु पति कौ जिन त्रियहि सँघार्यो। ता को तैं इह भाँति प्रहार्यो ॥ ५७ ॥ ॥ दोहरा ॥ जा दुख ते जिनि इसत्रियहि निजु पति हन्यो रिसाइ। तिसी दोख मार्यो तिसै धन्य धन्य जमराइ ॥ ५८ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रियः चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ नौं चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १०९ ॥ २०८१ ॥ अफजूं ॥

शक्ति जग उठी। उसने सुन्दर वेश धारण किया और मोहन को उसके घर भेज दिया ॥ ५१ ॥ तब मोहन ने अपने घर आकर सुन्दर वेश धारण किया। रुपयों की थैली उसने छाती से चिपका ली और मोम पिघलाकर अपने गुप्तांग पर लगा लिया ॥ ५२ ॥ उस पर विष का लेप कर लिया जो उसने शिव को प्रसन्न कर सर्पों से लिया था, ताकि वह जिसके भी अंग से लगे उसके प्राण हर ले ॥ ५३ ॥ तब तक स्त्री वहाँ आ पहुँची जो अत्यधिक कामातुर होकर उससे लिपट गई। उसने रहस्य नहीं समझा और उर्वशी को पुरुष मान लिया ॥ ५४ ॥ मन में सुख मानकर उसने उससे बहुत रतिक्रीड़ा की। जब वह विष चढ़ने पर मस्त हो गई तो यमलोक पहुँच गई ॥ ५५ ॥ उर्वशी ने उसका वध करके स्वर्ग का रास्ता पकड़ा। वह वहाँ पहुँची जहाँ काल शुभ सभा में बैठा था ॥ ५६ ॥ उसने उसे अपार द्रव्य दिया और कहा कि तुमने मेरा बड़ा काम किया है। जिस स्त्री ने अपने पति को मारा उसे मैंने इस प्रकार नष्ट किया ॥ ५७ ॥ ॥ दोहा ॥ यमराज धन्य है जिसने उसी

विधि से उस स्त्री को मारा जिस विधि और दुख से उस स्त्री ने अपने पति को मारा था ।। ५८ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ नौवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १०९ ।। २०८१ ।। अफजू ।।

अथ इक सौ दस चरित्र कथनं ।।

।। सवैया ।। पूरब देस को एस रुपेश्वर राजत है अलकेश्वर जैसो । रूप अपार कर्‍यो करतार किधौ असुरारि सुरेसन तैसो । भार भरे भट भूधर की सम भीर परे रन एकल जैसो । जंग जगे अरधंग करे अरि सुंदर है मकरध्वज कैसो ।।१।। ।। चौपई ।। ता के पूत होत ग्रहि नाही । चिंता यहै प्रजा मन माही । तब तिह मात अधिक अकुलाई । एक त्रिया तिह निकट बुलाई ।। २ ।। कन्या एक राव की लही । सो त्रिप (मू०ग्रं०९६४) के बरबे कह कही । राइपुरा के भीतर आनी । रोपेश्वर के मन नहि मानी ।। ३ ।। जन कहि रहे ब्याह ना कीयो । ताहि बिसारि चित्त ते दीयो । तवन नारि हन्ननि हठि गही । ता के द्वार बरिस बहु रही ।। ४ ।।

एक सौ दसवाँ चरित्र-कथन

।। सवैया ।। पूर्व देश का रूपेश्वर नामक नृप राजा कार्तिकेय के समान सुन्दर था । विधाता ने उसे इन्द्र के समान सुन्दर बनाया था । उस सुन्दर वीर का भार पर्वत के समान था और समय पड़ने पर वह रणस्थल में अकेला ही भिड़ जानेवाला था । युद्ध में वह शत्रु को दो टुकड़े कर देता था और स्वयं मकरध्वज के समान सुन्दर था ।। १ ।। ।। चौपाई ।। उसके घर पुत्र पैदा नहीं होता था तथा उसकी प्रजा को मन में यही चिन्ता रहती थी । तब उसकी माता ने अत्यधिक व्याकुल होकर एक स्त्री को अपने पास बुलाया ।। २ ।। उसने एक राजा की कन्या देखी और राजा को उसका वरण करने के लिए कहा । वह राजा के नगर में उसे ले आई पर रूपेश्वर का मन नहीं माना ।। ३ ।। सभी लोगों के कहने पर भी उससे विवाह नहीं किया और चित्त से विस्मृत कर दिया । उस स्त्री ने भी राजा को नष्ट करने का प्रण किया और बहुत वर्षों तक उसके द्वार पर पड़ी रही ।। ४ ।। ।। सवैया ।। रूपेश्वर राव पर उस राजकुमारी के पिता ने कुपित होकर

॥ सवैया ॥ राव रुपेसुर कुअरि थो त्रिप सो कुपिकै तिह ऊपर आयो। भेद सुन्यो इनहूँ लरबे कह सैन जितौ जु हुते सु बुलायो। दुंदभि भेर बजाइ रिसाइ चड़्यो दल जोरि तुरंग नचायो। ब्रहम कुमार कै धार हजार मनो जल रासि कै भेटन धायो ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ उमडे अमित सूरमा दुहि दिसि। छाडत बान तानि धनु करि रिसि। धुकि धुकि परे बीर रन भारे। कटि कटि गए क्रिपानन मारे ॥ ६ ॥ नाचत भूत प्रेत रन माहीं। जंबुक गीध मासु लै जाहीं। कटि कटि मरे बिकट भट लरिकै। सुरपुर बसे बरंगनिन बरिकै ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ बज्रबान बरछिन भए लरत सूर समुहाइ। झटपट कटि छित पर गिरे बसै देवपुर जाइ ॥ ८ ॥ ॥ सवैया ॥ दारुन लोह पर्यो रन भीतर कौन बियो जु तहा ठहरावै। बाजी पदांत रथी रथ बारुन जूझे अनेक ते कौन गनावै। भीर क्रिपानन सैथिन सूलन चक्रन कौ चित भीतरि ल्यावै। कोप करे कटि खेत मरे भट सो भव भीतर भूलि न आवै ॥ ९ ॥ ढाल गदा प्रघ पट्टिस दारुण हाथ त्रिसूलन को गहिकै। बरछी जमधार छुरी तरवारि निकारि हजार

चढ़ाई कर दी। उसने भी जब सुना तो लड़ने के लिए समस्त सेना को बुला भेजा। अश्वों को नचाता वह भी दुंदुभियाँ बजाता क्रोधित होकर ऐसे चल पड़ा मानों ब्रह्मपुत्र की अनेकों धाराएं समुद्र से मिलने के लिए चल पड़ी हों ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ दोनों ओर से अजेय वीर-उमड़ पड़े और तान-तानकर क्रोधित होकर बाण चलाने लगे। युद्ध में भारी वीर धकेल दिए गए जो कृपाणों से काट-काटकर मार डाले गये ॥ ६ ॥ युद्ध में भूत-प्रेत नाचने लगे और गीदड़-गिद्ध मांस नोच-नोचकर ले जाने लगे। महाबली लड़ते हुए कटने लगे और अप्सराओं का वरण करते हुए स्वर्ग जाने लगे ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ वज्र, बाण और बर्छियाँ लेकर वीर आमने-सामने लड़ रहे थे और धरती पर गिरकर तुरन्त स्वर्ग पहुँच रहे थे ॥ ८ ॥ ॥ सवैया ॥ युद्धस्थल में भीषण लोहा बरस रहा था। ऐसे में कौन वीर था जो वहाँ रुकता। अश्वारोही, पैदल, रथी असंख्य जूझ गए। कृपाण, बर्छी, शूल, चक्र सभी दिखाई पड़ रहे थे। क्रुद्ध वीरों के वार से जो कट गया वह भूलकर भी पुनः संसार में नहीं आया अर्थात् मुक्त हो गया ॥ ९ ॥ ढाल, गदा, कुल्हाड़ा, त्रिशूल, बर्छी, जमदाड़, छुरी, तलवार आदि निकालकर हज़ारों वीर एक-दूसरे से भिड़ते हुए चल पड़े। यह कहते हुए कि इस जग का जीवन तो चार

चले खहिकै । जग को जियबो दिन चारि कु है कहि बाजी नचाइ परे कहिकै । न टरे भट रोस भरे मन मै तन मै ब्रिण बैरिन के सहिकै ॥ १० ॥ बीर दुहूँदिस के कबि स्याम मुख ऊपर ढालन को धरि जूटे । बान कमान धरे मठसान अप्रमान जु आनन के रन छूटे । राज मरे कहूँ ताज गिरे कहूँ जूझे अनेक रथी रथ टूटे । पौन समान बहे बलवान सभै दल बादल से चलि फूटे ॥ ११ ॥ बाँधि कतारिन कौ उमडे भट चक्रन चोट तुफंगन की स्यों । तीरन सौ बर बीरन के उर चीर पटीर मनो बरमा त्यों । सूँडन ते पग ते कटि ते कटि कोटि गिरे करि साइलसे यों । जोरि बडो दलु तोरि महा खल जीति लए अरि भीतर की ज्यों ॥ १२ ॥ ॥ चौपई ॥ ऐसी बिधि जीतत रन भयो । बहुरि धाम को मारगु लयो । तउनै नारि भेद (मू०ग्रं०९६५) सुनि पायो । रन कौ जीति रपेसुर आयो ॥ १३ ॥ आछे अरुन बस्त्र तन धारे । दुहूँ हाथ नरिएर उछारे । हुतो दरब सो सकल लुटायो । आपु सती कौ भेख बनायो ॥१४॥ जिह मारग राजा ह्वै आयो । तही आनि त्रिय चितहि बनायो । तब लौ राइ आइ ही गयो ।

दिन का है, वे घोड़े नचाते हुए टूट पड़े। वीर, शत्रुओं के घाव सहकर भी पीछे नहीं हटते थे ॥ १० ॥ कवि श्याम के कथनानुसार दोनों ओर के वीर मुँह पर ढाल लगाए एक-दूसरे से भिड़ गए। बाण-कमानों की मार से असंख्य वीरों से यह युद्धस्थल छूट गया अर्थात् वे मृत्यु को प्राप्त हो गए। कहीं राजा मरे पड़े हैं, कहीं मुकुट गिरे हुए हैं तथा कहीं रथी और रथ टूटे-फूटे पड़े हैं। वीर पवन-वेग से चलकर शत्रुदल रूपी बादलों को फाड़ डाल रहे हैं ॥ ११ ॥ कतारें बाँधकर वीर गोली और चक्रवात की तरह टूट पड़े। तीरों से वीरों के हृदय ऐसे चीरे जा रहे थे मानों बरमे (छेदक) से लकड़ी के शहतीरों में छेद कर दिया गया हो। सिर, पैर, कमर से कटे वीर ऐसे गिरे हैं मानों समुद्र में हाथी गिरे पड़े हों। महाबली ने दल को तहस-नहस करके शत्रु की दीवार को तोड़-फोड़ डाला ॥ १२ ॥ ॥ चौपाई ॥ इस प्रकार युद्ध जीतकर उसने घर का रास्ता पकड़ा। तब उस स्त्री नें भी सुना कि रूपेश्वर जीतकर आ रहा है ॥ १३ ॥ उसनें सुन्दर लाल वस्त्र धारण किए और दोनों हाथों में नारियल पकड़ लिये। अपना समस्त धन लुटा दिया और स्वयं सती का वेश धारण कर लिया ॥ १४ ॥ जिस मार्ग से राजा आ रहा था, स्त्री ने उसी मार्ग पर चिता बना ली। तब तक राजा आ गया और

हेरत तवन सती कौ भयो ।। १५ ।। राइ बिहसि तिह ओर
निहार्‌यो । निकट बोलि भ्रित बचन उचार्‌यो । जाको
सोध लेहु तुम जाई । कौन सती ह्वैबै कह आई ।। १६ ।।
।। दोहरा ।। सुनत राव को दूत बच तहाँ पहूँच्यो जाइ ।
सकल सती को भेद लै नित पति कह्यो सुनाइ ।। १७ ।।
।। चौपई ।। यौ सुनि बचन रीझि न्रिप रह्यो । धंनि धंनि
मुख तें तिह कह्यो । हम यासों कछु प्रीति न जागी । मेरे
हेत देन जिय लागी ।। १८ ।। ध्रिग मोको मैं भेद न चीनो ।
अब लौ ब्याह न यासौ कीनो । जिन नारिन सौ प्रीति
लगाई । सो इह समै काम नहि आई ।। १९ ।। ताते मैं तिह
अबै बियाहूँ । तन लगि या सो नेह निबाहूँ । बरति अगनि
ते ताँहि उबारो । मोसो जरी न तन को जारो ।। २० ।।
चिता अगनि जो सती जगाई । बिरहानल सोई ठहिराई ।
ता के तीर भावरैं दीनी । राँक हुती रानी बिधि कीनी ।।२१।।
एही चरित्र न्रिपति को पायो । सभ रानिन चित तें
बिसरायो । अपनी आग्या के बसि कीनो । जानुक दास मोल
को लीनो ।। २२ ।। ।। दोहरा ।। ता दिन तैं ताँसो घनी प्रीति

उसने सती को देखा ।। १५ ।। राजा ने हँसकर उसकी ओर देखा और सेवक
को पास बुलाकर कहा कि देखो कौन सती होने के लिए आयी है ।। १६ ।।
।। दोहा ।। राजा का वचन सुनकर दूत वहाँ आ पहुँचा और सती का रहस्य
समझकर राजा को आ सुनाया ।। १७ ।। ।। चौपाई ।। सुनकर राजा खुश
हो गया और मुख से धन्य-धन्य कहने लगा । मैंने तो इससे तनिक भी प्रेम
नहीं किया और यह मेरे लिए प्राण तक देने जा रही थी ।। १८ ।। मुझे
धिक्कार है कि मैंने इस रहस्य को नहीं समझा और अभी तक इससे विवाह
नहीं किया । मैंने जिनसे प्रेम किया था उनमें से कोई इस समय काम नहीं
आयी ।। १९ ।। अतः मैं इससे अभी विवाह करूँगा और जीते-जी इससे प्रेम
निभाऊँगा । अग्नि-व्रत से अभी इसका उद्धार करता हूँ । यह तो पहले
ही मेरे प्रेम में जल चुकी है, अब इसके शरीर को नहीं जलने दूँगा ।। २० ।।
उस सती ने जो चिता जलाई थी, उसे ही विरह-अग्नि माना और उसके चारों
ओर तीन फेरे लेकर उस निर्धन को रानी बना दिया ।। २१ ।। राजा ने
रानियों का चरित्र देखकर सबको मन से भुला दिया । राजा को ऐसा वश
में कर लिया मानों मोल लिया गुलाम हो ।। २२ ।। ।। दोहा ।। उस दिन से

बढी सुख पाइ। सभ रनियन को राव के चित तो दियो भुलाइ ॥ २३ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ दस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ११० ॥ २१०४ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ गिआरह चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ दुरजनसिंघ राव इक भारी। दिसा चारि जिह करत जुहारी। ता को रूप हेरि बलि जावहि। प्रजा अधिक मन मै सुखु पावहि ॥ १ ॥ ॥ दोहरा ॥ ताँहि देस आवत जु जन ता को रूप निहारि। ह्वै चेरे तिह पुर बसै सभ धन धाम बिसारि ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ जब वहु न्रिपति अखेटक आवै। स्वानन ते बहु म्रिगन गहावै। बाजन साथ आबियन लेही। अमित दरबु हुसनाकन देहीं ॥३॥ नितिप्रति (मू०ग्रं०९६६) अधिक म्रिगन कौ मारैं। सदा सु बन के बीच बिहारैं। दुहूँ हाथ सौ तीर चलावै। ता ते कहाँ जान पसु पावै ॥ ४ ॥ एक दिवस न्रिप अखिट सिधायो। कारो हरिन हेरि ललचायो। सींगन ते जीयत गहि लैहौ। याकौ

राजा की प्रीति उसके प्रति और घनी हो गई और राजा ने अन्य रानियों को चित्त से भुला दिया ॥ २३ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद के एक सौ दसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ११० ॥ २१०४ ॥ अफजूं ॥

एक सौ ग्यारहवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ दुर्जनसिंह नामक एक महाबली राजा था जिसको चारों दिशाएँ प्रणाम करती थीं। उसके रूप को देखकर सभी न्योछावर होते थे तथा प्रजा भी मन में अत्यधिक सुखी होती थी ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ उस देश में जो भी आता था उसके स्वरूप को देखकर घर-बाहर धनधाम की सुधि भूलकर वहीं बस जाता था ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह राजा जब शिकार खेलने आता तो कुत्तों से मृग पकड़वाता था। बाज़ों से मुर्ग़ाबियाँ पकड़वाता था और हसीनों को अपरिमित द्रव्य देता था ॥ ३ ॥ वह रोज़ अनेकों मृगों को मारता था और सदैव वन में विचरण किया करता था। वह दोनों हाथों से तीर चलाता था और पशु जान ही नहीं पाते थे ॥ ४ ॥ एक दिन राजा आखेट को गया और एक काले हिरण को देखकर ललचा गया। उसने सोचा

घाइ न लागन दैहौं ॥ ५ ॥ हेरि हरिन कह तुरै धवायो। पाछै चलियो तवन को आयो। जब परदेस गयो चलि सोई। चाकर तहाँ न पहुच्यो कोई ॥६॥ राजप्रभा इक राजदुलारी। राजा कौ प्रानन ते प्यारी। धौलर ऊच तवन कौ राजै। मनो चंद्रमा कोल बिराजै ॥ ७ ॥ तपती नदी तीर तिह बहै। सूरज सुता ताहि जग कहै। पंछी तहाँ चुगत अति सोहैं। हेर निहारन को मनु मोहैं ॥ ८ ॥ सुंदर ताहि झरोखे जहाँ। काढ्यो आनि राइ म्रिग तहाँ। तुरै धवाइ स्रमित तिह कीनो। म्रिगन ते स्रिंगी गहि लीनो ॥ ९ ॥ यह कौतक न्रिप सुता निहार्यो। यहै आपने ह्रिदै बिचार्यो। मैं अब ही इह न्रिप कौ बरौ। नातर मारि कटारी मरौ ॥ १० ॥ ऐसी प्रीति राइ सौं जोरी। काहू पास जाति नहि तोरी। नैन सैन दै ताहि बुलायो। मैन भोग तिह साथ कमायो ॥११॥ ऐसी फबत दुहुँन की जोरी। जनुक क्रिशन ब्रिखभान-किशोरी। दुहूँ हाथ तिह कुचन मरोरै। जनु खोयो निधनी धनु टोरै ॥ १२ ॥ बार बार तिह गरे लगावै। जनु कंद्रप

कि इसे तो जीवित ही सींगों से पकड़ लूँगा और घाव नहीं लगने दूँगा ॥ ५ ॥ हिरण को देखकर उसने घोड़ा दौड़ाया और उसके पीछे दौड़ने लगा। जब वह सुदूर प्रदेश में निकल गया तो वहाँ तक कोई भी नौकर नहीं पहुँच सका ॥ ६ ॥ राजप्रभा नामक एक राजकुमारी थी जो राजा को प्राणों से भी प्यारी थी। उसका सुन्दर महल मानों चन्द्रमा को छूता था ॥ ७ ॥ उसके पास उमड़ती हुई नदी बहती थी, जिसका नाम यमुना था। वहाँ पक्षी दाना चुग रहे थे जो कि देखनेवालों का मन मोह रहे थे ॥८॥ जहाँ उस महल में सुन्दर झरोखे थे, मृग राजा को वहाँ ले आया। राजा ने घोड़े दौड़ाकर उसे थका दिया और सींगों से पकड़ लिया ॥ ९ ॥ राजकुमारी ने इस खेल को देखा और अपने हृदय में विचार किया कि या तो मैं अभी राजा से विवाह करूंगी नहीं तो कटारी मारकर मर जाऊंगी ॥ १० ॥ उसने राजा से ऐसी प्रीति जोड़ ली जो किसी भी प्रकार टूट नहीं सकती थी। आँख के इशारे से उसने राजा को बुलाया और उसके साथ विहार किया ॥ ११ ॥ दोनों की जोड़ी ऐसी लग रही थी मानों कृष्ण और वृषभानुसुता (राधा) हो। वह दोनों हाथों से इस प्रकार कुच-मर्दन कर रहा था मानों कोई निर्धन दोनों हाथों से खोए धन को टटोल रहा हो ॥ १२ ॥ राजा बार-बार उसे गले से लगाता था मानों कामदेव का अहंकार मिटा रहा हो। दोनों जंघाओं को कंधे पर रखे हुए वह ऐसा लग

कौ द्रप्पु मिटावै । भोगत ताँहि जंघ लै काँधे । जनु द्वै मैन तरकसन बाँधे ॥ १३ ॥ भाँति भाँति सौ चुंबन कीने । भाँति भाँति आसन तिय दीने । गहि गहि तासौ गरे लगाई । मानहु रंक नवौ निधि पाई ॥ १४ ॥ ॥ सवैया ॥ मीत अलिंगन आसन चुंबन कीने अनेक ते कौन गनै । मुसकात लजात कछू ललता सु बिलास लसै पिय साथ तनै । झमकै जर जेब जराइन की दमकै मनो दामनि बीच घनै । लखि नैकु प्रभा सजनी सभ ही इह भाँति रही अति रीसि मनै ॥ १५ ॥ कंचन से तन है रमनीय द्रिगंचल चंचल है अनियारे । खंजन से मन रंजन राजत कंजन से अति ही कजरारे । रीझत देव अदेव लखे छबि मैन मनो दोऊ साँचन ढारे । जोबन जेब जगे अति ही सुभ बाल (मू०ग्रं०९६७) बने द्रिग लाल तिहारे ॥ १६ ॥ ॥ दोहरा ॥ प्रीति दुहन की अति बढी तीय पिया के माहि । पट छूट्यो निरपट भए रह्यो कपट कछु नाहि ॥ १७ ॥ भाँति भाँति आसन करैं तरुन तरुनि लपटाइ । मोद दुहन को अति बढ्यो गनना गनी न जाइ ॥ १८ ॥ ॥ चौपई ॥ चिमटि

रहा था मानों कामदेव ने दो तरकस बाँध रखे हो ॥ १३ ॥ विभिन्न प्रकार के चुम्बनों-सहित उसने स्त्री को विभिन्न प्रकार के आसन दिए । पकड़-पकड़कर उसे ऐसे गले लगाया मानों किसी निर्धन को कोई ख़ज़ाना मिल गया हो ॥ १४ ॥ ॥ सवैया ॥ मित्र के साथ आलिंगन, आसन एवं चुम्बन उसने अनेक प्रकार से किए । वह स्त्री मुस्कुराती, लजाती प्रियतम के तन के साथ लगी रही । उसके जरीयुक्त कपड़े ऐसे चमक रहे थे मानों बादलों में बिजली चमक रही हो ! उसकी सुन्दरता को देखकर सभी सखियाँ मन ही मन ईर्ष्यालु हो रही थीं ॥ १५ ॥ स्वर्ण के समान सुन्दर शरीर और चंचल नयन हैं जो कि खंजन के समान मन को मोह लेनेवाले, कमल-पत्रों की आकृति वाले तथा काजल से युक्त हैं । उन्हें देखकर देव-दानव सभी प्रसन्न होकर सोच रहे हैं कि शायद ये साँचे में ढालकर दो कामदेव बनाए गए हैं । हे प्रियतम ! यौवन में उन्मत्त तुम्हारे ये नयन लाल-लाल दिखाई दे रहे हैं और भले लग रहे हैं ॥ १६ ॥ ॥दोहा॥ उस स्त्री और प्रिय में प्रीति इतनी बढ़ गई कि कोई भी रहस्य बाक़ी न बचा और निष्कपट वे एक-दूसरे के हो गए ॥१७॥ विभिन्न प्रकार के आसनों के माध्यम से तरुण और तरुणी एक-दूसरे से लिपटने लगे । दोनों के मन के मोद का अनुमान नहीं लगाया जा सकता ॥ १८ ॥ ॥ चौपाई ॥ चिपट-चिपटकर राजा केलिक्रीड़ा कर रहा था और लपट-लपट

चिमटि त्रिप केल कमावै। लपटि लपटि तरुनी सुखु पावै। बहसि बहसि आलिगन करही। भाँति भाँति सौ बचन उचरही ॥ १६ ॥ ॥ दोहरा ॥ भाँति भाँति आसन करै भाँति भाँति सुख पाइ। लपटि लपटि सुंदर रमैं चिमटि चिमटि त्रिय जाइ ॥ २० ॥ ॥ चौपई ॥ भाँति भाँति के अमल मँगाए। बिबिधि बिधन पकवान पकाए। दारू पोसत और धतूरो। पान डराइ कुसंभड़ो रूरो ॥२१॥ ॥दोहरा॥ अमित आफूआ की बरी खाइ चड़ाई भंग। चतुर पहर भोग्यो त्रियहि तऊ न मुच्यो अनंग ॥ २२ ॥ तरुन तरुन तरुनी तरुनि तरुन चंद्र की जौन। केल करैं बिहसैं दोऊ हारि हटै सो कौन ॥ २३ ॥ चतुर पुरख चतुरा चतुर तरुन तरुनि कौ पाइ। बिहसि बिहसि लावै गरे छिनकि न छोर्यो जाइ ॥२४॥ ॥ चौपई ॥ जो चतुरा चतुरा कौ पावै। कबहूँ न छिन चित ते बिसरावै। जड़ कुरूप कौ चितहि न धरै। मन क्रम बच ताही तौ बरै ॥ २५ ॥ ॥ दोहरा ॥ चंदन की चौंकी भली कासट द्रुम किह काज। चतुरा को नीको चित्यो कहा मूड़

कर वह तरुणी सुख प्राप्त कर रही थी। मुस्कुराकर वह आलिगनबद्ध हो रही थी और भाँति-भाँति की बातें कर रही थी ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥ विभिन्न प्रकार के आसनों से सुख प्राप्त करते हुए लिपट-लिपट और चिमट-चिमट कर वे प्रिय-प्रियतमा रमण कर रहे थे ॥ २० ॥ ॥ चौपाई ॥ विभिन्न प्रकार के मादक पदार्थ मँगाए और विविध पकवान पकाए गए। शराब, पोस्ता, धतूरा, पानादि मँगाये गये ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ गहरी तेज़ अफ़ीम और भाँग की बड़ी गोली खाकर चार प्रहर तक उसने भोग-विलास किया, परन्तु फिर भी काम संतुष्ट नहीं हुआ ॥ २२ ॥ वह युवक और युवतो दोनों ही तरुण थे और चन्द्रमा भी अपनी जवानी पर था। ये दोनों मुस्कुराते हुए संभोग कर रहे थे और दोनों में से हारकर हटनेवाला कोई भी नहीं था ॥ २३ ॥ चतुर पुरुष, युवक चतुर तरुणी को पाकर मुस्कुराते हुए उसे गले से लगाता है। अब वह उसे क्षण भर के लिए भी छोड़ नहीं सकता ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ यदि चतुर व्यक्ति चतुर से मिल जाता है तो क्षण भर के लिए भी उसे विस्मृत नहीं करता। वह जड़ एव कुरूप को तो कभी मन में लाता ही नहीं। वह मन-वचन एवं कर्म से उसी का ही वरण करता है ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥ जैसे लकड़ी के पेड़ से तो चंदन की छोटी चौकी ही भली है वैसे ही चतुर का स्मरण मात्र ही जड़ मूर्ख के राज से भी बढ़कर है ॥ २६ ॥

को राज ।। २६ ।। ।। सोरठा ।। तरुनि पतरिया नीक चपल
चीति भीतर चुभ्यो । अधिक पियरवा मीत कबहूँ न विसरत
हिदै ते ।। २७ ।। ।। सवैया ।। रीझ रही अबला अति ही पिय
रूप अनूप लखे मन माँही । सोच बिचार तज्यो सभ सुंदर
नैन सौं नैन मिले मुसकाँही । लाल के लालची लोचन लोल
अमोलन की निरखे परछाँही । मस्त भई मन मानो पियो मद
मोहि रही मुख भाखत नाँही ।। २८ ।। सोभत सुद्ध सुधारे से
सुंदर जोबन जोति जगे जरबीले । खंजन से मनरंजन राजत
भारी प्रताप भरे गरबीले । बानन से म्रिग बारन से तरवारन
से चमके चटकीले । रीझि रही सखि हौहूँ लखे छबि लाल के
नैन बिसाल रसीले ।। २९ ।। (मू०ग्रं०९६८) भाँति भली बिन
संग अली जब ते मन भावन भेटि गई हौ । ता दिन ते न
सुहात कछू सु मनो बिनु दामन मोल लई हौ । भौह कमान को
तानि भले द्रिग साइक के जनु घाइ घई हौ । मारि सुमारि
करी सजनी सुनि लाल को नामु गुलाम भई हौ ।। ३० ।।
बारिज नैन जिती बनिता सु बिलोक कै बान बिना बध ह्वैहैं ।
बीरी चबात न बैठि सकै बिसंभार भई बहुधा बररैहैं । बात

।। सोरठा ।। तरुणी सुन्दर, चपल एवं पतली थी जो कि प्यारे मित्र के हृदय में गड़ गयी थी और जो अब कभी विस्मृत नहीं हो सकती थी ।। २७ ।। ।। सवैया ।। प्रियतम का स्वरूप देखकर वह स्त्री मन में ही रीझ रही थी। उसने सब सोच-विचार का त्याग कर दिया था और नयनों से नयन मिलते ही वह मुस्कुरा उठती थी। प्रियतम का सुन्दर चेहरा देखने के लिए उसके खंजन के नयनों के समान नयन ललचा रहे थे। मनमाना प्रिय प्राप्त कर वह मदमत्त होकर मुँह से कुछ बोल नहीं पा रही है ।। २८ ।। यौवन-ज्योति से युक्त वे सुन्दर शोभायमान, खंजन के समान मन को प्रसन्न करनेवाले गौरव-युक्त नयन हैं। वे बाणों, मृगशावकों और तलवारों के समान चमक रहे हैं। हे सखी ! मैं उस प्रिय के सुन्दर नयन देखकर रीझ रही हूँ ।। २९ ।। हे सखी ! जब से मैं प्रियतम से मिली हूँ उसी दिन से कुछ अच्छा नहीं लगता और मैं तो जैसे बिना दाम के ही मोल ले ली गई हूँ। उसकी भौंह की कमान और दृष्टि रूपी बाण से मानों मैं घायल हो गई हूँ। मुझ पर तो कामदेव टूट पड़ा है, हे सजनी ! मैं तो प्रिय के नाम की गुलाम हो गई हूँ ।। ३० ।। कमल-नयनों वाली समस्त स्त्रियाँ हैं, वे सब देखकर ही बिना बाणों के मारी गई हैं। पान चबाती हुई बैठ नहीं पाती और अत्यधिक बड़बड़ा रही हैं। अब वे बातें

कहै बिगसै न बबाकी सो लेत बलाइ सभै बलि जैहैं। बालम
हेत बियोम की बाम सु बार अनेक बजार बकैहैं ॥ ३१ ॥
॥ चौपई ॥ एक सखी छबि हेरि रिसाई। ता के कह्यो पिता
प्रति जाई। बचन सुनत न्रिप अधिक रिसायो। दुहिता के
मंदिर चलि आयो ॥ ३२ ॥ राजसुता ऐसे सुनि पायो।
मो पितु अधिक कोप करि आयो। तब तिन ह्रिदै
कह्यो का करो। उर महि मारि कटारी मरो ॥ ३३ ॥
॥ दोहरा ॥ बिमन चंचला चित लखी मीत कह्यो मुसंकाइ।
तै चित क्यो ब्याकुलि भई मुहि कहि भेद सुनाइ ॥ ३४ ॥
॥ चौपई ॥ राजसुता कहि ताहि सुनायो। याते मोर ह्रिदै
डरपायो। राजा सौ किनहूँ कहि दीनो। ताते राव कोप
अति कीनो ॥ ३५ ॥ ता ते राव क्रोध उपजायो। दुहूँअन
के मारनि हित आयो। अपने संग मोहि करि लीजै। बहुरि
उपाइ भजन को कीजै ॥३६॥ बचन सुनत राजा हसि परियो।
ता को शोक निवारन करियो। हमरो कछू शोक नहि
करियै। तुमरी जानि जान ते डरियै ॥३७॥ ॥दोहरा॥ ध्रिगु
अबला ते जगत मै पिय बध नैन निहारि। पलक एक जीयत
रहै मरहि न जमधर मारि ॥ ३८ ॥ ॥ सवैया ॥ कंठसिरी

करती हुई बेबाक रूप से हँस नहीं पा रहीं और सब उस पर न्योछावर होने के लिए तत्पर हैं। इस प्रिय के लिए तो अनेकों अप्सराएँ अनेकों बार बाज़ार में बिकेंगी ॥ ३१ ॥ ॥ चौपाई ॥ एक सखी छवि देखकर ईर्ष्यालु हो उठी और उसके पिता से कह दिया। राजा यह सुनकर अत्यन्त क्रुद्ध हो बेटी के महल की तरफ़ चल पड़ा ॥ ३२ ॥ राजपुत्री को जब पता लगा कि मेरा पिता क्रुद्ध होकर आ रहा है, तब उसने मन में सोचा कि हृदय में कटारी मारकर मर जाऊँ ॥ ३३ ॥ ॥ दोहा ॥ जब वह बेमन और चंचल हो गई तो मित्र ने मुस्कुराकर कहा कि तुम क्यों व्याकुल हो गई हो, यह भेद मुझसे कहो ॥ ३४ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजकुमारी ने कहा कि मेरा मन इसलिए डर रहा है कि राजा से किसी ने कह दिया है और इससे राजा क्रुद्ध हो उठा है ॥ ३५ ॥ राजा इसीलिए क्रुद्ध होकर दोनों को मारने के लिए आया है। तुम मुझे अपने साथ लेकर भागनें का उपाय कर लो ॥ ३६ ॥ यह सुनकर राजा हँस पड़ा और उसने उसका शोक दूर किया। उसने कहा, तुम मेरी चिन्ता मत करो, मैं तो तुम्हारी जान जाने के भय से भयभीत हूँ ॥ ३७ ॥ ॥ दोहा ॥ उस स्त्री को धिक्कार है जो प्रिय-वध आँखों से देखकर जीवित रहे

मनि कंकन कुंडल भूखन छोरि भभूत धरौगी । हार बिसारि हजारन सुंदर पावक बीच प्रवेश करौगी । जूझि मरौ कि गरौ हिम माँझ टरो न तऊ हठि तोहि बरौगी । राज समाज न काज किसू सखि पीय मर्यो लखि हौ हूँ मरौगी ॥ ३९ ॥ ॥ चौपई ॥ बिहसि कुअर यौ बचन उचारो । शोक करो नहि बाल हमारो । हौ अब एक उपायहि करिहों । जाते तुमरो शोक निवरिहों ॥ ४० ॥ हमरो कछू शोक नहि कीजै । तीर कमान आनि (मू०ग्रं०९९९) मुहि दीजै । मुहकम कै दरवाजो द्यावहु । या आँगन महि सेज बिछावहु ॥ ४१ ॥ वहै काम अबला तिन कियो । तीर कमानि आनि तिह दियो । भली भाँति सौ सेज बिछाई । ता पर मीत लयो बैठाई ॥४२॥ ॥ दोहरा ॥ तब अबला चिंता करी जिय ते भई निरास । जीयौ त पिय के सहित ही मरौ त पति के पास ॥ ४३ ॥ ॥ चौपई ॥ पलका पर मीतहि बैठायो । भाँति भाँति सौ केल कमायो । भाँति भाँति के भोगन भरहीं । जिय अपने को तास न करहीं ॥ ४४ ॥ तब लौ चक्रवाक दो आए । राजकुमार द्रिगन लखि पाए । इक धनु तानि बान सौ मार्यो । दुतिय हाथ सर दुतिय प्रहार्यो ॥ ४५ ॥ दुहूँ

और कटारी मारकर मर न जाय ॥ ३८ ॥ ॥ सवैया ॥ गले का हार, मणि, कंगन, कुंडलादि आभूषण छोड़कर भभूत धारण करूँगी। हज़ारों सुन्दर हार भुलाकर मैं अग्नि में प्रवेश कर जाऊँगी। मैं युद्ध में मर जाऊँ, बर्फ़ में गल जाऊँ, परन्तु तुमको वरण किये बिना नहीं रहूँगी। राज-समाज मेरे किसी काम का नहीं, हे सखी! प्रिय को मरता देखकर मैं भी मर जाऊँगी ॥ ३९ ॥ ॥चौपाई॥ हंसकर राजकुँवर ने कहा कि हे कन्या! तुम मेरा शोक मत करो। मैं एक उपाय करूँगा जिससे तुम्हारा दुख दूर हो जायगा ॥ ४० ॥ मेरी चिन्ता मत करो और मुझे धनुष-बाण दे दो। शक्तिपूर्वक दरवाज़ा बन्द कर दो और इस आँगन में शय्या बिछा लो ॥ ४१ ॥ कन्या ने वैसा ही किया और धनुष-बाण लाकर उसे दे दिया। भली प्रकार पलंग बिछाकर उस पर प्रियतम को बिठा दिया ॥ ४२ ॥ ॥ दोहा ॥ तब उसने मन में निराश होकर सोचा कि प्रियतम के साथ ही जीऊँगी भी और प्रिय के साथ ही मरूँगी ॥४३॥ ॥ चौपाई ॥ उसने प्रिय को पलकों पर बिठाया और विभिन्न प्रकार से केलिक्रीड़ा की। अनेकों भोग करते हुए वे मन में तनिक भी नहीं डरे ॥४४॥ तब तक वहाँ दो चकवे आए जिन्हें राजकुमार ने देखा। एक को एक बाण से

सरन दुहुँअन बध कीनो। दुहुँअन भूँनि छिनिक महि लीनो। तिन दुहुँअन दुहुँअन को खायो। शंक छोरि पुन केल कमायो ॥ ४६ ॥ ॥ दोहरा ॥ तिन कौ भचछन करि दुहन लीनो चरम उतारि। पहिरि दुहुन सिर पै लयो पैठे नदी मझारि ॥ ४७ ॥ ॥ चौपई ॥ चक्रवार सभ को तिन जानै। मानुख कै न कोऊ पहिचानै। पैरत बहु कोसन लगि गए। लागत एक किनारे भए ॥ ४८ ॥ दो है दोऊ अरूड़ित भए। चलि करि देस आपने गए। ता कौ लै पटरानी कीनो। चित को शोक दूरि करि दीनो ॥ ४९ ॥ ॥ दोहरा ॥ पछियन को पोछत धरे पितु की द्रिशटि बचाइ। पंखी ही सभ को लखै मानुख लख्यो न जाइ ॥ ५० ॥ देस आनि अपने बसे तिय को सदन बनाइ। भाँति भाँति तासो रमै निसु दिन मोद बढाइ ॥ ५१ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ गिआरह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १११ ॥ २१५५ ॥ अफजूं ॥

मारा और दूसरे हाथ से दूसरे बाण द्वारा प्रहार किया ॥ ४५ ॥ दोनों बाणों ने दोनों को मार डाला जिन्हें उन्होंने क्षण भर में भून लिया। उन दोनों ने उन दोनों को खा लिया और पुनः निश्चित होकर केलि-क्रीड़ा की ॥ ४६ ॥ ॥ दोहा ॥ उन्हें खाकर दोनों ने उनका चमड़ा उतार लिया और सिर पर पहनकर दोनों नदी में कूद पड़े ॥ ४७ ॥ ॥ चौपाई ॥ सब उन्हें चक्रवाक समझने लगे और उनके मनुष्य होने को किसी ने नहीं जाना। तैरते-तैरते कई कोस निकलकर वे एक किनारे जा लगे ॥ ४८ ॥ दो घोड़ों पर दोनों चढ़ गए और अपने देश को चले गए। राजा ने उसे पटरानी बनाकर अपना दुख दूर किया ॥ ४९ ॥ ॥ दोहा ॥ पक्षियों की पोशाक पहनकर पिता की दृष्टि बचाकर वे निकले और सबने उन्हें मनुष्य न समझकर पक्षी ही माना ॥ ५० ॥ रानी का महल बनाकर अब वे अपने देश में आ बसे और रात-दिन प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न प्रकार से केलि-क्रीड़ा करने लगे ॥ ५१ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ ग्यारहवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १११ ॥ २१५५ ॥ अफजू ॥

अथ इक सौ बारहा चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ सूरसैन राजा हुतो समरकंद के माहि । ता के तुल्लि नरेश को और जगत मै नाहि ॥ १ ॥ चित्रकला रानी हुती बडभागनि तिह ठौर । रूप सील लज्जा गुनन ता के तुल्लि न और ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ ता की न्रिप आग्या महि रहई । सोई करै जु वह हसि कहई । आग्या देस सकल तिह मानै । रानी को राजा पहिचानै ॥ ३ ॥ ॥ दोहरा ॥ अमित रूप ता कौ निरखि मन क्रम बसि भयो पीय । निसु दिन ग्रहि (मू०ग्रं०६७०) ता के रहै और न हेरत त्रीय ॥४॥ ॥ चौपई ॥ तवन न्रिपति इक त्रियहि निहार्यो । भोग करौ तिह साथ बिचार्यो । रैनि भई जबही लखि पायो । पठै दूत ग्रहि ताँहि बुलायो ॥ ५ ॥ ता सौ बोलि अधिक रति मानी । पर त्रिय करि अपनी पहिचानी । ता कौ चहत सदन मै ल्यावै । निजु नारी ते अति डर पावै ॥६॥ यहै बात चित मै मथि राखी । केल समैं तासौ यौ भाखी । ता कौ कह्यो बक्त्र ते बरिहों । राँकहु ते रानी लै

एक सौ बारहवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ समरकन्द का राजा शूरसेन अद्वितीय था ॥ १ ॥ उस स्थान पर उसकी भाग्यशाली रानी चित्रकला थी जो रूप, शील, लज्जा और गुण में एक ही एक थी ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजा उसी की बात मानता था और जो वह हँसकर कह देती थी वही करता था । पूरा देश उसी की आज्ञा मानता था और रानी को ही राजा मानता था ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ उसका अपरिमित सौंदर्यशाली रूप देखकर मन-कर्म से प्रियतम उसके वश में हो गया और किसी अन्य स्त्री की ओर देखे बिना रात-दिन उसी के महल में पड़ा रहता था ॥४॥ ॥ चौपाई ॥ उस राजा ने एक स्त्री देखी और उसके साथ रतिक्रीड़ा करने की सोची । जब रात हुई तो दूत भेजकर उसे अपने महल में बुलाया ॥ ५ ॥ उसे बुलवाकर उससे अत्यधिक रतिक्रीड़ा की और इस प्रकार पराई स्त्री को अपनी स्त्री के रूप में मान लिया । वह उसे अपने महल में लाना चाहता था, परन्तु अपनी स्त्री से अत्यधिक घबराता था ॥ ६ ॥ यही बात उसने मन में रखी और रतिक्रीड़ा के समय उस (स्त्री) से कही । उसे मुँह से वरण करने के लिए कहा और उसे बताया कि मैं तुम्हें निर्धन से रानी बना

सरन दुहुँअन बध कीनो। दुहुँअन भूँनि छिनिक महि लीनो। तिन दुहुँअन दुहुँअन को खायो। शंक छोरि पुन केल कमायो ॥ ४६ ॥ ॥ दोहरा ॥ तिन कौ भचछन करि दुहन लीनो चरम उतारि। पहिरि दुहुन सिर पै लयो पैठे नदी मझारि ॥ ४७ ॥ ॥ चौपई ॥ चक्रवार सभ को तिन जानै। मानुख कै न कोऊ पहिचानै। पैरत बहु कोसन लगि गए। लागत एक किनारे भए ॥ ४८ ॥ दो है दोऊ अरूड़ित भए। चलि करि देस आपने गए। ता कौ लै पटरानी कीनो। चित को शोक दूरि करि दीनो ॥ ४९ ॥ ॥ दोहरा ॥ पछियन को पोछत धरे पितु की द्रिशटि बचाइ। पंखी ही सभ को लखै मानुख लख्यो न जाइ ॥ ५० ॥ देस आनि अपने बसे तिय को सदन बनाइ। भाँति भाँति तासो रमै निसु दिन मोद बढाइ ॥ ५१ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ गिआरह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १११ ॥ २१५५ ॥ अफजूं ॥

मारा और दूसरे हाथ से दूसरे बाण द्वारा प्रहार किया ॥ ४५ ॥ दोनों बाणों ने दोनों को मार डाला जिन्हें उन्होंने क्षण भर में भून लिया। उन दोनों ने उन दोनों को खा लिया और पुनः निश्चित होकर केलि-क्रीड़ा की ॥ ४६ ॥ ॥ दोहा ॥ उन्हें खाकर दोनों ने उनका चमड़ा उतार लिया और सिर पर पहनकर दोनों नदी में कूद पड़े ॥ ४७ ॥ ॥ चौपाई ॥ सब उन्हें चक्रवाक समझने लगे और उनके मनुष्य होने को किसी ने नहीं जाना। तैरते-तैरते कई कोस निकलकर वे एक किनारे जा लगे ॥ ४८ ॥ दो घोड़ों पर दोनों चढ़ गए और अपने देश को चले गए। राजा ने उसे पटरानी बनाकर अपना दुख दूर किया ॥ ४९ ॥ ॥ दोहा ॥ पक्षियों की पोशाक पहनकर पिता की दृष्टि बचाकर वे निकले और सबने उन्हें मनुष्य न समझकर पक्षी ही माना ॥ ५० ॥ रानी का महल बनाकर अब वे अपने देश में आ बसे और रात-दिन प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न प्रकार से केलि-क्रीड़ा करने लगे ॥ ५१ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ ग्यारहवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १११ ॥ २१५५ ॥ अफजू ॥

अथ इक सौ बारहा चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ सूरसैन राजा हुतो समरकंद के माहि। ता के तुल्लि नरेश को और जगत मै नाहि ॥ १ ॥ चित्रकला रानी हुती बडभागनि तिह ठौर। रूप सील लज्जा गुनन ता के तुल्लि न और ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ ता की त्रिप आग्या महि रहई। सोई करै जु वह हसि कहई। आग्या देस सकल तिह मानै। रानी को राजा पहिचानै ॥ ३ ॥ ॥ दोहरा ॥ अमित रूप ता कौ निरखि मन क्रम बसि भयो पीय। निसु दिन ग्रहि (मू०ग्रं०९७०) ता के रहै और न हेरत त्रीय ॥४॥ ॥ चौपई ॥ तवन त्रिपति इक त्रियहि निहार्यो। भोग करौ तिह साथ बिचार्यो। रैनि भई जबही लखि पायो। पठै दूत ग्रहि ताँहि बुलायो ॥ ५ ॥ ता सौ बोलि अधिक रति मानी। पर त्रिय करि अपनी पहिचानी। ता कौ चहत सदन मै ल्यावै। निजु नारी ते अति डर पावै ॥६॥ यहै बात चित मै मथि राखी। केल समैं तासौ यौ भाखी। ता कौ कह्यो बक्त्र ते बरिहों। राँकहु ते रानी लै

एक सौ बारहवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ समरकन्द का राजा शूरसेन अद्वितीय था ॥ १ ॥ उस स्थान पर उसकी भाग्यशाली रानी चित्रकला थी जो रूप, शील, लज्जा और गुण में एक ही एक थी ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजा उसी की बात मानता था और जो वह हँसकर कह देती थी वही करता था। पूरा देश उसी की आज्ञा मानता था और रानी को हो राजा मानता था ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ उसका अपरिमित सौंदर्यशाली रूप देखकर मन-कर्म से प्रियतम उसके वश में हो गया और किसी अन्य स्त्री की ओर देखे बिना रात-दिन उसी के महल में पड़ा रहता था ॥४॥ ॥ चौपाई ॥ उस राजा ने एक स्त्री देखी और उसके साथ रतिक्रीड़ा करने की सोची। जब रात हुई तो दूत भेजकर उसे अपने महल में बुलाया ॥ ५ ॥ उसे बुलवाकर उससे अत्यधिक रतिक्रीड़ा की और इस प्रकार पराई स्त्री को अपनी स्त्री के रूप में मान लिया। वह उसे अपने महल में लाना चाहता था, परन्तु अपनी स्त्री से अत्यधिक घबराता था ॥ ६ ॥ यही बात उसने मन में रखी और रतिक्रीड़ा के समय उस (स्त्री) से कही। उसे मुँह से वरण करने के लिए कहा और उसे बताया कि मैं तुम्हें निर्धन से रानी बना

करिहों ॥ ७ ॥ जब यौ बचन त्रियहि सुनि पायो । राज हेत हियरो हुलसायो । अब हौ ह्वै त्रिय रही तिहारे । बर्यो चहो तब बरो पियारे ॥ ८ ॥ एक बात मैं तुमैं बखानौ । मेरो बचन साच जौ मानो । जौ जीयत लौ नेह निबाहो । तौ तुम आजु त्रिपति मुहि ब्याहो ॥ ९ ॥ जा सौ नेहु नैकहूँ कीजै । ता कौ पीठि जियत नहि दीजै । ता की बाह बिहसि करि गहियै । प्रान जात लौ प्रीति निबहियै ॥ १० ॥ यह रानी जो धाम तिहारै । ता कौ डर है हियै हमारै । तुमहूँ अति ता के बसि प्यारे । जंत्र मंत्र तंत्रन के मारे ॥ ११ ॥ हौ अब एक चरित्र बनाऊँ । जाते तुमसे त्रिप को पाऊँ । सकल सती को साज सवरिहौं । अरुन बस्त्र अंगन में करिहौं ॥ १२ ॥ तुम तह इह रानी संग लै कै । ऐयहु आपु चिंडोल चड़ैकै । तुमहूँ आपु मोहि समझैयहु । रानी कौ मम तीर पठैयहु ॥ १३ ॥ कहबे हुती सकल तिन भाखी । सो सभ राइ चित्त मै राखी । निसुपति छप्यो दिनिसि चड़ि आयो । बाम सती कौ भेस बनायो ॥ १४ ॥ दिन भे चली सती हठ कै कै । ऊच नीच सभहिन संग लै कै । त्रिय सहित राजा हूँ आयो । आनि सती को सीस झुकायो ॥ १५ ॥

दूँगा ॥ ७ ॥ जब स्त्री ने यह बात सुनी तो राज्य के लिए उसका भी मन नाच उठा । वह कहने लगी कि मैं तो अब तुम्हारी हूँ, जब चाहो मेरा वरण कर लो ॥ ८ ॥ एक बात मैं तुमसे कहती हूँ, इसे सत्य मानना । यदि तुम आजीवन प्यार निभा सकते हो तभी मुझसे ब्याह करना ॥ ९ ॥ जिससे तनिक भी प्यार किया जाय, जीते जी उसे पीठ नहीं दिखानी चाहिए । प्रसन्न मन से उसकी बाँह पकड़नी चाहिए और प्राण रहते तक प्रेम का निबाह करना चाहिए ॥ १० ॥ तुम्हारी जो घर में रानी है मुझे इसी से डर लगता है । हे प्रिय ! यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र के कारण तुम उसके वश में हो ॥ ११ ॥ अब मैं एक प्रपंच करती हूँ जिससे तुम्हारे जैसे राजा को पा सकूँ । मैं सती का वेश धारण करूँगी और लाल कपड़े पहनूँगी ॥ १२ ॥ तुम भी रानी को साथ लेकर पालकी में बैठकर मेरे पास आना । तुम मुझे समझाना और रानी को भी मेरे पास भेजना ॥ १३ ॥ उसको जो कहना था उसने कह दिया और राजा ने उसे मन में समझ लिया । चन्द्रमा छिपा और दिन निकल आया तो उस स्त्री ने सती का वेश बना लिया ॥ १४ ॥ दिन निकलते ही सती हठ-पूर्वक ऊँच-नीच सबको साथ लेकर चल पड़ी । रानी के संग राजा भी आया

न्रिप तिह कह्यो सती नहि हूजै। मोतै अमित दरबु को लीजै। हे रानी तुमहूँ समझावो। जरत अगन तें याहि बचावो ॥ १६ ॥ न्रिप रानी ता कौ समझायो। बिहसि सती यौ बचन सुनायो। यह धन है किह काज हमारे। सुनो राव प्रति कहौ तिहारे ॥ १७ ॥ ॥ दोहरा ॥ सुनु रानी तोसौ कहौ बात सुनो महाराज। पिय कारन जिय मै तजौ यह धन है किह काज ॥ १८ ॥ पर धन गनौ पखान सो पर पति पिता समान। (मू०ग्रं०९७१) पिय कारन जिय मै तजौ सुरपुर करौ पयान ॥ १९ ॥ ॥ चौपई ॥ पुनि राजै इह भाँति उचारी। एते हठ जिनि करो पियारी। प्रान पतन आपन जिनि कीजै। आधो राज हमारो लीजै ॥ २० ॥ कौन काज न्रिप राज हमारै। सदा रहो इह धाम तिहारै। मैं जुग चारि लगै नहि थीहौ। पिय के मरे बहुरि मै जीहौ ॥ २१ ॥ तब रानी न्रिप बहुरि पठाई। याको कहो बहुरि तुम जाई। ज्यों त्यों याते याहि निवरियहु। जो वह कहै वहै तुम करियहु ॥ २२ ॥ तब रानी ता पै चलि गई। बात करत बहुतैं बिधि भई। कहियो सती सो बच मैं कहूँ। इन ते होइ न सो हठ

और उसने सती के सामने सिर झुका दिया ॥ १५ ॥ राजा ने कहा कि सती होने की अपेक्षा मुझसे अपार द्रव्य ले लो। हे रानी ! तुम ही इसे समझाओ और इसे अग्नि से बचाओ ॥ १६ ॥ रानी और राजा ने उसे समझाया ! तब सती ने मुस्कुरा कर कहा कि हे राजन् ! सुनो : यह धन मेरे किस काम का है ? ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ हे रानी और महाराज ! सुनो, मैं प्रियतम के कारण प्राण त्याग रही हूँ, यह धन मेरे किस काम का है ॥ १८ ॥ पराया धन पत्थर और पर-पति पिता-समान मानते हुए प्रिय के लिए प्राण त्यागकर मैं स्वर्ग जा रही हूँ ॥ १९ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजा ने फिर कहा कि हे प्रिय ! इतना हठ मत करो। तुम अपने प्राण मत त्यागो और मेरा आधा राज्य ले लो ॥ २० ॥ राजा, यह राज्य मेरे किस काम का है, यह तो सदैव तुम्हारे पास ही रहे। मैं तो चार युगों तक नहीं रहूँगी और प्रियतम तो मर जायगा पर मैं (सती के रूप में) फिर भी जीवित रहूँगी ॥ २१ ॥ तब राजा ने रानी को फिर भेजा और उसे फिर समझाने के लिए कहा। उसे जैसे-तैसे समझाओ और जैसा वह कहे वैसा ही करो ॥ २२ ॥ तब रानी पुनः चलकर वहाँ पहुँची और विभिन्न प्रकार से उससे बातचीत करने लगी। सती ने कहा कि

गहूँ ॥ २३ ॥ रनियहि कह्यो सती पति देहो। मोरे अग्र दासिनी ह्वैहो। तव देखत तेरो न्रिप राऊँ। तव घट दै सिर नीर भराऊँ ॥ २४ ॥ रानी कह्यो पतिहि तुहि देहौ। तोरे अग्र दासिनी ह्वैहो। द्रिग देखत न्रिप तुहि रमवाऊँ। गगरी बारि सीस धरि ल्याऊँ ॥ २५ ॥ पावक बीच सती जिन जरो। कछू बकत्र ते हमै उचरो। जौ तूँ कहैं त तोकौ बरिहौ। राँकहु ते रानी तुहि करिहौ ॥ २६ ॥ यौ कहि पकरि बाँह तें लयो। डोरी बीच डारि करि दयो। तुम त्रिय जिनि पावक मों जरो। मोहू को भरता लै करो ॥२७॥ ॥ दोहरा ॥ सभहिन के देखत तिसै लयो बिवान चड़ाइ। इह चरित्र ता को बर्‍यो रानी कियो बनाइ ॥ २८ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बारहा चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ११२ ॥ २१८३ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ तेरह चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ बिशनसिंघ राजा बडो बंगस मै बडभाग।

मेरी एक बात मानो तो मैं यह हठ छोड़ती हूँ ॥ २३ ॥ रानी सती ने कहा कि पति दे दो और मेरे सामने दासी बनकर रहो। राजा के देखते हुए तुम सिर पर घड़ा लेकर पानी भरोगी ॥ २४ ॥ रानी ने कहा कि तुम्हें पति दे दूँगी और तुम्हारे सामने दासी होकर पानी भरूंगी। आँखों के सामने राजा को तुमसे रमण करनें दूँगी और सिर पर गगरी लेकर पानी ले आया करूँगी ॥ २५ ॥ हे सती ! तुम अग्नि में मत जलो और कुछ मुँह से कहो। यदि तुम कहती हो तो मैं तुम्हारा वरण कर लूँगा और रंक से तुम्हें रानी बना दूँगा ॥ २६ ॥ यह कहकर उसे बाँह से पकड़ लिया और डोली में डाल लिया। राजा ने पुनः कहा कि हे स्त्री ! तुम जलो मत और मुझको ही पति बना लो ॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ सबके देखते-देखते ही उसे वाहन पर चढ़ा लिया। इस प्रकार उसका वरण किया और उसे रानी बना लिया ॥२८॥१॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ बारहवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ११२ ॥ २१८३ ॥ अफजू ॥

एक सौ तेरहवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ बंग प्रदेश में विशनसिंह नामक भाग्यशाली राजा था।

ऊच नीच ता के प्रजा रही चरन सौ लाग ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ क्रिशनकुअरि ता के पटरानी । जानकु छीर सिंध मथिआनी । नैन दिपैं नीके कजरारे । लखे होत ललना मतवारे ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ रूप दिपै ता को अमित सोभा मिलत अपार । हेरि राइ को चित बध्यो सकत न बहुरि उबार ॥३॥ ॥ चौपई ॥ तासौ नेह राव को भारी । त्रिपहूँ को अति चाहत प्यारी । दुहूँअन परम प्रीति भी ऐसी । सीता सो रघुनाथन वैसी ॥ ४ ॥ (मू०ग्रं०९७२) एक हेरि त्रिय राव लुभानो । निजु त्रिय संग नेह घट मानो । जब इह किशनकुअरि सुनि पाई । राजा पै चित ते खुनसाई ॥ ५ ॥ किशनकुअरि चित अधिक रिसाई । मन मै घात यहै ठहराई । दुहकरि करि मै आजु सु करिहों । त्रिपह सँघारि आपु पुनि मरिहों ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ तब रानी चित ते जरी मन मै अधिक रिसाइ । ज्यों सीसो सर के लगे तूटि तरक दै जाइ ॥ ७ ॥ पठै दूत राजै तुरत लीनो तरुनि बुलाइ । गरब प्रहरि झखकेतु को सोइ रहै सुखु पाइ ॥ ८ ॥ ॥ चौपई ॥ जब ऐसे रानी सुनि पाई । जमधर लए हाथ मो आई । बिशनसिंघ पति प्रथम सँघार्यो । ता पाछे तिह

ऊँच-नीच सभी प्रजा उसके चरणों की दासी थी ॥१ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसकी पटरानी कृष्णकुमारी मानों क्षीरसागर से निकली हो। उसके कजरारे दीप्त नयनों को देखकर युवक मदमस्त हो जाते थे ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ उसकी छवि अपार थी और रूप-सौंदर्य अपरिमित था। राजा का चित्त उसमें रमा हुआ था और उसका मन उसके वश में नहीं था ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसका भी राजा से अत्यधिक प्रेम था और वह भी राजा को अत्यन्त प्रेम करती थी। दोनों का प्रेम राम-सीता के प्रेम के समान था ॥ ४ ॥ एक स्त्री को देखकर राजा का मन ललचा गया और उसने अपनी स्त्री के साथ प्रेम घटा दिया। जब कृष्णकुमारी को यह पता लगा तो वह चित्त में राजा से क्रुद्ध हो उठी ॥५॥ कृष्णकुमारी ने अत्यधिक रुष्ट होकर मन में यह सोचा कि आज मैं दुष्कार्य करूँगी और राजा को मारकर स्वयं भी मर जाऊँगी ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ तब रानी क्रुद्ध होकर मन में ऐसे जल उठी जैसे वाण लगने से शीशा छिटक जाता है ॥ ७ ॥ राजा ने दूत भेजकर तरुणी को तुरन्त बुलाया और कामदेव को तृप्त कर सो रहा ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब रानी ने यह सुना तो तलवार हाथ में लिये आ गई। उसने पहले अपने पति बिशनसिंह को मारा और बाद

त्रिय को मार्‌यो ।। ९ ।। ।। दोहरा ।। मारि मास त्रिय तवन को राँधि लयो तिह काल । सदन एक उमराव के भेज दयो ततकाल ।। १० ।। मास जानि ताकौ तुरतु चाबि गए सभ सोइ । भलो भलो सभ को कहै भेद न पावै कोइ ।। ११ ।। हाथ पाव त्रिप के सकल संग मुतहरी तोरि । सीड़न पर ते आनि कै दयो धरनि कह छोरि ।। १२ ।। मदरा के मद सो छक्यो उर जमधर की खाइ । सीढ़िन ते खिसकत त्रिपत पर्‌यो धरनि पर आइ ।। १३ ।। स्रोनत सो भीजत भई सकल धरनि सरबंग । आनि तरे राजा पर्‌यो लगे कटारी अंग ।। १४ ।। ।। चौपई ।। जब त्रिप मर्‌यो त्रियहि लखि पायो । भाँति भाँति ह्वै दुखित सुनायो । कौन काल गति करी हमारी । राजा जू चुभि मरे कटारी ।। १५ ।। जब रानी ह्वै दीन उघायो । बैठे सभ लोगन सुनि पायो । ता कौ सभ पूछनि मिलि आए । कौनै दुशट राव जू घाए ।।१६।। तब रानी अति दुखित बखान्यो । ता को भेद कछू न पछान्यो । प्रथम राव जू मासु मँगायो । आप भख्यो कछु भ्रितन पठायो ।। १७ ।। पुनि राजा जू अमल मँगायो । आपु पियो कछु हमै पियायो । पीए कैंफ कै अति मति भए । सुधि मै

में उस स्त्री को मार डाला ।। ९ ।। ।। दोहा ।। उस स्त्री ने उसको मारकर उसका मांस पका लिया और तुरन्त एक उमराव के घर भेज दिया ।। १० ।। सभी मांस समझकर खा गए और भला-भला कहने लगे । कोई भी इस भेद को नहीं जान सका ।। ११ ।। राजा के हाथ-पाँव मुग्दर से तोड़कर उसे सीढ़ियों पर से धरती पर छोड़ दिया ।। १२ ।। वह राजा शराबी की तरह सीने में कृपाण खाकर सीढ़ियों से लुढ़कता हुआ धरती पर आ गया ।। १३ ।। सारी धरती खून से भीग गई और इस प्रकार राजा कटारी खाकर नीचे आ गिरा ।। १४ ।। ।। चौपाई ।। जब स्त्री ने मृतक राजा को देखा तो दुखित होकर चिल्लाई कि काल ने मेरे साथ यह क्या किया कि राजा जी कटारी के चुभ जाने से मर गए ।। १५ ।। जब रानी ने दीन स्वर में कहा तो सब लोगों ने सुना । सब पूछने लगे कि किस दुष्ट ने राजा को मारा है ।। १६ ।। तब रानी ने दुखी होकर कहा कि इसका रहस्य नहीं जाना जा सका । पहले तो राजा ने कुछ मांस मँगवाया जिसमें से कुछ स्वयं खाया और कुछ सेवकों के लिए भेज दिया ।। १७ ।। पुनः राजा जी ने मद्य मंगवाया, जिसमें से कुछ स्वयं पिया और कुछ मुझे पिलाया । मद्य पीने से अत्यन्त मस्त होकर बेसुध हो

हुते बिसुधि ह्वैं गए ॥ १८ ॥ मद सौ न्रिपति भए मतवारे । खेल काज ग्रहि ओर पधारे । बसि ह्वै अधिक काम के गयो । मेरो हाथ हाथ गहि लयो ॥ १९ ॥ पाव खिसत पौरिन ते भयो । अधिक (मू०ग्रं०९७३) मत्त मैंथो गिरि गयो । उर ते उगरि कटारी लागी । ताँ ते देह राव जू त्यागी ॥ २० ॥ ॥ दोहरा ॥ सीढ़िन ते राजा गिर्यो पर्यो धरनि पर आनि । चुबी कटारी पेट मै ताते तजियो प्रान ॥ २१ ॥ ॥ चौपई ॥ सभन सुनत यौ कथा उचारी । जमधर वहै बहुरि उरि मारी । त्रिप त्रिय मारि प्रान निजु दीनो । चरित चंचला ऐसो कीनो ॥ २२ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ तेरह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ११३ ॥ २२०५ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ चौदस चरित्र कथनं ॥

॥ सवैया ॥ एक महाँबन बीच बसै मुनि सिंग धरे रिखस्रिंग कहायो । कौनहूँ ख्याल बिभांडव जू म्रिगिया हूँ की कोखिहूँ ते उपजायो । होत भयो उपसी तब ते जब ते बुधि

गए ॥ १८ ॥ मद्य में मस्त होकर राजा क्रीड़ागार की ओर बढ़े । काम के वश होकर उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में पकड़ लिया ॥ १९ ॥ सीड़ियों से पाँव खिसक गया और मदमस्त होने के कारण मेरे हाथ से भी छूट गया । निकलकर कृपाण छाती में लग गई जिससे उन्होंने प्राण त्याग दिए ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ राजा सीढ़ियों से धरती पर गिरा, जिससे कटारी पेट में चुभी और उन्होंने प्राण त्याग दिए ॥ २१ ॥ ॥ चौपाई ॥ सबको सुनाकर यह कहानी कही और वही कृपाण अपने सीने में मार ली । स्त्री ने राजा को मारकर प्राण त्याग दिए और इस प्रकार यह प्रपंच किया ॥ २२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ तेरहवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ११३ ॥ २२०५ ॥ अफजू ॥

एक सौ चौदहवाँ चरित्र-कथन

॥ सवैया ॥ घनघोर वन में श्रृंग धारण करनेवाला एक श्रृंगी ऋषि रहता था जो कि विभांडक ऋषि द्वारा मृगी के उदर से पदा था । वह सुधि सँभालते ही तपस्या में लीन हो गया था और भगवान का नाम लेते हुए कभी

लै सुधि को ठहरायो। रैनि दिना रघुनाथ भजै कबहूँ पुर
भीतर भूल न आयो ॥ १ ॥ बीच करै तपस्या बन के मुनि
राम को नामु जपै सुखु पावै। न्हान करै नित्त ध्यान धरै मुख
बेद ररै हरि की लिव लावै। रीति चलै खट शास्त्रन की तन
कशट सहै मन को न डुलावै। भूखि पिआस लगै जब ही तब
कानन ते चुनि कै फल खावै ॥ २ ॥ काल बितीत भयो इह
रीति पर्‌यो दुरभिछ तहाँ मुनि पायो। बीज रह्यो नहि एक
तहाँ सभ लोक कनेकन कौ तरसायो। जेते पड़े बहु बिप्र
हुते तिन कौ तल ही न्रिप बोलि पठायो। कौन कुकाज कियो
कहो मै जिह तें भ्रित लोकन जीवन पायो ॥३॥ राज कही जब
यौ तिन कौ तब बिप्र सभै इह भाँति उचारे। रीत चलौ
रजनीतन की तुम कोऊ न देखियो पाप तिहारे। सिम्रित मै
खट शास्त्र मै सभ हूँ मिल कोरि बिचार बिचारे। स्रिंगी रिखी
मुन आए तवालय याही चुभै चित बात हमारे ॥ ४ ॥ जौ
चित बीच रुचै महाराज बुलाइकै मानस सोई पठैयै। कौनै
उपाइ बिभांडव को सुत या पुर बीथन मै बिहरैयै। देस बसै
फिरि काल नसै चित भीतर साच इहै ठहरैयै। जौ नहि आवै
तो पूत भिजाइ कि आपन जाइ उताइल ल्यैयै ॥ ५ ॥

भूलकर भी किसी नगर में नहीं आया था ॥ १ ॥ वन में तपस्यारत मुनि परमात्मा के नाम में ही सुख प्राप्त करता था। वह नित्य स्नान-ध्यान कर वेदपाठ किया करता था। वह शास्त्रोक्त विधि से रहता था और कष्ट सहकर भी मन को डोलने नहीं देता था। जब उसे भूख-प्यास लगती थी तो वह जंगल से फलादि चुनकर खा लिया करता था ॥ २ ॥ बहुत समय बीत जाने पर वहाँ अकाल पड़ गया। एक भी बीज वहाँ नहीं बचा और लोग दाने को भी तरस गए। जितने भी बड़े-बड़े ब्राह्मण थे उनको राजा ने बुला भेजा और पूछा कि मैंने कौन-सा दुष्कर्म किया है जो यहाँ पानी नहीं बरस रहा है ॥ ३ ॥ राजा ने जब यह कहा तो ब्राह्मणों ने कहा कि तुम तो राजाओं की नीति का अनुसरण करते हो, हमने तो कोई दुष्कर्म नहीं देखा। सबने स्मृति-शास्त्रों को अनेकों बार विचारा और कहा कि श्रृंगी ऋषि को तुम्हारे राज्य में आना चाहिए, यही हमारा मत है ॥ ४ ॥ यदि महाराज उचित समझें तो कोई व्यक्ति भेजकर किसी उपाय से विभांडक-पुत्र श्रृंगी को इस नगर में भ्रमण करवाओ। यह सत्य है कि वह यदि इस देश में बसेगा तो अकाल (दुर्भिक्ष) भाग जायगा। यदि वह नहीं आता है तो पुत्र को भेजकर

॥ सोरठा ॥ भ्रित मित पूत पठाइ राजा अति हायल भयो । आपनहूँ लपटाइ चरन रह्यो आयोन मुनि ॥ ६ ॥ (मू०ग्रं०९७४) ॥ सवैया ॥ बैठि बिचार कियो सभ लोगन कौन उपाइ कहो अब कीजै । आपहि जाइ थक्यो हमरो त्रिप सो रिखि तौ अजहूँ नहि भीजै । जो तिह ल्याइ बुलाइ यहाँ तिह कौ यह देस दुधा करि दीजै । याते लजाइ बसो ग्रहि आइ मुनी सुख पाइ सभै तपु छीजै ॥ ७ ॥ पात्र सरूप हुती तिह ठौर सोऊ चलि कै त्रिप के ग्रहि आई । भेद अभेद की बात सभै कहि कै मुख ते सभ ही समुझाई । पान चबाइ चली तित को मन देव अदेवन को बिरमाई । आनंद लोक भए तजि शोक सु शोक की बात सभै बिसराई ॥ ८ ॥ का बपुरो मुनि है सुनि हे त्रिप नैक जो नैन निहारन पैहौ । रूप दिखाइ तिसै उरझाइ सु बातन सौ अपने बसि कैहौ । पाग बँधाइ जटान मुँडाइ सु ता त्रिप जाइ तवालय ल्यैहौ । केतिक बात सुनो इह नाथ तवानन तें टुक आइ सु पैहौ ॥९॥ केतिक बात सुनो मुहि है त्रिप तारन तोरि अकाश ते ल्यैहौ । देव अदेव कहा

अथवा स्वयं जाकर उसे तुरन्त ले आइए ॥ ५ ॥ ॥ सोरठा ॥ सेवक, पुत्र, मित्र सबको भेजकर भी राजा व्याकुल बना रहा । वह स्वयं भी मुनि के चरणों पर गिर पड़ा पर मुनि नहीं आया ॥ ६ ॥ ॥ सवैया ॥ सब लोगों ने बैठकर सोचा कि अब कौन सा उपाय किया जाय, क्योंकि अब तो स्वयं हमारा राजा भी उपाय करके थक गया है, परन्तु वह ऋषि नहीं प्रसन्न हो सका है। जो भी उसे यहाँ बुलाकर ले आएगा उसे आधा राज्य दे दिया जायगा। हमारा राजा तो लज्जित होकर घर में आ बैठा है। अब मुनि की प्रसन्नता के लिए हमें सभी को अपना तप दाँव पर लगा देना होगा ॥ ७ ॥ एक सुन्दर वेश्या वहाँ थी जो चलकर राजा के महल में आई। उसने भेद-अभेद की सारी बात अपने मुख से समझाई। वह पान का बीड़ा उठाकर चबाती हुई देव-अदेवों के मन को ललचाती हुई चल पड़ी। उसे जाता देखकर सभी लोग शोक त्यागकर आनंदित हो उठे ॥८॥ हे राजन् ! वह बेचारा मुनि भला क्या है जो मेरी ओर देखेगा भी नहीं। मैं उसे अपने रूप-सौंदर्य और बातों में उलझा लूंगी। मैं उसकी जटाएँ मुंड़वाकर पगड़ी बँधवाकर, हे राजन् ! तुम्हारे घर में ले आऊँगी। हे नाथ ! तुम मेरी बात सुनो कि स्वयं आकर तुम्हें खिलाएगा ॥ ९ ॥ हे राजन् ! मैं आकाश के तारे तोड़ लाऊँगी देव-अदेव क्या हैं, मैं बड़े-बड़े देवताओं को भी वश में कर लूंगी। मैं दिन में चन्द्र और

नर हैं बर देवन को छिन मैं बसि कैहौं । द्योस के बीच चड़ैहौं
निसाकर रैनि समै रवि को प्रगटैहौं । ग्यारह रुद्रन को
हरि कौ बिधि की बुधि को बिधि सौ बिसरैहौं ।। १० ।।
।। दोहरा ।। ऐसे बचन उचारि त्रिय तह ते कियो पयान ।
पलक एक बीती नहीं तहाँ पहूँची आनि ।। ११ ।।
।। सवैया ।। देखि तपोधन कौ बनमाननि मोहि रही मन
मै सुखु पायो । खात बिभांडव जू फल थौ तिन डारिन सों
पकवान लगायो । भूखि लगी जब ही मुनि कौ तब ही तिह
ठौर छुधातर आयो । ते फल खाइ रह्यो बिसमाइ महाँ मन
भीतर मोद बढायो ।। १२ ।। सोच बिचार कियो चित मो
मुनि ऐ फल दैव कहा उपजायो । कानन मै निरखे नहि नेत्रन
आजु लगे कबहूँ न चबायो । कै मघवा बलु कै छलु कै हमरे
तप को अविलोकन आयो । कै जगदीस क्रिपा करि मो पर
मोरे रिझावन काज बनायो ।। १३ ।। आनंद यौ उपज्यो मन
मै मुनि चौक रह्यो बन के फल खैकै । कारन है सु कछू इन
मै कहि ऐसे कह्यो चहूँ ओर चितैकै । हार शिंगार धरे इक
सुंदरि ठाढी तहाँ मनमोद बढैकै । सोभित है महि भूखनपै
महिभूखन (मू०ग्रं०६७५) कौ मनो भूखित कै कै ।। १४ ।।
जोबन जेब जगे अति ही इक मानिनि कानन बीच बिराजै ।

रात में सूर्य प्रकट कर दूंगी । ग्यारहों रुद्र, शिव, ब्रह्मा आदि सबकी सुध भुला दूंगी ।। १० ।। ।। दोहा ।। यह कह वह चली और एक ही पल में वहाँ आ पहुँची ।। ११ ।। ।। सवैया ।। वह तपस्थल को देखकर मोहित हो उठी । उसने विभांडक (पुत्र) के लिए पेड़ की डालों पर लगे फलों की जगह विभिन्न पकवान लगा दिए । मुनि को जब भूख लगी तो वह उस स्थान पर आया । वह उन फलों को खाकर अत्यन्त प्रसन्न हो उठा ।। १२ ।। मुनि ने मन में सोचा कि ये फल कैसे लग गए जिन्हें मैंने आज तक जंगल में आँखों से नहीं देखा और न ही खाया है । कहीं इन्द्र छल से हमारे तप को देखने तो नहीं आया है अथवा परमात्मा ने मुझे प्रसन्न करने के लिए यह सब उपक्रम तो नहीं किया ।। १३ ।। आनंदित होकर मुनि फल खाकर चौंक उठा । वह चारों तरफ़ देखकर सोचने लगा कि इसमें कुछ कारण अवश्य है । उसने देखा कि एक सुन्दरी सज-धजकर प्रसन्न मुद्रा में खड़ी है । वह धरती के शृंगार की तरह धरती को सजा रही थी ।। १४ ।। एक मानिनी स्त्री के वन में बिराजने

नील निचोल से नैन लसैं दुति देखि मनोजव को मनु लाजै ।
कोक कपोत कलानिधि केहरि कीर कुरंग कही किह काजै ।
शोक मिटै निरखे सभ ही छबि आनद कौ हिय मै उपराजै ॥१५॥
चित्त बिचार कियो अपने मन को मुनि है यह ताहि निहारौ ।
देव अदेव कि जच्छ भुजंग किधौ नर देवर देव बिचारौ ।
राजकुमारि बिराजत है कोऊ ता पर आज सभै तन वारौ ।
याही के तीर रहौ दिन रैनि करौ तपस्या तन बीच
बिहारौ ॥ १६ ॥ जाइ प्रनाम कियो तिह को सुनि बात कहो
हम सौ तुम को हैं । देव अदेवन की दुहिता किधौ राम को
बाम हुती बन सो हैं । राजसिरी किधौ राजकुमारि तूँ जच्छ
भुजंगन के मन सोहैं । साच उचारु सची कि शिवा कि तुही
रति है पति को मगु जोहैं ॥ १७ ॥ नाथ सची रति हौं न
शिवा नहि हौगी न राजकुमार की जाई । राजसिरी नहि
जच्छ भुजंगनि देव अदेव नही उपजाई । राम की बाम न हो
अथितीस रिखीस उदालक की तिय जाई । एक जुगीस सुने
तुमहूँ तिह ते तुमरे बरबे कह आई ॥ १८ ॥ चंचल नैन कि
चंचलताई सो टामन सौ तिह को करि दीनो । हाव सु भाव

से उसका यौवन और भी जगमगा रहा था। नीलकमल के समान उसके नयन शोभायुक्त थे और उसकी द्युति देखकर कामदेव भी लज्जित हो रहा था। कोक, कपोत, चन्द्रमा, सिंह (कमर के कारण), तोता एवं हिरण अपना जीवन व्यर्थ समझ रहे थे और उसे देखकर सबका शोक दूर हो रहा था और सभी आनंदित हो रहे थे ॥ १५ ॥ मुनि ने चित्त में विचार कर उसे देखा और सोचा कि यह देव-अदेव, यक्ष, भुजंग, नरदेव आदि में से क्या है। यह तो कोई राजकुमारी है, इस पर मैं न्योछावर हो जाऊँगा। मैं तो अब रात-दिन इसी के पास रहूँगा और तपस्या करते हुए इसके साथ रमण करूँगा ॥ १६ ॥ मुनि उसे प्रणाम किया और कहा, सुनो, क्या तुम किसी देव-दैत्य की पुत्री हो या वन में राम की सीता हो ? यक्ष एवं नागों का भी मन मोहनेवाली तुम कोई रानी हो अथवा राजकुमारी हो ? तुम सच बताओ कि क्या तुम शची हो, पार्वती हो अथवा रति हो और अपने पति की राह देख रही हो ॥ १७ ॥ हे नाथ ! न तो मैं शची हूँ, न रति हूँ, न पार्वती हूँ और न ही मैं कोई राजकुमारी हूँ। मैं न रानी हूँ और न यक्ष-नाग-देव-अदेव-कन्या हूँ। मैंने तो तुम्हें योगीराज के रूप में सुना था अतः मैं तुम्हारा ही वरण करने आई हूँ ॥ १८ ॥ उसके चंचल नयनों ने तो मानों उस पर कोई जादू-सा कर दिया था। उसने हाव-भाव

दिखाइ घने छिनकेक बिखै मुनि जू बसि कीनो। पाग बँधाइ
जटान मुँडाइ सु भूखन अंग बनाइ नवीनो। जीति गुलाम
कियो अपनौ तिह तापस ते ग्रिसती करि लीनो ।। १९ ।।
तापसताई कौ त्याग तपीश्वर ता त्रिय पै चित कै उरझायो।
पाइ ब्रतोतम कौ तरुनी तन शोक निवारि अशोकुपजायो।
भाँति अनेक बिहारत सुंदर सात सुता खट पूतुपजायो। त्याग
दयो बन को बसिबो पुर भीतर को बसियो मन भायो ।। २० ।।
एक महाँ बन है मुनि हो मुनि आजु चलै तह जाइ बिहारै।
फूल घनो फल राजत सुंदर फूलि रहे जमुना के किनारै।
त्याग बिलंब चलौ तित कौ तुम कानन सो रमनीय निहारै।
केल करै मिलि आपस मै दोऊ कंद्रप कौ सभ द्रप्प
निवारै ।। २१ ।। कानन जोतिक थे तिह देस सभै अथितेस
के बाल दिखाए। काँख ते कंकन कुंडल काढि जरावकि जेब
जरे पहि (मू०ग्रं०९७६) राए। मोहि रह्यो तिह कौ लखिकै
मुनि जोग के न्यास सभै बिसराए। काहूँ प्रबोध कियो नहि
ताकह आपनही ग्रहि मै मुनि आए ।।२२।। ।। दोहरा ।। सात
सुता आगे करी तीनु त्रियहि सुत लीन। इक काँधे इक काँख

दिखाकर क्षण भर में मुनि को वश में कर लिया। उसने उसकी जटाएँ मुँड़वाकर उसे पगड़ी बँधवाकर उसे नया रूप दिया। उसे जीतकर अपना सेवक बना लिया और तपस्वी से गृहस्थी कर दिया ।। १९ ।। तप को त्याग वह तपस्वी उस स्त्री में मन लगा बैठा और उस व्रती को पाकर वह स्त्री भी मन में प्रसन्न हो उठी। अनेकों प्रकार से रमण करते हुए उसने उससे सात पुत्रियाँ और छः पुत्र पैदा किये। अब उस तपस्वी ने बन में रहने का विचार त्याग नगर में बसने का इरादा बनाया ।।२०।। हे मुनि ! एक सुन्दर वन है, आज वहाँ चलकर रमण करें। वहाँ घने फूल हैं और सुन्दर फल यमुना के किनारे शोभायमान हैं। इस जंगल को त्यागकर तुरन्त वहाँ चलो। तुम्हारे इस जंगल से वह अधिक रमणीय है। आओ वहाँ चलें और काम में संलग्न होकर कामदेव का गर्व चूर करें ।। २१ ।। उस देश में जितने जंगल थे, उस बालिका ने उस अतिथि (तपस्वी) को दिखाए। उसने अपनी बगल से किंकणी, कुंडल और जड़ाऊ गहने निकालकर पहन लिये। मुनि वे सब देखकर मोहित हो उठा और उसने योग के सभी आसनादि विस्मृत कर दिए। उसने किसी को ज्ञान का उपदेश नहीं दिया और अपने ही घर में वापस आ गया ।। २२ ।। ।। दोहा ।। सात पुत्रियाँ आगे की और स्त्री ने तीन पुत्र ले लिये। एक कंधे

मै खशटम मुनि सिर दीन ॥ २३ ॥ ॥ तोटक छंद ॥ पुर मै रिखि आइ सुने जब ही। जन पूजन ताँहि चले सभ ही। चित भाँतहि भाँति अनंदित ह्वै। ब्रिध बालन ज्वान रह्यो घर क्वै ॥ २४ ॥ सभ ही कर कुंकम फूल लिए। मुनि ऊपर वारि कै डारि दिए। लखि कै तिन कौ रिखि यौ हरख्यो। तब ही घन सावन ज्यों बरख्यो ॥ २५ ॥ ॥ दोहरा ॥ बरख्यो तहाँ असेख जल हरखे लोक अपार। भयो सुकाल दुकाल ते ऐसो चरित निहारि ॥ २६ ॥ ॥ तोटक छंद ॥ घन ज्यों बरख्यो सु घनो तह आई। पुनि लोकन के उपजी दुचिताई। जब लौ ग्रहि ते रिखिराज न जैहै। तब लौ गिरि गाँव बराबरि ह्वैहै ॥ २७ ॥ तब ही तिह पातहि बोलि लियो। निजु आधिक देस बटाइ दियो। पुनि ताहि कह्यो रिखि कौ तुम टारो। पुरबासिन को सभ शोक निवारो ॥ २८ ॥ ॥ सवैया ॥ बैस बिती बसि बामहु के बिसुनाथ कहूँ हिय मै न सर्यो। बिसंभार भयो बररात कहाँ बिनु बेद के बादि बिबादि बर्यो। बहिकै बलुकै बिझुकै उझकै तुहि काल को ख्याल कहा बिसर्यो। बनिकै तनिकै बिहरौ पुर में जड़

पर, एक बगल में और छठवाँ मुनि के सिर पर बैठा दिया ॥ २३ ॥ ॥ तोटक छंद ॥ नगर में लोगों ने जब ऋषि का आगमन सुना तो सब उसकी पूजा के लिए चल दिए। चित्त में सभी आनंदित हो उठे और वृद्ध, बालक, तरुण कोई भी घर में नहीं रहा ॥२४॥ सबने हाथों में कुंकुम, फूल आदि लेकर मुनि पर डाल दिए। मुनि यह देखकर प्रसन्न हो उठा और उसी समय सावन की तरह मेघ बरसने लगे ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥ वहाँ अपार वृष्टि हुई और लोग प्रसन्न हो उठे। अकाल से सुकाल हो गया ॥ २६ ॥ ॥ तोटक छंद ॥ घनघोर वर्षा वहाँ हुई, परन्तु बाद में लोगों के दिल में संशय जगा कि जब तक ऋषि यहीं रहेंगे वर्षा होती रहेगी ॥२७॥ तब उन्होंने वेश्या को बुलाया और आधा राज्य उसे दे दिया। पुनः उसे कहा कि अब ऋषि को यहाँ से टालो और पुरवासियों के शोक का निवारण करो ॥ २८ ॥ ॥ सवैया ॥ (तब स्त्री ने मुनि से कहा) सारी आयु तुमने स्त्री के वशीभूत होकर काट दी और कभी विश्वनाथ परमात्मा का नाम नहीं स्मरण किया। तुम तो धरती पर बोझ हो गए हो और वेद का वाद-विवाद तुमने छोड़ दिया है। तुम बहककर बड़बड़ा रहे हो और तुमने काल का भी विचार भुला दिया। तुम अब वन को छोड़कर नगर में घूम रहे हो, हे जड़ ! तुमको लज्जा नहीं आती कि तुम कैसा कुकर्म कर रहे

लाजहि लाज कुकाज कर्यो ।। २९ ।। ।। दोहरा ।। बचन सुनत ऐसो मुनिज मन मै कियो बिचार । तुरतु बनहि पुरि छोरि कै उठि भाज्यो बिसंभार ।। ३० ।। प्रिथम आनि काढ्यो रिखहि मेघ लयो बरखाइ । अरधराज तिह त्रिपति को लीनौ आपु बटाइ ।। ३१ ।। सत टार्यो तिह मुनिज को अरध देस कौ पाइ । भाँति भाँति के सुख करे ह्रिदै हरख उपजाइ ।। ३२ ।। १ ।।

।। इति स्त्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ चौदस चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ११४ ।। २२३७ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ पंद्रहवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। रिखि गौतम बन मै बसै ताहि अहिल्या त्रीय । मनसा बाचा करमना बसि करि राख्यो पीय ।। १ ।। सुरी आसुरी (मू०ग्रं०९७७) किंन्रनी ता सम और न कोइ । रूपवती त्रैलोक मै तासी अउर न होइ ।। २ ।। शिवा सची सीता सती ता को रूप निहारि । रहत नारि निहुराइ करि निजु घटि रूप बिचारि ।। ३ ।। गौतम रिखि के देव सभ गए

हो ।। २९ ।। ।। दोहा ।। यह वचन सुनकर मुनि ने मन में विचार किया और तुरन्त नगर छोड़कर वन में भाग निकला ।। ३० ।। पहले ऋषि को निकाला और मेघ बरसवा लिया और राजा का आधा राज्य बँटवा लिया ।। ३१ ।। उस मुनि का व्रत भंग किया और उसे प्रसन्न होकर भाँति-भाँति के आमोद-प्रमोद प्रदान किए ।। ३२ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ चौदहवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ११४ ।। २२३७ ।। अफजू ।।

एक सौ पन्द्रहवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। गौतम ऋषि वन में रहते थे । उनकी पत्नी अहल्या थी, जिसने मन, वचन, कर्म से अपने पति को वश में कर रखा था ।। १ ।। देव-स्त्रियाँ, असुर-स्त्रियाँ, किन्नर-स्त्रियों में तथा पूरी त्रिलोकी में रूप-सौंदर्य में उसके समान कोई नहीं था ।। २ ।। पार्वती, शची, सीता जैसी सतियाँ भी उसके रूप-सौंदर्य की तुलना अपने रूप-सौंदर्य से करके उसके रूप को देखती रह जाती थीं ।। ३ ।। कुछ देवता किसी काम से गौतम ऋषि के यहाँ गए

कौनहूँ काज। रूप अहिल्या को निरखि रीझि रह्यो सुरराज ॥ ४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ बासव की छबि हेरि त्रियाहू बसि भई। बिरह समुंद के बीच बूडि सभ ही गई। तीन लोक को नाथ जु भेटन पाइयै। हो जोबन जड़ मुनि तीर न ब्रिथा गवाइयै ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ तब अबला सुरराज को मोही रूप निहारि। हर अरि सर ता कौ हन्यो घायलि भई सुमार ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ कौन उपाइ सुरेसहि पैयै। पठै सहचरी ताँहि बुलैयै। एक रैनि जौ भेटन पाऊँ। ताँ पर सुनो सखी बलि जाऊँ ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ जोगनेसुरी सहचरी सो तिन लई बुलाइ। सकल भेद समुझाइकै हर प्रति दई पठाइ ॥ ८ ॥ जाइ कह्यो सुरराज सो भेद सखी समझाइ। सुनत अहिल्या की ब्रिथा रीझि रह्यो सुरराइ ॥ ९ ॥ ॥ सवैया ॥ बालि गिरी बिसंभार सुनो हरिभाल बिखै बिंदियो न दियो है। टामन सो केहूँ ताहि कर्यो जिन आजु लगे न स्त्रिगार कियो है। बीरी चबाइ सकै न सखी पर पाइ रही नहि पानि पियो है। बेगि चलो भनि बैठे कहा मन माननि को मनो मोहि लियो है ॥ १० ॥ क्रोरि

और उनमें से देवराज इन्द्र अहल्या का स्वरूप देखकर मोहित हो उठा ॥ ४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ इन्द्र की छवि देखकर अहल्या भी उसके वशीभूत हो गई और विरह-समुद्र में उतराने लगी। वह सोचने लगी की यदि तीनों लोकों का स्वामी इन्द्र को पा जाऊँ तो इस जड़ ऋषि के साथ रहकर वृथा ही अपना जन्म न गँवाऊँ ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ वह स्त्री इन्द्र का रूप देखकर मोहित हो उठी और काम-बाण से घायल हो उठी ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ किस उपाय से सुरेश इन्द्र को प्राप्त किया जाय। सहेली को भेजकर उसे बुलाया जाय। हे सखी ! यदि एक रात भी उससे रमण का अवसर मिले तो मैं उस पर न्यौछावर हो जाऊं ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ योगेश्वरी नामक सहेली को उसने बुलाया और सारी बात समझाकर उसे इन्द्र के पास भेज दिया ॥ ८ ॥ सभी नें सुरराज इन्द्र को भेद समझाया। अहल्या की व्यथा सुनकर इन्द्र प्रसन्न हो उठा ॥ ९ ॥ ॥ सवैया ॥ हे इन्द्र, वह स्त्री तो धरती पर बेसुध बड़ी है और उसने तो श्रृंगार तक नहीं किया है। उस पर तो मानों किसी ने जादू-सा कर दिया है जिससे उसने बिंदिया तक नहीं लगाई। वह न तो पान चबा पा रही है और न ही उसने पानी तक पिया है। तुमने तो उस मानिनी का मन मोह लिया है, अतः शीघ्र चलो ॥ १० ॥ वह कमलनयनी रात-दिन

क्रलाप करै कमलाछणि द्योज निसा कबहूँ नहि होवै। साँपिन
ज्यो ससकै छित ऊपर लोक की लाज सभै हठि खोवै। हार
शिगार धरै नहि सुंदरि आँस्वन सौ ससिआनन धोवै। बेग चलो
बनि बैठे कहा तव मारगि को मुनि मानि न जोवै॥ ११॥
बात तपीस्वरनि की सुनि बासव बेगि चल्यो जहाँ बाल
बिहारै। बीरी चबाइ सु बेख बनाइ सु बारहि बार शिंगार
सवारै। घात पछानि चल्यो तित कौ मुनि स्राप के ताप झुकै
झिझकारै। जाइ सकै हटिहूँ न रहै मतवारे की भाँति डिगै
डग डारै॥ १२॥ बेगि मिलो मन भावति भावनि प्यारे जू
आजु तिहारे भए हैं। भेटन कौ महिराज समैं मुनिराज
धियान मौ आजु गए हैं। मीत अलिगन चुंबन आसन भाँति
अनेकन आनि लए हैं। मोद बढ्यो मन भामनि के मुनि
जाचित (मू०ग्रं०६७८) ते बिसराइ दए हैं॥१३॥ ॥दोहरा॥ बन्यो
ठन्यो सुंदर घनो तीनि लोक को राइ। बासव सो पति पाइ
त्रिय मुनहि दयो बिसराइ॥ १४॥ ॥ सवैया॥ स्रोनन मो
खरको मुनि कै तब ही मुनि नायक चौकि पर्यो है। ध्यान
दियो तजिकै सभहीं तब ही रिस के तन साथ जर्यो है।

की परवाह किए बिना अनेकों प्रकार से क्रन्दन कर रही है। लोकलाज को त्याग वह सर्प की भाँति धरती पर लोट रही है। हार-श्रृंगार न करके वह अपने चन्द्रमुख को आँसुओं से धो रही है। इसलिए शीघ्र चलो, तुम यहाँ क्या बने बैठो हो। मुनि-स्त्री तुम्हारी राह देख रही है॥ ११॥ तपस्वी स्त्री की बात सुनकर इन्द्र शीघ्रता से उस ओर चला जहाँ स्त्री थी और (इन्द्र के आने की खबर सुनकर) पान चबाकर श्रृंगार कर रही थी। इन्द्र घात लगाकर मुनि के श्राप से डरता हुआ उस ओर चला, परन्तु वह मतवाला भला वहाँ जाने से कैसे चूकता॥ १२॥ हे स्त्री! अब तुम शीघ्र प्यारे से मिल लो, वह आज तुम्हारा हो गया है। उसी मिलन के समय मुनिराज भी ध्यान लगाने चले गए। मित्रों ने अनेकों प्रकार से आलिंगन, चुम्बन, आसनादि किये। स्त्री (अहल्या) के मन में प्रसन्नता की बाढ़ आ गई और उन क्षणों में उसने अपने पति का भी विस्मरण कर दिया॥ १३॥ ॥ दोहा॥ सजधज से बना सुन्दर इन्द्र तीन लोकों का स्वामी था और इन्द्र को पति के रूप में पाकर मुनि-स्त्री ने मुनि को भी भुला दिया॥ १४॥ ॥ सवैया॥ कुछ खटका सुनकर मुनि चौंक उठा। सब छोड़कर उसने ध्यान से सुना तो उसका मन क्रोध से

धाम की ओर चल्यो उठिकै सुरराज लख्यो तर खाट दुर्‌यो है। चौकि रह्यो कित माँझ कह्यो यह काहूँ निलाज कुकाज कर्‌यो है ॥ १५ ॥ ॥ दोहरा ॥ रिखि गोतभ रिसि कै कह्यो को आयो इह धाम। तब तिह अस उत्तर दियो रिखहि बिहसि करि बाम ॥ १६ ॥ ॥ चौपई ॥ माँजार इह ठाँ इक आयो। तुमकौ हेरि अधिक डरपायो। चित अति त्रसत खाट तर दुरियो। मैं सुनि जू तुहि साचु उचरियो ॥ १७ ॥ ॥ तोटक छंद ॥ मुनिराज कछू नहि भेद लह्यो। त्रिय जो किय सो पति साथ कह्यो। माँजार दुर्‌यो इह खाट तरै। जनु बासव की सभ सोभ धरै ॥ १८ ॥ इह आजु मुनी जिनि कोप करो। ग्रिहती जुत जानि रह्यो तुमरो। तुम जाइ तिही ग्रहि होम करो। रघुबीर की नामहि को उचरो ॥१९॥ सुनि बैन तही मुनि जात भयो। रिखि नारि सुरेश निकारि दयो। कई द्‌योस बिते तिह भेद सुन्यो। अति ही रिसि कै निजु सीस धुन्यो ॥ २० ॥ तब ही रिसिकै रिखि स्राप दियो। सुरनायक कौ भगवान कियो। भग ताहि सहंस्र भए तन मै। त्रिदशेश लजाइ रह्यो मन मै ॥ २१ ॥ ॥ दोहरा ॥ स्राप

जल उठा। वह घर की तरफ़ चला और इन्द्र उसे आता देखकर पलंग के नीचे छुप गया। वह चौंककर कहने लगा कि किस निर्लज्ज ने यह चुगली की है ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥ गौतम ऋषि ने क्रुद्ध होकर कहा कि कौन इस घर में आया है? तब ऋषि-पत्नी ने हँसकर यह उत्तर दिया ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ एक बिल्ली यहाँ आयी थी जो तुम्हें देखकर डर गई है। वह भयभीत होकर खाट के नीचे छिप गई है। हे मुनि! मैंने तुमको सच कह दिया है ॥ १७ ॥ ॥ तोटक छंद ॥ स्त्री ने जो कुछ पति से कहा, मुनि उसका रहस्य समझ नहीं सका। वह नर-बिल्ली इन्द्र के समान शोभायुक्त है और पलंग के नीचे छिपी है ॥ १८ ॥ हे मुनि! क्रुद्ध मत हो, वह तुम्हें गृहस्थी समझकर तुम्हारे घर आ गया है। तुम दूसरे घर में जाकर हवनादि करो और राम-नाम जपो ॥ १९ ॥ यह बात सुनकर ऋषि चला गया और स्त्री ने इन्द्र को निकाल दिया। कई दिन बीतने पर मुनि को इस रहस्य का पता चला तो वह सिर धुनकर रह गया ॥ २० ॥ तब ऋषि ने क्रुद्ध होकर श्राप दिया और देवराज को भगयुक्त कर दिया। हज़ारों भग होनें से तीनों लोकों का स्वामी लज्जित होकर रह गया ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ पुनः स्त्री को उसके

दियै त्रिय को बहुरि जो तैं कियो चरित्र । तै पाहन की चारि जुग होहि सिला अपवित्र ।। २२ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पंद्रहवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ११५ ।। २२५९ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ सोलहवों चरित्र कथनं ।।

।। भुजंग प्रयात छंद ।। बढे सुंद अपसुंद द्वै दैत भारी । करैं तीनहूँ लोक जिनकौ जुहारी । महाँ कै तपस्या शिवै से रिझायो । मरै नाहि मारे यहै दान पायो ।। १ ।। ।। चौपई ।। रीझि रुद्र यौ बचन उचारे । तुम नहि मरो किसू ते मारे । जौ आपस मै रारि बढैहो । तौ जम के घर को दोऊ जैहो ।।२।। महाँरुद्र ते जब बरु पायो । सभ लोकन चित तें बिसरायो (मू०ग्रं०९७९) जो कोऊ दैत द्रिशटि मै आवै । जिय लैकै फिरि जान न पावै ।। ३ ।। ऐसी भाँति बहुत दुख दए । देव सभै ब्रहमा पै गए । बिसुकरमहि बिधि बोलि पठायो । इहैं मंत्र को सार पकायो ।। ४ ।। बिसुकरमा प्रति बिधहि उचारो । एक त्रियहि तुम आजु सवारो । रूपवती

प्रपंच के लिए श्राप दिया जो कि चार युगों तक पत्थर की अपवित्र शिला बन गई ।। २२ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में एक सौ पंद्रह चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ११५ ।। २२५९ ।। अफजू ।।

एक सौ सोलहवाँ चरित्र-कथन

।।भुजंग प्रयात छंद।। सुन्द-उपसुन्द नामक दो महाबली दैत्य थे, जिनको तीनों लोक प्रणाम करते थे। महान् तपस्या करके उन्होंने शिव को प्रसन्न किया और यह वरदान पाया कि वे मारे जाने पर भी न मरें ।। १ ।। ।। चौपाई ।। रुद्र ने प्रसन्न होकर कहा कि तुम किसी के मारे जाने से भी नहीं मरोगे। यदि तुम आपस में लड़ोगे तो दोनों यमलोक को चले जाओगे ।। २ ।। जब महारुद्र से उन्होंने यह वरदान पा लिया तो उन्होंने मन से सब लोगों (के भय) को भुला दिया। अब उन्हें जो कोई भी दैत्य दिखाई दे जाता वह प्राण लेकर जाने न पाता ।। ३ ।। इस प्रकार बहुत दुःख पाकर सभी देव ब्रह्मा के पास गए। ब्रह्मा ने विश्वकर्मा को बुला भेजा और आपस में इस प्रकार मंत्रणा की ।। ४ ।। ब्रह्मा ने विश्वकर्मा से कहा कि आज तुम

जा सम नहि कोई। ऐसी करो सुंदरी सोई ॥ ५ ॥
॥ दोहरा ॥ बिसुकरमा इह बचन सुनि धाम गयो तिह काल।
तुरतु बनाइ तिलोतमहि आन्यो तहाँ उताल ॥६॥ बिसुकरमा
अबला करी अमितु रूप निधि सोइ। जो हेरै रीझै वहै जती
न कहियत कोइ ॥ ७ ॥ अमित रूप ता को निरखि सभ
अबला रिसि खाहि। जिनि हमरे पति हेरि इह याही के ह्वै
जाहि ॥ ८ ॥ ऐसो भेख सु धारि त्रिय तह ते किओ पयान।
शहिर थनेसर के बिखै तुरतु पहूँची आन ॥ ९ ॥ जहाँ बाग
तिन को हुतो तहाँ पहूँची आइ। देव दैत ता कौ निरखि रूप
रहे उरझाइ ॥१०॥ ॥ चौपई ॥ बाल बिहरती बाग निहारी।
सभा छोरि दोऊ उठे हँकारी। तीर तिलोतम के चलि आए।
ब्याहन को दोऊ ललचाए ॥ ११ ॥ सुंद कह्यो याकौ मै
बरिहौ। कह्यो पसुंद याहि मैं करिहौ। रारि परी
दुहुँअन मै भारी। बिचरे सूरबीर हंकारी ॥ १२ ॥
॥ भुजंग छंद ॥ पर्‌यो लोह गाड़ो महाँबीर माँडे। झुके आनि
चारो दिशा काढि खाँडे। छके छोभ छत्री महाँ घाइ मेलै।

ऐसी सुन्दर स्त्री बनाओ जिसके समान अन्य कोई सुन्दरी न हो ॥ ५ ॥
॥ दोहा ॥ यह सुनकर विश्वकर्मा तत्काल घर गया और तुरन्त तिलोत्तमा
नामक स्त्री को बनाकर वहाँ ले आया ॥ ६ ॥ अपरिमित सौंदर्यशालिनी
स्त्री विश्वकर्मा ने बनाई। जो उसे देखता था रीझ उठता था और यती रहने
में असमर्थ हो जाता था ॥ ७ ॥ उसके अद्वितीय सौंदर्य को देखकर सभी
स्त्रियाँ ईर्ष्यापूर्ण होकर सोचने लगीं कि कहीं उनके पति उसे देखकर उसी के
होकर न रह जायँ ॥ ८ ॥ स्त्री इस प्रकार (सुन्दर) वेष धारण कर वहाँ से
चल पड़ी और तुरन्त थानेश्वर नगर में आ पहुँची ॥ ९ ॥ वह वहाँ आ
पहुँची जहाँ उन (दैत्यों) का बाग था। देव-दैत्य सभी उसके रूप को देखकर
उलझन में पड़ गए ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ उस बालिका को उद्यान में घूमते
देखकर वे दोनों अहंकारी सभा छोड़कर उठ खड़े हुए। वे दोनों तिलोत्तमा
के पास आ गए और प्रणाम के लिए ललचाने लगे ॥ ११ ॥ सुन्द ने कहा कि
मैं इससे ब्याह करूँगा और उपसुन्द ने कहा कि मैं भी करूँगा। दोनों में
गहरा मतभेद हो गया और वे अहंकारी वीर (लड़ने के लिए) निकल
पड़े ॥ १२ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ भीषण युद्ध हुआ और महाबली जुट गए।
वे खड़ग निकालकर चारों दिशाओं से उमड़ पड़े। क्रुद्ध क्षत्रिय घाव करने

किते ढालि तिरसूल खग्गान खेलै ॥१३॥ ॥ सोरठा ॥ बाजन
बजे अनेक सुभट सभै हरखत भए । जीवत बच्यो न एक काल
बीर चाबे सकल ॥ १४ ॥ ॥ दोहरा ॥ जुझे जुझउआ के
बजे सूरबीर समुहाइ । गजे सुंद अपसुंद तब ढोल म्रिदंग
बजाइ ॥ १५ ॥ ॥ चौपई ॥ प्रथम मारि बानन की परी ।
दुतिय मारि सैथिन सौ धरी । त्रितिय जुद्ध तरवारिन परियो ।
चौथो भेर कुटारिन करियो ॥ १६ ॥ ॥ दोहरा ॥ मुसट
जुद्ध पंचम भयो बरख्यो लोह अपार । ऊच नीच कातर सुभट
सभ कीने इक सार ॥ १७ ॥ बज्रबान बरछा बिछूअ बरखे
बिसिख अनेक । ऊच नीच कातर सुभट जियत न उबर्यो
एक ॥ १८ ॥ ॥ सवैया ॥ गाढ़ परी इह भाँति तहाँ इत
सुंद उतै अप सुंद (मू०ग्रं०६८०) हकारो । पट्टिसि लोह हथी
परसे अमितायुध लै कर कोप प्रहारे । राज परे कहूँ ताज
हिरे तरफैं कहूँ बीर क्रिपानन मारे । आपस मै लरि बीर दोऊ
बसि काल भए करतार सँघारे ॥ १९ ॥ ॥ चौपई ॥ आपस
बीच बीर लरि मरे । बज्र बान बिछूअन ब्रिन करे । फूल
अनेक मेघ ज्यों बरखे । देवराज देवन जुत हरखे ॥ २० ॥

लगे और ढाल, त्रिशूल, खड़गों से खेलने लगे ॥ १३ ॥ ॥ सोरठा ॥ अनेकों वाद्य बजने लगे और वीर प्रसन्न होने लगे । कोई भी वीर न बचा; काल ने सबको चबा लिया ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ मारू वाद्य बजते ही वीर सम्मुख हो जूझने लगे तथा सुन्द-उपसुन्द ढोल-मृदंग वाद्यों के ताल पर गरजने लगे ॥ १५ ॥ ॥ चौपाई ॥ पहली मार बाणों की पड़ी, दूसरी बर्छियों की, तीसरी तलवारों की और चौथी कटारों की पड़ी ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥ पाँचवाँ मुष्टिका-युद्ध हुआ और लौह-वर्षा होनें लगी जिसमें ऊँच-नीच, कायर, वीर सभी एक समान हो गए ॥ १७ ॥ वज्र-बाण, बरछे, बिछुआ एवं बाण बरसने लगे जिनके नीचे से ऊँच-नीच, कायर, वीर कोई भी जीवित न उबरा ॥ १८ ॥ ॥ सवैया ॥ उस भगदड़ में इधर सुन्द और उधर उपसुन्द हुंकारने लगा । उन्होंने कुल्हाड़े, फरसे आदि अनेकों अस्त्र लेकर कुपित हो एक-दूसरे पर वार किये । कहीं राजा पड़े थे, कहीं घोड़े पड़े थे तथा किसी ओर वीर कृपाणों के मारे तड़प रहे थे । इस प्रकार ईश्वर के मारे हुए वे दोनों वीर आपस में लड़कर काल के वश में हो गए अर्थात् मर गए ॥ १९ ॥ ॥ चौपाई ॥ वज्र, बाण, बिछुआ आदि से घायल होकर आपस में लड़ते हुए मारे गए । पुष्प-वर्षा होने लगी और देवराज देवों-सहित प्रसन्न हो उठे ॥ २० ॥ ॥दोहा॥ दोनों

।। दोहरा ।। दुहूँ भ्रात ब्रध कैं त्रिया गई ब्रहमपुर धाइ ।
जै जैंकार अपार हुअ हरखे मन सुरराइ ।। २१ ।। १ ।।

।। इति स्त्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ सोलहवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ११६ ।। २२८० ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ सत्तरहवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। दैंतन तुमल जुद्धु जब कीनो । देवराज ग्रहि को मगु लीनो । कमल नालि भीतर छपि रहियो । सचियहि आदि किसू नहि लहियो ।। १ ।। बासव कौ खोजन सभ लागे । सची समेत असंखनुरागे । ढूँढि फिरे काहूँ नहि पायो । देवन अमित शोक उपजायो ।। २ ।। ।। दोहरा ।। ब्रहसपति कौ बोल्यो तबै सभहिन कियो बिचार । खोजि थके पायो नही कह ग्यो अदितकुमार ।। ३ ।। ।। चौपई ।। कैधौ जूझि खेत मैं मरियो । कैधौ त्रसत दरी महि दुरियो । भज्यो जुद्ध ते अधिक लजायो । अतिथ गयो ह्वै धाम न आयो ।। ४ ।। ।। सुक्राचारज बाच ।। ।। दोहरा ।। सुक्राचारज यौ कह्यो कीजै यहै बिचार ।

भाइयों को मारकर वह स्त्री ब्रह्मपुरी को चली गई। चारों ओर जय-जयकार होने लगा और देवराज मन में प्रसन्न हो उठे ।। २१ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद के एक सौ सोहलवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ११६ ।। २०८० ।। अफजू ।।

एक सौ सत्रहवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। जब दैत्यों ने भीषण युद्ध किया तो देवराज इन्द्र ने घर का रास्ता पकड़ लिया। वह कमल-नाल में छिप गया और उसे शची ने भी नहीं देखा ।। १ ।। अब सभी शची-समेत व्याकुल होकर इन्द्र को खोजने लगे। ढूंढ़ने पर भी कोई उसे न पा सका जिससे सभी अत्यन्त शोकाकुल हो उठे ।। २ ।। ।। दोहा ।। सबने विचार कर बृहस्पति को बुलाया और कहा कि सबने अदितिकुमार इन्द्र को खोजा है पर कोई भी उसे नहीं खोज सका ।। ३ ।। ।। चौपाई ।। कहीं वह युद्ध में मारा गया है अथवा किसी गुफा में छिप गया है। कहीं वह अत्यधिक लज्जित होकर युद्ध से भाग गया है और किसी अन्य के यहाँ जा ठहरा है ।। ४ ।। ।। शुक्राचार्य उवाच ।। ।। दोहा ।। शुक्राचार्य ने कहा कि सभी विचार करो और मैं समझता हूँ कि

राज जुतातहि दीजियै यहै मंत्र को सार ।। ५ ।। ।। चौपई ।। त्रिदस इकत्र सकल ह्वै गए । इंद्रत्तु देत जुतातहि भए । जब तिन राज इंद्र को पायो । रूप निहार सची ललचायो ।। ६ ।। कह्यो ताहि सुनि सची पिआरी । अब होवहु तुम त्रिया हमारी । खोजत इंद्र हाथ नहि ऐहै । ताकह खोजि कहूँ का कैहै ।। ७ ।। रोइ सची यौ बचन उचारो । गयो एस परदेस हमारो । जे हमरे सत को तूँ टरिहैं । महाँनरक के भीतर परिहैं ।। ८ ।। यह पापी तजि है मुहि नाही । बहु चिंता हमरो मन माही । ता ते कछू चरित्र बिचरियै । याकौ दूरि राज ते करियै ।। ९ ।। ।। दोहरा ।। एक प्रतग्या मै करी जौ तुम करौ बनाइ । तौ हम कौ ब्याहो अबै लै (मू०ग्रं०९८१) घर जाहु सुहाइ ।। १० ।। ।। चौपई ।। स्वारी आपु पालकी कीजै । रिखियन कौ ता के तर दीजै । अधिक धवावत तिन ह्याँ ऐयै । तब मुनि हाथ आजु ही पैयै ।। ११ ।। तबै पालकी ताँहि मँगायो । मुनियन को ता के तर लायो । ज्यों ह्वै स्रमत असित मन धरही । त्यों त्यों कठिन कोररे परही ।। १२ ।। ।। दोहरा ।। एक

निश्चित रूप से राज्य ययाति को दे दिया जाय ।।५।। ।। चौपाई ।। तब सभी एकत्र हुए और इन्द्रत्व ययाति को दे दिया गया । जब उसने इन्द्र का राज्य प्राप्त कर लिया तो वह शची का रूप-सौंदर्य देखकर ललचा उठा ।। ६ ।। उसने कहा कि हे प्यारी शची, अब तुम मेरी स्त्री बन जाओ । खोजने पर भी इन्द्र हाथ नहीं लगेगा और अब अधिक उसे खोजकर क्या करेंगे ।। ७ ।। शची ने रोकर कहा कि मेरा स्वामी परदेश गया हुआ; यदि तुम मेरे सतीत्व को भंग करोगे तो घोर नरक में जाओगे ।।८।। वह सोचने लगी कि मुझे अब यही चिन्ता है कि यह पापी मुझे नहीं छोड़ेगा । इसलिए कुछ चरित्र-प्रपंच बनाया जाय और इसे राज से विलग किया जाय ।। ९ ।। ।। दोहा ।। वह कहने लगी कि मैंने एक प्रतिज्ञा कर रखी है, यदि तुम पूरी कर दो तो बेशक मुझे अभी ब्याह कर घर ले जाओ ।।१०।। ।। चौपाई ।। तुम स्वयं पालकी में सवार हो जाओ और पालकी को ऋषि उठाएँ । उन्हें तेज़ी से चलाते हुए यहाँ आओ और मेरा आज ही पाणिग्रहण करो ।।११।। तत्क्षण उसने पालकी मँगाई और मुनियों को उसमें जोता । ज्यों-ज्यों मुनि थकने लगे, वह उन्हें कोड़े मारने लगा ।। १२ ।। ।। दोहा ।। उद्दालक नामक एक ऋषि ने क्रुद्ध

उदालक रिखि हुतो दियो स्राप रिसि ठानि। तब तें गिर्यो इंद्रतु ते पर्यो प्रिथी पर आन ।। १३ ।। ।। चौपई ।। इसी चरित्र तौन को टार्यो। बहुरि इंद्र को जाइ निहार्यो। तह ते आनि राजु तिह दयो। सुरपुर बहुर बधावो भयो ।। १४ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ सत्तरह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। ११७ ।। २३९४ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ अठारह चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। पच्छिम देव राव बडभागी। मंत्र कला रानी सौ पागी। जो त्रिय कहै वहै जड़ करई। बिनु पूछे कछु तिह ननु सरई ।। १ ।। ताँ पर रहत राव उरझायो। दोइ पुत्र ताँते उपजायो। काल पाइ राजा मरि गयो। राज पुत्र ता के को भयो ।। २ ।। ।। दोहरा ।। एक पुरख आयो तहाँ अमित रूप की खानि। लखि रानी तिह बसि भई बधी बिरह कै बान ।। ३ ।। ।। सोरठा ।। ताँ कौ लयो बुलाइ पठै सहचरी एक तिह। कहियो बिराजहु आइ शंक त्याग हम कौ

हो उसे शाप दिया, जिससे वह इन्द्रत्व से च्युत हो पृथ्वी पर आ गिरा ।।१३।। ।। चौपाई ।। इस प्रकार चरित्र बनाकर उसे टाला और पुनः इन्द्र को खोज निकाला। ऋषियों ने उसे राज्य पुनः दे दिया और इस प्रकार देवलोक में बधाई-गीत गाए जाने लगे ।। १४ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ सत्रहवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। ११७ ।। २२९४ ।। अफजू ।।

एक सौ अठाहरवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। पश्चिम में एक देवराव नामक भाग्यशाली था जिसकी रानी का नाम मंत्रकला था। वह जड़ वही करता था जो रानी कहती थी और रानी से पूछे बिना वह कुछ नहीं करता था ।।१।। राजा भी सदैव उसी में आसक्त रहता था और उससे दो पुत्र पैदा हुए। समय पाकर राजा मर गया तो उसका पुत्र राजा बना ।। २ ।। ।। दोहा ।। वहाँ एक अपरिमित रूप-सौंदर्य वाला पुरुष आया, जिसके बिरह-बाण में बिंधकर रानी उसे देखते ही उसके वश में हो गई ।। ३ ।। ।। सोरठा ।। उसे एक सखी भेजकर बुला लिया

अबै ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ तब सुंदर तिन ह्रिदै बिचार्यो । रानी के प्रति प्रगट उचार्यो । एक बात तुम करो त कहऊँ । नातर धाम न तुमरे रहऊँ ॥ ५ ॥ सु हौ कहौ जो यह नहि करै । मोर मिलन को ख्याल न परै । दुहकर करम जु यह त्रिय करिहै । तब यह आजु सु हमको बरिहै ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ ए जु पूत जुग तुम जने तिन दुहुअन को मारि । गोद डारि सिर दुहूँ के माँगहु भीख बजार ॥ ७ ॥ ॥ चौपई ॥ तब तिह त्रिया काज सोऊ कियो । निकट बोलि तिन दुहूँअन लियो । मदरा प्याइ किए मतवारे । खड़ग काढि दोऊ पूत सँघारे ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ दुहूँ सुतन के काट सिर लए गोद मै डारि । अतिथ भेख को धारि करि माँगी भीख बजार ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ भीख माँगि मितवा पहि गई । पूतन (मू०ग्रं०९८२) मूँड दिखावत भई । तोरे लिए दोऊ मै मारे । अब भोगहु मुनि आनि पियारे ॥ १० ॥ दुहकर करम जारि लखि लयो । पहर एक मिरतक सो भयो । दुतिया पहर आनि जब लाग्यो । चित्यो छोरि मूरछना जाग्यो ॥ ११ ॥ ॥ सवैया ॥ तजिहूँ न सकै रमिहूँ

और उससे कहा कि तुम निःशंक होकर यहाँ बैठो ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब उस सुन्दर पुरुष ने मन में विचार किया और प्रकट में रानी से कहा कि यदि तुम मानों तो एक बात कहूँ । तुम यदि नहीं मानोगी तो तुम्हारे घर मैं नहीं रहूँगा ॥ ५ ॥ उसने सोचा कि मैं कुछ ऐसा कहूँ जो यह न करे और मुझसे मिलने का ख़्याल छोड़ दे । अब यदि यह अत्यन्त दुष्कर्म करे तब ही मेरा वरण करे ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ ये दोनों पुत्रों, जिन्हें तुमने जन्म दिया है, को मारकर इनके सिर गोदी में डालकर बाज़ार में भीख माँगो ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ स्त्री ने वही कार्य किया और दोनों को पास बुलाया । उन्हें शराब पिलाकर मदमस्त कर दिया और खड़ग निकालकर दोनों को मार डाला ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ दोनों पुत्रों को काटकर उनके सिर गोदी में डाल लिये और फ़क़ीर-वेश में बाज़ार में भीख माँगने लगी ॥९॥ ॥चौपाई॥ भीख माँगकर वह मित्र के पास गई और उसने उसे दोनों सिर दिखाए । उसने मित्र से कहा कि तुम्हारे लिए मैंने दोनों (पुत्रों) को मार डाला है, अब तुम आकर मेरे साथ रमण करो ॥ १० ॥ जब उस यार ने इस दुष्कृत्य को देखा तो एक प्रहर तक मूर्च्छित रहा । दूसरा प्रहर जब प्रारम्भ होने लगा तो वह मूर्च्छा छोड़कर चैतन्य को प्राप्त हुआ ॥ ११ ॥ ॥ सवैया ॥ अब वह ऐसी

न सकै इह भाँति की आनि बनी दुचिताई। बैठ सकै उठिहूँ न सकै कहिहूँ न सकै कछु बात बनाई। त्यागि सकै गर लागि सकै रस पागि सकै न इहै ठहराई॥ झूलि गिर्यो छित भूल गई सुधि का गति मोरे बिस्वास बनाई॥ १२॥ ॥ चौपई॥ पहर एक बीते पुन जाग्यो। त्रसत त्रिया के गर सो लाग्यो। जो त्रिय कह्यो वहै तिन कीनो। बहुरि नाहि को नामु न लीनो॥ १३॥ १॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ अठारह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु॥ ११८॥ २३०७॥ अफजूं॥

अथ इक सौ उनीसवों चरित्र कथनं॥

॥ चौपई॥ तिरहुत मै तिरहुतपुर भारो। तिहूँ लोक भीतर उजियारो। जंत्रकला रानी इक ता के। रुद्रकला दुहिता ग्रहि वाके॥ १॥ लरिकापन ता को जब गयो। जोबन आइ दमामो दयो। इक न्रिप सुत सुंदर तिह लहियो। हर अरि सर ताको तन दहियो॥ २॥ ॥ दोहरा॥ न्रिप सुत अति सुंदर घनो संबरारि तिह नाम। तंत्रकला ता कौ

दुविधा में फँस गया था कि वह न तो छोड़ सकता था और न कुछ कर
सकता था। अब न तो वह उठने योग्य रहा और न कुछ कहने योग्य रहा।
अब न तो वह कुछ त्याग पा रहा था और न ही गले लगा पा रहा था।
अतः वह यह सोचकर झूलकर धरती पर गिर पड़ा कि इसने मेरे लिए यह
क्या हालत बना दी है॥ १२॥ ॥ चौपाई॥ एक प्रहर बीतने पर पुनः जागा
और भयभीत होकर स्त्री के गले से लग गया। अब जो स्त्री ने कहा वह
उसने किया और पुनः नहीं करने की सोची भी नहीं॥ १३॥ १॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ अठारहवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति॥ ११८॥ २३०७॥ अफजू॥

एक सौ उन्नीसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई॥ तिरहुत प्रदेश में तिरहुतपुर एक बड़ा नगर था जिसे
तीनों लोकों में जाना जाता था। उसकी एक रानी यंत्रकला थी जिसकी
पुत्री रुद्रकला थी॥ १॥ जब उसका बचपन बीता और यौवन ने उसे सचेत
किया तो उसने एक सुन्दर राजकुमार को देखा। उसे देखकर कामदेव के बाण
से उसका तन जलने लगा॥ २॥ ॥ दोहा॥ राजकुमार अत्यन्त सुन्दर था

सदा जपत आठहूँ जाम ॥ ३ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ भेजि सहचरी ताहि बुलायो निजु सदन । काम भोग तिह संग कर्यो त्रिय छोरि मन । भाँति भाँति कै आसन लए सु धारिकै । हो चुंबन लिंगन किय मत कोक बिचारकै ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ जंत्रकला तिह बाल की मात गई तब आइ । तंत्रकला ताते त्रसत मीतहि लयो दुराइ ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ केसांतक तिन तुरतु मँगायो । लीपि समस ता की सो लायो । तब सभ केस दूर ह्वै गए । राजकुमार त्रिया से भए ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ सकल बस्त्र त्रिय के धरे पहिरि सु भूखन अंग । निरखत छबि स्त्री रुद्र के जरियो जगत अनंग ॥ ७ ॥ ॥ चौपई ॥ नारि भेख ता को पहिराई । आपन टरि माता पहि आई । धरम भगनि त्रिप सुत ठहरायो । (मू०ग्रं०६८३) जाइ सभन सौ भेद जतायो ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ धरम भगनि माता सुनौ मोरि पहूँची आइ । दरबु बिदा दै कीजियै ताहि त्रिपहि दरसाइ ॥ ९ ॥ सुणि माता बिहसि बचन ताँहि निहार्यो आइ । गहि बहिया तह लै गई जहाँ हुते नर राइ ॥ १० ॥ ॥ रानी बाच ॥ सुनो

और उसका नाम शंभुरात्रि था । यह तन्त्रकला (रुद्रकला) आठों प्रहर उसका ही ध्यान किया करती थी ॥ ३ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ सखी भेजकर उसे बुलाया और उसके साथ खुले मन से रमण किया । विभिन्न प्रकार के आसन, चुंबन, आलिंगन आदि कोकशास्त्र के मतानुसार किए ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ इधर उस बालिका की माँ यंत्रकला आ गई और तन्त्रकला ने माँ के डर के कारण अपने मित्र को छुपा लिया ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने तुरन्त बालों को नष्ट कर डालनेवाला पाउडर मँगाया और उसकी मूँछों आदि पर लगा दिया । अब उसके सभी बाल समाप्त हो गए और राजकुमार स्त्री के समान दिखने लगा ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ स्त्री के वस्त्र और आभूषण उसने पहन लिये जिनकी छवि देखकर समस्त जगत कामाग्नि में जलने लगा ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसे नारी-वेश पहनाकर स्वयं माता के पास आई । राजकुमार को उसने धर्मबहिन कहकर सबसे परिचित कराया और इस बात को सबको बताया ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ उसने कहा कि हे माँ ! मेरी धर्म-बहिन आई है, उसे राजा को दिखाते हुए द्रव्य देकर विदा करो ॥ ९ ॥ माँ ने हंसकर उसे देखा और उसे बाँह पकड़कर वहाँ ले गई जहाँ राजा विराजमान था ॥ १० ॥ ॥ रानी उवाच ॥ हे राजन् ! सुनो ! तुम्हारी धर्मपुत्री यहाँ आई है । इसे

राव तव धरमजा इहि ह्याँ पहुची आइ । बिदा अमित धन दै करो याकौ अधिक रिझाइ ।। ११ ।। ।। चौपई ।। जब इह बात त्रिपति सुनि पाई । जान्यो मोरि धरमजा आई । छोरि भंडार अमित धन दियो । दुहिता हेत बिदा तिह कियो ।। १२ ।। मंत्रकला पितु तीर उचारी । धरम बहिन मोकौ अति प्यारी । मै इह आजु संग लै जैहौ । बन उपबन के चरित्र दिखैंहौ ।। १३ ।। यौ कहि पलटि धाम निजु आई । पिय सौ कही बात मुसकाई । धरम भगनि मुहि तूँ अति प्यारी । इसी पालकी चर्हो हमारी ।। १४ ।। बात कहत दोऊ हम जैहैं । चित के शोक दूरि करि दैहैं । ताँहि पालकी लयो चर्हाई । बन उपबन बिहरन कौ आई ।। १५ ।। ते बीच बजार पालकी गई । परदन पाँति छोरिकै दई । काहू कौ द्रिशटि न आवैं । केल कमात चले दोऊ जावैं ।।१६।। मन भावत को भोग कमाए । दिन बजार महि किनूँ न पाए । असट कहारन के कंध ऊपर । जाँघैं लई मीत भुज दूपर ।। १७ ।। ज्यों ज्यों चली पालकी जावै । त्यों प्रीतम चटके चटकावै । लहैं कहार पालकी चरकै । त्यों त्यों गहै कंध द्रिढ़

प्रसन्न करते हुए अपरिमित धन देकर विदा करो ।। ११ ।। ।।चौपाई।। राजा ने यह सुनकर अनुभव किया कि मेरी धर्मपुत्री आई है। उसे भंडार खोल कर अपरिमित धन दिया और अपनी पुत्री की तरह विदा किया ।। १२ ।। मंत्रकला ने पिता से कहा कि मेरी धर्मबहिन मुझे अत्यन्त प्यारी है। मैं आज इसे साथ ले जाऊँगी और वन-उपवन में आमोद-प्रमोदयुक्त चरित्र दिखाऊँगी ।। १३ ।। यह कहकर वह अपने महल में आई और प्रिय को संबोधित करते हुए कहने लगी : हे बहिन ! तुम मुझे अत्यन्त प्रिय हो, आओ मेरी इसी पालकी पर चढ़ो ।। १४ ।। हम दोनों वार्तालाप करती हुई जाएँगी और मन के शोकादि को दूर करेंगी। अब वह उसे पालकी पर चढ़ाकर वन-उपवन में भ्रमण करने के लिए आ गई ।। १५ ।। पालकी बीच बाज़ार में चली गई और पुरजनों ने रास्ता छोड़ दिया। वे (दोनों) किसी को नज़र नहीं आ रहे थे और केलिक्रीड़ा करते हुए चले जा रहे थे ।। १६ ।। वे मनोवांछित भोग कमा रहे थे और दिन में भी बाज़ार में किसी को दिखाई नहीं दे रहे थे। आठ कहारों के कंधों पर उस मित्र ने प्रियतमा की जंघाएँ अपनी दोनों भुजाओं में पकड़ रखी थी ।। १७ ।। जैसे-जैसे पालकी चल रही थी, प्रियतम चटखारे ले रहा था। जैसे-जैसे कहार चलते थे वैसे ही वह भी

करिकै ॥ १८ ॥ बन मै जाइ पालकी धरी । भाँति भाँति सेती रति करी । अमित दरबु चाह्यो सो लयो । त्रिय करि ताँहि देस लै गयो ॥ १९ ॥ लिखि पतिया डोरो महि धरी । मात पिता तन इहै उचरी । नर सुंदर मोकह यह भायो । ता ते मैं यह चरित बनायो ॥ २० ॥ वह ध्रमजा नहि होइ तिहारी । जो मै पकरि पालकी डारी । कचअरि लए दूरि कच कए । भूखन बस्त्र बाल के दए ॥ २१ ॥ जो धन चह्यो सोऊ सभ लीनो । तात मात को दरशन कीनो । तुम ते जब लै बिदा सिधाई । याके संग तबै उठि आई ॥२२॥ ॥ दोहरा ॥ देस सुखी तुमरो बसो सुखी रहहु तुम तात । सुखी दोऊ हमहूँ बसैं (मू०ग्रं०६८४) चिरजीवो तुम मात ॥ २३ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ उनीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ ११९ ॥ २३३० ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ बीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ एक दिवस स्री इंद्र जू हर घर कियो

प्रियतम के कंधे दृढ़ता से पकड़ लेती थी ॥ १८ ॥ वन में जाकर पालकी रख दी गई। उन्होंने विभिन्न प्रकार से रतिक्रीड़ा की। मनोवांछित अपरिमित द्रव्य उसने लिया और इस प्रकार स्त्री को अपने देश ले गया ॥१९॥ लड़की ने भी पत्र लिखकर डोली में रखकर माता-पिता को कह भेजा कि मुझे यही पुरुष अच्छा लगा था जिससे मैंने यह चरित्र बनाया ॥२०॥ वह तुम्हारी धर्मपुत्री नहीं थी जिसे मैंने पालकी में साथ बैठाया था। उसके तो बाल दवा से साफ़ कर दिए थे और बालिकाओं के आभूषण-वस्त्र उसे पहना दिए गए थे ॥ २१ ॥ मनचाहा धन हमने प्राप्त किया है और माता-पिता के दर्शन किए। जबसे मैंने आप लोगों से विदा ली है, तबसे मैं इसी के साथ हूँ ॥ २२ ॥ ॥ दोहा ॥ तुम्हारा देश और हे पिता ! तुम भी सुखी रहो। हे माँ ! हम भी सुखी बसें और तुम भी सुखी जीओ ॥ २३ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद के एक सौ उन्नीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ ११९ ॥ २३३० ॥ अफजू ॥

एक सौ बीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ एक दिन इन्द्र शिव के घर गया। महारुद्र को देखकर

पियान। महाँ रुद्र कउ रुद्र लखि चित बढी अप्रमान ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ देवतेस जब रुद्र निहार्यो। महाँ कोप करि बज्र प्रहार्यो। ताते अमित कोप तब तयो। छाडत ज्वाल बक्त्र ते भयो ॥ २ ॥ पसरि ज्वाल सभ जग महि गई। दाहत तीनि भवन कह भई। देव दैत सभही डरपाए। मिलि करि महाँरुद्र पहि आए ॥ ३ ॥ महाँरुद्र तब कोप निवार्यो। बारिध मै पावक को डार्यो। सकल तेज इकठो ह्वै गयो। ताते दैत जलंधर भयो ॥ ४ ॥ ब्रिंदा नाम त्रिया तिन कीनी। अति पतिब्रता जगत मै चीनी। तिह प्रसादि पति राजु कमावै। ता कौ दुशट न देखन पावै ॥ ५ ॥ देव अदेव जीति तिन लए। लोक चतुरदस बसि महि भए। शेश अलिकेस सभै बिलखाए। बिशन आदि पुर जीति जताए ॥६॥ ॥ दोहरा ॥ शेश जलेश सुरेश सभ पुरी बसाए आनि। महाँरुद्र की बाल लखि रीझ्यो असुर निदान ॥ ७ ॥ ॥ चौपई ॥ त्रिय को रूप निरखि ललचायो। चतुर दूत तिह तीर पठायो। मोकह रुद्र पारबती दीजै। ना तर मीच मूंड पर लीजै ॥८॥ ॥ महाँरुद्र बाच ॥ ॥ दोहरा ॥ दुहिता

रुद्र अत्यन्त चिन्तित हो उठा ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ रुद्र ने जब देवेश (इन्द्र) को देखा तो क्रुद्ध होकर वज्र प्रहार किया। वह अपरिमित क्रोधित हो उठे और मुख से ज्वालाएँ फेंकने लगे ॥ २ ॥ सम्पूर्ण ज्वाला पूरे विश्व में फैल गई और तीनों भुवनों को जलाने लगी। देव-दैत्य सभी डर गए और सभी मिलकर महारुद्र के पास पहुँचे ॥ ३ ॥ महारुद्र ने क्रोध त्याग कर अग्नि-ज्वाला को समुद्र में फेंक दिया। इन सभी तेजों के पुंज से जलंधर नामक दैत्य पैदा हुआ ॥ ४ ॥ उसने वृन्दा नामक स्त्री को अपनाया जो संसार में महान पतिव्रता मानी गई है। उसी की कृपा से पति राज्य करने लगा और दुष्ट उसे देख भी नहीं पाते थे ॥ ५ ॥ उसने देव-दानव सभी को जीत लिया और चौदह लोकों को वश में कर लिया। शेष, अलिकेश आदि सभी व्याकुल कर दिए और विष्णुपुरी पर भी जीत का डंका बजा दिया ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ शेष, वरुण, इन्द्र आदि सबको अपनी पुरी में बसा लिया। यह दैत्य महारुद्र की स्त्री पर रीझ उठा ॥७॥ ॥ चौपाई ॥ स्त्री का रूप देखकर वह ललचा उठा और इसने चतुर दूत उसके पास भेजा। उसने रुद्र से कहा कि मुझे पार्वती दे दो अन्यथा मृत्यु स्वीकार करो ॥ ८ ॥ ॥महारुद्र उवाच॥ ॥ दोहा ॥ पुत्री और बहिन तो वेद-विधान के अनुसार दी जाती हैं, परन्तु

भगनी दीजियत बेद बिधान बनाइ। अब लौ किसूँ न त्रिय दई सुनु असुरन के राइ ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ कोप्यो असुरेशर हंकारी। सैना जोरि दानवन भारी। सुंभ निसुंभ बुलाए तबहीं। रकतबीज ज्वालाछन सभहीं ॥ १० ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ महाँ कोप कै कै हठी दैत गाजै। उठे बाँधि बानान बाँके बिराजै। लए सूल सैथीन आछे सुहावैं। बियो कौन जोधा जु ता को दबावैं ॥ ११ ॥ इतै रुद्र कोप्यो सु डौरू बजायो। उतै बाँध गाड़ी अनी इंद्र आयो। लए सूर साथी घनी चंद्र आछे। सभै सूल सैथी लए काछ काछे ॥ १२ ॥ हठी कोप कै कै महाँ दैत ढूके। चले भाँति ऐसी सु मानो भभूके। गुर्जैं हाथ लीने (मू०ग्रं०९८५) ग्रजे भीर भारे। टरै नाहि टारे नही जात मारे ॥ १३ ॥ हठे देव बाँकी अनी साथ लैकै। महाँरुद्र को जुद्ध कै अग्र कैकै। लए बिशन जोधा सु ऐसे बिराजै। लखे देव कंन्यान को दरपु भाजै ॥ १४ ॥ इतै दैत बाँकै उतै देव सोहैं। दित्यादित्त जू जान को मान मोहैं। बजै सार गाढ़ो नही भाज जावैं। दुहूँ ओर ते खिग खत्री नचावैं ॥ १५ ॥ पर्यो लोह गाड़ो तहाँ भाँति ऐसी।

हे दानवराज ! आज तक किसी ने पत्नी नहीं दी है ॥९॥ ॥ चौपाई ॥ दैत्यों की भारी सेना को एकत्र कर अहंकारी दानव क्रुद्ध हो उठा। उसने शुंभ-निशुंभ एवं ज्वालाक्ष आदि सबको बुलाया ॥१०॥ ॥ भुजंग छंद ॥ महाक्रुद्ध हो उठे दैत्य गरज उठे और बाणों आदि से सुसज्जित होकर विराजमान हो गए। शूल, बर्छे आदि उनके हाथों में शोभायमान हो रहे थे। कौन ऐसा योद्धा था जो उन्हें दबा सके ॥ ११ ॥ इधर डमरू बजाते हुए रुद्र कुपित हो उठे, उधर इन्द्र भी बड़ी सेना लेकर आ पहुँचा। चन्द्र ने भी शूरवीर साथी साथ लिये। उन सबने बर्छे, शूल आदि पकड़ लिये थे ॥ १२ ॥ भारी दैत्य क्रुद्ध होकर हठपूर्वक एकत्र हो गए। वे सब ऐसे चल रहे थे मानों आतिशबाज़ियाँ चल रही हों। हाथों में गुर्ज पकड़े हुए भारी वीर गरज रहे थे। वे पीछे हटनेवाले नहीं थे और न ही मरनेवाले थे ॥१३॥ देवगण बाँकी सेना को साथ ले महारुद्र के युद्ध के लिए हठ करने लगे। विष्णु को संग लिये योद्धा ऐसे सुन्दर लग रहे थे कि उन्हें देखकर देवकन्याओं का गर्व भी चूर हो रहा था ॥ १४ ॥ इधर बाँके दैत्य और उधर देवगण शोभा पा रहे थे। दिति-अदिति दोनों के पुत्र सम्मान प्राप्त कर रहे थे। भीषण लोहा दोनों ओर से बजने लगा ताकि कोई भी भाग न खड़ा हो। दोनों ओर से क्षत्रिय घोड़ों को

मनो क्वार के मेघ की ब्रिसटि जैसी। हठ्यो हाथ मै सूल को सूल लैकै। तिसी छेत्र छत्रीन को छिप्र छैकै ॥ १६ ॥ बज्यो राग मारू तिसी खेत भारो। किसी काज जो थो न सोऊ पधारो। लरे बाल औ ब्रिद्ध जू आ रिसैकै। गए पाक साही दया कीन ह्वैकै ॥१७॥ ॥ चौपई ॥ डिमि डिमि डिमि डामरू डमकहिं। असि अनेक हाथन महिं दमकहिं। कटि कटि मरे बिकट भट रन मै। रिझि रिझि बरे बरंगनन मन मै॥ १८ ॥ लह लह कोटि धुजा फहरावैं। सूरज चंद्र न देखे जावैं। कहक कहक तह करै मसाना। नाचे बजे जुझउआ ज्वाना ॥ १९ ॥ ॥ दोहरा ॥ परस पाँस असि बज्र भे बरिसे बिसिख बिसेख। घायल सभु सूरा भए जूझत भए असेख ॥ २० ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ महाँ जुद्ध कैकै सभै देव हारे। त्रिया पतिब्रता ते न जावै सँघारे। गए जूझ जोधा महाँ ऐठियारे। रहे ते चहूँ ओर ऐकै हकारे ॥ २१ ॥ कहा जात देवेस जाने न दैहैं। इसी छेत्र मै मारिकै तोहि लैहैं। मँडे बीर बानान बाजान लैकै। महाँ कोप की चित्त को ओप दैकै ॥ २२ ॥ तबै बिशनजू मंत्र ऐसे बिचार्यो। सभै

नचाने लगे ॥ १५ ॥ वहाँ ऐसा भीषण लोहा बरसने लगा मानों क्वार के माह में बादल बरस रहे हों। वीर शत्रु के शस्त्रनाशक शस्त्र हठपूर्वक पकड़े उस युद्धक्षेत्र में क्षत्रियों को नष्ट करने का प्रण लिये खड़े थे ॥ १६ ॥ युद्धस्थल में मारू राग बज उठा और केवल वही इस युद्ध में उपस्थित नहीं था जो कहीं अन्यत्र व्यस्त था। इस युद्ध में सभी बालक-वृद्ध क्रुद्ध होकर भाग ले रहे थे ॥१७॥ ॥ चौपाई ॥ डमडम डमरू बज रहा था और अनेक हाथों में कृपाणें चमक रही थीं। विकट वीर युद्ध में कट-मर रहे थे और अप्सराएँ उन पर रीझकर उनका वरण कर रही थीं ॥ १८ ॥ करोड़ों ध्वजाएँ फहर रही थीं और चन्द्र-सूर्य दिखाई नहीं देते थे। भूतगण किलकारियाँ मार रहे थे और लय-ताल पर जवान जूझ रहे थे ॥ १९ ॥ ॥ दोहा ॥ फरसे, पाश, कृपाणें, वज्र तथा बाण आदि वहाँ अनेक बरसे। अनेकों वीर घायल तथा अनेकों जूझ गये ॥ २० ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ सभी देव युद्ध करके हार गए परन्तु उसकी (जलन्धर की) स्त्री पतिव्रता होने से वह मारा नहीं जा रहा था। अनेकों हठी वीर जूझ गए और जो बचे वे चारों ओर से ललकार रहे थे ॥ २१ ॥ हे देवेश ! कहाँ जा रहे हो? तुम्हें जाने नहीं देंगे और इसी क्षेत्र में तुम्हें मार डालेंगे। वीरगण बाण और घोड़ों-समेत महाक्रुद्ध होकर मँड़राने लगे ॥२२॥

दानवानेस को भेस धार्यो। जिसी बाग मै नार ब्रिंदा बिराजै। लखे जाहि कंद्रप को दरपु भाजै ॥ २३ ॥ ॥ दोहरा ॥ जालंधर को भेस धरि तहाँ पहूँचयो जाइ। पति को रूप पछानि कै रीझत भई सुभाइ ॥२४॥ ॥चौपई॥ भाँति भाँति तिह साथ बिहार्यो। सभ कंद्रप को दरपु निवार्यो। उतै जुद्ध जो भयो सुनाऊँ। ताते तुमरे ह्रिदै सिराऊँ ॥ २५ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ उतै दैत बाँके इतै देव आछे। लए सूल सैथी सभै काछ काछे। महाँ नाद मारू तिसी खेत बाजे। दित्यादित्त गाड़े दुहूँ ओर गाजे ॥ २६ ॥ महाँ कोप कैकै कहूँ बीर जूझे। परे भाँति ऐसी नही (मू०ग्रं० ६८६) जात बूझे। कहूँ राज बाजी जिरह बीर भारी। कहूँ तेग औ तीर काती कटारी ॥ २७ ॥ कहूँ टोप टूटे कहूँ राग भारी। कहूँ ज्वान जेबे सु काती कटारी। कहूँ सूल सैथी गिरी भूमि ऐसी। दिपैं चार सोभा महाँ ज्वाल जैसी ॥ २८ ॥ ॥ चौपई ॥ ब्रिंदा को प्रथमै सत टार्यो। ता पाछे जालंधर मार्यो। बहुरो राज आपनो लियो। सुरपुर माँझ बधावो कियो ॥ २९ ॥

तभी विष्णु ने विचार किया और दानवराज (जलन्धर) का वेश धारण किया। उद्यान में वृन्दा बैठी थी; उसे देखकर कामदेव का भी दर्प चूर होता था ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ जलन्धर का रूप धारण कर वह (विष्णु) वहाँ आ पहुँचा। पति को पहचानकर वह उस पर मोहित हो उठी ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ विभिन्न प्रकार उसने उसके साथ रमण किया और कामदेव का गर्व चूर किया। वह कहने लगा कि वहाँ जो युद्ध हुआ उसका हाल कहूँ और तुम्हें सुख पहुँचाऊँ ॥ २५ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ उधर दैत्य अच्छे हैं इधर देव भी भारी हैं और सबने हाथों में शूल, भाले आदि पकड़ रखे हैं। युद्ध में मारू वाद्य वज रहे हैं और दिति-अदिति के पुत्र दोनों ओर से गरज रहे हैं ॥ २६ ॥ क्रुद्ध होकर कहीं वीर जूझ रहे हैं और ऐसे गिर रहे हैं कि पहचाने नहीं जा रहे हैं। कहीं राजा, कहीं घोड़े और कहीं भारी जिरह-बख़्तर पड़े है तथा कहीं तलवारें और कटारियाँ पड़ी हैं ॥ २७ ॥ कहीं टोप टूटे पड़े हैं, कहीं भारी वाद्य बज रहे हैं, कहीं जवान कृपाणें-कटारियाँ बजा रहे हैं। शूल, बर्छे ऐसे गिरे हैं मानों चारों ओर महाज्वाला धधक रही है ॥२८॥ ॥ चौपाई ॥ इस प्रकार पहले वृन्दा का सतीत्व नष्ट किया तथा पुनः जलन्धर को मारा। फिर अपना राज्य प्राप्त किया और सुरपुर में बधाई-गीत

॥ दोहरा ॥ इह चरित्र सौ बिशन जू ब्रिंदा को सत टारि ।
आनि राज अपनो लयो जालंधर कह मारि ॥ ३० ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ वीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १२० ॥ २३६० ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ इकीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ जहाँगीर जब तखत सुहावै । बुरका पहिरि नारि इक आवै । खीसे काटि बहुन के लेई । निज मुख किसू न देखन देई ॥ १ ॥ ता को भेद एक नर पायो । और न काहूँ तीर जतायो । प्रात भए आई त्रिय जानी । चित के बिखै इहै मति ठानी ॥ २ ॥ पनही हाथ आपने लई । अधिक मारि ता त्रिय कौ दई । सतर छोरि आई क्यों चारी । जूतिन सौ कमरी करि डारी ॥ ३ ॥ ॥ दोहरा ॥ कमरी कै जूतिन दई भूखन लए उतारि । किह निमित्त आई इहाँ ऐसो बचन उचारि ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ सभहूँ इहै चित मै जानी । ता की नारि त्रिया पहिचानी । बिनु पूछे पति के

बजवाए ॥२९॥ ॥दोहा॥ इस चारित्रिक प्रपंच से विष्णु ने वृन्दा का पातिव्रत्य नष्ट कर जलन्धर को मार कर अपना राज्य पुनः प्राप्त किया ॥ ३० ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद के एक सौ वीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १२० ॥ २३६० ॥ अफजू ॥

एक सौ इक्कीसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ जहाँगीर जब तख़्त पर बैठता था तो एक स्त्री बुर्क़ा पहनकर (दरबार में) आती थी। वह अनेकों की जेब काट लेती थी और किसी को अपना मुँह देखने नहीं देती थी ॥ १ ॥ उसके भेद को एक व्यक्ति जान गया पर उसने किसी से कुछ नहीं कहा। जब उसने सुबह स्त्री को आये हुए देखा तो मन में एक विचार बनाया ॥ २ ॥ उसने हाथ में जूता पकड़ा और उस स्त्री को काफ़ी मारा। उसे यह कहा कि तुम पर्दा छोड़कर घर से बाहर क्यों आई? इस तरह से जूतों से मार-मारकर उसे पागल कर दिया ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ उस पगली को जूते मारकर उसके गहने उतार लिये और उससे पूछा कि तुम यहाँ क्यों आई हो? ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ सबने मन में सोचा कि यह इसी व्यक्ति की स्त्री है। यह भला पति से पूछे बिना

क्यों आई । जाते आजु मारि तैं खाई ॥ ५ ॥ जब लौ ताहि त्रियहि सुधि आई । तब लौ गयो वह पुरख लुकाई । ता ते त्रसत न तह पुनि गई । चोरी करत हुती तजि दई ॥६॥१॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इकीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १२१ ॥ २३६६ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ बाईसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ अभैसाँड राजा इक भारो । कहलूर के देस उजियारो । खान ततार खेत तिन मार्यो । नाकन को कूआ भर डार्यो ॥ १ ॥ ता पै चड़े खान रिसि भारे । भाँति भाँति तिन त्रिपति सँघारे । हारे सभै उपाइ बनायो । छजुअहि गजुअहि खान बुलायो ॥ २ ॥ काँख बिखै कबूतर इक राख्यो । तिन सौ बचन बक्त्र ते भाख्यो । या त्रिप (मू०ग्रं०६८७) को जु बुरा कोऊ करिहै । ता को पाप मूँड इह परिहै ॥ ३ ॥ यह सुनि बचन मानि ते गए । भेद अभेद न चीनत भए । जाइ राव प्रति यहै उचारो । तव देखन कौ हियो हमारो ॥ ४ ॥ यौ सुनि बचन राव तिह

क्यों आई; शायद इसी कारण इसने मार खाई है ॥ ५ ॥ जब उस स्त्री को होश आया तब तक वह पुरुष छिप गया । अब वह उसके भय से दुबारा वहाँ नहीं गई और चोरी करना उसनें छोड़ दिया ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद के एक सौ इक्कीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १२१ ॥ २३६६ ॥ अफजू ॥

एक सौ बाईसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ कहलूर देश का एक भारी राजा था जिसका नाम अभयसाँड था । तातार ख़ाँ को युद्ध में मारा था और नाक काट-काटकर कुआँ भर दिया था ॥ १ ॥ उस पर क्रुद्ध हो कई ख़ान चढ़ आए और उसने भी अनेक राजाओं को मार डाला । सभी उपाय करके थक गए तो ख़ान ने छज्जू और गज्जू को बुलाया ॥ २ ॥ काँख में एक कबूतर दबाकर उनसे कहा कि इस राजा का जो कोई बुरा करेगा उसे इसके सिर का पाप लगेगा ॥ ३ ॥ यह बात सुनकर वे मान गए और भेद-अभेद को समझ नहीं सके । तुम जाकर राजा से कहो कि हम तुम्हैं देखना चाहते हैं ॥ ४ ॥

आयो। चारि चारि भीतरि बैठायो। तिन आयुध देखन कौ लए। हाथो हाथ काढि कै दए ॥ ५ ॥ आयुधु काढि ऐस बिधि दए। जोरे एक बनावत भए। जाकी बाँह सीवि दोऊ लीनी। बिनु बाँधे मुशकै जन दीनी ॥ ६ ॥ एक भाट कौ भेद बतायो। राजा के मुख पै कहवायो। जो सभ शस्त्र दै मुझ डारै। तौ दाता तूँ जान हमारै ॥ ७ ॥ यह सुनि त्रिपति शस्त्र दै डारे। होर रहे मंत्रीन निवारे। जान्यो त्रिपति निरायुध भयो। बागो आनि ताहि पहिरयो ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ सो बागो पहिर्‌यो त्रिपति बाह कढी नहि जाहि। तीर खान ठाढो हुतो मुशकैं लई चराइ ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ सुंदर राज पुत्र तह भारो। तुरतु तेग कह ताहि सँभारो। तमकि वार ताँ तुरकहि कियो। बाहन दुहूँ दुधा करि दियो ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ एक राव अगनित तुरक कह लगि लरै रसाइ। सुंदर कौ राजा भए मारत भए बजाइ ॥ ११ ॥ ॥ चौपई ॥ जल के अस्व अस्व इक जायो। सो बागा राजा के आयो। चरवेदार ताँहि लै गयो। भेद रानियन कौ लै दयो ॥१२॥ ॥दोहरा॥ कुंकमदे

राजा यह वचन सुनकर राजा वहाँ आ गया उसे सुन्दर तरीके से बैठाया गया। अब उन्होंने राजा के शस्त्र देखने के लिए माँगे जिसे राजा ने हाथों आदि पर से उतारकर उन्हें दे दिए ॥ ५ ॥ उसने शस्त्र दिए और ये उसके जोड़े बनाने लगे। उसकी दोनों बाँहों की ऐसे सिलाई कर दी मानो बिना बाँधे ही उसके हाथ बाँध दिए हों ॥ ६ ॥ एक भाट को समझाकर राजा को कहलवाया कि यदि तुम मुझे सब शस्त्र दान दे दो तो मैं तुम्हें अपना दाता जानूँ ॥ ७ ॥ यह सुनकर राजा ने शस्त्र दे दिए और जो बाक़ी बचे थे वे भी मंत्रियों ने उतार लिये। राजा को शस्त्र-विहीन देखकर उसे सफ़ेद वस्त्र पहना दिए ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा ने वह चोंगा पहना जिसमें से उसकी बाँहें भी बाहर नहीं निकल रही थीं। तीरख़ान वहीं खड़ा था, उसने तुरन्त बाँहें चढ़ा लीं ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह बोला कि तुम सुन्दर राजपुत्र हो, अब तुम तुरन्त तलवार का वार सँभालो। तब उस तुर्क ने लपककर वार किया और दोनों भुजाएँ काट ली ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ अब एक ही राजा और अगणित क्रुद्ध तुर्क-सेना थी। वे उस सुन्दर राजा को ललकार कर मारने लगे ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ जल में एक घोड़े के पास राजा की वह पोशाक आई जिसे एक चरवाहे ने पकड़ा और रानियों से सब भेद कहा ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ कुंकुम देवी और घनसार

घनसारदे यौ स्रवनन सुनि पाइ। मतो बैठि दुहूँअन कियो जूझि मरन के भाइ ॥ १३ ॥ जौ हमरे पति लरि मरे समुह बदन ब्रिणखाइ। तौ हमहूँ सभ लरि मरैं नर को भेख बनाइ ॥ १४ ॥ ॥ चौपई ॥ यहै मंत्र सभहूँन बिचार्यो। सभहूँ भेख पुरख को धार्यो। एक दिसा कुंकमदे गई। दे घनसार दूज दिसि भई ॥ १५ ॥ ॥ दोहरा ॥ कुंकमदे घनसारदे दोऊ अनी बनाइ। दुहूँ ओर ठाढी भई जुद्ध करन के भाइ ॥ १६ ॥ ॥ चौपई ॥ दूहूँ ओर ते शस्त्र चलाए। दुहूँ ओर बादित्र बजाए। ऐसी मारि क्रिपानन डारी। एक न उबरी जीवत नारी ॥ १७ ॥ ॥ दोहरा ॥ बज्रबान बिछुआ बिसिख बरख्यो लोह अपार। सभ अबला जूझत भई एक न उबरी नारि ॥ १८ ॥ ॥ चौपई ॥ बरछी दुहूँ दोफली लीनी। दुहुँअन (मू०ग्रं०६८८) वहै उदर मै दीनी। तिह को झागि कटारिन लरी। दोऊ जूझि खेत मै परी ॥ १९ ॥ ॥ दोहरा ॥ शत्रन सौ बाला लरी प्रीति पिया की मानि। निजु पति को पावत भई सुरपुर कियो पयान ॥ २० ॥ प्रीति पिया की जे लरी धंनि धंनि ते नारि। पूरि रह्यो जसु जगत

देवी ने यह सारी वार्ता सुनी और दोनों रानियों ने मर जाने की योजना बनाई ॥ १३ ॥ अब यदि हमारा पति अपने शरीर पर घाव खाकर मर गया है तो हम सब भी पुरुष-वेश बनाकर लड़ मरेंगी ॥ १४ ॥ ॥ चौपाई ॥ यही योजना सबने बनाई और सबने पुरुष-वेश धारण किया। कुंकुम देवी एक दिशा में और घनसार देवी दूसरी दिशा में चल दी ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥ कुंकुम और घनसार देवी ने सेना तैयार की और दोनों हो दो दिशाओं में युद्ध करने के लिए खड़ी हो गईं ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ दोनों ओर से शस्त्र चले और वाद्य बजने लगे। कृपाणों की ऐसी मार चली कि एक भी स्त्री जीवित न बची ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ वज्र, बाण, बिछुआ आदि के रूप में लौह-वर्षा हुई जिसमें सब अबलाएँ जूझकर मर गईं ॥ १८ ॥ ॥ चौपाई ॥ दोनों ने दो फलों वाली बर्छियाँ पकड़ीं और पेटों में भोंक दीं। तब उन्हें छोड़कर उन्होंने कटारों से लड़ाई की और इस प्रकार युद्धस्थल में जूझ गिरीं ॥ १९ ॥ ॥ दोहा ॥ वे स्त्रियाँ प्रियतम के प्रेमवश शत्रुओं से लड़ीं और इस प्रकार स्वर्ग में जाकर अपने पति से जा मिलीं ॥ २० ॥ वे नारियाँ धन्य हैं जो प्रियतम के प्यार के लिए लड़ीं। उनका यश जगत में फैल गया और वे नारियाँ धन्य हैं ॥ २१ ॥ वे प्रियतम की पीड़ा को सहनकर जूझ

मै सुरपुर बसी सुधारि ॥ २१ ॥ जूझि मरी पिय पीर त्रिय तनिक न मोर्यो अंग । सु कबि स्याम पूरन भयो तब ही कथा प्रसंग ॥ २२ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सो बाईसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १२२ ॥ २२८८ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ तेईसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ देव अदेव मिलत सभ भए । छीर समुंद मथबे कह गए । चौदह रतन निकारे जबही । दानो उठे कोप करि तबही ॥ १ ॥ हमही रतन चौदहूँ लैहैं । ना तर जियन न देवन दैहैं । उमडी अमित अनिन को दलिहैं । लहु भैयन ते भाजि न चलिहैं ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ राज काज अर साज सभ आवत कछु जु बनाइ । जेसट भ्रात को दीजियत लहुरे लई न जाइ ॥ ३ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ चड़े रोस कै कै तही दैत भारे । घुरे घोर बाजे सु मारू नगारे । उतै कोप कै कै हठी देव ढूके । उठे भाँति ऐसी सु मानौ भभूके ॥ ४ ॥ मँडे कोप कै कै महाँ रोस बाढे । इतै देव

गईं और उन्होंने तनिक भी पीठ नहीं दिखाई । इस प्रकार कवि श्याम के कथनानुसार यह कथा-प्रसंग पूर्ण हुआ ॥ २२ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद के एक सौ बाईसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १२२ ॥ २२८८ अफजू ॥ ॥

एक सो तेईसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ देव और दानव सभी मिलकर समुद्र-मंथन करने के लिए गए । जब चौदह रत्न निकल चुके तो दानव क्रोधित हो उठे ॥ १ ॥ वे कहने लगे कि हम चौदह रत्न लेंगे अन्यथा देवताओं को (चैन से) जीनें नहीं देंगे । अपरिमित सेनाएँ उमड़ पड़ीं और वे कहने लगे कि ये छोटे भाइयों से भागकर कहाँ जायंगे ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ राज्य एवं अन्य साज-सज्जा जो भी होती है वह बड़े भाई को ही मिलनी चाहिए, छोटे नहीं ले सकते ॥ ३ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ भीषण दैत्य क्रुद्ध होकर आ चढ़े और भयंकर रणवाद्य बजने लगे । उधर देव भी क्रुद्ध होकर आ भिड़े और युद्ध में ज्वालाएं भड़कने लगीं ॥ ४ ॥ इधर बाँके देवगण और उधर विकराल दैत्य अत्यन्त क्रुद्ध

बाँके उतै दैत गाढे । छके छोभ छत्री महाँ ऐठ ऐठे । चड़े जुद्ध कै काज ह्वैकै इकैठे ॥ ५ ॥ कहूँ टीक टाकै कहूँ टोप टूके । किये टीप टापै कई कोटि ढूके । कहूँ टाँक टूकै भए बीर भारे । करेरे कटीले करी कोटि मारे ॥ ६ ॥ किते डूब डूबै किते घाम घूमैं । किते आनि जोधा परे झूमि झूमैं । किते पानि माँगै किते मारि कूकै । किते बाढवारीन को काढ ढूकै ॥ ७ ॥ किते चोट ओटै किते कोटि पैठैं । किते राग मारू सुने आनि ऐंठैं । किते भीर भाजे किते सूर कूटे । किते बाज मारे रथी क्रोरि लूटे ॥ ८ ॥ कहूँ ज्वान जेबे कहूँ बाज मारे । कहूँ भूमि झूमैं दित्यादित्त भारे । किते बीर घायान घाए पधारे । किते खेत सोहे महाँबीर डारे ॥ ९ ॥ इतै सूर कोप्यो उतै चंद्र धायो । इतै जोरि गाड़ी अनी इंद्र आयो । उतै बुद्धि बाजी धुजा बीर बाको । इतै काल कोप्यो जितै कौन ता को ॥ १० ॥ (मू०ग्रं०९८९) इतै कोप कै ऐस बाचे सिधायो । दुतिय ओर ते चारज शुक्रा रिसायो । कोऊ तीर छोरै कोऊ मंत्र डारै । लिखै जंत्र केऊ केऊ तंत्र

होकर युद्ध का मंडन करने लगे । अनेकों अकड़बाज़ क्षत्रिय एकत्र होकर युद्ध करने के लिए चल पड़े ॥ ५ ॥ कहीं शिरस्त्राण काट डाले गए और भारी वीर काट डाले गए । असंख्य वीर जुट गए और युद्धस्थल में अनेकों बलशाली हाथी मार डाले गए ॥ ६ ॥ कितने ही रक्त में डूब गए और कितने ही योद्धा झूम-झूमकर गिर पड़े । कितने ही पानी माँग रहे थे और कितने ही कृपाणें निकालकर झपट रहे और चिल्ला रहे थे ॥ ७ ॥ कितने ही चोटें मार रहे थे और कितने ही मारू राग को सुनकर अकड़ रहे थे । कहीं वीर भाग रहे थे और कहीं शूरवीरों को रौंदा जा रहा था । कहीं घोड़े मारे गए और अनेकों रथियों को लूट लिया गया ॥ ८ ॥ कहीं जवानों को और कहीं घोड़ों को मार डाला गया तथा कहीं दिति-अदिति के पुत्र झूमकर भूमि पर गिर पड़े थे । कहीं वीर घायल होकर जा रहे थे और कहीं वीर युद्धक्षेत्र में पड़े शोभायमान हो रहे थे ॥ ९ ॥ इधर सूर्य, उधर चन्द्रमा कुपित हो दौड़ा । इधर इन्द्र अपार सेना लेकर आ गया । उधर चंचल घोड़े और बाँकी ध्वजाओं वाले वीर थे और अजेय-काल क्रुद्ध हो रहा था ॥ १० ॥ इधर से क्रुद्ध हो बृहस्पति चला और दूसरी ओर शुक्राचार्य कुप्रित हुआ । कोई तीर छोड़ रहा था, कोई मंत्र पढ़ रहा था । कोई यंत्र

सारैं ।। ११ ।। किते तेग सूतै किते बान मारैं । किते गोफनै गुरज गोले उभारैं । किते मुगद्र ठावै किते तीर छोरैं । किते बीर बीरान को मूँड फोरैं ।। १२ ।। कहूँ छत्न जूझे कहूँ छत्न टूटे । कहूँ बाज ताजी जिरह राज लूटे । किते पाँस पाँसे किते झोक झोरे । किते छिप्र छेके किते छैल छोरे ।।१३।। किते सूर सोनान के रंग रंगे । बचे बीर बाँकान बाजी उमंगे । महाँ भेर भारी महाँ नाद बाजे । इतै देव बाँके उतै दैत गाजे ।। १४ ।। उठ्यो राग मारू महाँ नाद भारो । इतै सुंभ नैसुंभ दानो सँभारो । बिड़ालाछ ज्वालाछ धूम्राछ जोधे । हटे ना हठीले किसू के प्रबोधे ।। १५ ।। पर्‌यो लोह गाड़ो महाँ खेत भारी । इतै देव कोपे उतै वै हकारी । जुरे आनि दोऊ भैया कौन भाजै । चले भाजि ता की सु मातान लाजै ।। १६ ।। जुरे आनि भाई भैया कौन हारैं । भरै साचु पै पाव पाछे न डारैं । भरे छोभ छत्री महाँरुद्र नाचयो । पर्‌यो लोह गाड़ो महाँ लोह माचयो ।। १७ ।। हठे ऐंठियारे

लिख रहा था और कोई तंत्र-क्रिया कर रहा था ।।११।। कहीं कृपाणें उठ रही थीं और कहीं बाण मारे जा रहे थे । कहीं घुमावदार शस्त्र, गुर्ज और गोले उभर रहे थे और कहीं मुगदर और कहीं तीर छूट रहे थे । कहीं वीर वीरों के मुँह फोड़ रहे थे ।। १२ ।। कहीं छत्र भिड़ रहे थे और कहीं छत्न टूट रहे थे । कहीं घोड़े और जिरहबख़्तर कटे टूटे-फूटे दिखाई पड़ रहे थे । कहीं पाश फेंके जा रहे थे और कहीं छैल चंचल गति से कूद-फाँद रहे थे ।। १३ ।। कहीं शूरवीर रक्त में रँगे थे और बचे हुए वीरों के घोड़े उछल रहे थे । विकराल भेरियाँ और भीषण नाद बज रहे थे । इधर बाँके देवगण थे और उधर दैत्य गरज रहे थे ।। १४ ।। मारू राग का भीषण नाद हो रहा था और इधर शुंभ-निशुंभ दानव डटे हुए थे । बिड़ालाक्ष, ज्वालाक्ष, धूम्राक्ष आदि योद्धागण किसी के भी हटाए हटनेवाले नहीं थे ।। १५ ।। उस युद्ध-क्षेत्र में भारी लौह-वर्षा हुई । इधर देवगण कुपित हुए और उधर दानव भी अहंकारी थे । दोनों भाई गण आपस में जूझ रहे थे । अब जो भी भागता था उसकी माँ को ही लज्जित होना पड़ता था ।। १६ ।। दोनों भाई लोग भिड़ गए, अब भला कौन हटानेवाला था । सत्य से कोई भी पैर पीछे देनेवाला नहीं था । क्षत्रिय क्षुब्ध थे और रुद्र नाचने लगे । भीषण युद्ध हुआ और भीषण लोहा बरसने लगा ।। १७ ।। हठी अकड़ रहे थे और वीर क्रुद्ध हो

हठी ऐंठि कै कै। महाँ जुद्ध सौडी महाँ ही रिसैकै। महाँ सूल सैथीन के वार छंडे। इते दैंत बाँके उतै देव मंडे॥ १८॥ इतै देव रोहे उते दंत कोपे। भजै नाहि गाढ़े प्रिथी पाइ रोपे। तबै बिशन जू मंत्र ऐसे बिचार्यो। महाँ सुंदरीएस को भेस धार्यो॥ १६॥ महाँ मोहनी भेस धार्यो कन्हाई। जिनै नैक हेर्यो रह्यो सो लुभाई। इतै दैंत बाँके उतै देव सोहै। दुहू छोरि दोनो महाँ जुद्ध मोहै॥ २०॥ ॥ दोहरा॥ कालकूट अरु चंद्रमा शिव को दए बनाइ। ऐरावति तरु उचस्रवि हरहि दए सुख पाइ॥ २१॥ कौसतक मनि अरु लछिमी आपुन लई मँगाइ। देव अंम्रित असुरन सुरा बाँटत भए बनाइ॥ २२॥ ॥ चौपई॥ रंभा और धनंतर लियो। सभ जग के सुख कारन दियो। तीनि रतन दिय औरु निकारे। तुमहूँ तिनो लखत हो प्यारे॥ २३॥ ॥ सवैया॥ रीझि रहे छबि हेरि सुरासर शोक निवार अशोकुपजायो। छोरि बिवाद कौ दीन दोऊ सुभ भाग भर्यो सभ हूँ हरिभायो। कुंजर कीर कलानिधि केहरि मान मनोजव हेरि हिरायो। जो तिन दीन सु (मू०ग्रं०६६०) लीन सभो हसि

रहे थे। शूल और बर्छों के वार चल रहे थे। इधर दैत्य थे और उधर देवगण थे॥ १८॥ इधर देव क्रुद्ध हो रहे थे और उधर दैत्य कुपित हो रहे थे। वे पृथ्वी पर पाँव जमाकर खड़े थे। तब विष्णु ने मंत्रणा करके महासुन्दरी का रूप धारण किया॥ १६॥ भगवान नें महामोहिनी का वेष धारण किया। उसे जिसने भी देखा वह लुब्ध हो उठा। इधर देवगण थे और उधर दैत्य शोभायमान थे। अव दोनों ने मोहित होकर युद्ध छोड़ दिया॥२०॥ ॥ दोहा॥ विष और चन्द्रमा शिव को दे दिया। ऐरावत और उच्चैश्रवा अश्व इन्द्र को दे दिया॥ २१॥ विष्णु ने स्वयं कौस्तुभ मणि और लक्ष्मी मँगवा ली तथा देवों को अमृत तथा असुरों को शराब बाँट दी॥ २२॥ ॥ चौपाई॥ रम्भा और धन्वंतरि स्वयं ले लिये और जग को सुख पहुँचाने के लिए उनका बँटवारा कर दिया। तीन रत्न और निकाल दिए। हे प्रियजन! तुम सव उनको देखो॥ २३॥ ॥ सवैया॥ उसकी छवि देखकर सुर-असुर सभी शोक को त्यागकर मोहित हो गए। उस स्त्री रूपी हरि पर सभी रीझ गए और सबने विवाद छोड़ दिया। हाथी, तोता, चन्द्रमा, सिंह एवं कामदेव का गर्व भी उसे देखकर चूर हो गया। उसने जो दिया सबने हंसते-हँसते ले लिया और किसी ने भी शस्त्र नहीं उठाया॥ २४।

काहूँ न हाथ हथ्यार उचायो ॥ २४ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ इनै अंम्रित बाट्यो उनै मद्य दीनो। छले छिप्र छैली छली भेस कीनो। महाँ बस्त्र धारे इतै आपु सोहै। सभै दैत देवान के चित्त मोहै ॥ २५ ॥ ॥ दोहरा ॥ धर्‍यो रूप त्रिय को तहाँ आपुन तुरति मुरारि। छली छिनिक मो छलि गयो चिते हुते असुरारि ॥ २६ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ तेईसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १२३ ॥ २४१४ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ चौबीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ नारनौल के देस मै बिजैसिंघ इक नाथ। रैनि दिवस डार्‍यो रहै फूलमती के साथ ॥ १ ॥ बिजैसिंघ जाको सदा जपत आठहूँ जाम। फूलन के संग तोलियै फूलसती जिह नाम ॥ २ ॥ बिजैसिंघ इक दिन गए आखेटक के काज। भ्रमरकला को रूप लखि रीझ रहे महाराज ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ तह ही ब्याह धाम लिय आनो। राव हेरि सोऊ ललचानी। फूलमती सुनि अधिक रिसाई। आदर सो ता

॥ भुजंग छंद ॥ इन (देवों) को अमृत और उन (असुरों) को मद्य बाँट दिया। उस छलिया ने छैल रूप धारण किया। सुन्दर वस्त्रों को धारण वह शोभायमान थी और देव-दैत्यों के चित्त को मोहित कर रही थी ॥ २५ ॥ ॥दोहा॥ मुरारि (विष्णु) ने तुरन्त स्त्री का रूप धारण किया और क्षण भर में सारे असुरों को छल लिया ॥ २६ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद के एक सौ तेईसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १२३ ॥ २४१४ ॥ अफजू ॥

एक सौ चौबीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ नारनौल प्रदेश में विजय सिंह एक राजा था, जो रात-दिन फूलमती के साथ पड़ा रहता था ॥ १ ॥ विजय सिंह जिसको आठों प्रहर स्मरण करता था वह फूलमती फूलों के साथ तुलनीय थी ॥ २ ॥ एक दिन विजय सिंह शिकार को गया और वह राजा वहाँ भ्रमरकला के रूप पर रीझ उठा ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ वह उस स्त्री से विवाह करके उसे घर ले आया। वह भी राजा को देखकर ललचा गई। फूलमती यह सुनकर अत्यधिक क्रुद्ध

को ग्रहि ल्याई ।। ४ ।। तासौ अधिक नेह उपजायो । धरम भगनि करि ताहि बुलायो । चित मै अधिक कोप त्रिय धरियो । ता की नास घात अटकरियो ।। ५ ।। जाकी त्रिया उपाशिक जानी । वहै घात चीनत भी रानी । रुद्र देहरो एक बनायो । जा पर अगनित दरब लगायो ।। ६ ।। दोऊ सवति तहाँ चलि जावैं । पूजि रुद्र कौ पुनि घर आवैं । मट आछो ऊचो धुज सोहै । सुर नर नाग असुर मन मोहै ।। ७ ।। ।। दोहरा ।। पुरबासनि सुंदरि सभै इक ठाँ करै पयान । महाँरुद्र कौ पूजि कै बहुर बसैं ग्रहि आनि ।। ८ ।। ।। अड़िल्ल ।। एक दिवस रानी लै ता कौ तह गई । निजु करि असि गहि वाहि मूँड काटत भई । सीस काटि शिव ऊपर दयो चराइकै । हो रोवत त्रिप प्रति आपु उचार्यो आइकै ।। ९ ।। ।। दोहरा ।। धरम भगनि मुहि संग लै रुद्र देहरे जाइ । मूँड काटि निजु कर असहि हर पर दियो चराइ ।। १० ।। ।। चौपई ।। यौ सुनि बात तहाँ त्रिप आयो । जह त्रिय तौन नारि कौ घायो । ताहि निहारि चक्रित चित रहियो । त्रिय को कछुक बैन ना कहियो ।। ११ ।। (मू०ग्रं०९९१)

हुई परन्तु (फिर भी) उसे आदरपूर्वक घर ले आई ।। ४ ।। उससे बहुत प्यार जताया और उसे धर्मबहिन कहकर बुलाया । मन में उसने (फूलमती ने) अत्यधिक क्रोध रखा और उसे नाश कर डालने का मन बनाया ।। ५ ।। जिसकी वह उपासना करती थी उसे ही रानी ने मारने का मन बनाया । उसने अपार द्रव्य खर्च करके एक शिव मंदिर बनाया ।। ६ ।। दोनों सौतें वहाँ जाती थीं और रुद्र की पूजा कर पुनः वापस घर आ जाती थीं । मंदिर का कलश सुन्दर था और ध्वजा की शोभा सुर, नर, नाग, असुर आदि सबका मन मोहनेवाली थी ।। ७ ।। ।। दोहा ।। पुरवासी सुन्दरियाँ सभी वहाँ जाती थीं और महारुद्र की पूजा कर पुनः घर वापस आ जाती थीं ।। ८ ।। ।। अड़िल्ल ।। एक दिन रानी उसे (भ्रमरकला को) लेकर वहाँ गई और अपने हाथ में तलवार पकड़कर उसने उसका सिर काट दिया । सिर काटकर उसने शिव पर चढ़ा दिया और स्वयं रोते हुए राजा से कहा ।। ९ ।। ।। दोहा ।। धर्मबहिन मुझे साथ लेकर मंदिर गई और उसने अपना सिर काटकर मंदिर में शिव को चढ़ा दिया ।।१०।। ।। चौपाई ।। यह सुनकर राजा वहाँ आया जहाँ उस स्त्री ने (भ्रमरकला) स्त्री को मार डाला था । वह उसे देखकर चकित रह गया, परन्तु उसने स्त्री को कुछ नहीं कहा ।। ११ ।।

॥ दोहरा ॥ मूँड काटि जिन निजु करन हर पर दियो चराइ। धन्य त्रिया धंनि देस तिह धन्य पिता धंनि माइ ॥ १२ ॥ दाह दियो तिह नारि कौ चित अति शोक बढाइ। फूलमती के भवन मै बहुरि बसत भ्यो आइ ॥ १३ ॥ सवति मारि निजु करन सौ और त्रिपहि दिखराइ। राजा कौ निजु बसि कियो ऐसो चरित बनाइ ॥ १४ ॥ ब्रहम बिशन सुर असुर सभ रैनाधिप दिनराइ। बेद ब्यास अरु बेद त्रिय भेद सकै नहि पाइ ॥ १५ ॥ १ ॥

॥ इति स्त्री चरित्र पखयाने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ चौबीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १२४ ॥ २४३६ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ पचीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ सवैया ॥ लंक मै बंक निसाचर थो रघुनंदन को सुनि एक कहानी। रावन पुत्र कलत्र समेत हने इह खेत महा बलि धानी। रोस भर्यो ततकाल गदा गहि कौचक से मद मत्त क्रिपानी। कोट कौ कूदि समुंद्र कौ फाँधि फिरंग सौ आनि पर्यो अभिमानी ॥ १ ॥ आठिक द्योस अँधेर रह्यो पुनि सूर

॥ दोहा ॥ (उसने कहा) जिसने अपना सिर काटकर शिव को अर्पण कर दिया वह स्त्री, उसका देश, माता और पिता धन्य हैं ॥ १२ ॥ अत्यन्त शोकाकुल होकर उसने उस स्त्री का दाह-संस्कार किया, पुनः फूलमती के महल में रहने लगा ॥ १३ ॥ सौतन को अपने हाथों से मारकर राजा को दिखला कर प्रपंचात्मक चरित्र बनाकर राजा को अपने वश में कर लिया ॥ १४ ॥ ब्रह्मा, विष्णु, सुर-असुर, चन्द्रमा, सूर्य, वेदव्यास और वेदादि कोई भी स्त्री के रहस्य को नहीं समझ सका है ॥ १५ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद के एक सौ चौबीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १२४ ॥ २४३६ ॥ अफजू ॥

एक सौ पचीसवाँ चरित्र-कथन

॥ सवैया ॥ लंका में एक टेढ़े दमदार राक्षस ने रघुनन्दन (राम) की कहानी सुनी कि उस महाबली ने रावण को पुत्र-स्त्रियों-सहित युद्धस्थल में मार डाला। वह क्रुद्ध होकर तुरन्त गदा, कवच, कृपाण आदि लेकर मद मस्त होकर क़िले से कूदकर समुद्र को लाँघकर विदेशियों पर अभिमानपूर्वक

चड़्यो जग धुंध मिटाई। दानव कौ लखि लोकन के अति ही चित मै उपजी दुचिताई। बाँधि अनी भट भूरि चड़े रिपु जीतन की जिय ब्योंत बनाई। बान कमान गदा बरछीन की आनि करी तिह साथ लराई ॥ २ ॥ एक परे भभरात भटुत्तम एक लगे भट घायल घूँमै। एक चले भजिकै रन ते इक आनि परे मरिकै गिरि भूँमै। एक मरे लरिकै हय ऊपर हाथिन पैं इक स्यंदन हूँमै। मानो त्रिबेनी के तीरथ पै मुनि नायक धूम अधोमुख धूँमै ॥ ३ ॥ कौच क्रिपान कसे कटनी कटि अंग उतंग सुरंग निखंगी। चौपि चले चहूँ ओरन ते घन सावन की घट जान उमंगी। जंग निशंग पर्यो संग सूरन नाच्यो है आपु तहाँ अरधंगी। रोस भरे न फिरे तसिकै रन रंग परे रवि रंग फिरंगी ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ भेर पर्यो भारथ ते भारी। नाचे सूरबीर हंकारी। बहु ब्रिण किए न इक तिह लाग्यो। अधिक कोप दानव के जाग्यो ॥ ५ ॥ एक हाथ तिन गदा सँभारी। दूजो कर तरवारि निकारी। जाकौ दौरि दैत ब्रिण मारै। एकै चोट चौथ ही डारै ॥ ६ ॥ जो कोऊ ताकह घाव लगावै। टूटि क्रिपान हाथ (मू०ग्रं०९९२)

आ चढ़ा ॥ १ ॥ आठ दिन के लगभग अँधेरा रहा; पुनः सूर्य उगा और जगत में धुंध समाप्त हुई। उस दानव को देखकर लोग दुविधा में पड़ गए। बड़े-बड़े राजा सेना बाँधकर उस शत्रु को जीतने को चल पड़े और बाणों, कमानों, गदाओं एवं बर्छियों-सहित उससे आकर लड़ने लगे ॥ २ ॥ कहीं कुछ वीर भरभराकर गिरने लगे और कहीं कुछ घायल होकर घूमने लगे। कुछ युद्ध से भागने लगे और कुछ मारकर भूमि पर गिरने लगे। कोई घोड़े पर, कोई हाथी पर और कोई रथ में ही मारा गया। वे सब ऐसे लग रहे थे मानों त्रिवेणी के तीर्थ पर मुनिवर अधोमुख होकर घूम रहे हों ॥ ३ ॥ वीरगण कवच, कृपाण एवं सुन्दर तरकस शरीर पर कसकर इस प्रकार चारों ओर से उमड़ चले जैसे सावन की घटा उमड़ पड़ी हो। वहाँ भीषण युद्ध हुआ जिसमें शिव भी (तांडव) नृत्य कर उठे। युद्ध में वीर क्रुद्ध हो घूम रहे थे और कोई भी पलट नहीं रहा था ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ भारत में भीषण युद्ध हुआ और अहंकारी शूरवीर नाच उठे। सबने बहुत वार किये पर एक भी उसे न लगा और इस प्रकार वह दानव और भी क्रुद्ध हो उठा ॥ ५ ॥ उसने एक हाथ में गदा पकड़ी और दूसरे में तलवार सँभाली। वह दैत्य दौड़कर जिसे भी मारता उसे एक ही वार में कुचल डालता ॥ ६ ॥ जो कोई उस पर वार

रहि जावै । दानव कोप अधिक तब करै । प्रान फिरंगनि बहु के हरै ॥ ७ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ महाँ नाद कै कै जबै दैत धावै । घनी सैन को मारि कै कै सु जावै । बियो कौन जोधा लरै रोस कै कै । चले बाज हेरै महाँ ताप तै कै ॥ ८ ॥ लखे दैत भारी सभै भूप भागै । महा त्रास के ताप सौ आनुरागै । चले भाजि कै कै हठी नारि न्याए । करी बाज राजे पियादे पराए ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ सैन भजत लखि भटि रिसि भरे । पलटि कोप कै कै फिरि परे । जेते लखे दैत फिरि आए । घाइ घाइ जमलोक पठाए ॥ १० ॥ बीस हज़ार करी तिन घायो । तीस हज़ार सु बाज खपायो । चालिस सहस तहा रथ काटे । अभ्रन ज्यों जोधा चलि फाटे ॥ ११ ॥ ॥ दोहरा ॥ बहुरि गदा गहि हाथ मै प्रतिना पतन अपार । भाँति भाँति संघ्रत भयो कछू न शंक बिचार ॥ १२ ॥ ॥ चौपई॥ तासौ जुद्ध सभै करि हारे । तिन ते गए न असुर सँघारे । उगियो चंद्र सूर असताए । सभ ही सुभट ग्रहिन हटि आए ॥ १३ ॥ भयो प्रात जब तम मिटि

करता उसकी कृपाण ही टूट जाती और वह हार मान लेता । तब दानव
और क्रुद्ध होकर शूरवीरों के प्राण हरण करता था ॥ ७ ॥ ॥ भुजंग
छंद ॥ घनघोर ध्वनि के साथ जब वह दैत्य दौड़-दौड़कर जाता तो अनेकों
वीरों को मार जाता । अन्य कोई योद्धा नहीं था जो उससे क्रुद्ध होकर
लड़ता । उससे डरकर अनेकों घोड़ों समेत वीर चल पड़े ॥ ८ ॥ भारी-
भरकम दैत्य को देखकर सभी राजा भाग खड़े हुए और बुरी तरह उससे
भयभीत हो उठे । हठी वीर स्त्रियों की तरह भाग खड़े हुए । भागनेवाले
हाथीसवार, घुड़सवार और प्यादे आदि सभी थे ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ सेना
को भागते देखकर वीर क्रुद्ध हो उठे और पलट कर क्रोधपूर्वक चल पड़े ।
दैत्य ने जितनों को आते देखा उन सबको मारकर यमलोक भेज दिया ॥१०॥
उसने बीस हज़ार हाथी, तीस हज़ार घोड़े, चालीस हज़ार रथ काट डाले ।
योद्धागण बादलों की तरह फट चले ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ पुनः हाथ में गदा
पकड़कर अपार सेना को नष्ट कर डाला और निःशंक होकर विभिन्न प्रकार
से संहार करनें लगा ॥ १२ ॥ ॥ चौपाई ॥ उससे युद्ध करके सभी हार गए
और किसी से भी वह दैत्य मारा न जा सका । सूर्यास्त हो गया और चन्द्रमा
उग आया । अब सभी वीर वापस घरों को आ गए ॥ १३ ॥ सुबह हुई;
जब अँधेरा मिट गया तो शूरवीर पुनः क्रुद्ध हो उठे । वे सेना एकत्र कर

गयो। कोप बहुरि सूरन को भयो। फौजै जोरि तहा चलि आए। जिह ठाँ दैत घने भट घाए ॥ १४ ॥ डारि पाखरैं तुरे नचावैं। केते चंद्रहास चमकावैं। तनि तनि केतिक बानन मारैं। अमित घाव दानव पर डारैं ॥ १५ ॥ ॥भुजंग छंद॥ हठ्यो आपु दानव गदा हाथ लै कै। लई काढि काती महाँ कोप कै कै। जिते आनि ढूके तिते खेत मारे। गिरे भाँति ऐसी न जावैं बिचारे ॥ १६ ॥ किते हाक मारैं किते घूँम घूँमैं। किते जुद्ध जोधा परे आनि भूमैं। किते पानि मारैं किते हूह छोरैं। किते जुद्ध सौडीन के सीस तोरैं ॥ १७ ॥ कहूँ बाज जूझे कहूँ राज मारे। कहूँ छेत छत्री करी ताज डारे। चले भाजि जोधा सभै हारि मानी। कछू लाज की बात कै नाहि जानी ॥ १८ ॥ हठी जे फिरंगी महाँ कोप वारे। लरे आनि तासो न नैकै पधारे। छकै छोभ छत्री महाँ कोप ढूके। चहूँ ओर ते मार ही मारि कूके ॥१९॥ जिते आनि जूझे सभै खेत घाए। बचे जीति ते छाडि खेतै पराए। हठे जे हठीले हठी खग्ग कूटे। महाँ राज बाजीन के

वहाँ आ गए जहाँ उस दैत्य ने अनेकों वीरों को मार डाला था ॥ १४ ॥ वे घोड़ों पर ज़ीन कसकर उन्हें नचाने लगे और कृपाणें चमकाने लगे। कितने ही तन-तनकर वाण मारने लगे और दैत्य पर अपरिमित घाव करने लगे ॥ १५ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ वह दानव हाथ में गदा लेकर डट गया और उसने कुपित होकर तलवार भी निकाल ली। युद्ध में जितने भी आए थे सबको मार डाला। वे सब ऐसे गिर रहे थे कि गिने नहीं जा रहे थे ॥ १६ ॥ कितने ही घूम-घूमकर चिल्ला-चिल्लाकर मार रहे थे और कितने ही योद्धा युद्ध में आ सम्मिलित हुए थे। कितने ही पानी माँग रहे थे और कितने ही शरीर त्याग रहे थे एवं अनेकों ही युद्ध में शूरवीरों के सिर तोड़ रहे थे ॥१७॥ कहीं घोड़े, कहीं राजा, कहीं हाथी और कहीं मुकुट पड़े थे। सभी योद्धा हार मानकर भाग खड़े हुए और अब हार मानने में किसी को लज्जा नहीं आ रही थी ॥ १८ ॥ जितने भी हठी योद्धा थे वे भी उससे लड़ने के लिए उसके पास नहीं आ रहे थे। सभी क्षत्रिय क्षुब्ध एवं क्रुद्ध थे। चारों ओर से "मार-मार" की पुकार ही सुनाई पड़ रही थी ॥ १९ ॥ जितने आकर जूझे वे सभी मारे गए और जो बचे थे वे विजय की आशा छोड़ भाग खड़े हुए। हठी वीर खड़ग चला रहे थे और राजाओं तथा घोड़ों के सिर फूट रहे

मूँड फूटे ॥ २० ॥ ॥ चौपई ॥ बीस हज़ार करी (मू०ग्रं०९९३)
कुपि मारे । तीस हज़ार अस्व हनि डारे । चालिस सहस
रथिन रथ टूटे । साठि सहस्र रथी हूँ कूटे ॥ २१ ॥
॥ दोहरा ॥ एती सैन सँघारिकै पैदल हन्यो अपार । जनु
करि जए न कॉंखि ते आए नहि संसार ॥२२॥ ॥चौपई॥ सभ
ही बीर जुद्ध करि हारे । तिन ते गए न दानौ मारे । खेत
छोरि सभ ही घर गए । मतो करत ऐसी बिधि भए ॥ २३ ॥
॥ सवैया ॥ कैसेहूँ मार्‍यो मरै न निसाचर जुद्ध सभै करिकै
भट हारे । बान क्रिपान गदा बरछीन के भाँति अनेकन घाइ
प्रहारे । सो नहि भाजत गाजत हैं रन होत निवरतन क्यों हूँ
निवारे । देस तजैं कहूँ जाइ बसैं कह आवत है मन मंत
तिहारे ॥२४॥ ॥ चौपई ॥ इंद्रमती बेस्वा तह रहई । अधिक
रूप ता को जग कहई । सूरज चंद्र जोति जो धारी । जनु
याही ते लै उजियारी ॥ २५ ॥ ॥ दोहरा ॥ तिन बीरा तह
ते लयो चली तहा कह धाइ । बस्त्र पहिरि तित कौ चली जित
असुरन को राइ ॥२६॥ ॥ चौपई ॥ मेवा और मिठाई लई ।
माटन सों धर पर भरि दई । जह फल खात असुर को राई ।
तिन लै बन मो सकल लगाई ॥ २७ ॥ जब दानों को भूखि

थे ॥ २० ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने बीस हज़ार हाथी और तीस हज़ार अश्व
मार डाले । चालीस हज़ार रथियों के रथ टूट गए और साठ हज़ार रथी
भी काट-कूट दिए गए ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ इतनी सेना और पैदलों को
मारकर ऐसे कर दिया मानों वे माँ की कोख से पैदा ही नहीं हुए हों ॥ २२ ॥
॥ चौपाई ॥ सभी वीर युद्ध करके हार गए पर उनसे दानव मारे नहीं गए ।
सभी युद्धक्षेत्र छोड़कर घर चले गए और इस प्रकार विचार करने लगे ॥२३॥
॥ सवैया ॥ सभी वीर युद्ध करके हार गए हैं, परन्तु यह निशाचर किसी तरह
भी मारा नहीं जा रहा है । बाण, कृपाण, गदा, बर्छी से अनेकों वार किए गए
हैं परन्तु यह किसी भी प्रकार युद्ध से हटता ही नहीं है । क्या अब यह देश
छोड़कर कहीं अन्यत्र बसा जाय ? ॥२४॥ ॥ चौपाई ॥ इन्द्रमती नामक एक
वेश्या वहाँ थी जो रूप-सौंदर्य में अद्वितीय थी । चंद्र-सूर्य ने भी प्रकाश मानों उसी
से लिया हो ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥ उसने उन लोगों से (इस कार्य का) बीड़ा
उठाया और वस्त्र पहनकर उस ओर चल पड़ी जहाँ दानवों का राजा विद्यमान
था ॥ २६ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने मेवे और मिठाइयाँ मटकों में भर लीं ।
जहाँ दानवराज फल खाया करता था वहाँ उसने डेरा लगा दिया ॥ २७ ॥

संतायो । तब बन के भच्छन फल आयो । माट फोरि पकवान चबाइस । मदरा पियत अधिक मन भाइस ॥ २८ ॥ पी मदरा भयो मत्त अभिमानी । यह जब बात बेसुअन जानी । भाँति भाँति बादित्र बजाए । गीति अनेक तान कै गाए ॥२९॥ ज्यों ज्यों पात्र नाचती आवै । त्यों त्यों दानो सीस ढुरावै । कोप कथा जिय ते जब गई । कर की गदा बखशि कर दई ॥ ३० ॥ आई निकट लखी जब प्यारी । हुती क्रिपान सोऊ दै डारी । आयुध बखशि निरायुधु भयो । यह सभ भेद तिनै लखि लयो ॥ ३१ ॥ नाचत निकट दैत के आई । साँकर कर सों गई छुआई । तासो जंत्र मंत्र इह कियो । भेट्यो तनिक कैद करि लीयो ॥ ३२ ॥ ॥ दोहरा ॥ तनिक छुअत ता के तुरतु बाँधि गयो ततकाल । दानव को बाँधत भई इह चरित्र करि बाल ॥ ३३ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ छल्यो छैल दानो इसी छलै बाला । लीयो बस्य कै कै महा रूप आला । बँध्यो बीर मंत्रान के जोर (मू०ग्रं०९९४) आयो । सभै ग्राम बासीन कौ लै दिखायो ॥ ३४ ॥ प्रथम ग्राम बासीन

जब दानवों को भूख लगी तो वे वन में फल खाने के लिए आए । उन्होंने मटके फोड़कर पकवान खाए और मन भरकर मनभावन मदिरा का पान किया ॥ २८ ॥ जब वह दानव मदिरा पीकर मदमस्त हो गया और इस तथ्य का वेश्याओं को पता लग गया तो उन्होंने विभिन्न प्रकार की तान निकालने वाले अनेकों वाद्य बजाने प्रारम्भ कर दिये ॥ २९ ॥ अब जैसे-जैसे वेश्याएँ नृत्य कर रही थीं वैसे-वैसे दानव सिर हिलाने लगे । जब दानव के मन का क्रोध शान्त हो गया तो उसने हाथ की गदा दे दी ॥ ३० ॥ जब प्रिया पास आती जान पड़ी तो उसने हाथ की कृपाण भी छोड़ दी । अब वह शस्त्र छोड़कर शस्त्र-विहीन हो गया और इस तथ्य का पता इन सबको लग गया ॥ ३१ ॥ अब वह (इन्द्रमती) नाचती-नाचती दैत्य के निकट आई और ज़ंजीर उसके हाथ को छुआ गई । उसे यंत्र-मंत्र के बल से तनिक छूते ही क़ैद कर लिया ॥ ३२ ॥ ॥ दोहा ॥ तनिक छूते ही उसे तत्काल क़ैद कर लिया । इस प्रकार उस बाला ने प्रपंच करके उस दानव को बाँध लिया ॥ ३३ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ उस बालिका नै उस बली दानव को छल लिया और अपने रूप के वश में कर लिया । वह वीर मंत्रों के बल से बँधा हुआ चला आया और उसे सभी ग्रामवासियों को दिखाया गया ॥ ३४ ॥ पहले उसे ग्रामवासियों को दिखाया तथा पुनः उसे भूमि खोदकर गाड़ दिया ।

कौ लै दिखार्‍यो। पुनिर खोदि भूमै तिसै गाडि डार्‍यो। जिनै लै गदा कौ घनो बीर मारे। भए तेज मंत्रान केते बिचारे ॥ ३५ ॥ ॥ दोहरा ॥ जिन खेचर कर खग्ग लै खत्री हने अपार। ते छैली इह छल छल्यो ऐसो चरित्र बिचार ॥ ३६ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पचीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १२५ ॥ २४६५ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ छबीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ देस तपीसा के बिखै गढ़ी सिनसिनी एक। जीति न कोऊ तिह सक्यो भिरि भिरि गए अनेक ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ अबदुल नबी तहाँ कह धायो। चारि द्योस लगि जुद्ध मचायो। अधिक मारि गोलिन की भई। भ्रितन बिसरि सकल सुधि गई ॥२॥ आखर गढ़ी तवन कौ तोर्‍यो। याकौ किनी न मुहरो मोर्‍यो। अटकत एक अटारी भई। अधिक मारि गोरिन की दई ॥ ३ ॥ भरि भरि तुपक तवन त्रिय ल्यावै। लै लै कर मै पुरख चलावै। तकि तकि तन

जिन्होंने गदा से अनेकों वीरों को मार डाला था वे मंत्रों के बल से बेचारे बनकर रह गए ॥ ३५ ॥ ॥ दोहा ॥ जिन दानवों ने हाथ में खड़ग लेकर अनेकों क्षत्रियों को मार डाला, उन्हें इस स्त्री ने प्रपंच करके छलपूर्वक छल लिया ॥ ३६ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ पचीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १२५ ॥ २४६५ ॥ अफजूं ॥

एक सौ छब्बीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ तपसा देश में एक गढ़ी थी जिसे अनेकों बार भिड़ने पर भी वीर जीत नहीं सके ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ अब्दुल नबी वहाँ चढ़ आया और उसने चार दिन तक भीषण युद्ध किया। गोलाबारी की अत्यधिक मार के सामने नौकरों को सब सुधि भूल गई ॥ २ ॥ आखिर गढ़ी तोड़ दी गई और कोई भी उसका सामना नहीं कर सका। एक भवन अड़ गया। वहाँ भी अधिक गोलाबारी की गई ॥ ३ ॥ उसमें बंदूकें भर-भरकर स्त्रियाँ लाती

जाके मै मारे। है गै रथ बीरान बिदारै ।। ४ ।। भरि बंदूक त्रिय शिसत बनाई। खान नबी के ह्रिदै लगाई। लागत घाइ हाइ नहि भाखयो। मारि पालकी भीतरि राखयो ।। ५ ।। ।। दोहरा ।। नबी तुपक के संग हन्यो उतै जुद्ध अति होइ। इत भ्रित पति लै घर गए उतै न जानत कोइ ।। ६ ।। एक तोपची तुपक लै बाँधी शिसत बनाइ। ता के पति के उर बिखै गोली हनी रिसाइ ।। ७ ।। ।। चौपई ।। लगे तुपक के ब्रिण भट जूझ्यो। ठाढी निकट तवन त्रिय बूझ्यो। चकमक झारि कढी चिनगारी। तिन छपरन मो छिप्र प्रजारी ।। ८ ।। मुगल सेख सैयद तह आए। ता त्रिय को यौ बचन सुनाए। अब तूँ इस्त्री होहि हमारी। निकट लागि इह भाँति उचारी ।। ९ ।। ।। दोहरा ।। सुत बालक भरता मर्यो इन को प्रथम जराइ। बहुरि तिहारो धाम मै आजु बसौंगी आइ ।। १० ।। ।। चौपई ।। प्रथम चिता मै सुत कौ डार्यो। म्रितक खसम कौ बहुरि प्रजार्यो। बहुरौ काँखि मुगल को भरी। आपन लै पावक मो परी (मू०ग्रं०९९५) ।। ११ ।।

थीं और पुरुष हाथ में लेकर उन्हें चलाते थे। वे साध कर जिसे भी निशाना बनाते थे वे ही रथ-घोड़े मार डाले जाते थे ।। ४ ।। बंदूक़ भरकर स्त्री ने निशाना लगाया और नबीख़ान के हृदय में चला दिया। लगते ही ख़ान ने हाय भी नहीं कहा (और मर गया) तथा इन्होंने उसकी पालकी को भी क़ब्ज़े में कर लिया ।। ५ ।। ।। दोहा ।। नबी को बंदूक़ से मार डाला और उधर अभी युद्ध हो ही रहा था। इधर नौकर ख़ान को घर में ले आए और उधर किसी को पता तक न चला ।। ६ ।। एक तोपची ने निशाना साधकर उस स्त्री के पति को क्रुद्ध होकर गोला मारा ।। ७ ।। ।। चौपाई ।। तुपक का घाव लगने से वीर जूझ गया और पास खड़ी उसकी स्त्री को पता लग गया। उसनें पत्थर रगड़कर अग्नि निकाली और अपने घर को शीघ्रता से जला दिया ।।८।। अब मुगल, शेख़, सैयद वहाँ आ गए और स्त्री के पास आकर बोले कि अब तुम हम लोगों की स्त्री बन जाओ ।। ९ ।। ।। दोहा ।। (उसनें कहा) मेरा पुत्र, बालक, पति आदि मृतकों को जलाकर मैं फिर आज ही तुम्हारे घर में आ बसूंगी ।। १० ।। ।। चौपाई ।। उसने पहले चिता में पुत्र को डाला और फिर पति को जलाया। फिर हाथों में मुगलों को आलिंगनबद्ध करके वह अग्नि में कूद गई ।। ११ ।। ।। दोहा ।। पुत्र जलाकर, पति जलाकर, पुनः

॥ दोहरा ॥ सुत जराइ पति जारिकै बहुरि मुगल गहि लीन ।
ताँ पाछे आपन जरी त्रिय चरित्र थौ कीन ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ छवीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १२६ ॥ २४७७ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ सताईसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ बीरदत्त चंडालिक रहै । अति तसकर ता कौ जग कहै । खान खवीन तहाँ जो आवै । ता कौ लूटि कूटि लै जावै ॥ १ ॥ जो आवत कोऊ राह निहारै । जाइ तवन कौ तुरत हकारै । जो तनि धनु रिपु तीर चलावै । छुरा भए तिह काटि गिरावै ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ लहै निसाइक जब भयो तब वह करत प्रहार । जीवन किसू न छोरई डारत ही संघार ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ रतनसिंघ तिह मग ह्वै आयो । सो लखि तवन चोर नै पायो । ताकहु कह्यो बस्त्र तुम डारो । ना तर तीर कमान सँभारो ॥ ४ ॥ रतनसिंघ जो तीर चलावै । सोऊ छुरा ते काटि गिरावै । उनसठि तीर छोरि तिन कह्यो । एक तीर तरकस मम

उसनें मुगल को पकड़ लिया और उसके बाद में स्वयं अग्नि में जल गई तथा इस प्रकार का चरित्र दिखाया ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में एक सो छब्बीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १२६ ॥ २४७७ ॥ अफजू ॥

एक सौ सत्ताईसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ वीरदत्त नामक एक चांडाल था, जिसे सारा संसार एक बड़ा चोर मानता था । वहाँ जो भी खान आदि आता था वह उसे लूट-कूट ले जाता था ॥१॥ कोई यदि राह देखता उधर आ निकलता था तो यह तुरन्त उसको ललकार देता था । यदि शत्रु तीर चलाता था तो वह उसे छुरे से काट डालता था ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ रात होने पर वह प्रहार करता था और किसी को जीवित नहीं छोड़ता था ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ रत्नसिंह उस रास्ते पर आया जिसे उस चोर ने देख लिया । उसे कहा कि या तो तुम वस्त्र उतार दो नहीं तो धनुष-बाण सँभालो ॥ ४ ॥ रत्नसिंह जो भी तीर चलाता था यह उसे छुरे से काट गिराता था । उसने जब उनसठ तीर छोड़े तो कहा

रह्यो ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ सुनु तसकर मैं बिसिख को जाकौ कीयो प्रहार । आजु लगे चूक्यो नही सुनि लै बचन हमार ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ मैं जेते तुहि तीर चलाए । सो सभ ही तैं काटि गिराए । अब चेरौ चित भयो हमारो । कहो सु करिहौ काजि तिहारो ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ एक हौस मन महि रही सो तुहि कहौ सुनाइ । जिह भाखैं मारौ तिसै दीजै कछू बताइ ॥ ८ ॥ ॥ चौपई ॥ यौ सुनि चोर अधिक सुख पायो । एक पत्र करि साथ बतायो । जब ताको तिन द्रिशटि चुराई । तनिगासी तिह मरम लगाई ॥ ९ ॥ ॥ दोहरा ॥ रतनसिंघ इह छल भए खल की द्रिशटि बचाइ । मरमसथल मार्‍यो बिसिख दीनो ताहि गिराइ ॥ १० ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने पुरख चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सताईसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १२७ ॥ २४८७ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ अठाईसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ मारवार के देस मै उग्रदत्त इक राव ।

कि अब मेरे तरकस में एक ही तीर बचा है ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ तसकर ! तुम सुनो— आज तक मेरा यह तीर कभी भी अपने निशाने से चूका नहीं है ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ जितने बाण मैंने चलाए हैं वे सब तूने काट गिराए हैं। मेरा मन अब तुम्हारा दास हो गया है। तुम मुझे कोई काम बताओ जिसे मैं तुम्हारे लिए करूँ ॥७॥ ॥ दोहा ॥ मेरे मन में एक ही बात (तुम्हारी सेवा करने की) बाकी बची है। मुझे बताओ और जिसे कहो मैं उसे मार दूँ ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ यह सुनकर चोर अत्यधिक सुखी हुआ और उसने हाथ के इशारे से उसे बताया। जैसे ही उसने दृष्टि हटाई उसनें तीर की नोक उसके मर्मस्थल में ठोंक दी ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ रत्नसिंह नें उस खल की नज़र बचाकर यह छल किया और बाण को मर्मस्थल में मारकर उसे गिरा दिया ॥ १० ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के पुरुष-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में एक सौ सत्ताईसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १२७ ॥ २४८७ ॥ अफजू ॥

एक सौ अट्ठाईसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ मारवाड़ देश में उग्रदत्त नामक एक राजा था जो कुपित

कोप जगे पावक मनो सीतल सलिल सुभाव ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ धरवारन ता को धन मार्यो । पुरी आइ पालकन पुकार्यो । अगनत ढोल (मू०ग्रं०६६६) नगारे बाजे । कौच पहिरि सूरमा बिराजे ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ बज्यो जुझउआ दुहूँ दिसि सूरा भयो सुरंग । पखरारे नाचत भए कातर भए कुरंग ॥ ३ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ महाँ बीर गाजे महाँ कोप कै कै । तिसी छेत्र छत्रीन को छिप्र छ्वै कै । ब्रछी बान बज्रान के वार कीने । किते खेत मारे किते छाडि दीने ॥ ४ ॥ किते खिग खंगे किते खेत मारे । घुरे घोर बाजंत्र मारू नगारे । बच्यो बीर एकै न बाजंत्र बाजी । महा त्रास कै कै महाँ सैन भाजी ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ जबही भाजि सैन सभ गयो । कोप तबै राजा को भयो । सामुहि ह्वै कै जुद्ध मचायो । देखन इंद्रदेव रन आयो ॥ ६ ॥ बिधनुदत्त अति ही सुभ कारी । उहि दिसि को राजा हंकारी । सो आपन लरबे को धायो । उत ते उग्रदत्त न्रिप आयो ॥ ७ ॥ दोऊ सैन राव दोऊ लैकै । रन कौ चले कोप अति कैकै । खड़ग

होने पर अग्नि के समान और शान्त होने पर शीतल जल के स्वभाव का था ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ धारवाड़ों ने उसका धन लूट लिया और नगर में आकर अधिकारियों को ललकारा । असंख्य ढोल-नगारे बज उठे और कवच पहनकर शूरवीर सुसज्जित हो गए ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ चारों ओर रणवाद्य बज उठे और शूरवीरों का रंग चमकने लगा । सुन्दर घोड़ों को नाचते देखकर हिरण भी लज्जित होने लगे ॥ ३ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ अत्यन्त कुपित होकर महाबली क्षत्रियों का युद्धस्थल में स्पर्श पाकर गरज उठे । उन्होंने बर्छी, बाण, वज्रादि से वार किए । कितनों को मार डाला और अनेकों को छोड़ दिया ॥ ४ ॥ कइयों को खड़ग में पिरोकर मार दिया । युद्धस्थल में भीषण नाद वाले वाद्य बजने लगे । वाद्यों को बजानेवाला भी कोई वीर न बचा और बुरी तरह भयभीत होकर सेना भाग खड़ी हुई ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब सारी सेना भाग गई तो राजा क्रुद्ध हो उठा । उसने सामने होकर युद्ध किया जिसे देखने के लिए इन्द्र भी युद्धस्थल में आया ॥ ६ ॥ विधुनदत्त उस ओर का अहंकारी राजा था । वह स्वयं लड़ने के लिए आया और इधर से उग्रदत्त राजा स्वयं आ पहुँचा ॥ ७ ॥ दोनों राजा क्रुद्ध होकर सेना लेकर चल पड़े । वे खड़ग, शूल और कृपाणें चमका रहे थे

सूल सैथी चमकावत । मारू राग सिधारे गावत ।। ८ ।।
।। सवैया ।। ताज परे कहूँ साज जिरे कहूँ बाज मरे गजराज
सँघारे । गावत बीर बिताल फिरै कहूँ नाचत भूत भयानक
भारे । भीत भजे लखि भीर परी अति त्रास भरे सुनि नाद
नगारे । काँपत है इह भाँति मनौ गन गोरन के जनु ओरन
मारे ।। ९ ।। एक महाँ भट भीर परी लखि भीत भए सु चले
भजिकै । इक आनि परे न टरे रन ते करवार कटारिन कौ
सजिकै । इक पानिहि पानि रटैं मुख ते इक मारहि मारि
कहैं ग्रजिकै । इक जूझि मरैं इक स्वासि भरैं इक आनि अरैं
रजिया रजिकै ।। १० ।। ।। दोहरा ।। तरफराहि सूरा धरनि
बरख्यो सार अपार । जे अब्रिणी ठाढे हुते ब्रिणी करे
करतार ।। ११ ।। ।। चौपई ।। ऐसो बीर खेत तह परियो ।
एक बीर साबत न उबरियो । राजा जू खेत गिरि गए ।
जीवत रहे म्रितक नहि भए ।। १२ ।। ।। दोहरा ।। खेत परे
न्रिप कौ निरखि भाजे सुभट अनेक । स्याम भनै रनभूमि मै
रह्यो न सूरा एक ।। १३ ।। ।। कबित्तु ।। भारे भारे सूरमा
पुकारे कै कै महा नाद रानी हम मारे राजा जिय ते सँघारे हैं ।

और मारू राग का गायन कर रहे थे ।। ८ ।। ।। सवैया ।। कहीं मुकुट पड़े थे, कहीं सज्जाएं पड़ी थीं, कहीं मरे हुए हाथी पड़े थे । कहीं वीर बैताल गा रहे थे, कहीं भयानक भूत नृत्य कर रहे थे । कायर सेना की भीड़ देख कर और घोर निनाद सुनकर डरकर भाग गए । वे ऐसे काँप रहे थे मानो क़ब्रों में से निकलकर भूतगण उन्हें मार रहे हों ।। ९ ।। कई वीर विकट परिस्थिति देखकर डरकर भाग खड़े हुए । कई कृपाणादि लेकर आ डटे और हटे नहीं । कई पानी ही पानी मुँह से चिल्ला रहे थे और कई गरज-गरजकर 'मार-मार' चिल्ला रहे थे । कोई जूझ मर रहा था, कोई साँस ले रहा था और कोई मिट्टी में मिट्टी हो रहा था ।। १० ।। ।। दोहा ।। अपार लोहवर्षा हुई और वीर धरती पर तड़पने लगे । जो घावों के बिना थे, प्रभु ने उन्हें भी घायल कर दिया ।। ११ ।। ।। चौपाई ।। इतने वीर युद्धस्थल में गिरे कि एक भी वीर घाव-रहित न बचा । राजा भी युद्धस्थल में गिर गया परन्तु मरा नहीं ।। १२ ।। ।। दोहा ।। राजा को खेत में गिरा देखकर अनेकों वीर भाग खड़े हुए । कवि श्याम के कथनानुसार युद्धस्थल में एक भी शूरवीर न बचा ।। १३ ।। ।। कवित्त ।। भारी वीर पुकार कर

केते रथ टूटे केते सूरन के सीस फूटे केते हय छूटे केते हयहूँ प्रहारे हैं। केते करी मारे केते करहि बिदारे केते जुद्ध ते निवारे केते पैदल लतारे (मू०ग्रं०६६७) हैं। लोह के करारे केते अस्व हूँ उतारे केते खंडे जिनि खंड ते अखंड खंड डारे हैं ॥ १४ ॥ ॥ सवैया ॥ जोरि सभा सुभ बोलि बडे भट और उपाइ कहौ सु करैं। उन सूरन ते नहि एक बच्यो दुख है छतिया किह भाँति भरैं। क्यों न देहु बनाइ बडे दल कौ संग जाइ तहीं फिरि जूझि मरैं। फिरिहैं किधौ जीति अयोधन को नहि राइ मरे तहीं जाइ मरैं ॥ १५ ॥ ॥ दोहरा ॥ भाँति भाँति मारू मँडे कंत जुझ्यो रन माहि। साजि सैन चतुरंगनी चलहु तहाँ कह जाइ ॥१६॥ ॥ सवैया ॥ मारि परे बिसंभार धरा पर सूर सुभै सुख सुद्ध अनीके। ता पर कंत सुन्यो जु जुझ्यो दिन रैनि बसै जोऊ अंतर जीके। ता बिनु हार शिंगार अपार सभै सजनी मुहि लागत फीके। कै रिपु मारि मिलों मै पिया संग नातर प्यान करों संग पीके ॥१७॥ जोरि महाँ दल कोरि कई भट भूखन अंग सुरंग सुहाए। बाँधि क्रिपान प्रचंड

कहने लगे कि हे रानी! हमने जीवित राजा को मारा है। कितने ही रथ टूट गए, शूरवीरों के सिर फूट गए, कितने ही घोड़े छूट गए और कितने ही मार डाले गए हैं। कितने ही हाथी मारे गए हैं और कितने ही पैदल कुचल दिए गए हैं। कितने ही लोहे से भी सख़्त घोड़ों को खंड-खंड कर दिया गया है॥ १४॥ ॥ सवैया॥ सभा की गई और सोचा गया कि अब क्या उपाय किया जाय। उन शूरवीरों में से तो एक नहीं बचा; इस दुःख से कैसे उबरा जाय। क्यों न अब एक बड़ी सेना बनाकर युद्धस्थल में जाकर ही जूझ मरा जाय। या तो हम युद्ध को जीतेंगे अथवा जहाँ राजा मारा गया वहीं जाकर मर जायँगे ॥ १५ ॥ ॥ दोहा॥ स्वामी के मारे जाने पर भाँति-भाँति के रणवाद्य बजने लगे। सभी सोचने लगे कि चतुरंगिणी सेना सजाकर अब चलना चाहिए ॥ १६ ॥ ॥ सवैया॥ सेना के सभी वीर सुन्दर शूरमा थे; उस पर उन्होंने यह सुना कि दिन-रात हृदय में बसनेवाला प्रिय जूझ मरा है। रानियाँ कहने लगीं कि उसके बिना तो सब हार-शृंगार हमें फीका लग रहा है। अब या तो शत्रु को मारकर प्रियतम से मिलन करेंगी अन्यथा प्रियतम के संग ही प्रयाण करेंगी ॥ १७ ॥ असंख्य वीरों का दल एकत्र कर अंगों पर आभूषण धारण किये। कृपाण बाँधकर वह रथ पर चढ़ी जिसे देखकर

चढ़ी रथ देव अदेव सभै बिरमाए । बीरी चबात कछू मुसकात सु मोतिन हार हिये उरझाए । अंग दुकूल फबै सिर फूल बिलोकि प्रभा दिव नाथ लजाए ।। १८ ।। ।। दोहरा ।। जोरि अनी गाड़े सुभट तह ते कियो पयान । पलक एक लागी नही तहाँ पहूचे आनि ।। १९ ।। ।। सवैया ।। आवत ही अति जुद्ध कर्यो तिन बाज करी रथ क्रोरिन कूटे । पाँसन पाँसि लए अरि केतिक सूरन के सिर केतिक टूटे । हेरि टरे कोऊ आनि अरे इक जूझि परे रन प्रान निखूटे । पौन समान छुटे त्रिय बान सभै दल बादल से चलि फूटे ।।२०।। ।। चौपई ।। मानवती जिह ओर सिधारे । एक तीर इक स्वार सँघारे । पखरे केते पदुम बिदारे । कोटिक करी खेत मै मारे ।। २१ ।। ।। दोहरा ।। सभ सखियाँ हरखति भईं कातर भई न कोइ । जुद्ध काज सभ ही चली काल करै सो होइ ।। २२ ।। ।। सवैया ।। चाबुक मारि तुरंग धसी रन काढि क्रिपान बडे भट घाए । पाँसन पाँसि लए अरि केतिक जीवत ही गहि जेल चलाए । चूरन कीन गदा गहिकै इक बानन सौ जमलोक

देव-दानव सभी चकित हो गए । वह बीड़ा चबा रही थी और उस मुस्कुराती हुई के हृदय पर मोतियों के हार उलझ रहे थे । उसके शरीर पर दुपट्टा सुशोभित हो रहा था और उसकी प्रभा को देखकर सूर्य भी लजा रहा था ।। १८ ।। ।। दोहा ।। घनघोर सेना लेकर वह वहाँ से चल पड़ी और पलक झपकते ही वहाँ आ पहुँची ।। १९ ।। ।। सवैया ।। आते ही उसने युद्ध किया और अनेकों हाथी-घोड़े और रथ कूट डाले । कितनों ही को पाशों में फाँस लिया और कितने ही शूरवीरों के सिर टूट गए । कोई भाग गया, कोई आकर डट गया और कोई प्राण-विहीन हो गया । उस स्त्री के बाण पवन गति से छूटने लगे और शत्रुदल बादलों के समान फटने लगे ।। २० ।। ।। चौपाई ।। मानमती जिस ओर जाती थी एक तीर से एक सवार मार गिराती थी । कई पदम घोड़े नष्ट कर दिए और असंख्य हाथी युद्धस्थल में मार डाले ।। २१ ।। ।। दोहा ।। सभी सखियाँ हर्षित हो गईं और कोई भी डरी नहीं । सभी युद्ध के लिए चल पड़ीं । अब तो जो ईश्वर चाहेगा वही होगा ।।२२।। ।। सवैया ।। घोड़ों पर चाबुक मारकर वह युद्ध में धंस गई और कृपाण निकालकर उसने अनेकों शूरवीरों को मार डाला । अनेकों को जीवित ही पाश में बाँधकर क़ैद कर लिया । कइयों को गदा से चूर कर

पठाए । जीति लए अरि एक अनेक निहारि रहे रन छाडि पराए ॥ २३ ॥ पाँसन पाँसि लए अरि केतिक काढि क्रिपान कई रिपु मारे । केते हने गुरजान भए भट (मू०ग्रं०६६८) केसन ते गहि एक पछारे । सूलन साँगन सैथिन के संग बानन सौ कई कोटि बिदारे । एक टरे इक जूझि मरे सुरलोक बरंगनि साथ बिहारे ॥२४॥ ॥ चौपई ॥ ऐसे जब अबला रन कीनो । ठाढे इंद्रदत्त सभ चीनो । पुनि सैना को आयसु दयो । ता कौ घेरि दसो दिसि लयो ॥ २५ ॥ ॥ दोहरा ॥ चहूँ ओर घेरत भए सभ सूरा रिसि खाइ । भाँति भाँति जूझत भए अधिक ह्रिदै करि चाइ ॥ २६ ॥ ॥ चौपई ॥ मारि मारि कहि बान चलाए । मानवती के सामुहि धाए । तब अबला सभ शस्त्र सँभारे । बीर अनेक मार ही डारे ॥ २७ ॥ लगे देह ते बान निकारे । तनि तनि वहै बैरियन मारे । जाके अंग घाइ द्रिड़ लागे । गिरि गिरि परे बहुरि नहि जागे ॥२८॥ भाँति भाँति सभ सुभट सँघारे । जियत बचे रन त्याग पधारे । इंद्रदत्त को प्रिथम सँघार्यो । उग्रदत्त को बहुरि

दिया और अनेकों को वाणों से यमलोक भेज दिया। अनेकों शत्रुओं को जीत लिया और अनेकों देखनेवाले युद्ध छोड़कर भाग खड़े हुए ॥ २३ ॥ कई को पाशों में बाँध लिया और कई शत्रुओं को कृपाण निकालकर मार डाला। कितने ही शूरवीरों को गुर्जों (गदाओं) से मार डाला और कइयों को केशों से पकड़कर पछाड़ दिया। शूलों, बर्छों, कृपाणों तथा बाणों के साथ अनेकों को मार डाला। कई भाग गए, कई जूझ मरे और कई अप्सराओं से विवाह कर सुरलोक चले गए ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब उस स्त्री ने इस प्रकार युद्ध किया तो इन्द्रदत्त नें खड़े होकर यह सब देखा। पुनः उसने सेना को आज्ञा दी और दसों दिशाओं से उसे घेर लिया ॥२५॥ ॥दोहा॥ सभी वीरों ने क्रुद्ध हो उसे चारों ओर से घेर लिया और उत्साहपूर्वक भिन्न-भिन्न प्रकार से जूझने लगे ॥ २६ ॥ ॥ चौपाई ॥ मार-मार चिल्लाते और बाण चलाते वे मानवती के सामने आ गए। तब उस स्त्री ने शस्त्र सँभालकर अनेक वीरों को मार डाला ॥ २७ ॥ अपनी देह में लगे बाणों को निकाला और तान-तानकर उन्हें शत्रुओं को मारा। जिसके भी अंग में घाव लगा, वह गिर पड़ा और पुनः नहीं जगा ॥ २८ ॥ इस प्रकार विभिन्न प्रकार से उसने दुष्टों को मार डाला और जो जीवित बचे थे वे युद्ध छोड़कर भाग

निहार्यो ।। २९ ।। ।। दोहरा ।। उग्रदत्त को जीति रन जियत बिलोक्यो जाइ । अति रानी हरखति भई राजा लियो उठाइ ।। ३० ।। ।। अड़िल्ल ।। रानी लयो उठाइ त्रिपति सुख पाइकै । अमित दए तिन दान सदन मै आइकै । घने घरन कौ घाइ शस्त्र पति घाइयो । हो राज कियो पुनि आनि हरख उपजाइयो ।। ३१ ।। ।। राजा बाच ।। ।। दोहरा ।। धंनि रानी तैं जीति रन हमको लयो उबारि । आज लगे चौदह भवन होइ न तोसी नारि ।। ३२ ।। धंन रानी तै मारि अरि मारि शत्रपति लीन । रन ते लयो उचाइ मुहि नयो जनम जनु दीन ।। ३३ ।। ।। चौपई ।। सुनु रानी तै मोहि जियारो । अब चेरो मै भयो तिहारो । अब यौं बसी मोर मन माही । तो सम और त्रिया कहूँ नाही ।। ३४ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ अठाईसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १२८ ।। २५२१ ।। अफजूं ।।

खड़े हुए । पहले उसने इन्द्रदत्त को मारा और पुनः उग्रदत्त को देखा ।।२९।। ।। दोहा ।। युद्ध जीतकर उग्रदत्त को देखा । रानी अत्यन्त प्रसन्न हुई और उसने राजा को उठा लिया ।। ३० ।। ।। अड़िल्ल ।। रानी ने सुखपूर्वक राजा को उठा लिया और वापस घर आकर अपार दान दिया । अनेकों घरों का नाश कर शत्रु राजा का नाश किया और प्रसन्नतापूर्वक पुनः राज किया ।। ३१ ।। ।। राजा उवाच ।। ।। दोहा ।। हे रानी ! तुम धन्य हो, तुमने युद्ध जीतकर मुझे बचा लिया । आज तक चौदह लोकों में तुम्हारी तरह की स्त्री कोई नहीं हुई होगी ।। ३२ ।। हे रानी ! तुम धन्य हो, तुमनें शत्रु को मारकर शत्रु के स्वामी राजा को भी मार डाला । मुझे युद्धस्थल से उठाकर तुमने नया जन्म दिया है ।। ३३ ।। ।। चौपाई ।। सुन रानी, तुमने मुझे जीवनदान दिया है, अब मैं तुम्हारा दास हो गया हूँ । अब यह बात मेरे मन में बस गई है कि तुम्हारे समान अन्य कोई स्त्री नहीं है ।। ३४ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ अट्ठाईसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १२८ ।। २५२१ ।। अफजू ।।

अथ इक सौ उनतीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ रावी नदि ऊपर बसै नारि साहिबा नाम । मिरजा के संग दोसती करत आठहूँ जाम ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ ता को दूलह ब्याहन आयो । यह मिरजा चित चिंत बढायो । याको जतन कौन सो कीजै । याते यह अबला हरि लीजै ॥ २ ॥ त्रियहूँ के जिय मै यो (मू०ग्रं०९९९) आई । प्यारो मित्र न छोर्यो जाई । याकौ ब्याहि कहा मैं करिहौ । याही सो जीहौ कै मरिहौ ॥ ३ ॥ मीत भोग तुमरे मैं रसी । पति त्रिय भाव जानि ग्रहि बसी । मेरो चित्त चोरि तै लीनो । ताते जात ब्याह नहि कीनो ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ साच कहत जिय की तुमै सुनिहौ मीत बनाइ । मुख माँगे बरु देत नहि घोल घुमाई माइ ॥५॥ ॥चौपई॥ अब मुहि मीत कहो का करौ । तोहि छाडि वाकौं नहि बरौ । मोकहु बाज प्रिशटि पर डारो । आपन लै करि संग सिधारो ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ जब लौ हमरे धाम नहि गए बराती आइ । तब लौ मुहि तैं बाज पै जारि लिजाइ तु

एक सौ उनतीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ रावी (इरावती) नदी पर साहिबाँ नामक स्त्री रहती थी, जिसकी मिर्ज़ा के साथ आठों प्रहर की दोस्ती थी ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसे उसका दूल्हा ब्याहने के लिए आ गया है, इस बात की चिन्ता मिर्ज़ा को सताने लगी । उसने सोचा कि क्या उपाय किया जाय जिससे इस स्त्री का हरण किया जा सके ॥ २ ॥ स्त्री के चित्त में भी यह आया कि प्यारे मित्र को छोड़ना असंभव है। मैं इसी के साथ विवाह करूँगी, इसी के साथ जीऊंगी और इसी के साथ मरूँगी ॥ ३ ॥ हे मित्र ! मैं तुम्हारे में अनुरक्त हूँ और पति-पत्नीभाव से अब तुम्हारे ही घर में बसी हूँ । तुमने मेरा चित्त चुरा लिया है जिससे अब मुझसे ब्याह नहीं करते बनता ॥४॥ ॥ दोहा ॥ हे मित्र ! मैं तुम्हें दिल की सच्ची बात कहती हूँ कि मैंने लाख बार माँ को समझाया पर वह मेरा मनचाहा वर मुझे देने को तैयार नहीं ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ अब हे मित्र ! तुम बताओ मैं क्या करूँ ? तुम्हें छोड़कर मैं उसका वरण नहीं करूँगी । मुझे घोड़े की पीठ पर बिठाओ और अपने साथ लेकर भाग जाओ ॥६॥ ॥ दोहा ॥ जब तक बरात हमारे घर पर न पहुँचे, मित्र !

जाइ ।। ७ ।। ।। सवैया ।। तेरे ही संग बिराज हो मीत मैं और करौगी कहा पति कै कै । तोहू कौ आजु बरौ न टरौ मरिहो नहि हाल हलाहल खैकै । नेहु बढाइ सु केल कमाइ सु देत तिनै अपनी त्रिय कै कै । वै दिन भूलि गए तुम को जिय हों कैसो लालन लाज लजै कै ।।८।। पीरी ह्वै जात घनी पछुतात बियाह की जो कोऊ बात सुनावै । पान सो पान गरोरत माननि दाँतन सों अँगुरीन चबावै । नारि नवाइ खनै पुहमी नख रेख लखै मन मै पछुतावै । प्यारी को पीय रुचै मिरजा परु ब्याहु कियो मन मै न सुहावै ।। ९ ।। ।। दोहरा ।। रुचिता रमन तुमरै रची और सुहात न मोहि । ब्याहि बराती जाइ हैं लाज न ऐहै तोहि ।। १० ।। ।। सवैया ।। नै सकि मोरि गए अनतै नहि जानत प्रीतम जीत रहैगो । प्यारी ही प्यारी पुकारत आरति बीथन मै बहु बार कहैगो । तो हमरै इनके दुहूँ बीच कहौं किह भाति सनेह रहैगो । कौन ही काज सु जीबों सखी जब प्रीति बध्यो निजु मीत दहैगो ।। ११ ।। ।। चौपई ।। यहै

तुम मुझे घोड़े पर कहीं ले चलो ।। ७ ।। ।। सवैया ।। हे मित्र ! मैं तुम्हारे ही साथ रहूँगी, भला अब मैं और पति अपनाकर क्या करूँगी ? तेरा ही वरण आज करूंगी नहीं तो ज़हर खाकर मर जाऊँगी । तुम मेरे साथ केलि-क्रीड़ा करके अब अपनी स्त्री को दूसरे को दे रहे हो । हे मेरे प्यारे मित्र ! तुम वे दिन क्या भूल गए हो ? मैं तो लज्जावश जीवित ही नहीं बचूंगी ।। ८ ।। यदि कोई मुझे ब्याह की बात कहता है तो पीड़ा और भी घनी हो जाती है । स्त्री हाथ से हाथ मरोड़ती है और दाँतों से अँगुली चबाती है । स्त्री तो गरदन झुकाकर धरती कुरेदती है और रेखाओं को देखकर मन में पछताती है । इस प्रियतमा को भी मिर्ज़ा प्रिय लग रहा है और दूसरे से विवाह उसे तनिक भी नहीं सुहाता ।। ९ ।। ।। दोहा ।। हे रमणीय ! मैं तो तुममें अनुरक्त हूँ; मुझे अन्य कोई अच्छा नहीं लगता । मुझे यदि बराती ब्याहकर ले जाएँगे तो क्या तुम्हें लज्जा नहीं आएगी ।।१०।। ।। सवैया ।। मेरे अन्यत्र जाने पर पता नहीं प्रियतम जीवित भी बचेगा । वह 'प्रिय-प्रिय' पुकारता गलो-कूचों में आर्त घूमेगा । तब भला मेरे और इसके बीच स्नेह-संबंध भला कैसे रहेगा । तब हे सखी ! मैं भला कौन काम के लिए जीवित रहूँगी, जब प्रीति में अनुरक्त मेरा मित्र सदैव जलता रहेगा ।। ११ ।। ।। चौपाई ।। उस मानिनी ने यही विचार किया और अपनी

माननी मंत्र बिचार्‌यो। बोलि सखी प्रति बचन उचार्‌यो। मिरजा साथ जाइ तुम कहियहु। आजु आनि साहिबाँ कौ गहियहु ॥१२॥ जब वह आइ ब्याहि करि लैहै। तुमरे डारि फूल सिर जैहै। मोरे गए कहो का करिहो। उर मै मारि कटारी मरिहो ॥ १३ ॥ ॥ दोहरा ॥ जौ हम सें लागी कछू तुमरी लगनि बनाइ। तौ मोको लै जाइयो आज निसा को आइ ॥ १४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ रंगवती इह भाँति जबै सुनि पाइयो। सकल (मू०ग्रं०१०००) पुरख कौ भेसत आपु बनाइयो। ह्वैकैं बाज अरूड़ि तबै तह कौ चली। हो लीनै सकल सुबेस सखी बीसक भली ॥ १५ ॥ ॥ चौपई ॥ चली सखी आवत तह भई। जह कछु सुधि मिरजा की लई। सखी सहित चलि सीस झुकायो। तोहि साहिबाँ बेग बुलायो ॥ १६ ॥ मिरजा सुनत बात चड़ि धायो। पलक न भई गाँव तह आयो। यह सुधि जबै साहिबाँ पाई। तुरतु एक तह सखी पठाई ॥ १७ ॥ ॥ दोहरा ॥ सुनो मित्र बिनु निसि भई ह्याँ न पहूचहु आइ। जिन कोऊ सोधि पछानको तिन प्रति कहै न जाइ ॥१८॥ ॥ चौपई ॥ बहुरि सखी तिह आनि जतायो।

सखी के प्रति यह कहा कि तुम मिर्ज़ा से कहो कि आज आकर साहिबाँ को ले जाओ ॥ १२ ॥ जब वे मुझे ब्याहकर ले जाएँगे और तुम्हारी डाली का फूल उनके सिर पर चढ़ेगा तो बताओ मेरे जाने के बाद तुम क्या करोगे? केवल कटारी हृदय में मारकर मर जाओगे ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ यदि तुम्हारा मुझसे तनिक भी प्रेम है तो आज रात मुझे आकर ले जाओ ॥ १४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ रंगवती (सखी) ने जब यह सुना तो पुरुष का वेश धारण किया। तब वह अश्व पर सवार होकर बीस के लगभग सखियों को साथ लेकर चल पड़ी ॥ १५ ॥ ॥ चौपाई ॥ सखियाँ चलीं और मिर्ज़ा के स्थान पर पहुँच उन्होंने उसकी सुधि ली। सखियों ने आदर से सिर झुकाया और उससे कहा कि तुझे साहिबाँ ने तुरन्त बुलाया है ॥ १६ ॥ मिर्ज़ा सुनते ही पवन पर सवार हो चला और पलक झपकते ही उस (साहिबाँ) के गाँव में आ पहुँचा। ज़ब साहिबाँ को यह पता चला तो उसने तुरन्त एक सखी को वहाँ भेजा ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ मित्र के बिना (जीवन में) रात हो गई है। वह अभी तक यहाँ नहीं पहुँच पाया है। उसे कोई पहचानकर उससे कहे ॥१८॥ ॥ चौपाई ॥ पुनः सखी ने भी उसे समझा दिया। जब सूर्यास्त हो गया

बैठि बाग मै दिवस बितायो । सूरज छप्यो रैनि जब भई ।
बाट गाँव ता के की लई ॥ १९ ॥ रैनि भई ता के तब गयो ।
डारत बाज प्रिशटि तिह भयो । हरि ता को देसौर सिधार्यो ।
जो पहुच्यो ता को सर मार्यो ॥ २० ॥ रैनि सकल ता को
लै गयो । उतरत चड़े दिवस के भयो । थो सुकुमार अधिक
तन हार्यो । और साहिबाँ साथ बिहार्यो ॥ २१ ॥ स्रमत
भयो तह कछु स्वै रहियो । तब लौ सभ समधिन सुनि लयो ।
चड़े तुरै सभ सूर रिसाए । बाँधे गोल तहाँ कह धाए ॥ २२ ॥
तब साहिबाँ द्रिग छोरि निहारा । हेरै चहूँ ओर असभारा ।
संग भाई दोऊ ताँहि निहारे । करुणा बहे नैन कजरारे ॥२३॥
जौ हमरो पति इने निहरिहै । दुहूँ बान दुहुअन कह हरिहै ।
ताते कछू जतन अब कीजै । जाते राखि भाइयन लीजै ॥२४॥
सोवत हुतो मीत न जगायो । जाँड भए तरकस अटकायो ।
और शस्त्र लै कहूँ दुराए । खोजे हुते जात नहि पाए ॥ २५ ॥
तब लौ आइ सूर सभ गए । मारो मार पुकारत भए । तब
मिरजा जू नैन उघारे । कहा गए हथियार हमारे ॥ २६ ॥

तो उसने उसके गाँव का रास्ता पकड़ा ॥ १९ ॥ रात होने पर वह उस (साहिबाँ) के पास गया और उसे घोड़े की पीठ पर डाल लिया । उसका हरण कर वह अन्य देश की ओर चल पड़ा और जिसने उसका पीछा किया उसको बाण से मार दिया ॥ २० ॥ वह सारी रात चलता रहा और दिन चढ़ने पर (घोड़े से) उतरा । एक तो वह सुकुमार था और दूसरा उसने साहिबाँ के साथ रमण भी किया था ॥ २१ ॥ वह थक गया और थोड़ा सो गया । इधर (साहिबाँ के) सभी संबंधियों को पता लग गया । वे सभी शूरवीर गोल बनाकर क्रुद्ध होकर उस ओर चल पड़े ॥ २२ ॥ तब साहिबाँ ने आँखें खोलकर देखा तो चारों ओर सवारों को पाया । उनके साथ उसने अपने दो भाई देखे जिन्हें देखकर उसके नयनों से करुणा का जल बह निकला ॥ २३ ॥ (उसनें सोचा कि) यदि मेरा पति इन्हें देखेगा तो दोनों को दो बाण मारकर मार देगा । इससे अब कुछ प्रयत्न किया जाय ताकि मेरे दोनों भाइयों की रक्षा हो सके ॥ २४ ॥ उसने सोते हुए मित्र (मिर्ज़ा) को नहीं जगाया और उसके तरकस को एक जंगली सेमल के वृक्ष (जंड) के साथ लटका दिया । अन्य शस्त्रों को भी छिपा दिया ताकि वे खोजने पर भी न मिलें ॥ २५ ॥ तब तक सभी वीर आ गए और 'मार-मार' पुकारने लगे । तब मिर्ज़ा ने आँखें खोलीं और पूछा कि मेरे शस्त्र कहाँ गए हैं ? ॥२६॥

भौंडी राँड कह्यो क्या करियो। तरकस टाँगि जाँड पै धरियो। पहुचे आनि पखरिया भारे। कहाँ धरे तैं शस्त्र हमारे ॥ २७ ॥ शस्त्रन बिना कहो किह मारो। कहु नारी क्या मंत्र बिचारो। साथी कोऊ संग मैं नाही। चिंता अधिक इहै चित माही ॥ २८ ॥ हेरि रह्यो आयुध नहि पाए। तब लग घेरि दुबहिया आए। त्रिय को बाज प्रिशटि पर डार्यो। (मू०ग्रं०१००१) नगर आपने ओर सिधार्यो ॥ २९ ॥ बिनु आयुध भजि चल्यो निहार्यो। निरभै ह्वै सभहूँन बिचार्यो। इन दुहूँअन कौ जान न दैहैं। याकौ मारि आजु ही लैहैं ॥ ३० ॥ कोऊ पकरि सैहथी धायो। किनूँ काटि कर खड़ग नचायो। किनूँ मारि बानन की करी। पाग उतरि मिरजा की परी ॥ ३१ ॥ पाग उतरि ता की जब गई। मूँडी होति नाँग तिह भई। सुंदर अधिक केस तिह छूटे। जबही सूर जुद्ध कह जूटे ॥ ३२ ॥ किनी बिसिख कसि ताहि प्रहार्यो। किनहूँ खड़ग काढि तिह मार्यो। किनहूँ वारि गुरज को कीनो। खेत मारि मिरजा कौ लीनो ॥ ३३ ॥ प्रिथम नास मिरजा कौ करियो। बहुरौ

हे नीच स्त्री ! यह तूने क्या किया कि तरकस को सेमल के वृक्ष पर धर दिया। अब भारी घुड़सवार आ पहुँचे हैं, तूने मेरे शस्त्र कहाँ रख दिए हैं ? ॥२७॥ हे स्त्री ! कुछ बताओ, अव मैं शस्त्रों के विना कैसे किसे मारूँ ? मैं अत्यधिक चिंतित हूँ कि मेरा कोई भी साथी मेरे साथ नहीं है ॥ २८ ॥ उसके ढूँढ़ने पर शस्त्र कहीं नहीं मिले। तब तक बलशाली भुजाओंवाले वीर आ धमके। स्त्री को उस (मिर्ज़ा) ने घोड़े पर डाला और अपने नगर की ओर दौड़ पड़ा ॥ २९ ॥ सबने निर्भय होकर देखा कि शस्त्र-विहीन मिर्ज़ा भागा जा रहा है। उन्होंने सोचा कि इन दोनों को आज जाने नहीं दिया जायगा और इसको तो आज मार ही डाला जायगा ॥ ३० ॥ कोई कृपाण लेकर दौड़ा और किसी ने खड़ग निकालकर नचाया। किसी ने बाणों से मारा और इस प्रकार मिर्ज़ा की पगड़ी उतर गई ॥ ३१ ॥ जब उसकी पगड़ी उतर गई तो उसका सिर नंगा हो गया। जब शूरवीर उससे युद्ध के लिए जुटे तो उसकी सुन्दर केशराशि छिटक गई ॥ ३२ ॥ किसी ने बाण से और किसी ने खड़ग निकालकर उस पर वार किया। किसी ने गदा से वार किया और खेतों में ही मिर्ज़ा को मारकर पटक दिया ॥ ३३ ॥ पहले

जाइ साहिबहि धरियो । बैठे तिसी बिरछ तर आई । जह
तिन दुहूँअन रैनि बिताई ।। ३४ ।। ।। दोहरा ।। कमर भ्रात
के की तुरतु जमधर लई निकारि । कियो पयानौ मीत पहि
उदर कटारी मारि ।। ३५ ।। ।। चौपई ।। प्रथम मीत तह ते
निकरायो । बहुरि बिरछ तर आनि सुवायो । भ्रातन मोह
बहुरि लखि कियो । शस्त्रन टाँगि जाँड पर दियो ।। ३६ ।।
प्रथमैं रूप हेरि तिह बिगसी । निजु पति कै ता कौ लै
निकसी । भ्रातन हेरि मोह मन आयो । निजु प्रीतम को
नास करायो ।। ३७ ।। वह त्रिय पीर पिया के बरी । आपहु
मारि कटारी मरी । जो त्रिय चरित चहै सु बनावै । देव
अदेव भेव नहि पावै ।। ३८ ।। ।। दोहरा ।। प्रथम तहाँ ते
काढिकै पुनि निजु मीत हनाइ । पुनि जमधर उर हनि मरी
भ्रात मोह के भाइ ।। ३९ ।। भूत भविक्ख भवान मै सुनियत
सदा बनाइ । चतुरि चरित्रन कौ सदा भेव न पायो
जाइ ।। ४० ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ उनतीसवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ।। १२९ ।। २५६१ ।। अफजूं ।।

उन्होंने मिर्ज़ा को मारा और फिर जाकर साहिबाँ को धर पकड़ा । (घोड़े पर बैठी) वह उसी वृक्ष के तले आई जहाँ उन्होंने रात्रि व्यतीत की थी ।।३४।। ।। दोहा ।। तब उसने भाई की कमर से तुरन्त जमदाड़ कृपाण निकाल ली । अपने पेट में कटारी मारकर अपने मित्र (मिर्ज़ा) के पास चल पड़ी ।। ३५ ।। ।। चौपाई ।। पहले मित्र को वहाँ से निकाला और इस वृक्ष के नीचे सुला दिया । फिर भाइयों का मोह किया और शस्त्रों को जंड नामक वृक्ष पर टाँग दिया ।। ३६ ।। पहले तो रूप-सौंदर्य पर मोहित हो उठी और उसे अपना पति मानकर उसके साथ निकल पड़ी । पुनः भाइयों को देखकर मोह जगा और अपने प्रियतम का नाश करवा दिया ।। ३७ ।। उस स्त्री ने अपने प्रियतम का वरण किया और कटारी मारकर स्वयं भी मर गई । स्त्री जैसा चाहे चरित्र बना लेती है और देव-दानव भी इसके रहस्य को नहीं समझ सकते हैं ।। ३८ ।। ।। दोहा ।। पहले उसे निकाला और पुनः अपने मित्र को मरवा दिया । पुनः भाइयों के मोह के कारण स्वयं भी कटार मारकर मर गई ।। ३९ ।। भूत-भविष्य और वर्तमान में ये बातें सदा सुनी जायँगी कि चतुर स्त्रियों के चरित्रों के रहस्य को नहीं जाना जा सकता है ।। ४० ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद के एक सौ उनतीसवें
चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १२९ ।। २५६१।। अफजू ।।

अथ इक सौ तीसवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। सुमतिकुअरि रानी इक सुनी । बेद पुरान बिखै अति गुनी । शिव की अधिक उपाशक रहै । हर हर सदा बक्त्र ते कहै ।। १ ।। बिशन सिख्य राजा जू रहई । हरि हरि सदा बक्त्र ते कहई । शिव कौ नैक न मन मै ल्यावै । सदा क्रिशन के गीतन गावै ।।२।। रानी सो इह भाँति उचारै । तै शिव शिव काहे कौ बिचारै । चमतकार (मू०ग्रं०१००२) या मै कछु नाही । यौ आवत मोरे मन माही ।। ३ ।। चमतकार शिव तुमैं बताऊँ । तो तुम को इह मारग ल्याऊँ । तै शिव को कछु चरित न जानो । धन प्रसाद ते भयो दिवानो ।। ४ ।। ।। छपै छंद ।। प्रथम त्रिपुर कौ घाइ रुद्र त्रिपुरारि कहायो । गंग जटन मै धारि गंगधर नाम सुहायो । जटाजूट कौ धारि जटी नामा सद सोहै । खग म्रिग जच्छ भुजंग असुर सुर नर मुनि मोहै । करी पारबती नारि पारबतीस्वर सभ जाने । कहाँ मूढ़ तैं राव भेद ता को पहिचाने ।। ५ ।।

एक सौ तीसवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। सुमतिकुमारी नामक एक रानी थी, जो वेद-पुराण की मर्मज्ञ थी। वह शिव की अत्यधिक उपासक थी और सदैव मुख से शिव-शिव पुकारती रहती थी ।। १ ।। राजा विष्णु का शिष्य था और सदैव मुँह से हरि-हरि कहता रहता था । शिव का वह कभी ध्यान भी नहीं करता था और सदैव कृष्ण के गुण गाता रहता था ।। २ ।। रानी से भी यही कहता था कि तुम शिव का विचार बार-बार क्यों करती हो ? मेरा मन तो कहता है, इसमें कोई चमत्कार नहीं है ।। ३ ।। तुम्हें शिव का चमत्कार दिखाऊँ, तब तुम्हें इस मार्ग पर ले आऊँ। तुम शिव के चरित्र को नहीं जानते हो और केवल धन तथा महल के पीछे दीवाने हो ।। ४ ।। ।। छप्पय छंद ।। पहले त्रिपुर नामक दैत्य को मारकर यह त्रिपुरारि कहलाया । पुनः जटाओं में गंगा धारण कर यह गंगधर के नाम से सुशोभित हुआ । जटाओं को धारण करने से जटी नाम से यह सुशोभित है और पशु-पक्षी, मृग, यक्ष, भुजंग, सुर-असुर, नर-नारी एवं मुनियों का मन मोहता है । पार्वती का वरण करने से इसे पार्वतीश्वर भी कहते हैं, परन्तु हे मूढ़ राजन् ! तुम इस भेद को नहीं पहचान सकते हो ।। ५ ।। ।। दोहा ।। पहले तो तुम्हें शिव का चमत्कार

।। दोहरा ।। चमतकार तो कौ तुरतु प्रथमै देऊँ दिखाइ । बहुरि सिख्य शिव को करौ या मारग मै ल्याइ ।। ६ ।। ।। चौपई ।। सोइ गयो तब पतिहि निहार्‍यो । तुरतु खाट ते पकरि पछार्‍यो । शिव शिव शिव आपन तब कीनो । कछू राव यह भेद न चीनो ।। ७ ।। किन धैकै मोकौ पटकायो । रानी मै यह कछू न पायो । सकल ब्रिथा तुम हमै सुनावो । हमरे चित को ताप मिटावो ।। ८ ।। कछू रुद्र तुम बचन उचारे । तब ऊपर शिव कुप्यो तिहारे । चमतकार यह तुमैं दिखायो । पटकि खाट ते भूमि गिरायो ।। ९ ।। सुनत बचन मूरख अति डरियो । ता त्रिय के पाइन उठि परियो । बिशन चाप अब ते मैं त्याग्यो । शिव जू के पाइन सौं लाग्यो ।।१०।। चमतकार शिव मोहि दिखार्‍यो । ताँते चरन आपने डार्‍यो । अब चेरो ता को मै भयो । बिशन चाप तब ते तजि दयो ।। ११ ।। ।। दोहरा ।। पलका पर ते रानियहि सोत न्रिपति को डारि । सिख्य तुरतु शिव को कियो ऐसो चरित सुधारि ।। १२ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सो तीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १३० ।। २५७३ ।। अफजूं ।।

दिखाती हूँ, पुनः तुम्हें इस मार्ग में ले आऊँगी ।।६।। ।। चौपाई ।। तब उसने सोये हुए पति को देखा और तुरन्त उसे पलंग से पकड़कर पछाड़ फेंका । तब स्वयं उसने शिव-शिव कहना शुरू कर दिया परन्तु राजा इस रहस्य को समझ नहीं सका ।। ७ ।। मुझे किसने पकड़कर फेंका है, हे रानी ! मैं यह जान नहीं सका । रानी ने कहा कि अपनी समस्त व्यथा तुम मुझसे कहो और अपने मन का दुख दूर करो ।। ८ ।। तुमने रुद्र को कुछ अपशब्द कहे हैं, इसी से शिव तुम्हारे ऊपर कुपित हैं । तुम्हें उसनें यह चमत्कार दिखाया है और पटककर पलंग से नीचे फेंक दिया है ।।९।। यह सुनकर मूर्ख (राजा) अत्यन्त डर गया और स्त्री के पाँवों पर आ गिरा । वह कहने लगा कि आज से मैंने विष्णु के जप का त्याग किया है और अब मैं शिव के चरणों में आ लगा हूँ ।। १० ।। शिव ने मुझे चमत्कार दिखाया है और इसी से मैं उसकी शरण में आया हूँ । अब मैं तुम्हारा चेला हो गया हूँ और मैंने तत्काल विष्णुजाप छोड़ दिया है ।। ११ ।। ।। दोहा ।। रानी ने सोये राजा को पलंग से गिराकर उसे अपने प्रपंच द्वारा तुरन्त शिव का शिष्य बना लिया ।। १२ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ तीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १३० ।। २५७३ ।। अफजू ।।

अथ इक सौ इकत्तीह चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ परबतेस राजा इक भारो। चंद्रबंस चंद्रोतुजियारो। भागमती ता की बर नारी। चंद्र लई जाते उजियारी ॥ १ ॥ ॥ दोहरा ॥ सुना धाम ता को बडो धुजा रही फहराइ। साच स्वरग सो जानियो धौलर लख्यो न जाइ ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ देबिदत्त रानियहि निहार्यो। जनुक रूप की रासि बिचार्यो। पठै सहचरी बोलि सु लीनो। कामकेल तासौ अति कीनो ॥ ३ ॥ बीरदेव राजा सुनि पावा। कोऊ (मू०ग्रं०१००३) जार हमारे आवा। अधिक कोप न्रिप खड़ग उचायो। पलक न बीती तह चलि आयो ॥ ४ ॥ भागवती जब न्रिप लखि लीनो। ताहि चढ़ाइ महल पर दीनो। टरि आगे निजु पति कौ लियो। बहुत प्रकार समागम कियो ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ रूँई सौ सारो सदन एक तुरतु भरि लीन। आजु चोर इक मै गह्यो यौ न्रिप सौ कहि दीन ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ कहो तु तुम ता कौ गहि ल्याऊँ। आनि राव जू तुमैं दिखाऊँ। जो मुहि कहो ताहि सोऊ कीजै।

एक सौ इकतीसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ पर्वतेश एक महान् चन्द्रवंशी राजा था जिसका तेज चन्द्रमा से भी बढ़कर था। उसकी रानी भागमती थी और ऐसा लगता था मानों चन्द्रमा ने भी प्रकाश उससे उधार लिया हो ॥१॥ ॥दोहा॥ उसका बड़ा महल सुनने में आता था, जिस पर ध्वजा फहरा रही थी। वह स्वर्ग के समान लगता था और उस महल को देख पाना असंभव था ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ देवीदत्त को रानी नें देखा और उसे ऐसा लगा मानों उसनें रूपराशि देखी हो। उसने सखी भेजकर उसे बुलाया और उससे केलिक्रीड़ा की ॥ ३ ॥ वीरदेव राजा ने सुना कि कोई प्रेमी हमारे यहाँ आया है। राजा ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर खड़ग निकाला और तुरन्त वहाँ चला आया ॥४॥ भागमती ने जब राजा को देखा तो उसे (देवीदत्त को) महल के ऊपर चढ़ा दिया। आगे बढ़ रास्ता रोक उसनें अपनें पति का स्वागत किया और विभिन्न प्रकार से उसके साथ रतिक्रीड़ा की ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ एक कमरा उसने रुई से तुरन्त भर लिया और राजा से कहा कि आज मैंने एक चोर पकड़ा है ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ हे राजन्! अगर कहो तो मैं उसे

डारि महल ऊपर ते दीजै ।। ७ ।। प्रथम त्रिपहि इह भांति जताई । बहुरो बाँधि जार कौ ल्याई । आपु भोग जिह साथ कमायो । बहुरि राव कौ आन दिखायो ।। ८ ।। रानी हेरि ताँहि रिसि भरी । सखियन कौ आग्या यौ करी । धौलर ते याकौ तुम डारो । आइसु राजा को न निहारो ।। ९ ।। वै सखिया ता कौ लै गई । चीनत सदन सु आगे भई । सकल राव को शोक निवार्यो । रूँई पैं ता कौ गहि डार्यो ।।१०।। राजै लखी दुशट इह घायो । तिन तनि तनिक खेद नहि पायो । उठि तह ते निजु धाम सिधायो । इह चरित्र निजु जार लँघायो ।। ११ ।। पुनि राजे इह भाँति उचार्यो । इह जो चोर धाम ते डार्यो । मोहि आनि वहु म्रितक दिखैयै । आग्या मोहि मानि यह लैयै ।। १२ ।। जो नर ह्याँ ते मिलै बगाई । टूक टूक ह्वैकै सो जाई । तिल तिल भयो द्रिशटि नहि आवै । ता कौ कौन खोज करि ल्यावै ।। १३ ।। तिल तिल पाइ अंग तिह भए । गीध काक आमिख भखि गए । ता को अंग द्रिशटि नहि आवै । कौन बियो ता कौ लै आवै ।। १४ ।। ।। भुजंग छंद ।। दियो डारि जाकौ महाराज

पकड़ लाऊँ और तुम्हें दिखाऊँ। तुम जो कहो मैं वही उसके साथ करूँ और उसे महल से नीचे धकेल दूँ ।। ७ ।। पहले राजा को यह कहा और फिर अपने मित्र को बाँधकर ले आई। जिसके साथ स्वयं रमण किया था उसे राजा को दिखाया ।। ८ ।। रानी ने क्रोधपूर्वक उसकी तरफ़ देखकर सखियों से कहा कि इसे तुम महल से गिरा दो और राजा की आज्ञा की प्रतीक्षा मत करो ।। ९ ।। वे सखियाँ उसे ले गईं। वे रुई वाले कमरे को जानती थीं। उन्होंने राजा के शोक का निवारण किया और उस (मित्र) को रुई पर पटक दिया ।। १० ।। राजा ने समझा कि दुष्ट मारा गया है। उसे तनिक भी खेद नहीं हुआ। वह उठकर अपने महल में आ गया और इस प्रकार इस प्रपंच से उस (स्त्री) ने अपने मित्र को पार कर दिया ।। ११ ।। पुनः राजा ने कहा कि यह जो चोर महल से फेंका गया है, मुझे वह मृतक रूप में दिखाओ और मेरी आज्ञा का पालन करो ।। १२ ।। जो व्यक्ति यहाँ से गिरेगा वह तो खंड-खंड हो जाएगा। वह तो तिल-तिल हो गया होगा। अब उसे कौन खोजकर ला सकेगा ।। १३ ।। उसे तो गिद्ध, कौए आदि खा गए होंगे। उसका तो अब कोई अंग तक दिखाई नहीं देगा, इसलिए, अन्य कौन अब उसे ला पाएगा ।। १४ ।। ।। भुजंग छंद ।। हे महाराज ! जिसे ऐसे फेंका

ऐसे। लह्यो जाइ ता कौ कछू अंग कैसे। कई टूक ह्वैकै पर्‍यो कहूँ जाई। गए गीध औ काक ता कौ चबाई ॥ १५ ॥ ॥ चौपई ॥ यौ सुनि मोनि त्रिपति मुख धरी। द्रिशटि राज कारज पर करी। रानी अपनो मीत बचायो। वा पसु कौ यौ चरित्र दिखायो ॥ १६ ॥ १ ॥ (मू०ग्रं०१००४)

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सो इकत्तीह चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १३१ ॥ २५८२ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ बतीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ एक पलाऊ देस सुनीजै। मंगलदेव सु राव भनीजै। सुघरिकुअरि ता की बर नारी। जनुक जगत की जोति सवारी ॥१॥ गरबी राइ कुअरि तिह लह्यो। ता की मैन देह कौ दह्यो। अमित रूप ता को लखि अटकी। बिसरि गई सभही सुधि घट की ॥ २ ॥ ॥ सोरठा ॥ पठै सहचरी ताहि लीनो सदन बुलाइकै। अधिक ह्रिदै हरखाइ कामकेल तासौ कियो ॥३॥ ॥ दोहरा ॥ भाँति भाँति आसन करे चुंबन करे बनाइ। चिमटि चिमटि तासौ रमैं छिनिक न

गया हो उसका अब कोई अंग कैसे दिखाई देगा। वह तो कई टुकड़े होकर कहीं गिरा होगा और उसको तो गिद्ध-कौए चबा गए होंगे ॥ १५ ॥ ॥ चौपाई ॥ यह सुनकर राजा चुप रह गया और अब तक उसका ध्यान राज-काज की ओर मुड़ा। रानी ने अपना मित्र उस पशु (बुद्धि) को यह चरित्र दिखाकर बचा लिया ॥ १६ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद के एक सौ इकतीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १३१ ॥ २५८२ ॥ अफजू ॥

एक सौ बत्तीसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ पलामू नामक एक प्रदेश सुना जाता है, वहाँ का राजा मंगलदेव के नाम से पुकारा जाता था। सुघरकुमारी उसकी सुन्दर स्त्री मानों जगत का प्रकाश थी ॥ १ ॥ उसने गरबीराय को देखा और कामदग्ध हो उठी। उसके सुन्दर रूप में वह अटक गई और उसे अपनें तन की सुधि भूल गयी ॥२॥ ॥ सोरठा ॥ उसे सखो भेजकर उसने बुलाया और अत्यधिक प्रसन्न होकर केलिक्रीड़ा की ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ उसनै उसके साथ विभिन्न

छोर्‍यो जाइ ।। ४ ।। ।। चौपई ।। मीत अधिक चित भीतर भायो । राजा कौ मन ते बिसरायो । मन बच क्रम ताही की भई । परत्रिय ते निजु त्रिय ह्वै गई ।। ५ ।। निसु दिन रहत धाम तिह परी । जनु तिह जीति सुयंबर बरी । राजा के त्रिय निकट न आवै । ता के संग अति केल कमावै ।। ६ ।। चुंबन और अलिंगन देई । भाँति भाँति कै आसन लेई । हरख ठानि त्रिय केल कमावै । काम रीति की प्रीति जतावै ।। ७ ।। किनी राव सौ भेद जतावा । कोऊ जार तिहारे आवा । राजा तव त्रिय दयो भुलाई । जार साथ अति प्रीति लगाई ।। ८ ।। ।। दोहरा ।। तैं मंत्रन के बसि भए छोरी सकल सियान । उत रानी इक जार सौ रमत रहै रुचि मान ।। ९ ।। ।। चौपई ।। सकल कथा स्रवनन न्रिप करी । काढि क्रिपान हाथ मै धरी । राजा ग्रहि रानी के आए । रखवारे चहूँ ओर बठाए ।। १० ।। सखी एक लखि भेद सु पायो । सुघरिकुअरि सौं जाइ जतायो । पौढी कहा मीत सौं प्यारी । तो पर करी राव रखवारी ।। ११ ।। ताते जतन

प्रकार के आसन और चुंबन किए और तनिक भी छोड़े बिना उसके साथ चिमट-चिमटकर रमण किया ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। वह मित्र उसे भा गया और उसने राजा को विस्मृत कर दिया । वह मन-वचन-कर्म से उसी की हो गई और पर-स्त्री से निज स्त्री हो गई ।। ५ ।। अब वह रात-दिन उसके घर पर पड़ी रहती थी और ऐसा लगता था मानों उसने इसे स्वयंबर में वरण किया हो । रानी अब राजा के पास भी नहीं आती थी और उसी के साथ केलिक्रीड़ा में लीन रहती थी ।। ६ ।। वह भाँति-भाँति के आसनों से चुंबन और आलिंगनों का आदान-प्रदान करती थी । अत्यन्त प्रसन्न हो वह स्त्री केलिक्रीड़ा करती थी और कामकला के माध्यम से प्रेम जताती थी ।। ७ ।। किसी ने राजा से रहस्य कह दिया कि कोई यार तुम्हारे यहाँ आता है । राजा, तुम्हें तो स्त्री ने भुला दिया है और अपने यार के साथ रत रहती है ।। ८ ।। ।। दोहा ।। तुमने तो मंत्रों के वशीभूत होकर चातुर्य का पूर्व त्याग कर दिया है और उधर रानी अपने प्रेमी के साथ रुचिपूर्वक रमण करती है ।।९।। ।। चौपाई ।। राजा ने सारी बात सुनकर कृपाण निकालकर हाथ में पकड़ ली । राजा रानी के महल में आया और रक्षकों को उसने चारों ओर बैठा दिया ।।१०।। रानी की एक सखी ने भेद समझ लिया और सुघरकुमारी को जा बताया कि हे रानी ! तुम कहाँ मित्र के साथ अनुरक्त हो, राजा ने

अबै कछु कीजै । प्रान राखि प्रीतम को लीजै । जो यह हाथ राव के ऐहै । तोहि सहित जमधाम पठैहै ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ बहुत देग अरु देगचे रानी लए मँगाइ । दुगध डारि पावक बिखै सभ ही दए चड़ाइ ॥१३॥ ॥ चौपई ॥ एक देग मै तिह बैठार्‍यो । ताँ पर एक तवा कौ डार्‍यो । मखनी लै घेइया तिह करियो । तपत मिटाइ तवन पर धरियो ॥ १४ ॥ ॥ दोहरा ॥ तवा सु जीरकै तासु पैं घेइया धर्‍यो बनाइ । लीपि म्रितका सौ लियो (मू०ग्रं०१००५) दीनी आगि जराइ ॥ १५ ॥ खीर भरी जह देग थी तही धरी लै सोइ । दुगध फेन सो जानियै जार न चीनै कोइ ॥ १६ ॥ ॥ चौपई ॥ टरि आवत राजा गै लीनो । भाँति भाँति सौ आदरु कीनो । नए महल जे हमैं सवारे । ते तुम राइ द्रिशटि नहि डारे ॥ १७ ॥ ॥ दोहरा ॥ टरि आगे पति कौ लियो रही चरन सौ लागि । बहुत दिनन आए त्रिपति धन्य हमारे भाग ॥ १८ ॥ ॥ चौपई ॥ जो चित चित रावजू आयो । सो आगे त्रिय भाखि सुनायो । मै सभ सदन द्रिशटि मै कैहो । जार पकरि जमधाम पठैहौ ॥ १९ ॥ सकल सदन

तो चारों ओर रक्षक बैठा दिए हैं ॥ ११ ॥ इसलिए अब कुछ यत्न करो और प्रियतम के प्राण बचा लो। यदि वह राजा के हाथ लग गया तो तुम्हारे समेत यमलोक भेज दिया जायगा ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ रानी ने देग़ और देग़चे बहुत से मँगा लिये और उनमें दूध डालकर उनको आग पर चढ़ा दिया ॥१३॥ ॥ चौपाई ॥ एक देग़ में उसे (अपने मित्र को) बिठाया और उस पर एक तवा डाल दिया। उसे मक्खन लगाकर चिकना कर दिया और ठंडा करके उस पर रख दिया ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ तवे को चिकना करके मिट्टी से लीपकर आग जला दी ॥ १५ ॥ जहाँ खीर से भरी देग़ थी वहीं इसे भी रख दिया। वह दूध की झाग के समान लगता था, परन्तु वह मित्र अदृश्य था ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ आगे होकर राजा का स्वागत किया और उसे भाँति-भाँति से आदर किया। राजा से कहा कि इन नये महलों पर तो आपने कभी नज़र ही नहीं डाली ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ आगे बढ़कर वह पति को लेकर उसके चरणों से लिपट गई और कहने लगी कि आप बहुत दिनों के बाद मेरे पास आए हैं, मेरे धन्य भाग हैं ॥ १८ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजा जो मन में सोचकर आया था वह उसने रानी को सुना दिया। उसने कहा कि मैं सारा घर स्वयं देखूँगा और यार को पकड़कर यमलोक भेजूँगा ॥ १९ ॥

फिरि त्रिपहि दिखाए । रह्यो बिलोकि चोर नहि पाए । जहाँ देग मै जारहि डार्यो । तही आनि पति कौ बैठार्यो ।। २० ।। जब राजा आवत सुनि पाए । मोद भयो मन शोक मिटाए । यह सभ खान पक्वाए तबही । भेटत सुने पियारे जबही ।।२१।। तवन देग को ढापनुतार्यो । प्रथम दूध प्यारे कौ प्यार्यो । बहुरि बाँटि लोगन कौ दीनो । मूरख राव भेद नहि चीनो ।। २२ ।। एक देग अतिथान पठाई । दूजी बैरागिन के द्याई । तीजी तेग संन्यासन दई । चौथी ब्रहमचारियन लई ।। २३ ।। पंचई देग चाकरन दीनी । छटई देग पियादन लीनी । देग सपतई ताँहि डरायो । सखी संग दै घरु पहुचायो ।। २४ ।। देखत त्रिप के जार निकार्यो । मूड़ राव कछु सो न बिचार्यो । अधिक चित्त रानी मै दीनौ । मोरे हितन बधावौ कीनौ ।।२५।। ।। दोहरा ।। मुखु दिसि जड़ देखत रह्यो त्रिय सों नेहुपजाइ । देग डारि रानी तुरतु जारहि दयो लँघाइ ।। २६ ।। ।। चौपई ।। मूरख राव बाइ मुख रह्यो । देखत रह्यो जार नहि गह्यो । पाहरून

उसने घूमकर सारा घर राजा को दिखाया पर देखने पर भी चोर का कहीं पता नहीं चला । जिस देग़ में मित्र को डाला था वहीं आकर पति को बैठा-दिया ।। २० ।। वह कहने लगी कि जब मैंने राजा के आने की ख़बर सुनी, तभी मैं शोक को त्यागकर मन में प्रसन्न हो उठी । यह भोजन मैंने तभी बनवाए हैं, क्योंकि मुझे पता था कि मेरा प्रियतम आज मुझे अपनाएगा ।। २१ ।। उस देग़ का ढक्कन उतारा और ऊपर से दूध अपने प्रिय को पिलाया । पुनः अन्य सबको भी बाँट दिया और वह मूर्ख राजा रहस्य को नहीं समझ सका ।। २२ ।। एक देग़ उसने अतिथियों को भेज दी और दूसरी बैरागियों को दिलवा दी । तीसरी संन्यासियों को और चौथी ब्रह्मचारियों को दे दी ।। २३ ।। पाँचवीं देग़ सेवकों को और छठवीं प्यादों को दे दी । सातवीं देग़ सखियों को दे दी और इस प्रकार उसे घर पहुँचा दिया ।। २४ ।। राजा के देखते-देखते प्रेमी को निकाल दिया और मूर्ख राजा कुछ भी न बिचार सका । वह यह सोचकर कि इसने मेरा मंगल किया है, उसमें और अधिक अनुरक्त हो गया ।। २५ ।। ।। दोहा ।। स्त्री से प्रेम करते हुए वह मूर्ख उसका मुख ही देखता रहा और देग़ में डालकर रानी ने तुरन्त यार को पार दिया ।। २६ ।। ।। चौपाई ।। मूर्ख राजा मुँह फाड़कर देखता रहा और प्रेमी निकल गया; उसे पकड़ नहीं सका । पहरेदारों को जो खीर

जो खीर पठाई । खान लगे ग्रीवी निहुराई ॥ २७ ॥ जियत जार त्रिय घर पहुचायो । पाहरून राजा लखि पायो । तिह पहुचाइ सखी जब आई । तब रानी अति ही हरखाई ॥ २८ ॥ बहुरि राव रानी रति कीनी । चित की बात ताहि कहि दीनी । किनहूँ भ्रम मोरे चित पायो । ताते मैं देखन ग्रहि आयो ॥ २९ ॥ पुनि रानी यह भाँति उचारो । सुनो न्रिपति तुम बचन हमारो । जिन तुहि कह्यो सु (मू०ग्रं०१००६) मुहि कहि दीजै । ना तर आस न हमरी कीजै ॥ ३० ॥ जब रानी इह भाँति सुनाई । तब राजे सो सखी बताई । जो तुम कह्यो साची पहुचावो । ना तर धाम म्रितु को जावो ॥ ३१ ॥ रानिन को कोऊ दोसु लगावै । जिन कौ जगत सीस निहुरावै । झूठी सखी जानि बध कीनो । मूरख राव भेद नहि चीनो ॥ ३२ ॥ ॥ दोहरा ॥ राजा कौ करि बसि लियो दीनो जार निकारि । सखियन मै साची भई तौनै सखी सँघारि ॥ ३३ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बतीसवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ १३२ ॥ २६२२ ॥ अफजूं ॥

भेजी वे गर्दन झुकाकर खाने लगे ॥ २७ ॥ अपने प्रेमी को जीवित उस स्त्री ने घर पहुँचा दिया, जिसे न तो राजा और न ही पहरेदार देख पाए । उसे पहुँचाकर जब सखियाँ आ गईं तो रानी मन में अत्यन्त प्रसन्न हो उठी ॥ २८ ॥ पुनः राजा ने रानी से रतिक्रीड़ा की और अपने मन की बात उससे कह दी कि किसी ने मुझे भ्रम में डाल दिया था, इसीलिए मैं तुम्हारे महल में देखने के लिए आया था ॥ २९ ॥ तब रानी ने कहा कि हे राजन् ! सुनो; जिसने तुम्हें बताया है उसके बारे में मुझे बताओ, नहीं तो मेरी आशा छोड़ दो ॥ ३० ॥ जब रानी ने यह कहा तो राजा ने उस सखी का नाम बता दिया । जो तुमने कहा है मैं उसे सत्य मानती हूँ और यदि सत्य न मानूँ तो मृत्यु को प्राप्त होऊँ ॥ ३१ ॥ भला रानी पर भी कोई आरोप लगा सकता है, जिसके सामने सारा संसार सिर झुकाता है । उस सखी को झूठी समझकर उसका वध कर दिया और यह बात वह मूर्ख राजा समझ नहीं सका ॥ ३२ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा को उसने वश में कर लिया और प्रेमी को निकाल दिया । इधर सखी को मारकर अन्य सखियों में भी सच्ची हो गई ॥ ३३ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ बत्तीसवें
चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १३२ ॥ २६२२ ॥ अफजू ॥

अथ इक सौ तेतीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ हुगलीबंदर को हुतो हिंमतसिंघ न्रिप एक । तहाँ जहाज जहान के लागहि आनि अनेक ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ सुजनिकुअरि ता की बर नारी । जनुक चंद्र कौ चीरि निकारी । जोबन जेब अधिक तिह सोहै । सुर नर नाग असुर मन मोहै ॥ २ ॥ परमसिंघ राजा अति भारो । परमपुरख जग महि उजियारो । ता की देह रूप अति झमकै । मानहु दिपत दामनी दमकै ॥३॥ ॥दोहरा॥ सुजनिकुअरि ता को महाँ रीझी रूप निहारि । गिरी मूरछना ह्वै धरनि मार करी बिसंभारि ॥ ४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ पठै सहचरी लीनौ ताहि बुलाइकै । रति मानी तिह संग सु मोद बढाइकै । बहुरि बिदा करि दियो अधिक सुख पाइयो । हो काल क्रिपा करि धाम हमारे आइयो ॥ ५ ॥ भोग मानि न्रिप गयो प्रात पुनि आइयो । कामकेल त्रिय साथ बहुरि उपजाइयो । पुनि रानी जू बचन मीत सो यौ कियो । हो हमरै चित चुराइ लला जू तुम लियो ॥ ६ ॥ जाते तुमको

एक सौ तेंतीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ हुगली बंदरगाह का हिम्मत सिंह एक राजा था । वहाँ संसार भर के अनेकों जहाज़ आकर ठहरते थे ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ सुजनकुँवरि उसकी सुन्दर स्त्री थी और ऐसी लगती थी मानों चन्द्रमा को चीरकर निकाली हो । उसका यौवन अत्यन्त शोभायमान था और सुर, असुर, नर, नागादि सवका मन मोहनेवाली थी ॥ २ ॥ परमसिंह एक बड़ा राजा था और जगत में उसे महान पुरुष माना जाता था । उसका सुन्दर शरीर विजली के समान देदीप्यमान होता था ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ सुजनकुँवरि उसका रूप देखकर रीझ गई और मूर्च्छित होकर धरती पर गिर पड़ी ॥ ४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ सखी को भेजकर उसने उसे बुलाया और प्रसन्नतापूर्वक उससे रतिक्रीड़ा की । फिर उसे सुखपूर्वक विदा कर दिया और कहा कि कृपापूर्वक कल भी हमारे घर आना ॥ ५ ॥ भोग करके राजा गया और प्रातः पुनः आकर उसने उस स्त्री के साथ रमण किया । फिर रानी ने उससे कहा कि हे प्रिय ! तुमने मेरा चित्त चुरा लिया है ॥६॥ जिस भाँति मैं तुम्हारे

मीत सु पति करि पाइयै। ताते सोऊ आजु चरित्र बनाइयै। जो मै कहो सु करियहु साजन आइकै। हो मोकह हर लै जैयहु हरख बढाइकै ॥ ७ ॥ एक बाँस सो कुपिया कसी सुधारिकै। गाड़ी रेती माँझ सु सभन दिखारिकै। आँखैं दोऊ बँधाइ निसा को आइकै। हो मारै याको बान तुरंग धवाइकै ॥८॥ ॥ चौपई ॥ प्रथम जु नर दोऊ आँखि मुँडावै। राति अँधेरी तुरै धवावै। बाँधग सति या इह सर मारै। सो रानी के साथ बिहारै ॥ ९ ॥ यह सुनि बात सभन हूँ (मू०ग्रं०१००७) पायो। बिसिख चलात तुरंग धवायो। रात्रि अधेरी आँखि मुँदावै। चोट चलात कहूँ कहूँ जावै ॥१०॥ देस देसएस्वर चलि आवैं। आँखि मूँद दोऊ तीर चलावैं। अरध रात्रि कछु द्रिशटि न आवै। छोरैं चोट कहूँ कहूँ जावै ॥ ११ ॥ ॥ दोहरा ॥ अरध रात्रि मूँदे द्रिगन सभ कोऊ तीर चलाइ। जीति न रानी कौ सकै निजु रानिन दै जाइ ॥ १२ ॥ ॥ चौपई ॥ राजा जू हरखित अति भयो। रानी भलो भेद कहि दयो। सुजनिकुअरि जू को को पैहै। निजु रानिन मोकौ दै जैहै ॥ १३ ॥ तब लौ परमसिंघ जू

जैसे मित्र को पति बना सकूँ, आज वही प्रपंच करती हूँ। जैसा मैं कहूँ, हे सुजन ! तुम वैसा ही करना और प्रसन्नतापूर्वक मेरा हरण कर लेना ॥ ७ ॥ उसने एक बाँस के साथ एक कुप्पी बाँध दी और सबको दिखाते हुए उसे रेत में गाड़ दिया। दोनों आँखों पर पट्टी बाँधकर रात को घोड़े पर चढ़कर इसे बाण मारना है ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ पहले तो आँख पर पट्टी बाँधे, अँधेरी रात में घोड़ा दौड़ाए, निशाना बाँधकर इसे तीर मारे, वही व्यक्ति रानी के साथ रमण करे ॥ ९ ॥ यह बात सबने सुनी और घोड़ा दौड़ाते हुए बाण चलाया। अँधेरी रात में आँख बाँधकर जो कोई भी बाण चलाता वह कहाँ का कहाँ जा पड़ता ॥ १० ॥ देश-देशान्तरों के राजा आते थे और आँख बन्द करके बाण चलाते थे। आधी रात में कुछ नज़र नहीं आता था। बाण छोड़ते कहीं थे, चला कहीं जाता था ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ आधी रात को आँख बन्द करके सभी तीर चलाते थे। वे रानी को तो जीत नहीं पाते थे और अपनी रानियाँ दे जाते थे ॥ १२ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजा प्रसन्न हो उठा कि रानी ने तो मुझे भेद की बात बता दी। सुजनकुँवरि को तो कोई क्या पाएगा, उलटा मुझे अपनी रानी दे जाएगा ॥ १३ ॥ तब तक परमसिंह

आए। जिह रानी सौ केल कमाए। भली भाँति डेरा तिह दीनो। भाँति भाँति सौ आदरु कीनो ॥ १४ ॥ रैनि भई रानियहि बुलायो। बहुरि तवन सौ केल कमायो। अंधकार भए बाँस उतार्यो। कुपिया कौ भू पर धरि पार्यो ॥ १५ ॥ ॥ दोहरा ॥ कुपियहि बान प्रहार करि वैसहि धरी बनाइ। बिदा कियो रति मानिकै ऐसो मंत्र सिखाइ ॥ १६ ॥ ॥ चौपई ॥ तुम अब ही राजा पै जैयो। ऐसे बचन उचारत ह्वैयो। होहूँ बिसिख बगावन आयो। चाहत तुमै चरित्र दिखायो ॥ १७ ॥ राजा को मन भयो अनंदं। बोलत बचन कहाँ मतिमंदं। आँखि मूँदि दोऊ बान चलैहौ। याकी दोऊ त्रिया गहि लैहौ ॥ १८ ॥ ता की आँखि बाँधि दोऊ लई। तीर कमान हाथ मै दई। चाबुक है हनि बिसिख बगायो। उहाँ ठाढि त्रिय ताल बजायो ॥१९॥ सभन तराक शबद सुनि पायो। जानुकि इन तिह तीर लगायो। बाँस उतारि बिलोकहि कहाँ। बाँको बान बिराजत उहाँ ॥ २० ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ भयो फूक राजा त्रियो पिंड हारी। मनौ आनिकै लात शैतान मारी। रह्यो

भी आ गया जिसने रानी के साथ रमण किया था। उसे भली प्रकार स्थान दिया गया और विभिन्न प्रकार से उसका स्वागत किया गया ॥ १४ ॥ रात होने पर रानी ने उसे बुलाया और पुनः उससे केलिक्रीड़ा की। अंधकार होने पर बाँस उतार लिया और कुप्पी को धरती पर गिरा दिया ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥ कुप्पी पर बाण का प्रहार कर उसे वैसे ही छोड़ दिया और उससे विचार-विमर्श करके उससे रतिक्रीड़ा कर उसे विदा कर दिया ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ उससे कहा कि तुम अभी राजा के पास जाओ और कहो कि मैं भी बाण चलाकर अपना करतब दिखाने आया हूँ ॥ १७ ॥ राजा भी महा आनंदित हो गया और सोचने लगा कि यह मतिमन्द क्या कह रहा है। आँख मूँदकर यह बाण चलाएगा और मैं इसकी दोनों स्त्रियाँ ले लूँगा ॥ १८ ॥ उसकी दोनों आँखें बाँध दी और हाथ में धनुष-बाण दे दिया। घोड़े को चाबुक लगाकर उसने बाण चलाया और उधर से स्त्री ने ताली बजाई ॥१९॥ सबने 'तड़ाक' ध्वनि सुनी और ऐसा लगा मानों इसने वहाँ बाण मारा हो। बाँस उतार कर जब देखा गया तो वहाँ बाण शोभायमान था ॥ २० ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ राजा की मानों हवा निकल गई, क्योंकि वह स्त्री हार चुका था। ऐसा लगा मानों शैतान से उसे लातों से पीटा हो। वह सिर झुकाकर

3

मूँड कौ न्याइ बैनै न बोलै। गिर्यो झूँमिकै भूँमि आँखै न खोलै ॥ २१ ॥ घरी चारि बीते प्रभा नैंक पाई। गिर्यो फेरि भूमैं कहूँ राव जाई। कहूँ पाग छूटी कहूँ हार टूटे। गिरैं बीर ज्यों घूँमि प्रानै निखूटे ॥ २२ ॥ सभै लोक धाए लयो ठाइ ता कौ। घनौं सींचिकै बारि गुलाब वाकौ। घरी पाँच पाछै न्रिपति सुद्धि पाई। करी भाँति भ्रित्तं अनेकै बडाई ॥ २३ ॥ डरे काज काहे महाराज मेरे। लए सूर ठाढे सभै शस्त्र तेरे। कहो मारि डारै कहो बाँधि ल्यावैं। कहो (मू०ग्रं०१००८) काटि कै नाक लीकैं लगावैं ॥ २४ ॥ ॥ सवैया ॥ हिंमतसिंघ कही हसिकै चित मै अति रोस को मारि मरूरो। एक धनी नवजोबन दूसर तीसरे हो पुरशोतम पूरो। आँखिन मूँदि हन्यो कुपिया कह या पर कोप कियो सभ कूरो। कैसे कै आजु हनो इह को जु है राव बडो अरु सुंदर सूरो ॥२५॥ ॥ चौपई ॥ कहि ऐसी न्रिप सीस ढुरायो। ता सुंदर पर कछु न बसायो। ग्रहि ते काढि त्रियहि पुनि दीनी। इह चरित्र सेती हरि लीनी ॥२६॥ ॥दोहरा॥ तिह

बैठ गया और चुप हो गया। पुनः वह धरती पर गिर पड़ा और आँखें बन्द कर लीं ॥ २१ ॥ चार घड़ी बीतने पर जब उसे होश आया तो वह राजा पुनः भूमि पर गिर पड़ा। कहीं उसकी पगड़ी छिटक गई और कहीं उसके हार टूट गए। वह ऐसे गिरने लगा मानों मरणासन्न वीर घूम-घूमकर गिर रहा हो ॥ २२ ॥ सब लोग दौड़े और उसको पकड़ा और उस पर गुलाब वग़ैरः खूब डाला। तब पाँच घड़ी बाद राजा को होश आया तो सेवकों ने उसका गुणानुवाद किया ॥२३॥ हे महाराज ! आप क्यों डर गए हैं ? आपके शूरवीर शस्त्रों-समेत उपस्थित हैं। अगर कहो तो मार डालें और कहो तो बाँधकर ले आएँ। कहो तो काटकर नाक से लकीर निकलवा दें ॥ २४ ॥ ॥ सवैया ॥ हिम्मतसिंह ने मन में क्रुद्ध पर ऊपर से हंसते हुए कहा कि वह एक तो धनी है, दूसरा सुन्दर है, तीसरे वह पुरुषों में भी उत्तम है। उसने आँख मूंदकर कुप्पी को बेध डाला, इस पर क्रोध करना व्यर्थ है। यह सुन्दर और बली राजा है, इसे कैसे मारा जा सकता है ॥ २५ ॥ ॥ चौपाई ॥ यह कहकर राजा ने सिर झुका लिया और अब उसका उस सुन्दरी पर कोई वश न रहा। घर से निकालकर वह स्त्री उसे दी। इस प्रपंच से उसने रानी का हरण किया ॥ २६ ॥ ॥ दोहा ॥ रानी ने भी प्रपंच बनाकर उसे

रानी पावत भई ऐसो चरित्र बनाइ। लै ता को ग्रहि को गयो अधिक ह्रिदै सुख पाइ ।। २७ ।। ।। सोरठा ।। सक्यो न भेद पछानि इह छल सो छैली छल्यो। रह्यो मोनि मुखि ठानि नारि रह्यो निहुराइकै ।। २८ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ तेतीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १३३ ।। २६५० ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ चौतीसवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। सबकसिंघ राजा इक भारी। बाजमती ता की बर नारी। काहू सो नहि राव लजावै। सभ इसत्रिन सों केल कमावै ।।१।। जो इसत्री तिह कहे न आवै। ता की खाट उठाइ मँगावै। अधिक भोग तासो न्रिप करई। रानी ते जिय नैक न डरई ।। २ ।। बाजमती जिय अधिक रिसावै। सबकसिंघ पर कछु न बसावै। तब त्रिय एक चरित्र बिचार्यो। राजा को दुरमति ते टार्यो ।। ३ ।। रूपवती जो त्रिय लखि पावै। सबकसिंघ सों जाइ सुनावै। तुम राजा तिह त्रिया बुलावो। कामकेल तिह साथ कमावो ।।४।।

पा लिया और वह भी प्रसन्न होकर उसे सुखपूर्वक घर ले गया ।। २७ ।। ।। सोरठा ।। वह छल से छला गया और इस छलना के द्वारा छले जाने पर मौन साधकर गर्दन झुकाकर बैठा रहा ।। २८ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ तेंतीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १३३ ।। २६५० ।। अफजू ।।

एक सौ चौंतीसवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। सबकसिंह एक बड़ा राजा था, जिसकी सुन्दर स्त्री बाजमती थी। राजा किसी स्त्री से भी नहीं शर्माता था और सबके साथ मुफ़्त रतिक्रीड़ा करता था ।। १ ।। जो स्त्री उसके कहने से नहीं आती थी, उसका पलंग उठवाकर मँगवा लेता था। वह उससे अत्यधिक केलिक्रीड़ा करता था और रानी से तनिक भी नहीं डरता था ।। २ ।। बाजमती मन में अत्यधिक क्रुद्ध होती थी पर सबकसिंह पर उसका कोई वश नहीं चलता था। तब रानी ने एक प्रपंच किया और राजा को इस दुर्मति से हटाया ।।३।। वह जब भी कोई रूपवती स्त्री देखती थी तो सबकसिंह से जा कहती कि हे राजन्! तुम उस स्त्री को बुलाओ और उसके साथ कामक्रीड़ा करो ।। ४ ।।

जब यौ बचन राव सुनि पावै । तौन त्रिया को बोलि पठावै ।
जाकी रानी प्रभा उचारै । ता के राजा संग बिहारै ॥ ५ ॥
या मै कहो कहा घट गई । जानुक हौहूँ भिटोअनि भई ।
जाते मोर राव सुख पावै । वहै बात हमरे जिय भावै ॥ ६ ॥
बली एक सुंदर लखि पायो । प्रथम तवन की त्रियहि
भिटायो । जब वहु पुरख अधिक रिसि भरियो । तब तासो
यौ बचन उचरियो ॥७॥ ॥ दोहरा ॥ कामकेल तासो कर्‍यो
रानी अति सुख पाइ । बहुरि बचन तिह पुरख सों ऐसे
कह्यो सुनाइ ॥ ८ ॥ ॥ चौपई ॥ तुमरी प्रभा कहो का
रही । निज नारी राजै जो चही । जाकी त्रिय सों और
बिहारै । (मू०ग्रं० १०८९) ध्रिग ता को सभ जगत उचारै ॥ ९ ॥
॥ दोहरा ॥ प्रथम भोग मन भावतो रानी कियो बनाइ ।
बहुरि बचन तासौ कह्यो ऐसे रिस उपजाइ ॥ १० ॥
॥ चौपई ॥ तुमरी त्रिय कौ राव बुलावै । काम भोग तिह
साथ कमावै । तूँ नहि मर्‍यो लाज को मरई । पावक
बिखै जाइ नहि जरई ॥ ११ ॥ ॥ दोहरा ॥ कै यह मूरख
राव तें बदलो लेहि बनाइ । ना तर बद्रिकाश्रम बिखै गरौ
हिमांचल जाइ ॥ १२ ॥ ॥ चौपई ॥ जो त्रिय कहो मोहि सो

जब राजा यह सुनता था तो उस स्त्री को बुलाता । रानी जिसकी प्रशंसा करती थी, राजा उसे ही मँगवा लेता था और उसके साथ विहार करता था ॥ ५ ॥ बताओ भला इसमें क्या जाता है, मैं समझती हूँ कि मैं ही राजा से रमण करती हूँ । राजा को जिसमें सुख प्राप्त हो वही बात मुझे अच्छी लगती है ॥ ६ ॥ उसने एक बली को देखा और पहले उसकी स्त्री को राजा को पेश किया । जब वह पुरुष अत्यन्त क्रुद्ध हो उठा तो उससे कहा ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ पहले उस पुरुष से रानी ने सुख से रतिक्रीड़ा की और फिर उससे कहा ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ बताओ तुम्हारा पौरुष क्या है जो राजा तुम्हारी स्त्री को चाहता है । जिसकी स्त्री के साथ अन्य रमण करता है उसे जगत धिक्कार कहता है ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ पहले मनचाहा संभोग रानी ने उससे किया, पुनः उसे क्रुद्ध करने के लिए रानी ने कहा ॥१०॥ ॥चौपाई॥ तुम्हारी स्त्री को राजा बुलाता है और कामक्रीड़ा करता है । तुम लज्जा से मर क्यों नहीं जाते हो और आग में क्यों नहीं जल जाते हो ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ या फिर तुम इस मूर्ख राजा से बदला लो अन्यथा बदरिकाश्रम हिमालय में जाकर

करौ। सबकसिंघ ते नैंक न डरौ। इन कीनो ग्रहि खवार हमारो। मैहूँ तिह त्रिय संग बिहारो ॥ १३ ॥ रोमातक तुम प्रथम लगावो। सकल त्रिया कौ भेस छकावो। जब तुम कौ राजा लखि पैहै। तुरतु मदन के बसि ह्वै जैहै ॥१४॥ जार केस सभ दूरि कराए। भूखन अंग अनूप सुहाए। जाइ दरस राजा को दियो। न्रिप को मोहि आतमा लियो ॥१५॥ जब राजै ता को लखि पायो। दौरि सदन रानी के आयो। हे सुंदर मैं त्रियिक निहारी। जानुक महाँ रुद्र की प्यारी ॥ १६ ॥ जौ मुहि तिह तूँ आज मिलावैं। जो मागे मुख ते सो पावैं। रानी फूलि बचन सुनि गई। जो मै चाहत थी सोऊ भई ॥ १७ ॥ सुनत बचन रानी ग्रहि आई। तौन जार को दयो भिटाई। जब ता को न्रिप हाथ चलायो। पकरि राव को तरे दबायो ॥ १८ ॥ न्रिप को पकरि भुजन तें लियो। गुदा भोग ता को द्रिड़ कियो। तोरि तारि तन रुधिर चलायो। अधिक राव मन माँझ लजायो ॥ १९ ॥

बर्फ़ में गल जाओ ॥ १२ ॥ ॥ चौपाई ॥ हे रानी ! तुम जो कहती हो वही मैं करूंगा और सबकसिंह से तनिक भी नहीं डरूँगा। इसने मेरा घर खराब किया है, मैं भी इसकी स्त्री के साथ रमण करूँगा ॥ १३ ॥ तुम पहले बाल साफ़ करनेवाला लेप लगाओ और स्त्री-वेश धारण करो। जब राजा तुम्हें देखेगा तो तुरन्त कामासक्त हो जायगा ॥ १४ ॥ उसने उसके केश जलाकर नष्ट कर दिए और अंगों में सुन्दर आभूषण धारण कर लिये। जाकर राजा को दर्शन दिया और उसके मन को मोह लिया ॥ १५ ॥ जब राजा ने उसे देखा तो दौड़कर रानी के महल में आया। कहने लगा, हे रानी ! मैंने एक स्त्री देखी है मानों पार्वती हो ॥ १६ ॥ यदि तुम आज मुझे उससे मिला दो तो मैं जो माँगोगी वही दूँगा। रानी यह सुनकर प्रसन्न हो उठी कि जो मैं चाहती थी वही हुआ ॥ १७ ॥ बात सुनकर रानी घर आई और अपने मित्र को राजा से मिलवा दिया। जब राजा ने उस पर हाथ फेरा तो उसने पकड़कर उसे नीचे दबा लिया ॥ १८ ॥ राजा को बाँहों में पकड़ लिया और उसके साथ गुदाभोग कर दिया। राजा को तोड़-ताड़कर उसके तन से रक्त बहा दिया जिससे राजा अत्यधिक लज्जित हो उठा ॥ १९ ॥ गुदाभोग

॥ दोहरा ॥ गुदा भोग भे ते त्रिपति मन महि रह्यो लजाइ ।
ताँ दिन तें काहूँ त्रियहि लयो न निकट बुलाइ ॥ २० ॥ १ ॥
॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सो चौतीसवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ १३४ ॥ २६७० ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ पैंतीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ दुहिता शाहु फिरंग की जाको रूप अपार ।
तीनि भवन भीतर कहूँ ता सम और न नारि ॥ १ ॥
॥ चौपई ॥ अबदुल नाम मुलाना भारो । शहिर जहानाबादि
उजियारो । हाजराति जब बैठि मँगावै । देव भूत जिन्नान
बुलावै ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ देव भूत जिनांत कह लेवै
निकट बुलाइ । जौन बात चित मै रुचै तिन ते लेत
मँगाइ ॥ ३ ॥ (मू०ग्रं०१०१०) ॥ चौपई ॥ ता पै परी बहुत चलि
आवै । कोऊ नाचि उठ कोऊ गावै । भाँति भाँति के भाव
दिखावहि । देखनहार सभै बलि जावहि ॥ ४ ॥ लाल
परी इक बचन उचारो । शाह परी सुनु बैन हमारो । सुंदरि
कलाकुअरि इक भारी । जनुक रूप की रासि सवारी ॥ ५ ॥

होने से राजा मन में लज्जित हुआ और उस दिन के बाद फिर किसी स्त्री को उसने अपनें पास नहीं बुलाया ॥ २० ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद के एक सौ चौंतीसवें
चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १३४ ॥ २६७० ॥ अफजू ॥

एक सौ पैंतीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ फ़िरंग शाह की अपार रूपवती कन्या थी। तीनों लोकों में उसके समान अन्य स्त्री कोई नहीं थी ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ अब्दुल नामक एक मौलाना था जो जहानाबाद में प्रसिद्ध था। समाधि में जब वह पुकारता था तो देव, भूत, जिन्न आदि को बुला लेता था ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ देव, भूत और जिन्नों को वह पास बुला लेता था और जो अच्छा लगता था उनसे मंगवा लेता था ॥३॥ ॥ चौपाई ॥ उसके पास बहुत सी परियाँ आती थीं। कोई नाच तो कोई गाना सुनाती थी। वे भाँति-भाँति के हाव-भाव दिखाती थीं। देखनेवाले सभी न्यौछावर हो रहे थे ॥ ४ ॥ लाल परी ने शाह परी से कहा, मेरी बात सुनो। कलाकुँवरि एक सुन्दरी है। वह मानों साक्षात्

॥ दोहरा ॥ ताही ते बिधि रूप लै कीने रूप अनेक। रीझि रही मैं निरखि छबि मन क्रम सहित बिबेक ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ ता की प्रभा जात नहि कही। जानुक फूलि मालती रही। कवन सु कबि तिह प्रभा उचारै। कोटि सूर जनु चढ़े सवारै ॥ ७ ॥ मुलाँ बात स्रवन यह सुनी। बिरह बिकल ह्वै मूँडी धुनी। एक देव भेजा तह ताँई। ता की खाट उठाइ मगाई ॥ ८ ॥ वा सुंदरि को कछु न बसायो। मुल्लाँ के संग भोग कमायो। बीती रैनि भोर जब भयो। तिह पहुचाइ तही तिन दयो ॥ ९ ॥ ऐसी बिधि तिह रोज बुलावै। होत उदोत फिरंग पठावै। मन मानत के केलन करै। भाँति भाँति के भोगन भरै ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ देव देखि काजी निरखि सुंदरि अधिक डराइ। नाक चढ़ाए रति करै तापैं कछु न बसाइ ॥ ११ ॥ ॥ चौपई ॥ तब तिन एक उपाइ बिचार्यो। कर मै एक पत्र लिखि डार्यो। काजी साथ बात यौ कही। मोरे हौंस चित इक रही ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ अब लौ सदन दिलीस के द्रिगन बिलोके नाहि।

रूपराशि है ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ ब्रह्मा ने उसी से रूप-सौंदर्य लेकर अनेकों रूप बनाए हैं। मैं मन-कर्म से उसकी छवि देखकर रीझ रही हूँ ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसकी प्रभा कहते नहीं बनती, वह तो मानों मालती का फूल हो। कौन कवि उसकी छवि का वर्णन कर सकता है। ऐसा लगता है मानों करोड़ों सूर्य चढ़ आए हों ॥ ७ ॥ मुल्ला ने कानों से यह सुना तो विरह से व्याकुल हो सिर धुननें लगा। उसनें एक देव भेजा और उसका पलंग उठवा कर मँगवा लिया ॥ ८ ॥ वह सुन्दरी भी बेबस हो गई। उसनें मुल्ला के साथ भोग-विलास किया। रात बीतकर जब भोर का समय हुआ तो उसे पुनः वहीं पहुँचा दिया ॥ ९ ॥ इसी विधि से उसे रोज़ बुलाता था और सुबह होतें उसे ही फ़िरंग शाह के पास पहुँचा देता था। मनचाही क्रीड़ा उससे करता था और भाँति-भाँति के भोग-विलास करता था ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ देवों को देखकर और क़ाज़ी को देखकर सुन्दरी अत्यधिक डरती थी। नाक-भौं चढ़ाकर रतिक्रिया करती थी, पर उसका वश नहीं चलता था ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने एक उपाय विचारा और हाथ से एक पत्र लिखा। क़ाज़ी से उसने कहा कि मेरे चित्त में एक चाह बनी ही रही है ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ दिल्ली के बादशाह का घर मैंने अपनी आँखों से नहीं देखा। हे क़ाज़ियों के मुखिया! यही इच्छा मेरे मन में बनी हुई है ॥ १३ ॥ क़ाज़ी

यहैं हौंस मन मै चुभी सुनु काजिन के नाह ॥ १३ ॥ देव साथ काजी कह्यो याको भवन दिखाइ । बहुरो खाट उठाइकै दीजहु ह्याँ पहुचाइ ॥ १४ ॥ ॥ चौपई ॥ ता कौ देव तहाँ लै गयो । सभ ही धाम दिखावत भयो । शाह शाह को पूत दिखार्‍यो । हरि अरि सर ता त्रिय कौ मार्‍यो ॥ १५ ॥ चित्रदेव कौ हेरत भई । पतिया डारि हाथ तें दई । आपु बहुरि काजी कै आई । उति पतिया तिन छोरि बचाई ॥१६॥ ॥ दोहरा ॥ फिरंग राव की मैं सुता ल्यावत देव उठाइ । मो सौ काजी मानि रति देत तहाँ पहुचाइ ॥ १७ ॥ मैं तुम पर अटकति भई ताँ ते लिख्यो बनाइ । निजु नारी मुहि कीजियै देव काजियहि घाइ ॥ १८ ॥ ॥ चौपई ॥ तब तिन जंत्र मंत्र बहु करे । जाते देवराज जू मरे । बहुरि काजियहि (मू०ग्रं०१०११) पकरि मँगायो । मुशक बाँधि दरियाइ डुबायो ॥ १९ ॥ बहुरो तौन त्रिया कौ बरियो । भाँति भाँति के भोगन करियो । देवराज मंत्रन सों जार्‍यो । ता पाछे काजी कौ मार्‍यो ॥ २० ॥ जो चतुरा चित चरित बनायो । मन सों चह्यो वहै पति पायो । देवराज कौ

ने देवों को कहा कि इसको भवन दिखा दो और पुनः पलंग को यहाँ पहुँचा दो ॥ १४ ॥ ॥ चौपाई ॥ देव उसे वहाँ ले गया और सब महल दिखाया। उसे शाह और शाह का पुत्र दिखाया जिसे देखकर वह कामासक्त हो गई ॥ १५ ॥ चित्रवत् देव को देखती रही और पत्र हाथ से गिरा दिया। आप पुनः क़ाज़ी के पास आ गई और आँख बचाकर पत्र वहाँ गिरा दिया ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥ मैं फ़िरंग शाह की पुत्री हूँ, मुझे देव उठाकर ले आता है और जब क़ाज़ी मुझसे रतिक्रीड़ा कर लेता है तो देव मुझे वापस वहीं पहुँचा देता है ॥ १७ ॥ मैं तुम पर आसक्त हूँ, इसीलिए मैंने तुम्हें लिखा है। तुम क़ाज़ी और देव को मारकर मुझे अपनी स्त्री बनाओ ॥ १८ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब उसने बहुत यंत्र-मंत्र किये, जिससे देव मर गया। फ़िर उसने क़ाज़ी को पकड़ मँगाया और उसके हाथ बाँधकर उसे नदी में डुबो दिया ॥ १९ ॥ फिर उस स्त्री का वरण किया और उससे विभिन्न प्रकार से रमण किया। पहले देवराज को मंत्रों से जलाया और फिर क़ाज़ी को मार डाला ॥ २० ॥ उस चतुर स्त्री ने जो प्रपंच किया उसके माध्यम से मनचाहा पति प्राप्त किया। पहले देव को जलाया और फिर क़ाज़ी को मार

आदि जराइस । ता पाछे काजी कह घाइस ।। २१ ।। ।। दोहरा ।। न्रिप सुत को भरता कियो चतुरा चरित सुधारि । मन मानत को बरु बर्यो देव काजियहि मारि ।। २२ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पैतीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १३५ ।। २६६२ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ छत्तीसवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। धरमछेत्र कुरछेत्र कौ रथ बचित्र न्रिप एक । बाजराज संपति सहित जीते जुद्ध अनेक ।। १ ।। ।। चौपई ।। भ्रमरमती ता की बर नारी । जनुक चंद्र कौ चीरि निकारी । जोबन जेब अधिक तिह सोहै । सुर नर नागि भुजंगन मोहै ।।२।। भद्रभवानी इक संन्यासी । जानुक आपु गड़्यो अबिनासी । रानी लख्यो जबै अभिमानी । निरखि रूप ह्वै गई दिवानी ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। भद्रभवानी के भवन दीनी सखी पठाइ । भवन बुलायो भद्र कर भ्रमरकला सुख पाइ ।। ४ ।। ।। अड़िल्ल ।। सुनत भवानी भद्र बचन

डाला ।। २१ ।। ।। दोहा ।। चतुर स्त्री ने राजा के लड़के को पति बना लिया और इस प्रकार देव और क़ाज़ी को मारकर मनचाहा वर प्राप्त किया ।। २२ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में एक सौ पैंतीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १३५ ।। २६६२ ।। अफजू ।।

एक सौ छत्तीसवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में विचित्ररथ नामक एक राजा था। उसने संपति-घोड़ों-सहित अनेकों युद्ध जीते थे ।। १ ।। ।। चौपाई ।। उसकी रानी भ्रमरमती मानों चन्द्रमा में से चीरकर निकाली गई थी। उसका अत्यधिक शोभायुक्त यौवन सुर, नाग आदि सबका मन मोहनेवाला था ।। २ ।। भद्र भवानी नामक एक संन्यासी भी ऐसा था मानों उसे परमात्मा ने स्वयं बनाया हो। रानी ने जब उस गर्वीले को देखा तो उसका रूप देखकर दीवानी हो गई ।। ३ ।। ।। दोहा ।। भद्रभवानी के घर सखी को भेजा और सुखपूर्वक उसे अपने घर बुलाया ।। ४ ।। ।। अड़िल्ल ।। भद्रभवानी सुनकर

3

तह आइयो। भ्रमरकला को रूप निरखि सुख पाइयो। नाथ भली बिधि रहौ सदा सुख मंगही। हो आजु सभै दुख बिसरे निरखत अंग ही ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ भ्रमरकला ता कौ निरखि बिसरे शोक अपार। मोद बढ्यो तन मै घनो सुखी करे करतार ॥ ६ ॥ डारे सारी नील की ओट अचूक चुकैन। लगें अटिक ठाढे रहैं बडे बिरहिया नैन ॥ ७ ॥ ॥ छंद ॥ प्रथम बिरह हम बरे मूँड अपनौ मूँडायो। बहुरि बिरहि के बरे जटन को सीस रखायो। धूरि सीस में डारि अधिक जोगीस कहाए। जब ते बन कौ गए बहुरि पुर माझ न आए ॥ ८ ॥ ॥ छंद ॥ प्रथम अत्र रिखि भए बरी अनसूआ जिनहूँ। बहुरि रामजू भए करी सीता त्रिय तिनहूँ। क्रिशन बिशन अवतार करी सोलह सै नारी। त्रिया पुरख की रीति जगत जगतेश बिथारी ॥९॥ ॥ छंद ॥ सुनत चतुरि को बचन चतुर रीझ्यो संन्यासी। हाव भाव करि बहुत बिहसि (मू०ग्रं०१०१२) इक गाथ प्रकासी। सुनु सुंदरि तव रूप अधिक बिधि आपु बनायो। हो ता ते हमरो चित्त तुमैं लखि अधिक लुभायो ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ भ्रमरकला ए

चला आया और भ्रमरकला का रूप-सौंदर्य देखकर सुखी हुआ। हे नाथ! तुम भली प्रकार रहो, मैं तुम्हारी क्षेम माँगती हूँ। तुम्हें देखकर तो आज मेरे अंगों के सभी दुख दूर हो गए हैं ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ उसको देखकर भ्रमरकला के दुख दूर हो गए और ईश्वर की कृपा से तन प्रमुदित हो उठा ॥ ६ ॥ घने परदे के पीछे ये छिपे रहते हैं, परन्तु किसी पर अटककर ये विरही नयन हमेशा खड़े रहते हैं ॥ ७ ॥ ॥ छंद ॥ (संन्यासी नें कहा) पहले तो हमने विरह का वरण किया और अपना सिर मुँड़वाया। फिर विरह का वरण किया और सिर पर जटाएँ रखवायी। फिर सिर में धूल डालकर योगेश कहलाए और तभी से बन में ऐसे निकले कि फिर नगर में नहीं आए ॥ ८ ॥ ॥ छंद ॥ पहले अत्रि ऋषि हुए जिन्होंने अनसूया का वरण किया। फिर रामजी ने सीता को पत्नी बनाया। विष्णु-अवतार कृष्ण ने सोलह सौ नारियों का वरण किया। स्त्री-पुरुष की रीति तो संसार में परमात्मा ने चलाई है ॥ ९ ॥ ॥ छंद ॥ उस चतुर स्त्री का वचन सुनकर वह संन्यासी रीझ गया। बहुत से हाव-भाव दिखाकर हँसते हुए उसने एक कहानी कही। हे सुन्दरी! सुनो, तुम्हारा रूप तो परमात्मा नें स्वयं बनाया है। इससे तुम्हें देखकर मेरा चित्त मोहित हो गया है ॥ १० ॥

बचन कहि ता के सतहि टराइ । बहुरि भोगि तासों कर्‌यो
अधिक ह्लिदै सुख पाइ ।। ११ ।। भाँति भाँति चुंबन करे आसन
करे अनेक । रति मानी रुचि मानि कै शोकि न रहियो
एक ।। १२ ।। रथ बचित्र राजा तहाँ तुरत पहूँच्यो आइ ।
भेद सुनत रानी डरी चित मै अधिक लजाइ ।। १३ ।।
।। चौपई ।। देग बिखै ता को बैठार्‌यो । सभ ही मूँदि
रौजनहि डार्‌यो । पैठन पवन न तामै पावै । बूँद बारि तिह
बीच न जावै ।। १४ ।। जिवरन सों तिह द्रिड़ गहि लयो ।
बहुरो राखि नदी मै दयो । बाँधि तूँबरी ता पर लीनी ।
जाते जाइ देग सो चीनी ।। १५ ।। तब लौ राव तहाँ गयो
आई । उठि रानी अति करी बडाई । जो तुम भूप अचूक
कहावो । या तुमरी कह बिसिख लगावो ।। १६ ।। तब राजा
तिह तीर लगायो । भद्र भवानी अति डरपायो । मोकह
आजु राव यह लहिहै । जानो कहा कोप करि कहिहै ।। १७ ।।
।। दोहरा ।। तब राजा हरखत भयो तुमरी तीर लगाइ ।
धन्य धन्य रानी कह्यो मुख ते मोद बढाइ ।।१८।। तब राजा
ग्रहि को गयो सक्यो भेद नहि चीन । इह छल सों छैली
छल्यो रानी अधिक प्रबीन ।। १९ ।। प्रथम भोग तासो कर्‌यो

।। दोहा ।। भ्रमरकला ने उससे कहकर उसकी तरफ़ देखा और सुखपूर्वक उससे बहुत बार भोग किया ।। ११ ।। अनेक चुंबन और आसनादि किए और शोक को त्यागकर रुचिपूर्वक रतिक्रीड़ा की ।। १२ ।। विचित्ररथ राजा वहाँ तत्काल आ पहुँचा जिसकी खबर सुनकर लज्जित हो रानी बहुत डर गयी ।।१३।। ।।चौपाई।। उसे देग़ में बैठाकर देग़ में एक छिद्र रख दिया जिससे हवा और पानी उसमें भर न सके ।। १४ ।। फिर उसे रस्सियों से बाँध लिया और नदी में रख दिया । उस पर एक तुंबी बाँध दी जिससे देग़ पहचानी जा सके ।। १५ ।। तब तक राजा वहाँ आ पहुँचा और रानी ने उठकर उसका गुणानुवाद किया । रानी ने कहा, हे राजन् ! यदि तुम पक्के निशानेबाज़ हो तो इसको बाण मारो ।। १६ ।। तब राजा ने एक तीर मारा जिससे भद्रभवानी अत्यन्त डर गया । वह सोचने लगा कि आज राजा मुझे देख लेगा और कुद्ध होकर पता नहीं क्या कहेगा ।। १७ ।। ।। दोहा ।। तुंबी को तीर मारकर राजा प्रसन्न हो उठा और प्रसन्न होकर रानी ने भी धन्य-धन्य कहा ।। १८ ।। तब राजा अपने निवास में चला गया और भेद को समझ नहीं पाया । उस प्रवीण रानी ने इस प्रकार छलपूर्वक उसको छला ।। १९ ।।

बहुरि देग मै डारि। पुनि बचित्र रथ को छर्यो ऐसो चरित सुधारि ॥ २० ॥ ॥ चौपई ॥ प्रथम तीर तुमरहि लगवायो। बहुरि भवानी भद्र डरायो। बहुरि देग ते काढि मँगायो। पुनि लिय तासौ केल कमायो ॥ २१ ॥ ॥ दोहरा ॥ इह छल सौ छलि राव को तासों केल कमाइ। बहुरि भवानी भद्र कौ दीनो धाम पठाइ ॥ २२ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ छत्तीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १३६ ॥ २७१४ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ सैंतीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ मछली बंदर को रहै द्रुपददेव बडभाग। सूरबीर जाके सदा रहैं चरन सों लाग ॥१॥ ॥चौपई॥ तिनिक जग्य को ब्योत बनायो। सभ बिप्रन कौ धाम बुलायो। खान पान तिन को बहु (मू०ग्रं०१०१३) दीनो तिनके मोहि चित्त कौ लीनो ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ तौन अनल की आँच ते निकसी सुता अपार। नाम द्रोपती तवन को बिप्र न धर्यो

पहले उससे भोग किया फिर उसे देग़ में डाल दिया। फिर प्रपंच द्वारा विचित्ररथ को छल लिया ॥२०॥ ॥ चौपाई ॥ पहले तुंबी को तीर लगवाया, फिर भवानीभद्र को डराया, पुनः उसे देग़ से निकाल मँगवाया और फिर उसी से केलिक्रीड़ा की ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार छल से राजा को छलकर उससे रतिक्रीड़ा की और फिर भवानीभद्र को घर पहुँचा दिया ॥ २२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद के एक सौ छत्तीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १३६ ॥ २७१४ ॥ अफजू ॥

एक सौ सैंतीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ मछलीबंदर (मछलीपट्टम) में भाग्यशाली द्रुपददेव रहता था। शूरवीर सदैव उसके चरणों से लगे रहते थे ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने यज्ञ करने की सोचकर सब ब्राह्मणों को घर बुलाया। उनको खान-पान अच्छा दिया और उन सबका मन मोह लिया ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ उस यज्ञ की अग्नि से एक पुत्री निकली जिसका विप्रों ने विचारपूर्वक

बिचार ॥ ३ ॥ ताँ पाछे बिधनै दयो ध्रिशटदुमन सुत एक । द्रोणचारज कै छै निमित जीतन जुद्ध अनेक ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ जोबन जबै द्रोपती भयो । निज जिय मै अस ठाट ठटयो । ऐसो कछू सुयंबर करौ । जाते सूरबीर पति बरौ ॥५॥ ॥ अड़िल्ल ॥ एक मच्छ को ऊपर बध्यो बनाइकै । तेल डारि तर दियो कराह चढ़ाइकै । छाह हेर जो इह चख दच्छिन मारिहै । हो सो नर हमरे साथ सु आइ बिहारिहै ॥ ६ ॥ देस देस के एसन लयो बुलाइके । मच्छ अच्छ सर मारो धनुख चढ़ाइकै । डीम डाम करि ता को बिसिख बगावहीं । हो लगै न ता को चोट बहुरि फिरि आवहीं ॥ ७ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ करैं डीम डामै बडे सूर धावैं । लगै बान ता कौ न राजा लजावैं । चलैं नीच नारीन कै भाँति ऐसी । मनो सीलवंती सु नारी न वैसी ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ ऐंडे बैंडे ह्वै त्रिपति चोट चलावैं जाइ । ताँहि बिसिख लागै नहीं सीस रहै निहुराइ ॥ ९ ॥ बिसिख बगावै कोप करि ताहि न लागे घाइ । खिसलि कराहा ते परैं जरैं तेल मै जाइ ॥ १० ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ परे तेल मै भूजिकै

द्रौपदी नाम रखा ॥ ३ ॥ उसके बाद धृष्टद्युम्न नामक पुत्र द्रोणाचार्य को मारने और युद्धों को जीतने के लिए पैदा हुआ ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब द्रौपदी युवती हुई तो उसने मन में सोचा कि कुछ इस प्रकार का स्वयंबर किया जाय कि शूरवीर पति प्राप्त हो ॥ ५ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ एक मछली को ऊपर बाँधा गया और नीचे तेल का कड़ाहा रखवा दिया गया । इसकी छाया को देखकर जो इसकी दायीं आँख में बाण मारेगा वही व्यक्ति आकर मेरे साथ रमण करेगा ॥ ६ ॥ देश-देशान्तरों के राजा बुलाए गए और कहा गया कि धनुष से मछली की आँख में बाण मारो । सभी नाप-तौलकर बाण चलाने लगे, परन्तु उस मछली को चोट न लग पाती और बाण वापस आ जाते ॥ ७ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ बड़े-बड़े शूरवीर शान से जाते पर वे राजा बाण न लगने के कारण लज्जित हो जाते । वे नीच अनुभव करते हुए नारियों के समान ऐसे चलते थे मानों लज्जायुक्त स्त्रियाँ भी वैसी न हों ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ टेढ़े-मेढ़े होकर राजागण वार करते पर मछली के तीर नहीं लगता और वे सिर धुनने लगते ॥ ९ ॥ वे क्रुद्ध होकर बाण चलाते पर उसे घाव न लग पाता और ये फिसलकर कड़ाहे में जा गिरते और तेल में जल जाते ॥ १० ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ वे तेल में ऐसे भुन जाते मानों कोई स्त्री

भाँति ऐसी । बरे ज्यों पकावै महाँ नारि जैसी । कोऊ बान ता को नही बीर मारैं । मरे लाज ते राज धामै सिधारैं ।। ११ ।। ।। दोहरा ।। अधिक लजत भूपति भए ताँ कौ बान चलाइ । चोट न काहूँ की लगी सीस रहे निहुराइ ।। १२ ।। परी न प्यारी हाथ मै मछहि लग्यो न बान । लजतन ग्रहि अपने गए बन को कियो पयान ।। १३ ।। ।। चौपई ।। ऐसी भाँति कथा तह भई । उतै कथा पंड्वन पर गई । जहाँ दुखित वै बनहि बिहारैं । कंद मूल भच्छै म्रिग मारैं ।। १४ ।। ।। दोहरा ।। कुंती पुत्र बिलोकि कै ऐसे कह्यो सुनाइ । मतस देस मै बन घनो तही बिहारैं जाइ ।। १५ ।। ।। चौपई ।। पांडव बचन सुनत जब भए । मतस देस की ओर सिधए । जहाँ सुयंबर द्रुपद रचायो । सभ भूपन को बोलि पठायो ।।१६।। ।। दोहरा ।। जहाँ सुयंबर द्रोपदी रच्यो कराह उपाइ । (मू०ग्रं०१०१४) तही जाइ ठाढो भयो धनी धनंजै राइ ।। १७ ।। दोऊ पाव कराह पर राखत भयो बनाइ । बहुरि मच्छ की छाँह कह हेर्यो धनुख चढ़ाइ ।। १८ ।। ।। सवैया ।। कोपि कुवंड चड़ाइकै पारथ मच्छ कौ दच्छिन पच्छ निहार्यो । कान प्रमान प्रतंचहि आन

पकौड़े बना रही हो। कई वीर तो बाण मार ही नहीं रहे थे और लज्जित हो राजधानी को जा रहे थे ।। ११ ।। ।। दोहा ।। राजागण वाण चलाकर अत्यधिक लज्जित हुए। किसी का भी वार न लगा और सभी पछताने लगे ।। १२ ।। प्रिय भी हाथ न लगी और मछली को भी बाण न लगा। वे लज्जित हो अपने घर को चले गए और कुछ ने बन को प्रस्थान किया ।।१३।। ।। चौपाई ।। इस प्रकार यह कहानी हुई जो पहुँचते-पहुँचते पांडवों तक वहाँ जा पहुँची जहाँ वे दुखित हो वन में घूम रहे थे और कन्द-मूल का भक्षण कर मृगादि मार रहे थे ।। १४ ।। ।। दोहा ।। कुंती-पुत्रों ने यह देख सुनकर यह मन बनाया कि मत्स्य देश में घना बन है, वहीं जाकर भ्रमण किया जाय ।। १५ ।। ।। चौपाई ।। पांडवों ने जब ये बातें सुनी तो मत्स्य देश की ओर चल पड़े जहाँ द्रुपद ने स्वयंबर रचाया हुआ था और सब राजाओं को बुलाया हुआ था ।।१६।। ।। दोहा ।। जहाँ द्रौपदी का कड़ाहा तपाकर स्वयंबर रचा हुआ था, वहीं धनंजय (अर्जुन) जा खड़ा हुआ ।। १७ ।। उसने संभलकर दोनों पाँव कड़ाह पर टिका दिए और मछली की छाया को ढूंढ़कर धनुष चढ़ा लिया ।। १८ ।। ।। सवैया ।। पार्थ (अजुन) ने क्रुद्ध हो धनुष चढ़ाकर

महाँ करि कै अभिमान हकार्‍यो। खंडन कै रत्न मंडन जे बलवंडन को सभ पौरख हार्‍यो। यौ कहि बान तज्यो तजि कानि घनी रिसि ठानि तक्यो तिह मार्‍यो ॥ १९ ॥ ॥ दोहरा ॥ पारथ धनु करखत भए बरखे फूल अनेक। देव सभै हरखत भए हरख्यो हठी न एक ॥२०॥ ॥ चौपई ॥ यह गति देखि बीर रिस भरे। लै लै हथि हथियारन परे। या जुगियहि जमलोक पठैहैं। ऐंचि द्रोपदी निजु त्रिय कैहैं ॥ २१ ॥ ॥ दोहरा ॥ तब पारथ केते कटक काटे कोप बढाइ। केते कटि डारे कटिन काटे करी बनाइ ॥ २२ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ किते छत्रि छेके किते छैल छोरे। किते छत्र धारीन के छत्र तोरे। किते हाँकि मारे किते मारि डारे। चहूँ ओर बाजे सु मारू नगारे ॥ २३ ॥ ॥ दोहरा ॥ अन वरत्यन निरवरत कै अबला लई उठाइ। डारि काँपि ध्वज रथ लई बहु बीरन को घाइ ॥ २४ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ किती बाँह काटे किते पाव तोरे। महाँ जुद्ध सोडनि के छत्र छोरे। किते पेट फाटे किते ठौर मारे। गिरे भाँति ऐसी सु मानो

मछली के दक्षिण भाग को देखा। कान तक डोरी खींचकर उसने अभिमान-पूर्वक हुंकार भरी। बड़े युद्धशील योद्धाओं का पौरुष वहाँ हार चुका था। इस प्रकार गहरे क्रोध में बाण तानकर उसने चला दिया ॥ १९ ॥ ॥ दोहा ॥ अर्जुन के धनुष की टंकार के साथ पुष्पवर्षा होने लगी। देवगण तो प्रसन्न हो उठे, पर एक भी हठी वीर प्रसन्न न हुआ ॥२०॥ ॥चौपाई॥ यह सब देखकर वीर क्रोध से भर उठे और हाथों में शस्त्र लेकर वे टूट पड़े। (वे यह सोच रहे थे कि) इस योगी को यमलोक भेज दिया जायगा और इस स्त्री का वरण हम कर लेंगे ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ तब अर्जुन ने भी क्रुद्ध होकर कितने ही झुंड काट डाले और न जाने कितने हाथियों के समूह काट डाले ॥ २२ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ कहीं छत्र फट गए, कहीं जवान गिर पड़े और कहीं छत्रधारियों के छत्र टूट गए। कितने ललकारे गए और कितने मार डाले गए। चारों ओर मारू रणवाद्य बज उठे ॥२३॥ ॥ दोहा ॥ लगातार वीरों को हटाकर स्त्री को उठा लिया और अनेकों वीरों को मारकर उसे रथ में डाल लिया ॥ २४ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ कितनी ही बाँहें काट डाली गईं, कितने ही पाँव तोड़ दिए गए। महान् योद्धाओं के छत्र उड़ा दिए गए। कितनों के पेट फट गए और कितने ही उस स्थान पर मार डाले गए और

मुनारे ।। २५ ।। ।। चौपई ।। दस हजार हैवर हनि डार्यो । बीस हजार हाथयहि मार्यो । एक लच्छ राजा रथ घायो । बहु पैदल जमधाम पठायो ।। २६ ।। द्रोणज द्रोण क्रिपा करन भूरस्रवा कुरराइ । अमित संग सैना लए सभै पहूँचै आइ ।। २७ ।। ।। सवैया ।। या द्रुपदा तुम ते सुनु रे सठ जीति सुयंबर मै हम लैहै । साँगन सूलन सैथिन सों हनिकै तुहि को जमधाम पठैहै । डारि रथोतम मै त्रिय को कत भाजत है जड़ जान न दैहै । एक निदान करै रन मै किधो पारथ ही कि द्रुजोधन ह्वैहै ।। २८ ।। ।। चौपई ।। तो कह जीति जान नहि दैहै । स्रोन सुहाने बागन ह्वैहै । एक निदान करै रन माँही । कै पांडव कै कैरव नाँही ।। २९ ।। ।। अड़िल्ल ।। प्रथम पारथ भानुज कौ (मू०ग्रं०१०१५) बिसिख प्रहार्यो । ता पाछे कुरिराव क्वांड भे मार्यो । भीम भीखमहि साइक हने रिसाइकै । हो द्रोण द्रोणजानुज के घोरन घाइकै ।। ३० ।। भूरस्रवा कौ बहुरि बाण सो बसि कियो । क्रिपाचारजहि बहुरि मूरछना करि लियो । हठीकरण तब

वे ऐसे गिर रहे थे मानों मीनारें गिर रही हों ।। २५ ।। ।। चौपाई ।। दस हज़ार घोड़े मार डाले और बीस हज़ार हाथी काट डाले गए । एक लाख राजा रथों-समेत और असंख्य प्यादों को यमलोक पहुँचा दिया गया ।। २६ ।। द्रोणपुत्र (अश्वत्थामा), द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, भूरिश्रवा आदि चिल्लाते हुए बहुत-सी सेना लेकर आ पहुँचे ।। २७ ।। ।। सवैया ।। (वे कहने लगे) हे मूर्ख ! सुनो; यह द्रुपद-कन्या तो हम तुमसे स्वयंवर में जीत लेंगे और बर्छी, भाले, तलवारों से मारकर तुमको यमलोक भेज देंगे । तुम रथ में स्त्री डालकर कहाँ भाग रहे हो, तुम्हें हम भागने नहीं देंगे । अब तो यह फ़ैसला करके ही रहेंगे कि या तो अर्जुन या फिर दुर्योधन बचेगा ।। २८ ।। ।। चौपाई ।। तुम्हें जीवित नहीं जानें देंगे और उद्यान की धरती को रक्त से नहला देंगे । आज युद्ध में फ़ैसला करके रहेंगे कि या तो आज पांडव बचेंगे या फिर कौरव बचेंगे ।। २९ ।। ।। अड़िल्ल ।। पार्थ नें पहले कर्ण को बाण मारा और उसके बाद दुर्योधन पर वार किया । भीम ने भीष्म को क्रुद्ध हो बाण मारा जो द्रोण और अश्वत्थामा के घोड़ों को मार गया ।। ३० ।। फिर भूरिश्रवा को बाण से वश में कर लिया और कृपाचार्य को भी मूर्च्छित कर दिया । तब हठी कर्ण क्रुद्ध हो दौड़ा और उसने सामने

धायो कोप बढाइकै । हो तुमल जुद्ध रण कियो सनंमुख आइकै ।। ३१ ।। एक बिसिख अरजुन के उर मै मारियो । गिर्यो मूरछना धरनि न नैक सँभारियो । तबै द्रोपती साइक धनुख सँभारकै । हो बहु बीरन कौ दियो छिनिक मौ मारिकै ।। ३२ ।। एक बिसिख भानुज के उर मै मारियो । दुतिय बान सो दुरजोधनहि प्रहारियो । भीखम भूरस्रवाहि द्रोण घाइल कर्यो । हो द्रोणज क्रिपा दुसासन को स्यंदन हर्यो ।। ३३ ।। ।। दोहरा ।। सभै सूर हरखत भए कायर भयो न एक । माच्यो प्रबल प्रचंड रण नाचे सुभट अनेक ।। ३४ ।। ।। अड़िल्ल ।। राजबाज ताजियन सु दयो गिराइकै । साज बाज साजियन सु गैन फिराइकै । है पाखरे सँघारे शस्त्र सँभारिकै । हो पैदल रथी बिदारे बान प्रहारिकै ।। ३५ ।। ।। चौपई ।। पहर एक राखे अटकाई । भाँति भाँति सौ करी लराई । गहि धनु पान धनंजै गाज्यो । तब ही सैन कैरवन भाज्यो ।। ३६ ।। ।। दोहरा ।। त्रिय कौ जुद्ध बिलोकि कै पारथ भयो प्रसन्य । कह्यो आजु तै द्रोपती धरनीतल मै धन्य ।। ३७ ।। ।। चौपई ।। मै अब बिकि दामन

आकर भीषण युद्ध किया ।। ३१ ।। एक बाण उसने अर्जुन को मारा जो तनिक भी न सँभल सका और मूर्च्छित होकर गिर पड़ा । तब द्रौपदी ने धनुष-बाण सँभालकर क्षण भर में बहुत से वीरों को मार दिया ।। ३२ ।। एक बाण उसने कर्ण को मारा और दुर्योधन को एक अन्य बाण मारा । भीष्म, भूरिश्रवा और द्रोण को घायल कर दिया । अश्वत्थामा, कृपाचार्य और दुःशासन के घोड़ों का हरण कर लिया ।।३३।। ।। दोहा ।। सभी वीर तो प्रसन्न हो उठे, परन्तु कायर कोई भी प्रसन्न न हुआ । वहाँ प्रचंड युद्ध छिड़ गया और अनेकों वीर नाच उठे ।। ३४ ।। ।। अड़िल्ल ।। राजाओं और घोड़ों को गिरा दिया और सुसज्जित घोड़ों को आकाश में उठा फेंका । शस्त्र सँभालकर अश्वों को मार डाला तथा पैदलों और रथियों का भी संहार कर दिया ।। ३५ ।। ।। चौपाई ।। विभिन्न प्रकार से युद्ध कर उन्हें एक प्रहर तक रोके रखा । तब धनुष-बाण पकड़कर अर्जुन गरज उठा और कौरवों की सेना भाग खड़ी हुई ।। ३६ ।। ।। दोहा ।। स्त्री का युद्ध देखकर अर्जुन प्रसन्न हो उठा और कहने लगा कि हे द्रौपदी ! मैं तो आज पृथ्वी पर धन्य हो गया ।। ३७ ।। ।। चौपाई ।। मैं तो बिना मोल के ही बिक गया और तुमने तो मुझे मानों

बिनु गयो । जनु तैं दास मोल को लयो । जो कछु कहौ कारज तव करिहो । प्रान जान ते नैकु न डरिहो ॥ ३८ ॥ ॥ दोहरा ॥ तरुन बिधातै त्व कर्यो तरनी कीनो मोहि । केल करे बिनु जात लै लाज न लागत तोहि ॥ ३९ ॥ ॥ चौपई ॥ बानावली धनंजै धारी । मूरछित सकल सैन करि डारी । द्रुपती साथ बिहार्यो सोऊ । ता को देखत भयो न कोऊ ॥ ४० ॥ ॥ दोहरा ॥ चुंबन आसन लै घने रति मानी द्रुपतीस । ता पर कोऊ न पर सके ठटकि रहे अवनीस ॥ ४१ ॥ जीति कैरवन के दलहि द्रुपतहि लयो छिनाइ । न्रिप मारे हारे गए धंन्य धनंजै राइ ॥ ४२ ॥ ॥ चौपई ॥ प्रथम सूरमा सकल निवारे । बचे भाजे भिरे ते मारे । जीति द्रोपती अति सुख (मू०ग्रं०१०१६) पायो । तब पारथ ग्रहि ओर सिधायो ॥ ४३ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रियः चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सैंतीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १३७ ॥ २७५७ ॥ अफजूं ॥

दास की तरह मोल ले लिया है। तुम जो कहो, मैं वही कार्य करूँगा और प्राणों की भी तनिक परवाह नहीं करूँगा ॥ ३८ ॥ ॥ दोहा ॥ विधाता ने तुम्हें तरुण और मुझे तरुणी बनाया है। तुम मुझे केलिक्रीड़ा के बिना ही ले जा रहे हो, तुम्हें लज्जा नहीं आती ॥ ३९ ॥ ॥ चौपाई ॥ अर्जुन ने बाणों की लड़ी छोड़ दी और सारी सेना को मूर्च्छित कर दिया। तब उसने द्रौपदी के साथ रमण किया और उसे कोई भी न देख सका ॥ ४० ॥ ॥ दोहा ॥ अनेकों चुंबनों, आसनों से द्रौपदी के स्वामी (अर्जुन) ने रतिक्रिया की। उस समय कोई भी कुछ न कर सका और सारे राजागण ठिठककर रह गए ॥ ४१ ॥ कौरवों के दलों को जीता और द्रौपदी को छीन लिया। अर्जुन धन्य है, उसने सारे राजा मारकर हरा दिए ॥ ४२ ॥ ॥ चौपाई ॥ पहले तो सभी शूरवीरों को हराया। जो बच गए वे भाग गए और जो भिड़ गए वे मार डाले गए। द्रौपदी को जीतकर सुख प्राप्त किया तथा अर्जुन घर की ओर चल पड़ा ॥ ४३ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ सैंतीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १३७ ॥ २७५७ ॥ अफजू ॥

अथ इक सौ अठत्तीसवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। आभावती ओडछे रानी । सुंदरि भवन चौदहूं जानी । ता कौ अति ही रूप बिराजै । सुरी आसुरिन कौ मनु लाजै ।। १ ।। रूपमान तिह नैन निहार्यो । ता कौ चीत मीत करि डार्यो । वाको धाम बुलावन कीनो । भाँति भाँति सो आसन दीनो ।। २ ।। ताँहि केसअरि बकत्र लगायो । सभ केसन कौ दूरि करायो । पुरखहु ते इस्त्री करि डारी । मित पति लै तीरथन सिधारी ।। ३ ।। पति को कही बात समुझाई । मोरी हियाँ बहिन इक आई । ताँहि संग लै तीरथ नैहो । सभ ही पाप बिदा करि दैहो ।। ४ ।। ।। अड़िल्ल ।। पति मित लैकै संग सिधाई तीरथन । ऐस सहेट बनाई अपने यार तन । जब पिय लै गंगा महि नैहो जाइकै । हो भगनी मुख ते भाखि मिलौगी आइकै ।। ५ ।। ।। दोहरा ।। मीत नाथ कौ संग लै तह को कियो पयान । केतिक दिनन बिताइकै गंग कियो इशनान ।। ६ ।। ।। चौपई ।। पति को संग गंग लै न्हाई । भाखि बहिनि तासो

एक सौ अड़तीसवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। ओड़छा की रानी आभावती सुन्दरता के कारण चौदह भुवनों में जानी जाती थी । उसके अत्यन्त शोभायुक्त रूप पर सुर-असुर-स्त्रियाँ भी मन में लज्जित होती थीं ।। १ ।। रूपमान को उसने देख और उसे अपना दिल मित्र मानकर दे दिया । उसे घर पर बुलाया और विभिन्न प्रकार के आसन दिए ।। २ ।। उसके मुख पर बालनाशक लेप लगाया और बाल नष्ट कर दिए । उसे पुरुष से स्त्री बना दिया और मित्र तथा पति को लेकर तीर्थयात्रा के लिए चल दी ।। ३ ।। पति को यह समझा दिया कि मेरे यहाँ एक बहिन आयी है । उसे साथ लेकर तीर्थस्नान करेंगे और पापों को विदा कर देंगे ।। ४ ।। ।। अड़िल्ल ।। पति और मित्र को लेकर तीर्थों पर गई और अपने प्रेमी के साथ जाने का ऐसा प्रबंध किया कि जब प्रिय गंगा में स्नान करेंगे तो बहन का बहाना कर मैं प्रेमी से आ मिलूंगी ।। ५ ।। ।। दोहा ।। मित्र और स्वामी को साथ लेकर प्रस्थान किया और अनेकों दिन बीत जाने पर गंगा में स्नान किया ।। ६ ।। ।। चौपाई ।। पति को साथ लेकर गंगा पर नहाई और इसे बहन कहकर इससे लिपट गई । उससे

लपटाई। मन मानत तिन केल कमायो। मूरख कंत भेव नहि पायो ॥ ७ ॥ चिमटि चिमटि तासो लपटाई। मन मानत त्रिय केल कमाई। दिन देखत त्रिय केल कमायो। मूरख कंत भेव नहि पायो ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ मन मानत को मानि रति दीनो जार रुठाइ। मुख बाए मूरख रह्यो भेद न सकियो पाइ ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ इति स्त्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ अठत्तीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १३८ ॥ २७६६ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ उनतालीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ अड़िल्ल ॥ मानणेसुरी रानी अतिहि सु सोहनी। सिंघ गरूर न्रिपति के चित की मोहनी। बैरमसिंघ बिलोक्यो जब तिन जाइकै। हो मदन बस्य ह्वै गिरी भूमि मुरछाइकै ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ उठत प्रीति त्रिय अधिक लगाई। कामकेल तिह साथ कमाई। बहुरि जार इह भाँति उचारो। सुनो त्रिया तुम बचन हमारो ॥ २ ॥ (मू०ग्रं०१०१७) तौ लखिहौ मैं तुमै पयारो। पति देखत मुहि साथ बिहारो।

मनचाहा रमण किया और मूर्ख पति इस रहस्य को समझ नहीं सका ॥ ७ ॥ चिपट-चिपटकर उससे मनचाही रतिक्रीड़ा की। दिन-दहाड़े स्त्री ने रमण किया और मूर्ख कन्त नहीं समझ सका ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ मनचाही रतिक्रीड़ा करके मित्र को भेज दिया और स्वामी मुँह फाड़े देखता रहा तथा रहस्य को न पा सका ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ अड़तीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १३८ ॥ २७६६ ॥ अफजू ॥

एक सौ उनतालीसवाँ चरित्र-कथन

॥ अड़िल्ल ॥ गरूरसिंह राजा के मन को मोहित करनेवाली रानी मानिनेश्वरी अत्यन्त रूपवती थी। जब उसने बैरमसिंह को देखा तो कामवश से मूर्च्छित हो गिर पड़ी ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ उठकर उसने अत्यधिक प्रेम किया और उसके साथ कामक्रीड़ा की। तब प्रेमी ने कहा कि हे रमणी! तुम मेरी बात सुनो ॥ २ ॥ मैं तब समझूंगा कि मैं तुम्हें प्रिय हूँ, यदि तुम पति के सामनें मेरे साथ विहार करो। तब उस स्त्री ने ऐसा

तब तैसी त्रिय घात बनाई। सो मैं तुम सौ कहत सुनाई ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। तिन घर भीतर पीर को राख्यो थान बनाइ। माननेस्वरी घात लखि दीनो ताहि गिराइ ।।४।। ।। चौपई ।। ढाहि थान निजु पतिहि दिखायो। पीर नाम लै अति डरपायो। रोस अबै सुरतान बढैहै। तो कौ डारि खाट ते दैहै ।। ५ ।। प्रथम डारि तह ते तुहि दैहै। बहुरि खाट के तरे दबैहै। मोकह पकरि तहा ही डरिहैं। दुहूँअन कौ गोडन सौ मरिहैं ।। ६ ।। रसरन साथ बंध करि लैहै। ता पाछे तोकौ उलटैहै। औध खाट तव ऊपरि डरिहैं। बहुरि तुमै जानन सौ मरिहैं ।। ७ ।। प्रथम कथा ताँसो यौ कही। खाट डारि पति सौ स्वै रही। जब सोयो ता कौ लखि पायो। द्रिड़ रसरन के साथ बँधायो ।। ८ ।। जिवरन साथ बाँधि तिह गई। सोइ रह्यो जड़ सुद्धि न लई। खाट तरे इह भाँति करो है। जानुक म्रितक सिर्ही पै सोहै ।। ९ ।। ।। दोहरा ।। खाट साथ द्रिढ़ बाँधिकै औध दियो उलटाइ। चड़ि बैठी ताँ पर तुरतु जार संगि लपटाइ ।।१०।। ।। अड़िल्ल ।। भाँति भाँति तिह त्रिय कौ जार बजाइकै। भाँति भाँति के आसन लए बनाइकै।

संयोग बनाया जिसे मैं अब कहता हूँ ।। ३ ।। ।। दोहा ।। उसने घर में एक पीर का स्थान बना रखा था, जिसे अवसर पाकर मानिनेश्वरी ने गिरा दिया ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। स्थान गिराकर अपने पति को दिखाया और पीर का नाम लेकर उसे डराया। अब यह पीर क्रुद्ध हो जायगा और तुम्हें पलंग से गिरा देगा ।। ५ ।। पहले यह तुम्हें पलंग से गिराएगा, फिर तुम्हें उसी से दबा देगा। तब मुझे भी पकड़कर वहीं डाल देगा और दोनों को घुटनों से मारेगा ।। ६ ।। रस्सियों से बाँध लेगा और तुम्हें उलटाएगा। उलटा पलंग तुम्हारे ऊपर डालेगा और फिर तुम्हें जान से मार देगा ।। ७ ।। पहले तो उससे यह कहा और फिर पलंग डालकर पति के पास सो गई। जब उसे सोया हुआ समझ लिया तो कसकर उसे रस्सियों से बाँध दिया ।।८।। उसे रस्सियों से बाँध दिया पर उस सोए हुए मूर्ख को तनिक भी पता नहीं लग पाया। खटिया के साथ उसे ऐसे कर दिया मानों मृतक अर्थी पर पड़ा हो ।। ९ ।। ।। दोहा ।। पलंग के साथ उसे पक्का बाँधकर उलटा दिया और अपने प्रेमी को साथ लेकर उस पर चढ़ बैठी ।। १० ।। ।। अड़िल्ल ।। विभिन्न

चुंबन आलिंगन लीने रुचि मानिकै। हो तर डार्यो जढ़ रह्यो मोन मुखि ठानिकै ॥ ११ ॥ ॥ चौपई ॥ हाइ हाइ तर मर्यो उचारै। कहा कर्यो तै पीर हमारै। तुमै त्याग मैं अनत न धायो। जैसो कियो तैसो फल पायो ॥१२॥ ॥ अड़िल्ल ॥ अब मोरो अपराध छिमापन कीजियै। कछू चूक जो भई छिमा करि लीजियै। तोहि त्यागि करि अनत न कितहूँ जाइहो। हो पीर तुहारे साल साल मैं आइहौ ॥१३॥ ॥ चौपई ॥ जार भोग द्रिड़ जब करि लयो। त्रिप कौ छोरि तरें ते दयो। प्रथम मीत निजु त्रिय नै डार्यो। बहुरि आनिकै राव उठार्यो ॥ १४ ॥ मूरख कछू भेव नहि पायो। जान्यो मोहि पीर पटकायो। बंधन छुटे सु थान सवार्यो। त्रिय कौ चरित न जिय मै धार्यो ॥ १५ ॥ १ ॥ (मू०ग्रं०१०१८)

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ उनतालीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १३९ ॥ २७८१ ॥ अफजूं ॥

प्रकार से उस प्रेमी ने विभिन्न आसनों से उसके साथ रमण किया। रुचि-पूर्वक उससे चुंबन-आलिंगन किया। उस मूर्ख (पति) को नीचे डाल दिया और वह चुपचाप पड़ा रहा ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ हाय-हाय! नीचे से चिल्लाता वह बोला कि हे पीर! यह तुमने क्या किया? तब पीर बोला कि तुमने जैसा किया वैसा फल पाया, मैं तुम्हें छोड़कर अन्यत्र नहीं जाऊँगा ॥ १२ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ अब मेरा अपराध क्षमा कीजिए और कुछ भूल-चूक हो गई हो तो माफ़ कीजिए। अब मैं तुम्हें छोड़कर हे पीर! कहीं नहीं जाऊँगा और हर वर्ष तुम्हारे पास आऊँगा ॥ १३ ॥ ॥ चौपाई ॥ प्रेमी ने जब मन भरकर भोग कर लिया तो नीचे से राजा को छोड़ दिया। स्त्री ने पहले मित्र को भेजा और फिर आकर राजा को उठाया ॥ १४ ॥ मूर्ख रहस्य न समझ सका और समझता रहा कि मुझे पीर ने पटका है। बंधन छूटने पर स्थान को साफ़ किया और स्त्री के प्रपंच को न समझ सका ॥ १५ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ उनतालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १३९ ॥ २७८१ ॥ अफजू ॥

अथ इक सौ चालीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ हिजलीबंदर को रहै बानी राइ नरेस। मेघमती रानी तहाँ रति के रहत सुबेस ॥ १ ॥ मजलिसि राइ बिलोकिकै रीझि रही त्रिय सोइ। बोलि भोग तासौ कियो रघुपति करै सु होइ ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ बानी राइ जब यौ सुनि पायो। कोऊ जार हमारे आयो। दोऊ बाँधि भुजा इहि लैहौं। गहरी नदी बीच बुरवैहों ॥ ३ ॥ रानी बात जबै सुन पाई। एक गोह कौ लयो मँगाई। बाँधि रसन तांसों इक लियो। ताहि चराइ दिवारहि दियो ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ तासो रसन बन्हाइकै जारहि दयो लँघाइ। मूढ़ राव चक्रित रह्यो सक्यो चरित्र न पाइ ॥ ५ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ चालीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १४० ॥ २७८६ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ इकतालीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ भसमांगद दानो बडो भीमपुरी के माँहि।

एक सौ चालीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ हिजलीबंदर का राजा बानीराय था। मेघमती रानी हमेशा रति के वेश में सुन्दर बनी रहती थी ॥ १ ॥ वह स्त्री मजलसराय को देखकर मोहित हो गई। उसे बुलाकर उसने उससे भोग किया। अब परमात्मा जो करेगा वही होगा ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ बानीराय ने जब सुना कि कोई प्रेमी मेरे यहाँ आ घुसा है तो सोचा कि दोनों हाथ बाँधकर गहरी नदी में फेंक दूंगा ॥ ३ ॥ रानी ने जब सुना तो एक गोह मँगवा ली। उसे रस्सी से बाँध लिया और एक दीवार पर चढ़ा दिया ॥४॥ ॥ दोहा ॥ उससे रस्सा बाँधकर यार को निकाल दिया। मूर्ख राजा आश्चर्यचकित रह गया और प्रपंच को न समझ सका ॥ ५ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में एक सौ चालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १४० ॥ २७८६ ॥ अफजू ॥

एक सौ इकतालीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ भीमपुरी में भस्मांगद नामक बहुत बड़ा दानव था,

ताँहि बराबरि भासकरि जुद्ध समै मो नाहि ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ तिन बहु बैठि तपस्या कियो । यौ बरदान रुद्र तें लियो । जाके सिर पर हाथ लगावै । जरि बरि भसम सु नर हो जावै ॥ २ ॥ तिन गौरी को रूप निहार्‌यो । यहै आपने ह्रिदै बिचार्‌यो । शिव के सीस हाथ मैं धरिहों । छिन मै याहि भसम करि डरिहों ॥ ३ ॥ चित मै इहै चित करि धायो । महाँरुद्र के बध हित आयो । महाँरुद्र जब नैन निहार्‌यो । निजु त्रिय को लै संग सिधार्‌यो ॥ ४ ॥ रुद्र भजत दानो हूँ धायो । दच्छिन पूरब सिवहि भ्रमायो । पुनि पच्छिम को हरजू धयो । पाछे लग्यो ताहि सो गयो ॥५॥ ॥ दोहरा ॥ तीनि दिसन मै भ्रमि रह्यो ठौर न पायो कोइ । उत्तर दिसि को पुनि भज्यो हरिजू करै सु होइ ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ जब उत्तर को रुद्र सिधायो । भसमांगद पाछे तिह धायो । याँ को भसम अबै करि दैहों । छीनि पारबती को त्रिय कैहों ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ पारबती बाच ॥ या बौरा तें मूड़ तै का बरु लियो बनाइ । सभ झूठा सो जानियै लीन अबै पतियाइ ॥८॥ ॥चौपई॥ प्रथम हाथ निजु सिर पर धरो । लहिहो एक केस जब जरो । तब सिर कर शिवजू

जिसके बराबर युद्ध करनेवाला अन्य कोई नहीं था ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने बैठकर घोर तप किया और रुद्र से वरदान ले लिया कि जिसके भी सिर पर हाथ रखे वह जलकर भस्म हो जाय ॥ २ ॥ उसने पार्वती का रूप देखा और मन में विचार किया कि शिव के सिर पर मैं हाथ रखूंगा और उसे तत्काल भस्म कर दूंगा ॥ ३ ॥ मन में यह विचार करके वह महारुद्र के वध के लिए चला । रुद्र ने जब उसे देखा तो पत्नी को साथ लेकर दौड़ पड़ा ॥ ४ ॥ शिव को भागते देखकर दानव भी भागा और दक्षिण-पूर्व में शिव को भी दौड़ाया । पुनः शिव पश्चिम को गया और दानव भी उसके पीछे दौड़ा ॥५॥ ॥ दोहा ॥ तीनों दिशाओं में उसने भ्रमण किया पर कहीं स्थान नहीं मिला । अब वह उत्तर दिशा में भागा । भगवान जो करेगा अब वही होगा ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब रुद्र उत्तर की तरफ़ गया तो भस्मांगद भी पीछे भागा कि इसको भस्म कर दूंगा और पार्वती को छीन लूंगा ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पार्वती उवाच ॥ हे मूर्ख ! यह तुमने क्या वरदान लिया है । यह सब झूठ है इसे जांच कर तो देखो ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ पहले अपने सिर पर हाथ

के धरियो । मोको निजु नारी लै करियो ॥ ९ ॥ यौ बच दैत स्रवन जब कर्यो । हाथ (मू०ग्रं०१०१९) आपने सिर पर धर्यो । छिनक बिखै मूरख जरि गयो । शिव को शोक दूरि करि दयो ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ अस चरित्र करि पारबती दीनो असुर जराइ । फटकाचल शिव के सहित बहुरि बिराजी जाइ ॥ ११ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इकतालीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १४१ ॥ २७९७ ॥ अफजूँ ॥

अथ इक सौ बिआलीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ शहिर बेसहर के बिखै बाणासूर नरेस । देस देस एस्वर झुके जनुक दुतिय अलिकेस ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ जोगमती ता की पटरानी । सुंदर भवन तीनहूँ जानी । जोबन जेब अधिक तिस सोहै । सुर नर जच्छ भुजंगन मोहै ॥२॥ ॥ दोहरा ॥ ऊखा नामा कंनिका उपजत भई अपार । लाज सील सुभ सकुच ब्रत निजु करि किय

रखो और यदि एक-दो बाल जलें तो हाथ हटा लेना । तब तुम शिव के सिर पर हाथ रखना और मुझे अपना बना लेना ॥ ९ ॥ दैत्य ने जब यह सुना तो हाथ अपने सिर पर रखा । क्षण भर में वह मूर्ख जल गया और इस प्रकार शिव का दुख दूर हो गया ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार प्रपंच द्वारा पार्वती ने असुर को जला दिया तथा कैलासपर्वत पर पुनः जा शोभायमान हो गई ॥ ११ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ इकतालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १४१ ॥ २७९७ ॥ अफजू ॥

एक सौ बयालीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ बाणासुर बेशहर नगर का राजा था और उसके ऐश्वर्य को देखकर राजा उसे दूसरा कुबेर मानते थे ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसकी रानी योगमती थी जो तीनों लोकों में सुन्दर जानी जाती थी । उसका यौवन अत्यधिक शोभायमान था और सुर-नर-भुजंग सभी उस पर मोहित थे ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ उषा नामक कन्या उसके यहाँ पैदा हुई । लाज, शील, सौंदर्य आदि में मानों कर्ता ने उसे स्वयं बनाया हो ॥ ३ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ उसके

करतार ।। ३ ।। ।। अड़िल्ल ।। ता को रूप अनूप सरूप बिराजई । सुर नर जच्छ भुजंगन को मनु लाजई । ता को कोर कटाछ बिलोकन पाइयै । हो बिन दीनो ही दामन सदा बिकाइयै ।।४।। नैन हरन से स्याम बिसिख जानुक बढियारे । सुभ सुहाग तन भरे चारु सोभित कजरारे । कमल हेरि छबि लजै दिपत दामन कुररावै । हो बन बन भ्रमै बिहंग आजु लगि अंत न पावै ।। ५ ।। जनुक पखरिआ तुरै जनुक जमधर सी सोहै । खड़ग बाढि जनु धरे पुहप नरगिसि तट को है । जनुक रैनि के जगे हेरि हर निजु छबि हारे । हो बालि तिहारे नैन जनुक दोऊ मतवारे ।। ६ ।। चुंचरीट छबि हेरि भए अब लगे दिवाने । म्रिग अब लौ बन बसत बहुरि ग्रहि कौ न सिधाने । तपसिन दुति कौ हेरि जटन को जूट छकायो । हो भ्रमत पंखेरू गगन प्रभा को पार न पायो ।। ७ ।। ता को रूप अनूप बिधातै जो रच्यो । रूप चतुरदस लोगन कौ या मै गच्यो । जो कोऊ देव अदेव बिलोकै जाइकै । हो गिरै मूरछना खाइ धरनि पर आइकै ।।८।। ।। दोहरा ।। सहसबाहु

अनुपम स्वरूप को देखकर सुर, नर, यक्ष, भुजंग लज्जित होते थे । उसके कटाक्ष देखने पर तो व्यक्ति बिना दाम के ही बिक जाता था ।। ४ ।। उसके नयन हिरण के समान मोटे और बाण के समान कटीले थे, जो बड़े ही शुभ और कजरारे थे । उनकी छवि को देखकर कमल लज्जित होते थे और बिजली कराह उठती थी । वन में पक्षी उसकी सुन्दरता का अन्त जानने के लिए उड़ते घूमते हैं, पर उसका अन्त नहीं जान पाते ।। ५ ।। वह सुन्दर घोड़ी के समान और चमकीली कृपाण के समान शोभायमान होती थी । वह मानों चमकता हुआ खड्ग थी । नरगिस का फूल भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता था । रात में जागने पर प्रातः अलसाई आँखों को देखकर जैसे व्यक्ति स्वयं लजा जाता है, उसी पर हे बालिके ! तुम्हारे नयन भी मतवाले हैं ।। ६ ।। भ्रमर तुम्हारी छवि को देखकर दीवाने हो गए हैं और मृग भी अब तक वन में आए वापस घर को नहीं लौटे । तपस्वियों ने छवि देखकर जटाओं के जूड़े खुले छोड़ दिए । पक्षी गगन में घूम रहे हैं, पर उसकी प्रभा का पार नहीं पा सके ।। ७ ।। उसका अनुपम रूप जो विधि ने बनाया है, उसमें चौदह भुवनों के लोगों का रूप सम्मिलित कर दिया है । कोई भी देव-अदेव उसे जा देखता है तो धरती पर मूर्च्छित हो गिर पड़ता है ।। ८ ।।

ता को पिता जाको बीरज अपार । बाहु सहस आयुध धरे जनु दूजो करतार ।। ९ ।। छित के जिते छितेस सभ बडे छत्रियन घाइ । बिप्रन कौ दछिना दई भूरि गाँइ सैदाइ ।।१०।। ।। चौपई ।। जाको खंड डंड निति भरै । ते शिव की पूजा निति करै । एक (मू०ग्रं०१०२०) दिवस पसुराट रिझायो । तुमल जुद्ध माँग्यो मुख पायो ।। ११ ।। ।। शिव बाच ।। ।। दोहरा ।। जब तेरे ग्रहि ते धरनि धुजा परैगी आनि । तुमल जुद्ध तब ही भयो लीजो समझि सुजानि ।। १२ ।। ।। चौपई ।। सोवत सुता सुपन यौ पायो । जानुक मैन रूप धरि आयो । ताँहि छोरि ता को सुत बरियो । नगर द्वारिका चितवन करियो ।। १३ ।। ।। दोहरा ।। चमक परी अबला तबै प्रीति पिया के संग । पुलकि पसीजत तन भयो बिरह बिकल भयो अंग ।।१४।। ।। चौपई ।। पिय पिय उठ अबलाहि उचरी । छित गिरि गई दातनी परी । तब सखियन तिह लयो उचाई । रेखा चित्र कथा सुनि पाई ।। १५ ।। ।। सवैया ।। घूमत नैन खुमारी सी मानहु गूड़ अगूड़न भेद

।। दोहा ।। सहस्रबाहु उसका अपार बलशाली पिता था और हाथों में शस्त्र पकड़कर वह दूसरा परमात्मा लगता था ।।९।। बड़े-बड़े क्षत्रियों को मारकर उसने धरती के राजाओं को जीत लिया और विप्रों को बुलाकर गऊ दान किया ।। १० ।। ।। चौपाई ।। सारी पृथ्वी जिसको कर देती थी वह शिव की पूजा नित्य करता था । उसने एक बार पशुपति शिव को प्रसन्न किया और भीषण युद्ध का वरदान माँगा ।। ११ ।। ।। शिव उवाच ।। ।। दोहा ।। जब तेरे घर से ध्वजा धरती पर आ गिरेगी तभी समझना भीषण युद्ध छिड़ जायगा ।। १२ ।। ।। चौपाई ।। उसकी पुत्री नें सपने में देखा मानों कामदेव (मनुष्य का) रूप धारण करके आया है । उसे छोड़कर उसके पुत्र का वरण कर लिया और वे द्वारिका नगरी की ओर चल पड़े ।।१३।। ।।दोहा।। प्रियतम के साथ रतिक्रीड़ा में वह बालिका हड़बड़ा उठी । वह प्रेम-पुलकन में पसीने से भीग गयी और अंग-अंग से विरह-वेदना फूटने लगी ।। १४ ।। ।। चौपाई ।। वह प्रिय-प्रिय उच्चारण करने लगी और धरती पर गिरकर बेसुध हो गई । तब सखियों ने उसे उठाया और उस चित्ररेखा ने भी सबकी बातें सुनी ।। १५ ।। ।। सवैया ।। वह मदमस्त नेत्रों से घूमने लगी मानों सब रहस्यों को बतानेवाली रहस्यवादिनी हो । उसे तन-ताप था और हार,

बतावै । ताप चड़ी तिह को तन कौ सखी हार शिंगार कियौ न सुहावै । बेगि चलो सुनि बैन बुलाइ लिउ तेरी दशा कहि मोहि न आवै । पीय की पीर कि पीर कछू निरखो पल मै कि मर्‌यो बचि आवै ॥ १६ ॥ ॥ सवैया ॥ बोलत हो मतवारे ज्यों माननि डारत आँखनि ते जल जैहै । घोरि हलाहल आजु पियैं नहि काँसी बिखै करवतहि लैहै । जानत हौ ग्रहि छाडि सखी सभ ही पट फारि अतीतनि ह्वैहै । लेहु बिलोकि पियारी को आनन ऊखकला मरिगे दुखु पैहै ॥ १७ ॥ ॥ दोहरा ॥ चितरेखा सुणि ए बचन हितू हेत दुख पाइ । पवन डारि पाछे चली तहाँ पहूँची जाइ ॥१८॥ ॥अड़िल्ल॥ ता को रूप बिलोक्यो जबही जाइकै । हितू हेतु गिरि परी धरनि दुख पाइकै । याहि सखी जिहि बिधि सौ पियहि मिलाइयै । हो जौन सुपनियै लह्यो वहै लै आइयै ॥१६॥ ॥चौपई॥ चित्रकला धौलहर उसारिस । चौदह भवन तहाँ लिखि डारिस । देव दैत तिह ठौर बनाए । गंध्रब जच्छ भुजंग सुहाए ॥ २० ॥ ॥ दोहरा ॥ देस देस के एस जे तह सभ लिखे बनाइ । रोहणेह प्रदुमन सुत हरि आदिक जदुराइ ॥ २१ ॥ चौदह

शृंगार, सखियाँ उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। सखियाँ कहने लगीं कि जल्दी करो, किसी को बुलाओ, कहीं हमारी हालत भी ऐसी न हो जाय। प्रियतम की पीड़ा ऐसी है कि उसे देखकर ही मृत्यु से बचा जा सकता है॥ १६ ॥ ॥ सवैया ॥ हे मानिनी! तुम बादलों के समान बोल रही हो और आँखों से जल बह रहा है। आज ज़हर पिया जायगा अथवा काशी में करवत्र (आरे) से कटा जायगा। हे सखियो! मैं घर छोड़ अभी संन्यासिन बन जाऊँगी। हे प्रियतम! आकर मुझे देख लो अन्यथा उषा कन्या दुख पाकर मर जायगी॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ चित्ररेखा सखी के दुखपूर्ण वचन सुनकर हवा से भी तेज़ गति से वहाँ जा पहुँची॥ १८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ उसने जब उसका रूप देखा तो वह भी सखी के नेह में दुखी होकर धरती पर गिर पड़ी। उससे उसने कहा कि हे सखी! किसी भी तरीक़े से मुझे प्रियतम से मिलाओ जो मैंने स्वप्न में देखा है, उसे ही ले आओ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ चित्रकला ने वहाँ महल बना दिए और चौदह भुवन वहाँ दिखा डाले। वहीं देव-दैत्य, गंधर्व, यक्ष, भुजंगादि शोभायमान कर दिए॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ देश-देशान्तरों के राजा रोहिणीपुत्र, प्रद्युम्नपुत्र, यदुराज, विष्णु आदि सब बना डाले॥ २१ ॥ चौदह पुरियाँ बनाकर

पुरी बनाइकै ताहि कह्यो समुझाइ । तुमरो जियब उपाइ मैं कियो बिलोकहु आइ ।। २२ ।। ।। चौपई ।। देव दिखाइ दैत दिखराए । गंध्रब जच्छ भुजंगहि राए । पुनि कैरव के कुलहि दिखायो । तिनहि बिलोकिन (मू०ग्रं०१०२१) त्रिय सुखु पायो ।। २३ ।। ।। दोहरा ।। चौदहि पुरी बिलोक करि तहाँ पहूँची आइ । जह सभ जदुकुल के सहित सोभति स्री जदुराइ ।। २४ ।। प्रथम लाँगिली कौ निरखि पुनि निरखे जदुराइ । ह्वै प्रसन्य पाइन परी जगत गुरू ठहराइ ।। २५ ।। ।। चौपई ।। बहुरि प्रदुमन निहार्‍यो जाई । लजत नारि नारी निहुराई । ता को पूत बिलोक्यो जबही । मिटि गयो शोक देह को सभही ।। २६ ।। ।। दोहरा ।। धन्य धन्य मुख कहि उठी सखियहि सीस झुकाइ । जो सुपने भीतर लह्यो सोई दयो दिखाइ ।। २७ ।। चौदहपुरी बनाइकै पिय को दरस दिखाइ । चित्र बिखै जिह बिधि लिख्यो सो मै देहु मिलाइ ।। २८ ।। ।। चौपई ।। चित्ररेख जब यौ सुनि पाई । पवन रूप ह्वैकै तित धाई । द्वारावती बिलोक्यो जबही । चित को शोक दूरि भयो सभही ।।२९।। ।।दोहरा।। चित्रकला

उसे समझाया कि तुम्हारे जीने का उपाय करते हुए मैंने सब बनाया है, तुम आकर देखो ।। २२ ।। ।। चौपाई ।। देव दिखाकर फिर दैत्य दिखाए। गंधर्व, यक्ष, भुजंग और पुनः कौरवों का कुल दिखाया, जिन्हें देखकर उस स्त्री को सुख प्राप्त हुआ ।। २३ ।। ।। दोहा ।। चौदह पुरियों को देखकर वह वहाँ पहुँची जहाँ यदुराज शोभायमान थे ।। २४ ।। पहले बलराम को देखा और फिर यदुराज को देखा। तब वह उन्हें जगत्‌गुरू मानकर प्रसन्नतापूर्वक पैरों पर आ गिरी ।। २५ ।। ।। चौपाई ।। फिर उसने प्रद्युम्न को निहारा और लज्जित हो सिर नीचा कर लिया। जब उसके पुत्र को देखा तो तन का सभी शोक समाप्त हो गया ।। २६ ।। ।। दोहा ।। सखी के प्रति सिर झुकाकर धन्य-धन्य कहते हुए कह उठी कि जो मैंने सपने में देखा था तुमने मुझे वही दिखा दिया है ।। २७ ।। चौदह पुरियों को दिखाकर तुमने मुझे प्रियतम दिखा दिया है। जैसे मुझे चित्र में दिखाया है, वैसे ही अब मुझे सचमुच में दिखा दो ।। २८ ।। ।। चौपाई ।। चित्ररेखा ने जब यह सुना तो पवनरूप हो उस ओर चल पड़ी। जब द्वारिका को उसने देखा तो मन का शोक तुरन्त दूर हो गया ।। २९ ।। ।। दोहा ।। चित्रकला ने वहाँ जाकर

तह जाइकै कहे कुअर सो बैन। गिरिबासिन बिरहनि भई निरखि तिहारे नैन ।। ३० ।। ।। चौपई ।। लाल करो तिह ठौर पयानो। जौन देस मैं तुमै बखानो। चड़ि बिवान मै तहाँ सिधारियै। धाम पवित्र हमारो करियै ।। ३१ ।। ।। दोहरा ।। अनरुध सुनि ऐसे बचन तह ते कियो पयान। शहिर बेशहिर के बिखै तहाँ पहूँच्यो आनि ।। ३२ ।। जो प्यारो चित मैं बस्यो ताँहि मिलावै कोइ। ता की सेवा कीजियै दासन दासी होइ ।। ३३ ।। ।। अड़िल्ल ।। कहौ त दासी होइ नीर गगरी भरि ल्याऊँ। कहो त बीच बजार दाम बिनु देह बिकाऊँ। भ्रितन भ्रितनी होइ कहौ कारज सोऊ कैहौ। हो तव प्रसादि मैं सखी आजु साजन कह पैहौ ।।३४।। तव प्रसादि मै सखी आजु साजन को पायो। तव प्रसादि सुनि हितू शोक सभ ही बिसरायो। तव प्रसादि सुनि मित्र भोग भावत मन करिहौ। हो पुरी चौदहूँ माँझ चीनि सुंदर पति बरिहौ ।।३५।। ।। दोहरा ।। ऐसे बचन उचारि करि मितवहि लियो बुलाइ। भाँति भाँति के भोग किय मनभावत लपटाइ ।। ३६ ।। ।। चौपई ।। आसन चौरासीहूँ लए। चुंबन

कुंवर से कहा, पर्वत-वासिनी (उषा) तुम्हारे नयन देखकर विरह-व्याकुल हो उठी है ।। ३० ।। ।। चौपाई ।। हे सुन्दर राजकुमार ! तुम उस देश में जाओ, जिसका मैंने वर्णन किया है। विमान पर चढ़कर वहाँ आओ और हमारा घर पवित्र करो ।। ३१ ।। ।। दोहा ।। अनिरुद्ध यह सुनकर वहाँ से चल पड़ा और बेशहर नगर में आ पहुँचा ।। ३२ ।। चित्त में बसनेवाले प्रिय को यदि कोई मिला दे तो उसके तो दासों की भी दासी होकर उसकी सेवा करनी चाहिए ।। ३३ ।। ।। अड़िल्ल ।। तुम कहो तो तुम्हारी दासी होकर मैं तुम्हारे लिए जल भर लाऊँ और कहो तो बाज़ार में तुम्हारे लिए बिना मोल बिक जाऊँ। दासों की दासी होकर कहो तो तुम्हारा काम करूँ। हे सखी ! मैं आज तुम्हारी कृपा से साजन को प्राप्त करूँगी ।। ३४ ।। हे सखी ! आज मैंने तुम्हारी कृपा से प्रिय को पा लिया है; तुम्हारी ही कृपा से आज मेरा सब शोक दूर हुआ है। तेरी ही कृपा से आज मैं मनचाहा रमण करूँगी और चौदह भुवनों में से सुन्दर पति का वरण करूँगी ।।३५।। ।। दोहा ।। यह कहकर मित्र को बुला लिया और लिपट-लिपटकर उससे मनचाहे भोग-विलास किए ।। ३६ ।। ।। चौपाई ।। चौरासी आसनों का प्रयोग किया और

भाँति भाँति सो दए । अति रति करत रैनि बीताई । ऊखा
काल पहूँच्यो आई ।। ३७ ।। भोर भई घर मीतहि राख्यो ।
बाणासुर सो प्रगटि न भाख्यो । तब लौ (मू०ग्रं०१०२२) धुजा
बधी गिरि गई । ता को चित चिंता अति भई ।। ३८ ।।
।। दोहरा ।। भाँति भाँति के शस्त्र लै सूरा सभै बुलाइ । शिव
को बचन सँभार कै तहाँ पहूच्यो आइ ।।३९।। ।।चौपई।। जोर
अनी राजा इत आयो । उत इन मिलि कै केल मचायो ।
चौरासिन आसन कह लेहीं । हसि हसि दोऊ अलिंगन
देहीं ।। ४० ।। केल करत दुहिता लखि पाई । जाग्यो क्रोध
त्रिपन के राई । अबही इन दुहूँअन गहि लैहैं । मारि कूटि
जमलोक पठैहैं ।। ४१ ।। ।। दोहरा ।। ऊखा निजु पितु को
निरखि नैन रही निहुराइ । करियै कछू उपाइ अब लीजै
मीत बचाइ ।। ४२ ।। उठि अनरुध ठाढो भयो धनुख बान लै
हाथ । प्रगट सुभट झटपट कटे अमित बिकट बल साथ ।।४३।।
।। भुजंग छंद ।। पर्यो लोह गाड़ो महाँ जुद्ध मच्च्यो ।
लए पारबती पारबतीनाथ नच्च्यो । गहे सूल सैंथी सभै
सूर धाए । महाँ कोप कै तुंद बाजी नचाए ।। ४४ ।।

विभिन्न प्रकार से चुंबनादि दिए । रतिक्रीड़ा में ही सारी रात बिता दी और उषाकाल हो चला ।। ३७ ।। प्रातः होने पर भी मित्र को घर पर रखा और बाणासुर को न बताया । तव तक बँधी हुई ध्वजा गिर गई और बाणासुर चिंतातुर हो उठा ।। ३८ ।। ।। दोहा ।। सभी शूरवीरों को भाँति-भाँति के शस्त्रों-समेत बुलाया जो शिव-वचन को याद करते हुए वहाँ आ पहुँचे ।। ३९ ।। ।। चौपाई ।। इधर तो राजा सेना एकत्र कर आ गया और उधर ये दोनों संयुक्त रूप से केलिक्रीड़ा में रत थे । चौरासी आसनों में लगे ये हंस-हँसकर एक-दूसरे से आलिंगनबद्ध हो रहे थे ।। ४० ।। जब पुत्री को क्रीड़ारत देखा तो सम्राट् का क्रोध भड़क उठा । उसने सोचा कि अभी इन दोनों को पकड़कर मार-पीटकर यमलोक भेज दूंगा ।। ४१ ।। ।। दोहा ।। उषा ने अपने पिता को देखकर आँखें झुका लीं और कहने लगी, हे मित्र ! अब कुछ उपाय करो और बचा लो ।।४२।। अनिरुद्ध हाथ में धनुष-बाण ले खड़ा हुआ और अपने बल-वैभव से अनेकों वीरों को तुरन्त काट डाला ।। ४३ ।। ।। भुजंग छंद ।। भीषण युद्ध हुआ और शिव भी पार्वती-समेत नाच उठे । शूल, कृपाणें पकड़कर वीर टूट पड़े और कुपित हो तेज

।। चौपई ।। केते प्रबल निबल तह कीने। जीति जीति केते
रिपु लीने। केते बिनु प्रानन भट भए। रहि रहि शस्त्र
साथ ही गए ।। ४५ ।। ।। भुजंग छंद ।। करी क्रोरि मारे रथी
कोटि कूटे। किते स्वार घाए फिरैं बाज छूटे। किते छत्र
छेके किते छत्र तोरे। किते बाँधि लीने किते छैल छोरे ।।४६।।
किते भीर भाजे किते कोपि ढूके। चहूँ ओर ते मारही
मारि कूके। लए बाहु साहंस्र को शस्त्र भारे। चल्यो
कोपिकै राज बाजे नगारे ।। ४७ ।। ।। दोहरा ।। जुद्ध भयो
कह लौ गनो इती न आवत सुद्धि। घाइन कै घाइल भए
बाँधि लयो अनरुद्ध ।। ४८ ।। ।। चौपई ।। जब ऊखा ऐसे सुनि
पाई। लीने मोर बाँधि सुखदाई। तब रेखा कह बोलि
पठाइस। नगर द्वारिका बहुरि पठाइस ।। ४९ ।। चली चली
जैयहु तुम तहाँ। बैठे क्रिशन श्याम घन जहाँ। दै पतिया
पाइन परि रहियहु। हमरी कथा छेरि तैं कहियहु ।। ५० ।।
।। अड़िल्ल ।। दीनानाथ हमारी रच्छा कीजियै। या संकट
को काटि आइ करि दीजियै। पर्यो बंद ते पौत्रहि अबै

घोड़ों को नचानें लगे ।। ४४ ।। ।। चौपाई ।। कितनें ही बलियों को निर्बल
कर दिया और कितने ही शत्रुओं को जीत लिया। कितने ही वीर प्राणहीन
कर दिए और शस्त्रों-समेत चले गए ।। ४५ ।। ।। भुजंग छंद ।। अनेकों रथी
और हाथी काट डाले गए। अनेकों ही सवार घायल हो गए और अनेकों
घोड़े खुले छूट गए। कितने ही छत्र फाड़ डाले गए, कितने ही बाँध लिये
गए और कितनें ही छोड़ दिए गए ।। ४६ ।। कहीं वीर भाग खड़े हुए और
कितने ही क्रुद्ध हो जुट गए। चारों ओर से 'मार-मार' की चीख-पुकार
सुनाई पड़ रही थी। सहस्रबाहु के शस्त्र लेकर राजागण नगारे बजाते
क्रुद्ध होकर चले ।। ४७ ।। ।। दोहा ।। इतना भीषण युद्ध हुआ कि कहा नहीं
जा सकता। घावों से घायल अनिरुद्ध को बाँध लिया गया ।। ४८ ।।
।। चौपाई ।। जब उषा ने यह सुना कि मेरा सुखदायक बाँध लिया गया।
तब रेखा को बुलाया और द्वारिका नगर भेजा ।। ४९ ।। तुम वहाँ चली जाओ
जहाँ श्रीकृष्ण-घनश्याम बैठे हैं। पत्र देकर पाँव पर गिर जाना और मेरी
सारी व्यथा कहना ।। ५० ।। ।।अड़िल्ल।। हे दीनानाथ ! हमारी रक्षा कीजिए
और आकर इस संकट को काट दीजिए। आपका पौत्र बंदी बना लिया
गया है, उसे छुड़ाइए और तब अपने आपको दीनों का उद्धार करनेवाला

छुराइयै । हो तब आपन कंह दीन उधरन कहाइयै ॥ ५१ ॥ प्रथम बकी को मारि बहुरि बगुलासुर मार्यो । सकटासुर केसियहि (मू०ग्रं०१०२३) केस गहि कंस पछार्यो । आघासुर त्रिणवरत मुसट चंडूर बिदारे । हो लीजै हमै बचाइ सकल हम सरनि तिहारे ॥ ५२ ॥ मधु कौ प्रथम सँघारि बहुरि मुर मरदन कीनो । दावानल ते राखि सकल गोपन को लीनो । महा कोपि करि इंद्र जबै बरखा बरखाई । हो तिसी ठौर तुम आन भए ब्रिजनाथ सहाई ॥ ५३ ॥ ॥ दोहरा ॥ जह साधन संकट बनै तह तह लए बचाइ । अब हमहो संकट बन्यो कीजै आनि सहाइ ॥ ५४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ चित्रकला इह भाँति दीन ह्वै जब कही । ता की ब्रिथा समस्त चित्त जदुपति लही । ह्वैकै गरुड़ अरूड़ पहूँचै आइकै । हो बिकट सुभट चटपट करि दए रिसाइकै ॥ ५५ ॥ ॥ चौपई ॥ भीरि परें भाजे भट भारे । जाइ राव पै बहुरि पुकारे । बैठ्यो कहा दैव के घाए । चढ़े गरुड़ गरुड़ध्वज आए ॥ ५६ ॥ ॥ दोहरा ॥ यौ सुनिकै राजा तबै रन चड़ि चल्यो रिसात । बाँधि बढारी उमगियो कौच न पहिर्यो गात ॥ ५७ ॥

कहलाइए ॥ ५१ ॥ आपने पहले बकी और बकासुर को मारा तथा केशी को केशों से पकड़कर पछाड़ मारा । अघासुर, तृणावर्त और चंडूर को मुष्टिका-प्रहार से मार डाला । अब हमें भी बचा लो, हम आपकी शरण में हैं ॥५२॥ मधु को पहले मारकर फिर मुर नामक राक्षस को मारा । फिर समस्त गोपों को दावानल से बचाया । जब इन्द्र ने क्रुद्ध हो वर्षा की तो हे व्रजनाथ ! उस स्थान पर भी आपने सहायता की ॥ ५३ ॥ ॥ दोहा ॥ जहाँ-जहाँ साधु पुरुषों पर संकट बने हैं, तुमने वहाँ-वहाँ उनको बचाया है । अब मुझ पर संकट पड़ा है, मेरी सहायता करो ॥ ५४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ चित्रकला ने जब इस प्रकार दीन होकर कहा तो यदुराज ने उसकी पूरी व्यथा चित्त में समझ ली । वे गरुड़ पर सवार होकर आ पहुँचे और श्रेष्ठ वीरों को क्रुद्ध हो तुरन्त काट दिया ॥ ५५ ॥ ॥ चौपाई ॥ संकट में पड़कर वीर हारकर भाग खड़े हुए और जाकर राजा के सम्मुख पुकारने लगे । तुम किस्मत के मारे कहाँ बैठे हो, वहाँ तो गरुड़ पर सवार होकर भगवान आए हैं ॥ ५६ ॥ ॥ दोहा ॥ यह सुनकर राजा क्रुद्ध हो चल पड़ा और कृपाण बाँधकर चला और उसने कवच भी तन पर नहीं पहना॥५७॥ ॥चौपाई॥ सेना एकत्र कर वह वहाँ जा पहुँचा,

॥ चौपई ॥ जोरै सैन जात भयो तहाँ। गाजत क्रिशनसिंघ जू जहाँ। अस्त्र शस्त्र करि कोप चलाए। काटि स्याम सभ भूमि गिराए ॥ ५८ ॥ ॥ नराज छंद ॥ सहस्र ही भुजान मै सहस्र अस्त्र शस्त्र लै। हठ्यो रिसाइकै हठी कमान बान पान लै। बधे रथी महाँरथी अप्रमान बान मारिकै। दए पठाइ स्वरग सूर कोप कौ सभारिकै ॥ ५९ ॥ ॥ चौपई ॥ बहु साइक जदुपति कौ मारे। बहु बानन सो गरुड़ प्रहारे। बहु सूलन सो रथी परोए। लगे सुभट सैहथियन सोए ॥ ६० ॥ तब स्री कोप क्रिशन करि दीनो। खंड खंड शस्त्रास्त्र कीनो। बाणासुरहि बान बहु मारे। बेधि बरम धनु चरम सिधारे ॥ ६१ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ बहुरि क्रिशन जी बान चलाए कोप करि। बाणासुर के चरम बरम सरबास्त्र हरि। सूत मारिहै चारो दए गिराइकै। हो रथी महाँ रथ अति रथियन को घाइकै ॥ ६२ ॥ चमकि ठाढ भुअ भयो आयुधन धारिकै। गरुड़ गरुड़ नायक को बिसिख प्रहारिकै। सात सात कहि आठ अरुज नहि मारि करि। हो कोटि करी कुरराइ हने रिसि धारि करि ॥ ६३ ॥ कोप क्रिशन के जग्यो धुजा काटत

जहाँ श्रीकृष्ण गरज रहे थे। उसने क्रुद्ध होकर अस्त्र-शस्त्र चलाए जिन सबको श्याम ने काटकर गिरा दिया ॥ ५८ ॥ ॥ नराज छंद ॥ सहस्र भुजाओं में सहस्र अस्त्र-शस्त्र लेकर वह हठी हाथ में धनुष-बाण लेकर अत्यन्त क्रुद्ध हो उठा। अनेक बाण मार के उसने रथियों, महारथियों को बाँध लिया और क्रोध में शूरवीरों को सँभाल कर स्वर्ग भेज दिया ॥ ५९ ॥ ॥ चौपाई ॥ बहुत से बाण उसने कृष्ण को मारे और बहुत से बाणों से गरुड़ पर प्रहार किया। बहुत से शूलों में रथी पिरो दिए और भालों से लगे वीर सो गए ॥ ६० ॥ तब श्रीकृष्ण ने क्रुद्ध हो शस्त्र-अस्त्रों को खंड-खंड कर दिया। बाणासुर ने भी बहुत से बाण मारे जो कवच को वेधकर चर्म में जा लगे ॥ ६१ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ पुनः श्रीकृष्ण ने क्रुद्ध हो बाण चलाए जो बाणासुर के कवच, चर्म तथा शस्त्रों को वेध गए। चारों साथियों को मारकर गिरा दिया। रथियों, महारथियों को मार दिया ॥ ६२ ॥ शस्त्रों को धारण कर वह बलपूर्वक धरती पर खड़ा हो गया। उसने गरुड़ और गरुड़नायक पर बाणों से वार किया। सात-आठ अर्जुन को भी मारे और अनेकों हाथियों को क्रोधपूर्वक मार डाला ॥ ६३ ॥ कृष्ण का क्रोध जाग उठा और उसने ध्वजा काट दी और शीघ्र ही छत्र को धरती पर गिरा दिया। चमड़े की ढालें और शत्रु को

भयो। (मू०ग्रं०१०२४) छिप्र छटा कर छत्र छितहि डारत भयो। चरम बरम रिपु चरम कोप करि काटियो। हो रथ रथियन रन भीतर तिल तिल बाटियो ॥ ६४ ॥ बडे दुबहिया मारे क्रिशन रिसाइकै। तिल तिल पाइ प्रहारे रथियन घाइकै। छैल चिकनिया काटे भुजा सहस्र हर। हो तव शिव पहुचे आइ सु भगत बिचारि करि ॥ ६५ ॥ बीस बान बिसुइस कर ब्रिज पति मारियो। बहुरि बान बत्तीस सु वाहि प्रहारियो। निरखि जुद्ध को जच्छ रहे चित लाइकै। हो देव अदेवन देव रहे उरझाइकै ॥६६॥ रुद्र क्रुद्ध अति भयो तपत तप छोरियो। सीत ताप तजि क्रिशन बकत्र तिह मोरियो। ऐस गौरि सौ गाह गगन सर लाइकै। हो तुमल जुद्ध करि लीनो खेत छिनाइकै ॥ ६७ ॥ ॥ दोहरा ॥ जीति शत्र निजु पौत्र की कीनी बंदि खलास। भाँति भाँति बाजन बजे हरखे सुनि सुर ब्यास ॥ ६८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ आनरुद्ध कौ ऊखा दई बिवाहिकै। गाढ़े गढ़ वारन गढ़ गजियन गाहिकै। हठे हठीलन जीति चले सुख पाइकै। हो दंतबक्त्र के संग बन्यो रन आइकै ॥ ६९ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ उतै दंतबकत्रा इते

क्रोधपूर्वक काट डाला। रण में रथियों और रथों को खंड-खंड कर दिया ॥ ६४ ॥ बड़े भुजबली वीरों को कृष्ण ने क्रोधित हो मार डाले। रथियों को मारकर तिल-तिल काट दिया। सहस्रबाहु ने भी अनेक छैलों को काट फेंका। तब शिव भी अपने भक्त का विचार कर आ पहुँचे ॥ ६५ ॥ विश्वेश कहकर कृष्ण ने बीस बाण मारे। उधर से बत्तीस बाण से उसने भी प्रहार किया। इस युद्ध को यक्ष भी चित्त लगाकर देख रहे थे। देव-अदेव सभी उलझन में पड़कर रह गए ॥ ६६ ॥ रुद्र ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर तपोग्नि छोड़ी और कृष्ण ने शीत-ताप की परवाह किए बिना उसका मुँह मोड़ दिया। इस प्रकार गौरीपति से भी आकाश में युद्ध कर तुमुल युद्ध किया और रणस्थल छीन लिया ॥ ६७ ॥ ॥ दोहा ॥ शत्रु को जीतकर पौत्र की खलासी की। भाँति-भाँति के वाद्य बजने लगे और सुर, नर, व्यासादि सभी हर्षित हो उठे ॥ ६८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ अनिरुद्ध से उषा का ब्याह कर दी। ऐसा महाबलियों का दलन करके ही संभव हो सका। हठी तो हठपूर्वक युद्ध जीतकर चल पड़े, इधर वक्तदंत्र के साथ युद्ध प्रारम्भ हो गया ॥ ६९ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ उधर वक्त्रदंत और इधर शूरवीर कृष्ण था। वहाँ हठी

क्रिशन सूरो। हटै न हठीलो महाँ जुद्ध पूरो। लए सूल सैथी महाँ बीर राजै। लखे दित्य आदित्य को द्रपु भाजै ॥७०॥ तबै छाडिकै चक्र दीनो कनाई। बही दैत की नारि मै धारि जाई। गिर्‌यो झूमिकै भूमि मै कोपि कूट्‌यो। मनो मेरु को सातवो स्रिग टूट्‌यो ॥७१॥ ॥ चौपई ॥ हनि अरि द्वारावती सिधारे। भाँति भाँति के बजे नगारे। पठे तरुनि पखरिया हरखे। सुर सभ पुहप गगन ते बरखे ॥ ७२ ॥ ॥ दोहरा ॥ बाहू छै बानास्र करि दंतबक्रतहि घाइ। हरी क्रिशोदरि जीति शिव धन्य धन्य जदुराइ ॥ ७३ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ बिआलीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १४२ ॥ २८७० ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ तैंतालीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ राजमती रानी रहै उत्तर देस अपार। गढ़ि बिधनै ताँ सी बधू और न सक्यो सवारि ॥ १ ॥ बिभ्रमदेव बडो बली ता को रहै नरेश। ता को तास समुंद्र

एवं युद्ध-कौशल में चतुर न हटनेवाले वीर थे। शूल और कृपाण लेकर महावीर शोभायमान हो रहे थे, जिन्हें देखकर दिति और अदिति-पुत्रों का भी गर्व चूर हो रहा था ॥ ७० ॥ तभी कृष्ण ने चक्र छोड़ा जो शत्रु की गर्दन पर लगा। क्रोध से कटा वह झूमकर भूमि पर गिर पड़ा। ऐसा लग रहा था, मानों सुमेरु की सातवीं चोटी टूटकर गिर पड़ी हो ॥ ७१ ॥ ॥ चौपाई ॥ शत्रु को मारकर वे द्वारिका नगरी में आ गए। वहाँ भाँति-भाँति के नगाड़े बज उठे। स्त्रियों ने सुन्दर घोड़े भेजे और देवताओं ने गगन से पुष्प-वर्षा की ॥ ७२ ॥ ॥ दोहा ॥ सहस्रबाहु बाणासुर को, वक्त्रदंत एवं शिव को जीतनेंवाले श्रीकृष्ण धन्य हैं ॥ ७३ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ बयालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १४२ ॥ २८७० ॥ अफजू ॥

एक सौ तेंतालीसवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ उत्तर देश में राजमती नामक एक रानी थी, जिसको अनुपम सौंदर्यशालिनी बना लेने पर विधि अन्य किसी को नहीं बना सका था ॥ १ ॥ विभ्रमदेव उसका बली राजा था जिसे समुद्र तक चारों ओर माना जता

लगि मनियत चारो देस ।। २ ।। क्रिपा (मू०ग्रं०१०२५) नाथ
जोगी तहाँ जा सम रूप न और । लखि अबला भू पर गिरै भई
मूरछना ठौर ।। ३ ।। ।। चौपई ।। बोलि लयो रानी
जोगिसबर । कामकेल तासौ बहु बिधि करि । पुनि ताही
आसन पहुचायो । रैनि भई तब बहुरि मँगायो ।। ४ ।।
।। दोहरा ।। भूधरसिंघ तहाँ हुतो अति सुंदरि इक राज ।
साज बाज भीतर किधौ बिसकरमा ते बाज ।। ५ ।। राज
निरखि सुंदर घनो रानी लियो बुलाइ । प्रथम भोग तासौ
कर्यो पुनि यौ कह्यो बनाइ ।। ६ ।। ।। अड़िल्ल ।। सुनिहो
प्रीतम राज काज मुर कीजियै । कछु धन छोरि भंडार हमारो
लीजियै । खोदि भूमि तर मंडप एक बनाइयै । हो मंडप
लख्यो न जाइ भूमि लहि जाइयै ।। ७ ।। तब तिन छोरि
भंडार अमित धन को लियो । खोदि भूमि के तरे बनावत
मट भयो । कै सोई स्यानो लखै न देवल पाइयै । हो और
भूमि सी सो भूअ चित्त मै ल्याइयै ।। ८ ।। ।। चौपई ।। राजहि
रानी रोज बुलावै । भाँति भाँति के केल कमावै । अति
सनेह तासौ उपजायो । जनुक सात फेरन को पायो ।। ९ ।।

था ।। २ ।। कृपानाथ नामक एक योगी था जिसके समान अन्य कोई रूपवान नहीं था । वह अबला उसे देखकर भूमि पर मूर्च्छित होकर गिर पड़ी ।। ३ ।। ।। चौपाई ।। रानी ने योगेश्वर को बुलवा लिया और उससे विभिन्न प्रकार से रति-क्रीड़ा की । फिर उसे उसके स्थान पर पहुँचा दिया और रात को पुनः मँगवा लिया ।। ४ ।। ।। दोहा ।। भूधरसिंह वहाँ एक अति सुन्दर राजा था और साज-सज्जा में विश्वकर्मा से भी श्रेष्ठ था ।। ५ ।। सुन्दर राजा को देख रानी ने तुरन्त उसे बुला लिया । पहले उससे रमण किया और ऐसे कहा ।। ६ ।। ।। अड़िल्ल ।। हे प्रियतम राज, मेरा कार्य करो । मेरा थोड़ा सा धन छोड़कर सारा भंडार तुम ले लो । भूमि को खोदकर एक देवस्थान बनाओ, जहाँ मंडप दिखाई न दे और केवल धरती ही दिखाई दे ।। ७ ।। तब उसनें खुले भंडार में से अपरिमित द्रव्य ले लिया और भूमि खोदकर नीचे एक मठ बना दिया । कोई चतुर भी वहाँ मंदिर को नहीं पा सकता था और उस स्थान को अन्य स्थानों जैसा स्थान समझता था ।। ८ ।। ।। चौपाई ।। रानी राजा को रोज़ बुलाती थी और भाँति-भाँति के विलास करती थी । उस राजा से तो उसने ऐसा प्रेम करना प्रारम्भ कर दिया मानों वह उसके साथ

केल कमाइ राज जब जावै। तब रानी जोगियहि बुलावै। चिमटि चिमटि तासौ रति मानै। मूरख राव भेद नहि जानै ॥ १० ॥ काम अधिक दिन राज सतायो। बिनु बोले रानी के आयो। केल करत सो त्रिय लखि पाई। ता के कोप जग्यो जिय आई ॥ ११ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ केल करत रानी तिह लख्यो बनाइकै। बाँधि रसरियन लियो सु दियो जराइकै। क्रिपानाथ के साथ कह्यो यौ जाइ करि। हो जो मै कहो चरित्र सु करियै नाथ बर ॥ १२ ॥ ॥ चौपई ॥ खान पान आगे तव धरिहौ। मुंद्रित मठ को द्वारनि करिहौ। खोदि भूमि इक चरित्र दिखैहौ। तव चरनन तर राव झुकैहौ ॥ १३ ॥ यौ कहि मूँदि दुआरन लियो। आगे ढेर भसम तिह कियो। आपु राव सौ जाइ जतायो। सोवत समै सुपन मैं पायो ॥ १४ ॥ इक जोगी सुपने मै लह्यो। तिह मोसो ऐसे जनु कह्यो। खोदि भूमि तुम मोहि निकारो। ह्वैहै बडो प्रताप तिहारो ॥ १५ ॥ भूधर राज खोदबे लायो। मै तुम सो यौ आनि सुनायो। तुमहूँ चले संग ह्वै तहाँ।

सात फेरे करके (विवाह करके) उसे प्राप्त की हो ॥ ९ ॥ जब रतिक्रीड़ा के बाद राजा चला जाता था तो रानी योगी को बुला लेती थी। उससे भी वह चिपक-चिपककर रतिक्रीड़ा करती थी और मूर्ख राजा इस रहस्य को नहीं समझ पाता था ॥ १० ॥ एक दिन राजा अत्यधिक कामासक्त हुआ और वह बिना बताए रानी के पास आ गया। उसने रानी को (योगी के साथ) केलि-क्रीड़ा में रत देखा तो उसका क्रोध भड़क उठा ॥ ११ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ इधर केलिक्रीड़ा-रत रानी ने भी उसे देख लिया। रानी ने राजा (भूधरसिंह) को रस्से से बाँध लिया और जला दिया। तब कृपानाथ (योगी) से कहा कि हे नाथ! अब मैं जैसा प्रपंच कहूँ तुम वैसा ही करो ॥ १२ ॥ ॥ चौपाई ॥ मैं खाने-पीने का समान तुम्हारे पास रख दूंगी और मंदिर का द्वार बन्द कर दूंगी। फिर धरती को खोदते हुए एक अन्य प्रपंच दिखाऊंगी और अपने राजा (विभ्रमदेव) को भी तुम्हारे चरणों पर झुका दूंगी ॥ १३ ॥ यह कहकर उसने द्वार बन्द कर दिया और भस्म का ढेर उसके सामने कर दिया। स्वयं जाकर राजा से कहा कि सोते समय मैंने सपना देखा है ॥ १४ ॥ मैंने सपने में एक योगी देखा है, जिसने मुझे सपने में ही यह कहा है कि भूमि को खोदकर तुम मुझे निकालो तो तुम्हारा बड़ा यश-प्रताप होगा ॥ १५ ॥ राजा भूधरसिंह

कहाँ चरित्र ह्वैहै धौ उहाँ ॥ १६ ॥ यौ कहि न्रिपति संग लै आई । भुअ खोदन त्रिय दयो लगाई । (मू०ग्रं०१०२६) मंडप तहाँ एक जब लहियो । धन्य धन्य पति त्रिय सों कहियो ॥ १७ ॥ जोगी निरखि सखी भजि आई । दौरि न्रिपति चरनन लपटाई । कह्यो सु जब खोलत द्रिग भयो । तब ही राज भसम ह्वै गयो ॥ १८ ॥ तब रानी यौ बचन उचारे । सुनहौ राव प्रान तें प्यारे । मोको जान प्रथम तह दीजै । बहुरों आपु पयानो कीजै ॥ १९ ॥ यौ कहिकै अबला तह गई । तासों केल कमावत भई । ता पाछे न्रिप को तह ल्याई । जोगी की झाँई दिखराई ॥ २० ॥ तब जोगी यौ बचन उचारे । बहत जानवी अबि लगि थारे । ता को हमको नीर दिखरियै । हम को शोक निवारन करियै ॥ २१ ॥ जब राजै ऐसे सुनि पायो । भरि गागरि गंगा जल ल्यायो । आइ सु नीर बिलोक्यो जबही । ऐसे बचन उचारे तबही ॥२२॥ निजु तूँबा ते दूध दिखायो । गंगोदक तहि को ठहरायो । कह्यो जानवी को का भयो । तब पै थो अब जल ह्वै

भी खोदने के लिए आया हुआ है और यही देखकर मैंने तुम्हें आ बताया है। तुम मेरे साथ चलो और देखो वहाँ क्या होता है ॥ १६ ॥ यह कहकर वह राजा को साथ ले आई और स्त्रियों को धरती खोदने के लिए लगा दिया। जब वहाँ एक मंडप देखा तो पति ने अपनी पत्नी (रानी) को धन्य-धन्य कहा ॥ १७ ॥ योगी को देखकर सखियाँ भागकर आ गई और राजा के चरणों से लिपट गई। कहने लगी कि जब उसने नेत्र खोला तो राजा (भूधरसिंह) भस्म हो गया ॥ १८ ॥ तब रानी ने कहा कि हे प्राण-प्यारे राजा ! सुनो। तुम मुझे पहले वहाँ जाने दो, फिर स्वर्ग जाना ॥ १९ ॥ यह कहकर रानी वहाँ गई और उससे केलि-क्रीड़ा करने लगी। फिर राजा को ले आई और योगी की परछाई उसे दिखाई ॥ २० ॥ तब योगी ने कहा कि तुम लोगों के (नगर के) पास गंगा बहती है। मेरे लिए उसका जल लाओ और मेरा शोक दूर करो ॥ २१ ॥ जब राजा ने यह सुना तो गंगा-जल की गागर भरकर ले आया। जब उसने लाया गया जल देखा तो कहने लगा ॥ २२ ॥ अपने कमंडल से योगी ने दूध दिखाया और बताया कि यह गंगा-जल है। फिर वह कहने लगा कि गंगा को यह क्या हो गया जो पहले दूध था अब पानी हो गया ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ हमनें यहाँ सतयुग में निवास

गयो ॥ २३ ॥ ॥ दोहरा ॥ सतिजुग के जुग मै हमो या मै
कियो निवास । अब बरतत जुग कौन सो सो तुम कहहु
प्रकास ॥ २४ ॥ ॥ चौपई ॥ सतिजुग बीते त्रेता भयो ।
ता पाछे द्वापर बरतयो । तब ते सुनु कलजुग अब आयो ।
सो तुहि कह हम प्रगट सुनायो ॥ २५ ॥ कलजुग नाम जबै
सुनि लयो । हा हा शबद उचारत भयो । तिहि मुहि बात
लगन नहि दीजै । बहुरो मूँदि दुआरन लीजै ॥ २६ ॥
॥ रानी बाच ॥ मैं सेवा तुमरी प्रभु करिहों । एक ताइ ठाढी
जल भरिहों । मूँदिन द्वारन को क्यो लीजै । हम पर नाथ
अनुग्रहु कीजै ॥ २७ ॥ पुनि राजै यौ बचन उचारो । क्रिपा
करहु मै दास तिहारो । यह रानी सेवा कह लीजै । मो पर
नाथ अनुग्रहु कीजै ॥ २८ ॥ ॥ दोहरा ॥ सेवा कह रानी
दई यौ राजै सुख पाइ । द्वारन मूँदिन ना दयो रह्यो चरन
लपटाइ ॥ २९ ॥ मूड़ राव प्रफुलित भयो सक्यो न छल कछु
पाइ । सेवा को रानी दई ताहि सिद्ध ठहराइ ॥ ३० ॥
राज मारि राजा छल्यो रति जोगी सो कौन । अधिभुत चरित्र
त्रियान कौ सकत न कोऊ चीन ॥ ३१ ॥ १ ॥ (मू०ग्रं०१०२७)

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ तेंतालीसवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ १४३ ॥ २६०१ ॥ अफजूं ॥

करना शुरू किया था । तुम लोग अब मुझे बताओ कि अब कौन-सा युग चल रहा है ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ सतयुग बीतकर त्रेता हुआ, उसके बाद द्वापर बीता, तब कलियुग लगा है जिसके बारे में मैंने तुमको बता दिया है ॥ २५ ॥ जब कलियुग शब्द उसने सुना तो 'हाय-हाय' चिल्लाने लगा । तुम लोग मुझे हवा मत लगने दो और दरवाज़ा बंद कर लो ॥ २६ ॥ ॥ रानी उवाच ॥ मैं तुम्हारी सेवा करूँगी और एक पाँव पर खड़ी होकर तुम्हारा पानी भरूँगी । दरवाज़ों को क्यों बंद करें, हे स्वामी ! हम पर कृपा कीजिए ॥ २७ ॥ पुनः राजा ने भी कहा कि मैं आपका दास हूँ, मुझ पर कृपा करो । मेरी इस रानी को सेवा के लिए स्वीकार कीजिए और मुझ पर कृपा कीजिए ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा ने सुखपूर्वक सेवा के लिए रानी दे दी और दरवाज़ा बन्द नहीं करने दिया तथा चरणों में लोटने लगा ॥ २९ ॥ मूर्ख राजा प्रपंच को न समझकर प्रसन्न हो उठा और उसे सिद्ध पुरुष मानकर उसे रानी दे दी ॥३०॥

राजा को मारकर दूसरे राजा को छला तथा योगी से रति-क्रिया की, यह स्त्रियों का अद्भुत चरित्र है जिसे कोई भी नहीं जान सकता ॥ ३१ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में एक सौ तेंतालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १४३ ॥ २९०१ ॥ अफजू ॥

अथ इक सौ चौतालीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ बीकानेर राव इक भारो । तीन भवन भीतर उजियारो । वती शिगार राव की रानी । सुंदरि भवन चौदहूँ जानी ॥ १ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ तहा राइ महताब सुदागर आइयो । लखि रानी को रूप हियो ललचाइयो । भेजि सहचरी तिह ग्रहि लयो बुलाइकै । हो मन मानत रति करी अधिक सुख पाइकै ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ नितप्रति रानी ताहि बुलावै । भाँति भाँति सो भोग कमावै । जानत रैनि अंत जब आई । ताँहि देत निजु धाम पठाई ॥ ३ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ चुनि चुनि भली मताह सुदागर ल्यावई । रानी ता कौ पाइ घनो सुख पावई । अति धन छोरि भंडार देह तहि नित्यप्रति । हो बस्यो रहत अबला के प्रीतम नित्य चित ॥४॥ ॥ चौपई ॥ मूरख राव जबै सुनि पाई । भाँति भाँति रानी डरपाई । या त्रिय को अबही हनि दैहौ । खोदि

एक सौ चौवालीसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ बीकानेर का एक बड़ा राजा था, जिसका तीनों लोकों में अपार यश था । शृंगारवती राजा की रानी थी जो चौदह भुवनों में सुन्दर जानी जाती थी ॥ १ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ वहाँ महताब राय नामक एक सौदागर आया और रानी के रूप को देखकर मन में ललचा उठा । रानी ने भी उसे सैनिक भेजकर बुलवा लिया और मनमाना भोग-विलास किया ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ नित्य रानी उसे बुलाती और भाँति-भाँति से रमण करती । जब देखती कि रात बीतनेवाली है तो उसे उसके घर भेज देती ॥ ३ ॥ ॥अड़िल्ल॥ सौदागर भी चुन-चुनकर पदार्थ लाता, जिन्हें पाकर रानी घना सुख प्राप्त करती थी । वह भी उसे अपने भंडार से खुले दिल से देती थी और वह प्रियतम भी सदैव उसके चित में बसा रहता था ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ मूर्ख राजा को जब पता लगा तो वह रानी बुरी तरह डर गई । राजा ने सोचा

3

भूमि के बिखै गडैहौ ।। ५ ।। जब रानी ऐसे सुनि पायो ।
तौन जार को बोलि पठायो । ता को कह्यो संग मुहि लीजै ।
अपने देस पयानो कीजै ।। ६ ।। मंदिर एक उजारि बनायो ।
दो द्वारन ता मै रखवायो । हम खोजत इह मग जौ ऐहैं । दूजे
द्वार निकसि हम जैहैं ।। ७ ।। ।। अड़िल्ल ।। एक साँढनी त्रिप
की लई मँगाइकै । ता पर भए स्वार दोऊ सुख पाइकै ।
तौन महल के भीतर पहुचे आइ करि । हो भाँति भाँति के केल
करे सुख पाइ करि ।। ८ ।। सुनि राजा त्रिय भजी चड़्यो
रिसि खाइकै । साथी लीनो संग न कोऊ बुलाइकै । लै
पाइन के खोज पहूच्यो आइ करि । हो वा मंदिर के माझ
धस्यो कुरराइ करि ।। ९ ।। ।। दोहरा ।। थकि साँढिन तिनकी
गई तहाँ जु पहुचे जाइ । अथक ऊँटनी राव चड़ि तहाँ पहूँच्यो
आइ ।। १० ।। उतरि साँढि ते राव तब तहाँ चड़्यो रिसि
खाइ । इन दुहूँअन गहि जमसदन दैहौ अबै पठाइ ।। ११ ।।
।। चौपई ।। इह मारग जब त्रिप चड़ि गए । दुतिय मारगु
उतरत ते भए । अथक साँढनी पर चड़ि बैठे । रानी सहित सु
जार इकैठे ।। १२ ।। ।। अड़िल्ल ।। अथक साँढि चड़ि बैठि
दई धवाइकै । पवन बेगि ज्यों चली मिलै को जाइकै ।

कि इस स्त्री को तुरन्त मार दूंगा और ज़मीन में गाड़ दूंगा ।। ५ ।। जब रानी ने सुना तो उस प्रेमी को बुलवाया । उससे कहा कि मुझे साथ लेकर अपने देश को प्रस्थान कर जाओ ।। ६ ।। उन्होंने उजाड़ में एक घर बनवाया और यह सोचकर उसमें दो दरवाज़े बनवाये कि यदि खोजते हुए वे एक द्वार से अंदर आ जाएँगे तो दूसरे से हम निकल जाएँगे ।। ७ ।। ।। अड़िल्ल ।। उन्होंने राजा की एक साँड़नी मँगवाई और सुखपूर्वक उस पर दोनों सवार हो गए । वे अब उस महल में आ पहुँचे और सुखपूर्वक विभिन्न प्रकार की क्रीड़ाएँ करते रहे ।। ८ ।। जब राजा ने सुना कि स्त्री भाग गई है तो क्रुद्ध हो चल पड़ा तथा साथ में किसी को भी न लिया । वह पद-चिह्नों को देखता वहाँ आ पहुँचा और चिल्लाता हुआ उस महल में आ धँसा ।। ९ ।। ।। दोहा ।। वहाँ पहुँचते-पहुँचते रानी की साँड़नी तो थक गई थी, पर राजा न थकनेवाली ऊँटनी पर सवार हो वहाँ आ पहुँचा ।। १० ।। राजा अपनी साँड़नी से उतर कर क्रुद्ध होकर चला कि इन दोनों को पकड़कर अभी यमलोक पहुँचा दूंगा ।। ११ ।। ।। चौपई ।। जब राजा इधर से आया तो दूसरे रास्ते से वे निकल गए और प्रेमी-प्रियतम अथक साँड़नी पर सवार हो गए ।। १२ ।।

उतरि राव का देखै दिशटि पसारिकै। हो उतिम साँढिन हरी (मू०ग्रं०१०२८) मत्त महि मारकै ।। १३ ।। ।। चौपई ।। तब राजा प्यादो रहि गयो। पहुचत तिनै न क्योहूँ भयो। छल बल सभ अपने करि हार्‌यो। लै रानी ग्रहि जार पधार्‌यो ।। १४ ।। ।। अड़िल्ल ।। दुहूँ हाथ निजु मूँड छार डारत भयो। जनुक राह मै लूटि किनू ताकौ लयो। गिर्‌यो झूमिकै भूमि अधिक मुरझाइकै। हो बूडि नदी महि मर्‌यो अधिक बिख खाइकै ।। १५ ।। लै रानी को जार जबै ग्रहि आइयो। भाँति भाँति सो दरबु दिजानु लुटाइयो। जौ ऐसी अबला कौ छल सौ पाइयै। हो बिनु दामन तिह दए हाथ बिकि जाइयै ।। १६ ।। छल अबला छैलन को कछू न जानियै। लह्यो न जाकौ जाइ सु कैस बखानियै। जु कछु छिद्र इनके छल कौ लखि पाइयै। हो समुझि चित्त चुप रहो न किसू बताइयै ।। १७ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ चौतालीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १४४ ।। २६१८ ।। अफजूं ।।

।। अड़िल्ल ।। वह अथक साँड़नी पर बैठे और उसे धकेल दिया। वह पवन-वेग से चल पड़ी। अब भला उससे कौन मिल सकता था। घर से उतर कर राजा ने देखा कि मुझे बेवकूफ़ बनाकर उत्तम साँड़नी का हरण कर लिया गया है ।। १३ ।। ।। चौपाई ।। तब राजा पैदल रह गया और किसी भी तरह उन तक नहीं पहुँच सका। वह अपना छल-बल लगाकर हार गया और वह यार रानी को लेकर अपने घर जा पहुँचा ।। १४ ।। ।।अड़िल्ल।। (राजा) दोनों हाथों से सिर पर ऐसे मिट्टी डालने लगा; मानों उसे किसी ने राह चलते लूट लिया हो। वह अत्यधिक शोकाकुल हो धरती पर गिर पड़ा और अत्यन्त विषादयुक्त होकर नदी में डूब मरा ।। १५ ।। वह प्रेमी जब रानी को लेकर घर आया तो उसने अपार द्रव्य ब्राह्मणों में लुटाया। यदि प्रपंच से ऐसी स्त्री मिल जाय तो बिना दाम ही उसके हाथों बिक जाना चाहिए ।। १६ ।। स्त्री-पुरुषों के प्रपंचों को जानना नहीं चाहिए। जब तक देखा न जा सके उसका वर्णन कैसे किया जाय। यदि इनके छल-छिद्र का पता लग भी जाय तो समझते हुए भी चुप लगा जाना चाहिए और किसी को बताना नहीं चाहिए ।। १७ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सो चौवालीसवें चरित्र ।। ६१ ।। [illegible] की शुभ सत् समाप्ति ।। १४४ ।। २६१८ ।। अफजू ।।

अथ इक सौ पैंतालीसवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। शहिर सिपाहा कै बिखै भागवती त्रिय
एक । ताके पति के धाम मै घोरी रहै अनेक ।। १ ।।
।। चौपई ।। घोरी एक नदी तट गई । दरिआई है लागत भई ।
ताते एक बछेरो भयो । जनु अवतार इंद्र है लयो ।। २ ।।
सक्र बरन अति ताहि बिराजै । ताकौ निरखि चंद्रमा लाजै ।
चमकि चल्यो इह भाँति सुहावै । जनु घन प्रभा दामनी
पावै ।। ३ ।। ताकौ लै बेचन त्रिय गई । शहिर शाह के
आवत भई । आपुन भेस पुरख को धारे । कोटि सूर जन
चढ़े सवारे ।। ४ ।। जबै शाह दीवान लगायो । त्रिया तुरै लै
ताहि दिखायो । निरखि रीझि राजा तिह रहियो । लीजै
मोल तिसै चित चहियो ।। ५ ।। प्रथम हुकम करि तुरै
फिरायो । बहुरि भेजि भ्रित मोल करायो । टका लाख दस
कीमति परी । मिलि गिलि मोल दलालन करी ।। ६ ।।
।। अड़िल्ल ।। तब अबला तिन बचन उचारे बिहसि करि ।
लीजै हमरो बैन शाह तू स्रोन धरि । पाँच हजार मुहर मुहि

एक सौ पैंतालीसवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। सिपाहा शहर में भागवती नामक एक स्त्री थी, जिसके पति के घर में अनेकों घोड़ियाँ थीं ।। १ ।। ।। चौपाई ।। एक घोड़ी नदी-तट पर गई और दरियाई घोड़े से संयुक्त हो गयी । उससे एक बच्चा पैदा हुआ जो मानों इन्द्र का अवतार था ।। २ ।। गौरवर्ण उसका शोभायमान था जिसे देखकर चन्द्रमा भी लज्जित होता था । वह चमककर चलता ऐसा लगता था मानों बादलों में बिजली शोभा पाती हो ।। ३ ।। उसे लेकर वह स्त्री बेचने गई और शाह के शहर आ पहुँची । अपना वेश उसने पुरुष का बनाया जो अनेकों सूर्यों के समान था ।। ४ ।। शाह ने जब दरबार लगाया तो स्त्री ने घोड़ा दिखाया । राजा उसे देखकर रीझ उठा और मन में उसने ख़रीद लेने की सोच ली ।। ५ ।। पहले घोड़े को दौड़ाकर देखा और फिर सेवक को भेजकर मोलभाव करवाया । दलालों ने मिल-जुलकर दस लाख टका उसकी क़ीमत आँकी ।। ६ ।। ।। अड़िल्ल ।। तब स्त्री ने हँसकर शाह से कहा कि तुम मेरी बात सुन लो । मुझे पाँच हज़ार मुहर दे दो, तब इस घोड़े को अपने

ह्याँ दै जाइयै । हो लैकै बहुरि तबेले तुरै बँधाइयै ।। ७ ।। शाह अशरफी पाँच हजार मँगाइकै । चरे तुरंग तिह दीनी कर पकराइकै । कह्यो मुहर पहुचाइ बहुरि मै आइहौ । हो ता पाछे (मू०ग्रं०१०२९) घुरसारहि घोर बँधाइहौ ।। ८ ।। यौ कहि तिन सौ बचन धवायो तुरै त्रिय । पठै पखरिया पहुचे करिकै कोप हिय । कोस डेढ सै लगे हटे सभ हारिकै । हो हाथ न आई बाल रहे सिर मारिकै ।। ९ ।। मुहरै ग्रहि पहुचाइ सु आई बाल तह । बैठो चारु बनाइ शाह जू सभा जह । तुरतु तुरै ते उतरि सलामै तीनि कर । हो लीजै अपनो तुरै लयो मै मोल भरि ।। १० ।। ।। दोहरा ।। मुहरैं घर पहुचाइकै तिन कौ चरित दिखाइ । आनि तुरो न्रिप को दियो ह्रिदै हरख उपजाइ ।। ११ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पैंतालीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १४५ ।। २९२९ ।। अफजूं ।।

तबेले में बाँधो ।। ७ ।। शाह नें पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ मँगाकर उसे घोड़े पर चढ़े हुए को ही हाथ में पकड़ा दी । तब उसने कहा कि मैं मुहरों को पहुँचाकर आता हूँ और फिर आपकी घुड़साल में घोड़ा बाँधता हूँ ।। ८ ।। यह कहकर स्त्री नें घोड़ा दौड़ा लिया और शाह नें क्रुद्ध होकर पीछे घुड़सवार भेजे। डेढ़ सौ कोस तक पीछा करके सभी हारकर हट गये । वह स्त्री उनके हाथ नहीं आई, वे सिर पटककर रह गये ।। ९ ।। मुहरों को वह स्त्री पहुँचाकर वहाँ आई जहाँ शाह दरबार लगाकर बैठा था । उसने घोड़े से उतर कर तुरन्त तीन बार सलाम किया और कहा कि मुझे मोल मिल गया है अब आप अपना घोड़ा ले लें ।। १० ।। ।। दोहा ।। मुहरें घर पहुँचा कर उनको चरित दिखाकर मन में सुखपूर्वक फिर वापस पहुँचकर राजा को भी घोड़ा दे दिया ।। ११ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में एक सौ पैंतालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १४५ ।। २९२९ ।। अफजू ।।

अथ इक सौ छ्यालीसवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। प्रमुदकुअरि रानी रहै जाको रूप अपार ।
बिजैराज राजा निरखि कियो आपना यार ।।१।। ।।अड़िल्ल।। बिजै
राज को लीनो धाम बुलाइकै । लपटि लपटि रति करी हरख
उपजाइकै । पुनि तासो यौ बचन उचारे प्रीति करि ।
हो सुनि राजा मुरि बैन लीजिअहि ह्रिदै धरि ।। २ ।।
जब मुर कियो सुयंबर पिता बनाइ करि । हौ लखिकै
तुमरो रूप रही उरझाइ करि । अवर राव मुहि लै
गयो जुद्ध मचाइकै । हो मोर न बसि कछु चल्यो मरों बिख
खाइकै ।। ३ ।। लगन अनोखी लगै न तोरी जात है ।
निरखि तिहारो रूप न हियो सिरात है । कीजै सोऊ चरित
जु तुम कह पाइयै । हो निजुनारी मुहि कीजै सु बिधि
बताइयै ।। ४ ।। महाँ रुद्र के भवन जुगिनि ह्वै आइहो ।
कछुक मनुख लै संग तहाँ चलि जाइ हो । महाराज जू तुम तह
दलु लै आइयो । हो दुशटन प्रथम सँधारि हमै लै

एक सौ छियालीसवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। प्रमोदकुँवरि एक अपार रूपवती रानी थी, जिसने विजयराज राजा को देखकर उसे अपना प्रेमी बना लिया ।। १ ।। ।। अड़िल्ल ।। विजयराज को घर बुला लिया और उससे लिपट-लिपटकर रतिक्रीड़ा की । फिर उससे कहा कि हे राजन् ! मेरी बात ध्यानपूर्वक सुन लो ।। २ ।। जब मेरे पिता ने मेरा स्वयंवर किया था तो मैं तुम्हारा स्वरूप देखकर उलझ कर रह गई थी । मुझे उस समय अन्य राजा युद्ध के माध्यम से छीनकर ले गया था । मेरा उस समय कुछ बस नहीं चला था । मैं ज़हर खाकर मर जाने की सोचती हूँ ।। ३ ।। अब यह अनोखी लगन लग गई है जो तोड़े नहीं बनती और इधर तुम्हारा रूप-सौंदर्य देखकर भी मन शान्त नहीं रहता । कोई प्रपंचात्मक कार्य करो, जिससे मैं तुम्हें पा जाऊं । मुझे वह विधि बताओ जिससे तुम मुझे अपनी बना सको ।। ४ ।। मैं शिव-मंदिर में योगिनी होकर आ जाऊँगी और तुम कुछ व्यक्ति वहाँ लेकर चले आना । मैं कहूँगी कि हे महाराज ! तुम्हारे ऊपर किसी दल नें चढ़ाई कर दी है । फिर तुम पहले दुष्टों का नाश कर देना और फिर मुझे ले जाना ।। ५ ।। उससे सुखपूर्वक यह बात

जाइयो ।। ५ ।। बदि तासो संकेत बहुरि सुख पाइकै । निजु मुख ते कहि लोगन दई सुनाइकै । महाँरुद्र के भवन कालि मैं जाइहो । हो एक रैनि जगि बहुरि सदन उठि आइहो ।। ६ ।। कछुक मनुछ लै संगि जाति तित को भई । महाँरुद्र के भवन जगत रजनी गई । प्यारी को आगम राजै सुनि पायो । हो भोर होन नहि दई जोरि दलु आयो ।। ७ ।। जो जन त्रिय के संग प्रथम तिन घाइयो । जीयत बचे जो जोधा तिनै भजाइयो । ता पाछे रानी को लयो उचाइकै । हो ग्रहि अपने को गयो हरख (मू०ग्रं०१०३०) उपजाइकै ।। ८ ।। रानी को लीनो सुखपाल चड़ाइकै । आलिंगन चुंबन कीने सुख पाइकै । सुनत लोग के त्रिय बहु कूक पुकार की । हो चित अपने के बीच दुआए देत भी ।। ९ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ छ्यालीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १४६ ।। २९३८ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ सैंतालीसवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। खैरी नाम बलोचनि रहै । दुतिय सवति संमी जग कहै । फतहखान ताको पति भारो । तिहूँ भवन

तय करके वह अपने मुँह से लोगों को सुनाकर कहने लगी । मैं शिव-मंदिर में आज जाऊँगी और एक रात्रि जगकर फिर घर वापस आ जाऊँगी ।। ६ ।। वह कुछ मनुष्यों के साथ रात्रि-जागरण के लिए शिव-मंदिर में आ गई। राजा ने जब प्यारी का आगमन सुना तो उसने सुबह नहीं होने दी और सेना एकत्र कर आ पहुँचा ।। ७ ।। जो व्यक्ति स्त्री के साथ थे, पहले उनको मारा और बचनेवालों को भगा दिया । उसके बाद रानी को उठा लिया और सुखपूर्वक अपने घर को चला गया ।। ८ ।। रानी को पालकी पर बिठा लिया और प्रेमपूर्वक आलिंगन-चुंबनादि किए । लोगों को सुनाने के लिए चीख-पुकार की, परन्तु मन ही मन वह राजा को दुआएँ दे रही थी ।। ९ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ छियालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १४६ ।। २९३८ ।। अफजू ।।

एक सौ सैंतालीसवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। खैरी नामक एक स्त्री थी, जिसकी शम्मी नामक एक सौतन थी । उनका पति फ़तह ख़ान था जो तीनों भुवनों में जाना जाता था ।। १ ।।

भीतर उजियारो ॥ १ ॥ रोस कियो ताँ पै हजरति अति । मुहिम्म सैदखाँ करी बिकट मति । ताहि मिलाइ बहुरि गहि लीनो । मुलतान ओर पयानो कीनो ॥ २ ॥ बँध्यो राव बालन सुनि पायो । सकल पुरख को भेख बनायो । बालोची सैना सभ जोरी । भाँति भाँति अरि प्रतिना तोरी ॥ ३ ॥ ॥दोहरा ॥ घेरि सैदखाँ कौ त्रियन ऐसे कह्यो सुनाइ । कै हमरो पति छोरियै कै लरियै समुहाइ ॥ ४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ सैद खान ऐसे बचनन सुनि पाइकै । चढ़्यो जोरि दलु प्रबल सु कोप बढाइकै । है गै पैदल बहुबिधि दए सँघारिकै । हो सूरबीर बाँकन कौ बान प्रहारिकै ॥ ५ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ बजी भेर भारी महाँसूर गाजे । बँधे बीर बानान बाँके बिराजे । किते सूल सैथीन के घाइ घाए । मरे जूझि जाहान मानो न आए ॥ ६ ॥ गजैराज जूझे किते बाज मारे । कहूँ राज घूमै कहूँ ताज डारे । किते पाक शाहीद मैदान हूए । बसे स्वरग मो जाइ मानो न मूए ॥ ७ ॥ ॥चौपई ॥ खैरी जाहि खग्ग गहि मारै । गिरै भूमि न रतीक सँभारै । संमी निरखि जाँहि सर छोरै । एकै बान

बादशाह उस पर बहुत नाराज़ हो गया और सैद ख़ाँ के साथ भारी सेना भेजी । उसने उसे मिलकर पकड़ लिया और मुलतान की ओर प्रस्थान किया ॥ २ ॥ स्त्रियों ने जब सुना कि राजा बाँध लिया गया है, तो उन्होंने पुरुष-वेश धारण किया । उन्होंने बलूची सेना को एकत्र किया और विभिन्न तरीक़ों से शत्रु-सेना को तोड़ दिया ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ सैद ख़ाँ को घेरकर स्त्रियों ने कहा कि या तो हमारा पति छोड़ दो अथवा हमसे सामने आकर लड़ो ॥ ४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ सैद ख़ाँ यह सुनकर क्रुद्ध होकर सेना लेकर चल पड़ा । उसने अश्व, हाथी, पैदल तथा अनेकों शूरवीरों का संहार कर दिया ॥ ५ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ घनघोर भेरी बजी और शूरवीर गरजने लगे । वीर बाँके बाणों से बँधे शोभायमान होने लगे । कितने ही शूल, कृपाणादि से घायल हो ऐसे मारे गए मानों वे इस संसार में ही न आए हों ॥ ६ ॥ कहीं हाथी, कहीं घोड़े मारे गए, कहीं राजागण घूम रहे थे और कहीं उनके ताज पड़े थे । कितने ही मैदान में शहीद होकर स्वर्ग में जा बसे और ऐसे लग रहे थे मानों मरे ही न हों ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ खैरी जिस पर भी खड़ग चलाती थी वह तनिक भी सँभले बिना भूमि पर गिर पड़ता था । शम्मी जिसे भी देखकर बाण छोड़ती थी, वह उस एक ही बाण से शत्रु का सिर तोड़ देती थी ॥ ८ ॥ ॥ सवैया ॥ कहीं खड़ग पड़े थे, कहीं म्यान

मूंड अरि तोरै ।। ८ ।। ।। सवैया ।। खग्ग परे कहूँ खोल झरे कहूँ टूक गिरे छित ताजन के । अरु बान कहूँ बरछी कतहूँ कहूँ अंग कटे बर बाजन के । कहूँ बीर परै कहूँ चीर दिपै कहूँ मूंड गिरे गजराजन के । अति मारि परी न सँभारि रही सभ भाजि चले सुत राजन के ।। ९ ।। ।। चौपई ।। केते बिकट सुभट कटि डारे । केते करी हने मतवारे । दल पैदल केते रन घाए । जियत बचे लै प्रान पराए ।। १० ।। खैरी संमी जात भई तहाँ । ठाढो सैदखान थो जहाँ । (मू०ग्रं०१०३१) निजु हथियहि जंजीरहि डारै । तही जाइ झारी तरवारै ।। ११ ।। खुनसि खग्ग खतियहि प्रहार्‌यो । प्रथम करी कर कौ कटि डार्‌यो । बहुरि खान कौ तेग चलाई । ग्रीवा बची नाक पर आई ।। १२ ।। ।। दोहरा ।। अटिक नाक मै असि रह्यो गयो हाथ ते छूटि । भुजा अंबारी सौ बजी रही बँगुरियै टूटि ।। १३ ।। ।। चौपई ।। तब संमी सैहथी सँभारी । महाँ शत्र के उर मै मारी । बरछा भए परोइ उतार्‌यो । सभन दिखाइ भूम पर मार्‌यो ।। १४ ।। बंगु निहार त्रिया पहिचानी । धन्य धन्य सैद खाँ बखानी । इनके पेट पुत्र जो

गिरी थी और कही घोड़ों के छत्र छिटके पड़े थे । कहीं बाण, कहीं बर्छी और कहीं अश्वों के अंग गिरे पड़े थे । कहीं वीर पड़े थे, कहीं उनके वस्त्र चमक रहे थे और कहीं हाथियों के सूंड़ कटकर गिरे थे । वहाँ इतने भीषण प्रहार हो रहे थे कि राजागणों के राजकुमार भाग खड़े हुए ।।९।। ।।चौपाई।। कितने ही विकट वीर काट डाले और कितने ही मतवाले हाथियों को काट डाला । कितने ही पैदलों को युद्ध में मार डाला और जो बच गए वे प्राण लेकर भाग खड़े हुए ।। १० ।। खैरी और शम्मी वहाँ जा पहुँचीं, जहाँ सैदख़ान खड़ा था । अपने हाथों ज़ंजीर डालकर वहाँ जा तलवारों से प्रहार किया ।। ११ ।। क्रुद्ध हो योद्धा ने वार किया और हाथी की सूंड़ काट डाली । फिर ख़ान पर कृपाण चलाई । उसकी गर्दन तो बच गई पर नाक पर आ पड़ी ।।१२।। ।। दोहा ।। कृपाण नाक में अटककर हाथ से छूट गई । उसकी भुजा हाथी के छतदार हौदे से टकरायी और उसकी चूड़ियाँ टूट गयीं ।। १३ ।। ।। चौपाई ।। तब शम्मी ने बरछी सँभाली और उस महाशत्रु के हृदय में भोंक दी । उसे बरछे से पिरोकर धरती पर सबको दिखाते हुए उतार मारा ।। १४ ।। चड़ी देखकर उसनें स्त्री को पहचाना और सैद ख़ाँ ने धन्य-

3

ह्वैहै । बातन जीति लंक गढ़ लैहै ॥ १५ ॥ ॥ दोहरा ॥ चीर
फौज गज फाधिकै आनि कियो मुहि घाइ । इनकौ इहै
इनामु है भरता देहु मिलाइ ॥ १६ ॥ ऐस खग्ग सिर झारि कै
बडे पखरियन घाइ । सैन सकल अवगाहि कै निजुपति लयो
छनाइ ॥ १७ ॥ ॥ चौपई ॥ सूरबीर बहु भाति सँघारे ।
खेदि खेत ते खान निकारे । निजु भरतहि छुरवाइ लयाई ।
भाँति भाँति सों बजी बधाई ॥ १८ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ सैंतालीसवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ १४७ ॥ २९५६ ॥ अफजूं ॥

अथ अठतालीसवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ शहिर कनौज कंचनी रहै । अधिक रूप
ताँकौ जग कहै । दुरग दत्त राजा बसि भयो । रानिन डारि
हिदै ते दयो ॥ १ ॥ रानिन बैठ मंत्र यौ कयो । राजा कर
हमरे तें गयो । सोऊ जतन आजु मिलि करियै । जाते या
बेस्वा कौ मरियै ॥ २ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ बिशनसिंघ कौ राणी

धन्य कहा । वह कहने लगा कि इसके उदर से जो पुत्र होगा, वह तो बातों-बातों में लंका जीत लेगा ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥ फ़ौज को चीरते हुए, हाथियों को फाँदते हुए इसने आकर मुझ पर प्रहार किया है, इसका यही इनाम है कि इसे इसका पति मिला देना चाहिए ॥ १६ ॥ इस प्रकार लोगों के सिरों पर खड़ग झाड़कर और बड़े-बड़े घुड़सवारों को मारकर तथा सेना का मंथन करके अपने पति को (उसने) छुड़ा लिया ॥ १७ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने बहुत से शूरवीरों को मारा और खानों को खदेड़ दिया । अपने पति को छुड़ा लाई और उसके यहाँ भाँति-भाँति से बधाई बजने लगी ॥ १८ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ सैंतालीसवें
चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १४७ ॥ २९५६ ॥ अफजू ॥

एक सौ अड़तालीसवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ कन्नौज शहर में एक वेश्या रहती थी जिसे संसार बहुत रूपवती समझता था । दुर्गादत्त राजा उसके वश में हो गया और उसने रानी को भी हृदय से विस्मृत कर दिया ॥ १ ॥ रानियों ने बैठकर सोचा कि राजा तो हमारे हाथ से गया, अब कुछ ऐसा प्रयत्न करना चाहिए, जिससे इस वेश्या

लयो बुलाइकै । कामकेल तासौ किय प्रीतुपजाइकै । पुनि तासौ यौ बैन कहे हित मानिकै । हो मोर कारजहि करो हितू मुहि जानिकै ॥ ३ ॥ प्रथम बहुत धन या बेस्वा कौ दीजियै । बहुरि राव देखत तिह यासौ कीजियै । जब राजा सौ याकौ नेहु तुराइयै । हो बहुरि आपने धाम बोलि इह घाइयै ॥ ४ ॥ प्रथम दरबु बेस्वा कह दयो बनाइकै । पुनि तासौ रति मानी प्रीतुपजाइकै । जब ताँको न्रिप लीनो सदन बुलाइकै । हो तौन सभा मै बैठ्यो सोऊ आइकै ॥ ५ ॥ बिशनसिंघ तिह कह्यो कछू मुसकाइकै । बहुरि सारतै करी न्रितहि दिखराइकै । (मू०ग्रं०१०३२) या मूरख न्रिप कौ नहि देसी दीजियै । हो यासौ नेहु बढाइ न याँको कीजियै ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ तब रानी निप पैं चलि आई । सकल भेद तिह दियो बताई । तुहि देखत देसी उहि दई । तोरी प्रीति कहा इह भई ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ तुहि देखत इन उहि दई देसी सुनु महाराज । ता ते तुमरो या भए हित कीनो किह काज ॥ ८ ॥ बेस्वा तुमकौ भावई त्याग कर्‌यो तैं मोहि । और पुरखु ताकौ रुचै लाज न लागत तोहि ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ जौ इनके राखे पति

को मारा जा सके ॥ २ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ बिशनसिंह को रानी ने बुलाया और सुखपूर्वक उससे कामक्रीड़ा की। फिर उससे कहा कि मेरे मित्र बनकर मेरा एक काम करो ॥ ३ ॥ पहले तो इस वेश्या को बहुत-सा धन दो, फिर राजा के देखते-देखते इससे प्रेम करो। जब राजा से इसका स्नेह टूट जाय। तो फिर इसे अपने घर बुलाकर इसे मार दो ॥ ४ ॥ पहले तो वेश्या को उसने अपार द्रव्य दिया, फिर उससे प्रीतिपूर्वक रतिक्रीड़ा की। जब राजा ने उसे (वेश्या को) अपनें महल में बुलवाया तो उसकी सभा (मुजरा-स्थल) में आकर बिशनसिंह बैठ गया ॥ ५ ॥ बिशनसिंह ने उससे मुस्कुरा कर कहा कि तुमनें बहुत साल तक (राजा को) नृत्य दिखाया है। अब इस मूर्ख राजा को हाव-भाव मत दिखाओ। मुझसे प्यार करके अब ऐसा मत करो ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब रानी राजा के पास आई और उससे सारा भेद कह दिया कि तुम्हारे देखते वह दूसरे के इशारे में रहे, यह तुम्हारी कैसी प्रीति है ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ हे महाराज ! आपके देखते-देखते उसके संकेत अब दूसरे के हो गए। आपने भला यह प्रेम क्यों किया था ॥ ८ ॥ मुझे त्यागकर तुमने वेश्या को चाहा और उसे अब अन्य पुरुष की कामना हो गई है। क्या तुम्हें लाज नहीं

पैयै। तौ बरागिनिन क्यौ ग्रहि ल्यैयै। टटुअहि चड़ि जीतै संग्रामा। को खरचै ताजी पै दामा ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ इन बेस्वनि कौ लाज नहि नहि जानत रस रीति। राव छोरि रंकहि भजहि पैसन की परतीत ॥ ११ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ तुम सेती बाहर को नेह जतावई। निजु हित वाको संग टका जो ल्यावई। और सदन मौ जात जु याहि बताइयै। हो तब राजा जू इह कह लीक लगाइयै ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ इह रानी राजा भए ऐस कह्यो समुझाइ। मनुछ पठै उत जार को बेस्वा लई बुलाइ ॥ १३ ॥ ॥ चौपई ॥ जब बेस्वा ताँके घर गई। रनियहि आनि सखी सुधि दई। निजुपति कौ लै चरिति दिखायो। त्रिप ध्रिग चित आपन ठहिरायो ॥ १४ ॥ ॥ दोहरा ॥ मै जाकौ धनु अमित दै करी आपनी यार। तिन पैसन हित त्याग मुहि अनतै कियो पियार ॥ १५ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ बेस्वा बाहर आई केल कमाइकै। राव लरिकवा

लगती ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ यदि ऐसी स्त्रियों के रखनें से भी सम्मान मिल जाता हो तो फिर किसी वीरांगना को भला घर में (ब्याह कर) लाने की क्या आवश्यकता है। यदि टट्टू पर बैठकर संग्राम जीता जा सके तो भला घोड़े पर कोई दाम क्यों ख़रचेगा ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ इन वेश्याओं को तो लज्जा नहीं है, न ही ये रति-रस की रीति जानती हैं। ये पैसे के लिए राजा को छोड़कर एक भिखारी के साथ भी रमण कर सकती हैं ॥ ११ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ बाहर से तो तुम्हारे साथ नेह जताएगी, पर अंदर से प्यार उसे करेगी जो पैसा लायगा। अगर पता लग जाय कि यह दूसरे के घर भी जाती है, तो हे राजन्! तब तो इस पर लकीर ही फेर देनी चाहिए अर्थात् यह झंझट ही समाप्त कर देना चाहिए ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ यहाँ रानी ने राजा को ऐसे समझाया और उधर व्यक्ति भेजकर उस प्रेमी के यहाँ से राजा ने वेश्या को बुलवा लिया ॥ १३ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब वेश्या उसके घर आ गई तो सखियों नें आकर रानी को बता दिया। अपनें पति को उसका चरित्र समझाकर दिखा दिया और राजा का मन भी खिन्न हो गया ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ (वह सोचनें लगा कि) मैंने जिसको अपरिमित धन देकर अपनी प्रियतमा बनाया, उसने पैसों के लिए अन्य से प्रेम किया है ॥ १५ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ जब वेश्या केलिक्रीड़ा के बाद बाहर निकली तो राजा ने बहुत से नवयुवक उसके पीछे

दए बहुत चिमटाइकै । केल करत मरि गई तवन दुख पाइयो । हो कैसु पेसनी रानी चरित बनाइयो ॥ १६ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ अठतालीसवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १४८ ॥ २९७२ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ उनर्विजवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ परबत सिंघ पोसती रहै । पाँचि सत्री याँके जग कहै । पोसत पियत कबहूँ न अघावै । ताकौ कवन मोल लै प्यावै ॥ १ ॥ इक दिन टूटि अमल तिह गयो । अधिक दुखी तबही सो भयो । तब पाँचो इसत्रिन सुनि पयो । खोजि रही ग्रहि कछू न लहियो ॥ २ ॥ तब पाँचो मिलि मतो बिचार्यो । ऊपर खाट दुखित सो डार्यो । इन गाडन लै चलैं (मू०ग्रं०१०३३) उचार्यो । निजु मन यहै त्रियान बिचार्यो ॥ ३ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ डंडकार के बीच जबै त्रिय वै गई । मारग महि गडहा गहिरो निरखत भई । आवत लखे बटउआ धन लीने घनो । हो कह्यो हमारो सौदो अब आछे बनो ॥ ४ ॥ सुनिहो बीर बटाऊ बात बलोच सभ ।

छोड़ दिए । वह उन सबसे रतिक्रीड़ा करती हुई कष्ट से मर गई । इस प्रकार उस वेश्या और स्त्री ने कैसा विचित्र चरित्र प्रस्तुत किया ॥ १६ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ अड़तालीसवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १४८ ॥ २९७२ ॥ अफजू ॥

एक सौ उनचासवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ पर्वतसिंह नामक एक पोस्ती था, जिसकी पाँच स्त्रियाँ थीं । वह पोस्त पीता कभी नहीं अघाता था, अब भला उसको कौन मोल लेकर पिलाता ॥ १ ॥ एक दिन उसका नशा समाप्त हो गया तो वह अत्यधिक दुखी हो उठा । तब पाँचों स्त्रियों को पता लगा, पर उन्हें खोजने पर भी घर में कुछ नहीं मिला ॥ २ ॥ तब पाँचों ने मिलकर कुछ सलाह की और उस दुःखी को खाट पर डाल लिया । उन स्त्रियों ने मन में सोचा कि इसे (पोस्ती को) कहीं गाड़ दिया जाय ॥ ३ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ जब वे स्त्रियाँ दण्डकारण्य में पहुँचीं तो उन्होंने रास्ते में एक गड़हा देखा । आते हुए पथिकों को स्त्रियों ने देखा और सोचा कि अब हमारा सौदा अच्छा बन जायगा ॥ ४ ॥

पिय गाडन के हेत इहाँ आई हम सभ अब । यासौ आनि
जनाजो अबै सवारियै । हो हमरे गुन औगुन ना ह्रिदै
बिचारियै ॥ ५ ॥ उसटन ते सभ उतरि बलोच तहा गए ।
नीत खैरकी फातया देत ऊहाँ भए । ताँको परे सुमार म्रितक
की ज्यों निरख । हो निकट इसथितह भए गढ़ा को गोर
लखि ॥ ६ ॥ लीनी खाट उठाइ म्रितक तिह जानिकै ।
सक्यो न भेद अभेद कछू पहिचानिकै । जब ताँ पै सभही
इसथित भे आइकै । हो डारि फाँसियन गडहे दए
गिराइकै ॥ ७ ॥ एक गाँव ते दौरि आफू ल्यावति भई ।
एक पुकारत उच्च चली कोस क गई । बहु लोगन कौ ल्याइ
सु उन कौ घाइकै । हो कहि फाँसिन पति हने दए
दिखराइकै ॥ ८ ॥ ॥ चौपई ॥ पंच इसत्री तिन जुत आई ।
धनवंती अति ठगन तकाई । पंचन के फाँसी गहि डारी । हम
पाँचो रहि गई बिचारी ॥ ९ ॥ ॥ दोहरा ॥ पति मारे
फासिन ठगन साथी रह्यो न कोइ । हम बन मै एकल त्रिया
दैव कहा गति होइ ॥ १० ॥ ॥ चौपई ॥ काजी कोटवार तह
आए । रनसिंगे रन नाद बजाए । कोप ठान यौ बचन

वे कहने लगीं, हे श्रेष्ठ पथिको ! सुनो, हम सब अपने प्रिय को यहाँ गाड़ने आई हैं। आप इसकी अर्थी को थोड़ा सँवार दो और हमारे गुण-अवगुण को मन में मत बिचारो ॥ ५ ॥ वे बलोच सभी ऊँटों से उतरकर वहाँ आ गए और फ़ातिहा पढ़ने लगे। वे मृतक के पास आ गए और मृतक तथा क़ब्र को देखकर पास खड़े हो गए ॥ ६ ॥ उन लोगों ने उसे मृतक समझकर खाट को उठा लिया और कुछ भी रहस्य न समझ सके। जब वे गड़हे के किनारे आ खड़े हुए तो उनके गलों में फंदे डालकर उन्हें गड़हे में गिरा दिया ॥ ७ ॥ एक गाँव से दौड़कर अफ़ीम ले आई और एक चिल्लाती हुई कोस भर तक चली गई। उनको मारकर बहुत से लोगों को ले आई और दिखाया कि हमारे पतियों को फाँसी लगाकर मार डाला गया है ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ पंच की स्त्री भी वहाँ पहुँची, जिसे उन ठगनियों ने दिखाया। वे कहने लगीं कि इन पाँचों को तो (लुटेरों ने) फाँसी लगाकर मार डाला। अब हम पाँचों बेचारी बची हैं ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ हमारे पतियों को फाँसी लगाकर मार दिया गया है और अब हमारा कोई भी साथी नहीं बचा है। हम वन में अकेली स्त्रियाँ हैं, भगवान जाने हमारा क्या होगा ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ वहाँ क़ाज़ी,

उचारे। हम साथी इह ठाँउ तिहारे ॥ ११ ॥ ॥ दोहरा ॥ चारि ऊँट मुहरन भरे आठ रुपैयन साथ। पति मूए एऊ गए तौ हम भई अनाथ ॥ १२ ॥ ॥ चौपई ॥ तब काजी इह भाँति उचारो। त्रिया कछू जिनि शोक बिचारो। हम कौ फारखती लिख दीजै। द्वादस ऊँट आपने लीजै ॥ १३ ॥ ॥ दोहरा ॥ दीनन की रच्छा करी कौडी गनी कु पाइ। सभ ही दयो बहोरि धनु धंन काजिन के राइ ॥ १४ ॥ दुशट अरिशट निवारिकै लीनो पतह बचाइ। भाँति भाँति सेवा करी हिए हरख उपजाइ ॥ १५ ॥ १ ॥ (मू०ग्रं०१०३४)

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ उनविंजवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १४९ ॥ २९८१ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ पंजाह चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ रानी एक नगौरे रहै। गरभवती ताकौ जग कहै। पूत राव के ग्रहि कोऊ नाही। चिंता रहै ताँहि मन माही ॥ १ ॥ गरभवती आपहि ठहिरायो। पूत आन

कोतवाल आ गए और रणवाद्य बजने लगे। वे क्रुद्ध हो कहने लगे कि हम आप लोगों के हमदर्द साथी हैं ॥ ११ ॥ ॥दोहा॥ वे कहने लगीं कि चार ऊँट मुहरों से और आठ रुपयों के साथ भरे हैं। पतियों के मरने से अब हम अनाथ हो गई हैं ॥ १२ ॥ ॥ चौपाई ॥ तव क़ाज़ी ने कहा कि हे स्त्रियो ! तुम शोक का त्याग करो। तुम हम लोगों को बेबाकी पत्र लिख दो और अपने बारह ऊँट संभालो ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ तुमने दीनों की रक्षा की और हमारी एक भी कौड़ी नहीं गई। हे क़ाज़ियों के राजा ! तुमने हमें हमारा सारा धन दे दिया है। तुम धन्य हो ॥ १४ ॥ दुष्ट और शत्रुओं से बचकर अपना पति बचा लिया और इस प्रकार उसकी विभिन्न प्रकार से सेवा की ॥ १५ ॥ १॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ उनचासवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १४९ ॥ २९८१ ॥ अफजू ॥

एक सौ पचासवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ नागौर शहर में एक रानी थी, जिसका नाम गर्ववती था। राजा के कोई पुत्र नहीं होता था, यही चिन्ता उसे लगी रहती थी ॥ १ ॥ उसने स्वयं फ़ैसला करके किसी अन्य के पुत्र को पाल लिया। सभी उसे राजा

को आन जिवायो। सभ कोऊ पूत राव को मानै। ता को भेद न कोऊ जानै ॥ २ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ दोइ पुत्र जब ताहि बिधातै पुन दए। रूपवंत सुभ सील जतब्रत होत भे। तब उन दुहूँ पालकन लैकै बिखु दई। हो निजु पूतन कह राज पकावत तह भई ॥ ३ ॥ भाँति भाँति सौ रोदन कियो पुकारिकै। निरखा तिन की ओर सिरोकचुपारिकै। प्रान नाथऊँ आए कह्यो न शोक करि। हो अकथ कथा की कथा जानि जिय धीर धरि ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ जियत तिहारे पूत दो सदा रहै जग माँहि। उनको शोक न कीजियै जियत अजौ तव नाह ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ जो कोऊ त्रिया तहाँ चलि आवै। यहै आहि परबोध जतावै। जियौ चारि जुग पूत तिहारे। दोऊअन को नहि शोक बिचारे ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पंजाह चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ १५० ॥ २९९३ ॥ अफजूं ॥

का पुत्र जानने लगे और कोई भी उस भेद को नहीं समझता था ॥ २ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ जब विधाता ने उसे भी दो पुत्र दिए तो वे दोनों भी शीलवान और यतिव्रत पालन करनेवाले थे। तब उन दोनों ने उस पोष्य पुत्र को ज़हर दे दिया। रानी भी अपने पुत्रों को राज देने के बारे में सोचती रहती थी ॥ ३ ॥ अब वह चिल्ला-चिल्लाकर रुदन करने लगी और अपने सिर के बाल उखाड़ती हुई उसकी ओर देखने लगी। राजा आया और उसने कहा कि शोक मत करो। यह अकथ कथा है, तुम धैर्य ,रखो ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ तुम्हारे तो दो पुत्र सदैव जग में जीवित हैं। उनका भी फ़िक्र मत करो, तुम्हारा पति तो अभी जीवित है ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ जो भी स्त्री वहाँ आती यही उपदेश और प्रार्थना करती कि तुम्हारे पुत्र चारों युगों तक जीवित रहें और दोनों को कोई कष्ट न हो ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ पचासवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ॥ १५० ॥ २९९३ ॥ अफजू ॥

अथ इक सौ इकयावनो चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। कुपितसिंघ राजा रहै राजौरी के माहि । सौदा सील सु ताहि अति रोह तवन मै नाहि ।। १ ।। ।। चौपई ।। त्रिया गुमानमती तिह जनियत । अति सुंदरि तिहु लोक बखनियत । पति के संग नेह तिह भारो । वाको रहत प्रान ते प्यारो ।। २ ।। जब राजा रन काज सिधारै । तब रानी इह भाँति उचारै । हौ नहि तुमै छोरि ग्रहि रहिहों । प्राननाथ के चरनन गहिहों ।। ३ ।। जब न्रिप को रन बनि कहूँ आवै । त्रिय आगै ह्वै खड़ग बजावै । बैरिन जीति बहुरि घर आवै । भाँति भाँति के भोग कमावै ।। ४ ।। इक दिन जुद्ध न्रिपति बनि आयो । चड़िगै पै त्रिय सहित सिधायो । जातहि पर्यो भेर रन भारी । नाचे सूरबीर हंकारी ।। ५ ।। ।। अड़िल्ल ।। भाँति भाँति रन सुभट सँघारे कोप करि । भाँति भाँति रथ बाज बिदारे सर प्रहरि । निरखि जुद्ध को सूर परे अरराइकै । हो मंदल तूर म्रिदंग मुचंग बजाइकै ।। ६ ।। पठे पखरियन कोप अधिक जिय मै

एक सौ इक्यावनवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। राजौरी में कुपितसिंह नामक राजा रहता था। वह अत्यन्त शीलवान था और क्रोध उसमें बिलकुल नहीं था ।। १ ।। ।। चौपाई ।। उसकी स्त्री गुमानमती को तीनों लोकों में अत्यन्त सुन्दर जाना जाता था। उसे पति से स्नेह था, वह उसे प्राणों से भी प्यारा था ।। २ ।। जब राजा युद्ध में जाता तो रानी कहती कि हे राजन् ! मैं तुम्हें छोड़कर घर में नहीं रहूँगी और अपने प्राणनाथ के चरणों को ही पकड़े रहूँगी ।। ३ ।। जब राजा को युद्ध-कार्य आ बनता था तो रानी आगे होकर कृपाण खटखटाती थी। राजा युद्ध जीतकर घर आता था और विभिन्न प्रकार से केलिक्रीड़ा करता था ।। ४ ।। एक बार राजा पर युद्ध आ पड़ा तो वह हाथी पर चढ़कर स्त्री-समेत चल पड़ा। वह भीषण रण में जा पड़ा जहाँ अहंकारी शूरवीर नृत्य कर उठे ।। ५ ।। ।। अड़िल्ल ।। क्रुद्ध हो उसने अनेकों वीरों का संहार किया और भाँति-भाँति के रथी बाणों से मार डाले। शूरवीर युद्ध देखकर ढोल-मृदंग बजाते चिल्लाकर टूट पड़े ।। ६ ।। युद्ध में घोड़े चल पड़े और मन में क्रोध और भी अधिक जाग उठा। दोनों ओर से कवचों में सुरक्षित वीर

3

सजे सँजोअन सैन दुहूँ दिसि (मू०ग्रं०१०३५) उमगियो।
जग्यो। बजे जुझउआ नाद परे अरराइकै। हो टूक टूक ह्वै जुझे
सुभट समुहाइकै ॥ ७ ॥ चटपट सुभट बिकटि कटि कटिकैं
भू परैं। खंडि खंडि किते अखंडियन खहि खग्गन मरैं।
टूक टूक ह्वै गिरै न मोरै नैकु मनु। हो प्रलैकाल सो कियौ
बिधातै बहुरि जनु ॥ ८ ॥ जब रानी के सहित राव जू रिसि
भरै। दोऊ कैबर कठिन कमानन कर धरै। दच्छिन बिसिख
दिखाइ बाम अर मारही। हो एक घाइके संग चूर करि
डारही ॥ ९ ॥ जनुक जेठ के मास अदित अधि दिन चड़्यो।
जनुक करारन छोरि नीर नायक हड़्यो। बज्र बिसिख असि
हन्यो सु सैन उचाइयो। हो जबै बिशन लछमी के सहत
रिसाइयो ॥ १० ॥ रानी जातन बिसिख प्रहारै कोप करि।
तछिन म्रितक ह्वै परई सूर सु भूमि पर। फूल दए बरखाइ
गगन ते देवतन। हो रानी कौ रन हेर उचारै धन्य धन ॥११॥
त्रिया सहित न्रिप लर्‌यो अधिक रिस खाइकै। तब ही लगी
तुफंग ह्रिदै मै आइकै। गिर्‌यो अंबारी मध्य मूरछना होइ
करि। हो तब त्रिय लियो उचाइ नाथ दुहूँ भुजनि

उमड़ पड़े! रणवाद्य बज उठे और वीर चिल्लाकर टूट पड़े तथा सम्मुख
जाकर वीर खंड-खंड हो जूझ पड़े ॥ ७ ॥ शीघ्र ही अच्छे वीर कटकर भूमि
पर आ गिरे और कितने ही अखंड वीर खड़गों से टकराकर खंड-खंड होकर
मर गए। वे टुकड़े-टुकड़े हो गए पर उनका मन पीछे नहीं हटा। ऐसा लग
रहा था मानों विधाता ने प्रलय कर दी हो ॥ ८ ॥ जब रानी-समेत राजा
क्रुद्ध उठा तो उसने हाथ से विषम बाण धनुष पर चढ़ाए। स्त्री ने दक्षिण
दिशा दिखाकर बाण मारा और एक ही वार से शत्रु को चूर कर डाला ॥९॥
ऐसा लगता था मानों ज्येष्ठ मास में सूर्य तप रहा हो अथवा किनारों को
छोड़कर पानी बाढ़ में बह निकल रहा हो। वज्र, वाण, कृपाणादि से उसने
सेना को ललकारा और ऐसा लग रहा था मानों विष्णु लक्ष्मी-समेत क्रुद्ध
हो रहा हो ॥ १० ॥ रानी क्रुद्ध हो बाणों से वार कर रही थी। शूरवीर
तत्क्षण मृत हो भूमि पर गिर पड़ रहे थे। गगन से देवताओं ने फूल बरसाए
और रानी का युद्ध देखकर धन्य-धन्य कहने लगे ॥ ११ ॥ स्त्री-समेत राजा
अत्यधिक क्रुद्ध होकर लड़ा, परन्तु उसी क्षण उसे हृदय में बंदूक़ की गोली
आ लगी। वह हौदे में मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। तब उस स्त्री ने अपने

भरि ।। १२ ।। तवन अंबारी संग त्रिपहि बाँधत भई । निजु कर करहि उचाइ इसारति दल दई । जियत त्रिपति लखि सुभट सभे धावत भए । हो चित्र बचित्र अयोधन तिह ठाँ करत भे ।। १३ ।। पीसि पीसि करि दाँत सूरमा रिसि भरे । टूक टूक ह्वै परे तऊ पगु ना टरे । तौन सैन संग राजा लीने घाइकै । हो जीत नगारे बजे अधिक हरिखाइकै ।। १४ ।। तब रानी निजु करन बैरियहि मारिकै । निजुसुत दीनो राज सु घरी बिचारिकै । करिकै बडो अडंबर आपु जरन चली । हो तबै गगन ते बानी ताहि भई भली ।। १५ ।। क्रिपासिंधु जू क्रिपा अधिक तुम पर करी । निजु नायक के हेतु बहुत बिधि तैं लरी । ताँ ते अपनौ भरता लेहु जियाइकै । हो बहुरि राज कौ करो हरख उपजाइकै ।।१६।। ।। दोहरा ।। शत्रु नाथ हनि जुद्ध करि लीनो पतिहि जियाइ । बहुरि राज अपनो कर्‌यो नाथ सहित सुख पाइ ।। १७ ।। १ ।। (मू०ग्रं०१०३६)

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इकयावनो चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १५१ ।। ३०१० ।। अफजूं ।।

स्वामी को दोनों भुजाओं पर उठा लिया ।। १२ ।। उसने हौदे के साथ राजा को बाँध लिया और स्वयं हाथ उठा-उठाकर सेना को संकेत देने लगी। राजा को जीवित मानकर सभी दौड़-भाग करने लगे और विचित्र प्रकार से युद्ध करने लगे ।। १३ ।। शूरवीर दाँत पीस-पीसकर टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़े पर एक पैर भी पीछे नहीं हटे । दूसरी सेना को राजा-समेत मार डाला और प्रसन्नतापूर्वक अपनी विजय के नगाड़े बजाए ।। १४ ।। तब रानी ने अपने हाथों अपने शत्रु को मारकर शुभ घड़ी में अपने पुत्र को राजतिलक दिया । फिर वह पूरे ठाट-बाट के साथ जलनें के लिए जैसे ही चली तो उसे तत्क्षण गगन से आकाशवाणी हुई ।। १५ ।। कृपालु प्रभु ने तुम पर कृपा की है, क्योंकि तुम अपने स्वामी के हित में भिन्न प्रकार से लड़ी हो । इसलिए तुम अपना जीवित पति प्राप्त करो और सुखपूर्वक पुनः राज करो ।। १६ ।। ।। दोहा ।। स्वामी के शत्रु को मारकर युद्ध किया और पति को जीवित किया तथा पुनः सुखपूर्वक राज भी किया ।। १७ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ इक्यावनवें चरित्र की शुभ-सत् समाप्ति ।। १५१ ।। ३०१० ।। अफजू ।।

अथ इक सौ बावनों चरित्र कथनं ॥

॥ चित्रसिंघ बाच ॥ ॥ दोहरा ॥ जैसो त्रिय इन रन कियो तैसो करै न कोइ। पाछे भयो न अब सुन्यो आगे कबहूँ न होइ ॥१॥ ॥ चौपई ॥ तब मंत्री इह भाँति उचारी। सुनो राज तुम बात हमारी। बिशन साथ जंभासुर लर्यो। ता कौ प्रान लछिमी हर्यो ॥ २ ॥ ताते होत इंद्र है भीत्यो। चौदह भवन नरह तनि चीत्यो। सोऊ असुर हरि पर चड़ि आयो। तुमल जुद्ध हरि साथ मचायो ॥ ३ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ भाँति भाँति तासौ रन इंद्र मचाइयो। सूर चंद्र थकि रहे न कछू बसाइयो। देव दैत ह्वै म्रितक बिराजे ताहि रन। हो जनु अलिकिस के बाग बिराजै मालि जन ॥ ४ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ लए बीर धीरे महाँ कोपि ढूके। चहूँ ओर गाजे हठी इंद्र जूके। उते दैंत बाँके इतै देवरूरे। हटे न हठीले महारोस पूरे ॥ ५ ॥ दुहूँ ओर बाजंत्र आनेक बाजे। बडे बीर बाने दुहूँ ओर गाजे। मच्यो जुद्ध गाड़ो परी मार भारी। बहैं तीर तरवारि काती कटारी ॥६॥ महाँ

एक सौ बावनवाँ चरित्र-कथन

॥ चित्रसिंह उवाच ॥ ॥ दोहा ॥ जैसा इस स्त्री ने युद्ध किया वैसा किसी ने न तो पहले किया, न अब किया सुना और न आगे कभी होगा ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब मंत्री ने कहा कि हे राजन् ! तुम मेरी बात सुनो। विष्णु के साथ जंभासुर लड़ पड़ा। उसके प्राणों को लक्ष्मी ने हरा ॥ २ ॥ उस (जंभासुर) से इन्द्र भी डरा हुआ था और चौदह भुवनों के लोगों को उसने जीत लिया था। वही असुर विष्णु पर चढ़ आया और उसने भीषण युद्ध मचा दिया ॥३॥ ॥ अड़िल्ल ॥ इन्द्र ने विभिन्न प्रकार से उससे युद्ध किया। सूर्य-चन्द्र सभी थक गए, किसी का भी वश न चला। देव-दैत्य युद्ध में ऐसे मृत हो गए मानों कुबेर के बाग़ में माली पड़े हों ॥४॥ ॥ भुजंग छंद ॥ वीर महाकुपित हो आ जुटे और चारों ओर इन्द्र के हठी वीर गरजने लगे। उधर बलवान दैत्य थे और इधर सुन्दर पुरुष थे। वे अत्यन्त क्रोध से पूर्ण और हठी होनें के कारण हटाये नहीं जा रहे थे ॥ ५ ॥ दोनों तरफ़ अनेक बाजे बज रहे थे और दोनों ओर के वीर गर्जना कर रहे थे। उसमें भीषण युद्ध हुआ और तीर, तलवार, कटारियाँ चलने लगीं ॥ ६ ॥ दैत्य भी क्रुद्ध

कोप कैकै बली दैत धाए । हठिन कोप कै शस्त्र अस्त्रै चलाए । बधे कौच काती जबै जंभ गज्ज्यो । तबे छाडिकै खेत देवेस भज्ज्यो ।।७।। ।। चौपई ।। भाजत इंद्र जात भ्यो तहाँ । लए लछिमी हरि थिर जहाँ । भाँति भाँति ह्वै दुखित पुकारे । तुमरे जियत नाथ हम हारे ।। ८ ।। जगपति सूल कोप तब आयो । लछिमी कुअरि लै संग सिधायो । बाँधि सनद्धि बिराज्यो तहाँ । गाजत बीर जंभ बहु जहाँ ।। ९ ।। ।। अड़िल्ल ।। बीस बान बिसुनाथ चलाए कोप करि । लगे जंभ के देह गए तुहि घानि करि । भरे स्रोन बिसखोतम अधिक बिराजहीं । हो जिनकी प्रभा बिलोकि तच्छजा लाजही ।। १० ।। ।। दोहरा ।। लछिमकुअरि ऐसे कह्यो सुनहु बिशन जू बैन । याकौ हौहूँ जीति कै पठऊँ जम के ऐन ।।११।। ।। अड़िल्ल ।। बिशन ठाँढि कै लछमि कुअरि कर धनख लिय । चित्र बचित्र अयोधन तासो ऐस किय । अमित रूप दिखराइ मोहि अरि कौ लियो । हो बहु घाइन के संग ताँहि घायल कियो ।। १२ ।। मिसही कह्यो न हनु रे हरि इह मार हैं । बहुत जुद्ध करि यासौ बहुरि सँघारि हैं । जब पाछे की

होकर टूट पड़े और हठियों ने कुपित हो अस्त्र-शस्त्र चलाए । जब कृपाण-कवच धारण कर जंभ ने गर्जन किया, तब युद्ध छोड़कर इन्द्र भाग खड़ा हुआ ।। ७ ।। ।। चौपाई ।। इन्द्र भागकर वहाँ गया जहाँ विष्णु लक्ष्मी के साथ विराजमान थे । वह भाँति-भाँति से पुकारने लगा कि हे नाथ ! आपके जीते-जी हम हार रहे हैं ।। ८ ।। जगत्पति तब क्रुद्ध हो उठे और लक्ष्मी को साथ ले वहाँ पहुँचे, जहाँ सेना-समेत वीर जंभासुर था ।। ९ ।। ।। अड़िल्ल ।। तब विश्वनाथ ने क्रुद्ध हो वीस बाण चलाए जो जंभ की देह में लगे और घाव कर गए । ख़ून से सने बाण अत्यधिक शोभायमान हो रहे थे, जिन्हें देखकर तक्षक (नागराज) भी लज्जित हो रहा था ।। १० ।। ।। दोहा ।। तब लक्ष्मी ने कहा कि हे विष्णुजी ! सुनो; मैं इसे जीतकर यमलोक भेजूंगी ।।११।। ।।अड़िल्ल।। विष्णु को रोककर लक्ष्मी ने हाथ में धनुष पकड़ा और आश्चर्यजनक युद्ध किया । शत्रु को अपरिमित रूप दिखलाकर जीत लिया और अनेकों घावों से उसे घायल कर दिया ।। १२ ।। उससे बहाने से कहा कि युद्ध छोड़ो, हम तुम्हें ऐसे नहीं मारेंगे । तुमसे घनघोर युद्ध कर तुम्हारा संहार करेंगे । जब शत्रु ने पीछे की ओर देखा तो सुदर्शन छोड़कर

ओर (मू०ग्रं०१०३७) सु शत्र निहारियो । हो दयो सुदरशन छाड मूँडि कट डारियो ।। १३ ।। ।। दोहरा ।। लछिम कुअरि जब जंभ सो ऐसो कियो चरित्र । मारि सुदरशन सो लयो सुखित किए हरि मित्र ।। १४ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बावनों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १५२ ।। ३०१४ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ त्रिपनों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। नाजमती अबला जग कहै । अटकी एक त्रिपत पर रहै । बाहुसिंघ जिह जगत बखानै । चौदह लोक आनि कौ मानै ।।१।। त्रिप की प्रभा हेरि छकि रही । केल करै मोसौ चित चही । भाँति भाँति उपचार बनाए । कैसिहु राव हाथ नहि आए ।। २ ।। जब तिय सोइ सदन मै जावै । त्रिप की प्रभा चित्त मै आवै । चकि चकि उठै नीद नहि परै । मीत मिलन की चिंता करै ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। वै सम्रथ असम्रथ मैं वै सनाथ मैं अनाथ । जतन कवन सो कीजियै आवैं जाते हाथ ।। ४ ।। ।। चौपई ।। काँसी बिखै करवत्तहि

उसका सिर काट लिया ।। १३ ।। ।। दोहा ।। लक्ष्मी ने ऐसा चरित्र जंभासुर के साथ किया और सुदर्शन से शत्रु को मारकर विष्णु के मित्रों को सुखी कर दिया ।। १४ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ बावनवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १५२ ।। ३०१४ ।। अफजू ।।

एक सौ तिरपनवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। नाजमती नामक एक स्त्री थी जो एक राजा में अनुरक्त थी । उस राजा को बाहूसिंह नाम से जाना जाता था और चौदह भुवन उसकी आन को मानते थे ।।१।। वह स्त्री राजा का सौंदर्य देखकर विमोहित थी और चित्त में उससे रतिक्रीड़ा की कामना करती थी । उसनै विभिन्न प्रपंच किए पर किसी तरह भी राजा हाथ नहीं आता था ।। २ ।। घर में जब स्त्री सोती थी तब भी राजा के सौंदर्य को मन में देखती रहती थी । वह हड़बड़ाकर उठ पड़ती थी और प्रिय-मिलन के लिए चिंतातुर रहती थी ।। ३ ।। ।। दोहा ।। वह सोचती कि वे समर्थ हैं और मैं असमर्थ हूँ, वे नाथ हैं और मैं

लैहो। पिय कारन अपनो जिय दैहो। मन भावत प्रीतम जौ पाऊँ। बार अनेक बजार बिकाऊँ ॥५॥ ॥दोहरा॥ कहा करों कैसे बचों लगी बिरह की भाह। रुचि उनकी हम को घनी हमरी उनै न चाह ॥ ६ ॥ नाजमती तब आपनी लीनी सखी बुलाइ। बाहुसिंघ राजा भए कहो सँदेसो जाइ ॥ ७ ॥ बचन सुनत ताकउ सखी तहाँ पहूँची आइ। नाजमती जैसे कह्यो त्यों तिन कह्यो सुनाइ ॥ ८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ मैं छबि तुमरी निरख नाथ अटकत भई। बिरह समुंद के बीच बूडि सिर लौ गई। एक बार करि क्रिपा हमारे आइयै। हो मन भावत को हम सो भोग कमाइयै ॥९॥ ॥ चौपई ॥ जब चेरी अस जाइ उचारी। तब राजै यौ हिये बिचारी। सोऊ बात इह तियहि कहिज्जै। जाते आप धरमजुत रहिज्जै ॥ १० ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ दोइ शत्रु हमरिन ते एक सँघारियै। बिना घाइ के किये दूसरो मारियै। तब मैं तुमको अपने सदन बुलाइहों। हो मन भावत के तुम सों भोग कमाइहों ॥ ११ ॥ जाइ सहचरी कह्यो तिया सुनि पाइकै। प्रीति राव को बधी

अनाथ हूँ, कौन सा प्रयत्न किया जाय जिससे स्वामी मेरे हाथ लगें ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ मैं तो काशी में आरे (करवत) से कट जाऊँगी अथवा प्रिय के कारण (किसी अन्य ढंग से) प्राण दे दूंगी। यदि मनचाहा प्रियतम (राजा) पा जाऊं तो मैं अनेकों बार बाज़ार में बिकने को तैयार हूं ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ मुझे तो विरह का ताप जला रहा है मैं कैसे इससे बचूं। मैं तो उससे प्रेम करती हूं पर राजा को मेरी चिन्ता नहीं ॥ ६ ॥ नाजमती ने तब अपनी सखी को बुलाकर कहा कि बाहूसिंह राजा को मेरा संदेश कहो ॥ ७ ॥ वात सुनकर नाजमती वहाँ आ पहुँची और जो नाजमती ने कहा था कह सुनाया ॥ ८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ हे नाथ ! मैं तुम्हारे रूप-सौंदर्य में उलझ गई हूं और विरह-समुद्र में डूबी पड़ी हूं। एक बार कृपा कर मेरे यहाँ आइए और मनचाही रतिक्रीड़ा कीजिए ॥ ९ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब दासी ने यह कहा तो राजा ने मन में सोचा कि इस स्त्री से वही कहना चाहिए जिससे अपना धर्म सुरक्षित वना रहे ॥ १० ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ मेरे दो शत्रु हैं। मैं एक को तो मारूँगा और दूसरे को विना घायल किये ही नष्ट कर दूंगा। तब मैं तुम्हें अपने घर बुलाऊँगा और मनोवांछित ढंग से तुम्हारे साथ रमण करूँगा ॥ ११ ॥ तब दासी ने जाकर उस स्त्री को बताया जो कि राजा की

उठी मरराइकै। ह्वै कै (मू०ग्रं०१०३८) बाज अरूढ़ भेख नर धारिकै। हो न्रिप के अरि पैगई चरित्र बिचारिकै ॥ १२ ॥ सुनो राव जू मोको चाकर राखियै। तह को करो मुहिम जहा को भाखियै। प्रान लेत लौ लरे न रन ते हारिहों। हो बिनु अरि मारै खेत न बाजी टारिहों ॥१३॥ ता को सूर निहारि न्रिपति चाकर कियो। ग्रहि ते काढि खजानो ता को बहु दियो। दूजो राव बुलाइ सु बीर बुलाइकै। हो बाहुसिंघ पै चड़्यो महाँरिसि खाइकै ॥ १४ ॥ ॥ चौपई ॥ नाजमती इह भाँति उचारी। सुनो राव तुम बात हमारी। सभ बीरन को बोलि पठैयै। सभ के सर पर नाम डरैयै ॥ १५ ॥ ॥ दोहरा ॥ जब गाड़ो रन परैगो बहै तीर तरवारि। बिना नाम सर पै लिखै सकिहै कवन बिचारि ॥ १६ ॥ ॥ चौपई ॥ नाजमती जब ऐस बखान्यो। सत्य सत्य राजै करि मान्यो। सकल सूरमा बोलि पठाए। सभन सरन पर नाम लिखाए ॥ १७ ॥ ॥ दोहरा ॥ सर पर नाम लिखाइकै रन कह चड़े रिसाइ। जाको सर जिह लागिहै सो भट चीनो जाइ ॥ १८ ॥ जुद्ध जबै गाड़ो पर्‍यो घात बाल तिन पाइ।

प्रीति में बंधी घबराकर उठ खड़ी हुई। वह नर-वेश बनाकर घोड़े पर सवार हो मन में योजना सोचकर (शत्रु) राजा के सामने जा खड़ी हुई ॥१२॥ हे राजन् ! मुझे नौकर रख लो और मुझे किसी भी युद्ध में जाने की आज्ञा करो। मैं प्राणान्त तक लड़ूंगा और युद्ध में हारूँगा नहीं तथा बिना शत्रु को मारे मैं युद्ध से नहीं पलटूँगा ॥ १३ ॥ उसे शूरवीर मानकर राजा ने नौकर रख लिया और उसे बहुत सा द्रव्य दिया। तब उसने दूसरे (मित्र) राजा को बुलाया और क्रुद्ध हो बाहूसिंह पर चढ़ाई कर दी ॥ १४ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब नाजमती ने कहा कि हे राजा ! तुम मेरी बात सुनो। सब वीरों को बुलाओ और सबके तीरों पर उनके नाम खुदवा दो ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥ जब भीषण युद्ध में तीर-तलवार चलेंगे तो बाण पर नाम न होने से क्या पता चलेगा (कि किसने किसे मारा) ॥ १६ ॥ ॥ चौपाई ॥ नाजमती ने जब यह कहा तो राजा ने उसे सत्य मान लिया। उसने सभी शूरवीरों को बुलाया और सबके बाणों पर नाम लिखवा दिए ॥१७॥ ॥ दोहा ॥ तीर पर नाम लिखवाकर सभी क्रुद्ध हो युद्ध के लिए टूट पड़े और यह तय रहा कि जिसे जिसका बाण लगे वह पहचान कर ले (कि उसने उस वीर को मारा है) ॥ १८ ॥ जब भीषण युद्ध चल रहा था तो इस स्त्री ने अवसर पाकर

उहि राजा को बान लै इह न्रिप हन्यो रिसाइ ॥ १९ ॥ ॥ चौपई ॥ लागत बान राव रिसि भयो । सर पर नाम लिख्यो लखि लयो । मुहि इन हन्यो न्रिपति सोऊ मार्‍यो । बहुरि आपहूँ स्वरग सिधार्‍यो ॥ २० ॥ ॥ दोहरा ॥ नाजमती इह चरित्र सों दुहूँ न्रिपन कौ घाइ । बहुर रैबारी राव सों आनि दई सुख पाइ ॥ २१ ॥ ॥ चौपई ॥ न्रिप मैं तुमरे काज सवारे । दोनो शत्र तिहारे मारे । अब मोको तुम धाम बुलावो । काम भोग मुहि साथ कमावो ॥ २२ ॥ ॥ दोहरा ॥ तब राजै ता को तुरत लीनो सदन बुलाइ । काम भोग तासो कियो ह्रिदै हरख उपजाइ ॥ २३ ॥ एक न्रिपति निजु कर हन्यो ताते दुतिय हनाइ । रति मानी इह न्रिप भए नाजमती सुख पाइ ॥ २४ ॥ ॥ चौपई ॥ नाजमती न्रिप लै घर राखी । त्रिय कीनी रवि ससि करि साखी । राँक हुती रानी करि डार्‍यो । त्रिया चरित्र न जात बिचार्‍यो ॥ २५ ॥ १ ॥ (मू०ग्रं०१०३९)

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ त्रिपनों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १५३ ॥ ३०४९ ॥ अफजूं ॥

उस राजा का बाण इस मित्र राजा को बलपूर्वक मार दिया ॥ १९ ॥ ॥ चौपाई ॥ बाण लगते ही बाण पर (अपने मित्र का) नाम लिखा देखकर राजा क्रुद्ध हो उठा । यह सोचकर कि इसी ने मुझ पर प्रहार किया है, राजा ने उस राजा को मार डाला और बाद में स्वयं भी मर गया ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार नाजमती इस प्रपंच से दोनों राजाओं को मारकर पुनः राजा (बाहूसिंह) से आ मिली ॥ २१ ॥ ॥ चौपाई ॥ हे राजन् ! मैंने तुम्हारे दोनों शत्रु मारकर तुम्हारे कार्य सँवार दिए हैं । अब तुम मुझे अपने घर बुलाओ और मेरे साथ रतिक्रीड़ा करो ॥ २२ ॥ ॥ दोहा ॥ तब राजा ने तुरन्त उसे घर पर बुलाया और सुखपूर्वक उससे सम्भोग किया ॥ २३ ॥ एक राजा को अपने हाथ से मारा और उससे दूसरे को मरवाया । यह राजा तब बड़ा राजा बन गया और उसने नाजमती से सुखपूर्वक रमण किया ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब उसने सूर्य-चन्द्र को साक्षी मानकर उसे पत्नी बनाया और अपने घर रख लिया । उस निर्धन को रानी बना दिया । स्त्री के प्रपंचों को समझा नहीं जा सकता ॥ २५ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ तिरपनवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १५३ ॥ ३०४९ ॥ अफजू ॥

3

अथ इक सौ चौवनों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ स्यालकोट के देस मै दरपकला इक बाम ।
तरुन देह ता कौ रहै अधिक सतावत काम ॥ १ ॥ दानी राइ
तहाँ हुतो एक शाह के पूत । सूरति सीरति के बिखै बिधनै
कियो सपूत ॥२॥ दरपकला इह शाह की दुहिता रहै अपार ।
हियैं बिचार्यो शाह के सुत सौ रमौ सुधार ॥ ३ ॥
॥ चौपई ॥ बोलि शाहु को पूत मँगायो । कामकेल तिह
संग कमायो । दिवस भए ग्रहि देत पठाई । रैनि भए पुनि
लेत बुलाई ॥ ४ ॥ ऐसी प्रीति दुहुनि मै भई । लोक लाज
सभ ही तजि दई । जानुक कहूँ ब्याह करि आनी । तिन पर
नारि ऐस पहिचानी ॥५॥ ॥ अड़िल्ल ॥ इशक मुशक खाँसी
अरु खुरक बखानियै । खून खैर मदपान सु बहुरि प्रमानियै ।
कस कोऊ करई सात छपाए छपत नहि । हो होवत प्रगट
निदान सु सारी स्त्रिशटि महि ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ दरपकला
सुत शाहु के ऊपर रही बिकाइ । रैनि दिवस तासौ रमैं
सभहिन सुनी बनाइ ॥ ७ ॥ दरपकला जब शाहु कौ लीनो

एक सौ चौवनवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ स्यालकोट में दर्पकला नामक एक स्त्री थी जो तरुणी थी और कामदग्ध थी ॥ १ ॥ दानीराय एक शाह का पुत्र वहाँ था जिसे सूरत और सीरत में विधि ने सुपुत्र बनाया था ॥ २ ॥ दर्पकला इधर अन्य शाह की पुत्री थी, जिसने सोचा कि अन्य शाह के पुत्र से रमण किया जाय ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसने राजा के पुत्र को मँगवाया और उसके साथ केलिक्रीड़ा की। दिन में उसे उसके घर भेज देती थी और रात में फिर बुला लेती थी ॥ ४ ॥ उनमें ऐसी प्रीति हुई कि उन्होंने सब लोक-लाज का त्याग कर दिया। उसने भी परनारी को ऐसे मान रखा था मानों उसे ब्याह कर लाया हो ॥ ५ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ इश्क़, गन्ध, खाँसी, खुजली, ख़ून, ख़ुशी, मद्यपान आदि ऐसी सात क्रियाएँ हैं जो छिपाए नहीं छिपतीं और सबके सामने प्रकट होकर रहती हैं ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ दर्पकला तो मानों शाह के पुत्र के हाथों बिकी हुई थी और सब कह-सुन रहे थे कि वह रात-दिन उसी में अनुरक्त रहती है ॥ ७ ॥ जब एक दिन दर्पकला ने शाह के पुत्र को बुलवाया तो

पूत बुलाइ। आन पियादन गहि लियो रह्यो न कछू उपाइ ॥ ८ ॥ ॥ चौपई ॥ दरपकला इह भाँत उचारी। सुनो मीत तुम बात हमारी। सोना बोवत मुहि तुम कहियहु। यौ कहि नैन नीच करि रहियहु ॥ ९ ॥ त्रिप पहि बाँध ताँहि लै गए। ते वै बैन बखानत भए। एक बात मैं तुमै दिखाऊँ। तुम ते कहो कहा तब पाऊँ ॥ १० ॥ जा पैं बैठे मुहि गहि आनो। उन मो सो इह भाँति बखानो। जौ मै कंचन बीजि दिखाऊँ। तब मैं कहो कहाँ बर पाऊँ ॥ ११ ॥ जद यौ बचन राव सुनि पायो। दरपकला कौ बोलि पठायो। ताँ को एक धाम मै राख्यो। कंचन के बीजन कह भाख्यो ॥ १२ ॥ मोहि इह एक सदन मै राखो। भली बुरी कछु बात न भाखो। जब मैं मास इकादस लहिहौ। तुम सौ आइ आपही कहिहौ ॥ १३ ॥ जब वै दोऊ एक ग्रहि राखै। तब त्रिय यौ तासौ बच भाखै। मोसौ भोग मीत अब करियै। या चिंता ते नैकु न डरियै ॥ १४ ॥ ॥ दोहरा ॥ पकरि मीत को आपने ऊपर लयो चराइ। तासौ रति मानत भई लपटि लपटि सुख पाइ ॥ १५ ॥ कालकिनी

सिपाहियों ने उसे बेबस करके पकड़ लिया ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब दर्पकला ने कहा कि हे मित्र ! तुम मेरी बात सुनो। तुम यह कहना कि मैं सोना बोकर दिखा रखा था। फिर तुम आँखें नीची करके खड़े रहना ॥९॥ उसे बाँधकर राजा के पास ले गए और वहाँ उसने यही कहा। एक (आश्चर्य-जनक) बात यदि मैं तुम्हें बताऊं तो बताओ मुझे तुमसे क्या मिलेगा ॥ १० ॥ (राजकुमार ने कहा कि) मुझे जिसके पास से बाँधकर लाया गया है, उसने मुझसे यह कहा था कि मैं सोना वोकर दिखाऊँ। यदि मैं ऐसा कर दूं, तो बताओ मुझे क्या मिलेगा ? ॥११॥ जब राजा ने यह सुना तो उसने दर्पकला को बुलवाया। उसे एक महल में रखा और इसे सोना बोने को कहा ॥१२॥ राजकुमार ने यह कहा कि मुझे एक घर में रखो और भला-बुरा कुछ मत कहो। जब ग्यारह महीने हो जायँगे तो मैं स्वयं आकर आपसे कहूँगा ॥ १३ ॥ जब दोनों को एक घर में रखा तब उस स्त्री ने कहा कि हे मित्र ! अब मुझसे तनिक भी चिंता छोड़कर रमण करो ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ तब उसने मित्र को पकड़कर अपने ऊपर डाल लिया और लिपट-लिपटकर सुखपूर्वक उससे रति-क्रिया करने लगी ॥ १५ ॥ कल के बारे में तो कभी किसी ने नहीं जाना

रमौ तव संग । (मू०ग्रं०१०४०) लाज न काहू जान्यो नही आजु मो तन बढ्यो अनंग ॥ १६ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ दस मासन रति करी हरख उपजाइकै । आसन चुंबन अनिक कियो लपटाइकैं । जब ग्यारहवौ मास पहूचयो आइ करि । हो दरपकला तब कह्यो न्रिपति सौ जाइ करि ॥ १७ ॥ कंचन बोवन समै पहूचयो आइकै । सभ रानी जुत न्रिप कौ लियो बुलाइकै । पुरबासी जन सभे तमासा कौ गए । हो जह असथित वह त्रिया तहाँ ही जात भे ॥१८॥ जो त्रिय पुरख न बिनस्यो ताहि बुलाइयै । वाकै कर दै ह्याँ कलधौत बिजाइयै । जो बिनस्यो नर त्रिय इह हाथ छुवाइयै । हो उगै न कंचन नैक दोश मुहि आइहै ॥ १९ ॥ तब राजै सभहिन यौ कह्यो सुनाइकै । जो बिनस्यो नहि होइ सु बीजहु जाइकै । सुनत बचन त्रिय नर सभही चक्रित भए । हो सोनो बीजन काज न तित कौ जात भे ॥ २० ॥ ॥ चौपई ॥ दरपकला इह भाँति उचारी । जो राजा सभ त्रिया तुहारी । तिन सभहिन इह ठौर बुलावहु । कंचन दै करि हाथ बिजावहु ॥ २१ ॥ ॥ दोहरा ॥ सभ रानी जेतक हुती ठटकि रही मन माहि ।

है, आज तुम तनिक भी लज्जा छोड़कर मेरे साथ रमण करो । मेरे शरीर में अत्यधिक काम व्याप्त है ॥ १६ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ दस माह तक उसने सुख-पूर्वक भोग-विलास किया और अनेकों आसनों, आलिंगनों, चुंबनों आदि का आदान-प्रदान किया । जब ग्यारहवाँ महीना आ पहुँचा तो दर्पकला ने राजा से जाकर कहा ॥ १७ ॥ अब सोना बोने का समय आ गया है । उसने सब रानियों को राजा-समेत बुला लिया । सभी नगरवासी भी तमाशा देखने को आ पहुंचे और वहाँ आ विराजमान हुए जहाँ वह स्त्री थी ॥ १८ ॥ तब उसने कहा कि जो स्त्री-पुरुष कभी पथभ्रष्ट न हुआ हो उस किसी एक को यहाँ बुलाइए और उसके हाथों से सोना बुवाइए । यदि किसी भ्रष्ट ने इसको छुआ तो सोना नहीं उगेगा । तब मुझे दोष मत दीजिएगा ॥ १९ ॥ तब राजा ने सबको सुनाकर कहा कि जो भ्रष्ट नहीं हुआ हो आगे बढ़े और बोये । यह बात सुनकर सभी नर-नारी चकित हो गए और कोई भी सोना बोने के लिए आगे न बढ़ा ॥ २० ॥ ॥ चौपाई ॥ तब दर्पकला ने कहा कि हे राजन् ! अपनी सब रानियों को यहाँ बुलाओ और उन्हें सोना हाथ में देकर बोने के लिए कहो ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ सभी रानियाँ मन में ठिठक

कछु चरित्र इह ठानि रखि कंचन बोयो नाहि ।। २२ ।। ।। चौपई ।। दरपकला पुन ऐस उचारी । जो तुम रावहु न बिभचारी । तौ तुम आइ कंचनहि बोवहु । हमरो सकल असुख कह खोवहु ।। २३ ।। ।। अड़िल्ल ।। त्रिया पुरख सुनि बैन मूँदि मुख रहत भे । कंचन बोवन काज न टरि तित कौ गए । दरपकला तब बचन कहे मुसकाइकै । हो सुनो राव जू बचन हमारो आइकै ।। २४ ।। पुरख इसत्रिन कौ जो न्रिप प्रथम सँघारियै । तौ कर लैकै खड़ग दुहुन हम मारियै । बिनसे बिना न रहियो कोऊ जगत मैं । हो छमाँ करो अपराधु जु कीनौ आजु मैं ।। २५ ।। ।। दोहरा ।। जब रितुराज समै बिखै बेग पवन को होइ । ऊच नीच काँपे बिना रहियो बिरछ न कोइ ।। २६ ।। सुनि राजा ऐसो बचन कीनो तिनै निहाल । शाहु सुता सुत शाहु को देत भयो ततकाल ।। २७ ।। ।। अड़िल्ल ।। इह छल सौ त्रिय छैल सभन कौ छलि गई । केल न्रिपति के धाम मास दस करत भी । बहुर सभन को ऐसो चरित्र दिखाइ करि । हो मन भावत को मीत बर्‌यो (मू०ग्रं०१०४१) सुख पाइ करि ।। २८ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रियाः चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ चौवनों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १५४ ।। ३०७१ ।। अफजूं ।।

गयीं और यह सोचकर कि इसमें कोई प्रपंच है, सोना नहीं बोया ।। २२ ।। ।। चौपाई ।। तब दर्पकला नें पुनः कहा कि हे राजन् ! यदि तुम व्यभिचारी नहीं हो तो तुम आकर सोना बोवो । यदि ऐसा संभव नहीं है तो तुम मेरा सुख क्यों छीनते हो ? ।। २३ ।। ।। अड़िल्ल ।। स्त्री-पुरुष सभी सुनकर मुँह बंद कर खड़े रहे और कोई भी सोना बोने के लिए आगे न बढ़ा । तब दर्पकला नें मुस्कुरा कर कहा कि हे राजन् ! मेरी बात सुनो ।। २४ ।। यदि कोई राजा पति-पत्नी को भी मार डालता हो तो तुम खड़ग लेकर हम दोनों को मार डालो । इस संसार में कोई भी पथभ्रष्ट हुए बिना नहीं बचा है, इसलिए यदि मैंने कोई आज अपराध किया हो तो उसे क्षमा कीजिए ।।२५।। ।।दोहा।। जब वसंतऋतु में पवन वेग से चलता है तो छोटा-बड़ा कोई भी वृक्ष हिले बिना नहीं बचता ।। २६ ।। इन वचनों से उसने राजा को प्रसन्न कर दिया और राजा ने भी राजकुमारी शाह के पुत्र को तत्काल सौंप दी ।। २७ ।। ।। अड़िल्ल ।। इस प्रकार इस छल से स्त्री ने सबको छल लिया और दस

मास तक राजा के घर में केलिक्रीड़ा भी करती रही। फिर ऐसा प्रपंच दिखाकर सुखपूर्वक मनोवांछित मित्र का वरण भी किया ॥ २८ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ चौवनवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १५४ ॥ ३०७१ ॥ अफजू ॥

अथ इक सौ पचपनों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ शाहिजहाँ की इक बरनारी। प्रानमती इह नाम उचारी। तिनिक शाहु को पूत बिलोक्यो। तब ही आनि कामु तिह रोक्यो ॥१॥ ॥ अड़िल्ल ॥ पठै सहचरी ता को लियो बुलाइकै। लपटि लपटि रति करी हरख उपजाइकै। केल करत दुहूँ बचन कहै मुसकाइकै। हो चौरासी आसन लीने सुख पाइकै ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ बहुत दिवस तासों रमी पुनि यौ कह्यो बनाइ। याहि मारि करि डारियै जिनि कोऊ लखि जाइ ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ प्रानमती आग्या तिह दई। मारन सखी ताहि लै गई। आपु भोग तिह साथ कमायो। पुनि तासौ इह भाँति सुनायो ॥ ४ ॥ मोसो भोग भलो तैं दियो। मोहि चित हमरो कौ लियो। तो पर चोट मैं नही डारो। एक चरित तन तुमै निकारो ॥ ५ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ अरध सूर जब चड़्यो सु द्रिगन

एक सौ पचपनवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ शाहजहाँ की एक सुन्दर स्त्री का नाम प्राणमती था। उसने एक शाह का पुत्र देखा और कामासक्त हो उठी ॥ १ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ उसने दासी को भेजकर उसे बुला लिया और लिपट-लिपटकर उससे सुखपूर्वक रतिक्रीड़ा की। केलिक्रीड़ा करते उसने मुस्कुराकर कहा कि मैंने तो इस क्रिया में चौरासी आसन सीख लिये हैं ॥२॥ ॥ दोहा ॥ बहुत दिनों तक उससे रमण किया और फिर उसने सोचा कि इससे पहले कि कोई देख ले मुझे इसे मार डालना चाहिए ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ प्राणमती ने आज्ञा दी और सखी उसे मारने के लिए ले गई। उसने स्वयं अपने साथ संभोग किया और फिर उससे कहा ॥ ४ ॥ तुमने मेरे साथ भली प्रकार रमण किया है और मेरा मन मोह लिया है। मैं तुम्हें चोट नहीं लगने दूंगी और एक प्रपंचाधीन तुम्हें यहाँ से निकाल दूंगी ॥ ५ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ जब सूर्य

निहारिहौ । तब तोरो गहि हाथ नदी मै डारिहौ । तबै हाथ अर पाव अधिक तुम मारियो । हो डूबत डूबत कहिकै ऊच पुकारियो ॥६॥ तब सरता के बिखै ताहि गहि डारियो । हाथ पाव बहु मारि सु जार पुकारियो । डूबत तिह लखि लोग पहूचे आइकै । हो हाथो हाथ उबार्‌यो लयो बचाइकै ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सो पचपनों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १५५ ॥ ३०८४ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ छपनों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ मद्र देस चौधरी भणिज्जै । रोशनसिंघ तिह नाम कहिज्जै । कंद्रपकला बाल तिह सोहै । खग म्रिग जच्छ भुजंगन मोहै ॥ १ ॥ ता के धाम अंनु धनु भारी । निति उठि करै नाथ रखवारी । जौ अतिथ्थ मागन कह आवै । मुख माँगत बरु लै घरु जावै ॥२॥ ॥ अड़िल्ल ॥ तिह ठाँ एक अतीथ पहुँच्यो आइकै । लखि तिह छबि झख

अभी आधा ही निकला होगा तो तुम्हारा हाथ पकड़कर मैं तुम्हें नदी में फेंक दूंगी । तब तुम अत्यधिक हाथ-पाँव मारना और "डूब गया, डूब गया" कहकर चिल्लाना ॥ ६ ॥ तब उसे नदी में उसने डाल दिया और वह प्रेमी हाथ-पाँव मारकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा । उसे डूबता देखकर लोग वहाँ आ पहुँचे और हाथों-हाथ उसे बचा लिया ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में एक सौ पचपनवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १५५ ॥ ३०८४ ॥ अफजू ॥

एक सौ छप्पनवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ मद्रदेश का एक चौधरी था जिसे रौशनसिंह कहते थे । कंदर्पकला उसकी स्त्री थी जो खग, मृग, यक्ष एवं नागों का भी मन मोहित करती थी ॥ १ ॥ उसके घर में अपार धन-धान्य था और नित्य उसका स्वामी उन सबकी रखवाली करता था । जो कोई भिखारी माँगने आता वह उसे अपने घर ले जाता (और यथासंभव अवश्य दान देता) ॥ २ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ उस स्थान पर एक भिखारी आया जिसकी छवि देखकर

केत रहै उरझाइकै। अप्रमान अप्रतिम सरूप बिधनै दयो। (मू०ग्रं०१०४२) हो भूत भविख्य भवान न को ऐसौ भयौ ॥ ३ ॥ कंद्रपकला हेरि ता की छब बसि भई। बिरह नदी के बीच बूडि सिगरी गई। पठै सहचरी तिह ग्रहि लियो बुलाइकै। हो भाँति भाँति रति करी हरख उपजाइकै ॥ ४ ॥ पाँच चौतरो छोरि चौधरी आइयो। कुठिआ मो चौध्रनी ताहि छपाइयो। बहुरि उचारे बैन मूड़ सौ कोपकै। हो ता के सिर कै बिखै पनहिया सौ कु दै ॥ ५ ॥ तुमरे राजन धरै सुयंबर अंग मै। आछो सदन सवारो दयो न दरब तें। कछु न कीनो भोग जगत मै आइकै। हो बिप्रन कियो सु कछु न दान बुलाइकै ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ तब मूरख ऐसी बिधि भाख्यो। मैं तुमते कछु दरबु न राख्यो। जाकौ रुचै तिसी को दीजै। मोरी कछू कानि नहि कीजै ॥ ७ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ तांब्र दान ते दुगन रुकम्म कौ जानियै। रुकम दान तै चौगुन स्वरनहिं मानियै। बडो धान को धन तै दान प्रमानही। हो चारि सु खट दस आठ पुरान बखानही ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ इह जो कोठी अंन जुत दीजै दिजन बुलाइ। इहै

कितनै ही उलझकर रह गए। उसके जैसा अद्वितीय सौंदर्य भूत, भविष्य, वर्तमान अथवा कभी भी नहीं हुआ था ॥ ३ ॥ कंदर्पकला उसकी छवि देखकर वशीभूत हो गयी और विरह रूपी नदी में बुरी तरह डूब गई। उसे दासी भेजकर उसने बुलवा लिया और हर्षपूर्वक भाँति-भाँति से उससे रमण किया ॥ ४ ॥ पंचों का चबूतरा छोड़कर जब आया तो चौधराइन ने उसे कुटिया (घर) में छिपा दिया। फिर उस मूर्ख (चौधरी) से कुपित हो बोली कि तुम्हारे सिर पर तो लगभग सौ जूता मारना चाहिए ॥ ५ ॥ तुम्हारे राज में न तो मैंने अच्छे कपड़े पहने और न तुमने मुझे घर-द्रव्य ही दिया। इस संसार में आकर कुछ नहीं भोगा और न ही कभी किसी ब्राह्मण को बुलाकर कोई दानादि ही दिया ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब उस मूर्ख ने कहा कि मैंने तो तुमसे कुछ छिपाकर नहीं रखा। तुम मेरी परवाह किए बिना जो चाहो, जिसे चाहो दे दो ॥७॥ ॥ अड़िल्ल ॥ ताँबे के दान से दुगुना (पुण्य) चाँदी का, और चाँदी से चौगुना स्वर्ण का माना जाता है; परन्तु इन सबसे बड़ा दान धान का दान है जिसकी पुष्टि वेद, शास्त्र, पुराणादि सभी करते हैं ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ यह जो कोठरी है, इसे अन्न-समेत ब्राह्मणों को दे दो।

कह्यो मुरि मानियै सुनु चौध्रिन के राइ ॥ ९ ॥ वहै भिटौअन बामनी लीनी निकट बुलाइ । जार सहित तिह नाज की कुठिया दई उठाइ ॥ १० ॥ ॥ चौपई ॥ मूरख बत न कछु लखि लई । किह बिधि नारि ताँहि छलि गई । जान्यो दान आजु त्रिय कीनो । ता कौ कछू चरित्र न चीनो ॥ ११ ॥ दान भिटौअन कौ जब दियो । कछु जड़ु भेद समझि नहि लियो । तह ते काढि अंन तिन खायो । तवन जार को घर पहुचायो ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ छपनों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १५६ ॥ ३०९६ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ सतावनों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ बिद्रभ देस भीतर रहै भीमसैन त्रिप एक । है गै रथ हीरन जरे झूलहि द्वार अनेक ॥ १ ॥ दमवंती ता की सुता जाको रूप अपार । देव अदेव गिरैं धरनि तिसकी प्रभा निहारि ॥ २ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ कामदेव तिह चहै सु

हे चौधरी ! तुम मेरी यह बात मान लो ॥ ९ ॥ वहीं भाटों और ब्राह्मणों को बुला लिया और अपने प्रेमी-सहित अनाज की कोठरी उठवा दी ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ मूर्ख व्यक्ति कुछ नहीं देख सका कि किस प्रकार वह चतुर स्त्री उसे छल गयी । उसने समझा कि स्त्री ने आज दान दिया है, परन्तु उसके प्रपंच को नहीं समझ सका ॥ ११ ॥ वे दान लेनेवाले भी कुछ न समझ सके और उन्होंने जब उसमें से अन्न निकालकर खाया तो (उस प्रेमी के निकल आने पर) उसे घर पहुँचा दिया ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ छप्पनवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १५६ ॥ ३०९६ ॥ अफजू ॥

एक सौ सत्तावनवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ विदर्भ देश में भीमसेन नामक एक राजा रहता था, जिसके दरवाज़े पर हीरों से जडित अश्व, हाथी, रथ झूलते रहते थे ॥ १ ॥ उसकी पुत्री दमयंती अद्वितीय सुन्दरी थी, जिसके सौंदर्य को देखकर देव-अदेव धरती पर आ गिरते थे ॥ २ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ कामदेव भी चाहता था कि किसी

3

क्योहूँ पाइयै। इंद्र चंद्र कहै ताहि ब्याहि लै आइयै।
कारतकेअ तिह ब्याहन कियो निहारि करि। हो महाँ रुद्र
बन बसे न आए पलटि घरि ॥ ३ ॥ नैन हरन के हरे
बैन (मू०ग्रं०१०४३) पिक के हरि लीनै। हरि दामनि की
दिपति दसन दारिम बस कीने। कीर नासिका हरी कदलि
जंघन तें हारे। हो छपे जलज जल माहि आँखि लखि लजत
तिहारे ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ ता की प्रभा जहान मै प्रचुर भई
चहूँ देस। सभ ब्याहन ता कौ चहैं शेश सुरेश लुकेश ॥ ५ ॥
सुनि पच्छिन के बकत्र ते त्रिय की सुंदर हाल। मानसरोवर
छोडि तिह आवत भए मराल ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ दमवंती
ते हंस निहारे। रूप मान चित माँझ बिचारे। सखियन
सहित आप उठ धाई। एक हंस तिन तें गहि ल्याई ॥ ७ ॥
॥ हंस बाच ॥ सुनु रानी इक कथा प्रकासौ। तुमरे जिय
कौ भरम बिनासौ। नल राजा दच्छिन इक रहई। अति
सुंदर ता कौं जग कहई ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ तेजमान सुंदर
धनी ताँहि उचारत लोग। ता कौ बोलि बिवाहियै वहु बर

प्रकार उसे पा जाऊँ और इन्द्र-चन्द्र भी चाहते थे कि हम इससे ब्याह कर
लें। कार्तिकेय भी उसे देखकर विवाह करना चाहता था और रुद्र भी उसे
देखकर बन में जा बसा और फिर कभी पलटकर घर नहीं आया ॥ ३ ॥
उसके नयन तो मानों हिरण के चुराए हो और वाणी मानों कोयल की हो।
उसकी दीप्ति तो मानों बिजली से चुराई हो तथा दाँत मानों अनार के दाने
हों। नाक मानों तोते की हो और जंघाएं मानों केले के तने के समान हों।
उसे देखकर तो लज्जावश कमल के फूल भी जल में छिप गए थे ॥ ४ ॥
॥ दोहा ॥ उसकी शोभा का प्रचार चारों दिशाओं में हो गया और शेषनाग,
इन्द्र एवं लोकपाल सभी उससे विवाह करना चाहते थे ॥ ५ ॥ उस स्त्री के
सौंदर्य के बारे में पक्षियों के मुख से सुनकर मानसरोवर के हंस भी चले
आते थे ॥६॥ ॥ चौपाई ॥ दमयंती ने हंस देखे और वे सब उसे अच्छे लगे।
सखियों-सहित वह उठी और उनमें से एक हंस पकड़ लाई ॥ ७ ॥
॥ हंस उवाच ॥ हे रानी ! सुनो, एक कहानी कहता हूँ और तुम्हारा भ्रम
दूर करता हूँ। दक्षिण दिशा में नल नामक एक राजा रहता था, जिसे सारा
संसार अत्यन्त सुन्दर मानता है ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ वह तेजस्वी एवं सुन्दर
है, ऐसा लोग कहते हैं। तुम उसको बुलाकर उससे विवाह करो, वह तुम्हारे

तुमरे जोग ।। ९ ।। ।। चौपई ।। हम हैं मानसरोवर बासी । हंस जोनि दीनी अबिनासी । देस देस के चरित बिचारैं । राव रंक की प्रभा निहारैं ।। १० ।। ।। अड़िल्ल ।। धनद धनी हम लह्यो तपी इक रुद्र निहार्‌यो । इंद्रराज इक लह्यो सूर बिसु इसहि बिचार्‌यो । लोक चत्रदस बिखै तुही सुंदरी निहारी । हो रूपमान नल राज ताहि तुम बरो पियारी ।।११।। ।। दोहरा ।। दमवंती ए बचन सुनि हंसहि दयो उडाइ । लिखि पतिया कर मै दई कहियहु नल प्रति जाइ ।। १२ ।। ।। अड़िल्ल ।। बोलि पिता कौ कालि सुयंब्र बनाइहौं । बडे बडे राजन को बोलि पठाइहौं । पतिया के बाँचत तुम ह्याँ उठि आइयै । हो निजु नारी करि मोहि संग लै जाइयै ।।१३।। हंस उहाँ ते उड्यो तहाँ आवत भयो । दमवंत्यहि संदेस न्रिपति नल कौ दयो । नल पति याकौ रह्यो ह्रिदै सो लाइकै । हो जोरि सैन तित चल्यो म्रिदंग बजाइकै ।। १४ ।। ।। दोहरा ।। दूत पहूच्यो मीत को पतिया लीने संग । आँखैं अति निरमल भई निरखत वाके अंग ।। १५ ।। सुनि राजा बच हंस के मन मै मोद बढाइ । बिद्रभ देस कौ उठि चल्यो

योग्य है ।।९।। ।। चौपाई ।। हम तो मानसरोवर के वासी हैं और परमात्मा ने हमें हंस का जन्म दिया है । हम तो देश-विदेशों के चरित्र देखते हैं और राजा-भिखारी सबके स्वरूप को देखते हैं ।। १० ।। ।। अड़िल्ल ।। धनी तो हमने कुबेर देखा और तपस्वी रुद्र को देखा । इन्द्र ही विश्व में शूरवीर और महान माना जाता है । चौदह भुवनों में सुन्दरी एक तुम्हीं देखने में आती हो । हे प्यारी ! नल अत्यन्त रूपवान है, तुम उसका वरण करो ।।११।। ।। दोहा ।। दमयंती ने यह सुनकर हंस को उड़ा दिया और नल को दे देने के लिए एक पत्र उसके हाथ में दे दिया ।। १२ ।। ।। अड़िल्ल ।। मैं पिता से कहकर समय पाकर यहाँ स्वगंवर रचाऊँगी, जिसमें बड़े-बड़े राजाओं को बुलाया जायगा । पत्र पढ़ते ही तुम यहाँ चले आओ और मुझे अपनी पत्नी बनाकर ले जाओ ।। १३ ।। हंस वहाँ से उड़ा और यहाँ आकर उसने राजा नल को दमयंती का संदेश दिया । नल ने पत्र को हृदय से लगाया और सेना लेकर वाद्य बजवाता चल पड़ा ।। १४ ।। ।। दोहा ।। पत्र लेकर मित्र का दूत पहुँचा जिससे उसे देखते ही आँखें ठंडी हो गईं ।। १५ ।। हंस की बातें सुनकर मन में प्रसन्न हो राजा मृदंगादि बजवाता विदर्भ देश की ओर चल

ढोल म्रिदंग बजाइ ।। १६ ।। ।। अड़िल्ल ।। देवऊ पहुचे आइ दैत आवत भए। गंध्रब जच्छ भुजंग सभै चलि तह गए। इंद्र (मू०ग्रं०१०४४) चंद्र अर सूरज पहुचे आइ करि। हो धनदिईस बलिराव बदित्र बजाइ करि ।। १७ ।। नल ही को धरि रूप सकल चलि तह गए। नल को करि हरि दूत पठावत तह भए। सुनि न्रिप बर ए बचन चल्यो तह धाइ करि। हो किन्ही न हटक्यो ताँहि पहूच्यो जाइ करि ।। १८ ।। दमवंती छबि निरखि अधिक रीझत भई। जु कछु हंस मुहि कह्यो सु सभ साची भई। जाँदिन मैं याको पति करि करि पाइहौ। हो तदिन घरी के सखी सहित बलि जाइहौ ।। १९ ।। मन मै इहै दमवंती मंत्र बिचारियो। सभहिन के बैठे इह भाँति उचारियो। सुनो सकल जन इहै भीमजा प्रन कर्यो। हो जो तुम मै नल राव वहै करि पति बर्यो ।। २०।। फूक बदन ह्वै न्रिपत सकल घर कौ गए। कलिजुगादि जे हुते दुखित चित मै भए। नलहि भीमजा बरी अधिक सुख पाइकै। हो भाँति भाँति बादित्र अनेक बजाइकै ।। २१ ।। तब ता कौ नल धरि पुहकरि को रूप तहाँ कलिजुग गयो।

पड़ा ।। १६ ।। ।। अड़िल्ल ।। देव-दैत्य आ गए तथा गंधर्व, यक्ष, भुजंग आदि सभी उस स्थान की ओर चलकर पहुँच गए। इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, कुबेर एवं अन्य महाबली राजा भी वहाँ वाद्य बजाते आ पहुँचे ।। १७ ।। सभी वहाँ नल के समान सुन्दर रूप धारण कर पहुँच गए और विष्णु ने तो नल को ही अपना दूत बनाकर भेजा। राजा ने यह सुना तो वह भी शीघ्रतापूर्वक चला और बिना किसी रोक-टोक के वहाँ आ पहुँचा ।। १८ ।। दमयंती इस छवि को देखकर रीझ गई और उसने सोचा कि हंस ने जो कहा था, वह सत्य था। वह सोचने लगी कि जिस दिन मैं उसे पति-रूप में पा जाऊँगी उसी दिन सखियों-सहित मैं उस पर न्यौछावर हो जाऊँगी ।। १९ ।। मन में दमयंती ने यह सोचा और सब बैठे हुओं के सम्मुख यह कहा : सभी लोग सुन लें कि भीमसेन की पुत्री ने यह प्रण किया है कि जो भी तुममें से राजा नल होगा, वह उसी का वरण करेगी ।। २० ।। सब राजाओं के मुँह सफ़ेद हो गए और वे सब घरों को चले गए। कलियुग आदि जो भी थे, वे मन में दुखित हो गए। नल ने भीमसेन की पुत्री का सुखपूर्वक वरण किया और अनेक प्रकार के वाद्य बजवाए ।। २१ ।। पुष्कर (नल का भाई) का रूप धारण कर कलियुग

ब्याहि सदन ल्यावत भयो। खेलि जूप बहु भाँति न ताहि हराइयो। हो राज पाट नल बन कौ जीति पठाइयो ॥ २२ ॥ राज पाट नल जब इह भाँति हराइयो। बन मै अति दुखु पाइ अजुद्धिआ आइयो। बिछरें पति के भीमसुता बिरहिन भई। हो जिह मारग गे नाथ तिसी मारग गई ॥ २३ ॥ भीम सुता बिन नाथ अधिक दुख पाइयो। कह लगि करौ बखयान न ज़ात बताइयो। नल राजा के बिरहि बाल बिरहिनि भई। हो शहिर चंदेरी माँझ वहै आवत भई ॥ २४ ॥ भीमसैन तिन हित जन बहु पठवत भए। दमवंती कह खोजि बहुरि ग्रहि लै गए। वहै जु इह लै ग्यो दिज बहुरि पठाइयो। हो खोजत खोजत देस अजुध्या आइयो ॥ २५ ॥ हेरि हेरि बहु लोग सु याहि निहारियो। दमवंती को मुख ते नाम उचारियो। कुसल ताँहि इह पूछ्यो नैनन नीर भरि। हो तब दिज गयो पछानि इहै नल न्रिपति घर ॥ २६ ॥ जाइ तिनै सुधि दई न्रिपति नल पाइयो। तब दमवंती बहुरि सुयंब्र बनाइयो। सुनि राजा के बैन सकल चलि तह गए। हो रथ पै चढ़ि

वहाँ तव गया जब नल दमयंती को ब्याह कर घर ले आया। उससे जुआ खेलकर विभिन्न प्रकार से उसे हरा दिया और नल का राजपाट जीतकर उसे जंगल में भेज दिया ॥ २२ ॥ नल जब इस प्रकार राजपाट हार गया तो वन में अत्यन्त दुखी होकर वह अयोध्या आ निकला। पति से बिछुड़कर दमयंती विरहिणी हो गयी और जिस रास्ते उसका स्वामी गया था वह भी उसी मार्ग पर चल पड़ी ॥ २३ ॥ इधर स्वामी ने भी दमयंती के बिना अत्यधिक दुख पाया। उस दुख का कैसे वर्णन किया जाय! वह वर्णनातीत है। नल राजा के विरह में दुखी वह स्त्री चंदेरी नगर में आयी ॥ २४ ॥ भीमसेन ने बहुत से लोग भेजे जो दमयंती को खोजकर वापस घर ले गए। जो इसे खोजकर ले गए थे उन्हीं ब्राह्मणों को फिर भेजा जो खोजते-खोजते अयोध्या में आ पहुँचे ॥ २५ ॥ खोजते-खोजते लोगों नें इसे देखा और दमयंती के नाम का उच्चारण किया। तब उसने आँखों में आँसू भरकर इन्हें कुशल-क्षेम पूछा। ब्राह्मण तब पहचान गए कि यही राजा नल है ॥२६॥ जब उन्होंनें जाकर खबर की कि नल मिल गया है, तब दमयंती ने दुबारा स्वयंवर रचाया। राजा की आज्ञा पाकर सभी वहाँ जा पहुँचे और राजा नल रथ पर सवार हो आ गए ॥२७॥ ॥ दोहा ॥ रथ पर चढ़े राजा नल को

नल राज तहाँ आवत भए ।। २७ ।। ।। दोहरा ।। न्रिप नल कौ रथ पै (मू०ग्रं०१०४५) चड़े सभ जन गए पछानि । दमवंती पुनि तिह बर्यो इह चरित्र कह ठानि ।।२८।। ।। चौपई ।। लै ता को राजा घर आए । खेलि जूप पुनि शत्र हराए । जीति राज अपनौ पुनि लीनो । भाँति भाँति दुहुँअन सुख कीनो ।।२९।। ।। दोहरा ।। मैं जु कथा संछेप ते याकी कही बनाइ । याते किय बिसथार नहि मति पुसतक बढ जाइ ।। ३० ।। दमवंती इह चरित सों पुनि पति बर्यो बनाइ । सभ ते जग जूआ बुरो कोऊ न खेलहु राइ ।। ३१ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सो सतावनों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १५७ ।। ३१२७ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ अठावनों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। चौड़भरथ संन्यासी रहै । रंडीगिर दुतियै जग कहै । बालकराम एक बैरागी । तिन सौ रहै सपरधा लागी ।। १ ।। एक दिवस तिन परी लराई । कुतकन सेती मारि मचाई । कंठी कहूँ जटन के जूटे । खप्पर सौ खप्पर

सभी पहचान गए । दमयन्ती ने पुनः चरित्रपूर्वक उसी का वरण किया ।।२८।। ।। चौपाई ।। राजा उसे लेकर घर आया और फिर उसने जुआ खेलकर अपने शत्रु को हरा दिया । उसने फिर अपना राज्य जीत लिया और विभिन्न प्रकार से सुख प्राप्त किया ।। २९ ।। ।। दोहा ।। मैंने संक्षेप में कथा इसलिए कही है कि कहीं पुस्तक का आकार न बढ़ जाय ।। ३० ।। दमयन्ती ने अपने चरित्र से पुनः अपने पति का वरण किया । जुआ संसार में सबसे बुरा है इसे कोई न खेलो ।। ३१ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ सत्तावनवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १५७ ।। ३१२७ ।। अफजू ।।

एक सौ अट्ठावनवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। चौड़भरथ नामक एक संन्यासी था जिसे लोग जानते थे कि यह धूर्त एवं लुच्चा है । वहाँ बालकराम नामक एक बैरागी भी था और इन दोनों में परस्पर स्पर्धा थी ।। १ ।। एक बार इन दोनों में लड़ाई

बहु फूटे ।। २ ।। गिरि गिरि कहू टोपियै परी । ढेर जटन ह्वै गए उपरी । लात मुसट के करैं प्रहारा । जन करि चोट परैं घरियारा ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। सभ काँपै कुतका बजैं पनही बहै अनेक । सभ ही के फूटे बदन साबत रह्यो न एक ।। ४ ।। ।। चौपई ।। कंठन की कंठी बहु टूटी । मारी जटा लाठियन छूटी । किसी नखन के घाइ बिराजैं । जनु करि चड़े चंद्रमा राजैं ।।५।। केस अकेस होत कई भए । किते हने नसि किन सर गए । काटि काटि दाँतन कोऊ खाहो । ऐसो कहूँ जुद्ध भ्यो नाही ।। ६ ।। ऐसी मारि जूतियन परी । जटा न किसहूँ सीस उबरी । किसू कंठ कंठी नहि रही । बालकराम पन्ही तब गही ।। ७ ।। एक संन्यासी कौ सिर झारी । दूजे के मुख ऊपर मारी । स्रौनत बह्यो बदन जब फूट्यो । सावन जान पनारो छूट्यो ।। ८ ।। तब सभ ही संन्यासी धाए । गहि गहि हाथ जूतियै आए । चौड़भरथ रंडीगिर दौरे । लै लै ढेव चेलका औरे ।। ९ ।। बालकराम घेरिकै लियो । जूतिन साथ दिवानो कियो । घूमि भूमि

हुई और इन दोनों ने डंडों से मारपीट की । कहीं कंठियाँ और कहीं जटा-जूट गिर पड़े । खप्परों से बहुत खप्पर भिड़कर टूट गए ।। २ ।। टोपियाँ गिर पड़ीं और जटाओं का ढेर लग गया । लातों और मुक्कों के प्रहार ऐसे पड़ने लगे मानों नगाड़ों पर चोटें पड़ रही हों ।। ३ ।। ।। दोहा ।। सभी काँप रहे थे, डंडे बज रहे थे और जूतियाँ उड़ रही थीं । सबके मुँह फूट गए और कोई भी सही सलामत न रहा ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। गले की अनेकों कंठियाँ टूट गईं, जटाओं में मारी जा रही लाठियाँ टूट गईं । नाखूनों के घाव ऐसे लग रहे थे मानों चन्द्रमा शोभायमान हों ।। ५ ।। कई केशधारी केश-विहीन हो गए । कई नष्ट हो गए और कई मार डाले गए । कोई तो दाँतों से ही काट-काटकर खा रहा था । ऐसा भीषण युद्ध कभी नहीं हुआ था ।। ६ ।। जूतों की ऐसी मार पड़ी कि किसी के सिर पर जटा नहीं बची । किसी के गले में कंठी नहीं रही और तब बालकराम ने (भी) जूता पकड़ा ।। ७ ।। उसने एक संन्यासी के सिर पर झाड़ी और दूसरे के मुख पर मार दी । बदन से रक्त ऐसे फूट पड़ा मानों सावन का पनाला बह निकला हो ।। ८ ।। तब सभी संन्यासी टूट पड़े और जूते हाथों में पकड़कर आगे आ पहुँचे । चौड़भरथ रंडीगीर भी चेलादि को लेकर टूट पड़ा ।। ९ ।। उन्होंने बालकराम को घेर

के ऊपर छरियो । जनु करि बीजु मुनारा परियो ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ सभ मुँडिया क्रुद्धित भए भाजत भयो न एक । दौड़ भरथ गिर राँड पैं (मू०ग्रं०१०४६) कुतका हने अनेक ॥११॥ संन्यासी कोपित भए लगे मुतहरी घाइ । लात मुसट जूतिन भए मुँडिया दए गिराइ ॥ १२ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ पकरि मुतहरी पुनि सकोप मुँडिया भए । फरुआ लाठी सभै लए उदित भए । काटि काटि कै अंग संन्यासिन खावहीं । हो दस नाम्रन के लै लै नाम गिरावहीं ॥ १३ ॥ तब संन्यासी धाइ धाइ तिन काटहीं । तोरि तोरि कंठिन ते कंठी साटहीं । ऐंचि ऐंचि टाँगन ते गहि गहि डारही । हो दुहूँ हाथ भे खैंचि मुतहरी मारही ॥ १४ ॥ ॥ चौपई ॥ मुँडिया तांब्रकला पै आए । हम सभ संन्यासीन दुखाए । जब रानी ऐसे सुनि लई । दत्तातैन बुलावत भई ॥१५॥ संन्यासी दत्ता तै मानै । रामानंद बैराग प्रमानै । ते तुम कहै वहै चित धरियहु । मेरी कही चित्त मै करियहु ॥ १६ ॥ एक दिवस हमरे ग्रहि सोवहु । सगरी निसा जागतहि खोवहु । जो तुम कहैं लरौ

लिया और जूतों से मार-मारकर उसे पगला दिया। वह घूमकर धरती पर ऐसे गिर पड़ा मानों बिजली का स्तम्भ गिरा हो ॥१०॥ ॥ दोहा ॥ सभी बैरागी क्रोधित हो उठे और कोई भी भागा नहीं। उन्होंने चौड़भरथ पर अनेकों डंडे बरसाये ॥ ११ ॥ डंडे खाकर संन्यासी भी क्रुद्ध हो गए और उन्होंने भी लात-मुक्कों और जूतों से सभी बैरागियों को गिरा दिया ॥ १२ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ डंडे पकड़कर पुनः बैरागी क्रुद्ध हो उठे और फरसा, लाठी आदि लेकर उठ खड़े हुए। वे संन्यासियों के अंगों को काटने लगे और दासियों को नाम ले-लेकर गिराने लगे ॥ १३ ॥ तब संन्यासी भी दौड़-दौड़कर उन्हें काटने लगे और कंठियों को तोड़-तोड़कर उनका ढेर लगाने लगे। टाँगों से घसीट-घसीटकर उन्हें फेंकने लगे और दोनों हाथों से खींच-खींचकर मुगदर चलाने लगे ॥ १४ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब बैरागी ताम्रकला के पास आए और बोले कि हम सबको संन्यासियों ने बहुत दुखी किया है। जब रानी ने यह सुना तो उसने दत्तात्रेय को बुलवाया ॥ १५ ॥ संन्यासी दत्तात्रेय को मानते थे और बैरागी रामानन्द को प्रामाणिक मानते थे। उसने कहा कि जो ये कहें वही तुम लोग मानो और मेरी बात को ध्यान से सुनो ॥ १६ ॥ तुम सब एक

तौ लरियहु । ना तर बैर भाव नहि करियहु ।। १७ ।। जुदा जुदा घर दोऊ सुवाए । अरध राति भे बैन सुनाए । दत्त रामानंद कहैं सु करियहु । बहुरो कोप ठानि नहि लरियहु ।। १८ ।। ।। दोहरा ।। छलि छैली इह बिधि गई ऐसो चरित सवारि । सिमरि गुरन के बचन द्वै बहुरि न कीनी रारि ।। १९ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ अठावनों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १५८ ।। ३१४६ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ उनसठवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। राजसिंघ राजा इक रहई । बीरकला रानी जग कहई । तासौ नेह त्रिपति को भारो । जानत भेद देस इह सारो ।। १ ।। ।। अड़िल्ल ।। और रानियन कबहूँ न त्रिपति बुलावई । भूलि न कबहूँ तिन कौ सदन सुहावई । इह चिंता चित माँझ चंचला सभ धरैं । हो जंत्र मंत्र अरु

दिन मेरे घर में सोओ और सारी रात जागकर बिताओ । यदि वे (तुम्हारे उपास्य) तुमसे लड़नें को कहें तो लड़ना अन्यथा वैर-भाव नहीं रखना ।।१७।। दोनों को अलग-अलग घरों में सुलाया और आधी रात को फिर कहलाया कि दत्तात्रेय और रामानन्द जो कहें वही करना और दुबारा क्रुद्ध होकर नहीं लड़ना ।। १८ ।। ।। दोहा ।। वह स्त्री इस प्रकार उन सबको प्रपंचपूर्वक छल गई और उन दोनों पक्षों ने गुरुजनों के वचनों का स्मरण कर फिर लड़ाई नहीं की ।। १९ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ अट्ठावनवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १५८ ।। ३१४६ ।। अफजू ।।

एक सौ उनसठवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। राजसिंह नामक एक राजा था । उसकी रानी बीरकला के नाम से जानी जाती थी । राजा का उससे अपार स्नेह था, यह सभी जानते थे ।। १ ।। ।। अड़िल्ल ।। अन्य रानियों को भूलकर भी राजा नहीं बुलाता था और कभी भी उनके घरों की शोभा नहीं बढ़ाता था । सभी स्त्रियाँ मन में यही चिन्ता करती थीं और इसके लिए राजा पर तंत्र-मंत्र-यंत्र

तंत्र राव सौ सभ करैं ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ जंत्र मंत्र सभ ही करि हारे। कैसेहूँ परे हाथ नहि प्यारे। एक सखी इह भाँति उचारो। सुनु रानी तैं बचन हमारो ॥ ३ ॥ जौ उन सौ मैं प्रीति तुराऊँ। तौ तुम ते कहु मैं का पाऊँ। बीर कलहि त्रिप मुख न दिखावै। तुमरे (मू०ग्रं०१०४७) पासि रैनि दिन आवै ॥ ४ ॥ यौ कहि जात तहा ते भई। त्रिपबर के मंदिर महि गई। पति त्रिय के कानन महि परी। मुख ते कछू न बात उचरी ॥ ५ ॥ त्रिप त्रिय कह्यो तोहि का कहियो। सुनि पति बचन मोन ह्वै रहियो। पति पूछ्यो तुहि इह का कही। सुन त्रिय बचन मोन ह्वै रही ॥ ६ ॥ पति जान्यो त्रिय बात दुराई। त्रिय जान्यो कछु त्रिपत चुराई। कोप करा दुहूँअन कै भई। प्रीत रीत सभ ही छुटि गई ॥ ७ ॥ वा रानी सो नेह बढायो। जिन चरित्र इह भाँति बनायो। वासो प्रीति रीति उपजाई। बीरकला चित ते बिसराई ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ इति स्त्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ उनसठवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १५९ ॥ ३१४५ ॥ अफजूं ॥

आदि सब प्रकार से चलाती थीं ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ सभी यंत्र-मंत्र करके हार गईं पर कैसे भी स्वामी हाथ नहीं लगा। तब एक सखी ने कहा कि हे रानी ! तुम मेरी बात सुनो ॥ ३ ॥ यदि मैं उससे राजा की प्रीति तुड़वा दूं तो बताओ तुमसे मुझे क्या मिलेगा ? (मैं ऐसा कर दूंगी कि) बीरकला को राजा मुख भी नहीं दिखाएगा और तुम्हारे पास ही रात-दिन आएगा ॥ ४ ॥ यह कहकर वह वहाँ से चली गई और राजा के महल में पहुँच गई। वहाँ उसने पति और पत्नी दोनों के कानों के साथ मुँह लगाया, पर मुँह से कहा कुछ नहीं ॥ ५ ॥ स्त्री ने राजा से पूछा कि तुमसे क्या कहा तो राजा सुनकर चुप हो रह और जब पति ने पूछा कि तुम्हें क्या कहा तो स्त्री बात सुनकर चुप रह गई ॥ ६ ॥ पति ने समझा कि स्त्री ने कुछ बात छुपाई है और उधर स्त्री नें समझा कि राजा ने कुछ मुझसे छुपाया है। दोनों में परस्पर कोपभाव आ गया और प्रीति की रीति छूट गई ॥ ७ ॥ उसने फिर रानी के साथ प्यार बढ़ाया जिसने यह सब प्रपंच करवाया था। अब फिर उससे प्रीति हो गई और (राजा ने) बीरकला को मन से भुला दिया ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सो उनसठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १५९ ॥ ३१४५ ॥ अफजू ॥

अथ इक सौ साठवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। बलवंडसिंघ तिरहुति को न्रिपबर । जनु बिधि कर्यो दूसरो तम हर । अमित रूप ता को अति सोहै । खग म्रिग जच्छ भुजंगन मोहै ।। १ ।। रानी साठि सदन तिह माही । रूपवती तिन सम कहूँ नाही । सभहिन सौ पति नेह बढावत । बारी बारी केल कमावत ।। २ ।। रुकमकरा रानी रस भरी । जोबन जेब सभन तिन हरी । आनि मैन जब ताहि संतावै । पठै सहचरी न्रिपति बुलावै ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। क्रिशनकला इक सहचरी पठै दई न्रिप तीर । सो या पर अटकत भई हरिअरि करी अधीर ।। ४ ।। ।। चौपई ।। सुनो न्रिपति जू बात हमारी । मैं रीझी लखि प्रभा तिहारी । मैं तव हेरि दिवानी भई । मोकह बिसर सकल सुधि गई ।। ५ ।। ।। दोहरा ।। सुधि भूली मोरी सभै बिरह बिकल भ्यो अंग । कामकेल मोसौ करौ गहि गहि रे सरबंग ।। ६ ।। ।। चौपई ।। जब राजै ऐसे सुनि पायो । ता को भोग हेत ललचायो । लपटि लपटि तासौ रति करी ।

एक सौ साठवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। बलवंडसिंह तिरहुत का श्रेष्ठ राजा था जो मानों विधि द्वारा दूसरे सूर्य का निर्माण किया गया हो। उसका अपरिमित सौंदर्य शोभायमान था और पक्षी, मृग, यक्ष एवं भुजंगादि का मन मोहित करनेवाला था ।। १ ।। उसके महल में अद्वितीय सौंदर्ययुक्त साठ रानियाँ थीं। पति सभी से प्रेम करता था और यथाक्रम से सबके साथ रमण करता था ।। २ ।। रुक्मकला रानी अत्यन्त रसिक थी और यौवन में भी सबसे सुन्दर थी। वह जब कामान्ध होती थी तो दासी भेजकर राजा को बुला लेती ।। ३ ।। ।। दोहा ।। एक कृष्णकला नामक दासी को इसने राजा के पास भेजा जो कामासक्त होकर उस पर रीझ गई ।।४।। ।। चौपाई ।। (वह कहने लगी—) हे राजन् ! मेरी बात सुनो, मैं तुम्हारे सौंदर्य को देखकर रीझ गई हूँ। मैं तुम्हें देखकर दीवानी हो गई हूँ और मुझे समस्त सुधि भूल गई है ।। ५ ।। ।।दोहा।। मुझ सुध भूली हुई के सभी अंग विकल हो उठे हैं, तुम मेरे अंग-उपांगों को पकड़-पकड़कर मुझसे कामक्रीड़ा करो ।। ६ ।। ।। चौपाई ।। जब राजा ने यह सुना तो वह भी भोग के लिए ललचा उठा। उसने लिपट-लिपटकर

चिमटि चिमटि आसन तन धरो ॥ ७ ॥ चिमटि चिमटि
तासौ रति मानी । कामातुर ह्वै त्रिय लपटानी । त्रिप
बर छिनिक न छोर्यो भावै । गहि गहि ताहि गरे सौ
लावै ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ भाँति भाँति आसन लए चुंबन
करे बनाइ । चिमटि चिमटि भोगत भयो गनना गनी न
जाइ ॥ ९ ॥ ॥ सवैया ॥ खाइ बँधे जन (मू०ग्रं०१०४८) की
बरियैं त्रिप भाँग चबाइ अफीम चड़ाई । पीत शराब
बिराजत सुंदर काम की रीति सौ प्रीति मचाई । आसन और
अलिंगन चुंबन भाँति अनेक लिए सुखदाई । यौ तिह तोरि
कुचान मरोरि सु भोर लगे झकझोरि बजाई ॥ १० ॥
॥ अड़िल्ल ॥ रति मानी तिह संग त्रिपति हरखाइकै ।
कामातुर ह्वै जात लिया लपटाइकै । भाँति भाँति के आसन
लए बनाइ करि । हो भोर होत लै भजी हिये सुख पाइ
करि ॥ ११ ॥ ॥ चौपई ॥ बितई रैन भोर जब भई । चेरी
त्रिपति बिदा करि दई । बिहबल भई बिसरि सभ गयो ।
ताँ का ओडि उपरना लयो ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ क्रिशनकला
रति मानिकै तहाँ पहूची जाइ । रुकमकला पूछित भई ताकह

उससे रतिक्रीड़ा की और चिपक-चिपककर आसनादि प्रयुक्त किये ॥ ७ ॥
चिमट-चिमटकर रतिक्रीड़ा करती हुई कामातुर स्त्री राजा से लिपट रही
थी । श्रेष्ठ राजा को क्षण भर भी छोड़े नहीं बनता था और पकड़-पकड़कर
उसे गले से लगाती थी ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ विभिन्न प्रकार के आसन-चुंबन
किये और अगणित प्रकार से चिपक-चिपककर भोग-विलास किया ॥ ९ ॥
॥ सवैया ॥ स्तंभन करनेवाली गोलियाँ खाकर राजा ने भाँग चबाकर ऊपर
से अफ़ीम चढ़ा ली । शराब पीकर उस सुन्दर राजा ने काम की रीति से
प्रेम-प्रदर्शन किया । अनेक प्रकार से सुखदायक आलिंगन-चुंबनों का आदान-
प्रदान किया । इस प्रकार उसके कुचों का मर्दन कर उसे तोड़ते-मरोड़ते
भोर तक उससे रतिक्रीड़ा की ॥ १० ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ राजा ने उस स्त्री से
सुखपूर्वक रमण किया और स्त्री भी कामातुर हो लिपट रही थी । विभिन्न
प्रकार के आसनों के माध्यम से राजा ने सुखपूर्वक प्रातःकाल तक उससे
रमण किया ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ रात बीतने पर जब सुबह हुई तो राजा
ने दासी को विदा कर दिया । उस विरहाकुल ने उस राजा का अंग-
वस्त्र धारण कर लिया ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ कृष्णकला रतिक्रीड़ा कर वहाँ
आ पहुँची जहाँ रुक्मकला ने उसे पास बुलाकर पूछा ॥१३॥ ॥ प्रतिउत्तर ॥

निकटि बुलाइ ।। १३ ।। ।। प्रति उत्तर ।। ।। सवैया ।। काहे कौ लेत है आतुर स्वास गई ही उताइल दौरी इहाँ ते । काहे कौ केस खुले लट छूटियै पाइ परी तव नेह के नाते । ओठन की अरुनाई कहाँ भई तेरी बडाई करी बहु भाँते । कौन कौ अंबर ओढ्यो अली परतीति कौ ल्याई हौ लेहु उहाँ ते ।। १४ ।। ।। दोहरा ।। सुनि बच रानी चुप रही जाके रूप अपार । छल को छिद्र न किछु लख्यो इम छलगी बर नारि ।। १५ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ साठवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १६० ।। ३१६६ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ इकसठवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। नरवर को राजा बड़ो बीरसैन तिह नाम । देस देस के एस जिह जपत आठहूँ जाम ।। १ ।। ।। चौपई ।। स्वरनमती ताकी बर नारी । जनु समुंद्र मथि सात निकारी । रूप प्रभा ताकी अति सोहै । जा सम रूपवती नहि को है ।। २ ।। सुन्यो जोतकिन ग्रहिन लगायो ।

।। सवैया ।। (दासी सहचरी ने कहा) तुम क्यों व्याकुल साँस ले रही हो ? मैं तो दौड़ी-दौड़ी तुम्हारे ही खातिर गई थी । तुम्हारे केशों की लटें क्यों खुली हैं ? मैं तो तुम्हारे स्नेह के नाते उसके पैरों पर भी गिरी । तुम्हारे ओठों की लाली कहाँ गई ? मैंने तो विभिन्न प्रकार से तुम्हारी प्रशंसा की । जानती हो सखी ! मैंने किसका वस्त्र ओढ़ा है ? मैं तुम्हारे लिए ही प्रेम की निशानी लाई हूँ ।। १४ ।। ।। दोहा ।। यह बातें सुनकर रूपवती रानी चुप हो रही और उसके छलछिद्र को न पहचान सकी । इस प्रकार उस स्त्री ने उसे छल लिया ।। १५ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ साठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १६० ।। ३१६६ ।। अफजू ।।

एक सौ इकसठवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। नरवर का वीरसेन नामक राजा था जिसे देश-देशान्तरों के राजा सदैव स्मरण किया करते थे ।। १ ।। ।। चौपाई ।। उसकी स्त्री स्वर्णमती थी । वह ऐसी लगती थी मानों समुद्र-मंथन कर निकाली गई (अप्सरा) हो । उसका रूप शोभायमान और अद्वितीय था ।। २ ।।

कुरूछेत्र नावन न्रिप आयो । रानी सकल संग कर लीनी ।
बहु दच्छिना बिप्रन कह दीनी ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। स्वरनमती
गरभित हुती सोऊ संग करि लीन । छोरि भंडार दिजान को
अमित दच्छिना दीन ।। ४ ।। नव कोटी मरवार को सूर सैन
थो नाथ । सोऊ तहा आवत भयो सभ रनियन लै साथ ।। ५ ।।
।। चौपई ।। बीरकला ताकी बर नारी । दुहूँ पच्छ भीतर
उजिआरी । ताकी प्रभा जात नहि कही । मानहु
फूलि (मू०ग्रं०१०४६) चंबेली रही ।। ६ ।। राजा दोऊ अनंदित
भए । अंक भुजन दोऊ भेटत भए । रनियन दुहूँ
मिलावे भयो । चित को शोक बिदा करि दयो ।। ७ ।।
।। अड़िल्ल ।। निजु देसन की कथा बखानत सभ भई । दुहूँ
आपु मै कुसल कथा की सुधि लई । गरभ दुहुँन के दुहुँअन सुने
बनाइकै । हो तब रनियन बच उचरे कछु मुसकाइकै ।। ८ ।।
जौ दुहूँअन हरि दैहैं पूतुपजाइकै । तब हम तुम मिलिहैं ह्याँ
बहुरौ आइकै । पूत एक के सुता बिधाता देइ जौ । हो
आपस बीच सगाई तिनकी करैं तौ ।। ९ ।। ।। दोहरा ।। यौ
कहि कै त्रिय ग्रहि गई द्वैकन बीते जाम । सुता एक के ग्रहि

राजा ने ज्योतिषियों से ग्रहण के बारे में सुना और कुरुक्षेत्र में स्नान करने के
लिए गया । उसने सब रानियों को साथ लिया और विप्रों को काफ़ी
दक्षिणादि दी ।।३।। ।। दोहा ।। गर्भवती स्वर्णमती को भी साथ ले लिया और
ब्राह्मणों को भंडारागारों से अपरिमित दान दिया ।। ४ ।। नवकोटी मारवाड़
का शूरसेन राजा भी सब रानियों-समेत वहाँ आ पहुँचा ।। ५ ।।
।। चौपाई ।। वीरकला उसकी सुन्दर स्त्री थी जो दोनों पक्षों में सर्वोत्तम
सुन्दरी थी । उसकी प्रभा का वर्णन नहीं किया जा सकता, वह मानों चमेली
का फूल थी ।। ६ ।। दोनों राजा आनंदित हुए और गले मिले । दोनों
रानियाँ भी चित्त का शोक मिटाकर आपस में मिलीं ।। ७ ।। ।। अड़िल्ल ।। वे
अपने-अपने देशों की कथा-वार्त्ता सुनानें लगीं और कुशल-क्षेम पूछने लगीं ।
दोनों ने एक-दूसरे के गर्भ के बारे में जब सुना तो मुस्कुरा कर कहने
लगीं ।। ८ ।। यदि दोनों को भगवान ने पुत्र दिया तो हम दोनों यहाँ फिर
मिलेंगी । यदि एक को पुत्र और विधाता ने दूसरे को पुत्री दे :दी तो हम
लोग उनकी आपस में सगाई कर देंगे ।। ९ ।। ।। दोहा ।। इस प्रकार कहकर
वे स्त्रियाँ अपने-अपने घर गईं । जब लगभग दो प्रहर बीत गए तो एक के

भई पूत एक के धाम ॥ १० ॥ ॥ चौपई ॥ शंमस नाम सुता
को धरियो । ढोला नाम पूत उचरियो । खारिन बीच डारि
दोऊ ब्याहे । भाँति भाँति सौ भए उमाहे ॥ ११ ॥
॥ दोहरा ॥ कुरूछेत्र को न्हान करि तह ते कियो पयान । अपने
अपने देस के राज करत भे आनि ॥ १२ ॥ ॥ चौपई ॥ ऐसी
भाँतिन बरख बितए । बालक हुते तरुन दोऊ भए ।
जब अपनो तिन राज सँभार्यो । पूरब कर्यो बिवाह
चितार्यो ॥ १३ ॥ लरिकापनो दूरि जब भयो । ठौरहि
ठौर और ह्वै गयो । बालाई कितगीरी आई । अंग अंग
फिरी अनंग दुहाई ॥ १४ ॥ ॥ सवैया ॥ एक दिनाँ म्रिग मारिकै
ढोलन यौ अपने मन बीच बिचार्यो । बैस बिती बसि बामन
के अबिबेक बिबेक कछू न बिचार्यो । ब्याह कियो लरिकापन
मै हम जो तिह को कबहू न सँभार्यो । आवत भ्यो निजु धाम
नहीं तिह मारग ही ससुरारि सिधार्यो ॥ १५ ॥ कंबर बाँधि
अडंबर कै करि बोलि सु बीर बरात बनाई । भूखन चारु दिपैं
सभ अंगन आनंद आजु हियें न समाई । रूप अनूप बिराजत
सुंदर नैनन की कहि क्रांति न जाई । चारु छके छबि हेरि

घर पुत्र और दूसरे के घर पुत्री हुई ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ लड़की का नाम शम्मस रखा गया और लड़के का नाम ढोला रखा गया । मंडप में दोनों को विवाह-सूत्र में बाँध दिया गया और विभिन्न प्रकार के उत्सव मनाए गए ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ कुरुक्षेत्र का स्नान कर सबने वहाँ से प्रस्थान किया और अपने-अपने देश को आ गए ॥ १२ ॥ ॥ चौपाई ॥ इसी प्रकार वर्षों बीत गए और वे बच्चे जवान हो गए । जब (ढोला ने) अपना राज्य सँभाला तो पहले किये हुए विवाह का स्मरण किया ॥ १३ ॥ लड़कपन के बीत जाने पर अब और का और ही हो गया । बचपन बीता और अब अंग-अंग में कामदेव लहराने लगा ॥ १४ ॥ ॥ सवैया ॥ एक दिन मृगों को मारकर ढोला ने मन में सोचा कि मेरी उम्र तो स्त्रियों के वश में ही वीती जा रही है । मैंने कभी भी विवेक-अविवेक का विचार नहीं किया । मैंने जो बचपन में विवाह किया था, उसकी कभी खोज-खबर नहीं ली । यह सोचकर वह अपने घर नहीं आया और वहीं से ससुराल जा पहुँचा ॥ १५ ॥ भव्य वस्त्र धारण कर, शूरवीरों को बुलाकर उसने बारात तैयार की । सुन्दर अंगों पर आभूषण शोभायमान थे और हृदय में आनन्द समा नहीं रहा था । उसके

चराचर देव अदेव रहै उरझाई ।। १६ ।। ।। चौपई ।। सूरसैन राजै सुनि पायो । बेटा बीरसैन को आयो । लोक अगमनै अधिक पठाए । आदर सौ ग्रहि मै तिह ल्याए ।। १७ ।। तब रानी शंमस सुनि पायो । ढोला देस हमारे आयो । फूलत अधिक ह्रिदै महि भई । दुरबल हुती पुशट ह्वै गई ।। १८ ।। भेटत (मू०ग्रं०१०५०) पीय पियरवहि भई । चित मै अति प्रफुलत ह्वै गई । ऐंच ऐंचि पिय गरे लगावै । छैलहि छैल न छोर्यो जावै ।। १९ ।। ।। दोहरा ।। पिय पातर पतरी त्रिया परम प्रीति उपजाइ । गहि गहि परै प्रजंक पर पल पल बलि बलि जाइ ।। २० ।। ।। चौपई ।। शंमस संग न कसि रति करै । चित मै इहै बिचार बिचरै । ऐंचि हाथ ताको न चलावै । जिनि कटि टूटि प्रिया की जावै ।। २१ ।। ।। दोहरा ।। तब शंमस ऐसे कह्यो सुनिहो ढोलन मीत । रति कसि कसि मैसौ करौ ह्वैकै ह्रिदै निचीत ।। २२ ।। ढोला नरवर कोट को बस्यो नेह के गाँव । ताँते सभ त्रिय तियन को ढोला उचरत नाँव ।। २३ ।। निडर होइ तुम मुहि

सुन्दर रूप पर आँखें नहीं टिकती थीं । उसकी छवि देखकर चर-अचर, देव-अदेव सभी उलझकर रह गए थे ।। १६ ।। ।। चौपाई ।। शूरसेन राजा ने सुना कि वीरसेन का बेटा आया है। उसने अनेकों लोग आगमन के लिए भेजे जो उन्हें आदरपूर्वक घर ले आए ।। १७ ।। तब रानी शम्मस ने सुना कि ढोला हमारे देश में आया है। वह हृदय में अत्यधिक प्रसन्न हुई और दुर्बलता को त्याग कर बलवान हो गई ।। १८ ।। वह प्रियतम से मिली और मन में अत्यधिक प्रसन्न हो गई। वह खींच-खींचकर प्रिय को गले से लगा रही थी और उस नवयौवना से छैल प्रिय को छोड़े नहीं बनता था ।।१९।। ।। दोहा ।। प्रिय भी पतला और प्रियतमा भी पतली थी। दोनों में घनिष्ठ प्रेम उत्पन्न हुआ था। वह पकड़-पकड़कर पलंग पर गिर रहो और न्योछावर हो रही थी ।। २० ।। ।। चौपाई ।। वह शम्मस के साथ बलपूर्वक रतिक्रीड़ा नहीं कर रहा था और मन में यही सोचकर खींचतान नहीं कर रहा था कि प्रियतमा की कमर न टूट जाय ।। २१ ।। ।। दोहा ।। तब शम्मस ने कहा कि हे प्रिय ! तुम निश्चित होकर मुझसे बलपूर्वक केलिक्रीड़ा करो ।।२२।। नरवरकोट का ढोला तो मानों प्रेम के नगर में बस गया और इसीलिए सब स्त्रियों के मुख से ढोला के नाम का ही उच्चारण हो रहा था ।। २३ ।। तुम निःशंक होकर मेरे साथ रतिक्रीड़ा करो। जैसे रेशम को कसने पर भी वह

भजो शंका करौ न एक । ज्यो रेशम टूटे नही कसि सैंकरो
अनेक ।। २४ ।। ।। अड़िल्ल ।। सुनत पियरवा बैन ताहि
भोगत भयो । चौरासी आसन शंभस के कसि लयो । चुंबन
लए अनेक अंग लपटाइकै । हो चिमटि चिमटि तिह भज्यो
हरख उपजाइकै ।। २५ ।। चतुर चतुरिया चिमटि चिमटि
रति मानही । बिहसि बिहसि बहु भाँतिन बचन बखानही ।
त्रिया तिहारो आसन तज्यो न जावई । हो कहि कहि ऐसी
भाँति गले लपटावई ।। २६ ।। भाँति भाँति अबला के आसन
लेत भ्यो । लपटि लपटि करि गरे ताँहि सुख देत भ्यो ।
चिमटि चिमटि रति करै दोऊ मुसकाइकै । हो सकल कोक
को मत कौ कहै बनाइकै ।। २७ ।। ।। चौपई ।। लै मुकलावो
अति सुख पायो । नरवर गढ़ की ओर सिधायो । ब्याहित दूत
त्रिया को धायो । सकल जाइ तिह भेद जतायो ।। २८ ।।
।। दोहरा ।। तब ब्याहित अगली त्रियहि भेद सकल सुनि पाइ ।
कोपि अधिक चित मै कियो सुनि शंमस को नाइ ।। २९ ।।
स्वरनमती ब्याहित अगलि चित अति कोप बढाइ । बीरसैन
पति पितु भए ऐस कहत भी जाइ ।। ३० ।। कहो बचन चित

नहीं टूटता है, इसी तरह मुझ पर भी कोई कुप्रभाव नहीं पड़ेगा ।। २४ ।।
।। अड़िल्ल ।। प्रिय ने सुनकर उसके साथ रमण किया और उसे चौरासी आसनों में कस लिया । अंगों से लिपट-लिपटकर उसने चुंबन लिये और चिमट-चिमटकर उसने सुखपूर्वक केलिक्रीड़ा की ।। २५ ।। चतुर स्त्री चिमट-चिमटकर रतिक्रीड़ा कर रही थी और हँस-हँसकर बहुत सी बातें कर रही थी । इधर प्रिय भी यह कहकर कि हे प्रिये ! तुम्हारा आसन छोड़ा नहीं जाता, उसके गले से लिपट रहा था ।। २६ ।। वह विभिन्न प्रकार के आसनों का प्रयोग उस स्त्री पर करने लगा और उसके गले से चिमट-चिमटकर उसे सुख देने लगा । दोनों मुस्कुराते हुए लिपट-लिपटकर रतिक्रिया करने लगे और कोकशास्त्र के समस्त मतों के बारे में वार्तालाप करनें लगे ।। २७ ।।
।। चौपाई ।। वह गौना लेकर सुखपूर्वक नरवरगढ़ की ओर चल पड़ा । तब ब्याहता (अन्य) स्त्री का दूत पहुँचा और उससे सारा भेद आ बताया ।। २८ ।।
।। दोहा ।। तब पहली विवाहित स्त्री ने सारा भेद और शम्मस का नाम सुन कर चित्त में अत्यधिक क्रोधित हो उठी ।। २९ ।। ब्याहता स्वर्णमती ने अत्यधिक क्रुद्ध होकर पति के पिता वीरसेन को इस प्रकार जाकर कहा ।।३०।।

दै सुनो बैन एस के एस। भजि ढोला तुम ते गयो लेन तिहारो देस ॥ ३१ ॥ ॥ चौपई ॥ जो तूँ जिय तें ताहि न मरिहै। तौ तेरो सोऊ बध करिहै। कै राजा जियतें तिह मारो। नातर अब ही देस निकारो ॥ ३२ ॥ जब इह भाँति राव सुनि पाई। चित के बिखै सत्ति ठहराई। (मू०ग्रं०१०५१) जौ त्रिय ल्यावन काज सिधावत। मेरे कहे बिना नहि जावत ॥ ३३ ॥ पुत्रबधू मुहि साचु उचारो। लियो चहत सुत राज हमारो। याकौ कहौ न मुख दिखरावै। द्वादस बरख बनहि बसि आवै ॥ ३४ ॥ ॥ दोहरा ॥ पलटि खरावन कौ धर्यो पठै मनुछ इक दीन। मोहि मिले बिनु बन बसै राव बचन इह कीन ॥ ३५ ॥ सुनत भ्रित्त त्रिप के बचन ताँहि कह्यो समझाइ। देस निकारो तुहि दियो मिलहु न मोको आइ ॥ ३६ ॥ तब ढोलन अति दुखित ह्वै ऐसे कह्यो पुकारि। जीवहिगे तौ मिलहिगे नरवर कोट जुहार ॥ ३७ ॥ तब सुंदर संगि उठि चली सुनि करि ऐसे बैन। हियो फटत अंतर घटत बारि चुआवत नैन ॥ ३८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ सुनि ढोलन ए

हे राजाओं के राजा ! तुम मेरी बात सुनो। ढोला तुम्हारे यहाँ से भागकर तुम्हारा देश हड़पने के लिए (तैयारी करने के लिए) गया है॥ ३१ ॥ ॥ चौपाई ॥ यदि तुम उसे मार नहीं डालोगे तो वह तुम्हारा वध कर देगा। हे राजन् ! या तो उसे मार दो अथवा अभी देशनिकाला दे दो ॥ ३२ ॥ जब राजा ने यह सुना तो इसे सत्य मान लिया। उसने सोचा कि यदि पत्नी को लेने के लिए गया होता तो मेरे पूछे बिना नहीं जाता ॥ ३३ ॥ मेरी पुत्र-वधू ने मुझे सत्य कहा है कि मेरा पुत्र मेरा राज्य लेना चाहता है। (उसने आज्ञा दे दी कि) उससे कहो कि वह मुझे मुँह न दिखलाए और बारह वर्ष तक वन में रहकर आए ॥ ३४ ॥ ॥ दोहा ॥ एक व्यक्ति उसे पलट भेजने के लिए रवाना किया और राजा से कह दिया कि वह मुझसे मिले बिना वन को चला जाय ॥ ३५ ॥ सेवक ने राजा के वचन सुनकर उसे कहा कि तुमको देशनिकाला दिया है और राजा ने कहा है कि मुझसे मत मिलो ॥ ३६ ॥ तब ढोला ने दुखी होकर कहा कि हे नरवरकोट ! तुम्हें नमस्कार है। यदि जीवित रहे तो कभी फिर मिलेंगे ॥ ३७ ॥ तब सुन्दरी भी ऐसी बातें सुनकर उठकर साथ चल दी। उसका हृदय फट रहा था और नयनों से नीर बह रहा था ॥ ३८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ ढोला ने यह बात सुनकर नरवरकोट का

बैन नरवरहि तजि गयो । द्वादस बरख प्रमान बसत बन मै भयो । बन उपबन मै भ्रमत फलन को खाइकै । हो त्रिया सहित तह बस्यो म्रिगन कह घाइकै ।। ३९ ।। बरख त्रिदसएँ बीरसैन तन तजि दयो । म्रितुलोक कह छोरि स्वरगबासी भयो । तब ढोलन फिरि आनि राज अपनो लियौ । हो रानी शंमस साथ बरख बहु सुख कियो ।। ४० ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इकसठवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १६१ ।। ३२९० ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ बासठवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। देस तपीसा के रहैं आठ चोरटी नारि । रैनि दिवस चोरी करैं सकै न कोऊ बिचारि ।। १ ।। चित्रमती तसकर कुअरि द्वै तिन की सिरदार । मारग मै इसथित रहैं घावहि लोग हज़ार ।। २ ।। नाराइन दामोद्र भनि बिंद्रा बनहि उजारि । सुनि सारत ऐसे त्रिया सभ ही जाँहि बिचारि ।। ३ ।। नाराइन नर आइयो दामोदर दामंग । बिंद्राबन लै जाइ बन

त्याग कर दिया और बारह वर्ष तक वन में रहा । वह फल खाता वन-वन में घूमता रहा और मृगादि का शिकार करता वह स्त्री-समेत वहाँ बसा रहा ।। ३९ ।। तेरह वर्ष बाद वीरसेन ने शरीर त्याग दिया और मृत्युलोक को छोड़कर स्वर्गवासी हो गया । तब ढोला ने फिर आकर अपना राज्य प्राप्त कर लिया और शम्मस रानी के साथ सुखपूर्वक जीवन व्यतीत किया ।। ४० ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ इकसठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १६१ ।। ३२९० ।। अफजू ।।

एक सौ बासठवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। तपीशा देश में आठ चोर-स्त्रियाँ रहती थीं जो रात-दिन चोरी करती थीं और किसी को भी पता नहीं चलता था ।। १ ।। तस्कर-कुँवरि चित्रमती उनकी मुखिया थी और वे सब मार्ग में खड़ी होकर हज़ारों लोगों को लूटती थीं ।। २ ।। नारायण, दामोदर, वृन्दावन आदि शब्दों का उच्चारण कर वे स्त्रियाँ योजनापूर्वक लोगों को मार डालती थीं ।। ३ ।। वे कहती थीं कि नारायण नर आया है, दामोदर, दामवाला व्यक्ति है, इसे

मारहु याहि निशंग ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ जब अबला ऐसे सुनि पावैं । ता नर कौ बन मै लै जावैं । फाँसी डारि प्रथम तिह घावैं । ताँ पाछै तिह दरबु चुरावैं ॥ ५ ॥ आवत एक नार तह भई । फाँसी डारि तिसू कौ लई । तब अबला तिन बचन उचारे । सु मैं कहत हौ तीर तिहारे ॥ ६ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ कहि निमिति मुहि मारो अति धन देतहौ । तुमरो कछू न दरबु चुराए लेत हौ । सरखत अब ही (मू०ग्रं०१०५२) हम ते लेहु लिखाइकै । हो सदन सहित सभ लेहु खजानो जाइकै ॥ ७ ॥ जौ तुम फाँसी डारि अबै मुहि घाइहो । जो धन हमरे पास वहै तुम पाइहो । सरखत क्यो न लिखाइ मँगाइन लीजियै । हो धाम सहित सभ जाइ खजानो लीजियै ॥ ८ ॥ ॥ दोहरा ॥ चिंत करी इसतिन जु हम लैहै इह धन घाइ । ह्याँ को द्रबु कर आइहै हुआँ के लयो न जाइ ॥ ९ ॥ ताँ ते अबै मँगाइकै सरखत लेहु लिखाइ । धाम सहित याकौ दरब लेहि शहिर मै जाइ ॥ १० ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ सरखत लियो लिखाइ सु तुरतु मँगाइकै । इहै त्रिया तिन ता मै लिख्यो रिसाइकै । मोहि

वृन्दावन जंगल में ले जाकर निस्संकोच मार डालो ॥४॥ ॥चौपाई॥ जब बाक़ी की स्त्रियाँ यह सुनती थीं तो उस व्यक्ति को जंगल में ले जाती थीं । फाँसी लगाकर पहले उसे मारती थीं, फिर उसका द्रव्य लूट लेती थीं ॥ ५ ॥ वहाँ एक स्त्री आयी और उसे भी फाँसी लगा ली गई । तब उस स्त्री ने कहा कि मेरी बात सुनो ॥ ६ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ मुझे क्यों मारती हो, मैं तुम्हें धन दे रही हूँ । मैंने तुम लोगों का कुछ भी नहीं चुराया है । मुझसे इक़रारनामा (पट्टा) लिखवा लो और घर-समेत मेरा ख़ज़ाना ले लो ॥ ७ ॥ यदि तुम लोग मुझे फाँसी लगाकर अभी मार दोगी तो जो धन अभी मेरे पास है, केवल वही तुम्हें मिलेगा । मुझसे इक़रारनामा (पट्टा) क्यों नहीं लिखवा लेती हो और घर-समेत मेरा ख़ज़ाना क्यों नहीं ले लेती हो ॥८॥ ॥दोहा॥ स्त्रियों ने विचार किया कि इसे मारकर यदि हम धन ले लेंगी तो यहाँ का द्रव्य तो मिल जायगा पर वहाँ का नहीं लिया जा सकेगा ॥ ९ ॥ इसलिए अभी इससे पट्टा लिखवा लो ताकि घर-समेत इसका द्रव्य शहर में जाकर ले लिया जा सके ॥ १० ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ वह इक़रारनामा उन्होंने मँगवाकर तुरन्त लिखवा लिया और इस स्त्री ने भी क्रुद्ध होकर उसमें लिख दिया । मुझे

बेकलो जानि फाँस गर डारि करि। हो सरखत लियो लिखाइ बस्त्र धन मोह हरि ॥ ११ ॥ ॥ चौपई ॥ ताकौ छोरि फाँस ते दियो। आपु नगर को मारग लियो। जब सरखत काजियहि निहार्‌यो। तिनकौ चौक चाँदनी मार्‌यो ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ तुंदकला तव बन बिखै ऐसो चरित बनाइ। प्रान राखि धन राखियो उन इसत्रिनि को घाइ ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बासठवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १६२ ॥ ३२१२ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ त्रिसठवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ ग्वारिएर गड़्मोर है भद्रसैन न्रिप नाम। जाको जीव जगत के जपत आठहू जाम ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ बिजैकुअरि ताकी बर नारी। निजु हाथन बिधि जनुक सवारी। अप्रमान तिह प्रभा बिराजै। जाकौ निरखि चंद्रमा लाजै ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ भद्रसैन न्रिप एक दिन खेलन चड़्यो शिकार। जान बैरियन घात तिह ताको दियो

बेबस और अकेली देखकर मेरे गले में फाँसी डालकर मेरे धन-वस्त्रादि छीन कर मुझसे इक़रारनामा लिखवा लिया है ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब उसे पाश में से छोड़ दिया और स्वयं नगर की ओर चल पड़ी। वह इक़रारनामा जब क़ाज़ी ने देखा तो उन्हें चाँदनी चौक में मरवा डाला ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ तुंदकला ने वन में ऐसा चरित्र बनाया कि उन स्त्रियों को मारकर अपने प्राण और धन की रक्षा कर ली ॥ १३ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ बासठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १६२ ॥ ३२१२ ॥ अफजू ॥

एक सौ तिरसठवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ ग्वालियर क़िले में भद्रसेन नामक राजा था, जिसे संसार के लोग सदैव स्मरण किया करते थे ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ विजयकुँवरि उसकी सुन्दर स्त्री को मानों विधाता ने अपने हाथों से बनाया हो। उसकी अपरिमित प्रभा को देखकर चन्द्रमा भी लज्जित होता था ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा भद्रसेन एक दिन शिकार खेलने के लिए गया। वहाँ शत्रुओं

सँघार ।। ३ ।। ।। चौपई ।। चली खबरि रानी पहि आई । राजा हने बैरियन जाई । तब रानी मन मंत्र बिचार्यो । सु मै चौपई मे कहि डार्यो ।। ४ ।। सुत बालक हमरो बिधि कीनो । नाथ मारग सुरपुर को लीनो । ता ते इहै चरित्र बिचारो । छल करि तिन बैरिन को मारो ।। ५ ।। लिख पत्री तिन तीर पठाई । न्रिप जो करी तैसियै पाई । सूरज कला दुहिता कौ लीजै । हम सभ की प्रतिपारा कीजै ।। ६ ।। पत्री बाचि फूलि जड़ गए । जोरि बरातहि आवत भए । जबही भद्र सिंघ पुर (मू०ग्रं०१०५३) आए । तब रानी यौ बचन सुनाए ।। ७ ।। एक एक साऊ ह्याँ आवहिं । हम ते पाव पुजावत जावहिं । ताँ पाछे आपुन न्रिप आवै । सूरज कला को लै घर जावै ।। ८ ।। हमरे धाम रीति इह परी । ताते जात दूरि नहि करी । एक एक जोधा प्रथमावहि । ता पाछे राजा कौ ल्यावहि ।। ९ ।। एक एक साऊ तह आयो । डारि डारि फासी त्रिय घायो । एक सँघारि डारि करि दीजै । दूसर कौ यौ ही बध कीजै ।। १० ।। सभ सूरन को प्रथम सँघार्यो । मारि भोहरन भीतरि

ने अवसर देखकर उसको मार दिया ।। ३ ।। ।। चौपाई ।। रानी को यह खबर मिल गई कि राजा को शत्रुओं ने मार दिया है। तब रानी ने जो मन में सोचा उसे मैंने चौपाई में कहा है ।। ४ ।। अभी पुत्र तो मेरा छोटा है, उधर पति का स्वर्गवास हो गया है। इसलिए अब ऐसा प्रपंच किया जाय कि शत्रु को छल से मार डालना चाहिए ।। ५ ।। उसने पत्र लिखकर उनके पास भेजा कि राजा ने अपने किये का फल पाया है। आप सूरजकला नामक मेरी पुत्री को स्वीकार करो और हम सबकी रक्षा करो ।। ६ ।। पत्र पढ़कर मूर्ख फूले नहीं समाए और बारात बनाकर चल पड़े। जब वे भद्रसेन के नगर में पहुँचे तो रानी ने कहा ।। ७ ।। एक-एक करके सभी यहाँ आएँ और हमसे पाँव पुजवाते जायँ। सबसे बाद में राजा आएँ और सूर्यकला को अपने घर ले जायँ ।। ८ ।। यह हमारे घर की रीति है, इसे छोड़ा नहीं जा सकता। पहले योद्धागण एक-एक करके आएँ फिर राजा को ले आएँ ।। ९ ।। एक-एक साथी आया और रानी ने फाँसी लगाकर उन सबको मार डाला। एक को मारकर फेंक देते थे और फिर दूसरे का भी ऐसे ही वध कर डालते थे ।। १० ।। पहले सभी शूरवीरों को मारकर तहखानों में

डार्यो । ता पाछे न्रिप बोल पठायो । रानी डारि फाँस गर घायो ।। ११ ।। ।। दोहरा ।। सभ सूरा प्रथमै हने बहुरि न्रिपति कौ कूटि । जो लशकर बाकी बच्यो सो सभ लीनो लूटि ।। १२ ।। सभ बैरिन कौ घाइ कै सुत कौ राज बैठाइ । पुनि पति के फैटा भए जरी म्रिदंग बजाइ ।। १३ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ त्रिसठवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १६३ ।। ३२३५ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ चौसठवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। उदैपुरी खुररम की नारी । हजरति कौ प्रानन ते प्यारी । मुख सूखत जी जी तिह करते । अनत न लखे तवन के डरते ।। १ ।। बेगम बाग एक दिन चली । सोरह सत लीनो संग अली । सुंदर नर इक पेखत भई । त्रिय कौ भूलि सकल सुधि गई ।। २ ।। ।। दोहरा ।। जोबन कुअरि सखी हुती लीनी निकट बुलाइ । उदैपुरी तासौ सकल भेद कह्यो समझाइ ।। ३ ।। ।। सवैया ।। कानि करौ नहि

डाल दिया । फिर राजा को बुलाया और रानी ने गले में फाँसी लगाकर उसे भी मार डाला ।। ११ ।। ।। दोहा ।। पहले शूरवीरों को और बाद में राजा को मारकर बाक़ी सब सेना को भी लूट लिया ।। १२ ।। सब शत्रुओं को मारकर और पुत्र को राजगद्दी पर बैठाकर स्वयं पति की पगड़ी के साथ ढोल-मृदंग बजाती हुई जलकर भस्म हो गई ।। १३ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ तिरसठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १६३ ।। ३२३५ ।। अफजू ।।

एक सौ चौंसठवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। उदयपुरी (बेगम) ख़ुर्रम की स्त्री थी जो बादशाह को प्राणों से भी प्यारी थी । उसे जी-जी कहते उसका मुख सूखता था और उससे डरते हुए वह अन्यत्र देखता भी नहीं था ।। १ ।। एक दिन सोलह सौ सहेलियाँ साथ लेकर बेगम बाग़ में गई । वहाँ उसनें एक सुन्दर मनुष्य को देखा और अपनी सुधि भूल गई ।। २ ।। ।। दोहा ।। जोबनकुँवरि नामक सखी को पास बुलाया और उदयपुरी बेगम ने उससे सारी बात कही ।। ३ ।। ।। सवैया ।। तुम शाहजहाँ की चिन्ता मत करो, मेरे पास जितना धन है वह

शाहिजहान की धाम जितो धन है सु लुटाऊँ। अंबर ढारि दिगंबर ह्वै करि चंदन तारि बिभूति चढ़ाऊँ। कासौ कहौ नहि तूँ हमरो कोऊ जी की ब्रिथा कहि ताँहि सुनाऊँ। पंख दए बिधि तूँ लखि मोकह प्रीतम कौ उडिकै मिलि आऊँ ॥ ४ ॥ प्रीति करी तिह सौ किह काज सु मीत के काज जु मीत न आवै। पीर कहै अपने चित मै उहि पीर कौ पीर के नीर बुझावै। हौ अटकी मनभावन सौ मुहि कैसियै बात कोऊ कहि जावै। हौ होऊ दासन दासि सखी मुहि जो कोऊ प्रीतम आनि मिलावै ॥ ५ ॥ जो सखी काज करै हमरो तिह भूखन की कछु भूखन ह्वैहै। बसत्र अपार भरे घर बार सु एकहि बार (मू०ग्रं०१०५४) हजारन लैहै। मोरी दसा अवलोकि कै सुंदरि जानत ही हिय मै पछुतैहै। कीजै उपाइ दीजै बिखु आइ कि मीत मिलाइ कि मोहू न पैहै ॥ ६ ॥ ऐसे उदैपुरी के मुख ते बच जोबन कुअरि जबै सुनि पायो। ताँहि पछान भली बिधि सौ मन बीच बिचार इहै ठहरायो। देग मै डारि चली तित कौ बगवानन भाखि पक्वान लखायो। साइत एक बिहानी न बाग मै आनि पिआरी कौ मीत मिलायो ॥ ७ ॥

मैं लुटा दूँगी। मैं कपड़े फाड़कर निर्वस्त्र हो जाऊँगी और चंदन की भभूत मल लूँगी। मैं किससे मन की व्यथा कहूँ, मेरा कोई नहीं है। यदि मुझे खुदा पंख दे दे तो फिर तू देखना कि कैसे मैं देखते ही देखते उड़कर प्रियतम को मिलकर आती हूँ ॥ ४ ॥ उस मित्र से प्रेम का क्या लाभ जो मित्र के काम न आए। उससे अपने मन की पीड़ा कहने पर वह अश्रुजल से पीड़ा की अग्नि को बुझा देता है। मैं तो मनभावन प्रिय में अटकी हूँ, मुझे किसी भी प्रकार कोई आकर प्रियतम से मिला दे ॥ ५ ॥ हे सखी ! यदि मेरा काम कर दो तो आभूषणों की तुम्हें कमी नहीं रहने दूँगी। अपार वस्त्र-भंडार में से हज़ारों वस्त्र एक ही बार में दे दूँगी। मेरी वास्तविक दशा को देखकर हे सुन्दरी ! तुम मन में पछताओगी। या तो कोई उपाय करके मुझे मेरा मित्र मिला दो अथवा मुझे विष दे दो। यदि मुझसे न मिलवाया तो तुम मुझे पा नहीं सकोगी ॥ ६ ॥ यह वचन जब जोबनकुँवरि ने उदयपुरी के मुख से सुने तो उसनें स्थिति को पहचानकर मन में विचार किया। वह बेगम को देग़ में डालकर उस ओर चली और मालियों को बताया कि इसमें पकवान है। एक घड़ी भर का समय भी न बीता और उसने प्रिया से प्रियतम आ

।। दोहरा ।। उदैपुरी पिय पाइ तिह चरन रही लपटाइ ।
ताको जो दारिद हुते छिन मै दयो मिटाइ ।। ८ ।।
।। अड़िल्ल ।। गहि गहि ताको बाल गरे चिमटत भई । लपटि
लपटि ताके आसन के तर गई । चौरासी आसन सभ लिये
बनाइकै । हो आठ जाम रति करी हरख उपजाइकै ।। ९ ।।
।। दोहरा ।। तरुन पुरख तरुनै त्रिया त्रितिय चंद्र की जौनि ।
लपटि लपटि करि रति करैं तिन ते हारै कौन ।। १० ।।
।। अड़िल्ल ।। कोकसार के मुख ते मतन उचारही । भाँति
भाँति उपबन की प्रभा निहारही । चौरासी आसन सभ करे
बनाइ करि । हो भाँति भाँति रति करी गरे लपटाइ
करि ।। ११ ।। ।। दोहरा ।। चौरासी आसन लए भाँति भाँति
लपटाइ । चतुर चतुरियहि भावई छिनक न छोर्यो
जाइ ।। १२ ।। ।। चौपई ।। ताकी त्रिया भेद सुनि पायो ।
उदैपुरी मो पतिहि बुलायो । भाँति भाँति ताँ सौ रति
करी । मो ते जात बात नहि जरी ।। १३ ।। शाहिजहाँ पै अबै
पुकारौ । छिन मै तुमै खवार करि डारौ । यौ कहि बैन जात

मिलाया ।। ७ ।। ।। दोहा ।। उदयपुरी प्रियतम को पाकर चरणों में लिपट गई और क्षण भर में उस सखी की दरिद्रता को दूर कर दिया ।। ८ ।। ।। अड़िल्ल ।। उसके केशों को पकड़-पकड़कर उसके गले से लिपटने लगी और लिपट-लिपटकर उससे आसनादि करने लगी । उसने चौरासी आसनों के माध्यम से आठ प्रहर तक सुखपूर्वक रतिक्रीड़ा की ।। ९ ।। ।। दोहा ।। जवान पुरुष, जवान स्त्री और चन्द्रमा की चाँदनी में लिपट-लिपटकर रतिक्रीड़ा कर रहे थे । उनसे भला कौन जीत सकता था ।।१०।। ।। अड़िल्ल ।। कोकशास्त्र के वचन मुख से कहते हुए वे भाँति-भाँति से उद्यान-प्रभा को देख रहे थे । उन्होंने विधिपूर्वक चौरासी आसन किये और विभिन्न प्रकार से उसके गले लिपट-लिपटकर उससे रतिक्रीड़ा की ।। ११ ।। ।। दोहा ।। भाँति-भाँति से लिपटकर चौरासी आसन उन्होंने बनाए । चतुर को जब कोई चतुर मिल जाता है तो फिर वह उसे क्षण भर के लिए भी नहीं छोड़ता ।। १२ ।। ।। चौपाई ।। उस (पुरुष) की स्त्री ने सुना कि उदयपुरी ने मेरे पति को बुलाया है और विभिन्न प्रकार से उससे रतिक्रीड़ा कर रही है, तो उसने सोचा कि अब सहन नहीं होता ।। १३ ।। उसने सोचा कि मैं अभी शाहजहाँ के सामने पुकार लगाऊँगी और क्षण में तुम्हें परेशान कर डालूँगी । यह सोचकर वह वहाँ गयी जहाँ बादशाह रंगमहल में था ।। १४ ।। उदयपुरी

भी तहाँ । हजरति रंगमहल महि जहाँ ।। १४ ।। उदैपुरी तिह संग लयाई । तब लौ नारि पुकारि सुनाई । शाहिजहाँ तब बचन उचारे । कवन करत इह शोर दुआरे ।। १५ ।। ।। दोहरा ।। उदैपुरी तब यौं कह्यो समुझि चित्त कै माँहि । सती भयो चाहत त्रिया होन देत इह नाहि ।। १६ ।। ।। चौपई ।। तब हजरति इह भाँति उचारो । याकौ मनै करो जिनि जारो । त्रिय जन संग अमित करि दए । ताकह पकरि जरावत भए ।। १७ ।। ।। दोहरा ।। अति रति तासो मानि कै संग पिअरवहि ल्याइ । हजरत को इह छल (मू०ग्रं०१०५५) छल्यो सवतिहि दियो जराइ ।। १८ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सो चौसठवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १६४ ।। ३२५३ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ पैसठवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। हिंगुलाज जगमात कै रहै देहरो एक । जाहि जगत के जीव सभ बंदत आनि अनेक ।। १ ।। ।। चौपई ।। सिंघ बचित्र तहाँ को त्रिपबर । भाँति भाँति को

उसे साथ ले जब वहाँ पहुँची तो तब तक स्त्री ने पुकार लगाई । शाहजहाँ ने पूछा कि यह कौन शोर कर रहा है ? ।। १५ ।। ।। दोहा ।। उदयपुरी ने तब कहा कि यह स्त्री सती होना चाहती है, पर यह पुरुष उसे सती नहीं होने देता ।। १६ ।। ।। चौपाई ।। तब बादशाह नें यह कहा कि इसे मना करो, जलने मत दो । (परन्तु) स्त्री ने उसके साथ अनेकों लोग भेज दिए, जिन्होंने उसे पकड़कर जला दिया ।। १७ ।। ।। दोहा ।। उससे अत्यन्त सुखपूर्वक रति-क्रीड़ा कर उसे साथ लाकर बादशाह को भी छला और सौतन को भी जला दिया ।। १८ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ चौंसठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १६४ ।। ३२५३ ।। अफजू ।।

एक सौ पैंसठवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। जगत्माता हिंगलाज का एक मन्दिर था, जहाँ सारे संसार के लोग आकर वन्दना किया करते थे ।। १ ।। ।। चौपाई ।। वहाँ का राजा विचित्रसिंह था जिसके पास धन-धान्य के भंडार थे । भानुकला नामक एक

धनु ता के घर । भानकला तिह त्रिया भणिज्जै । ता के को त्रिय तुल्लि कहिज्जै ।। २ ।। दिजबरसिंघ एक दिज ता के । भिसतकला अबला ग्रहि वा के । सूत पूत सुंदर तिह घर मै । कोबिद सभ ही रहत हुनर मै ।। ३ ।। ।। दोहरा ।। तहाँ भवानी को भवन जाहिर सकल जहान । देस देस के एस जिह सीस झुकावत आनि ।। ४ ।। ।। अड़िल्ल ।। अति सुंदर मठ ऊची धुजा बिराजही । निरखि दिपतता ताँहि सु दामनि लाजही । देस देस के एस तहाँ चलि आवही । हो जानि शिवा को भवन सदा सिर न्यावही ।। ५ ।। ।। दोहरा ।। जो इच्छा कोऊ करै सो सभ पूरन होइ । प्रगट बात सभ जगत इह जानत है सभ कोइ ।। ६ ।। ।। चौपई ।। एक दिवस ऐसो तह भयो । अथयो सूर चंद्र प्रगटयो । अकसमात्र बानी तिह भई । सो दिजबर स्रवनन सुनि लई ।। ७ ।। प्रात भए राजा इह मरिहै । कोटि उपाव कियै न उबरिहै । जो कोऊ सात पूत ह्याँ मारै । तौ अपनौ यह राव उबारै ।। ८ ।। दिजबर सुनि बचनन ग्रहि आयो । निजु रानी तन भेद जतायो । तब प्रिय सात पूत संग लीने । सरब मंगला की

स्त्री थी जो उसकी स्त्री के समान थी ।।२।। दिजबरसिंह नामक एक ब्राह्मण था, जिसकी स्त्री का नाम भिस्तकला था । उसके घर में सात पुत्र थे जो गुण से कवि थे ।। ३ ।। ।। दोहा ।। वहाँ जगद्‌विख्यात भवानी का मंदिर था जहाँ देश-देशान्तरों में राजा सिर झुकाते थे ।। ४ ।। ।। अड़िल्ल ।। उस अत्यन्त ऊँचे मठ की ऊँची ध्वजा शोभायमान थी और उसकी चमक देखकर विजली भी लज्जित होती थी । देश-देशों के राजा वहाँ आते थे और उसे भवानी-मंदिर मानकर वहाँ सिर झुकाते थे ।। ५ ।। ।। दोहा ।। वहाँ कोई जो भी इच्छा करता था वह पूरी होती है, इस तथ्य को संसार में सभी जानते थे ।। ६ ।। ।। चौपाई ।। इक दिन ऐसा हुआ कि जैसे ही सूर्य अस्त हुआ और चन्द्र निकला तो अकस्मात वहाँ आकाशवाणी हुई जिसे ब्राह्मण नें सुना ।। ७ ।। सुबह होते ही राजा मर जायगा और किसी भी उपाय से नहीं बचेगा । यदि कोई अपने सात पुत्र यहाँ मारेगा तभी उसका यह राजा बच पायगा ।। ८ ।। ब्राह्मण वचन सुनकर घर आया और उसने अपनी रानी से यह वात कही । तब उसने प्रिय सातों पुत्र लिये और देवी को बलिदान-रूप में दे दिए ।। ९ ।। जब पिता नें सात पुत्रों को मृतक-रूप में देखा तो

बलि दीने ॥ ९ ॥ सात पूत पितु हने निहारे । असि लै
कंठ आपने मारे । सुर पुर बाट जबै तिन लई । ठाढी नारि
निहारत भई ॥ १० ॥ कहै हाथ अपने असि लीनो । निजु
प्रानन को त्रास न कीनो । राव बचै करि ताहि सँभार्यो ।
गहि करि कंठ आपने मार्यो ॥ ११ ॥ सात पूत हनि पतहि
सँभार्यो । बहुरि मूँड अपनो कटि डार्यो । राव चक्यो
कौतक जब लह्यो । सोई खड़ग हाथ मै गह्यो ॥ १२ ॥
सात पूत हमरे हित मारो । बहुरि आपुने नाथ सँघारो ।
पुनि इन देह नेह मम दियो । (मू०ग्रं०१०५६) ध्रिग इह राज हमारो
कियो ॥ १३ ॥ सोई खड़ग कंठ पर धरियो । मारन अपनो
आपु बिचरियो । क्रिपा करी तब ताँहि भवानी । ऐसी
भाँति बखानी बानी ॥ १४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ इन कौ लेहु
जियाइ न निजु बध कीजियै । राज बरिस बहु करौ बहुत
दिन जीजियै । तब दुरगा तै सभ ही दए जियाइकै । हो
निरखि त्रिपति की प्रीति हरख उपजाइकै ॥ १५ ॥
॥ चौपई ॥ ऐसो ढीठ तवन त्रिय करियो । पति पूतन के
प्रानन हरियो । बहुरो बध अपनो कहूँ कीनो । प्रान बचाइ
त्रिपति को लीनो ॥ १६ ॥ ॥ दोहरा ॥ निरखि सत्तता

कृपाण लेकर अपने गले में मार ली । जब वह स्वर्गवासी हुआ तो स्त्री खड़ी देख रही थी ॥ १० ॥ उसने भी अपने हाथ में कृपाण ली और अपनें प्राणों की परवाह नहीं की । उसने भी सोचा कि राजा बच जाय और कृपाण पकड़कर अपने गले में मार ली ॥ ११ ॥ सात पुत्रों को मारकर पति को सँभाला और फिर अपना गला काट डाला । राजा ने चकित होकर यह सब देखा और वही खड़ग अपने हाथ में ले लिया ॥ १२ ॥ उसने यह कहा कि इसने सातों पुत्रों को मेरे लिए मारकर फिर अपने पति को मार डाल और पुनः मेरे स्नेह में अपना शरीर दे दिया । ऐसा राज्य करना मेरे लिए धिक्कार है ॥ १३ ॥ उसने वही खड़ग अपने गले पर रखा और मरने का विचार किया । तब भवानी नें कृपा की और इस प्रकार बोली ॥ १४ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ हे राजन् ! इसको जीवित कर लो और अपना वध मत करो । बहुत वर्ष तक राज करो और जीते रहो । राजा की प्रीति देखकर दुर्गा ने प्रसन्न होकर सभी को जीवित कर दिया ॥ १५ ॥ ॥ चौपाई ॥ ऐसा कार्य उस स्त्री ने किया कि पति और पुत्रों के प्राण हर लिये । फिर अपना वध

सभन की जग जननी हरखाइ । सात पूत पति के सहित तिह जुत दए जियाइ ।। १७ ।। त्रिय चरित्र दुहकरि कर्‌यो जैसो करै न कोइ । पुरी चत्रदस के बिखै धन्य धन्य तिह होइ ।। १८ ।। ।। चौपई ।। सात पूत मूए जियराए । अपनी देह सहित पति पाए । त्रिप की बडी आरबल होई । ऐसो करत चरित्र न कोई ।। १९ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पैंसठवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १६५ ।। ३३७३ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ छियासठवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। सुक्रितसिंघ सूरो बडो सूरति को नरपाल । जुबनकला रानी रहै जाके नैन बिसाल ।।१।। ।। चौपई ।। ता के एक पूत ग्रहि भयो । सवतिन डारि सिंधु मै दयो । कहियो कि इह भिरटी लै गई । इहै खबरि राजा कह भई ।। २ ।। रानी अधिक शोक तब कीनो । माथो फोरि भूँमि तन दीनो । तब राजा ता के ग्रहि आयो । भाँति भाँति

किया और राजा के भी प्राण बचा लिये ।। १६ ।। ।। दोहा ।। सबकी दृढ़ता देखकर जगत्‌जननी ने प्रसन्न हो सातों पुत्र पति-समेत जीवित कर दिए ।।१७।। उस स्त्री ने दुष्कर कार्य किया जो कोई भी नहीं कर सकता । चौदह भुवनों में वह धन्य-धन्य कही जाने लगी ।। १८ ।। ।। चौपाई ।। सात मृत पुत्रों को जीवित कर दिया और अपने शरीर-समेत पति को प्राप्त किया । राजा की आयु भी लंबी हो गई । ऐसा चरित्र कोई दिखा नहीं सकता ।। १९ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में एक सौ पैंसठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १६५ ।। ३३७३ ।। अफजू ।

एक सौ छाछठवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। सूरत नगर का शूरवीर राजा सुकृतसिंह था, जिसकी रानी यौवनकला के विशाल नेत्र थे ।। १ ।। ।। चौपाई ।। उसके घर में एक पुत्र हुआ, जिसे सौतन ने समुद्र में डाल दिया । यह कह दिया कि इसे लकड़बग्गा ले गया है और यही खबर उसने राजा को भी बतायी ।। २ ।। रानी को अत्यधिक दुख हुआ और उसने धरती से माथा फोड़ लिया । तब राजा उसके महल में आया और विभिन्न प्रकार से उसके कष्ट को दूर

तिह ताप मिटायो ॥ ३ ॥ रीति काल की किनूँ न जानी ।
ऊच नीच के सीस बिहानी । एकै बचत काल से सोऊ ।
राव रंक अरु बचत न कोऊ ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ जो उपज्यो
सो बिनसियो जियत न रहसी कोइ । ऊच नीच राजा प्रजा
सुर सुरपति कोऊ होइ ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ तुम सुंदर सभ
शोक निवारहु । स्री जदुपति कह हियै सँभारहु । वा सुत
को कछु शोक न कीजै । और माँगि प्रभु ते सुत लीजै ॥ ६ ॥
॥ दोहरा ॥ अवर तुमारे धाम मै ह्वैहै पूत अपार । वाको
शोक न कीजियै (मू०ग्रं०१०५७) सुन सुंदरि सु कुमारि ॥ ७ ॥
॥ चौपई ॥ जब राजै यौ तिह समझायो । तब रानी सुत
शोक मिटायो । अवर पूत की आसा भए । चौबिस बरिस
बीति करि गए ॥ ८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ सुंदर नर इक पेखत
तब अबला भई । ग्रहि की सभ सुधि बिसरि ताहि तब ही
गई । पठै सहचरी ता कौ लियो मँगाइकै । हो कामकेल
तिह संग कर्यो सुख पाइकै ॥ ९ ॥ ॥ चौपई ॥ तब रानी
यौ ह्रिदै बिचारी । बोलि जार प्रति सकल सिखारी ।
लरिका हुतो जोग यह हरियो । सुंदर जानि न मो बधि

किया ॥ ३ ॥ काल की रीति को कोई नहीं जान सका और यह रीति सब
पर लागू होती है । एक परमात्मा ही इससे बचता है । राजा-रंक कोई
नहीं बचता ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ जो पैदा हुआ है वह नष्ट होगा ही; चाहे वह
राजा हो, प्रजा हो; ऊँच हो, नीच हो; देवता हो अथवा देवताओं का राजा
(इन्द्र) हो ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ हे सुन्दरी ! तुम शोक का त्याग करो और
श्री यदुपति का स्मरण करो । उस पुत्र का शोक मत करो तथा प्रभु से और
पुत्र की याचना कर लो ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ तुम्हारे घर और कई पुत्र होंगे,
इसलिए हे सुन्दरी ! तुम उसका शोक मत करो ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब
राजा से उस स्त्री को ऐसे समझाया तो रानी ने पुत्र-शोक का त्याग किया ।
अन्य पुत्र की आशा में चौबीस वर्ष बीत गए ॥ ८ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ तब स्त्री
ने एक सुन्दर पुरुष देखा और उसे तत्काल घर की सुधि भूल गयी । सखी
भेजकर उसे बुलवा लिया और सुखपूर्वक उसके साथ केलिक्रीड़ा की ॥ ९ ॥
॥ चौपाई ॥ तब रानी ने मन में सोचा और अपने प्रेमी को सब सिखा दिया
कि तुम कहना कि योगी ने एक बार एक बालक का हरण किया था और
सुन्दर जानकर उसका वध नहीं किया था ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ मैं ही वह

करियो ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ थो बालक जोगी हर्यो ह्वै भिरटी के भेस । मै जानत नहि कवन सुत बसत कवन से देस ॥ ११ ॥ ॥ चौपई ॥ जार संग इह भाँति सिखाई । आप राव सो जाइ जताई । जो बालक मै पूत गवायो । सो मैं आजु खोज ते पायो ॥ १२ ॥ सुनि न्रिप बचन अनंदित भयो । ता को बोलि निकट तब लयो । तब रानी इह भाँत उचारो । सुनो पूत तुम बचन हमारो ॥ १३ ॥ सकल ब्रिथा अपनी तुम कहो । हमरे सभ शोकन कर दहो । राजा सो कहि प्रगट सुनायो । राजपूत ह्वै राज कमायो ॥ १४ ॥ सुनु रानी मै कहाँ बखानो । बालक हुतो कछू नहि जानो । जोगी कह्यो सु तुम तन कहिहौ । शोक संताप तिहारो दहिहौ ॥ १५ ॥ इक दिन यौ जौगीस उचार्यो । सूरति शहिर बडो उजियार्यो । ह्वै भिरटी मैं तहाँ सिधायो । बालक सुत राजा को पायो ॥ १६ ॥ ह्वै भिरटी जबही मैं धयो । भाजि लोग आगे ते गयो । तोहि डारि बगली महि लीनो । औरै देस पयानो कीनो ॥ १७ ॥ चेला अवर भच्छ तब ल्याए । ताहि ख्वाइ करि नाथ रिझाए । भच्छन काजि

बालक था, जिसे योगी ने वेश बदलकर चुराया था । मुझे अब पता नहीं मैं किसका पुत्र हूँ और किस देश का रहनेवाला हूँ ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ अपने प्रेमी को तो यह सिखा दिया और आप स्वयं राजा से आ कहा कि हे राजन् ! जिस पुत्र को मैंने गंवा दिया था उसे आज मैंने पा लिया है ॥ १२ ॥ राजा यह सुनकर प्रसन्न हो उठा और उसको अपने पास बुला लिया । तब रानी ने कहा कि हे पुत्र ! तुम हमारी बात सुनो ॥ १३ ॥ तुम अपनी संपूर्ण वार्ता कहो और हमारे दुःख को दूर कर दो । राजा को खुलकर कह दो और फिर राजपुत्र बनकर राज करो ॥ १४ ॥ हे रानी ! सुनो, मैं क्या बताऊँ ? बालक होने के नाते मैं कुछ नहीं जानता था । जो मुझे योगी ने बताया वही मैं तुम लोगों को बताता हूँ और आप लोगों का दुख दूर करता हूँ ॥ १५ ॥ योगी ने एक दिन बताया कि सूरत एक बड़ा नगर है । मैं लकड़बग्गा बनकर वहाँ गया और वहाँ के राजा के पुत्र को पा गया ॥ १६ ॥ जब लकड़बग्गे के रूप में मैं दौड़ा तो लोग आगे से भाग खड़े हुए । तुम्हें मैंने झोली में डाल लिया तथा अन्य देश की ओर चल पड़ा ॥ १७ ॥ तब चेलागण खाने के लिए और कई कुछ लाये और उन्होंने वह सब खिलाकर स्वामी को प्रसन्न किया ।

और कोऊ धरियो। राव पूत लखि मोहि उबरियो ॥ १८ ॥
॥ दोहरा ॥ सुनु रानी ऐसे बचन नैनन नीरु बहाइ।
त्रिप देखत सुत जार कहि लयो गरे सो लाइ ॥ १९ ॥
॥ चौपई ॥ बालक हुतो पूत तब हरियो। मोरे भाग सु
जियत उबरियो। कौनहूँ काज देस इह आयो। सो हम
आजु खोजते पायो ॥ २० ॥ गहि गहि ता को गरे लगावै।
देखत राव चूँबि मुख जावै। अपने धाम सेज डसवाई। तासौ
रैनि बिराजत जाई ॥ २१ ॥ आठो जाम धाम (मू०ग्रं०१०५८)
तिह राखै। पूत पूत मुख ते तिह भाखै। काम केल निसि
भई कमावै। मूरख राव भेद नहि पावै ॥ २२ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ छिआसठवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ १६६ ॥ ३२९४ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ सतसठवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ बाँस बरेली के बिखै बीर बडो धन राव।
शाह परी ताकी त्रिया राखत सभ को भाव ॥ १ ॥

मुझे मार डालने के लिए आगे रखा गया, परन्तु राजा का पुत्र जानकर मुझे छोड़ दिया गया ॥ १८ ॥ ॥ दोहा ॥ रानी ने ये वचन सुनकर आँखों से आँसू बहाते हुए, प्रेमी को पुत्र कहते हुए गले से लगा लिया ॥ १९ ॥ ॥ चौपाई ॥ बच्चा ही था तब पुत्र चुरा लिया गया जो कि मेरे भाग्य से ही जीवित बच गया। यह किसी कार्यवश इस प्रदेश की ओर आया जिसे आज मैंने खोजकर प्राप्त कर लिया है ॥ २० ॥ उसे वह पकड़-पकड़कर गले से लगाने लगी और राजा के देखते ही उसका मुख चूमने लगी। उसकी शय्या अपने महल में लगवाई और रात में उसके साथ सोने लगी ॥ २१ ॥ उसे आठों प्रहर अपने घर में रखने लगी और मुख से उसे पुत्र-पुत्र पुकारने लगी। रात होते ही उससे केलिक्रीड़ा करती थी, परन्तु मूर्ख राजा इस रहस्य को नहीं समझ रहा था ॥ २२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ छिआसठवें
चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १६६ ॥ ३२९४ ॥ अफजू ॥

एक सौ सड़सठवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ बाँस बरेली नगर का धनराव बड़ा वीर था जिसकी स्त्री शाहपरी सबका सम्मान करती थी ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ राजा के यहाँ एक

॥ चौपई ॥ एक पात्र राजा के आई । भूखन बस्त्र अनूप सुहाई । न्रिपबर अटकि तवन पर गयो । रानिन डारि ह्रिदै ते दयो ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ एक भ्रात न्रिप को हुतो जाको रूप अपार । शाह परी तासौ बिधी राजा को डर डारि ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ नितप्रति रानी ताहि बुलावै । कामभोग तिह संग कमावै । राजा कौ हिय ते बिसरायो । ता कौ राज देउँ ठहरायो ॥ ४ ॥ अब मैं राज देत हौ तोकौ । निजु नारी करियहु तुम मोकौ । जो मैं तुमै कहौ सो करियहु । या राजा ते नैक न डरियहु ॥ ५ ॥ मन बीसक इक बिसहि मँगैयै । सभ भोजन के बीच डरैयै । राजा सहित आन सभ खैहैं । छिनकिक बिखै म्रितक ह्वै जैहैं ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ तिन कौ प्रथम सँघारि कै लीजै राजु छिनाइ । आपु देस पति हूजियै मोहि सहित सुख पाइ ॥ ७ ॥ ॥ चौपई ॥ तब तिन जार काज सोऊ कियो । सैन सहित निवतो न्रिप दियो । सभ भोजन भीतर बिसु डारी । सभहिन बेस्वा सहित खवारी ॥ ८ ॥ सैन सहित भच्छत न्रिप भए । घरिकिक बिखै मौत मरि गए । जियत बचे तो

बार आभूषणों, वस्त्रों में सजी हुई एक वेश्या आयी । राजा उसी में उलझ गया और उसने अपनी सब रानियों को भुला दिया ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा का एक सुन्दर भाई था । शाहपरी राजा का भय त्यागकर उससे फंस गई ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ रानी नित्य उसे बुलाने लगी और उससे कामक्रीड़ा करने लगी । राजा को उसने चित्त से भुला दिया और सोच लिया कि राज्य उसके भाई को ही दूंगी ॥ ४ ॥ उससे कहा कि मैं तुम्हें राज्य दूंगी और तुम मुझे अपनी पत्नी बना लेना । जो मैं तुमसे कहूँ तुम वही करना और इस राजा से तनिक भी नहीं डरना ॥ ५ ॥ बीस मन के करीब विष मँगाओ और उसे सभी भोजनों में डाल दो । राजा-समेत सभी खाएँगे और सभी क्षण भर में मर जायंगे ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ पहले उसे मारकर राज्य छीन लो और राजा बनकर मेरे समेत सुख को प्राप्त करो ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब उसके मित्र ने वही कार्य किया और सेना-सहित राजा को भोजन का निमंत्रण दिया । सम्पूर्ण भोजन में विष डाल दिया और सबको वेश्या-समेत खिला दिया ॥ ८ ॥ सेना-सहित राजा ने भोजन किया और घड़ी भर में मर गए । जो जीवित बचे उनको इसने मार दिया और कोई

तिन गहि घाए। तिन ते एक जान नहि पाए॥ ९ ॥ तिन कौ मारि राज तिन लियो। ताकौ निजु नारी लै कियो। हाथ ठाढ कीनो तिह घायो। पाइ पर्यो तिह आनि मिलायो॥ १० ॥ ऐसो चरित चंचला कीनो। निजु नायक कौ बध करि दीनो। और सूरमन कौ बध कियो। राज जार अपनै को दियो॥ ११ ॥ ॥ दोहरा ॥ इह चरित्र सौ चंचला निजु नायक को मारि। राज जार कौ लै दियो ऐसे खेलि खिलारि॥ १२ ॥ १ ॥ (मू०ग्रं०१०५९)

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ सतसठवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १६७ ॥ ३३०६ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ अठसठवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ पच्छिम को राजा रहै रनमंडनसिंघ नाम। देस देस के एस जिह पूजत आठो जाम॥ १ ॥ वा राजा की बल्लिभा जोतिमती सुभ कारि। तीन भवन भीतर नहीं जा सम राजकुमारि॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ एक पात्र राजा पहि आई। निजु हाथन बिधि जानु बनाई। ता पर

भी जीवित न जा सका॥ ९ ॥ उसे मारकर इसने राज्य सँभाल लिया और रानी को अपनी पत्नी बना लिया। जिसने हाथ उठाया उसे मार दिया और जो शरण में आ गया उसे अपने साथ मिला लिया॥ १० ॥ उस स्त्री ने ऐसा प्रपंच किया कि अपने स्वामी का (भी) वध कर दिया। अन्य शूरवीरों को भी मार दिया और राज्य अपने यार को दे दिया॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ इस प्रपंच के माध्यम से स्त्री ने अपने स्वामी को मार दिया और बखेड़ा बनाकर राज्य अपने प्रेमी को दिला दिया॥ १२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ सड़सठवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति॥ १६७ ॥ ३३०६ ॥ अफजू ॥

एक सौ अड़सठवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ पश्चिम में रणमंडन सिंह नामक राजा था, जिसे देश-देशान्तरों के राजागण आठों प्रहर स्मरण किया करते थे॥ १ ॥ उस राजा की स्त्री ज्योतिमती थी, जिसका मुक़ाबला तीनों लोकों में कोई राजकुमारी नहीं कर सकती थी॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ एक वेश्या राजा के पास आयी,

अटक राव की भई । रानी बिसरि ह्रिदै तें गई ।। ३ ।।
।। दोहरा ।। तब रानी चित के बिखै रही अधिक हीं खीझि ।
वा बेस्वा परि राव की सुनि स्रवनन अति रीझि ।। ४ ।।
।। चौपई ।। देस देस खबरै दै गई । बेस्वन रीझि राव की
भई । अबला देस देस तें आई । आनि राव की पुरी
सुहाई ।। ५ ।। ।। दोहरा ।। तब रानी क्रुद्धित भई धारि बदन
मै मौन । न्रिप अटके बेस्वन भए हमैं सँभरिहै कौन ।। ६ ।।
।। चौपई ।। ऐसो जतन कछू अब करियै । जाते इन बेस्वन
कौ मरियै । लखत राव के प्रीति जनाऊ । छलि सो बडो
कलेश मिटाऊ ।। ७ ।। अधिक प्रीति बेस्वन सौ कीनी ।
लछमी बहुत सभन कह दीनी । प्रीति करत जिह न्रिपति
हमारो । सो हमकौ प्रानन ते प्यारो ।। ८ ।। इह सुनि बैन
फूल न्रिप गयो । भेद अभेद न पावत भयो । जा सौ करत
प्रीति मैं भारी । रानी करत ताहि रखवारी ।। ९ ।।
।। दोहरा ।। सभ रानी बेस्वन सहित लीनी निकटि बुलाइ ।
भाँति भाँति के सुख किये तिन ते गीत गवाइ ।। १० ।।

जिसे मानों ब्रह्मा ने स्वयं अपने हाथों से बनाया हो । राजा उसके रूप-सौंदर्य में उलझ गया और उसने रानी को मन से भुला दिया ।। ३ ।। ।। दोहा ।। राजा को उस वेश्या पर मोहित सुनकर रानी चित्त में अत्यधिक खीझ उठी ।। ४ ।। ।। चौपाई ।। देश-देशान्तरों में ख़बरें फैल गईं कि राजा वेश्या पर मोहित है । तब कई देशों की स्त्रियाँ आ गईं और राजा की नगरी की शोभा बढ़ाने लगीं ।। ५ ।। ।। दोहा ।। तब रानी चुप होकर अत्यन्त क्रुद्ध हुई और सोचने लगी कि राजा तो वेश्याओं में फँसा पड़ा है । हमारी संभाल कौन करेगा ।। ६ ।। ।। चौपाई ।। अब कुछ ऐसा उपाय करना चाहिए, जिससे इन वेश्याओं को मार डाला जाय । प्रत्यक्ष में तो राजा से प्रेम करूँ और छल से इस क्लेश को समाप्त करूँ ।। ७ ।। उसने वेश्याओं से प्रेम बढ़ा लिया और उन्हें बहुत सा धन देकर कहा कि हमारा राजा जिसे प्रेम करता है वह हमें प्राणों से भी प्यारा है ।। ८ ।। यह बात सुनकर राजा प्रसन्न हो उठा और किसी रहस्य को न समझ सका । वह सोचने लगा कि जिनसे मैं प्रीति करता हूँ, रानी भी उनकी रक्षा करना चाहती है ।।९।। ।। दोहा ।। राजा ने सब रानियों को वेश्याओं-सहित बुलाया और उनसे गीत आदि सुनकर विभिन्न प्रकार से आमोद-प्रमोद किये ।। १० ।। ।। चौपाई ।। राजा रोज़ यही कृत्य

॥ चौपई ॥ ऐसो चरित नित्त न्रिप करई। कछु रानिन ते
शंक न धरई। सभ बेस्वन ते धाम लुटावै। जोतिमती जिय
मै पछुतावै ॥ ११ ॥ तब रानी न्रिप तीर उचारो। सुनो
न्रिपति जू बचन हमारो। बेरी एक बैठि सुख कीजै। दूजी
नाव बेसवन दीजै ॥ १२ ॥ हम तुम बैठि नाव सुख कैहैं।
इन बेस्वन ते गीति गवैहैं। जो सुंदरि इन ते लखि लिजियहु।
तासौ भोग राव तुम किजियहु ॥ १३ ॥ सो सुनि राव अनंदित
भयो। त्रियन सहित बेस्वन वै गयो। आमूँ जहाँ बहित
नद भारो। जनु बिधि अशटम सिंधु सवारो ॥ १४ ॥ नीकी
नाव रानियन लई। बेरी बुरी बेस्वन दई। अपने राव तीर
बैठार्‌यो। मूरख भेद न कछू बिचार्‌यो ॥ १५ ॥ तब रानी
तिन अति धनु दीनो। बेरियार (मू०ग्रं०१०६०) अपने बसि
कीनो। जहाँ बहत आमूँ नद भारो। बेस्वन तहीं बोरि तुम
डारो ॥ १६ ॥ अरध नदी नवका जब गई। तबही छोरि
मलाहन दई। सभ बेस्वा बूडन तब लागी। भरुवनि दसो
दिसन कह भागी ॥ १७ ॥ बेस्वा सकल गुचकियन खाँही।

करता और रानियों पर तनिक भी शंका न करता। वह सारा धन वेश्याओं
पर लुटाए जा रहा था, जिसे देखकर ज्योतिमती मन में दुखी होती थी ॥ ११ ॥
तब रानी ने राजा से कहा कि हे राजन्! मेरी बात सुनो। एक नाव में
बैठकर आमोद-प्रमोद किया जाय और दूसरी नाव में वेश्याओं को बैठा लिया
जाय ॥ १२ ॥ हम-तुम नाव में बैठकर विहार करेंगे और इन वेश्याओं से
गीत गवाएँगे। फिर इनमें से जो तुमको सुन्दर लगे उससे तुम रमण
करना ॥ १३ ॥ यह सुनकर राजा आनंदित हो उठा और वह वेश्याओं तथा
रानियों-समेत वहाँ के लिए चल पड़ा जहाँ समुद्र के समान विशाल आमू
दरिया बहता था ॥ १४ ॥ अच्छी नौका रानियों ने ले ली और खराब नाव
वेश्याओं को दे दी। राजा को अपने पास बिठा लिया और वह मूर्ख कुछ
भी रहस्य न समझ सका ॥ १५ ॥ तब रानी ने केवटों को धन आदि देकर
अपनी ओर मिला लिया। उनसे कहा कि जहाँ आमू नदी की गहरी धारा
हो वहीं तुम वेश्याओं को डुबाकर मार दो ॥ १६ ॥ नाव जब नदी के बीचो-
बीच पहुँची तब मल्लाहों ने उसे छोड़ दिया। सभी वेश्याएँ जब डूबने लगीं,
तब भड़ुए भी दसों-दिशाओं में भाग चले ॥ १७ ॥ सभी वेश्याएँ डुबकियाँ
खाने लगीं। कोई स्थान न बचा, जहाँ वे भागकर जातीं। तब रानी यह

ठौर न रही भाजि जित जाँही। हाइ हाइ रानी तब करई।
इन मूए राजा इह मरई ॥ १८ ॥ राव सुनत इन कहै
निकारहु। सखियन कह्यो बोर गहि डारहु। अमित
म्रिदंग बहत कहूँ जाही। बेस्वा कही गुचकियन खाँही ॥१९॥
मुरली मुरज तँबूरा बहे। भरुआ बहे जाति नहि कहे।
भरुअनि कहूँ पुकारत जाही। बेस्वन रही कछू सुधि
नाहीं ॥ २० ॥ डूबि डूबि भरुआ कहूँ मरे। भरुअनि उदर
नीर सो भरे। बेस्वा एक जियत नहि बाची। ऐसी मार
किरीचक माची ॥ २१ ॥ गुचकि खात बेस्वा जे गई।
टंगरनि पकरि बोरि सोऊ दई। हाइ हाइ न्रिप ठाढ पुकारै।
को पहुचै तिन खैंचि निकारै ॥ २२ ॥ जो बेस्वा काढन कह
गयो। बूडत वहू नदी महि भयो। धार धार भरुअनि इक
करही। बूडि बूडि सरिता मो मरही ॥ २३ ॥ कूकि कूकि
बेस्वा सभ हारी। किनही पुरख न ऐंचि निकारी। भरुआ
मरि भरुअनि जुत रहे। इक सो साठि ताइफे बहे ॥ २४ ॥
॥ दोहरा ॥ दस दस मन तिलकैं भई खट मन भई इजार।
बूडि मरी बेस्वा सकल कोऊ न सक्यो निकारि ॥ २५ ॥

सोचकर हाय-हाय करने लगी कि इनके मरने से राजा भी मर जायगा.॥१८॥ राजा को सुनाने के लिए वह कहने लगी कि इन्हें निकालो और सखियों से कहने लगी इनको डुबो दो। कहीं अनेकों ढोलक बह रहे थे और कहीं वेश्याएँ गोते खाने लगीं ॥ १९ ॥ मुरली, मुर्ज, तंबूरा आदि बहने लगे और अनेकों भड़ुए भी बहने लगे। (वेश्याओं के साथी) भड़ुए पुकार रहे थे पर इधर वेश्याएँ भी सुधि भूल गईं ॥ २० ॥ भड़ुए डूब-डूबकर मर गए और उनके पेट में पानी भर गया। ऐसी भीषण मार हुई कि एक भी वेश्या जीवित नहीं बची ॥ २१ ॥ डुबकी खाती जो वेश्या बची उसे टाँग से पकड़ कर डुबा दिया गया। राजा खड़ा होकर हाय-हाय पुकारते हुए कहने लगा कि कोई इन्हें पकड़कर निकाले ॥ २२ ॥ जो भी वेश्या को निकालने के लिए गया वह भी नदी में डूबकर मर गया। भड़ए भी धारा के साथ एक हो गए और नदी में डूब-डूबकर मर गए ॥ २३ ॥ चीख़-चीख़कर वेश्याएँ हार गईं, परन्तु किसी ने भी उन्हें खींचकर नहीं निकाला। भड़ुए और वेश्याएँ साथ ही साथ एक सौ साठ के लगभग बह गए ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥ दस मन के क़रीब तिलक और छः मन के क़रीब कपड़े बह गए। सभी वेश्याएँ डूबकर

।। चौपई ।। तब रानी त्रिप पै चलि गई । भाँति भाँति समुझावत भई । पति तुम कछू शोक न बिचारहु । इन रनियन के संग बिहारहु ।। २६ ।। और बेस्वा बोलि पठैयहु । कामकेल तिन संग कमैयहु । जौ तुमकौ राखयो करतारा । होइ सुंदरी कई हजारा ।। २७ ।। ।। दोहरा ।। मूढ़ राव चुप ह्वै रह्यो सक्यो न चरित बिचारि । प्रगट अखारे साठि सत रानी दए सँघारि ।। २८ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पखयाने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सो अठसठवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ।। १६८ ।। ३३२४ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ उनहत्तरवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। ब्रिज महि एक अहीरनि रहै । शाहपरी ता कौ जग कहै । अति उत्तम तिह अंग बिराजै । जाकौ निरखि चंद्रमा लाजै ।। १ ।। (मू०ग्रं०१०६१) रंगीराम अहीरिक तहाँ । लागी लगन त्रिया की उहाँ । जब सोयो अपनो पति जानै । कामकेल तिह संग प्रमानै ।। २ ।। एक दिवस तासो

मर गईं और कोई भी उन्हें न निकाल सका ।। २५ ।। ।। चौपाई ।। तब रानी राजा के पास गई और राजा को विभिन्न प्रकार से समझाने लगी । उसने कहा कि हे राजा ! तुम शोक का त्याग करो और इन रानियों के साथ विचरण करो ।। २६ ।। तुम और वेश्याओं को बुला लो और उनके साथ केलिक्रीड़ा करो । ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे, तुम्हें तो हज़ारों सुन्दरियाँ मिल जायंगी ।। २७ ।। ।। दोहा ।। मूर्ख राजा चुप हो गया और प्रपंच नहीं समझ सका, क्योंकि रानी ने सबके सामने उन सबको मार डाला ।। २८ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ अड़सठवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ।। १६८ ।। ३३२४ ।। अफजू ।।

एक सौ उनहत्तरवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। ब्रज में एक अहीरिन रहती थी, जिसे लोग शाहपरी कहते थे । उसके अंग अत्यन्त सुन्दर थे, जिन्हें देखकर चन्द्रमा भी लज्जित होता था ।। १ ।। वहाँ रंगीराम नामक एक अहीर था । उस स्त्री को उससे प्रेम हो गया । जब वह अपने पति को सोया हुआ समझती तो उस अहीर के साथ कामक्रीड़ा करती थी ।। २ ।। एक दिन उसके साथ पति सोया हुआ

पति सोयो । कामकेल करि अति दुख खोयो । रंगीराम तहाँ चलि आयो । फिरि घर चल्यो दाव नहि पायो ।। ३ ।। जागत हुती त्रिया लखि लीनो । नैनन सैन मित्र कह दीनो । खारी हुती सु ऐंचि मँगाई । निजु पलघा के निकट बिछाई ।। ४ ।। पिय के अंग अलिंगन करियो । आसन तिह खारी पर धरियो । मन मानत को भोग कमायो । मूरख नाह भेद नहि पायो ।। ५ ।। ।। अड़िल्ल ।। चिमटि चिमटि करि भोग अधिक तासौ कियो । अधरपान करिकै करि जारि बिदा दियो । सोत रह्यो मूरख कछु भेद न पाइयो । हो धर खारी पर कस इन करम कमाइयो ।।६।। ।। दोहरा ।। उर चिमट्यो पिय सो रह्यो केल जार तन कीन । खारी दई उठाइ पुनि जार बिदा करि दीन ।। ७ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ उनहत्तरवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १६९ ।। ३३४१ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ सत्तरवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। पलवल को राजा रहै सरबसिंघ तिह

था और उसने रतिक्रीड़ा कर अपना दुख दूर किया था । रंगीराम वहाँ आ पहुँचा, परन्तु अवसर न पाकर वापस घर चला आया ।। ३ ।। जागती हुई स्त्री ने देख लिया और मित्र को इशारा कर एक बड़ी पिटारी लाने को कहा तथा उसे अपने पलंग के पास बिछवा लिया ।।४।। पति के साथ आलिंगनबद्ध होकर उसने अपना आसन पिटारी पर लगाया । उससे मनोवांछित ढंग से रमण किया और मूर्ख पति कुछ भी नहीं समझ सका ।। ५ ।। ।। अड़िल्ल ।। चिमट-चिमटकर उससे केलिक्रीड़ा की और अधर-पान करके मित्र को विदा कर दिया । उस सोते मूर्ख को पता न चला और इसने भी पिटारे पर क्या अद्भुत कर्म किया ।। ६ ।। ।। दोहा ।। ऊपर का हिस्सा तो पति से चिपका रहा और बाक़ी तन यार से केलिक्रीड़ा करता रहा । फिर पिटारे को उठा दिया और यार को विदा कर दिया ।। ७ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ उनहत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १६९ ।। ३३४१ ।। अफजू ।।

एक सौ सत्तरवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। सरबसिंह पलवल का राजा था और देश-देशान्तरों के राजा

नाम। देस देस के एस जिह भजत आठहूँ जाम ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ कला सु बीर ताँहि बरनारी। मथि समुंद्र जनु सात निकारी। जोबन जोति अधिक तिह सोहै। देव अदेवन को मन मोहै ॥ २ ॥ रावतसिंघ बिलोकत भई। हरि अरि बसि रानी ह्वै गई। सहचरि पठै बुलायो जबै। काम केल तासौ किय तबै ॥ ३ ॥ ऐसी भाँति जार निति आवै। वा रानी सौ भोग कमावै। दासी एक तहाँ चलि आई। निरखि मीत तिह रह्यो लुभाई ॥ ४ ॥ केल कमाइ जार जब आयो। चेरी को लखि रूप लुभायो। रनियहि डारि ह्रिदै ते दयो। ता की सेज सुहावत भयो ॥ ५ ॥ केल बिना रानी अकुलाई ॥ ताकौ पैंड बिलोकन आई। कहाँ रहे प्रीतम नहि आए। काहू बैरिनि सौ उरझाए ॥ ६ ॥ सुधि भूली किधो किनूँ भुलायो। खोजत रह्यो पैंड नहि पायो। त्रास दियो किनहूँ तिह आई। भेट भई कोऊ भामिनि भाई ॥ ७ ॥ आवत हैं कि आइ कर गए। आवहिगें कि रूठ के रए। मिलि (मू०ग्रं०१०६२) है यार आइ सुखदाई। बडी

सदैव उसको स्मरण रखते थे ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ वीरकला उसकी ऐसी सुन्दर स्त्री थी मानों उसे समुद्र-मंथन में निकाला गया हो अर्थात् वह मानों कोई अप्सरा हो। उसका यौवन अत्यन्त शोभायमान था जो देव-अदेव सबका मन मोहित करनेवाला था ॥ २ ॥ रावतसिंह को देखते ही रानी काम के वश में हो गई। उसे सहचरी भेजकर बुलाकर रानी नें तुरन्त उससे काम-क्रीड़ा की ॥ ३ ॥ इसी प्रकार वह प्रेमी रोज़ आता था और रानी के साथ विहार करता था। वहाँ एक दासी आयी जिसे देखकर वह मित्र ललचा गया ॥ ४ ॥ जब केलिक्रीड़ा के बाद वह प्रेमी आ रहा था, तो उस दासी के लिए ललचा उठा। अब उसने रानी को मन से भुला दिया और उसी की शय्या की शोभा बढ़ाने लगा ॥ ५ ॥ केलिक्रीड़ा के बिना रानी व्याकुल हो उठी और उसे रास्ते में देखने के लिए आयी। वह सोच रही थी कि प्रियतम कहाँ रह गए जो आए नहीं। कहीं शत्रुओं से तो नहीं उलझ गए ॥ ६ ॥ कहीं उनको याद तो नहीं भूल गई अथवा खोजने पर भी आज रास्ता न मिला हो। कहीं किसी ने आकर तो उनको दुख नहीं दिया अथवा उनसे कोई अन्य स्त्री तो नहीं मिल गई ॥ ७ ॥ आ रहे हैं कि आकर चले गए हैं। आएँगे अथवा मुझसे रूठ गए हैं। मेरा सुखदायक मित्र अवश्य आएगा।

बार लगि बार लगाई ॥८॥ यौ चित चिंत तहाँ पगु धार्यो । मीत चेरियहि रमत निहार्यो । सिर पग लगे कोप तब भई । जाइ खबरि राजा तन दई ॥ ९ ॥ ॥ दोहरा ॥ घर खोए बैठ्यो कहा परी धाम तव धार । खड़ग हाथ गहि देख चल आँखैं दोऊ पसारि ॥ १० ॥ तब राजा चेरी भए ता कौ रमत निहारि । दुहूँअन कौ मारत भयो सक्यो न मूड़ बिचारि ॥ ११ ॥ इह चरित्र कै चंचला राजा सौ छल कीन । जार तवन चेरी सहित पठै धाम जम दीन ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सत्तरवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १७० ॥ ३३५३ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ इकहत्तरवों चरित्र कथन ॥

॥ दोहरा ॥ रंघरारी रंघरो बसै कंचनसिंघ सु नाम । साहिब देई त्रिय रहै जाहि सतावै काम ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ ताहि जारनी नाथ बिचार्यो । एक दिवस इह

यही सोचकर वह देर तक रास्ता देखती रही ॥ ८ ॥ यह मन में सोचते हुए उसने पाँव आगे बढ़ाए और मित्र को दासी के साथ लिप्त देखा । वह सिर से पैरों तक कुपित हो उठी और जाकर राजा को खबर दे दी ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ हे राजन् ! तुम घर गँवाकर कहाँ बैठे हो, घर में तो डकैती हो रही है । हाथ में तलवार लेकर खुद चलकर आँखें खोलकर देख लो ॥ १० ॥ तब राजा ने दासी और उस मित्र को रमण करते देखा । उसने उन दोनों को मार दिया और मूर्खतावश कुछ भी न समझ सका ॥ ११ ॥ इस प्रपंच के माध्यम से उस स्त्री ने राजा को छला और उसने उस व्यक्ति को दासी-सहित यमलोक भेज दिया ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ सत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १७० ॥ ३३५३ ॥ अफजू ॥

एक सौ इकहत्तरवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ रंघड़ नगरी में कंचनसिंह रंघड़ (वह राजपूत जो मुसलमान बन चुका हो उसे रंघड़ कहते थे) रहता था । जिसकी स्त्री साहिबदेवी कामाकुल रहती थी ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ उस कुलटा के नाथ ने विचार कर एक दिन उससे कहा कि मैं देश छोड़कर परदेश जाऊँगा और अत्यधिक धन

भाँति उचार्‍यो । देस छोरि परदेस सिधैहौ । अधिक कमाइ
तुमै धन ल्यैहौ ।। २ ।। जात भयो ऐसे बच कह्यो । लागि
धाम कोने सौ रह्यो । साहिब दे तब जार बुलायो । काम
भोग तिह साथ कमायो ।। ३ ।। ग्रहि कोना सौ पतिहि
निहार्‍यो । इहै चंचला चरित बिचार्‍यो । लपटि लपटि
आसन सौ जावै । कूकि कूकि इह भाँति सुनावै ।। ४ ।। जो
पति होत आजु घर माँही । क्यों हेरत तै मम परछाँही ।
प्रीतम नही आजु ह्याँ मेरो । अबही सीस फोरतो तेरो ।। ५ ।।
।। दोहरा ।। अति रति तासो मानिकै दीनो जार उठाइ ।
आपु अधिक पीटत भई ह्रिदै शोक उपजाइ ।। ६ ।।
।। चौपई ।। मेरो आजु धरमु इन खोयो । प्राननाथ ग्रहि
माँझ न होयो । अब हौ टूटि महल ते परिहौ । ना तर मारि
कटारी मरिहौ ।। ७ ।। कैधो अंग अगनि मै जारो । कैधो
पिय पै जाइ पुकारो । जोरावरी जार भज गयो । मोरो
धरम लोप सभ भयो ।। ८ ।। ।। दोहरा ।। यौ कहिकै मुख ते
बचन जमधर लई उठाइ । उदर बिखै मारन लगी निजु पति
को दिखराइ ।। ९ ।। ।। चौपई ।। ऐसे निरखि तवन पति

कमाकर तुम्हारे लिए लाऊँगा ।। २ ।। वह तो यह कहकर चल पड़ा, परन्तु फिर भी घर के एक कोनें से लगकर खड़ा रहा । तब साहिबदेवी ने अपने प्रेमी को बुलाया और उसके साथ केलिक्रीड़ा की ।। ३ ।। इधर स्त्री ने घर के कोने में खड़े पति को देखकर यह प्रपंच बनाया कि वह लिपट-लिपटकर अनेकों आसन बनाने लगी और चीख-चीखकर यह सुनाने लगी ।। ४ ।। यदि आज मेरा पति घर पर होता तो भला मैं तेरी परछाई भी क्यों देखती । मेरा प्रियतम आज यहाँ नहीं है अन्यथा वह तुम्हारा सिर फोड़ देता ।। ५ ।। ।। दोहा ।। उससे गहन कामक्रीड़ा करके मित्र को उठा दिया और दुखी होकर स्वयं को पीटने लगी ।। ६ ।। ।। चौपाई ।। मेरा तो आज इसने धर्म भ्रष्ट कर दिया है, क्योंकि मेरा प्राणनाथ आज घर पर नहीं था । अब मैं या तो इस मकान से गिर पड़ूँगी अथवा कटारी मारकर मर जाऊंगी ।। ७ ।। या तो मैं अग्नि में जल जाऊँगी अथवा अपने प्रियतम को पुकारकर बताऊँगी । ज़बर्दस्ती वह नीच (यार) भाग गया है और मेरा धर्म नष्ट हो गया है ।। ८ ।। ।। दोहा ।। यह मुँह से कहकर उसने कृपाण उठा ली और अपने पति को दिखाकर पेट में मारने लगी ।।९।। ।। चौपाई ।। यह देखकर पति दौड़ा और

धयो। जमधर छीन हाथ ते लयो। प्रथम घाइ तुम हमैं प्रहारो। ताँ पाछे अपने उर मारो ॥ १० ॥ तेरो धरम लोप (मू०ग्रं०१०६३) नहिं भयो। जोरावरी जार भजि गयो। दससिर बल सौ सिय हरि लीनी। स्री रघुनाथ त्याग नहि दीनी ॥ ११ ॥ ॥ दोहरा ॥ सुनु अबला मैं आपने करत न हिय मै रोसु। जार जोर भजि भज गयो तेरो कछू न दोस ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इकहत्तरवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १७१ ॥ ३३६५ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ बहत्तरवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ ऐंडे रा इक भाट भणिज्जै। गीतकला तिह त्रिया कहिज्जै। बीरमदे तिन बीर निहार्यो। तबै चित्त ते भाट बिसार्यो ॥ १ ॥ ॥ जार बाच ॥ ॥ दोहरा ॥ बाँधि खाटु तर निजु पतिहि हम सौ भोग कमाइ। तौ मै जानौ साचु तूँ हितू हमारी आइ ॥२॥ ॥ चौपई ॥ ऐंडे राइ एक दिन आयो। दुखित नारि ह्वै बचन सुनायो।

उसने कृपाण उससे छीन ली। उसने कहा कि पहले तुम मुझे मारो और फिर अपने हृदय में मारो ॥ १० ॥ तेरा धर्म नष्ट नहीं हुआ है, वह नीच व्यक्ति तो ज़बर्दस्ती कर भाग गया है। रावण ने सीता को बलात् हर लिया तो कहीं राम ने उसे त्याग थोड़े ही दिया था ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ हे पत्नी ! सुनो, तुम मन में दुखी न हो। वह नीच यार तो तुमसे ज़बर्दस्ती कर गया, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में एक सौ इकहत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १७१ ॥ ३३६५ ॥ अफजू ॥

एक सौ बहत्तरवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ ऐंडेराय एक भाट था जिसकी स्त्री गीतकला थी। जब उसने बीरमदेव वीर को देखा तो तत्क्षण भाट को मन से भुला दिया ॥ १ ॥ ॥ यार उवाच ॥ ॥ दोहा ॥ यदि अपने पति को पलंग के नीचे बाँधकर मुझसे रमण करो तो मैं जानूँ कि तुम मेरी सच्ची प्रेमिका हो ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ ऐंडेराय जब एक दिन आया तो स्त्री ने दुखित हो कहा कि हे

तुम कौ रोग नाथ इक भारो । ताते खीझत चित्त हमारो ।।३।।
।। दोहरा ।। एक बैद मैं तव निमित राख्यो धाम बुलाइ ।
ताते तुरतु कराइयै अपन इलाज बनाइ ।।४।। ।। चौपई ।। ऐंडे
राइ तबै यौ कयो । बीरमदेव बोलि करि लयो । या गद
कौ गदहा क्या करियै । जाते रोग बडो परहरियै ।। ५ ।।
बैद तबै यौ बचन उचारे । बडो रोग इह भयो तिहारे ।
या कौ जंत्र मंत्र नहि कोई । एक तंत्र होवै तौ होई ।। ६ ।।
मदिरा अधिक आपु लै पीजै । और आपनी तिय कह दीजै ।
खाट तरे बाँधे तुम रहो । मुख ते परे कबित्तन कहो ।। ७ ।।
एक बीर इक ठौर बुलैहौ । इसी खाट ऊपर बैठैहौ । मल्ल
जुद्ध तव त्रिय तब करिहै । तो तव रोग बडो परहरिहै ।। ८ ।।
मूड़ बात इह कछू न जानी । देह अरोग सरोग पछानी ।
आपु मँगाइ मद्य तब पियो । जार सहित अबला को
दियो ।। ९ ।। निजु कर मै तिय जार पिवायो । बपु औंधो
तर खाट बँधायो । आँखै दोऊ मूँदि कर लई । जार त्रिया
आरूढ़ित भई ।। १० ।। भाट पर्यो तर कबित्त उचारै । भेद

नाथ ! तुम्हें एक भारी रोग है, जिससे मेरा चित्त खिन्न रहता है ।। ३ ।। ।। दोहा ।। मैंने एक वैद्य तुम्हारे लिए घर में बुलाया है, अब तुम तुरन्त उससे अपना इलाज कराओ ।।४।। ।। चौपाई ।। ऐंडेराय ने तब बीरमदेव को बुला लिया और कहा कि मामूली रोग के लिए वैद्य की क्या आवश्यकता है, वैद्य से तो किसी बड़े रोग का इलाज करवाया जाना चाहिए ।। ५ ।। तभी वैद्य ने कहा कि तुम्हें तो बड़ा रोग हो गया है । इसका कोई यंत्र-मंत्र नहीं है । हाँ एक तंत्र है जो कुछ कर सकता है ।। ६ ।। तुम स्वयं ख़ूब मदिरा-पान करो और बाक़ी अपनी स्त्री को दे दो । तब पलंग के नीचे तुम बँधे रहो और मुख से कविता कहते रहो ।। ७ ।। तब एक वीर को यहाँ बुलाओ जो इसी पलंग पर बैठकर तुम्हारी स्त्री से मल्लयुद्ध करेगा । तब जाकर कहीं यह घातक रोग हटेगा ।। ८ ।। उस मूर्ख ने बात को समझा नहीं । उसकी देही निरोग थी, पर उसने उसे रोगी मान लिया । उसने आप मद्य-पान किया और यार-सहित उस स्त्री को भी दे दिया ।। ९ ।। स्त्री ने अपने हाथों से प्रेमी को पिलाया और उसे (पति को) उलटा पलंग के साथ बाँध दिया । उसने दोनों आँखें बंद कर लीं और (पलंग पर) यार और स्त्री चढ़ बैठे ।। १० ।। यार नीचे से कविता कहने लगा और भेद-अभेद को न

अभेद कछू न बिचारै । वहै तंत्र जो बैद बनायो । तांते देव हमारै आयो ।। ११ ।। भोगु जार अबला सौ कियो । भाँति भाँति ता को सुख दियो । उछल उछल रति अधिक कमाई । मूरख भाट बात नहि पाई ।। १२ ।। ।। दोहरा ।। उतरि खाट ते खोलि द्रिग दियो (मू०ग्रं०१०६४) न कीनो सोगु । भाट पछान्यो साचु जिय अब मैं भयो अरोग ।। १३ ।। बाँधि खाट तर भाट कौ ता कर तें मद पीय । रति मानी त्रिय जार सौं भेद न पायो पीय ।। १४ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बहत्तरवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १७२ ।। ३३७९ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ तिहत्तरवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। राइ निरंजन चोपरो जाकी त्रिया अनूप । लोक सकल निरखैं तिसै रति कौ जानि सरूप ।। १ ।। शहिर बसै बहलोलपुर जाको रूप अमोल । सूरा सकल सराहही नाम खान बहलोल ।। २ ।। जब संगीतकला त्रियहि ग्यो बहलोल

पहचान सका । वह सोच रहा था कि वैद्य के तंत्र के प्रभाव से ही व्यक्ति आया है ।। ११ ।। यार ने स्त्री के साथ संभोग-क्रीड़ा की और भाँति-भाँति से उसे सुख दिया । उछल-उछलकर रमण किया और मूर्ख यार रहस्य न पा सका ।। १२ ।। ।। दोहा ।। उसने पलंग से उतरकर उसकी आँखें खोल दीं । उसने भी दुख का अनुभव नहीं किया । उलटा भाट ने समझा कि अब मैं अरोग हो गया हूँ ।। १३ ।। पलंग के नीचे भाट को बाँधकर उसके हाथ से मद्य पीकर स्त्री ने अपने प्रेमी के साथ रतिक्रीड़ा की, जिसे वह (भाट) समझ न सका ।। १४ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ बहत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १७२ ।। ३३७९ ।। अफजू ।।

एक सौ तिहत्तरवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। निरंजनराय चोपड़ा की सुन्दर स्त्री को सारा ससार रति के समान स्वरूपवान मानता था ।। १ ।। बहलोलपुर नामक सुन्दर शहर में बहलोल ख़ाँ रहता था, जिसकी समस्त शूरवीर सराहना करते थे ।। २ ।। बहलोल ख़ाँ ने जब संगीतकला को देखा तो तत्क्षण अपने मन से सभी पठानियों

निहारि । तब ही सभ ही चित्त ते दई पठानी डारि ॥ ३ ॥ बनिजकला बाला हुती लीनी निकट बुलाइ । अमित दरब ता कौ दियो वा प्रति दई पठाइ ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ बनिजकला चलिकै तित आई । जहा कला संगीत सुहाई । जबै खान की उपमा करी । ए सुनि बात नारि वह ढरी ॥ ५ ॥ इन बातन अबला उरझाई । इहै बात पिय सुनत सुहाई । मैं इक बाग बनायो भलो । मुहि लै संग तहाँ तुम चलो ॥ ६ ॥ अब लौ मैं कतहूँ नहि गई । पैंड अपैंड न पावत भई । रवि ससि कौ मुख मैं न दिखायो । पिय बिनु कछू न मोकह भायो ॥ ७ ॥ पति तिह कह्यो तहाँ तुम जैयहु । याकौ बाग देखि फिर ऐयहु । बीती रैनि प्रात जब भई । तिसी खान के घर मैं गई ॥ ८ ॥ ताही बाग निरंजन गयो । पावत तहाँ नारि नहि भयो । खोजत अधिक तहाँ तिय पाई । जहाँ हवेली खान बनाई ॥ ९ ॥ ॥ दोहरा ॥ तिय निकसी तिह खान सौ अतिही भोग कमाइ । बदन लागि पति ही गयो संकि रही मुख न्याइ ॥ १० ॥ ॥ चौपई ॥ जब ही द्रिशटि निरंजन धरी । बनिजकला की निंद्या करी । मुहि कहि संग न मोरे

को भुला दिया ॥३॥ उसने वनिजकला स्त्री को बुलाया और उसे अपरिमित द्रव्य देकर उसकी ओर भेज दिया ॥ ४ ॥ ॥चौपाई॥ वनिजकला चलकर वहाँ पहुँची जहाँ संगीतकला बैठी थी । जब उसने ख़ान की प्रशंसा की तो यह स्त्री भी फिसल गई ॥ ५ ॥ इन बातों में उस स्त्री ने इसे उलझा लिया और उसके पति से कहा कि मैंने एक सुन्दर बाग़ बनवाया है । मुझे साथ लेकर तुम वहाँ चलो ॥ ६ ॥ (संगीतकला ने कहा) मैं अभी तक कहीं नहीं गई और मार्ग-कुमार्ग पर कभी पाँव नहीं रखा । मैंने तो सूर्य-चन्द्र को भी मुँह नहीं दिखाया है और प्रिय के बिना मुझे कभी कुछ नहीं सुहाया है ॥ ७ ॥ तब पति ने कहा कि तुम वहाँ जाओ और इसका बाग़ देखकर फिर वापस आ जाना । जब रात बीत गई और सुबह हुई तो यह उसी ख़ान के घर में गई ॥ ८ ॥ अब उसी बाग़ में निरंजन गया और वहाँ उससे स्त्री को नहीं पाया । अधिक खोजने पर उसने स्त्री को वहाँ पाया जहाँ ख़ान नें हवेली बनाई थी ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ उधर ख़ान से रमण कर वह स्त्री निकली और पति को देखते ही शंका से उसने सिर नीचा कर लिया ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ जब निरंजन से नज़र मिली तो वह (संगीतकला) वनिजकला की निन्दा करने लगी । मुझे साथ ले चलनें को कहकर (वनिजकला) मेरे साथ नहीं गई और मैं रास्ता

भई। पैंड चूकि पर घर मै गई ॥ ११ ॥ मोकौ पकरि पठानन लीनो। कामकेल बहु मोसौ कीनो। तब बल चलै तो याको मारो। नहि काजी पै जाइ पुकारो ॥ १२ ॥ या मै चूक न तेरी भई। पैंडि चूकि परघर मै गई। पैठानन तोकौ गहि लीनो। कामभोग तोरे संग कीनो ॥१३॥ (मू०ग्रं०१०६५) भलो भयो तूँ घरि फिरि आई। पकरि तुरकनी करि नहि लई। जौ कोऊ धाम मलेछन आवै। धरम सहित फिरि जान न पावै ॥ १४ ॥ तुम पति माथ न अपनो धुनो। मेरी सकल ब्रिथा कह सुनो। सकल कथा मैं तुमै सुनाऊँ। ताते तुमरो भ्रमहि मिटाऊँ ॥ १५ ॥ जब मैं भूल धाम तिह गई। तबहि पकरि तुरकन मुहि लई। तब मैं तिन सो ऐस उचारो। तुमैं न सूझत नाथ हमारो ॥ १६ ॥ ऐसे कहहि होहि तूँ तुरकनि। मोकौ लगे लोग मिलि घुरकनि। कै तूँ होहि हमारी नारी। ना तर देति ठौरि तुहि मारी ॥ १७ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ तब मैं तासौ चरित भाँति ऐसो कियो। निजु भग ते नख साथि काढि स्रोनत दयो। प्रथम अलिंगन खान साथ हसि मैं करियो। हो बहुरौ मुख ते बचन ताहि मैं

भूलकर दूसरे के घर में चली गई ॥ ११ ॥ मुझे पठानों नें पकड़ लिया और केलिक्रीड़ा की। अब तुम्हारा बल चले तो इनको मारो नहीं तो क़ाज़ी के पास पुकार लगाओ ॥ १२ ॥ तेरी इसमें कोई ग़लती नहीं है, तू तो रास्ता भूलकर दूसरे के घर में चली गई थी। तुझे तो पठानों ने पकड़कर कामक्रीड़ा की है ॥ १३ ॥ अच्छा हुआ जो तू वापस घर आ गई और कहीं तुझे पकड़कर उन्होंने मुसलमानी नहीं बना लिया। म्लेच्छों के घर में जो चला जाता है, वह फिर धर्म-सहित वापस घर नहीं आता ॥ १४ ॥ हे नाथ ! तुम अपना माथा मत धुनो और मेरी पूरी व्यथा को सुनो। मैं तुम्हें पूरी कहानी कहती हूँ और तुम्हारे भ्रम का निवारण करती हूँ ॥ १५ ॥ जब मैं भूलकर उनके घर में चली गई तो तुर्कों नें मुझे पकड़ लिया। तब मैंने उनसे कहा कि तुमने मेरा पति नहीं देखा है ॥ १६ ॥ मुझसे कहा कि मुसलमानी बन जाओ और इस तरह लोग मुझे घुड़कने लगे। या तो तुम हमारी स्त्री हो जाओ नहीं तो तुम्हें इसी स्थान पर मार दिया जायगा ॥ १७ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ तब मैंने उनके साथ यह प्रपंच किया कि अपने नाख़ून से अपनी योनि में से रक्त निकाल दिया। पहला आलिंगन तो मैंने ख़ान के साथ

उचरियो ।। १८ ।। रति आई है मोहि सु मैं ग्रहि जात हो ।
तुमै साथ बहलोल न भोग कमात हो । संग मनुछ दै मोहि
तहाँ पहुचाइयै । हो दिवस तीसरे मोकौ बहुरि बुलाइयै ।।१९।।
सुनि ऐसे बच मोहि खान तब तजि दियो । कामभोग तह
संग न मैं ऐसे कियो । तब तुम कौ मैं मिली तहाँ ते आइकै ।
हो अब तुम क्यों हूँ मोकौ लेहु बचाइकै ।।२०।। ।।दोहरा।। सुनि
ऐसो बच मूड़ तब फूलि गयो मुसकाइ । भेद न जान्यो बाल
को आई भगहि फुराइ ।। २१ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ तिहत्तरवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ।। १७३ ।। ३४०० ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ चौहत्तरवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। मोकल गढ़ मोकल न्रिप भारो । पितर
मात पच्छम उजियारो । सुरता दे तिह सुता भणिज्जै । जा
सम रूप कवन त्रिय दिज्जै ।।१।। अपनो तवन सुयंब्र बनायो ।
सभ भूपन को बोलि पठायो । कासट तुरै जो ह्याँ चढ़ि

हँसकर किया पर फिर मैंने उससे कहा ।। १८ ।। मुझे मासिक-धर्म हुआ है,
मैं घर जाती हूँ और तुम्हारे साथ रमण नहीं कर सकती । मुझे कुछ लोग
साथ देकर वहाँ तक पहुँचाओ और तीसरे दिन मुझे फिर बुला लेना ।। १९ ।।
ख़ान ने यह सुनकर मुझे छोड़ दिया । मैंने उसके साथ रतिक्रीड़ा नहीं की
है । तब मैं तुमसे आ मिली हूँ और अब तुम मुझको कैसे भी बचा लो ।।२०।।
।। दोहा ।। यह वचन सुनकर वह मूर्ख फूलकर मुस्कुराने लगा । वह यह भेद
स्त्री का न समझ सका कि वह योनि क्षत-विक्षत करवाकर आयी है ।।२१।।१।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ तिहत्तरवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ।। १७३ ।। ३४०० ।। अफजू ।।

एक सौ चौहत्तरवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। मोकल गढ़ में मोकल नामक बड़ा राजा था । उसके
माता-पिता पश्चिम में मानों प्रकाश के समान थे । उसकी सुरता देवी नामक
पुत्री थी । उसके समान रूपवान भला अन्य स्त्री कौन थी ।। १ ।। उसने
अपना स्वयंवर रचा और सब राजाओं को बुलाया । उसने कहलवाया कि
जो लकड़ी के घोड़े पर चढ़कर यहाँ आएगा वही राजकुमारी का प्राप्त

आवै । सोई राज सुता कह पावै ।। २ ।। ।। अड़िल्ल ।। सत गाढ़न को बल जो नर कर मैं धरै । कासट तुरै ह्वै स्वार तुरतु इह मगु परै । लीक बडी लहु बिनु कर छूए जो करै । हो सोई न्रिपबर आजु आन हम कौ बरै ।। ३ ।। जह पेरो शाह हुतो तही खबरै गई । अचरज कथा सुनि मोन सभा सभ ही भई । तब हजरत त्रिय ऐसे बचन सुनाइयो । हो हजरत को भ्रमु सभ ही तबै मिटाइयो ।। ४ ।। द्रभुजर लई मँगाइ (मू०ग्रं०१०६६) बरौ ता को सु किय । नहरि खोदि बेरिआ को बोलि तुरंग लिय । लहु दीरघ तट लीकै काढि बनाइकै । हो जीति आपु लै दई हजरतहि जाइकै ।। ५ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ चौहत्तरवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १७४ ।। ३४०५ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ पचहत्तरवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। गजनदेव राजा बडो गजनी को नरपाल । कमल कुरंग सारस लजैं लखि तिह नैन बिसाल ।। १ ।। तहाँ दुरग दुरगम बडो तह पहुचै कह कौन । जोनि चंद्र की ना परै

करेगा ।। २ ।। ।। अड़िल्ल ।। जो व्यक्ति सौ गाँठोंवाला बलशाली भाला हाथ में धारण करे वही लकड़ी के घोड़े पर सवार तुरन्त इस मार्ग पर चले । जो बिना लौह को छुए बड़ी लकीर खींच दे वही राजा आकर मेरा वरण करे ।। ३ ।। जहाँ पेरूशाह था वहाँ भी यह ख़बर पहुँची, जिसे सुनकर सारी सभा मौन हो गई । तब बादशाह की स्त्री ने कुछ ऐसे बात कही कि सबके मन का भ्रम मिट गया ।। ४ ।। उसने उसका गर्व नाश कर उसको वरण करने की सोची और नहर खोदकर एक बेर की लकड़ी का घोड़ा मँगा लिया । उसके किनारे के साथ लम्बी लकीर खींचते हुए (लकड़ी के घोड़े पर बैठकर बहते हुए) उसको जीतकर बादशाह को अर्पण कर दिया ।। ५ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ चौहत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १७४ ।। ३४०५ ।। अफजू ।।

एक सौ पचहत्तरवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। गजनी का बड़ा राजा गजनदेव था । उसके सुन्दर नयनों को देखकर कमल, हिरण और सारस लज्जित होते थे ।। १ ।। उसका क़िला

चीटी करै न गौन ॥ २ ॥ ॥ चौपई ॥ चपलकला इक राज दुलारी। सूरज लखी चंद्रन निहारी। जोबन जेब अधिक तिह सोहै। खग म्रिग जच्छ भुजंगन मोहै ॥ ३ ॥ ॥ दोहरा ॥ जोबन खाँ तिह दुरग कौ घेरा कियो बनाइ। क्योहूँ न सो टूटत भयो सभ करि रहे उपाइ ॥ ४ ॥ ॥ चौपई ॥ जोबन खाँ तह बीर बुलाए। बैठि बैठि करि मंत्र पकाए। कवन उपाइ आजु ह्याँ कीजै। जाते दुरग तोरि करि दीजै ॥ ५ ॥ बलवंड खान सैन संग लियो। तवन दुरग पर हल्ला कियो। गढ़ के लोग तीर ते जाई। मारि मारि करि कूकि सुनाई ॥ ६ ॥ गोली अधिक दुरग ते छूटी। बहुत सूरमनि मूँडी फूटी। गिरि गिरि गए बीर रन माँही। तन मै रही नैक सुधि नाही ॥ ७ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ कहूँ बाज जूझे कहूँ राज मारे। कहूँ ताज बाजीन के साज डारे। किते छोर छेके किते छैल मोरे। किते छत्र धारीन के छत्र तोरे ॥ ८ ॥ लगे ज्वान गोलीन के खेत जूझे। चले भाजि केते नही जात बूझे। भरे लाज केते हठी कोपि ढूके। चहूँ

अत्यन्त बड़ा और दुर्गम था। वहाँ चन्द्र-किरणों और चींटी तक का भी गमन नहीं था ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ चपलकला एक सुन्दर राजकुमारी थी, जिसे चाँद-सूरज ने भी नहीं देखा था। उसका रूप-यौवन अत्यन्त सुन्दर था और वह पक्षी, मृग, यक्ष और भुजंगों का भी मन मोहित करती थी ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ जोबन खाँ ने उस क़िले को घेर लिया। वह सब उपाय करके हार गया पर वह क़िला नहीं टूटा ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ जोबन खाँ ने वीरों को बुलाया और बैठकर विचार किया कि कौन सा उपाय किया जाय जिससे दुर्ग को तोड़ा जा सके ॥ ५ ॥ बलवंडसिंह ने साथ सेना ली और दुर्ग पर धावा बोल दिया। क़िले के लोगों को पास से मार ही मार की चीख-पुकार सुनाई दी ॥ ६ ॥ क़िले से अनेकों गोलियाँ छूटीं और बहुत से शूरवीरों के सिर फट गए। वीरगण युद्ध में गिर-गिर पड़ रहे थे और उन्हें तन की तनिक भी सुधि नहीं थी ॥७॥ ॥ भुजंग छंद ॥ कहीं घोड़े जूझ गए और कहीं राजा मारे गए। कहीं घोड़ों की ज़ीनें पड़ी हुई थीं। कहीं अनेकों छिद्र कर जवानों को मरोड़ दिया गया था और कहीं छत्रधारियों के छत्र तोड़ दिए गए ॥ ८ ॥ गोलियाँ लगे हुए जवान युद्ध में जूझ रहे थे और पता नहीं चल पा रहा था कि कितने भागे चले जा रहे थे। कई लज्जा से मरकर पुनः

ओर ते मार ही मार कूके ।। ९ ।। चहूँ ओर गाड़े गड़ै घेरि
आए । हठी खान कोपे लीए सैन धाए । इते सूर मोहै
उतै वै बिराजै । मंडे क्रोध कैकै नही पैगु भाजै ।। १० ।।
।। दोहरा ।। छोरि खेत पग ना टरे भिरे सूरमा आइ ।
दसो दिसन गाड़े गड़हि घेरि लियो भट आइ ।। ११ ।।
।। भुजंग छंद ।। किते गोलि गोला महा बान छोरे । किते गरब
धारीन के गरब तोरे । परी मारि भारी कहा लौ बखानो ।
उडी जान माखीरु की माखि मानो ।। १२ ।। (मू०ग्रं०१०६७)
।। दोहरा ।। बज्रखान बिछुअन भए बीर लरे रन मंड ।
लगी तुपक की उर बिखैं जूझे खाँ बलवंड ।। १३ ।।
।। चौपई ।। बलवंड खाँ जबही रन जूझे । औ भट मुए जात
नहि बूझे । भजे सुभट आवत भए तहाँ । जोबन खान खेत
मै जहाँ ।। १४ ।। ।। दोहरा ।। बलवंड खाँ को सुनि मुए
संकि रहे सभ सूर । बिन स्यारे सीतल भए खाए जनक
कपूर ।। १५ ।। ।। अड़िल्ल ।। चपलकला जोबन खाँ जबै

कुपित हो रहे थे । चारों ओर से मार ही मार की पुकार सुनाई दे रही
थी ।। ९ ।। चारों ओर से घनघोर घेरा डाला जा रहा था और हठी ख़ान
क्रुद्ध हो सेना लेकर टूट पड़े । शूरवीर इधर-उधर शोभायमान हो रहे थे
और क्रोधपूर्ण होकर एक भी क़दम पीछे नहीं भाग रहे थे ।। १० ।।
।। दोहा ।। शूरवीर आकर भिड़ रहे थे और युद्ध से पैर पीछे नहीं कर रहे
थे । शूरवीरों ने दसो-दिशाओं से क़िले को घेर लिया था ।। ११ ।।
।। भुजंग छंद ।। कहीं गोला चलानेवाले गोले और बाण छोड़ रहे थे और
कहीं अनेकों ही गर्व करनेवालों के गर्व चूर कर रहे थे । वहाँ इतनी भारी
मारकाट हुई कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता । ऐसा लग रहा था
मानों शहद की मक्खियाँ उड़ रही हों ।। १२ ।। ।। दोहा ।। बड़े-बड़े ख़ाँ बिच्छू
बन गए और बड़े-बड़े वीर लड़ मरे । बंदूक़ (की गोली) लगने से बलवंड
ख़ाँ जूझ गया ।। १३ ।। ।। चौपाई ।। बलवंड ख़ान भीषण युद्ध में जूझ गया ।
अनेकों वीर मारे गए । वीर भागे-भागे वहाँ गए जहाँ जोबन ख़ाँ युद्ध कर
रहा था ।। १४ ।। ।। दोहा ।। बलवंड ख़ाँ की मृत्यु के बारे में सुनकर सभी
शूरवीर संशय में पड़ गए । वे बाण-विहीन होकर ठंडे हो गए मानों कपूर
खाए हों ।। १५ ।। ।। अड़िल्ल ।। चपलकला ने जब जोबन ख़ाँ को देखा तो
वह कामबाण से बिंधकर मूर्च्छित हो धरती पर गिर पड़ी । उसने पत्र

निहारियो । गिरी धरनि मुरछाइ काम सर मारियो । पत्री लिखी बनाइ बिसिख सौ बाँधि करि । हो दीनो धनुज चलाइ धनुख द्रिड़ साँधि करि ।। १६ ।। सुनो कुअर जू अब जौ तुम मोकौ बरौ । तौ मै देउ बता इ राज गड़ को करौ । प्रथम ब्याहि मोसौ करिबो ठहराइयै । हो तैसेहि पतिया सर सो बाँधि चलाइयै ।। १७ ।। ब्याह कुअर तासौ करिबो ठहराइयो । वैसेहि पतिया सर सौं बाँधि बगाइयो । गढ़ गाड़े के माँझ पर्यो सर जाइ करि । हो निरखि अंक तिह नारि लियो उर लाइ करि ।। १८ ।। ।। दोहरा ।। बिसिख पहूचयो मीत को पतिया लीने संग । आँखैं अति निरमल भई निरखत वाको अंग ।। १९ ।। चपलकला सों जब कुअर ब्याह बद्यो सुख पाइ । वैसहि सर सौ बहुरि लिखि पतिया दई चलाइ ।। २० ।। ।। चौपई ।। पतिया बिखै इहै लिखि डारो । सुनो कुअर जू बचन हमारो । प्रथमै घारि बंद इह कीजै । ता पाछे या गढ़ कौ लीजै ।। २१ ।। ।। अड़िल्ल ।। दसो दिसन घेरो या गढ़ कौ डारियै । ह्याँ ते जो नर निकसै ताहि सँघारियै । आवै जो जन पास बंद तिह कीजियै । हो बहुरो दुरग छुराइ छिनक मौ लीजियै ।। २२ ।। दसो दिसन तिह गढ़ कौ घेरा

बाण के साथ बाँध दिया और खींचकर बाण चला दिया ।। १६ ।। हे कुँवर जी ! अब मेरा वरण कीजिए और राजगढ़ का राज करें । पहले मुझसे विवाह कीजिए और ऐसे ही पत्र तीर से बाँधकर मुझे भेजें ।। १७ ।। कुंवर ने उससे ब्याह करना ठहराया और वैसे ही पत्र बाण से बाँधकर भेज दिया । घनघोर सेना में बाण जाकर गिरा जिसे देखकर उस स्त्री ने उसे छाती से लगा लिया ।। १८ ।। ।। दोहा ।। बाण मित्र का पत्र लेकर आ पहुँचा जिसे देखते ही उसकी आँखें ठंडी हो गईं ।।१९।। जब कुँवर ने चपलकला से ब्याह करना तय कर लिया तो उसनें फिर बाण से पत्र बाँधकर पुनः भेज दिया ।। २० ।। ।। चौपाई ।। पत्र में यह लिखा कि हे राजकुमार ! मेरी बात सुनो, पहले इस क़िले का द्वार बंद करो और फिर इस क़िले को छीन लो ।। २१ ।। ।। अड़िल्ल ।। दसों-दिशाओं से इस क़िले को घेर लो और जो भी व्यक्ति इसमें से निकले उसे मार डालो । जो भी व्यक्ति पास आए उसे बंद कर दीजिए और इस प्रकार क्षण भर में दुर्ग को छीन लीजिए ।। २२ ।। उसने सब ओर से क़िले को घेर लिया । जो भी उसमें से निकला उसे मार डाला ।

डारियो। जो जन तह ते निकसै ताहि सँघारियो। खान पान सभ बंद प्रथम ता को कियो। हो बहुरौ दुरग छिनाइ छिनक भीतर लियो ॥ २३ ॥ लीनो दुरग छिनाइ गजनि शह घाइकै। लयो कुअरि कह जीति परम सुख पाइकै। भाँति भाँति रति करी प्रेम उपजाइ करि। हो लपटि लपटि त्रिय गई सु कीने भोग भरि ॥ २४ ॥ ॥ चौपई। ऐसी प्रीत दुहन के भई। अबला और बिसरि सभ गई। एक नारि हसि बचनि उचारो। बडो मूरख इह राव हमारो ॥ २५ ॥ जिन त्रिय (मू०ग्रं०१०६८) प्रिथम पिता कह घायो। बहुरि आपनो राज गवायो। तासौ मूड़ प्रीति उपजाई। त्रिप की निकट म्रितू जन आई ॥ २६ ॥ पिता हनत जिह लगी न बारा। तिह आगे क्या नाथ बिचारा। जिन त्रिय अपनो राजु गवायो। तासौ मूरख नेह लगायो ॥२७॥ ॥दोहरा॥ जोबन खाँ सुनि ए बचन मन मै रोस बढाइ। बडो मुनार उसारि त्रिय ता मै दई चिनाइ ॥ २८ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पचहत्तरवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १७५ ॥ ३४३३ ॥ अफजूं ॥

बाहर से खाना-पानी सब बंद कर दिया और इस प्रकार थोड़ी देर में ही दुर्ग को छीन लिया ॥ २३ ॥ गजनशाह को मारकर क़िला छीन लिया और कुँवरि को सुखपूर्वक जीत लिया। विभिन्न प्रकार से प्रेमपूर्वक रतिक्रीड़ा की और वह स्त्री ने भी लिपट-लिपटकर भोग-विलास किया ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ अब दोनों में ऐसी प्रीति हुई कि उसे सभी स्त्रियाँ विस्मृत हो गईं। एक स्त्री ने हँसकर कहा कि यह हम लोगों का राजा अत्यन्त मूर्ख है ॥ २५ ॥ जिस स्त्री ने पहले अपने पिता को मारा और फिर अपना राज गँवाया, उस स्त्री से इसने प्रीति की है। ऐसा लगता है मानों राजा की मृत्यु पास आ गई है ॥ २६ ॥ जिसे पिता को मारते देर नहीं लगी उसके सामने पति बेचारा क्या है। जिसने अपना राज्य गँवा दिया, उस मूर्ख से इसने प्रेम लगाया है ॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ जोबन खाँ ने यह सुनकर क्रुद्ध हो एक वड़ा मीनार बनवाया और उसमें स्त्रियों को जीवित दफना दिया ॥ २८ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ पचहत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १७५ ॥ ३४३३ ॥ अफजू ॥

अथ इक सौ छिहत्तरवों चरित्र कथनं ॥

॥ अड़िल्ल ॥ जगबंदन इक शाहु बडो सु बखानियै । अप्रमान धनु जाके धाम प्रमानियै । मती सु बीर त्रिया सुभ ताहि भनिज्जियै । हो ससि कौ जाकी प्रभा बदन की दिज्जियै ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ ता को नाथ विलाइत गयो । आवत मद्र देस नहि भयो । लिखि पतिया अबला बहु हारी । निजु पति की नहि प्रभा निहारी ॥ २ ॥ तिन त्रिय अधिक उपाइ बनाए । तह ही रहे नाथ नहि आए । लाल मिले बिनु बाल कुलाई । सभ धन लै संग तहीं सिधाई ॥ ३ ॥ चंद्रभान जाटू बटिहायो । लूटन माल बाल को आयो । जो कर चढ्यो छीनि सभ लीनो । रंच रंच तिह रहन न दीनो ॥४॥ ॥ भुजंग छंद ॥ जबै माल को लूटि कै कै सिधाए । तबै कूकि कै नारि बैन्यो सुनाए । सुनो बैन भाई इहै काज कीजो । रहो ह्याँ नही दूरि को पैंड लीयो ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ जौ इह बात नाथ सुनि लैहै । तुम ते जान एक नहि दैहै । लैहै

एक सौ छियत्तरवाँ चरित्र-कथन

॥ अड़िल्ल ॥ जगबंदन एक बड़ा राजा था, जिसके पास अपरिमित धन था । वीरमती उसकी सुन्दर स्त्री थी, जिसके मुख की तुलना चन्द्रमा से की जा सकती है ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ उसका स्वामी विलायत गया और मद्र देश में नहीं आया । वह स्त्री पत्र लिखकर हार गयी, क्योंकि उसने अपने पति को (बहुत दिनों से) नहीं देखा था ॥ २ ॥ उस स्त्री नें बहुत उपाय किये पर स्वामी वहीं रहा और आया नहीं । प्रिय से न मिल सकी वह स्त्री व्याकुल हो उठी और धन-धान्य लेकर उसी ओर चल पड़ी ॥ ३ ॥ रास्ते में चन्द्रभान जाट था, जो उसे लूटने के लिए आया । जो उसके हाथ लगा वह उसने लूट लिया और रंच मात्र भी उसके पास नहीं रहने दिया ॥ ४ ॥ ॥ भुजंग छंद ॥ जब वह और उसके साथी माल लूटकर चल पड़े तो स्त्री ने रो-रोकर चिल्लाना शुरू किया कि हे भाई लोगो ! एक काम करो; तुम लोग यहाँ आसपास नहीं रहना और दूर का रास्ता पकड़ लेना ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ यदि यह घटना मेरा स्वामी सुन लेगा तो तुम्हें एक को भी जीवित नहीं जाने देगा । तुम लोगों के घोड़े भी छीन लेगा और मुझे ऐसा

छीनि तरे के घोरा। तुमरो रह्यो जियब जग थोरा ॥ ६ ॥
इन इह बात चित्त नहि आनी। मूड़ त्रिया बररात पछानी।
याको नाथ हमह का करिहै। सरस स्वार को एक सँघरि
है ॥ ७ ॥ लूटि सकल धनु जबै सिधाए। तब अबला नर
बसत्र बनाए। कटि सो कसि क्रिपान तिय लीनी। कसिक
कमान करैरी कीनी ॥ ८ ॥ अरुन तुरंग अरूड़ित भई। पवन
गवन ते शीघ्र सिधई। जाइ स्वार त्रिय सहस्त्र हकारो। कै
धनु देहु कि शस्त्र सँभारो ॥ ६ ॥ सभहिन कोप बैन सुनि
कीनो। ता कौ अधिक गारियन दीनो। (मू०ग्रं०१०६६) तो ते
मूड़ कहा हम डरिहै। सहस स्वार सकल ते टरिहै ॥ १० ॥
गहि धनु हाथ कोप त्रिय भरी। तुरै धवाइ उठवनी करी।
एक बिसिख करि कोप चलयो। बीस ज्वान बिचि है करि
गयो ॥ ११ ॥ बहुरि तान धनुबान चलायो। तब ही बीस
घोरयन घायो। एकहि बार प्रान बिनु भए। गिरि गिरि
मनो मुनारा गए ॥ १२ ॥ तीजी बहुरि उठवनी करी।
छोडियो बान नैकु नहि डरी। तीस बीर इक बार बिदारे।

लगता है कि अब तुम लोगों का जीवन थोड़ा ही बच रहा है ॥ ६ ॥ इन लोगों ने ध्यान नहीं दिया और सोचा मूर्ख स्त्री व्यर्थ ही बड़बड़ा रही है। इसका मालिक अकेला क्या कर लेगा और भला सौ सवारों को अकेला मार डालेगा ॥ ७ ॥ जब वे धन लूटकर चले गए तो स्त्री ने पुरुष-वेश पहना। उसने कमर से कसकर कृपाण बाँध ली और कमान आदि कसकर धारण कर लिया ॥ ८ ॥ लाल घोड़े पर वह सवार हो गई और पवन-वेग से भी द्रुतगति से चल पड़ी। उसने जाकर सौ सवारों को ललकारा कि या तो धन वापस दो अथवा शस्त्र सँभाल लो ॥ ६ ॥ सबने क्रुद्ध हो उसकी बातें सुनी और उसे अत्यधिक गालियाँ दीं। मूर्ख, क्या तुमसे हम लोग डर जायंगे। सैकड़ों सवार क्या अकेले के सामने भाग खड़े होंगे ॥ १० ॥ धनुष हाथ में पकड़कर क्रुद्ध स्त्री ने घोड़ा दौड़ाकर धनुष उठाया। उसने क्रुद्ध हो एक बाण चलाया जो बीस जवानों में से पार हो गया ॥११॥ फिर उसने तानकर बाण चलाया जो बीस घोड़ों को मार गिराया। एक ही वार में वे ऐसे निष्प्राण हो गए मानों मीनार गिर पड़ रहे हों ॥ १२ ॥ तीसरी बार उसने फिर उठाया और तनिक भी चिन्तित हुए बिना बाण छोड़ा। तीस वीर उसने एक बार में मार डाले, मानों पवन के पत्तों को झाड़ दिया हो ॥ १३ ॥ वह

मानो पवन पत्र से झारे ।। १३ ।। एक बान जब बाल प्रहारै । बीस तीस छित पै भट डारै । चपल तुरै त्रिय चतुरि धवावै । एक घाइ तन लगन न पावै ।। १४ ।। जल भौ जनुक गँगेरी झमकै । घन मै मनो दामिनी दमकै । एकै बान बीस भट गिरे । बखतर रहे न जेबाँ जिरे ।।१५।। ।। अड़िल्ल ।। बहुरि क्रोध करि बाल इक बान प्रहारियो । बीस बाज बिच करि ह्वै बान पधारियो । तरफराइ छित माँझ सुभट बिनु सुध भए । हो आए जगत न माँझ न निजु जननी जए ।। १६ ।। सहस सूरमा जब त्रिय दीए सँघारिकै । चंद्रभान रिसि भर्यो सु तिनै निहारिकै । चाबुक मारि तुरंग तुरंग धवाइयो । हो त्रिय तिह हन्यो न बान तुरंगहि घाइयो ।। १७ ।। जीति जीति करि बाल सूरमा बसि कए । सभ सूरन के सीस सकल बुकचा दए । जह ते धनु लै गए तजे तह आइकै । हो तुमल जुद्ध करि नारि चरित्र दिखाइकै ।। १८ ।। एक सदन ते छोरि तुरै ता कौ दियो । चंद्रभान जाटू कौ करि अपनो लियो । चोर ब्रिति को तुरत तबै तिन त्यागियो । स्त्री जदुपति के

स्त्री जब एक वाण चलाती थी तो बीस-तीस जवानों को धरती पर लिटा देती थी । चपल घोड़े को चतुर स्त्री दौड़ाती थी और स्वयं उसके तन में एक भी घाव नहीं लगने देती थी ।। १४ ।। वह जल में मानों जलजुलाहे (गंगेरी) की भाँति तीव्र वेग से चल रही थी अथवा ऐसा लग रहा था मानों दामिनी दमक रही हो । एक ही बाण में बींस वीर गिर पड़ते थे और उनके बख़्तर आदि भी छिटक जाते थे ।।१५।। ।। अड़िल्ल ।। पुनः उस स्त्री ने क्रुद्ध हो एक बाण मारा जो बीस घोड़ों के बीच से होकर पार हो गया । वीर धरती पर तड़फड़ाकर बेसुध होकर गिर पड़े । वे ऐसे (निर्जीव) हो गए थे मानों न तो वे धरती पर आए हों और न ही उनकी माँ ने उन्हें जन्म दिया हो ।। १६ ।। जब एक सहस्र शूरवीर स्त्री ने मार डाले तो चन्द्रभान उसे देखता हुआ क्रोधित हो उठा । उसने चाबुक मारकर घोड़ा दौड़ाया । स्त्री नें उसके बाण नहीं मारा और घोड़े को मार दिया ।। १७ ।। स्त्री ने शूरों को जीतकर वश में कर लिया और सब शूरवीरों के सिर कुचल डाले । जहाँ से वे धन ले गए थे वहीं छोड़कर आए । इस प्रकार नारी ने भीषण युद्ध कर अपना चरित्र दिखाया ।। १८ ।। उसने अपने घर से एक घोड़ा दिया और चन्द्रभान जाट को अपना बना लिया । तब उसनें चोर-वृत्ति को

जाप बिखै अनुरागियो ।। १९ ।। ।। दोहरा ।। चंद्रभान कौ जीति करि तह ते कियो पयान । जहाँ आपनो पति हुतो तहाँ गई रुचि मान ।। २० ।। ।। चौपई ।। दुहकरि करम नारि तिन कीनो । सभ ही जीति बैरियनु लीनो । बहुरो मिली नाथ सौ जाई । पिय कौ मद्रदेस लै आई ।। २१ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ छिहत्तरवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १७६ ।। ३४५४ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ सतहत्तरवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। मैनलता अबला इक सुनी । बेद पुरान शास्त्र बहु गुनी । बडे शाहु की सुता भणिज्जै । ता के को पटतर कहि दिज्जै ।।१।। (मू०ग्रं०१०७०) ।। अड़िल्ल ।। मैनलता इक बडो जहाज मँगाइयो । खान पान बहु दिन कौ बीच डराइयो । छोरि नाथ को धाम आपु तित कौ चली । हो लीने अपुने संग पचासिक सुभ अली ।। २ ।। जब समुंद्र मै गई तबै तिन यौ कियो । साठि हाथि को बाँस मँगाइ तबै लियो ।

त्याग दिया और परमात्मा के भजन में अपना मन लगा लिया ।। १९ ।। ।। दोहा ।। चन्द्रभान को जीतकर वहाँ से चली और रुचिपूर्वक वहाँ पहुँची जहाँ उसका पति था ।। २० ।। ।। चौपाई ।। उस स्त्री ने दुष्कर कार्य किया और सभी शत्रुओं को जीत लिया । फिर वह अपने नाथ से जा मिली और उसे मद्र देश ले आई ।। २१ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ छिहत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १७६ ।। ३४५४ ।। अफजू ।।

एक सौ सतहत्तरवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। मैंनलता नामक एक स्त्री थी जो वेद-शास्त्रादि की मर्मज्ञ थी । वह बड़े शाह की पुत्री थी । उसकी बराबरी (तुलना) किसके साथ की जाय (समझ नहीं पड़ता) ।। १ ।। ।। अड़िल्ल ।। मैंनलता ने एक बड़ा जहाज़ मंगवाया और उसने बहुत सी खान-पान की सामग्री भरवा ली । वह अपने स्वामी का घर छोड़ और पचास एक सखियों को साथ ले चल पड़ी ।। २ ।। जब वह समुद्र में गई तो उसने साठ हाथ का बाँस मँगवया ।

तासौ बैरक बाँधी बडी बनाइकै। हो वा अंचर के संग दई
आगि जराइकै ॥ ३ ॥ हेरि आगि कह जियन अचंभव अति
भयो। जनुक समुंद्र के बीच दूसरो ससि वयो। ज्यों ज्यों
ताकह बैठि मलाह चलावही। हो मच्छ कच्छ संगि होरि
चले तह आवही ॥४॥ चालिस कोस प्रमान जहाज जबाइयो।
मच्छ कच्छ सभ अधिक ह्रिदै सुख पाइयो। या फल कौ हम
अबही पकरि चबाइहैं। हो बहुरि आपुने धाम सकल चलि
जाइहैं ॥ ५ ॥ मच्छ कच्छ अरु जीव बहुत मिलि जो धए।
तिनके बलु सौ अधिक रतन आवत भए। मैनलता तब दीनी
आगि बुझाइकै। हो मच्छ कच्छ चकि रहे अनिक दुख
पाइकै ॥ ६ ॥ तिनके ठटकत बारि तहाँ ते चलि गयो।
जीवत ही सभ रहे अधिक दुखित भयो। मनि मानिक तब
लीने बाल उठाइकै। हो जल जीवन कह ऐसो चरित्र
दिखाइकै ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ कोट द्वारि करि मतस द्रिग
बंध्यो अपनो गाँउ। ता दिन तो ताकौ पर्‌यो मछलीबंदर
नाउ ॥ ८ ॥ खोजि खोजि तिह भूँमि ते काढे रतन अनेक।
रंक सभै राजा भए रह्‌यो न दुरबल एक ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सतहत्तरवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ॥ १७७ ॥ ३४६३ ॥ अफजूं ॥

उसके साथ एक बड़ी झंडी बाँधी और उसके कपड़ों में आग लगा दी ॥ ३ ॥ आग को देखकर जीवों को बड़ा आश्चर्य हुआ। मानो समुद्र में कोई दूसरा सूर्य उदित हो उठा हो। जैसे-जैसे मल्लाह (जहाज़) चलाते थे तो उनके साथ-साथ मत्स्य एवं कच्छप आदि भी चलने लगे ॥ ४ ॥ जब जहाज़ क़रीब चालीस कोस तक आ गया तो मच्छ-कच्छप आदि हृदय में अत्यन्त प्रसन्न हो उठे। वे सोचनें लगे कि इस (अद्‌भुत) फल को हम अभी चबा लेंगे और फिर अपने-अपने घरों को चले जायंगे ॥ ५ ॥ मच्छ-कच्छ आदि जो अनेकों जीव चल पड़े थे उनके बल से अनेकों रत्न भी आने लगे। तब मैनलता नें आग बुझा दी तो मच्छ-कच्छ दुखपूर्ण हो चकित हो उठे ॥ ६ ॥ उनके ठिठकनें से पानी तो आगे बढ़ गया। ये सब जीवित होने के नाते अत्यधिक दुखी हुए। तब बालिका ने इच्छानुसार जलजीवों को चरित्र (प्रपंच) दिखाकर मणिक उठा लिये ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ हज़ारों दरवाज़े बनाकर उन मछलियों के पास अपना नया नगर बनाया और उसका उस दिन से

मछलीबंदर नाम पड़ गया ॥ ८ ॥ वहाँ खोज-खोजकर रत्न निकाले गए और सभी रंक राजा बन गए । कोई एक भी दुर्बल न बचा ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संबाद में एक सौ सतहत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १७७ ॥ ३४६३ ॥ अफजू ॥

अथ इक सौ अठत्तरवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ एक सुमेरदेवि बर नारी । अति सुंदर प्रभु आपु सवारी । जोति मती दुहिता तिह सोहै । देव अदेवन को मनु मोहै ॥ १ ॥ कोरि कुअरि तिह सवति सुनिज्जै । बैर भाव तिन माँझ भनिज्जै । सो रानी कोऊ घात न पावै । जिह छल सो तिह स्वरग पठावै ॥ २ ॥ दुहिता बोलि निकट तिह लई । सिच्छा इहै सिखावत भई । जरिया खेलि कूक जब दीजो । नाम सवति हमरी कौ लीजौ ॥ ३ ॥ बोलि सवारी सुता खिलाई । कोरि कुअरि पर कूक दिराई । रानी अधिक कोप तब (मू०ग्रं०१०७१) भई । चड़ि झपान मारन तिन गई ॥ ४ ॥ सवतिन खबरि ऐस सुनि पाई । चड़ि रानी हमरे पर आई । निजु कर ग्रिहन आगि लै दीनो । जरि बरि बाट स्वरग की लीनी ॥ ५ ॥ ॥ दोहरा ॥ इह चरित्र इन

एक सौ अठहत्तरवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ सुमेरदेवी नामक एक सुन्दर स्त्री थी, जिसके सौंदर्य को प्रभु ने स्वयं सँवारा था । ज्योतिमती उसकी पुत्री थी जो देव-अदेव सबका मन मोहित करती थी ॥ १ ॥ कोरीकुँवरि उसकी सौतन थी जो मन में वैर-भाव रखती थी । वह रानी कोई अवसर नहीं पा रही थी जिसके माध्यम से वह उसे स्वर्ग भेज सके ॥ २ ॥ उसने पुत्री को पास बुलाया और उसे सिखाया कि डाकिनी के खेल में तुम जब चिल्लाओगी तो मेरी सौतन का ही नाम पुकारना ॥ ३ ॥ उसने बुलाकर कन्या को खिलाया और उसी प्रेत-क्रीड़ा में कोरीकुँवरि का नाम कहलवा दिया । रानी अत्यधिक क्रुद्ध हो गई और वह उसे मारने के लिए दौड़ी ॥ ४ ॥ सौतन ने जब सुना कि रानी हमारे ऊपर चढ़कर आ गई है (और मेरे ऊपर यह आरोप है), तो उसने स्वयं अपने हाथ से अपने घर को आग लगा ली और जलकर स्वर्ग का रास्ता

रानियहि सवतनि दई सँघारि। राज पाट अपनो कियो दुशट अरिशट निवारि ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्ने मंत्नी भूप संवादे इक सौ अठत्तरवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १७८ ॥ ३४३९ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ उनासीवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ शाह बधू पच्छिम इक रहै। कामवती ता कौ जग कहै। ता कौ पति परदेस सिधारो। बरख बीत गे ग्रहि न सँभारो ॥ १ ॥ सुधि पति की अबला तजि दीनी। सामानिनि की तिन गति लीनी। ऊच नीच नहि ठौर बिचारै। जो चाहै तिह साथ बिहारै ॥ २ ॥ तब लौ नाथ तवन को आयो। एक दूतियहि बोलि पठायो। कोऊ मिलाइ मोहि त्रिय दीजै। जो चाहै चित मै सोऊ लीजै ॥३॥ वाकी नारि दूतियहि भाई। आनि शाहु को तुरतु मिलाई। शाहु जबै तिन बाल पछान्यो। इहै बचन ततकाल बखान्यो ॥ ४ ॥ क्यो नहि चलित धाम पति मोरे। बिछुरै

पकड़ा ॥५॥ ॥ दोहा ॥ इस प्रकार इस प्रपंच के माध्यम से रानी ने सौतन को मार दिया और अपने शत्रु का नाश कर राजपाट भोगा ॥ ६ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ अठहत्तरवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १७८ ॥ ३४३९ ॥ अफजू ॥

एक सौ उन्नासीवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ एक शाह की वधू पश्चिम में रहती थी। लोग उसे कामवती कहते थे। उसका पति परदेश चला गया था और वर्षों बीत गए घर नहीं आया था ॥ १ ॥ स्त्री ने भी पति की खोज-खबर त्याग दी और वेश्याओं का चरित्र अपना लिया। वह अब ऊँच-नीच का विचार किये बिना जहाँ जिससे चाहती विहार करती थी ॥ २ ॥ तब तक उसका मालिक भी वहाँ आ गया और उसने एक दूती को बुला भेजा। उससे कहा कि तुम मुझे कोई स्त्री मिलवा दो और जो चाहो ले लो ॥ ३ ॥ उसकी स्त्री ही उस दूती को भा गई और उसने उसे शाह से तुरन्त मिलवा दिया। शाह को जब उस स्त्री ने पहचाना तो तत्काल बोली ॥४॥ तुम क्यों नहीं पति बनकर घर चलते। तुमसे बिछुड़े मेरे बहुत बर्ष बीत चुके हैं। तुम तुरन्त मेरे घर

बितै बरख बहु तोरे। अबही हमरे धाम सिधारो। सभही शोक हमारो टारो ।। ५ ।। जब अबला यौ बचन उचार्यो। मूरख शाहु कछू न बिचार्यो। भेद अभेद की बात न पाई। निजु पति को लै धाम सिधाई ।। ६ ।। ।। दोहरा ।। काज कवन आई हुती कह चरित्र इन कौन। भेद अभेद कछु ना लख्यो चलि घर ग्यो मति हीन ।। ७ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ उनासीवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ।। १७९ ।। ३४७६ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ अस्सीवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। नैनोतमा नारि इक सुनी। बेद पुरान शास्त्र बहु गुनी। जान्यो जब प्रीतम ढिग आयो। भेद सहित त्रिय बचन सुनायो ।। १ ।। ।। सवैया ।। पीय कियो परदेस पयान गए कतहूँ उठि बंधव दोऊ। हौ बिललात अनाथ भई इत अंतर की गति जानत सोऊ। पूत रहे सिस मात पिता कबहूँ नहि आवत ह्याँ पर खोऊ। बैद उपाइ करो हमरो कछु

चलो और मेरे दुखों को दूर करो ।। ५।। जब स्त्री ने यह कहा तो मूर्ख शाह ने कुछ भी नहीं विचार किया। उसने भेद-अभेद कुछ भी नहीं जाना और वह अपने पति को लेकर अपने घर चली गई ।। ६ ।। ।। दोहा ।। वह किस कार्य से आयी और उसने क्या प्रपंच किया। उस मतिहीन ने भी भेद-अभेद कुछ नहीं पहचाना और घर चला गया ।। ७ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में एक सौ उनासीवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १७९ ।। ३४७६ ।। अफजू।

एक सौ अस्सीवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। नयनोत्तमा नामक एक स्त्री थी जो वेद-पुराण-शास्त्रादि की मर्मज्ञ थी। जब उसने प्रियतम को पास आते देखा तो भेदपूर्वक कहा ।। १ ।। ।। सवैया ।। मेरा मालिक तो अपने बंधुओं-समेत कहीं परदेश गया है। मैं व्याकुल चिल्ला रही हूँ, मेरे अंतर की गति तो वही जानता है। पुत्र और बच्चे माता-पिता के पास रहते हैं, यहाँ कभी कोई नहीं आता। हे वैद्य ! मेरा कुछ उपाय करो मेरी सास अंधी है और घर में इस समय कोई

आँधरी सासु निवास न कोऊ ॥ २ ॥ भेस (मू०ग्रं०१०७२) मलीन रहौ तब तै सिरकेस जटान के जूट भए हैं। ब्योगनि सी बिरहो घरही घर हार शिंगार बिसार दए हैं। प्राची दिसा प्रगट्यो ससि दारुन सूरज पसचम असत भए हैं। बैद उपाइ करो कछु आइ सु एस कहूँ परदेस गए हैं ॥ ३ ॥ प्रास सो प्रात पटा से पटंबर पियरी परी परसे प्रति पारे। पाँस सी प्रीत कुप्योग सी प्राक्रित प्रेत से पानि परोस निहारे। पास परेसन पारध सी पकवान पिसाच सो पीर से प्यारे। पाप सौ प्रोन प्रवेस करै जब ते गए पीय प्रदेस पियारे ॥ ४ ॥ प्रीतम पीय चले परदेस प्रिया प्रति मंत रही जकिकै। पलकैं न लगै पलका पैं परै पछुतात उतै पति कौ तकि कै। प्रति प्रात पखारि सभै तनु पाक पकावन काज चली थकिकै। पति प्रेम प्रवेश कियौ तन मै बिनु पावक पाक गयो पकिकै ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ जब इह भाँति जारि सुन पायो। इहै ह्रिदै भीतर ठहरायो। मोहि बुलावत है बडभागी। याकी लगनि मोहि पर लागी ॥ ६ ॥ ता के पास तुरतु चलि गयो। बहु

नहीं है ॥ २ ॥ मैं तभी से मलिन वस्त्रों में रहती हूं और मेरे सिर के केश जटाजूट हो गए हैं। घर में ही मैं वियोगिनी के समान रहती हूँ और मैंने सभी हार-शृंगार भुला दिए हैं। सूर्य के पश्चिम में अस्त होने पर पूर्व में दारुण दुख देनेवाला चन्द्रमा उदित हो गया है। हे वैद्य! मेरे पास आकर मेरा कुछ उपाय करो, मेरा मालिक परदेश गया हुआ है ॥ ३ ॥ प्रातः मुझे कुल्हाड़े के समान और कपड़े चाबुकों के समान लगते हैं। प्रियतम के स्पर्श के बिना मैं पीली पड़ गई हूँ। प्रीति-पाश के समान, नाटकों एवं साहित्यों की भाषा बुरी लगती है और अड़ोसी-पड़ोसी प्रेतों के समान लगते हैं। पड़ोसिनें भी मुझे शिकारिनियों के समान और पकवानादि भूत-पिशाचों के समान लगते हैं। जबसे मेरे पति परदेश गए हैं, कोई अतिथि भी वहाँ आते हुए पाप ही समझता है ॥ ४ ॥ मेरा प्रियतम पति परदेश गया है और मुझे उसके प्रति भी सन्देह है। मेरी पलकें मेरी आँखों के साथ नहीं लगती और उसका रास्ता देखते-देखते दुखी हो उठती हैं। मैं रोज़ सुबह नहाकर सुन्दर पकवान पकाने के लिए अंत में थककर जा रही हूँ। पति का प्रेम मेरे तन में प्रविष्ट है और वह बिना आज्ञा के ही और पकता चला जा रहा है ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब यह उस प्रियतम यार ने सुना तो मन में सोचा कि यह भाग्यशालिनी मुझे बुला रही है और इसकी लगन मेरे साथ लग गई है ॥ ६ ॥

बिधि भोग कमावत भयो। केल कमाइ पलटि ग्रहि आयो।
ता को भेद न काहू पायो ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ अस्सीवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १८० ॥ ३४८३ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ इकासीवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ निसिस प्रभा रानी रहै ताकौ रूप अपार। स्वरगसिंघ सुंदर भए ता की रहै जुहार ॥ १ ॥
॥ अड़िल्ल ॥ रानी ता के सदन मदन जुत आवई। काम कलोल अमोल सु बोल कमावई। तासो भेव न कोऊ सकै पछानिकै। हो निजु राजा के तीर बखानै आइकै ॥ २ ॥
सवति तवन की हुती भेद तिन पाइयो। निजु राजा पहि तबही जाइ जताइयो। सुनत राव ए बचन अधिक क्रुद्धित भयो। हो अस तीखन गहि पान जात तितको भयो ॥ ३ ॥
सुन रानी बच त्रिप कह टरि आगै लियो। बिहसि बिहसि पति कै ऐसे उत्तर दियो। मुख बोलौ भइआ के जौ मै घर

वह तुरन्त उसके पास गया और विभिन्न प्रकार से उससे रमण करने लगा। केलिक्रीड़ा के पश्चात् लौटकर अपनें घर आ गया और कोई भी इस भेद को न जान सका ॥ ७ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सो अस्सीवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १८० ॥ ३४८३ ॥ अफजू ॥

एक सौ इक्यासीवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ निशिप्रभा अपार रूपवती रानी थी जो सुन्दर स्वर्गसिंह को बहुत चाहती थी ॥ १ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ कामासक्त होकर रानी उसके निवासस्थान पर आती थी और कह-कहकर कामक्रीड़ा करती थी। उसका रहस्य कोई नहीं पहचानता था जो कि राजा के पास कह सके ॥ २ ॥ उसकी एक सौतन को यह राज़ पता लग गया और उसने तुरन्त राजा से जा कहा। राजा सुनकर अत्यन्त क्रुद्ध हो उठा और तेज़ धारवाली कृपाण हाथ में लेकर उस ओर चल पड़ा ॥ ३ ॥ रानी ने यह सुनकर आगे बढ़कर राजा का स्वागत किया और हंस-हँसकर पति को उत्तर दिया। क्या हुआ यदि मैं मुंहबोले भाई के घर चली गई। मैं तुम्हारी ही स्त्री हूँ और मेरा भला

गई। हो कहौ कहा घट तीया मैं तुमरी भई ॥ ४ ॥ धरम भ्रात जाकौ कहि जु त्रिय बखानिहै। तासौ काम कलोल न कबहूँ ठानिहै। कही सवति की सवति न ऊपर मानियै। हो इन महि रहत सिपरधा (मू०ग्रं०१०७३) हिये पछानियै ॥ ५ ॥ केल करत जिह गहो सु जार उचारियै। साँधि खनत गहि चोर चोर करि मारियै। बिनु नैनन के लहे कोप नहि ठानियै। हो अरि की अरि पर कही न उरमो आनियै ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ या मै कहो कहा ह्वै गई। मुख बोलै भइआ के गई। तोर सवित मै कछु न बिचार्यो। क्यो त्रिप सो तै झूठ उचार्यो ॥ ७ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ कहा भयो जौ राव क्रिपा करि आइयो। मैं न सेज तुमरी ते पकरि मँगाइयो। इतो कोप सुनि सवति न चित मौ धारियै। हो बैर कैसो ई होइ न ब्रिथा उचारियै ॥८॥ ॥ चौपई ॥ मूरख राव भेद का जानै। रिपु की कही रिपू करि मानै। साच राव के मुख पर कहियो। मूरख नाह नाहि कछु लहियो ॥ ९ ॥ कह भ्यो मै इह साथ बिहार्यो। तेरो कछू न काज बिगार्यो। कै

इसमें क्या घट गया ॥ ४ ॥ स्त्री जिसे धर्म-भाई कहती है उससे कभी काम-क्रीड़ा नहीं करती। तुम सौतन का कहना मत मानों क्योंकि इनमें तो हमेशा प्रतिद्वंद्विता बनी रहती है। इसे तुम मन में जान लो ॥ ५ ॥ जिसे केलि-क्रीड़ा करते पकड़ा जाय उसे ही प्यार कहा जाता है और जिसे सेंध लगाते पकड़ा जाय उसे ही चोर-चोर कहकर मारा जाता है। आँखों से देखे बिना क्रुद्ध नहीं होना चाहिए। इसलिए शत्रु द्वारा शत्रु की बात को मन से नहीं लगाना चाहिए ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ इसमें बोलो, भला क्या हो गया जो मैं मुँहबोले भाई के पास चली गई। हे सौतन ! मैंने तो तेरा कुछ नहीं विचार किया। तुमने राजा से झूठ क्योंकर कहा ॥ ७ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ क्या हुआ यदि राजा कृपापूर्वक मेरे पास आ गया। मैंने तुम्हारी शय्या से तो उसे पकड़कर नहीं बुलाया। हे सौतन ! इतना क्रोध तो कभी मन में नहीं लाना चाहिए। चाहे कितना ही वैर-विरोध हो कुछ भी व्यर्थ बात नहीं करनी चाहिए ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ मूर्ख राजा भेद नहीं समझ रहा था और शत्रु की कही बात को शत्रु की ही बात समझ रहा था। यद्यपि सत्य उसके मुख पर कहा गया था, पर फिर भी मूर्ख पति कुछ न समझ सका ॥ ९ ॥ वह कहने लगा कि क्या हुआ जो मैंनें इसके साथ रमण किया। तेरा तो मैंने

तहकीक त्रिया सिर कीजै । नातर मीच मूँड पर लीजै ॥१०॥ सुनु राजा इह कछू न कहियै । साच झूठ मेरो ही लहियै । लहि साची मुहि साथ बिहार्‍यो । झूठी जानि चोर करि मार्‍यो ॥ ११ ॥ तब राजै इह भाँति बखानी । रानी तू साची मैं जानी । तो पर झूठ सवति इन कह्यो । सो मै आजु साचु करि लह्यो ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ सुनि रानी स्यानी बचन सीस रही निहुराइ । सुघर होइ सो जानई जढ़ को कहा उपाइ ॥ १३ ॥ ॥ अड़िल्ल ॥ जो चतरो नर होइ सु भेव पछानई । मूरख भेद अभेद कहा जिय जानई । ताँ तै हौंहूँ कछू चरित्र बनाइहों । हो या रानी के सहित त्रिपहि को घाइहों ॥ १४ ॥ ॥ चौपई ॥ मूरख कछू भेद नहि पायो । साची को झूठी ठहरायो । झूठी को साची करि मान्यो । भेद अभेद कछू नहि जान्यो ॥ १५ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ इकासीवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १८१ ॥ ३४९८ ॥ अफजूं ॥

कुछ नहीं बिगाड़ा । अब या तो इस तथ्य की जाँच-पड़ताल करो या फिर मौत स्वीकार करो ॥ १० ॥ तब रानी ने कहा कि हे राजन् ! इसे कुछ मत कहो, तुम मेरे सत्य को ही झूठ मान लो । यह सच मान लो कि उसने मेरे साथ विहार किया और मुझे झूठी समझकर, मुझे चोर मानकर मार दो ॥११॥ तब राजा ने कहा कि हे रानी ! तुम सच्ची हो । इस सौतन ने तुम्हारे लिए झूठ कहा है, इसे मैंने आज सत्यस्वरूप में जान लिया है ॥ १२ ॥ ॥ दोहा ॥ तब सयानी रानी यह बात सुनकर सिर झुकाकर चुप रही, क्योंकि चतुर हो तो समझ जाय, पर मूर्ख का क्या उपाय है ॥१३॥ ॥अड़िल्ल॥ जो चतुर व्यक्ति हो वह तो रहस्य समझ सकता है । मूर्ख भला भेद-अभेद को क्या समझ सकता है । उसने सोचा कि अब मैं भी कुछ प्रपंच करूँगी और रानी को राजा-सहित मार डालूंगी ॥ १४ ॥ ॥ चौपाई ॥ मूर्ख ने कुछ भेद नहीं समझा और सच्ची को झूठी ठहरा दिया । झूठी को सच्ची मान लिया और भेद-अभेद कुछ भी नहीं जाना ॥ १५ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ इक्कासीवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १८१ ॥ ३४९८ ॥ अफजू ॥

अथ इक सौ बिआसीवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। वहै सवति ता की हुती जाको रूप अपार । सुरपति से निरखत सदा मुख छबि भानकुमार ।। १ ।। ।। अड़िल्ल ।। भानकला ऐसे बहु बरख बिताइकै । निसस प्रभा की बात गई जिय आइकै । सोत राव तिह संग बिलोक्यो जाइकै । हो फिरि आई घर माँझ दुहुन को (मू०ग्रं०१०७४) घाइकै ।।२।। ।। चौपई ।। अधिक कोप करि खड़ग प्रहार्यो । दुहूअन चारि टूक करि डार्यो । मैं इह जड़ सों भेद बतायो । इह मोहू झूठी ठहरायो ।। ३ ।। सवति सहित राजा कौ घाई । पौछि खड़ग बहुरो घर आई । सोइ रही मन मै सुख पायो । भए प्रात यौ कूकि सुनायो ।। ४ ।। रोइ प्रात भे बचन उचारे । बैठे कहा रावजू मारे । हमरे सुख सभही बिधि खोए । यौ सुनि बैन सकल भ्रित रोए ।। ५ ।। म्रितक राव त्रिय सहित निहार्यो । तब रानी इह भाँति उचार्यो । मोकह साथ राव के जारहु । मोरे छत्र पुत्र सिर ढारहु ।। ६ ।।

एक सौ बयासीवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। वह सौतन अपार रूपवान थी । देवराज भी उसकी छवि
को देखता था और उसे सूर्यकुमारी मानता था ।। १ ।। ।। अड़िल्ल ।। उस
भानुकला ने इस प्रकार बहुत से वर्ष बिताए, परन्तु निशिकला की बात उसके
हृदय में बनी रही । एक दिन उसने राजा को अपनी सौतन के साथ
सोते देखा तो वह दोनों को मारकर फिर अपने घर चली आई ।। २ ।।
।। चौपाई ।। अत्यधिक क्रुद्ध हो उसने खड़ग से वार किया और दोनों को चार
टुकड़े कर दिया । मैंने तो इस मूर्ख को भेद बताया पर इसने मुझे ही झूठी
ठहरा दिया ।। ३ ।। उसने सौतन-समेत राजा को मार डाला और खड़ग
पोंछकर फिर अपने घर आ गई । वह मन में सुखपूर्वक सो गई और सुबह
होते चीखने लगी ।। ४ ।। प्रातः वह रोकर कहने लगी कि यहाँ सब बैठे हो,
राजा तो मारा गया । हमारे तो सभी सुख नष्ट हो गए । यह सब सुनकर
सभी नौकर भी रो पड़े ।। ५ ।। मृत राजा को स्त्री-समेत देखकर रानी ने
कहा कि मुझे राजा के साथ ही जलाओ और मेरे पुत्र को राज्य दे दो ।। ६ ।।
तब उसके पास सब मंत्री आए और रोते-रोते यह कहने लगे । राज्य तो

तब ता पै मंत्री सभ आए। रोइ रोइ यौ बचन सुनाए। छत्र पुत्र के सिर पर ढारो। आज उचित नहि जरन तिहारो ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ त्रिपति मर्‍यो सिसु सुत रह्यो तै जरिहैं दुख पाइ। जिनि ऐसो हठ कीजियै राजबंस ते जाइ ॥ ८ ॥ ॥ चौपई ॥ सभन सुनत इह भाँति उचारी। जरन निमिति उठि तबै सिधारी। तब मंत्रिन रानी गहि लई। राजसमग्री तिह सुत दई ॥ ९ ॥ ॥ दोहरा ॥ चरित चंचला ऐस करि त्रिय जुत त्रिपति सँघारि। मंत्रिन की राखी रही छत्र पुत्र सिर ढार ॥ १० ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ बिआसीवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १८२ ॥ ३५०८ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ तिरासीवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ शहिर बटाला मौ बसै मैगल खान पठान। मद पीवत निसु दिन रहै सदा रहत अग्यान ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ तबही दिवस तीज को आयो। सभ अबलनि

पुत्र को दे दो पर तुम्हारा जलना आज उचित नहीं है ॥७॥ ॥ दोहा ॥ राजा मर गया, पुत्र अभी बच्चा है और अब तुम भी दुख में जलना चाहती हो। ऐसा मत करो अन्यथा सारा राज्य ही वंश से चला जायगा ॥ ८ ॥ ॥ चौपाई ॥ सबके सुनते हुए भी यह उठ चली और जलने के निमित्त चल पड़ी। तब मंत्रियों ने रानी को पकड़ लिया और राज्यसामग्री पुत्र को दे दी ॥ ९ ॥ ॥ दोहा ॥ उस स्त्री ने ऐसा प्रपंच किया कि राजा-समेत उस स्त्री को मार डाला। फिर मंत्रियों का कहना मान लिया और पुत्र को राजछत्र दिलवा दिया ॥ १० ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ बयासीवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १८२ ॥ ३५०८ ॥ अफजू ॥

एक सौ तिरासीवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ बटाला नगर में मैगल खान एक पठान रहता था। वह अज्ञानी दिन-रात शराब पीता रहता था ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ तभी तीज का अवसर आया और सब स्त्रियाँ आनंदित हो उठीं। वे झूला झूलते

आनंदु बढायो । झूलति गीति मधुर धुनि गावहि । सुनत नाद कोकिला लजावहि ॥ २ ॥ उत घनघोर घटा घुहरावै । इति मिल गीत चंचला गावै । उत ते दिपत दामिनी दमकै । इत इन दसन कामनिन झमकैं ॥ ३ ॥ रितराज प्रभा इक राज दुलारिन । जाहि प्रभा सम राजकुमारन । अप्रमान ता की छबि सोहै । खग म्रिग राज भुजंगन मोहै ॥ ४ ॥ सो झूलत तिन खान निहारी । गिर्यो भूमि जनु लगी कटारी । कुटनी एक बुलाइ मँगाई । सकल ब्रिथा तिह भाख सुनाई ॥ ५ ॥ ॥ कबित्तु ॥ आई हुती बनि एक (मू०ग्रं०१०७५) बाला राग माला सम मेरे ग्रहि माँझ दीपमाला जनु वैगई । बिछूआ की बिझक सो बिछू सो डसाइ मानो चेटक चलाइ निजु चेरो मोहिकै गई । दसन की दिपत दिवाने देव दानौ कीने नैनन की कोर सौ मरोरि मनु लै गई । कंचन से गात रवि थोरिक चिल चिलात दामनी सी कामनी दिखाई आनि दै गई ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ जौ मुहि तिह तूँ आनि मिलावैं । अपुने मुख माँगै सो पावैं । रुतिस प्रभा तनि कै रति करौं । नातर मारि

मधुर ध्वनि में गाने लगीं । उनका नाद सुनकर कोयल भी लजा रही थी ॥ २ ॥ उधर घनघोर घटा घहराने लगी और इधर ये मिलकर चंचल गीत गाने लगीं । उधर बिजली चमक रही थी और इधर इन कामिनियों के दाँत दमक रहे थे ॥ ३ ॥ ऋतुराजप्रभा एक राजकुमारी थी जिसके समान सुन्दर कोई राजकुमारी नहीं थी । उसका सौंदर्य अपरिमित था और खग, मृग एवं नाग भी उस पर मोहित थे ॥ ४ ॥ उस झूलती हुई को उस खान ने देखा और भूमि पर ऐसे गिर पड़ा मानों कटारी लग गई हो । उसनें एक कुटनी को बुलाया और सारी व्यथा कह सुनाई ॥ ५ ॥ ॥ कवित्त ॥ वन में एक लड़की रागमाला के समान आई हुई है, उसे देखकर मेरे मन रूपी घर में मानों दीपावली जल उठी हो । उसके बिछुआ मानों बिच्छुओं के समान डंक मारनेवाले हैं और जादू से मानों मुझे अपना दास बना गई है । उसके दाँतों की चमक से देव-दानव सभी दीवाने हो गए हैं । उसकी आँखों के किनारे तो मेरा मन मरोड़कर ले गए हैं । उसका शरीर सोने के समान अथवा चमकते सूर्य की भाँति है अथवा वह बिजली के समान मुझे दिखाई दे गई है ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ यदि तुम मुझे उससे मिला दो तो मुँह माँगा इनाम पाओगी । ऋतुप्रभा के साथ रतिक्रीड़ा करूँगा

कटारी मरौ ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ रुतिस प्रभा की अति प्रभा जब तें लखी बनाइ । चुभि चित के भीतर रही मुख तें कही न जाइ ॥ ८ ॥ सोतो छबि न कही परै स्त्री रितु राजकुमार । जीभि मधुर ह्वै जात है बरनत प्रभा अपार ॥ ९ ॥ ॥ कबित्तु ॥ आँखि रस गिर्यो ताते आँख प्रगटत भए जिहवा रस हूते ज़रदालू लहियतु है । मुख रस हूकौ मधु पान कै बखानियत जाकै नैक चाखे सदा जीयत रहियतु है । नाक कौ निरखि निसिरात निसि राजा भयो जाकी सभ जगत कौ जौन चहियतु है । दाँतन ते भयो दाख दारिम बखानियत अधर ते भयो ताँहि ऊख कहियतु है ॥ १० ॥ ॥ चौपई ॥ कटनी बचन सुनत ए धाई । ताँहि झुलावन के मिसु ल्याई । तब तिह आन खान गहि लीनो । चकि चित चरित चंचला कीनो ॥ ११ ॥ तुमरे इही निमित मैं आई । अब फूलन मुहि दई दिखाई । अब मुहि जान धाम कौ दीजै । परसौ बोलि कलोल करीजै ॥१२॥ अति मद पान खान तुम कीजहु । लपटि लपटि मोकहु सुख दीजहु । परसौ अरध रात्रि मै ऐहौ । तुमरी दुहिता के ढिग

अन्यथा कटारी मारकर मर जाऊँगा ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ जबसे मैंने ऋतुप्रभा की छवि देखी है, वह मेरे चित्त में चुभकर रह गई है; उसका मुख से वर्णन नहीं किया जा सकता ॥ ८ ॥ मुझसे ऋतुप्रभा की छवि कही नहीं जा पा रही । उसके वर्णन से मुँह भी मीठा हो जाता है ॥९॥ ॥ कवित्त ॥ उसकी आँखों के रस मानों आम बनें और जिह्वा रस से पीले फल (खुरमानी) बने । मुखरस से शहद बना है, जिसके तनिक-सा चखने से जीवन प्राप्त होता है । उसकी नाक को देखकर ही चन्द्रमा, चन्द्रमा की पदवी प्राप्त कर सका और तभी उसे सारा संसार चाहता है । उसके दाँतों से मेवा और अनार बने हैं और अधरों से गन्ने का रस बना है ॥ १० ॥ ॥ चौपाई ॥ कुटनी यह वचन सुनकर चल पड़ी और झुलाने के लिए आ पहुँची । तब उसे खान ने आकर पकड़ लिया और इस स्त्री नें आश्चर्यकारी प्रपंच किया ॥ ११ ॥ मैं तो तुम्हारे लिए ही आई थी, पर अब मुझे मासिक-धर्म हो रहा है । आज मुझे घर जाने दो और परसों बुलवाकर फिर रतिक्रीड़ा करना ॥ १२ ॥ खान, तुम मद्यपान करना और लिपट-लिपटकर मुझे सुख देना । परसों मैं आधी रात को आऊँगी और तुम्हारी पुत्री के पास सोऊँगी ॥ १३ ॥ यह

स्वैहौ ।। १३ ।। यौ करि बोल खान तजि दीनी। परसौ की चिंता चित कीनी। तब रितराज प्रभा चलि आई। वा दुहिता ढिग सेज बिछाई ।। १४ ।। सोए लोग धाम उठि गई। सिमरत खान घरी सो भई। निजु सिगरी तिह कह जगवायो। खोजत ताहि सुता ढिग आयो ।। १५ ।। रुतिम प्रभा दुहिता लखि धरी। द्रिड़ गहि जाँघ दोऊ रति करी। हाइ हाइ करि रही पठानी। मद पीएँ जड़ कछू न जानी ।। १६ ।। ।। दोहरा ।। लपटि लपटि तासौ रम्यो रुतिस प्रभा तिह जानि। मद उतरे तिह तजि दियो अपनी (मू०ग्रं०१०७६) सुता पछानि ।। १७ ।। धन्य छत्रि जाको धरम स्त्री रितिराजि कुमारि। संग सुता के कै मुझै गी पतिब्रता उबारि ।। १८ ।। एक मदी दूजै तरुनि तीजे अति धन धाम। पाप करें बिन क्यों बचै बचै बचावै राम ।।१९।।१।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ तिरासीवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ।। १८३ ।। ३५२७ ।। अफजूं ।।

बोलकर खान ने छोड़ दिया और परसों की चिंता शुरू की। तब ऋतुराज-प्रभा चली आई और उसकी पुत्री के पास उसने शय्या बिछा दी ।। १४ ।। जब लोग सो गए तो उठकर अपने घर चली आई और इधर खान को उसे याद करते-करते घड़ियाँ बीतने लगीं। उसे सारी रात जगवा दिया और अन्ततः वह खोजते-खोजते पुत्री के पास आया ।। १५ ।। उसने पुत्री को देखकर समझा कि ऋतुप्रभा है और उसकी जंघाएँ दृढ़तापूर्वक पकड़कर उससे रतिक्रीड़ा की। इधर पठानी हाय-हाय कर रही थी, पर शराब पिये मूर्ख ने कुछ नहीं जाना ।। १६ ।। ।। दोहा ।। उसे ऋतुप्रभा समझकर उसने उससे लिपट-लिपटकर रतिक्रीड़ा की और शराब उतरने पर अपनी पुत्री को पहचानकर उसे छोड़ दिया ।। १७ ।। वह कहने लगा कि क्षत्रिय राजकुमारी धन्य तुम्हारा धर्म है, तुमने मुझे तो पुत्री के साथ कर दिया और अपने सतीत्व को उबार लिया ।। १८ ।। एक शराबी, दूसरे जवानी और तीसरे जब घर में धन-धान्य हो तो भला फिर पाप से क्यों बचे। फिर तो राम ही बचाए ।। १९ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ तिरासीवें चरित्र
की शुभ सत् समाप्ति ।। १८३ ।। ३५२७ ।। अफजू ।।

अथ इक सौ चौरासीवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ पांडव के पाँचौ सुत सूरे । अरजुन भीम जुधिशटर रूरे । नकुल अवर सहदेव भनिज्जै । जाँ सम उपज्यो कौन कहिज्जै ॥ १ ॥ बारह बरख बनबास बितायो । सोई बरख त्रैदसो आयो । देस बिराट राज के गए । सोऊ बरख बितावत भए ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ जबै कीचकहि द्रुपदजा देखी नैन पसारि । गिर्‌यो मूरछना ह्वै धरनि मारि कर्‌यो बिसंभार ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ प्रगट भगनि तनु भेद जतायो । मिलन द्रुपद जाको ठहरायो । रानी पठै सदेसन दई । कर ते पकरि करीचक लई ॥४॥ ॥ दोहरा ॥ करिकै करि को अधिक बलु अंचर गई छुराइ । जनु करि हेरे स्वान कौ भजत म्रिगी अकुलाइ ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ तब अति कोप करीचक कयो । राजा हुतो जहाँ तह अयो । पाद प्रहार द्रुपद यहि कियो । पाँचो निरखि पंडजन लियो ॥ ६ ॥ अति ही कोप भीम तब भरियो । राजै मने नैन सौं करियो ।

एक सौ चौरासीवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर आदि पांडु के पाँचों शूरवीर पुत्र थे । नकुल और सहदेव आदि के समान अन्य कोई पैदा हुआ नहीं कहा जा सकता ॥ १ ॥ बारह वर्ष वनवास बितानें के बाद अब तेरहवाँ वर्ष आया । अब वे राजा विराट के राज्य में गए और वह (अंतिम) वर्ष उन्होंने वहाँ बिताया ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ जब कीचक ने द्रौपदी को आँखों से देखा तो वह धरती पर मूर्च्छित होकर गिर पड़ा ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब उसने अपनी बहिन को यह भेद कहा और द्रौपदी से मिलने की बात तय की । रानी ने संदेशा भेजा और (द्रौपदी के आने पर) कीचक ने उसे हाथ से पकड़ लिया ॥ ४ ॥ ॥ दोहा ॥ वह हाथ की अत्यधिक शक्ति लगाकर उससे आँचल छुड़ाकर ऐसे भाग गई जैसे कुत्ते को देखकर मृगी व्याकुल होकर भाग खड़ी होती है ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब कीचक क्रुद्ध हो वहाँ गया जहाँ राजा था । उसने द्रौपदी पर लातों से प्रहार किया, जिसे पाँचों पांडवों ने देखा ॥६॥ तब भीम अत्यन्त क्रुद्ध हो उठा पर राजा (युधिष्ठिर) ने उसे मना कर दिया । उसने द्रौपदी को पास बुलाया, सिखाया और कीचक को

बोल द्रुपदजा निकट सिखाई । यौ क्रीचक सौ कहो बनाई ।।७।।
।। दोहरा ।। चतुरि द्रुपदजा अति हुती अरु पति कह्यो बनाइ ।
एक बचन भाख्यो हुतो बीसक कही सुनाइ ।। ८ ।।
।। चौपई ।। द्रुपदी यौ क्रीचक सौ कही । तुम पैं अनिक रीझि
मै रही । सूँनिसाल निसि कौ तुम ऐयहु । कामभोग मुहि साथ
कमैयहु ।। ९ ।। सूँनिसाल भीमहि बैठायो । क्रीचक अरध
रात्रि गै आयो । तब ही पकरि टाँग ते लियो । टूक अनेक
ताँहि करि दियो ।। १० ।। प्रात समैं क्रीचक रिसि भरे ।
केस द्रोपदी के द्रिड़ धरे । याहि अगनि के बीच जरैहैं । भ्रात
गयो तह तोहि पठैहैं ।। ११ ।। गहिके केस ताँहि ले चले ।
क्रीचक बीच सूरमा भले । तबही कोप भीम अति भरियो ।
गहिकै तार ब्रिछ करि धरियो ।। १२ ।। जा कौ कोपि ब्रिछ
की मारै । ता को (मू०ग्रं०१०७७) मूँड चौथि ही डारै ।
काहूँ पकरि टाँग ते घावै । किसू केस ते ऐंचि बिगावै ।। १३ ।।
कनिया बिखै क्रीचकन धारै । बरत चिता भीतर लै डारै ।
सहस पाँच क्रीचक संग मार्यो । निजु नारी को प्रान
उबार्यो ।। १४ ।। १ ।।

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ चौरासीवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ।। १८४ ।। ३५४१ ।। अफजूं ।।

कहलवाया ।। ७ ।। ।। दोहा ।। द्रौपदी चतुर तो थी फिर पति ने भी बनाकर
उसे समझाया। उसने तो एक कहा था पर द्रौपदी ने बीस गुना बढ़ाकर
कहा ।। ८ ।। ।। चौपाई ।। द्रौपदी ने कीचक से कहा कि मैं तो तुम्हारे पर
बहुत मोहित हूँ। तुम रात को रसोई में आना और मेरे साथ कामक्रीड़ा
करना ।। ९ ।। रसोई में भीम को बिठा दिया जहाँ आधी रात के समय
कीचक आया। वहाँ (भीम ने) उसे टाँग से पकड़ लिया और अनेकों टुकड़े
कर दिया ।। १० ।। प्रातः फिर कीचक ने क्रुद्ध हो द्रौपदी के केश दृढ़तापूर्वक
पकड़ लिये और कहा कि इसे अग्नि में जला देंगे और जहाँ हमारा भाई गया
है वहाँ इसे भी भेज देंगे ।। ११ ।। उसे केश पकड़कर ले चले। वे अनेकों
ही बाँके कीचक वीर थे। तब भीम क्रुद्ध हो उठा और उसने ताड़ का वृक्ष
हाथ में पकड़ लिया ।। १२ ।। जिससे वह क्रुद्ध हो उनको मारता था और सिर
कुचल डालता था। किसी को टाँग पकड़कर मारता और किसी को बालों
से घसीटकर फेंक देता था ।। १३ ।। अपनी काँख में कीचकों को दबा लिया

और जलती चिता में सबको डाल दिया । पाँच हज़ार कीचकों को मारा और अपनी स्त्री के प्राण बचाए ।। १४ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में एक सौ चौरासीवें
चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १८४ ।। ३५४१ ।। अफजू ।।

अथ इक सौ पचासीवों चरित्र कथनं ।।

।। दोहरा ।। एक बनिक की भारजा अकबरबाद मँझार । देव दैत रीझैं निरखि स्त्री रन रंगकुमार ।। १ ।। ।। चौपई ।। स्त्री अकबर आखेट सिधायो । ता को रूप निरखि बिरमायो । सखी एक तिह तीर पठाई । ताहि आनि मुहि देहि मिलाई ।। २ ।। तब चल सखी भवन तिह गई । वाकौ भेद जतावत भई । सो हजरति के धाम न आई । हजरति जू ग्रहि लए बुलाई ।। ३ ।। हजरति जबै भवन तिह आयो । ता अबला की सेज सुहायो । तब रानी तिन बचन उचारे । सुनहु शाह प्रानन ते प्यारे ।। ४ ।। कहौ तो अबै डारि लघु आऊँ । बहुरि तिहारी सेज सुहाऊँ । यौ कहि जात तहा ते भई । ग्रहि की ऐंचि किवरिया दई ।। ५ ।। पति कह जाइ सकल सुधि दई । संग करि नाथ लयावत भई । अति तब कोप बनिक को भयो । छित्र उतारि हाथ मै लयो ।। ६ ।।

एक सौ पचासीवाँ चरित्र-कथन

।। दोहा ।। अकबराबाद में एक बनिये की पत्नी थी, जिसे देखकर देव-दैत्य सभी मोहित होते थे ।। १ ।। ।। चौपाई ।। अकबर आखेट को गया और उसका रूप देखकर ललचा गया । एक सखी को यह कहकर उसके पास भेजा कि उसे मुझसे मिलवाओ ।। २ ।। तब सखी उसके घर गई और उसे सारा रहस्य कहा । वह तो बादशाह के घर नहीं गई अपितु उसने बादशाह को अपने घर बुला लिया ।। ३ ।। जब बादशाह उसके घर आया तो उस स्त्री की शय्या पर विराजमान हुआ । तब रानी ने कहा कि हे प्यारे बादशाह ! सुनो ।।४।। यदि आज्ञा दो तो अभी मैं लघुशंका से निवृत्त होकर आऊँ और फिर तुम्हारी शय्या पर सुशोभित होऊँ । यह कहकर वह वहाँ से चली गई और दरवाज़ा बंद कर गई ।। ५ ।। उसने जाकर पति को सब बताया और अपने स्वामी को साथ ले आई । बनिया अत्यधिक क्रुद्ध हो

हजरति को पनही सिर झारै। लज्जत शाह नहि बचन उचारै। जूतनि मारि भोहरे दियो। वैसहि दै दरवायो लियो ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ प्रात भए कुटवार के भई पुकारू जाइ। काजी मुफती संग लै तहाँ पहूची आइ ॥ ८ ॥ चोर जार कै साध कउ शाहु किधौ पतिशाह। आपन ही चलि देखियै ए काजिन को नाह ॥ ६ ॥ ॥ चौपई ॥ पति त्रिय बचन भाखि भजि गए। हेरत ते अकबर कह भए। हजरति लजत बचन नहि बोलै। न्याइ रह्यो सिर आँखि न खोलै ॥ १० ॥ जे कोई धाम किसी के जावै। क्यो नहि ऐस तुरत फलु पावै। जे कोऊ परनारी सो पागै। पनही इहाँ नरक तिह आगै ॥११॥ जब इह भाँति हजरतहि भयो। बहुरि किसू के धाम न गयो। जैसा किय तैसा फल पायो। (मू०ग्रं०१०७८) दुराचार चित ते बिसरायो ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ पचासीवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १८५ ॥ ३५५३ ॥ अफजूं ॥

उठा और उसने जूता उतार कर हाथ में पकड़ लिया ॥ ६ ॥ उसने बादशाह के सिर पर जूता मारते हुए कहा कि तुम्हें लज्जा नहीं आती। जूते मारकर उसे तहख़ाने में डाल दिया और दरवाज़ा बन्द कर दिया ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ सुबह होते ही कोतवाल के यहाँ जाकर पुकार लगाई और क़ाज़ी, मुफ़्ती आदि को साथ ले वहाँ पहुँची ॥ ८ ॥ चोरों के सरदार यानी बादशाह को हे क़ाज़ियों के स्वामी! स्वयं चलकर देख लो ॥ ६ ॥ ॥ चौपाई ॥ यह कहकर पति और पत्नी भाग खड़े हुए और ये सब अकबर को देखने लगे। बादशाह लज्जित होकर बोल नहीं रहा था और बिना आँख खोले सिर झुकाए रहा ॥ १० ॥ यदि कोई किसी के घर पर (ऐसे काम के लिए) जाता है तो क्यों नहीं तुरन्त ऐसा फल प्राप्त करेगा। यदि कोई परायी स्त्री में अनुरक्त होगा तो उसे यहाँ जूते और आगे नरक मिलेगा ॥ ११ ॥ जब बादशाह के साथ यह सब हुआ तो वह फिर किसी के घर पर नहीं गया। उसने जैसा किया वैसा फल पाया और फिर दुराचार को मन से भुला दिया ॥ १२ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ पचासीवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १८५ ॥ ३५५३ ॥ अफजू ॥

अथ इक सौ छिआसीवों चरित्र कथनं ॥

॥ दोहरा ॥ मद्र देस इक छत्रजा अचलकला तिह नाउँ । अधिक दरब ता के रहै बसत द्यालपुर गाउँ ॥ १ ॥ ॥ चौपई ॥ रवि जबही असताचल गए । प्राची दिसा चंद्र प्रगटए । जारि दीवटैं तसकर धाए । ता के ताकि भवन कह आए ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ ठाढ भई तिह बालके सिर पर खड़ग निकारि । कै खन देहि बताइकै नह तुहि देहि सँघारि ॥ ३ ॥ ॥ चौपई ॥ जब अबला ऐसे सुनि पायो । कछूक धाम को दरबु दिखायो । बहुरि कह्यो मै दरबु दिखाऊँ । जौ मै दान जीव को पाऊँ ॥४॥ ॥ सवैया ॥ काहे कौ आजु सँघारत मोकह संग चलो बहु माल बताऊँ । राखि महा बतिखान गए सभही इक बार सु ते हरि ल्याऊँ । पूतन पोत्रन लौ सभ को छिन भीतरि आजु दरिद्र बहाऊँ । लीजहु लूटि सभै तुम ताकह मै अपनो नहि पान छुआऊँ ॥ ५ ॥ ॥ चौपई ॥ सुनत बचन तसकर के भए । त्रिय कौ संग तहाँ लै गए । जह कोठा दारू को भरियो । तही जाइ तसकरन

एक सौ छियासीवाँ चरित्र-कथन

॥ दोहा ॥ मद्रदेश में अचलकला नामक एक स्त्री थी। उसके पास अत्यधिक द्रव्य था और वह दयालपुर गाँव में रहती थी ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब सूर्यास्त हुआ और चन्द्र पूर्व दिशा में प्रकट हुआ तो डाकू मशाल जलाकर चले और उसके घर में आ गए ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ वे खड़ग निकालकर उसके सिर पर आ खड़े हुए और कहने लगे कि या तो तहखाना बता दो नहीं तो तुम्हें मार डालेंगे ॥ ३ ॥ ॥ चौपाई ॥ जब उस स्त्री ने यह सुना तो घर का कुछ धन उन्हें दिखाया। फिर कहा कि मैं और धन तब दिखाऊँगी यदि मुझे जीवित छोड़ दिया जाय ॥ ४ ॥ ॥ सवैया ॥ मुझे क्यों मारते हो मेरे साथ चलो मैं तुम्हें माल दिखाती हूँ। महावत खाँ माल रख गए हैं उन्हें मैं हरण करके ले आती हूँ। फिर पुत्र-पौत्रों तक की दरिद्रता क्षण भर में समाप्त कर देती हूँ। तुम लोग लूट लेना मैं हाथ भी नहीं लगाऊँगी ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥ यह वचन सुनकर चोर उसे वहाँ ले गए जहाँ का घर बारूद से भरा हुआ था। स्त्री ने वही मकान चोरों को बताया ॥६॥

उचरियो ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ अगनि बान सो बाँधि त्रिय तह कौ दई चलाइ। काल सभन तिन को हुतो पर्यो तही सर जाइ ॥ ७ ॥ ॥ चौपई ॥ तसकर जारि मसालैं परे। दारू बिखै अँगारे झरे। सभ तसकर तबही उडि गए। भूचर ते खेचर सो भए ॥ ८ ॥ दारू उडत चोर उडि गए। सभ ही फिरत गगन मो भए। दस दस कोस जाइ कर परे। हाड गोड नहि मूँड उबरे ॥ ९ ॥ एकै बार चोर उड गए। जीवत एक न बाँचत भए। इह चरित्र अबला तिह मार्यो। छल भे अपनो धाम उबार्यो ॥ १० ॥ इह छल सभ चोरन कह घाई। बहुरौ धाम आपने आई। इंद्र बिशन ब्रहमा शिव होई। त्रिय चरित्र ते बचत न कोई ॥११॥१॥ (मू०ग्रं०१०७९)

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संवादे इक सौ छिआसीवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १८६ ॥ ३५६४ ॥ अफजूं ॥

अथ इक सौ सतासीवों चरित्र कथनं ॥

॥ चौपई ॥ कामकला कामनि इक सुनी। बेद शास्त्र भीतरि अति गुनी। ता को पुत्र न आग्या मानै। याँ ते मात

॥ दोहा ॥ बाण से आग बाँधकर स्त्री ने बाण चला दिया और वह तीर काल की तरह उनके सिर पर आ पड़ा ॥ ७ ॥ ॥ चौपाई ॥ चोर जलकर मसाले में जा पड़े और बारूद में से अंगारे झड़ने लगे। वे सभी चोर उड़ गए और स्थलचारियों से नभचारी बन गए ॥ ८ ॥ बारूद के उड़ते ही सभी चोर उड़ गए और आकाश में मँड़राने लगे। वे दस-दस कोस की दूरी पर जा गिरे और हड्डी, पाँव, सिर कोई न बचा ॥ ९ ॥ एक ही बार में चोर उड़ गए और एक भी जीवित न बचा। इस प्रपंच से स्त्री नें उन्हें मारा और अपना घर बचा लिया ॥ १० ॥ इस छल से चोरों को मारकर फिर वह अपने घर आई। इन्द्र, विष्णु, ब्रह्मा अथवा शिव हो स्त्री के प्रपंच से कोई नहीं बच सका है ॥ ११ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ छियासीवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १८६ ॥ ३५६४ ॥ अफजू ॥

एक सौ सत्तासीवाँ चरित्र-कथन

॥ चौपाई ॥ कामकला नामक एक स्त्री थी, जो वेद-शास्त्रों की

कुबुधि बिखै दिनु रैनि गवावै ।
कोप चित ठानै ।। १ ।। गुंजन साथ करै गुजराना ।
मात पिता को दरबु लुटावै । ताँ को भ्रात दुतिय
करत कुबिरति पियत मद पाना ।। २ ।। ता सौ नेह मात
सुभ कारी । जूप रहित न कछू दुरचारी : एक दिवस जब
को रहै । याकौ बेगि सँघारे चहै ।। ३ ।। टटिआ द्वार
सो घर आयो । सोत छापरी माँझ तकायो । मात पूत
आगि दै दई । सुत को मात जरावत भई ।। ४ ।। आगि
कौ प्रथम जरायो । रोइ रोइ सभ जगत सुनायो । ।। ५ ।। १ ।।
लगाइ पानि कौ धाई । मूरख बात न किनहूँ पाई

।। इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ सतासीवों चरित्र
समापतम सतु सुभम सतु ।। १८७ ।। ३५६९ ।। अफजूं ।।

अथ इक सौ अठासीवों चरित्र कथनं ।।

।। चौपई ।। कंचनप्रभा जाटजा रहै । अति दुतिवान

अत्यन्त जानकार थी । उसका पुत्र उसकी आज्ञा नहीं मानता था, इससे माता अत्यन्त क्रुद्ध रहती थी ।। १ ।। वह पुत्र कुबुद्धिपूर्ण कामों में रात-दिन लगा रहता था और माता-पिता के द्रव्य को लुटाता था । वह बुरे लोगों के साथ ही समय गुज़ारता था और मद्यपान कर कुवृत्तिपूर्ण कार्य करता था ।। २ ।। उसका दूसरा भाई शुभ कार्यों को करनेवाला था । वह जुए आदि से रहित और दुराचार से विहीन था । माँ को उससे स्नेह रहता था और वह इसे शीघ्र मार डालना चाहती थी ।। ३ ।। एक दिन जब वह घर आया और उसे छप्पर में सोता पाया तो उस फूस की टट्टी के दरवाज़े पर आग लगाकर माँ ने पुत्र को जला दिया ।। ४ ।। पहले तो माँ ने पुत्र को जलाया, फिर रो-रोकर सबको सुनाया कि आग लगते ही मैं पानी को दौड़ी (पर बचा नहीं सकी) । कोई भी मूर्ख उसकी बात को समझ नहीं पाया ।। ५ ।। १ ।।

।। श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मंत्री-भूप-संवाद में एक सौ सत्तासीवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ।। १८७ ।। ३५६९ ।। अफजू ।।

एक सौ अट्ठासीवाँ चरित्र-कथन

।। चौपाई ।। कंचनप्रभा एक जाट की स्त्री थी जिसे संसार अत्यन्त सुन्दरी

ताँहि जग कहै। भरता एक प्रथम तिन कियो। रुच्यो न
डारि फाँस हनि दियो ॥ १ ॥ केतिक दिनन और पति
करियो। सोऊ न रुच्यो कटारी मरियो। मास बिखैं औरै
पति पायो। सोऊ दैकै बिखु त्रिय घायो ॥ २ ॥ चौथो नाथ
नाइका कीनो। ताकह हनि पंचम कह लीनो। छठएँ
मारि सपतमो घायो। अशटम कै संग नेह लगायो ॥ ३ ॥
करम काल सोऊ नहि भायो। जमधर भए ताँहि तिन घायो।
ध्रिग ध्रिग जानि जगत तिह करियो। हाहाकार सभन
उचरियो ॥ ४ ॥ जब इह भाँति सुनति त्रिय भई। जानुक
बिनु मारे मर गई। अब हौं जरो नाथ तन जाई। इन
सभहूँन चरित्र दिखाई ॥ ५ ॥ अरुन बस्त्र धर पान चबाए।
लोग सभन को कूक सुनाए। यौ कहि हाथि सिधौरो गह्यो।
जरिबो साथ नाथ कै चह्यो ॥ ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ सपत नाथ
निज करन हनि कियो सती को भेस। ऊच नीच देखत तरनि
पावक कियो प्रवेस ॥ ७ ॥ सपत नाथ निजु हाथ हनि अशटम

मानता था। पहले उसने एक पति का वरण किया जो उसे ठीक नहीं लगा और उसे उसने गले में फंदा डालकर मार डाला ॥ १ ॥ कितने ही दिनों बाद उसने अन्य पति किया, वह भी उसे अच्छा नहीं लगा और उसे कटार मारकर उसने मार डाला। एक माह बाद उसने एक अन्य पति बनाया जिसे उस स्त्री ने ज़हर देकर मार डाला ॥ २ ॥ फिर उसने चौथा पति किया और उसे मारकर पाँचवाँ पति अपना लिया। छठवाँ मारकर सातवें को भी मार डाला और आठवें के साथ प्रीति शुरू कर दी ॥ ३ ॥ कर्मगति कि वह भी उसे नहीं भाया और उसे भी उसने कटार से मार डाला। सारे संसार नें उसे धिक्कारा और हाहाकार मचा दिया ॥ ४ ॥ जब स्त्री ने यह सब सुना तो वह तो मानो बिना मारे ही मर गई। उसने सोचा कि मैं अब अपने स्वामी के तन के साथ जल मरूँगी और इनको प्रपंच दिखाऊँगी ॥ ५ ॥ उसने लाल वस्त्र पहनकर पान चबाया और लोगों को चिल्लाकर सुनाया। चीखकर उसने हाथ में बीणा लिया और पति के साथ जलने की इच्छा प्रकट की ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ सात पतियों को हाथों से मारकर अब उसने सती का वेश धारण कर लिया और ऊपर-नीचे देखते हुए उसने अग्नि में प्रवेश

कौ गर लाइ । सभ लोगन देखत जरी ढोल म्रिदंग बजाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ (मू०प्रं०१०८०)

॥ इति स्री चरित्र पख्याने त्रिया चरित्रे मंत्री भूप संबादे इक सौ अठासीवों चरित्र समापतम सतु सुभम सतु ॥ १८८ ॥ ३५७७ ॥ अफजूं ॥

॥ तीसरी सैंची समाप्त ॥

किया ॥ ७ ॥ सात पतियों को मारकर आठवें को गले से लगाकर सबके देखते-देखते ढोल-मृदंग बजाती हुई सती हो गयी ॥ ८ ॥ १ ॥

॥ श्री चरित्रोपाख्यान के त्रिया-चरित्र के मन्त्री-भूप-संवाद में एक सौ अट्ठासीवें चरित्र की शुभ सत् समाप्ति ॥ १८८ ॥ ३५७७ ॥ अफजू ॥

॥ तीसरी सैंची समाप्त ॥

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब

श्री आदि गुरुग्रन्थ साहिब के मूल गुरमुखी पाठ का
नागरी अक्षरों में लिप्यन्तरण और हिन्दी
अनुवाद चार सैंचियों में छपकर पहली
बार तैयार हुआ है।
हिन्दी जाननेवाले
पाठक अब इस दुर्लभ ग्रन्थ का
अर्थ समझते हुए गुरबानी का पाठ कर सकते हैं।
चारों सैंचियों की भेंट केवल २००˙०० रुपया है।

श्री गुरु गोविन्दसिंह जी विरचित
श्री दसम गुरुग्रन्थ साहिब का पाठ नागरी अक्षरों में
देते हुए सरल हिन्दी अनुवाद भी छप गया है।
प्रथम, द्वितीय, तृतीय सैंची आपके सामने
प्रस्तुत हैं।

शेष चौथी सैंची छप रही है।

प्रत्येक सैंची की भेंट ५०˙०० मात्र। डाक व्यय पृथक्।

श्री सुखमनी मूल पाठ गुटका पाठ के लिए भेंट ४˙००।

श्री जपुजी सुखमनी साहिब
ख्वाजः दिलमुहम्मद की टीका सहित हिन्दी में भेंट १०˙००

प्राप्ति-स्थान—
भुवन वाणी ट्रस्ट
'प्रभाकर निलयम', ४०५/१२८, चौपटियां रोड, लखनऊ—२२६००३

भुवनग्रन्थ-गाथा भुवन सन्त-वाणी

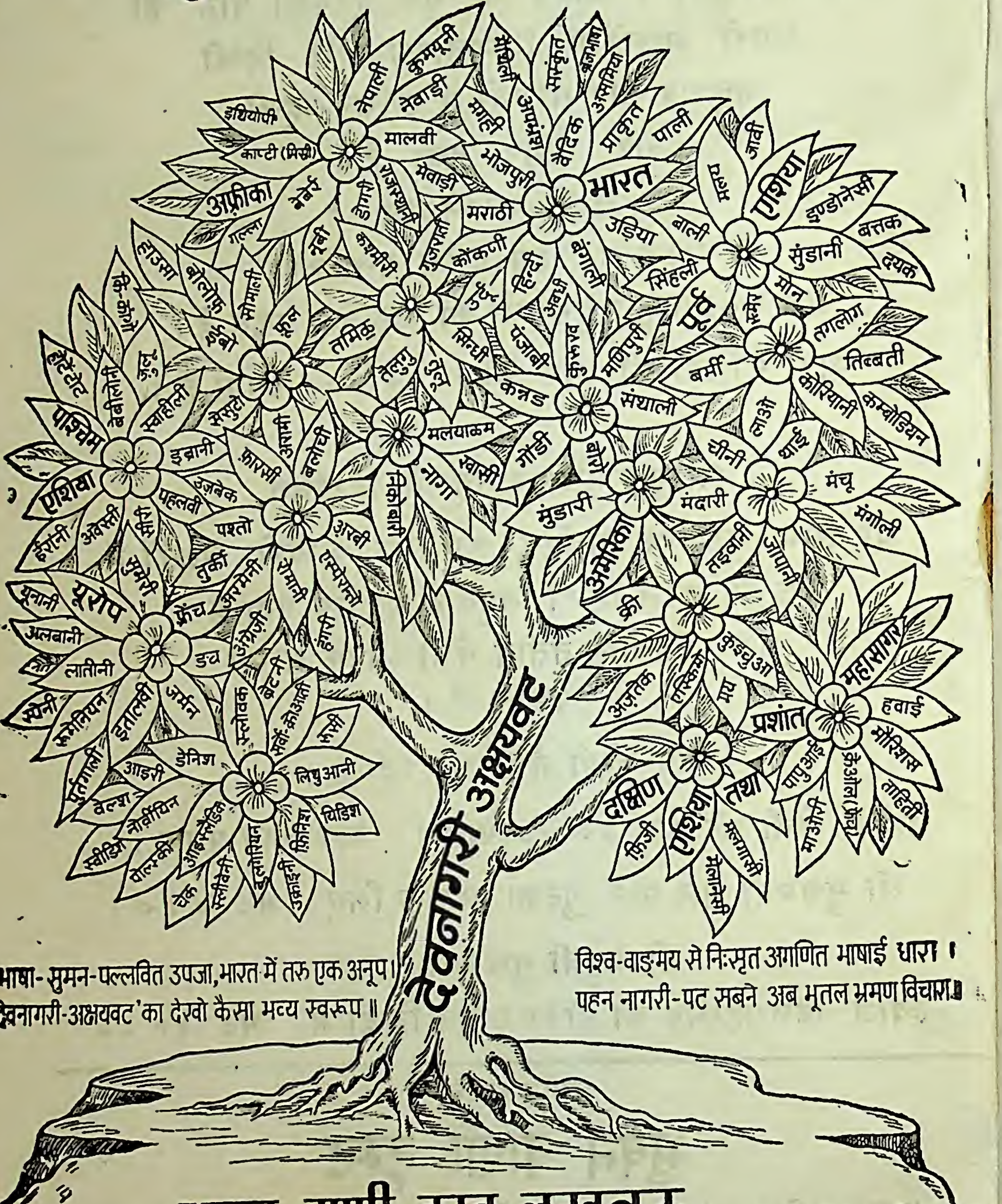
देवनागरी अक्षयवट
अफ़्रीका
इथियोपी
काप्टी (मिस्री)
नेपाली
कुमयूनी
मेवाड़ी
मालवी
बेर्बर
गल्ला
राजस्थानी
डोगरी
भारत
मैथिली
संस्कृत
ब्रजभाषा
असमिया
मगही
अपभ्रंश
वैदिक
प्राकृत
पाली
भोजपुरी
मराठी
उड़िया
बंगाली
हिन्दी
अवधी
कोंकणी
गुजराती
कश्मीरी
उर्दू
पूर्व
एशिया
जावी
इण्डोनेसी
बत्तक
दयक
सुंडानी
बाली
सिंहली
मोन
ख्मेर
तगालोग
तिब्बती
बर्मी
कोरियानी
कम्बोडियन
लाओ
थाई
चीनी
मंचू
मंगोली
मंदारी
जापानी
हाउसा
बोलोफ़
सोमाली
फुल
इबो
तमिल
सिन्धी
पंजाबी
कुरुख
मणिपुरी
तेलुगु
कन्नड
संथाली
गोंडी
बोडो
मलयालम
खासी
नागा
तिब्बती
पश्चिम
एशिया
स्वाहिली
इब्रानी
उज़बेक
पहलवी
अवेस्ता
ईरानी
सुमेरी
तुर्की
पश्तो
फ़ारसी
अरामी
बलोची
अरबी
आरमेनी
रोमानी
अस्पेरान्तो
हंगरी
यूरोप
यूनानी
अलबानी
लातीनी
फ्रेंच
डच
अंग्रेज़ी
जर्मन
इतालवी
स्पेनी
पुर्तगाली
आइरी
डेनिश
वेल्श
नार्वेजियन
स्वीडिश
पोलिश
चेक
आइसलैंडिक
स्लोवाक
सर्बो-क्रोआती
रूसी
लिथुआनी
ब्रिटिश
फ़िनिश
उक्रइनी
बल्गेरियन
स्लोवेनी
अमेरिका
क्री
अज़्तेक
एस्किमो
माया
कुइचुआ
तइवानी
मुंडारी
महासागर
प्रशांत
हवाई
मॉरिशस
पापुआ
फ़ेजियन
ताहिती
माओरी
दक्षिण
एशिया
तथा
फ़िजी
मलयाली
मलेशियन

भाषा-सुमन-पल्लवित उपजा, भारत में तरु एक अनूप।
'देवनागरी-अक्षयवट' का देखो कैसा भव्य स्वरूप ॥

विश्व-वाङ्मय से निःसृत अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी-पट सबने अब भूतल भ्रमण विचारा॥

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ

प्रतिष्ठाता – पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी

गुरुमुखी लिपि के ग्रन्थ, नागरी लिपि में सानुवाद प्रकाशित

				पृष्ठ	मूल्य
१	गुरमुखी	श्री गुरुग्रन्थ साहिब	गुरुवाणी मूलपाठ नागरी लिपि में तथा सर्वप्रथम हिन्दी अनुवाद (पहली सैंची)	९६८	५०·००
२	,,	,,	,, (दूसरी सैंची)	९९२	५०·००
३	,,	,,	,, (तीसरी सैंची)	९९४	५०·००
४	,,	,,	,, (चौथी सैंची)	८००	५०·००
५	,,	श्री दशम गुरुग्रन्थ साहिब	गुरुगोविन्दसिंह प्रणीत नागरी लिप्य० हिन्दी अनुवाद सहित (प्रथम सैंची)	८२०	५०·००
६	,,	,, ,, ,,	,, (द्वितीय सैंची)	७०४	५०·००
७	,,	,, ,, ,,	,, (तृतीय सैंची)	७३६	५०·००
८	,,	,, ,, ,,	,, (चतुर्थ सैंची)	७५२	५०·००
९	,,	श्रीजपुजी सुखमनी साहिब	—मूलपाठ एवं ख्वाजः दिलमुहम्मद कृत अनुवाद (नागरी में)	१६४	१५·००
१०	,,	श्री सुखमनी साहिब	(मूल गुटका) पाठ के लिए	२४०	४·००
११	,,	भाई गुरुदास जी	के वारां ज्ञान रतनावली नागरी लिप्यन्तरण, हिन्दी अनुवाद	७०४	६०·००
१२	,,	,, ,,	के कवित्त-सवैये ,, (छप रही है)		

प्राप्ति-स्थान— भुवन वाणी ट्रस्ट, मौसम बाग़ (सीतापुर रोड), लखनऊ-२०

गुरुमुखी लिपि के ग्रन्थ, नागरी लिपि में सानुवाद प्रकाशित

१	गुरमुखी	श्री गुरूग्रन्थ साहिब	गुरबाणी मूलपाठ नागरी लिपि में तथा सर्वप्रथम हिन्दी अनुवाद (प्रथम सैंची)	९६८	५०·००
२	,,	,, ,,	(दूसरी सैंची)	९९२	५०·००
३	,,	,, ,,	(तीसरी सैंची)	९६४	५०·००
४	,,	,, ,,	(चौथी सैंची)	८००	५०·००
५	,,	श्री दशम गुरूग्रन्थ साहिब	गुरूगोविन्दसिंह प्रणीत (ब्रजभाषा में) हिन्दी अनुवाद सहित (प्रथम सैंची)	८२०	५०·००
६	,,	,, ,, ,,	,, (द्वितीय सैंची)	७०४	५०·००
७	,,	,, ,, ,,	,, (तृतीय सैंची)	७३६	५०·००
८	,,	,, ,, ,,	,, (चतुर्थ सैंची)	७५२	५०·००
९	,,	श्रीजपुजी सुखमनी साहिब—मूलपाठ एवं	ख्वाजः दिलमुहम्मद कृत अनुवाद (नागरी में)	१६४	१५·००
१०	,,	श्री सुखमनी साहिब	(मूल गुटका) पाठ के लिए	२४०	४·००
११	,,	भाई गुरुदास जी	के वाराँ ज्ञान रतनावली नागरी लिप्यन्तरण, हिन्दी अनुवाद	७०४	६०·००
१२	,,	,, ,,	के कवित्त-सवैये	छप रही है	

प्राप्ति-स्थान— भुवन वाणी ट्रस्ट, मौसम बाग़ (सीतापुर रोड), लखनऊ-२०